सर्वकर्म अनुष्ठान प्रकाशः
(भाग 1)
पूजा-प्रतिष्ठा
लेखक एवं प्रकाशक : पं. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)
मयूरेश प्रकाशन मदनगंज-किशनगढ (राज.)

सर्वकर्म

अनुष्ठान प्रकाशः

(भाग 1)

पूजा एवं प्रतिष्ठा

सभी देवताओं की प्रतिष्ठा के लिये सविधि एवं सरल पुस्तक

- समस्त भद्रमंडल रंगीन, आवाहित स्थानसहित।
- सर्वदेवपूजा एवं मूर्तिप्रतिष्ठा का हस्तक्रिया युक्त स्पष्टीकरण।
- दशविधस्नान, पापघटदान, हेमाद्रिस्नानादि संकल्प विधि।
- नामावलि तथा वेदोक्तमंत्र दोनों तरह का पूजाविधान।
- 3 वेदी स्नान की सरल सचित्र प्रतिष्ठाविधि।
- मण्डपविधान, कुण्डनिर्माण विधि सरल क्रिया में है।
- पंचकुण्डी, नवकुण्डी संपूर्ण यज्ञविधि दी गई है।
- चारों वेदों की सूक्तावलियाँ तथा सभी अथर्वशीर्ष युक्त।
- चल, अचल प्रतिष्ठाविधि पूर्ण रूपेण।
- विभिन्न तरह के प्रासादों का वर्णन।

पं. रमेशचन्द्र शर्मा 'मिश्र'

मयूरेश प्रकाशन

मदनगंज–किशनगढ़, जिला–अजमेर (राज.)

फोन – 01463–244198, 9829144050

प्रकाशक :-
पं. रमेशचन्द्र शर्मा
मयूरेश प्रकाशन
छाबड़ा कॉलोनी, मदनगंज
किशनगढ़, जिला - अजमेर
पिन : 305801 (राज.)
✆ : 01463-244198,
09829144050

प्रथम संस्करण : -
२० मई. १९९९
नवीन संस्करण
मार्च 2018

कॉपराइट नं०
© L 35895/10

मूल्य : 370/-
(तीन सौ सत्तर रूपये मात्र)

लेजर टाईप सेटिंग :
माँ दधीमथि कम्प्युटर्स
किशनगढ़, अजमेर (राज.)
✆ : 09214511897
09214512223

❖ मुख्य प्राप्ति स्थल ❖

1. सरस्वती प्रकाशन, अजमेर ✆ 2425505
2. ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर ✆ 2575532
3. सुधीर एण्ड ब्रदर्स, जयपुर ✆ 2573655
4. किताब घर, जोधपुर ✆ 2637334
5. गर्ग एण्ड कं०, दिल्ली ✆ 23951443
6. अग्रवाल बुक डिपो, दिल्ली ✆ 23936116
7. रत्नेश्वर पुस्तक भण्डार, बीकानेर ✆ 2549712
8. आनन्द प्रकाशन, दिल्ली ✆ 23923021
9. नाथ पुस्तकभण्डार, दिल्ली ✆ 23275344
10. D.P.B पब्लिकेशन, दिल्ली ✆ 23273220
11. K.K. गोयल & कम्पनी, दिल्ली ✆ 23253604
12. सरदार करमसिंह अमरसिंह बुकसेलर, हरिद्वार ✆ 225619
13. सरदार सोहनसिंह बुकसेलर, इन्दौर ✆ 2532344
14. कुल्लुका ज्योतिष केन्द्र, उज्जैन ✆ 4013150
15. श्रीबुक डिपो, उज्जैन
16. प्रसाद बुक एजेन्सी, पटना ✆ 9234797825
17. खण्डेलवाल एण्ड सन्स, वृन्दावन ✆ 2443101
18. गोवर्धन प्रकाशन मथुरा ✆ 2415311
19. श्रीकृष्ण पुस्तक भण्डार, गया

कोटा, भीलवाडा, उदयपुर, पूना, सूरत, ग्वालियर अहमदाबाद, होशंगाबाद, नीमच, मन्दसौर, भोपाल, रायपुर, ओंकारेश्वर, बडौदा, लखनऊ, वाराणसी, मुम्बई, कुरुक्षेत्र, गया, रायपुर, C.P. Tank बम्बई।

विषय सूची

मंडपे पूजन प्रकरणम्

अथ यज्ञविधानम्

प्रासाद प्रकरणः

प्रतिष्ठा प्रकरणः

विविध न्यास

प्रासादाधिवासनम्

स्थापन दिवसे कर्म

अन्य विषय:

जीर्णोद्धार विधानम्

अन्य प्रतिष्ठा:

अभिषेक मंत्रा:

विभिन्न सूक्तानि

अथर्वशीर्षम्

कुण्ड निर्माण विधानम्

अन्य विषयः

॥ श्री ॥

गौं गुरुवे नमः, गं गणेशाय नमः

ॐ ऐं सरस्वत्यै नमः, ॐ ऐं पराम्बा पीताम्बरायै नमः

द्वितीय संस्करण निवेदनम्

विद्वद्जनों के सहयोग के परिणाम स्वरूप ही इस ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण अतिशीघ्र प्रकाशित करने का अवसर प्राप्त हुआ, तदर्थ आभार व्यक्त करता हुँ। विद्वानों की अभिलाषा के अनुसार '**यूपविधान**', '**वास्तुगर्तविधान**' व कई अन्य मण्डलों के चित्रों का समावेश इस संस्करण में किया गया है।

कर्मकाण्ड एक विस्तृत विषय है इसलिये सभी विषयों का समावेश एक पुस्तक में नहीं हो सकता, फिर भी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला यह सरलग्रन्थ आप सभी को समर्पित है।

साभार!

आपका

प्रथम संस्करण निवेदनम्

प्रातर्भजाम्यभयदं खलुभक्तशोक-
दावानलं गणविभुं वरकुञ्जरस्याम् ।
अज्ञानकाननविनाश हव्यवाह-
मुत्साह वर्धनमहं सुतमीश्वरस्य ॥
ॐ विशुद्धज्ञान देहाय त्रिवेदी दिव्यचक्षुषे ।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥

श्री विघ्नेशगणपति एवं पराम्बा की असीम कृपा से मेरा प्रथम प्रकाशन **"सुबोध दुर्गासप्तशती एवं यागविधानम्"** (तंत्रयाग दीपिका) प्रकाशित हुआ जिसकी सभी विद्वानों द्वारा भूरि–भूरि प्रशंसा कि गई एवं मेरी **"हस्त क्रिया"** एवं **मूल सिद्धान्तों** को समझाने की शैली को देखकर अन्य विषयों पर भी प्रकाशन

हेतु आग्रह किया गया। इसी प्रेरणा से अभिभूत होकर इस क्षेत्र में आगे बढते हुये दो प्रकाशन शीघ्र ही **"भवन वास्तुशास्त्र एवं भाग्यफल"** एवं **"सांगोपाग वैवाहिक पद्धति"** प्रकाशित हुये। तदर्थ विद्वानों की ओर से अन्यान्य प्रेरणात्मक होकर कर्मकाण्ड प्रयोग, साधना, तंत्रमंत्र विज्ञान ज्योतिषशास्त्र आदि कई विषयों पर ग्रंथ प्रकाशन हेतु मेरी रुचि बढ़ी है। पूजा प्रकरण के साथ–साथ प्रतिष्ठा प्रकरण को सरल करके लिखने की अभिलाषा मेरी बनी, इसी के साथ अनुष्ठान प्रयोगों कि मांग को देखते हुये इस ग्रंथ को लिखने का प्रयास किया है।

"सर्वकर्मनुष्ठान प्रकाशः" नामक इस ग्रंथ को चार बडे भागों में प्रकाशित किया जायेगा।

१. "सर्वकर्मनुष्ठान प्रकाशः" भाग १ - पूजा एवं प्रतिष्ठा प्रयोग
२. "सर्वकर्मनुष्ठान प्रकाशः" भाग २ - देवखण्ड (काम्य प्रयोग)
३. "सर्वकर्मनुष्ठान प्रकाशः" भाग ३ - देवीखण्ड - पूर्वाद्ध (काम्य प्रयोग)
४. "सर्वकर्मनुष्ठान प्रकाशः" भाग ३ - देवीखण्ड उत्तरार्द्ध (काम्य प्रयोग)

"पूजा एवं प्रतिष्ठा प्रयोग" में सभी देवताओं के आवाहन, भद्रमंडल पूजा, दशविधीस्नान, हेमाद्रिस्नान, प्रायश्चित्त हवनसंकल्प, ५ एवं ९ कुण्डीय निर्माण पद्धति, जलयात्रा, मंडल पूजा विधान, प्रतिष्ठा कार्य हेतु मंदिर व प्रासाद का वर्णन एवं वास्तुपूजन, मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु महास्नानादि, ३ वेदीस्नान विधि प्रतिष्ठा विधि सरल क्रिया में तथा न्यास विधानादि भी दिये गयें हैं।

द्वितीय भाग **"देवखण्ड (काम्य प्रयोग)"** में विविध कामना हेतु मंत्र अनुष्ठान प्रयोग वेदोक्त सूक्त, तांत्रिक प्रयोग, गणेश, भैरव, हनुमान, विष्णु, शिव, शरभ, मृत्युंजय, बटुक भैरव, स्वर्णाकषर्णभैरव के अन्यान्य प्रयोग विधान तथा **भाग ३ - देवीखण्ड पूर्वाद्ध (काम्य प्रयोग)** में बगला, भुवनेश्वरी, त्रिपुर भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, दुर्गा, गायत्री, कमला, काली, कालिन्दी, ललिता, मातंगी आदि दशमहाविद्याओं के प्रयोग व उत्तर तथा दक्षिण भारतीय नवरात्र विधान। **भाग ३ - देवीखण्ड उत्तरार्द्ध (काम्य प्रयोग)** में सभी दशमहाविद्या देवीयों की उपमहाविद्याओं के प्रयोग प्रकाशित किये गये हैं जिन्हें मंत्रमहार्णव, मन्त्र महोदधि जैसे ग्रंथो से सरलीकृत किये गये हैं।

हर प्रकाशन में नया शोध, तथा भाषा कि शैली सरल होगी यही मेरा प्रयास होगा। आशा करता हूँ, कि भगवती व गुरुकृपा से जो कुछ मेरे द्वारा संकलित किया गया है उसे विद्वज्जन सहयोग हेतु स्वीकार करेंगें।

आप सभी के आशीर्वाद का अभिलाषी
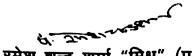
पं. रमेश चन्द्र शर्मा "मिश्र" (प्रकाशक)

॥ षोडशमातृका द्विधा मण्डल ॥

(अजमेर प्रान्त)

पूर्व

उत्तर

१६ रक्त	१२ श्वेत	८ पीत	४ हरा
१५ श्वेत	११ रक्त	७ हरा	३ पीत
१४ पीत	१० हरा	६ रक्त	२ श्वेत
१३ हरा	९ पीत	५ श्वेत	१ रक्त

दक्षिण

पश्चिम गौरी गणेश

॥ अखण्डज्योति ॥

(मथुरा)

१६ पीत	१२ कृष्ण	८ हरा	४ रक्त
१५ हरा	११ पीत	७ रक्त	३ कृष्ण
१४ कृष्ण	१० रक्त	६ पीत	२ हरा
१३ रक्त	९ हरा	५ कृष्ण	१ पीत

॥ एकोनपञ्चाशतक्षेत्रपाल मण्डलम् ॥

(प्रतिभागे षड्देवता)
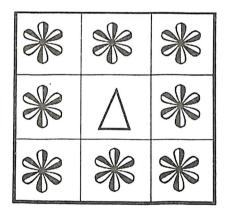
॥ चतुषष्ठीयोगिनी मण्डलम् ॥

(प्रतिभागे अष्टौ देवता)
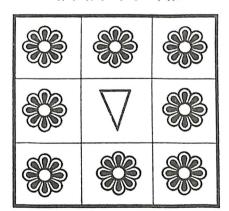
॥ चतुषष्ठीयोगिनी मण्डलम् ॥

१ रक्त	९ पीत	१७ हरा	२५ कृष्ण	३३ श्वेत	४१ हरा	४९ पीत	५७ रक्त
२ पीत	१० रक्त	१८ पीत	२६ हरा	३४ हरा	४२ पीत	५० रक्त	५८ पीत
३ हरा	११ पीत	१९ रक्त	२७ पीत	३५ पीत	४३ रक्त	५१ पीत	५९ हरा
४ श्वेत	१२ हरा	२० पीत	२८ कृष्ण	३६ श्वेत	४४ पीत	५२ हरा	६० कृष्ण
५ कृष्ण	१३ हरा	२१ पीत	२९ श्वेत	३७ कृष्ण	४५ पीत	५३ हरा	६१ श्वेत
६ हरा	१४ पीत	२२ रक्त	३० पीत	३८ पीत	४६ रक्त	५४ पीत	६२ हरा
७ पीत	१५ रक्त	२३ पीत	३१ हरा	३९ हरा	४७ पीत	५५ रक्त	६३ पीत
८ रक्त	१६ पीत	२४ हरा	३२ श्वेत	४० कृष्ण	४८ हरा	५६ पीत	६४ रक्त

॥ क्षेत्रपालमण्डलम् ॥
(४९ देवता)

१ कृष्ण	२४ रक्त	२३ हरा	२२ श्वेत	२१ हरा	२० रक्त	१९ कृष्ण
२ रक्त	२५ पीत	४० रक्त	३९ हरा	३८ रक्त	३७ पीत	१८ रक्त
३ हरा	२६ रक्त	४१ पीत	४८ रक्त	४७ पीत	३६ रक्त	१७ हरा
४ श्वेत	२७ हरा	४२ रक्त	४९ श्वेत	४६ रक्त	३५ हरा	१६ श्वेत
५ हरा	२८ रक्त	४३ पीत	४४ रक्त	४५ पीत	३४ रक्त	१५ हरा
६ रक्त	२९ पीत	३० रक्त	३१ हरा	३२ रक्त	३३ पीत	१४ रक्त
७ कृष्ण	८ रक्त	९ हरा	१० श्वेत	११ हरा	१२ रक्त	१३ कृष्ण

॥ हरिहरात्मक द्वादशलिङ्गतोभद्र मण्डलम् ॥
(षड्त्रिंशद्रेखात्मक)
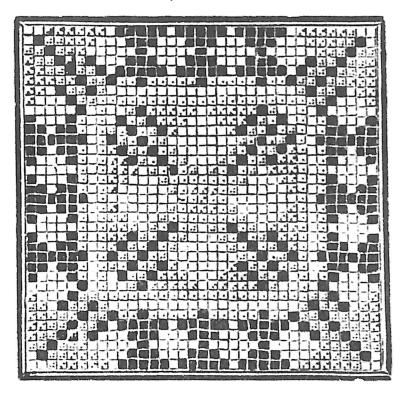
॥ गौरीतिलक मण्डलम् ॥
(एकलिङ्गतोभद्र)
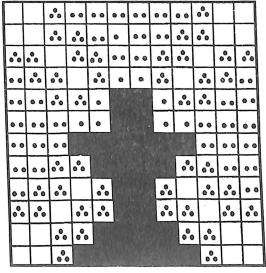
॥ एकाशीतिपदत्रिकोणवास्तु ॥
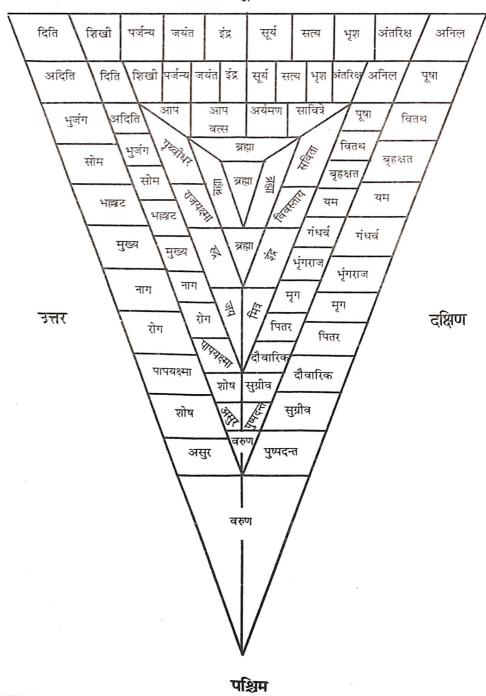
॥ चतुष्षष्टिपद वृत्तवास्तु ॥

॥ एकाशीतिपदवृत्तवास्तु ॥

ग्रंथकर्ता वंश परिचय
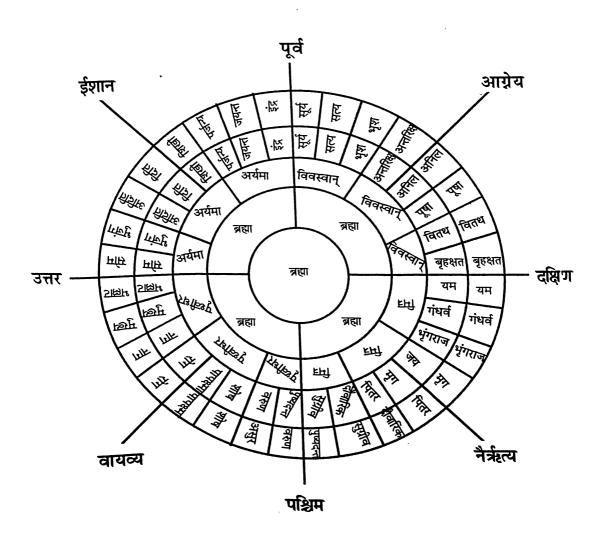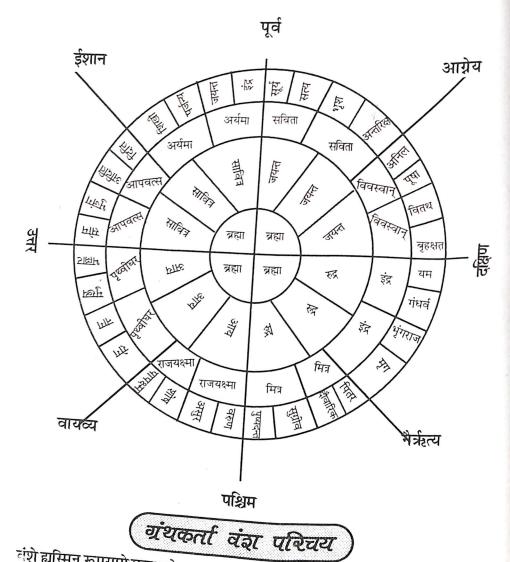
ंशे ह्यस्मिन् रूपरामो महाभागेषु सत्तमः। स्वर्ण-दीनार-संवृष्ट्या तीर्थेष्वकरदीकृतः॥ १॥ श्री किशनश्चचन्द्राख्यो, 'मिश्र' इत्येव विश्रुतः। विराजमानस् साखूणे, जिलान्तर्जैपुरे स्थितः ॥ २॥ सानन्दावसतस्तस्याऽनन्दीलालात्मजोऽभवत्। कथयां कर्मकाण्डे च 'मिश्रा' ऽख्य पदवी गतः ॥ ३॥ कृष्णवल्लभ शास्त्र्याख्य उपवीतेन दीक्षितः। दुर्गालालाऽभिधस्तस्य तनयाध्यापकः स्मृतः ॥ ४॥ तस्यात्मजो रमेशश्च चन्द्रोडोभाऽवटंकितः। ग्रन्थान्संकलितान्प्रास्तौ च्वतुश्चन्द्रैरलंकृतान् ॥ ५॥ सेवामेवाशयारूढ़ः क्षन्तव्योऽयं च सूरिभिः। अनेन विद्या विदुषां स्यामहं ह्यनुकम्पितः ॥ ६॥ (उद्गीतकः- कृष्णवल्लभ शास्त्री, वेद-साहित्याचार्य एम०ए०, शिक्षा शास्त्री, कचनार्या वाले)

॥ ऐं सरस्वत्यै नमः ॥

॥ देवी स्तुति ॥

प्रातः स्मरामि शरदिन्दु करोज्ज्वलाभां, सद्रत्नवन्मकर कुण्डल हारभूषाम् ।
दिव्यायुधोर्जित सुनील सहस्त्रहस्तां, रक्तोत्पलाभ चरणां भवतीं परेशाम् ॥१॥
प्रातर्नमामि महिषासुर चण्डमुण्ड - शुम्भासुर प्रमुख दैत्य विनाश दक्षाम् ।
ब्रह्मेन्द्र रुद्र मुनिमोहन शीललीलां, चण्डीं समस्त सुरमूर्तिमनेकरूपाम् ॥२॥
प्रातर्भजामि भजतामभिलाष दात्रीं, दात्रीं समस्त जगतां दुरितापहन्त्रीम् ।
संसार बन्धन विमोचन हेतु भूतां, मायां परं समधिगम्य परस्य विष्णोः ॥३॥
श्लोक त्रयोषमिदं देव्याश्चण्डिकाया पठेन्नरः । सर्वान्कामान् वाप्नोति देवी लोक महीयते ॥

(सद्धर्भ चिंतामणौ)

॥ अथ सर्वतोभद्र मंडलम् ॥
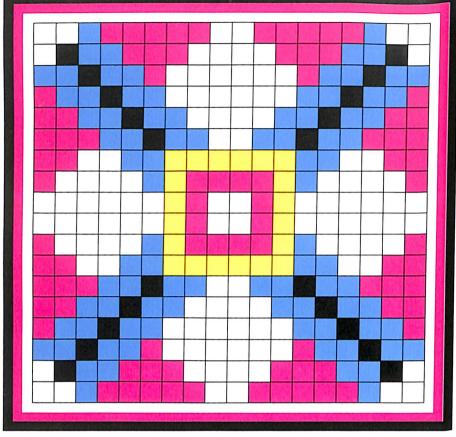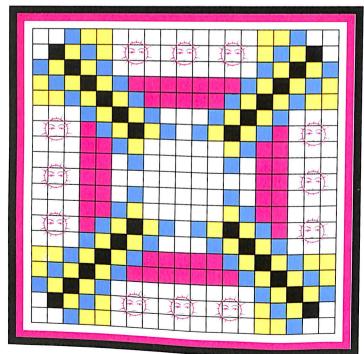
॥ अथ सूर्यभद्र मंडलम् ॥

॥ अथ गौरीतिलक मण्डलम ॥

(दुर्गा पूजा प्रतिष्ठा समये)
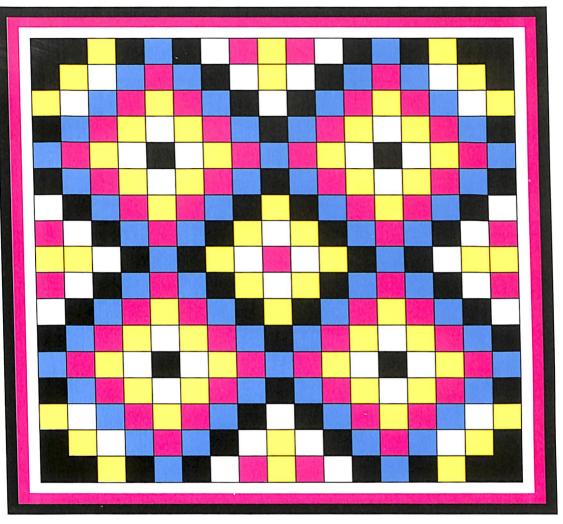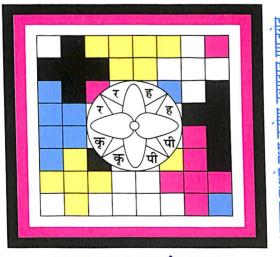
अष्टदल मध्ये यथा क्रमेण नवग्रहान् प्रपूजयेत्

॥ अथ वारुण मंडलम् ॥

ग्रह
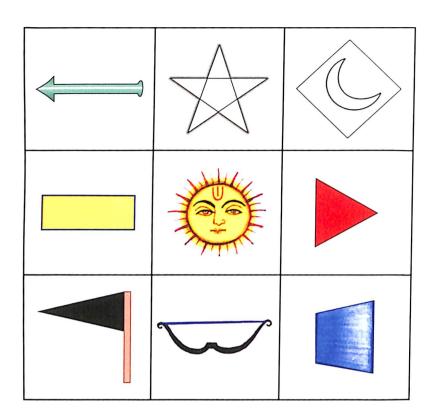
दक्षिण पार्श्वे अधिदेवता		ग्रह		वाम पार्श्वे प्रत्यधि देवता
शिव	–	सूर्य	–	अग्निः
उमा	–	चन्द्र	–	आपः
स्कंद	–	भौम	–	धराः
विष्णु	–	बुध	–	विष्णु
ब्रह्मा	–	गुरु	–	इन्द्र
इन्द्र	–	शुक्र	–	इन्द्राणी
यम	–	शनि	–	प्रजापति
काल	–	राहु	–	सर्प
चित्रगुप्त	–	केतु	–	ब्रह्मा

पंचलोकपाल – गणपति राहु के उत्तर में । दुर्गा शनि के उत्तर में । वायु रवि के उत्तर में । अंतरिक्ष राहु के दक्षिण में । अश्विन्य केतु के दक्षिण में ।

परिधौ – ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र । इन्द्रादि लोकपाल एवं अष्ट नागादि देवता ।

॥ अथ द्वादशलिंगतोभद्र मण्डलम् ॥

॥ अथ ८१ कोष्ठक वास्तु मण्डलम् ॥

(गृह प्रतिष्ठा हेतु)
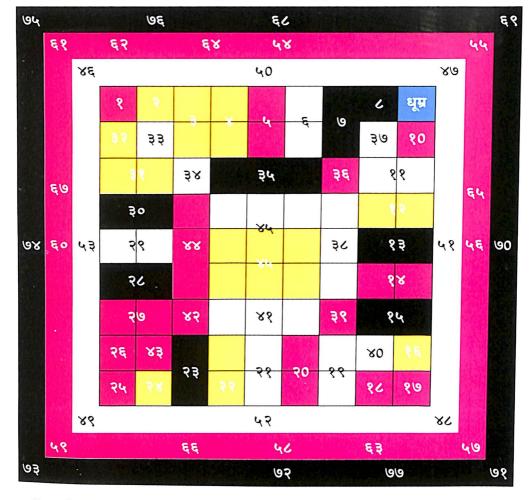
श्वेत परिधौ – (४६) धूम्र, चरक्यै (४७) रक्त, विदार्यै (४८) पीत, पूतनायै (४९) कृष्ण, पापराक्षस्यै (५०) रक्त, स्कंदाय (५१) कृष्ण, अर्यम्णे (५२) रक्त, जृम्भकाय (५३) पीत, पिलिपिच्छाय ।

रक्त परिधौ – (५४) इन्द्र, पीत ।(५५) अग्नि, रक्त ।(५६) यम, कृष्ण ।(५७) निर्ऋतये, नीला, कृष्ण ।(५८) वरुण श्वेत ।(५९) वायव्यां, हरा ।(६०) कुबेर, श्वेत, हरा ।(६१) ईशान, श्वेत, कृष्ण ।(६२) ब्रह्मा, पीत ।(६३) अनन्त, विचित्र रंग (६४) श्वेत, उग्रसेनाय (६५) कृष्ण, डामराय (६६) कृष्ण, महाकालाय (६७) पीत, पिलिपिच्छाय ।

कृष्ण परिधौ – (६८) कृष्ण, हेतुकाय (६९) कृष्ण, त्रिपुरान्तकाय (७०) कृष्ण, अग्निवेतालाय (७१) पीत, असिवेतालाय (७२) कृष्ण, कालाय (७३) रक्त, करालाय (७४) पीत एकपादाय (७५) रक्त भीमरूपाय (७६) पीत, खेचराय (७७) नानारंग, तलवासिने नमः ।

।। अथ चतुर्लिंतो भद्र मण्डलम् ।।
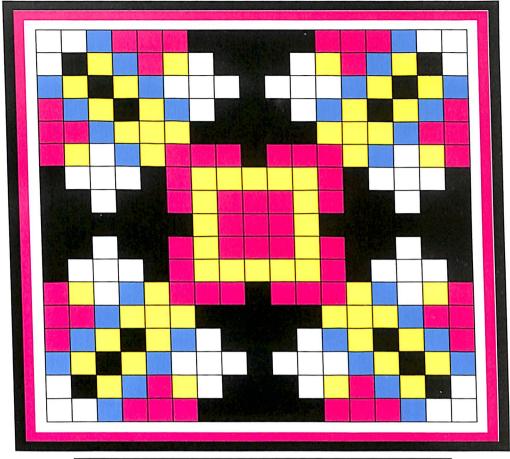
।। अथ गणपति भद्र मण्डलम् ।।

॥ अथ ६४ कोष्ठक वास्तु मण्डलम् ॥

(देव प्रतिष्ठा एवं नगर प्रतिष्ठा हेतु)
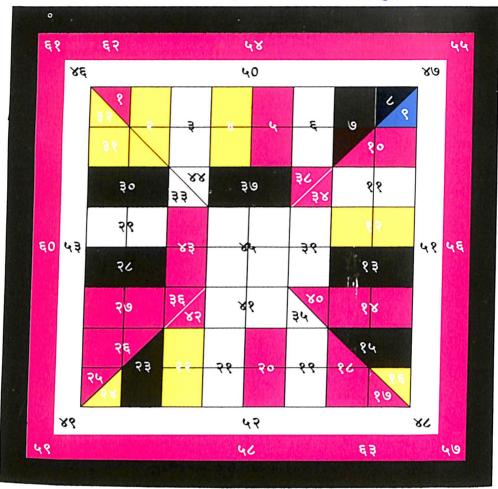
श्वेत परिधौ – (४६) धूम्र, चरक्यै (४७) रक्त, विदार्यै (४८) पीत, पूतनायै (४९) कृष्ण, पापराक्षस्यै (५०) रक्त, स्कंदाय (५१) कृष्ण, अर्यम्णे (५२) रक्त, जृम्भकाय (५३) पीत, पिलिपिच्छाय ।

रक्त परिधौ – (५४) इन्द्र, पीत । (५५) अग्नि, रक्त । (५६) यम, कृष्ण । (५७) निर्ऋतये, नीला, कृष्ण । (५८) वरुण श्वेत । (५९) वायव्यां, हरा । (६०) कुबेर, श्वेत, हरा । (६१) ईशान, श्वेत, कृष्ण । (६२) ब्रह्मा, पीत । (६३) अनन्त, विचित्र रंग ।

अनुष्ठान एवं प्रतिष्ठा मुहूर्त्त निर्णय

अनुष्ठानकर्म मंत्र सिद्दि एवं कार्य सिद्दि हेतु किया जाता है उसमें अयनकाल, मास, तिथि, नर्क्षत्र बलानुसार कार्य किया जाता है। आपत्तिकाल, रुग्णकाल व अन्य परिस्थितियों में तिथी नक्षत्र चन्द्रबल देख कर भी प्रयोग किया जाता है। परन्तु प्रतिष्ठा प्रयोग हेतु नियम अलग है।

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त

सौम्यायने शुभाप्रोक्ता नन्दिता दक्षिणायने ।
रिक्तान्यतिथिषु स्यात्सा वारे भौमान्यके तथा ।।१।।
मातृभैरव – वाराह – नारसिंह – त्रिविक्रमाः ।
महिषासुर हन्त्यश्च स्थाप्या वै दक्षिणायने ।।२।।

(माधवीय, मयूखे)

विष्णु, कृष्ण व अन्य सौम्य देवताओं की प्रतिष्ठा उत्तरायण काल में तथा उग्र देवता जैसे देवी, भैरव, हनुमान, नृसिंह, वामन, आदि देवताओं की दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा की जा सकती है। देवताओं के मास तथा तिथी के आधार पर भी प्रतिष्ठा की जा सकती है। इसी आधार से श्रावण में शिव, भाद्रपद मे गणपति, नवरात्रा (आश्विन) मे दुर्गा की प्रतिष्ठा करने का विधान भी कहा गया है। मंगलवार एवं रिक्तातिथि का त्याग करें।

अन्य :-

तिथी वार व नक्षत्रों के योग से बनने वाले योगों को विद्वज्जन स्वीकार कर लेते है और जब इनसे कोई कुयोग बनता है तो यह कह देते है कि यह तो बंग, बिहार, कलिंग देश मे लगता है।

सुयोग तो अपने लिये व कुयोग दूसरे प्रांतो के लिये यह कैसा नियम है। अतः मेरा निवेदन यह है कि देशकाल परिस्थितिवश नियम बदलते है यह निर्णय उस समय लिया गया होगा जब देश विभक्त था, उत्तर प्रान्तों से दक्षिण प्रान्तों मे जाने में महिनों लग जाते थे। आज देश अविभक्त है, आज देश के एक कोने मे कोई हलचल होती है तो पूरे देश की राजनीति, तेजी–मंदी, वस्तु नियम पर प्रभाव पडता है। अतः ये नियम सर्वत्र मानने चाहिये।

सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्दे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः ।

माघ फाल्गुन वैशाख जेष्ठाषाढेषु पञ्चसु ।।
श्रावणे च नभस्ये च लिंग स्थापनमुत्तमम् ।
देव्या माघाऽअश्विने मासेऽप्युत्तमा सर्वकामदा ।।
रात्रि रूपा यतो देवी दिवारूपो महेश्वरः ।
अतः स्वकालपूजाभिः सिद्धिदा परमेश्वरी ।।

स्थिर लग्न में सभी देवताओं की मूर्ति प्रतिष्ठा करें। द्विस्वभाव लग्न में देवी प्रतिष्ठा की जा सकती है।

नक्षत्राः :-

अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल,पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद एवं अभिजित प्रतिष्ठा कर्म में उत्तम माने गये है।

इसके अलावा विशेष देवताओं के विशेष नक्षत्र भी है।

प्रतिष्ठाकाले वार विचारः (मत्स्य पुराणे) — रविवार को तेज प्राप्त होवे, सोम को कल्याण, भौम को अग्निदाह, बुध को धन प्रद, गुरुवार से स्थिरता, शुक्रवार को आनंद प्राप्त होवे तथा शनिवार को सामर्थ्य का नाश होवे।

नक्षत्रादौ प्रतिष्ठा विचार (मत्स्य पुराणे) — पूर्वाषाढा, उ.षा., मूल, तीनों उत्तरा, ज्येष्ठा, श्रवण, रोहिणी, पू.भा., हस्त, अश्विनी, रेवती, पुष्य, मृगशिरा, अनुराधा तथा स्वाति नक्षत्र प्रतिष्ठा हेतु उत्तम है।

नक्षत्रे विशेषाहः (श्रीपति) — रोहिणी, तीनों उत्तरा, रेवती, श्रवण, हस्त, पुर्नवसु, अश्विनी, धनिष्ठा, अनुराधा, मृगशिरा, तथा पुष्य नक्षत्र विष्णु प्रतिष्ठा में शुभ है। पुष्य, श्रवण तथा अभिजित् में इन्द्र व ब्रह्मा की प्रतिष्ठा, कुबेर व स्वामिकार्तिक की अनुराधा नक्षत्र में प्रतिष्ठा उत्तम है

हस्त नक्षत्र में सूर्य, मूल नक्षत्र में दुर्गा की प्रतिष्ठा श्रेष्ठ होती है। रेवती नक्षत्र में गणेशादि अन्य प्रथम गण भूत, असुर, कामदेव, नाग तथा सरस्वति की प्रतिष्ठा शुभद् है ।

सुगत नाम के जिन देवताओं की श्रवण में तथा लोकपालों की स्थापना शुभ है। स्थिर लग्न में सम्पूर्ण देवताओं की स्थापना शुभ है। देवी की द्विस्वभाव लग्न में भी प्रतिष्ठा स्थापना की जा सकती है।

प्रतिपदादितिथिषु प्रतिष्ठाविचारः (*मात्स्ये*) –

दृढा धनकरी स्फीता तथा प्रतिपदि स्मृता ।
द्वितीयायां धनोपेता तृतीयायां धनप्रदा ॥
चतुर्थ्यां नाशमाप्नोति यमस्य स्यात्सुखावहा ।
विनायकस्य देवस्य तथा तत्र हितप्रदा ॥
पञ्चम्यां श्रीयुता कर्तुर्वरदा च तथा भवेत् ।
षष्ठ्यां लक्ष्मीयुता नित्यं सप्तम्यां रोगनाशिनी ॥
अष्टम्यां धान्यबहुला नवम्यां च विनश्यति ।
भद्रकाल्या कृता तत्र कर्तृर्भवति तुष्टये ॥
धर्मवृद्धिकरी ज्ञेया दशम्यां तु तथा तिथौ ।
एकादश्यां तथा युक्तां द्वादश्यां सर्वकामदा ॥
त्रयोदश्यां तथा ज्ञेया चतुर्दश्यां विनश्यति ।
कृष्णपक्षे पञ्चदश्यां कर्तुः क्षयकरो भवेत् ॥
पञ्चदश्यां तथा शुक्ले सर्वकामकरी भवेत् ।

तिथिविषये विचारः (*हेमाद्रि, मदनरत्नादौ*) –

उदिते दैवतं भानौ पित्र्यमस्तमिते रवौ ।
द्विमुहुर्ता त्रिरह्नश्च सा तिथिर्हव्यकव्ययो ॥

सूर्योदय से २ मुहुर्त्त तक तिथि में देवकर्म तथा अस्तसे तीन मुहुर्त्त तक तिथि हो तो पितृकर्म एवं शेष दिन हव्य कव्य में उत्तम है।

(स्कंदपुराणे)

व्रतोपवास – स्नानादौ घटिकैकापि या भवेत् ।
उदये सातिथिग्राह्य विपरीता तु पैतृके ॥

अर्थात् व्रत, उपवास, स्नान, दान आदि में वह तिथि ग्रहण करें जो उदय में हो, पितृकार्य में इसके विपरीत अर्थात् जो तिथि सूर्यास्त से २–३ मुहुर्त्त तक होवे।

कर्मकालव्यापिनी तिथिविचारः (*विष्णुधर्मोत्तरे*) –

जिस कर्म जो काल हो उस समय तक व्यापिनी तिथि हो उसमें कर्मों को

करें। उसमें ह्रास एवं वृद्धि के कारण दोष नहीं होता है।

जैसे गणेशजी का जन्म चतुर्थी में मध्याह्न समय मे होने से मध्याह्न में चतुर्थी का अभाव हो तो तृतीया, अगर मध्याह्न में चतुर्थी विद्धा होतो तृतीया को गणेश चतुर्थी मानें। दीपमाला समय सायंकाल समय अमावस्या का अभाव हो तो अमावसविद्धा चतुर्दशी को दीपवली मानें।

(अन्यच्च) अनुष्ठान समय शुद्ध मुहुर्त्त गणना के अनुसार संकल्प व कार्यारंभ समय जो सुयोग–कुयोग वार–तिथि–नक्षत्र संयोग से जो बनता है उसका भी विचार विद्वानों को करना चाहिये।

जैसे ८ गरुवार तिथि १० घटी है। मध्याह्न में लाभ का चौघडिया आ जाता है परन्तु तिथि नवमी विद्धा गुरूवार होने से मृत्यु योग का प्रारंभ काल आ जाता है अतः फल मध्यम हो जायेगा भले हि संकल्प में आप अष्टमी तिथि का उच्चारण करेगें।

दक्षिणायने मातृ भैरवादीनां प्रतिष्टा कथनम् – (माधवीये)

मातृभैरव – वाराह नरसिंह – त्रिविक्रमात्रः ।
महिषासुर – हन्त्र्यश्च स्थाप्या वै दक्षिणायने ।।

लिंग स्थापने मासादि विचार – रत्नावली में माघ फाल्गुन, वैशाख,जेष्ठ और आषाढ इन पांच महिनो मे शुक्ल पक्ष मे लिङ्ग का स्थापन करना उत्तम है। वैखानस में विष्णु ने कहा है कि बह्मा के वचनानुसार मार्गशीर्ष तथा पोषमास निन्दित है मासों मे फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन तथा श्रावण मास उत्तम कहा गया है।

(अन्यच्च) – क्षय, अधिकमास, मलमास, गुरु, शुक्रास्त वक्री एवं अतिचार तथा शिववास आदि अन्य विषय भी देखने चाहये।

जलाशय कूपप्रतिष्ठ विचारः (ब्रह्मपुराणे) –

तस्मिन् सलिलपूर्णे च कार्तिके तु विशेषतः ।
मुनयः केचिदिच्छन्ति व्यतीते चोत्तरायणे ।
न काल नियमस्तत्र सलिलं तत्र कारणम् ।।

देवानां पुनः प्रतिष्ठ विषये

खण्डिते स्फुटिते दग्धे भ्रष्टे मानविवर्जिते ।

यागहीने पशुस्पृष्टे पतिते दुष्ट—भूमिषु ॥
(सिद्धान्त शेखरे)

चौर चाण्डाल पतितश्वोदक्यास्पर्शने सति ।
शिवाद्यपहतौ चैव प्रतिष्ठां पुनराचरेत् ॥

चौर, चाण्डाल, पतित, श्वान, शव आदि से स्पर्श होने पर पुनः प्रतिष्ठा करें।

गृहे देवप्रतिमा विचारः

गृह में देव प्रतिमा अगुष्ठ प्रमाण से ११ अंगुल तक ही शुभ है। अधिकाधिक आजकल २१ अंगुल तक लेने लग गये है। यथापि—

अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्ति यावदेवतु ।
गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधे॥ (मात्स्ये)
शालिग्रामशिला विष्णुर्बाणस्तु शशि शेखरः ।
चण्डिका कांचनी प्रोक्ता स्वर्णमाक्षी तु शौनक ।।१॥
नार्मदयो विघ्नहरो लोहितः प्रस्तरः शुभ ।
अर्ककान्तस्तु तरणिग्राह्य ह्येवं सामासत ।।२॥ (हारीत)
एकामूर्तिर्न पूज्यैव गृहिणा स्वेष्टमिच्छता ।
अनेक मूर्तिसम्पन्नः सर्वान्कामानवाप्नुयात् ।।१॥
गृहेलिंगद्वयं नार्च्य गणेशत्रितयं तथा ।
शंखद्वयं तथा सूर्यौ नार्च्यौ शक्तित्रयं तथा ।।२॥
द्वे चक्रे द्वारकायाश्च शालिग्राम शिलाद्वयम् ।
तेषां तु पूजनेनैव उद्वेगं प्राप्नुयाद्गृही ।।३॥ (स्मृत्यन्तरे)
चक्रांक मिथुनं पूज्यं शालिग्राम शिलाग्रतः ॥ (हारीत)

देवप्रतिमाप्रतिष्ठाविचारः

शालिग्राम शिलायांस्तु प्रतिष्ठा नैव विद्यते ॥(स्कान्दे)
बाणलिंगानि राजेन्द्र ख्यातानिभुवनत्रये ।
न प्रतिष्ठा न संस्कारस्तेषां चावाहनं तया ॥ (भविष्ये)

गृहे लिंगादि पूजन संख्या *(वाराहे, पद्मापुराणे)* –

गृहे लिङ्गद्वयं नार्च्य शालग्राम द्वयं तथा ।

द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्य सूर्यद्वयं तथा ।।१।।
शक्ति त्रयं तथा नार्च्य गणेशत्रयमेव च ।
द्वौ शङ्खौ नाचर्यच्चैव भग्नां च प्रतिमां तथा ।।२।।

स्वतंत्र पूजा में चक्रांक मिथुन दो की पूजा होती है। शलिग्राम विषम संख्या में एक का पूजन ही करें ३,५,७ नहीं करें ४,६,८ का पूजन हो सकता है।

शिवार्चनपूजने दिक् विचारः *(गौतम, वाचस्पति प्रयोग पारिजाते)* -

प्रातः काल मे पूर्व दिशा में, सायं काल पश्चिम दिशा में और रात में उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके लिङ्गार्चन करें।

(गृह्यपरिशिष्ट) स्थिर प्रतिमा विषय मे जिन प्रतिमाओं का मुंह पूर्व दिशा में हो उनका उत्तराभिमुख होकर अर्चन करें अन्यों का तो पूर्वाभिमुख होकर पूजन करें

अष्टविधप्रतिमाविचारः (भागवते) — शिला, लकडी (महुआ की विशेष ग्रहण है), लौह (धातु), लेप्य (पुती हुई), लेख्य (चित्रित), सिकता (रेती), मनोमयी (मानसिक ध्यानाविष्ट) तथा मणि की ये आठ प्रकार की प्रतिमा कहा है।

(पञ्चरात्रे) मृतिका, दारूकाष्ठ, लाक्षा (लाख), गोमेद तथा मोम की प्रतिमा का निर्माण नहीं करे।

लिंगे विशेषः *(भविष्ये)* -

मृदभस्मगोशकृत्पिष्ट ताम्रकांस्यमयं तथा ।
कृत्वा लिङ्गं सकृत्पूज्य वसेत्कल्पायुतं दिवि ।।

मृतिका, भस्म, गोबर, आटा, तांबा और काँस का लिंग बना कर जो एक बार पूजन करता है व अयुतकल्प तक स्वर्ग में रहता है। इसी आशय मे पार्थिव शिव के पूजन का महत्व विशेष फलदायी कहा है।

प्रतिमादिनां नित्यस्नाने विचारः -

प्रतिमा — पट्टयन्त्राणां नित्यं स्नानं न कारयेत् ।
कारयेत् पर्वदिवसे यदा वा मलधारणम् ।।

लिंग पंचसूत्रीनिर्णयः (गौतमी तंत्रे) — लिङ्ग मस्तक का विस्तार (१) एवं ऊँचाई बराबर होनी चाहिये (२) गौलाई तीन गुणा होनी चाहिये (३) उसी

प्रकार पीठ जलधारी की व्यवस्था करें (४) प्रणालिका (मोरी) की व्यवस्था भी यथावत् उत्तर दिशा में करें।

परन्तु अगर हम ज्यामिति सिद्धांत को देखते है तो १० से.मी. ऊँचे शिव लिङ्ग की गोलाई ३१ से.मी. ४ मिलि मीटर (त्रिगुणा से कुछ अधिक) होगी।

अथ षोडशोपचार द्रव्याणि

पाद्यद्रव्याणि — **दूर्वा च विष्णुक्रांतां च श्यामाक पद्मेव च ।**

अर्घ्यद्रव्याणि — **गंध — पुष्पाक्षत—यव कुशाग्र तिल सर्षपे ।**
सदूर्वैः सर्व देवानामेतदर्घ्य — मुदीरितम् ।।

आचमन द्रव्याणि — कर्पूर, अगर, पुष्प, जायफल, लवंग कंकोल।

मधुपर्क — आज्य, दधि एवं मधु।

पंचामृतम् — गोघृत, दधि, पय, मधु, शर्करा।

पंचगव्यम् — ताम्रपात्र मे गोमूत्र, गोमय, दूध, दही, तथा घी का मिश्रण करें।

गोमूत्रं भागत्तश्चार्द्धे शकृत्क्षीरस्य च त्रयम् ।
द्वयं दध्नो घृतस्यैकमेकश्च कुशवारिज ।। (विष्णुधर्मे)

उद्वर्तन द्रव्याणि — हरिद्रा सहदेवी, शिरीष, लक्ष्मणा, सहभद्रा कुशाग्रभाग।

सौभाग्य द्रव्याणि — हरिद्रा, कुंकुम, सिन्दूर, कज्जल, कंठसूत्र आदि।

कौतुक द्रव्याणि — दूर्वा, यवांकुर, ह्रीबेर, आम्रपल्लव, हरिद्रा पीली एवं काली, सरसों, मयूरपुच्छ, सर्पकंचुकी, कंकणौ—औषधी।

गंधानुलेपन विचार— गंधलेपन तीन तरह का होता है।
१. चूर्ण २. घर्षण किया हुआ ३. औषधी की भस्म का।

वैष्णवगंधाष्टकम् — चन्दन, अगरु, कर्पूर, कुष्ठ, कुंकुम, जटामांसी, मुरा, देवदारू,

शैवगंधाष्टकम् — चंदन, अगरु, कर्पूर, तमाल, बाला, कुंकुम,

रक्तचंदन, कूड

शक्त्या गंधाष्टकम्– चंदन, अगरु, कर्पूर, कृष्ण, शाठी, कुंकुम गोरोचन, जटामांशी एवं गाठीयाला।

धूपद्रव्याणि – अगर, तगर, कुष्ठ, शैलज, शर्करा, मोथा, चंदन, एलची, तज, नखनखी, उशीर, जटामांशी, कर्पूर, तालीसपत्र, कचूर, हाउबेर जातीफल।

अन्य च – गुग्गुल, देवदारू, चंदन, ह्रीबेर, कुष्ठ, गुड, सर्जरस, हरीत, नखी, लाक्षा, जटामांसी, शैलज

ग्राह्याणि पुष्पाणि :- (शारदा तिलके)

कमले करवीरे द्वे कुमुदे तुलसीद्वयम्। जातीद्वयं केतकी द्वे कह्लारं चम्पकोत्पले ।। कुन्द मन्दार पुन्नाग पाटला नाग चम्पकम्। आरग्वधं कर्णिकारं पारन्ती नवमालिका ।। सौगंधिकं सकोरण्टम् पलाशा – शोकमल्लिकाः। धत्तूरं सर्जकं बिल्वमर्जुनं मुनिपत्रकम् ।। अन्यानपि सुगंधीनि पत्र पुष्पाणि देशिकैः। उपदिष्टानि पूजायामाददीत विचक्षणः।

अर्पणविधि :-

पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं वापि तथैव च ।
केशवार्थे शिवार्थे वा यथोत्पन्नं तथार्पयेत ।।

मध्यमा एवं अनामिका से पुष्प संग्रह करें एवं अंगुष्ठ तर्जनी संयोग से निर्माल्य करें।

पुष्पसंबंधिविचार – (मत्स्य सूक्तेपि)

स्नात्वा मध्याह्नसमये न च्छिन्द्यात्कुसुमं नरः ।
तत्पुष्पास्यार्चने देवि रौरवेपरिपच्यते ।।

"रत्नाकर" का अभिप्राय द्वितीय स्नानसे है।भूमि पर व जल में गिरे, अधोत वस्त्र में संग्रह पुष्प भी अर्चन में ग्राह्य नही है। माली के घर के एक दिन पूर्व के संग्रह्य पुष्पभी ग्राह्य है परन्तु स्वयं के द्वारा नहीं क्योकि उनका सेचन संरक्षण विधि वित् नहीं होता।

देवभेदन वर्ज्याक्षता – (मंत्र महोदधौ)

अक्षतानर्क – धत्तूरौ विष्णौ नैवार्पयेत्सुधीः ।

बन्धूकं केतकीं कुन्दं केशरं कुटजं जपाम् ॥
शंकरे नार्पयेद्विद्वान्मालतीं यूथीकामपि। शक्तौ दूर्वार्कमन्दारान्मालूरं तगरं रवौ। विनायके तु तुलसीं नोर्पयेज्जातु चिद्बुधः।

दुर्गा व शंकर के भी तुलसी नहीं चढ़ती है, तुलसी मंजरी चढ़ सकती है। कहीं–कहीं शास्त्रों में दुर्गा के दूर्वांकुर चढ़ाने के लिये लिखा है।

दीपविचारः *(यामले)*

निवेदयेत्पुरोभागे गंधं पुष्पं च भूषणम्। दीपं दक्षिणतो दद्यात्पुरतो वा न वामतः।। वामस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दक्षिणे। नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः ॥ धूप दीपौ सुभोज्यं च देवताग्रे निवेदयेत्।

दीपं धृतयुतं दक्षे तैलयुक्तं च वामतः। दक्षिणे च सितावर्तिं वामतो रक्तवर्तिकाम्।(दक्षिण वाम का विचार देवता के भाग से गिने)

(शारदा तिलके)

वर्त्या कर्पूरगर्भिण्या सर्पिषा तिलजेन वा ।
आरोप्य दर्शयद्दीपानुच्चैः सौरभ – शालिनः ॥

नैवेद्य विचार :-

भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यं च पेयं चूष्यं च पंचकम् ।
सर्वत्र चैतन्नैवेद्यमाराध्यास्यै निवेदयेत् ॥

(भविष्य पुराणे)

शालाग्रामोद्भवे लिगें बाणलिंगें – स्वयं भुवि ।
रसलिगें तथार्षे च सुप्रसिद्ध – प्रतिष्ठिते ॥
हृदये चंद्रकान्ते च स्वर्णरौप्यादि निर्मिते ।
चान्द्रायण – समं ज्ञेयं शंभोनैवेद्य – भक्षणम् ॥
लिंगे स्वयंभुवे वाणे रत्नजे रसनिर्मिते ।
सिद्ध प्रतिष्ठिते चैव नचण्डाधिकृतिर्भवेत् ॥
यत्र चण्डाधिकारोऽस्ति तद्भोक्तव्यं न मानवैः ।
चण्डाधिकारो नो यत्र भोक्तव्यं तत्र भक्तितः ॥

(गौतमीये)

गणेशे वक्रतुण्डाय सूर्ये चंडांशवेऽर्पयेत् ।
विष्णो तु विष्वक्सेनाय शिवे चण्डेश्वराय च ॥
शक्त्युच्छिष्टे शेसिकायै दद्यादर्चन सिद्धये ।
अन्यथा नैव सिद्धि: स्यादर्चाको नरकं वज्रेत ॥

नीराजन करण प्रकार: *(कालोत्तरतंत्रे)*

पञ्चनीराजनं कुर्य्यात्प्रथमं दीपमालया ।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा ॥
आम्रश्चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्त्तितम् ।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधि ॥

अर्थात प्रथम दीपक से नीरांजन करें उसके बाद शङ्खोदक जल से तथा फिर गंडूष से नीरांजन करें फिर आम्र व पीपल से (चामर से) नीराजन भाव प्रकट करके साष्टाङ्ग प्रणाम करें।

(हरिभक्ति विलास) पांव के चतुर्थ भाग में अर्थात् चरण कमल से ऊपर एक बार, नाभिमंडल के पास दो बार तथा मुख मंडल पर एक बार नीराजन करे एवं सभी अङ्गों का सातबार नीराजन करें।

साष्टांगनमस्कार: –

उरसा शिरसा दृष्ट्या मनसा वचसा तथा ।
पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टाङ्ग उच्वते ॥

नवधाभक्ति: *(भागवते)* –

श्रवणं कीतनं विष्णो: स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वंदनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥

प्रदिक्षणाविचार: *(लिंगार्चन चन्द्रिकायाम्)*

एकां चण्ड्यां रवौ सप्त तिस्रोदद्याद्विनायके ।
चतस्रो विष्णवे दद्याच्छिव तिस्र: प्रदिक्षणा: ॥

अर्थात् देवी की एक, सूर्य की सप्त, गणपति की ३ विष्णु की ४ प्रदक्षिणा करें।

शिवप्रदक्षिणायां विशेषः (शिवरहस्ये) साम्बशिव की ५, ८, १०, १२ एवं यथा शक्तिप्रदक्षिणा करे एक प्रदक्षिणा नहीं करें।

चण्ड सोमसूत्रादिशिव पूजायां प्रदक्षिणा विचार –

एक चण्ड्या रवेः सप्त तिस्रः कार्य्या विनायके ।
हरेश्चतस्रः कर्तव्याः शिवस्यार्द्धा प्रदक्षिणा ।।
वृषं चण्डं वृषं चैव सोम सूत्रं पुनर्वृषम् ।
चण्डं च सोमसूत्रं च पुनश्चण्डं पुनर्वृषम् ।।
अपसव्यं यतीनां तु सव्यं तु ब्रह्मचारिणाम् ।
सव्यापसव्य गृहिणामेव शम्भोः प्रदक्षिणा ।

प्रनाल (योनि का) लङ्घन कदापि नहीं करें।

पंचामृतस्नानफलम् (वृहद्नारदीये) –

पय स्नान से सौ अश्वमेघ का फल, दधि(क्षीर) स्नान से सौभाग्य एवं मिष्ठान्न की प्राप्ति। घृत स्नान से मृत्युलोक में राजा होवे एवं स्वर्गादि सुख प्राप्त होवे। मधु (शहद) के स्नान से राज्य के साथ गज रथ अश्वादि बल प्राप्त होवे।

पंचामृत से भगवान को स्नान कराने पर पुनर्जन्म नहीं होता। विष्णु का शङ्ख या तीर्थोदक से स्नान अर्घ्य देने से अपने कुल को तारने का फल प्राप्त होवे।

पंचामृत परिमाण कथनम् (हेमाद्रि) –

शिवधर्म का वचन है कि स्नान सौपल (सौ तोला), अभ्यंग पचीसपल से महास्नान २ हजार पल से होता है।

लिङ्ग में पच्चीस पल से अभ्यङ्ग करावें। शिव को सौ पल घी से स्नान कहा है सौ पल ही मधु, दूध, दधि कहा है। डेढ हजार पल द्वारा ईख के रस से स्नान करा कर गर्म जल से स्नान करावें। (पल का अर्थ एक तोला से है)

(स्कंद पुराण) विष्णु आदि में दूध से दश गुणा दधि, दधि से सौ गुणा धृत से तथा घृत से दश गुणा मधु एवं मधु से दश गुणा ईख का रस होना चाहिये।

मूर्ति प्रतिष्ठापु कलशचक्र विचार :-

प्रतिमा का गर्भगृह मे प्रतिष्ठा स्थापन एक गृहप्रवेश की तरह अधिवास तन मूर्ति प्रतिष्ठा के समय कलश चक्र शुद्ध हो तो अति उत्तम रहे।

आचार्यलक्षणम्

मातृतः पितृतः शुद्धः शुद्धभावो जितेन्द्रियः ।
सर्वागमानां सारज्ञः सर्वशास्त्रार्थ — तत्ववित् ।।
परोपकारनिरतो जप — पूजादितत्परः ।
अमोघ — वचनः शान्तो वेद — वेदार्थपारगः ।।
नित्ये नैमित्तके काम्ये रतः कर्मण्यनिन्दिते ।
यदृच्छालाभ — सन्तुष्टो गुण — दोष विभेदकः ।।

पूजावसाने विविध विषयम्

अष्टरत्नम् – वज्र, मौक्तिक, वैडूर्य, शंख, स्फटिक, इन्द्रनील, महानील।

हरितालादि अष्टद्रव्यं – हरताल, मन, शिला, अभ्रक, कृष्णाञ्जन, माक्षिक, कासी, स्वर्णगौरिक (कहीं कहीं सीसा का भी उल्लेख है)।

अष्टबीजम् – तिल, यव, मूंग, गेंहू (गोधूम), नीवार, श्यामा, सरसों, ब्रीहि।

गोधूम एवं गोधूमान्न – गाय को अन्न खिलावें उसके गोमय में जो साबुत अन्न निकले उसका संग्रह कर साफ करके अन्न प्राप्त करें उसको **गोधूम** कहते है। इस गोधूम से जो सत्तू बनाया जाता है उसे **गोधूमान्न** कहते है।

अष्टधातु– स्वर्ण, रजत, ताम्र, लोह, कासी, पीतल, कतीर(सीसा)

पंचरत्न – कनक, कुलिश(माणक), नीलम, पद्मराग(पुखराज), मोती।

सप्तमृत्तिका– राजशाला, अश्वशाला, गौशाला, वाराहखात, तुलसीस्थल, बाल्मीक (चींटियों के बिल की) नदी या चौराहा संगम।

सर्वौषधी– मुरा, जटामांशी, बच, कुष्ठ, शैलेय, हरिद्रा, दारूहल्दी, सूंठी, चम्पक एवं मुस्ता ।

पल्लवाः – बड़, पीपल, आम, जामुन, गूलर या अशोक

पद्मकेसर – शमी, पलाश, सारि, हरिद्रा, सरसों, प्रियंगु कालाजन।

महौषधिः – गोरोचन, नागकेसर, सहदेवी, नाहर कांटी, (सिंही, व्याघ्रि बला) शङ्खपुष्पी, बच, अवर्चला, ऋद्धि, वृद्धि, शतावरी, सूर्यावर्ता, अपराजिता, विष्णुक्रांता।

विकर द्रव्य — लाजा (चावलों की खीलें) चंदन, सिद्धार्थ, भस्म, दुर्वाङ्कुर, एवं अक्षत ये विघ्नों का नाश करते है। (शारदा तिलक)

षड़ांग धूप — शर्करा, घृत, मधु, गुग्गल, अगरु, शैलज, चंदन।

दशांग धूप - मधु, मुखा, घृत, चन्दन, गुग्गल, अगरु, शैलज, सरलकाष्ठ, शिलारस, श्वेत सरसों।

षोड़शांग धूप — हरड़, गुड, कूड, जटामांशी, देवदारू, लाक्षा, अगरू, तेजपत्र, सरलकाष्ठ, नखी, मुखा, गुग्गल, चंदन, बाला, धूना और शैलज।

दशांग धूप (मदनरत्ने) — षड़भाग कुष्ठं द्विगुणो गुडश्च लाक्षात्रयं पंच नखस्य भागाः। हरीतकी सर्जरस समांशं भागैकमेकं त्रिलवं शिलाजम्। घनस्य चत्वारि पुरस्य चैको धूपो दशाङ्गः कथितो मुनीन्द्रैः। (वामन पुराणे) — रुहिकाख्यं कणं दारु सिह्लकं सागुरुं सितम् ।
शङ्खं जातिफलं श्रीशे धूपानि स्युः प्रियाणि वै ॥

षोडशांग धूप (तंत्रसारे) -

गुग्गुलः सरलं दारूपत्रं मलय — संभवम् ।
ह्रीबेरमगुरुं कुष्ठं गुडं सर्जरसे घनम् ॥
हरीतकीं नखीं लाक्षां जटामांसी च शैलजम् ।
षोडशाङ्गं विदुर्धूपं दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥

शब्दार्थ — सिद्धार्थ (सरसों), शकृत्क्षीर (गोमय), रजनी (हरिद्रा), बालकं (ह्रीबेर), चूतपल्लवाः (आम्रपल्लवा), शिखिपत्र (सर्पकंचुकी), अगत्वचः (कस्तुरी), सरल (देवदारू), ब्रह्मसाल (पारसपीपल), कारवी (सौंफ), गंन्धिनी (तालीसपत्र), चौर (कचूर), रोचन (गोरोचन), कपियुता (लालचंदन), सेव्यकाः (उशीर), घन (मोथा), ऐला (इलायची), त्वच (तज), नख (नखनखी), मांसी (जटामांसी), जल (हाबूबेर), जाति (जावित्रि), लघ (कृष्णागरु)

देव्याधूप — चन्दन, अगर, कस्तुरी, श्वेत सरसों, कपूर, शहद, गौघृत, केसर, गुग्गल, मुलैठी, सितामिश्री, लोहवान।

गंधदाने अंगुलीविचारः — अनामिका से देवता एवं ऋर्षियों के पितृ कार्ये तर्जनी से, स्वयं के मध्यमा अंगुली से गंधानुलेपन करें।

गंधदाने मुद्रा — मध्यमा अनामिका तथा अंगुष्ठ से संयोग अग्रभाग से मुद्रा

दिखावें।

पुष्पार्पणे मुद्रा – पुष्प चढाते समय अगुष्ठ तर्जनी से चढावे। तथा अंगुष्ठ व अनामिका से निर्माल्य करें।

धूपदाने मुद्रा – अनामिका मध्यमा के मध्यपर्व एवं अंगुष्ठ संयोग से मुद्रा दिखावें

निषिद्ध तिथीवाराादि –

पङ्कजं पाञ्चरात्रं स्याद्दशरात्रं च बिल्वकम् ।
एकदशाहं तुलसी नैव पर्युषिता भवेत् ।।

रविवार को भी तुलसी नहीं तोडते है। पहले की तोड़ी हुई काम में ले सकते है।

बिल्वपत्रे विशेष –

त्रिजटापत्रकैकेन हेरम्बं हरिमर्चयेत् ।
कैवल्यं तस्य तेनैव शक्तिपूजाविशेषतः ।।
पत्रं वा यदि वा पुष्पं फलं नेष्टमधोमुखम् ।
यथोत्पन्नं तथा देयं बिल्वपत्रमधोमुखम् ।।

देवभेदेन वर्ज्याक्षतानि :-

नाक्षतैरर्चयेद्विष्णुं न तुलस्या गणाधिपम् ।
न दूर्वया यजद्देवीं बिल्वपत्रैर्न भास्करम् ।।
उन्मत्तमर्क – पुष्पं च विष्णोर्वर्ज्ये सदाबुधैः ।
फलं च कृमिं संयुक्तं प्रयत्नात्तद्विवर्जयेत् ।।

श्री वृक्षस्य शुष्कपत्रादिनिवेदने विचारः (स्कान्दे) –

शुष्काण्यपि च पत्राणि श्रीवृक्षस्य निवेदयेत् ।

अर्थात् स्कन्द पुराण मे कहा है कि बिल्वपत्र के सूखे पत्तों को निवेदन करें। मेरे अनुमान से श्रीवृक्ष में अन्य वृक्ष तुलसी तथा शमी पत्र भी आते।

देवताविशेष वाद्य निषेध कथनम् (योगिनी तंत्रे) –

शिवागारे झल्लकं च सूर्यागारे तु शङ्खकम् ।
दुर्गागारे वंशवाद्यं मधूरीं च न वादयेत् ।।

अर्थात् शिव मंदिर में झल्लक (कांसे की, करताल, झांझ) सूर्य मंदिर में शंङ्ख, दुर्गा मंदिर में बंशी एवं माधुरी (छिद्र वाला वाद्य निषेध) नहीं बजावें। ब्रह्मा के मंदिर में ढाक (नगाडा) और लक्ष्मी के मंदिर में घंटा नहीं बजाना चाहिये।

गृहस्थ में केवल घंटी ही शुभ है, झाल, नगाडा शंङ्ख आदि शुभ नहीं है।

***मालाविचारः** (मंत्र खंडे)* -

स्फटिकी मौक्तिकी वापि प्रोक्तव्या सितसूत्रकैः ।
अरिष्टपुत्र जीवैश्चाङ्कैः प्रवालैः सहस्रकम् ॥
स्फटिकैलक्षसाहस्रं मौक्तिकैर्लक्षमेव च ।
दशलक्षं राजताक्षैः सौवर्णैः कोटिरुच्यते ॥
कुशग्रंथ्या च रुद्राक्षैरनन्तगुणितो भवेत् ॥

***कामनाभेदेन मालाविचारः** (कालिका पुराणे)* -

रुद्राक्षमालिका सूते जपेन स्वमनोरथान् ।
पद्माक्षैर्विहिता माला शत्रूनां नाशिनीमता ॥
कुशग्रंथिमयी माला सर्वपापप्रणाशिनी ।
पुत्रजीवफलैः क्लृप्ताकुरुते पुत्रसंपदाम् ॥
निर्मिता रूप्यमणिभिर्ज्जप मालेप्सितप्रदा ।
प्रवालैर्विहिता माला प्रयेच्छेद्विपुलं धनम् ॥
हिरण्यमयी विरचिता माला कामान्प्रयच्छति ।
(तंत्रराजे) गजदन्तैर्गणेश्वरे वैष्णवैः तुलसीमाला ।
त्रिपुरा या जपे शस्ता रुद्राक्षैः रक्तचन्दनैः ॥

(तंत्रांतरे) स्तंभन व बगलामुखी साधना मे हरिद्रा माला, शांति कर्मे श्वेत चंदन, शत्रुनाश एवं उच्चाटन हेतु गर्दभ के दांतो से निर्मित माला, विष्णु उपासना में वैजन्ती माला, लक्ष्मी व काली उपासना में कमलगट्टे की माला । शत्रुनाश हेतु काले मनको की माला भी ग्रहण की जा सकती हैं, आकर्षण में श्वेत एवं वैजन्ती की माला शुभ रहे। दुर्गा उपासना में रक्तचंदन की माला शुभ रहे।

मालामणिसंख्याफलम् (गौतमीये) — २५ मनको की माला मोक्ष हेतु, १५ की अभिचार हेतु, २७ की सर्वसिद्धि हेतु ग्रहण करें। ३० की धनवृद्धि, ५०

की कार्य सिद्धि एवं १०८ मणि की माला सर्वसिद्धि हेतु ग्रहण करें।

कामनाभेदेन अंगुलिनियम (पुरश्चरणदीपिकायाम्) — माला की मणी को अंगुष्ठ के सहयोग से चलाने से मोक्षप्रद, एवं विद्याप्रद, तर्जनी से शत्रुनाश हो, मध्यमा धन प्राप्ति हेतु, अनामिका शांतिप्रदा, तथा कनिष्ठा आकर्षण हेतु प्रयोग की जाती है।

जप समये विशेष — जप करते समय सुमेरू का उलंघन नही करे माला को वक्र करके पुनः जपारंभ करे । जप के अंत में माला को कर्ण से अन्य उच्च भाग से स्पर्श करे । माला को आच्छादित रखे (मालां च मुद्रां च गुरोरपिन दर्शयेत्) माला को हिलाने कंपन करने से सिद्धि हानि होवे, माला के बजने से रोग, बार—बार दूसरे हाथ से स्पर्श (करभ्रष्ट) करने से विनाश, माला को पूरी होने से पहले छोडना जप निष्फल तथा सूत्र के टूटने से हानि अपमृत्युभय होवे।

(वैशम्पायन संहितायाम्)

अङ्गुष्ठमध्यमाभ्यां च चालयेन्मध्यमध्यतः ।
तर्जन्या न स्पर्शदिनां मुक्तिदो गणनक्रमः ।।
जीर्ण सूत्रे पुनः सूत्रं ग्रंथयित्वा शतं जपेत् ।
प्रमादात्पतिता हस्ताच्छतमष्टोत्तरं जपेत् ।।

मालासंस्कार :— (तंत्रसार, पुरश्चरणदीपिकायां) विप्रकन्या से शुभ दिन में श्वेत, रक्त, पीत या कृष्ण सूत्र में (यथा कामना भेदेन) ग्रंथित करायें। एवं शुभ दिन में माला संस्कार करें यथा —

अश्वत्थादि के नव पत्र संग्रहित करे। एक मध्य में रखें अन्य को पद्माकार बनायें। उसके मध्य में माला को स्थापित करें। पद्म में आठ वर्ग (अ वर्ग, क वर्ग च वर्ग.....) की मातृका मंत्रो से अं आं इ ई इस तरह से तथा मध्य में इष्ट मंत्र से आह्वान करे ।

माला को पंचगव्य से प्रक्षालन कर शुद्ध जल से प्रोक्षण करे।

ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः। ॐ मां माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणीं। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तः तस्मान्मे सिद्धिदा भव।। ॐ अक्षमालाधिपतये नमः।

इस प्रकार आह्वान करे पंचोपचार या षोडशोपचार से पूजन करे । माला पर हाथ रख कर **भूत लिपि** (अं आं इं ईं.... हं लं क्षं) तथा इष्ट मंत्र का जाप करे। पुष्पांजलि देवे।

ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमंत्रार्थ साधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा ।

माला को ग्रहण करते हुये प्रार्थना करें —

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे ।
जपकाले च सिद्धयर्थं प्रसीद मम सिद्धये ।।

करमाला विचार **(पुरश्चरण दीपिकायाम्)** — पुरुष देवता की आराधना करते समय में अनामिका के मध्य भाग से मूलभाग, फिर कनिष्ठा के मूलभाग से प्रारंभ होते हुय कनिष्ठिका, अनामिका, मध्यमा एवं तर्जनी के अग्रभाग होते हुये तर्जनी के मूल भाग दश आवृत्ति मंत्र की गिने।

स्त्री देवता की आराधना में अनामिका का मध्य—मूल, कनिष्ठा के मूल से अनामिका मध्यमा के अभाग होते हुये मध्यमा के मूल से फिर तर्जनी के मूल भाग तक दश आवृत्ति मंत्र की जपें।

आसनादि विचारः (पुरश्चरणदीपिकायाम्) -

तूल — कम्बलवस्त्राणि पट्ट — व्याघ्रमृगाजिनम् ।
कल्पयेदासनं धीमान्सौभाग्य — ज्ञान — सिद्धिदः ।।
कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षाप्तिर्व्याघ्रचर्मणि ।
वस्ताजिने व्याधिनाशः कम्बले दुःख मोचनम् ।।
अभिचारे नीलवर्णं रक्तं वश्यादि कर्म्मणि ।
शांतिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वस्मिन्नपि कम्बलः ।।
धवले शांतिकं मोक्षः सर्वार्थश्चित्र कम्बले ।
स्यात् पौष्टिके च कौशेयं शांतिके वेत्रविष्टरम् ।।
सर्वाभावे त्वासनार्थं कुशविष्टरमिष्यते ।

(पुरश्चरण चन्द्रिकायाम्) व्याघचर्म सर्वसिद्धिप्रद, ज्ञान, सिद्धि एवं वशीकरण हेतु मृगचर्म। वस्त्रासन रोगहरण करने वाला, वेत्र का श्रीवृद्धि हेतु, कौशेय पौष्टिक, कम्बल दुःख मोचक, स्तंभन मे गजचर्म, मारण हेतु महिषचर्म, उच्चाटन

में मेषचर्म, विद्वेषण में जाम्बुक चर्म काम मे लेना चाहिये ।

जपकाले दिक्फलम् –

तत्वपूर्वाभिमुखो वश्यं दक्षिणे चाभिचारिकम् ।
पश्चिमे धनदं विद्यादुत्तरे शांतिदं भवेत् ।।
अग्रेपृष्ठे तथा वामे समीपे गर्भमन्दिरे ।
जपं प्रदक्षिणं होमे न कुर्याद्धि शिवालये ।।

निषिद्धासनानि (पुरश्चरणदीपिकायाम्) –

वंशासने तु दारिद्रयं पाषाणे व्याधिसंभव: ।
धरण्यां दु:ख संभूतिर्दौभाग्यं छिद्रदारुजे ।।
तृणे धन – यशोहानि पल्लवे चित्तकविभ्रम: ।।

जपेकर्तव्यमाह (याज्ञवल्क्य) –

न चङ्क्रमन्न प्रहसन्न पार्श्वमवलोकयन् ।
नापाश्रितोप जल्पंश्च न प्रावृत् शिरास्तथा ।
न पदापादमाक्रम्य न चैव हि तथा करौ ।।
धारयेन्मनसा मंत्रान्न जिह्वौष्ठौ विचालयेत् ।
न कंपयेच्छिरो ग्रीवां दन्तान्नैव प्रकाशसयेत् ।।
यज्ञराक्षसभूतानि सिद्धविद्याधरास्तथा ।
हरन्ति प्रसभं यस्मात्तस्माद्गुह्यं समाचरेत ।।

पुरश्चरणकाले निषेध्यम् –

श्रुतिस्मृति विरोधं च जपं रात्रौ विवर्जयेत् ।
भूशय्या – ब्रह्मचारित्वं मौनचर्या न सूयता ।।
लवणं क्षारमाम्लं च व्यञ्जनं कास्य भोजनम् ।
ताम्बूलं च द्विभुक्तं च दु:संवादं प्रमत्तताम् ।।
नित्यं त्रिषवणं स्नानं क्षुद्रकर्म विवर्ज्जनम् ।
(ग्रन्थान्तरेपि)

"जिह्वा – दग्धा परान्नेन करौ दग्धौप्रतिग्रहात् ।

परस्त्रीभिर्मनो दग्धं मंत्रसिद्धिः कथं भवेत् ॥

शयन नियमः -

स्वगृहे प्राक्शिराः शेते श्वाशुरे दक्षिणाशिराः ।
प्रवासे पश्चिमशिरा न कदाचित् उदक्शिराः ॥

पंचवैश्वदेव बलिम् (भोजन पूर्व) – पूर्वाभिमुख होकर मौन व्रत से भोजन करें इसके पहले पंचदेव बलि प्रदान करें।

ॐ भूपते नमः । ॐ भुवनपतये नमः । ॐ भूतानाम्पतये नमः । ॐ धर्माय नमः ॐ चित्र गुप्ताय नमः। ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा से घृत व जल प्रक्षेप करें।

भोजनान्तेस्मरणम् -

अगस्त्यं वैनतेयं च शनिं च बडवानलम् ।
आहार परिपाकार्थं स्मेद्भीमं च पंचकम् ॥
आतापी मारितो येन वातापि च निपातितः ।
समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ॥
भूयोऽप्याचम्य कर्तव्यं ततस्ताम्बूल–भक्षणम् ।
भुक्तोपविष्टः श्रीकृष्णं परं ब्रह्म विचारयेत् ॥

ब्राह्मण भोजन संख्या - (मंत्र महोदधौ)

शान्तौ वश्ये भोजनयेत् होमाद्विप्रान् दशांशतः ।
उत्तमं तद्भवेत् कर्म तत्वांशेन तु मध्यमम् ॥
होमाच्छतांशतो विप्रभोजनं त्वधं तु तत् ।
शान्तिर्द्विगुणितं विप्र भोजनं स्तंभने मतम् ॥
त्रिगुणं द्वेषणोच्चाटे मारणे होमसंमितम् ।

सामान्य क्रम में वैसे मंत्र का दशांश हवन, हवन का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश संख्यानुरूप ब्राह्मण भोजन संख्या तो होनी ही चाहिये।

दक्षिणाविचार (ब्रह्मवैवर्त्ते) –

यज्ञो दक्षिणया सार्द्ध पुत्रेण व फलेन च ।
कर्मिणां फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदुः ।।
मुहुर्त्ते समतीते तु भवेच्छतगुणा च सा ।
त्रिरात्रे तद् शतदशगुण सप्ताहे द्विगुणा ततः ।
मासे लक्षगुणा प्रोक्ता ब्राह्मणानां च वर्द्धते ।
संवत्सरे व्यतीते तु सा त्रिकोटिगुणाभवेत् ।।
कर्म्मा तद्यजमानानां सर्वं च निष्फलं भवेत् ।

पूर्णाहुतिहोमो न कर्त्तव्य विचारः (प्रयोगरत्ने) –

विवाहादि क्रियायां च शालायां वास्तु पूजने ।
नित्य होमे वृषोत्सर्गे न पूर्णाहुति माचरेत् ।।

मन्त्राणांदशसंस्कारः –

(सिद्धि हेतु मंत्र जाग्रति के १०संस्कार तथा २८ जप रहस्य इस पुस्तक के भाग २ में विशेष विवरण के साथ दिये गये है।)

कूर्मचक्र विधानम् (शारदा तिलके) – कूर्म चक्र का विधान मंत्र सिद्धि हेतु विचारा जाता है। इसको जानने के लिये पूजा स्थल (मण्डप) या दीप प्रदेश को कूर्माकार रूप में कल्पना करें या तो उसे आयताकार चौकोर मानकर ९ भाग की इस तरह कल्पना करें। जैसा कि चित्र में बताया गया है –

ईशान	पूर्व	आग्नेय
क्ष त्र ज्ञ ८	क ख ग घ ङ १	च छ ज झ ञ २
उत्तर — श ष स ह ७	(मध्य — ९)	ट ठ ड ढ ण ३ — **दक्षिण**
य र ल व ६	प फ ब भ म ५	त थ द ध न ४
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य

मध्य भाग (९):

अं अः	अ आ	इ ई
ओ औ	९	उ ऊ
ए ऐ	ऌ ॡ	ऋ ॠ

पूर्वादि क्रम से (१ से ८ नंबर तक) ८ कोष्ठकों में "क" वर्ग आदि क्रम से लिखें मध्य में "अ" वर्ग (९) लिखें।

जिस स्थान कोष्ठक में ग्राम देश व साधक के मंत्र का प्रथम अक्षर या नाम आता हो (तीनों में किसी एक को इष्ट मानें) उस कोष्ठक में साधक दीप स्थापित करें या उस स्थान पर बैठ कर साधक मंत्र सिद्ध करें। जिस कोष्ठक में ग्रामाक्षर आवें व कूर्म का मुंह हुआ बगल के भाग दो हाथ पीछे का भाग पृष्ठ हुआ, अंतिम भाग पुच्छ हुआ।

जैसे कि १ नं. में ग्रामाक्षर आया तो १ नं. में मुंह, ९ नं. पीठ, ५ नं. पुच्छ, ७, ३ कुक्षी भाग शेष ८,२,६,४ पैरों के भाग हुये। अगर २ नं. मे ग्रामाक्षर या मंत्राक्षर है तो २ नं. शिर, ९ पृष्ठ, ६ पुच्छ, ४,८ कुक्षि तथा शेष १,३ हाथ ७,५ पैर के भाग हुये।

यदि मध्य भाग ९ में ग्रामाक्षर आता है तो ९ नं. शिर, ५ नं. पृष्ठ, १ नं. पूच्छ हुआ। ४ व ६ कुक्षि भाग, शेष ३,७ हाथ २,८ पैर के भाग हुये।

कूर्मफलम् -

मुखस्थो लभते सिद्धिं करस्थः स्वल्पभोगभाक् ।
कुक्षिस्थित उदासीनः पादस्थो दुःखमाप्नुयात् ॥
पुच्छस्थः पीड्यते मंत्री बंधनोच्चाटनादिभिः ।
कूर्मचक्रमिदं प्रोक्ता मन्त्राणां सिद्धि साधनम् ॥

होमकाले ऋषि छंदविचारः *(कृष्णभट्टीये)* -

न च स्मरेंदृषिं छंदः श्राद्धे वैतानिके मखे,
(अन्यच्च) अग्नि होत्रे वैश्वदेवे विवाहादिविधौ तथा।
होम काले न दृश्यन्ते प्रायश्छन्दर्षिदेवताः ॥

ग्रहमखनैवेद्य बलि विचारः -

गुडौदनं रवैर्दद्यत्सोमाय घृतपायसम् ।
अङ्गारकाय संयावं बुधाय क्षीरषाष्टिकंम् ॥
दध्योदनं तु जीवाय शुक्राय च घृतौदनम् ।
शनैश्चरा कृसरमाज मांसं च राहवे ।
चित्रौदनं तु केतुभ्यः सर्वभक्षैरथार्चयेत् ॥

ग्रहसमिधः – सूर्यादि नवग्रहों की समिधा क्रमशः निम्न होती है।

अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः ।
उदुम्बरः शमी दूर्वा कुशाश्च समिधास्त्विमाः ।।

शांतिकर्माणि काल विचारः –

शांतिकर्माणि कुर्वीत रोगे नैमित्तिके तथा ।
गुरु भार्गवमौढ्येऽपि दोषस्तत्र न विद्यते ।।

अर्थात रोग एवं कुयोग शांति के लियेगुरु, शुक्रास्तकाल में भी शांतिकर्म, अनुष्ठान किया जा सकता है।

दुर्गायागे गुरुशुक्रास्त विचारः (*धर्मप्रदीपे*) –

नष्टेशुक्रे तथा जीवे सिंहस्थे च बृहस्पतौ ।
कार्या चैव स्वदेव्यार्चा प्रत्यब्दं कुलधर्मतः ।।

अर्थात् कार्य विशेष हेतु गुरुशुक्रास्त में भी दुर्गायाग शतचण्डी प्रयोग किया जा सकता है।

नोट :– मेरा अनुभव यह है कि मैंने स्वयं अधिकतर शतचण्डी प्रयोग कामना हेतु गुरुशुक्रास्त व मल मासादि में ही करायें है जिनमें से सभी में मां ने फल प्रदान किया एवं प्रयोग सफल रहें है। परन्तु प्रतिष्ठादि कर्म नहीं करें।

अग्निवासः –

(विशेषतः) विवाह यात्रा व्रत गोचरेषु चूडोपनीति ग्रहणै युगाद्यैः ।
दुर्गा विधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्नि चक्रं परिचिंतनीयम् ।।

अंकुरार्पण विचारः (शौनक) – आधान, गर्भसंस्कार, जातकर्म और नामकरण को त्याग कर अन्यत्र मंगलकार्य मे अंकुरार्पण का विधान करना चाहिये।

मंदिरादौ 64 पद वास्तु पूजन विचारः (*वास्तुराजवल्लभे*) –

ग्रामे भूपतिमन्दिरे च नगरे पूज्यश्च तुष्टिकै ।
एक शीतिपदैः सकल भवने जीर्णे नवाब्धंशकै ।।
प्रसादे तु शतांशकैस्तु सकले पूज्यस्तथा मण्डपे ।
कूपे षण्नव चन्द्रभाग सहिते वाप्यां तडागे वने ।।

कूप एवं तड़ाग और बाग की प्रतिष्ठा में १६९ पद के भी वास्तु का विधान

लिखा है।

मूर्तिस्थापने दिक्विचारः (देवी पुराणे) -

यांम्यास्थ शुभदा दुर्गा पूर्वास्या जयवर्द्धिनी ।
पश्चिमाभिमुखी नित्यं न स्थाप्या सौम्यादिङ्मुखी ।।

अर्थात उत्तरामुखी देवी की स्थपना न करें। गणेशजी की हो सकती है।

नदीनां रजोदोष कथनम् (हेमाद्रीवपिः)

सिंह — कर्कटयोर्मध्ये सर्वा नद्यो रजस्वलाः ।
न स्नानादीनि कर्माणि तासु कुर्वीत मानवः ।।

सिंह कर्क संक्रांति मे नदियां रजोदोष युक्त होती है अतः स्नानादि नहीं करें। यह इसलिये कहा जाता है वर्षाकाल में पानी के साथ मिट्टी कीचड आदि बहकर आने से पानी स्नानादि हेतु शुद्ध नहीं रहता है इसके बाद धीरे धीरे जल स्थिर होने से जल शुद्ध हो जाता है।

यह नियम छोटी नदियों हेतु है तथा जो बडी नदियां समुद्र में जाकर गिरती है उनके नियम अलग है।

(भविष्यपुराणे, ब्रह्मपुराणे, मदनरत्ने) कर्क की संक्रांति के आदि तीन दिन में महानदियां रजस्वला होती है। गंगा रजस्वला नहीं होती है। बाकि अन्य दिनो में गोदावरी, यमुना, सरस्वती, कुरुक्षेत्रस्था, क्षोण, सिंधु, हिरण्य, कोक, लोहित, घर्घर तथा शतद्रु ये रजोदोष से हीन रहती है।

सूतके सन्ध्याविधिः (कात्यायनः)

सूतके मृतके कुर्यात्प्राणायाम — मन्त्रकम् ।
तथा मार्जन मंत्राश्च मनसो मार्जयेत् ।।
(च्यवनः) अर्घ्यान्ता मानसीकृत्वा कुशवारीविवर्जिता ।
जलाभवे महामार्गे बन्धने त्वशुचावपि ।
उभयोः सन्धयोः काले रजसावार्घ्यमुच्यते ।।

अशोचेऽपिः — वैश्वदेवहोम दान प्रतिग्रह स्वाध्याय परान्न भक्षणादि न कुर्यात्।

कंबले नील दोष विचारः — कम्बले पट्टवस्त्रे च नीली दोषो न विद्यते (स्मृ. सं.)

स्त्रीणां दक्षिणभाग विचार: -

वामे सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमे ।
वामेऽशनैक शय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी ।।
सर्वेषु शुभकार्येषु पत्नी दक्षिणत: शुभा ।
अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामत ।।
पत्नी वासे ऋषु स्थाने पितृणां पादशौचने ।
रथारोहण काले च ऋतुकाले सदा भवेत् ।।

स्त्रीणां यज्ञादौ अधिकार विचार:

स्त्रीणां देवार्चन विधि: (स्मृत्यन्तरे)

स्त्री शूद्रो ऽनुपवीतश्च वेदमन्त्रान् विवर्जयेत् ।
अत: स्त्रिभि: कलौ पुराण विधिना देवार्चनादिकं कर्तव्यम् ।।
वैशेषिक कार्यसमये देवतार्चनादौ तु पतिना सह वेदाक्त कर्मण्यपि स्त्रीणामधिकार: । स्त्रीभि: ब्राह्मणं पुरस्कृत्य अष्टादश पुराणानि श्रोतव्यानि ।
मासेषष्ठे सप्तमे वाष्टमे वा प्राप्ते पत्न्या नैव कुर्यात्कदाचित्।
होमं यानं देवयात्रां तथैव तस्या हस्तेनाशनं विप्रपुण्यम् ।।

स्त्रीणां यज्ञादौ अधिकार विचार: (निर्णय सिन्धु पेज नं. १२९)

जैमिनि एवं कात्यायनादि महर्षियों के मतानुसार स्त्रियों को वेदा ध्ययन निषेध हाने से श्रौतकर्म मंत्र साधना में "स्वातन्त्र्येणाधिकारो नास्तीति तथापि स्मार्तेषु रुद्रयागादिस्वाधिकारो भवतुमर्हति ।" यथा हि वैदिकमन्त्र साध्येषु श्राद्धादिषु स्त्रीणां स्वतो मंत्रोच्चारण निषेधेऽपि ऋत्विग्द्वारा श्राद्धादिकरणेऽधिकारोऽस्येवेति निर्णीतं निबंध कृद्धि: अर्थात कर्म रुद्रयागादि में श्राद्धादि कार्य में वेदिक मंत्रो का उच्चारण ब्राह्मणों द्वारा कराने पर स्वयं उस कार्य को करने का अधिकार स्त्रियां पुरुषवत् रखती है।

"विधवा स्वयं संकल्पकृत्वा, अन्यद् ब्राह्मणद्वारा यज्ञादि कारयेत्"
(इति निर्णय सिन्धौ)

यथा शांतिक–पौष्टिक–वास्तु–तडागोत्सर्गादिषु स्मार्तकर्मसु वैदिक मंत्र साध्येष्वपि ऋत्विक् कर्तृक मंत्रोच्चारण पूर्वकं स्वातन्त्र्येण स्त्रीणा मधिकारः स्थापितौ इतिदानकमलाकरादौ।

अर्थात् दानकमलाकर के मत से वैदिक मंत्रो का उच्चारण ब्राह्मणों द्वारा कराने पर स्त्रियों को शांतिक, पौष्टिक, वास्तु, तडाग उत्सर्ग एवं अन्य स्मार्तादि कर्म कराने का अधिकार सिद्ध होता है।

"गृह्य सूत्रे" होमाङ्ग कुशकाण्डिद्यङ्गापेक्षेषु तुलादानादिषु तदध्यनाभावे कथं स्त्रीणामधिकार इतिचेद् न।

अर्थात् वेदाध्ययन के अभाव में स्त्रियों को होम कुशकाण्डिकादि कर्म तुलादानादि में अधिकार कैसै है ऐसा नहीं है अर्थात् अधिकार है।

एवमेव (गृह्यसूत्रानुसारेण) रुद्रयागादावपि ऋत्विग्भिरेव मंत्रपठनात् स्त्रीणां केवलं द्रव्यत्यागास्यैवानुष्ठयेतया तदनुष्ठाने निषेधाभावत्। स्त्रीणामपि ऋत्विग्द्वारा स्मार्त्त–रुद्र विष्णु यागाद्यनुष्ठाने ऽधिकारो भवत्यवेति युक्तमुत्पश्यामः ।

दानकमलाकर का कथन है कि "गृह्यसूत्र" के अनुसार भी स्मार्त कर्म विष्णु रुद्रयाग में ऋत्विकों द्वारा मंत्र पठन से अनुष्ठान यज्ञादि मे द्रव्यत्याग का अधिकार स्त्रियों को है।

(रुद्र कल्पद्रुमे) यदि वैदिक मंत्र साध्यतया स्त्रीणामधिकार तर्हि श्राद्ध तुला दानादि नामपि वैदिक मन्त्र साध्यतया तत्र कथमधिकारः स्त्रीणामृत्विग्द्वाराऽपि? यदि ऋत्विग्द्वाराऽनुष्ठाने दोषो नास्तीत्युच्यते, तर्हि अत्राप्यनुष्ठाने कुतो नाधिकारः? अतश्च स्त्रीणा वैदिक मंत्रोच्चारण निषेधात्तत्राधिकाराभवेऽपिऋत्विग्द्वारा रुद्रयाग विष्णुयागाद्यनुष्ठाने न दोष इति।

अर्थात "रुद्रकल्पद्रुम" में कहा है कि जब वैदिक मंत्रोच्चारण ऋत्विक् द्वारा करने पर स्त्री को श्राद्ध तुलनादि का अधिकार है तो अनुष्ठान, रूद्रयाग विष्णुयाग का अधिकार क्यो नही होगा?

पुनः प्राचीन समय में भी सभी वर्ग की स्त्रियों को वेदाध्ययन निषेध नही था। प्राचीन समय में भी "मैत्रेयी", "गार्गी" आदि उच्च कोटि की विदुषी महिलायें

हुयी थी जो **"शास्त्रार्थ निर्णय"** में भी भाग लेती थी। **"अगस्त ऋषि"** की पत्नि **"लोपोमुद्रा"** ने अपने पति को **" श्री ललिता त्रिपुर सुंदरी"** की दीक्षा दी थी व साधना में सहयोग किया। **"शंकराचार्य"** एवं **"मंडन मिश्र"** के बीच शास्त्रार्थ समय **"मण्डन मिश्र की पत्नि"** स्वयं निणर्य कर्ता थी। काशी नरेश की पत्नि **"मदालसा"** उच्च कोटि की विदुषी थी। अत: सभी स्त्रियों को वेदाध्ययन निषेध होता तो ये महिलायें विदुषी कैसे होती? तंत्र शास्त्र में स्त्रियों के मंत्र जाप फल को पुरुष से चतुर्गुणा बताया है।

शूद्रों मे भी सूत जी सभी शास्त्र के ज्ञाता कैसे हुये? इसलिये स्त्री व शुद्र जो अदीक्षित होता, संस्कार हीन होता, उनके लिये नियम अलग थे और दीक्षित व संस्कार वालो को अध्ययन का अधिकार था।

पुन: अपवाद – "यज्ञ मीमांसा" में कहा गया है कि अगर स्त्रियां तिलादि आदि से हवन करे तो आचार्य को पाप लगता है। टीका में कहा है कि तिल भी रज है और स्त्री भी रजो गुणी है अत: स्त्री हवन करे तो रजो दोष बनता है। इसके निराकरण मे **"गृह्यसूत्र"** व **"दान कमलाकर"** आदि के मत देखे तो वहां श्राद्ध कर्म में ऋत्विक् द्वारा स्त्री को अधिकार है, तो उसमें तो तिल कर्म में आयेगा ही अत: यह अपवाद युक्ति संगत नही निरर्थक सिद्ध हुआ। बचाव पक्ष मे पण्डित पुन:तर्क देवे की निर्णय सिंधु तो **संकलित ग्रंथ है आर्ष ग्रंथ** नहीं है। तो यज्ञ मीमांसा भी संकलित ग्रंथ है। **"स्मृतियों"** में पति के साथ देवार्चन यज्ञादि में वैदिक कर्म में भी अधिकार है।

यथा – देवताार्चनादौ तु पतिनासह वेदोक्त कर्मण्यपि स्त्रीणामधिकार: ।

अर्थात् यजमान सपत्निक हो तो वेदोक्त मंत्र उच्चारण ऋत्विक् द्वारा करने पर स्त्री को भी देवार्चन व होमकाल में द्रव्यत्याग का अधिकार है। **नारद पंचरात्रौ** (जयाख्य पाद्म संहितायाञ्च) वैदिक मंत्रों का उच्चारण वरण किये हुये ऋत्विक् से करने पर रुद्र विष्णु यागादि में स्त्री को कार्य का अधिकार है।

यज्ञोपवीत विषय:

पारिजात में देवल ने कह्य है कि कार्पास, क्षौम(रेशम), गौ के बाल, सण, बिल्वतृण से उत्पन्न यथासंभव द्विजाति यज्ञोपवित धारण करें।

(यज्ञोपवीत धारण) **"कात्यायन"** के अनुसार पृष्ठदेश में और नाभि में धारण

करने से कटिभाग (कमर) में प्राप्त हो जाय वह यज्ञोपवीत धारण करें। अतिलंबा व ऊँचा न होवे। (वशिष्ठ) "नाभि के ऊपर यज्ञोपवीत होने से आयुनाश नाभि के नीचे होने से तप:क्षय होता है। अत: बुद्धिमान यज्ञोपवीत नाभी के बराबर रखें।

अथ यज्ञोपवीतधारणम् - यज्ञोपवीतमिति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषि: लिङ्गोक्ता देवता, त्रिष्टुप छन्द: यज्ञोपवीत धारणे विनियोग:।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तुतेज: ।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवितेनोपनह्यामि ।।

अनेन मंत्रेण प्रथमं दक्षिणबाहुमुद्धृत्य पश्चात्कण्ठे यज्ञोपवीतानां पृथक् पृथक् धारणं कुर्यात । ततौ आचमनं कुर्यात्।

जीर्णसूत्रत्याग मंत्र: — ॐ एतावाद्दिनपर्यन्त ब्रह्मत्वं धारितं मया। जीर्णत्वाच्च परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ।।

इति मंत्रेण जीर्ण यज्ञोपवीतं शिरोमार्गेण नि:सार्य सलिले क्षिपेत्। यथा शक्ति गायत्री जपं कृत्वा करौ बद्ध्वा प्रार्थयेत् ।

प्रामादाद्यज्ञोपवीतनाशे प्रयोगविधि: -

पतितं त्रुटितं वापि ब्रह्मसूत्रं यदाभवेत् ।
नूतनं धारयेद्विप्र: स्नान—संकल्प पूर्वकम् ।। (वायु पुराणे)

संकल्प - अद्येत्यादि देशकालयो: संकीर्तनान्ते मम यज्ञोपवीतनाश जन्य दोषनिवारणार्थं प्रायश्चित्ताङ्ग भूतम् आज्यहोममहं करिष्ये।

स्थण्डिल वा कुण्ड बनाकर प्रजापति आदि की आहुति देकर प्रायश्चित्त हवन करें। तद्यथा —

ॐ मनोयोति र्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं यज्ञं समिमं दधातु ।
या इष्टा उषसो निम्रुचश्च ता: सन्दधामि हविषा घृतेन स्वाहा ।।१।।
ॐ अग्नेव्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मेराध्य तां स्वाहा ।।२।।
ॐ वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मेराध्यतां स्वाहा ।।३।।
ॐ आदित्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यतां स्वाहा।।४।।

ॐ भू स्वाहा ।, ॐ भुव: स्वाहा।, ॐ स्व स्वाहा।, ॐ अग्ने

स्विष्टकृते स्वाहा।।

तत् पश्चात् यज्ञोपवीत के गंधाक्षत करके नूतन यज्ञोपवीत को धारण कर आचमन करें। गायत्री मंत्र का दशबार स्मरण करें।

पंचगव्यप्रमाण एवं प्रयोगविधिः (महिमा)

गोमूत्रे वरुणो देवो हव्यवाहस्तु गोमये । क्षीरशशधरो देवो वायुर्दध्नि समाश्रितः।। भानुः सर्पिषि संदष्टो कुशे ब्रह्मादिदेवता । जलेसाक्षाद्धरिः संस्थः पवित्रं तेन नित्यशः।।

(प्रमाण) पलमात्रान्तु गोमूत्रमंगुष्ठार्धन्तु गोमयम् । क्षीरं सप्तपलं ग्राह्यं दधित्रिपलमीरितम् । सर्पिस्त्वेकपलं देयमुदकं पलमात्रकम्।।

विधिः – ताम्र पात्र या पलाश पत्र द्रोणपात्रादि में "गायत्री मंत्र" से गोमूत्र गेरें उसमे "गंधद्वारां" मंत्र से "गोमय" मिलावें।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यं भवा वाजस्य सङ्गथे।

इस मंत्र से दूध मिलावें। ॐ "दधिक्राव्णो" मंत्र से दधि तथा ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धानामासि प्रियं देवनामनाधृष्टं देवयजनमसि। इस मंत्र से "घृत" का संग्रहण करें।

तत्र कुशोदकं – ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विन्नो र्बाहूभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। इन सबका आलोडन करें।

ग्रहण विधि – गायत्री व हरि स्मरण करके पंचगव्य को ग्रहण करें।

यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके (तावके) ।
प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिबेन्धनम् ।।

जपसंख्यागणनाविधिः (कुलावर्णवे) ***माला स्तोत्र जपादि विषये-***

नाक्षतैर्हस्त पर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकः ।
चन्दनैर्मृत्तिकाभिश्च जपसंख्या न कारयेत् ।।
लाक्षा कुशं च सिन्दूरं गोमय च करीषकम् ।
विलोड्य गुटिका कृत्वा जपसंख्यां तु कारयेत् ।।

लोकाचार में सुपारी व इलायची पर भी गणना करते है।

अथ पंचायतन देवता स्थापनम्

पंच ब्रह्म याने पंच ओंकार देवता प्रधान माने गये है। उनमें **शिव, शक्ति(देवी), गणेश, सूर्य एवं विष्णु** को परम ब्रह्म मान कर ही उपासना क्रम व सम्प्रदाय बनें है। हर व्यक्ति का अपना अलग इष्ट होता है अत: इष्ट के साथ अन्य देवताओं का स्थान कैसै होगा इसके लिये **"पंच—पंचायतन चक्र"** का अवलोकन करें, मध्य में अपने इष्ट को मानकर अन्य देवताओं की स्थापना इस प्रकार करें —

(१) श्री शिव पंचायतनम्

विष्णु		सूर्य
	शिव	
देवी		गणेश

(२) श्री विष्णु पंचायतनम्

शिव		गणेश
	विष्णु	
देवी		सूर्य

(३) श्री देवी पंचायतनम्

विष्णु		शिव
	देवी	
सूर्य		गणेश

(४) श्री सूर्य पंचायतनम्

शिव		गणेश
	सूर्य	
देवी		विष्णु

(५) श्री गणेश पंचायतनम्

विष्णु		शिव
	गणेश	
देवी		सूय

शतचण्डीविधानं च सहस्रचण्डीविधानम्

दुर्गापाठ वृद्धि विचारः –

एक द्वे त्रीणि चत्वारि जपेद्दिन चतुष्टयम् ।
रूपाणि क्रमशस्तद्वत् पूजादिकमाचरेत् ॥

इस तरह से चार दिन में दश पाठ करें । पांचवें दिन हवन करें।

शुभ लक्षणान् दशविप्रान् मधुपर्क वस्त्रहमदानादिना वृणुयात् । (आचार्याय तु द्विगुणम्) ते च यजमानदत्तासनेषु दत्तमालाभिः समाहिता सुमनसो भगवतिं स्मरन्तः । सप्तशती मूलमंत्रेणवैद्यां कुंभ स्थापित्वा तत्र दुर्गामावाह्य षोडशोपचारैः संपूज्य। प्रत्येक दशकृत्वः सप्तशतीमयुतं च नवार्णं पृथक् जपेत्। हविष्य भोज्य भोजन ब्रह्मचर्य भूयशयना स्पृश्यास्पर्शादि नियमांश्चरेयुः ॥

शतचण्ड्यां द्विहस्तं सहस्त्र चण्ड्यां चतुर्हस्तं कुण्डं स्थण्डिलं वा चतुरस्त्र पद्मकण्डं वा कुर्यात कुण्डग्रंथोक्त विधिना कृत्वा। शतचण्ड्यां पलेन (तोला) सहस्त्रचण्ड्यां पल पंचकेन मूर्त्यध्यायोक्त प्रतिपादितां महिषमर्दिनी प्रतिमां कारयित्वाअत्र शतचण्डीजपे ऋत्विजो नव आचार्यो दशमः। सहस्त्र चण्ड्यां शतमृत्विजः अष्टौ लोकपालाः भवन्ति प्रत्येक चण्डिकापाठम् विदध्युस्तु दिशा मितान्। अयुतं प्रजपेयुस्ते प्रत्येकं नववर्णकम्। पूर्वोक्ताः कन्यकाः पूज्याः पूर्वमन्त्रैः शतं शुभाः। एवं दशाहं संपाद्य होमं कुर्युः प्रयत्नतः।। सप्तशत्याः शतावृत्या प्रतिश्लोकं विधानतः। लक्षसंख्यं नवार्णेन पूर्वोक्तैर्द्रव्य संचयः।।

क्यों कि एक पाठ के साथ १० माला नवार्ण की फेरने से शतचण्डी पाठ के साथ एक लक्ष नवार्ण जप हुये तो मंत्र के दशांश का होम चण्डी पाठ के अलावा करना होगा इसलिये कहा कि —

होम काले बीज संयोगो दुर्गामंत्रेण पृथक हुनेत् ।

(शतचण्डी प्रयोगे) -

सप्तशत्यादशावृत्त्या प्रतिश्लोकें हुतं चरेत् । अयुतं च नवार्णेन स्थापिताग्नौ विधानतः।। कृत्वाऽऽवरण देवानां होमं तन्नाम पूर्णाहुतिं सम्यग्देवमग्निं विसृज्य च। अभिषिञ्चेच्च यष्टार विप्रोघः कलशौदकैः। सहस्त्रं चण्डिकां पाठं कुर्याद्वा कारयेत्तथा । भोज्याः सहस्त्र विप्रेंद्रा गोशतं दक्षिणां दिशेत्। गुरवे द्विगुणं देयं शय्यादानं तथैव च। सप्तधान्यं च भूदानं श्वेताश्वं च मनोहरम्।। अष्टदशभुजां देवी

(५ तोला की) सर्वायुध विभूषिताम्। अन्नं वारि चदातव्यं सहस्रं प्रत्यहं विभौ।।

दुर्गा होमे मन्त्राणाम् होम संख्याः

होमकाले बीज संयोगो दुर्गामन्त्रेण पृथक हुनेत् ।
कामना बीज संयोगो दुर्गामन्त्रेण संहुनेत् ।।

इसका आशय यह है कि दुर्गा पाठ **(बिना संपुट के)** करे तो उसके साथ १०माला नर्वाण मंत्र की जपने का विधान है अतः शतचण्डी प्रयोग के साथ एक लाख नवार्ण मंत्र हुये, अतः दुर्गा पाठ के अलावा नवांश के जप का दशांश होम भी अलग होगा और यदि संपुट के साथ पाठ किया है तो उसका दुर्गा मंत्रो के साथ पृथक् पृथक् हवन करना चाहिये।

दुर्गास्तवन मंत्राणां संख्या सप्तशतं भवेत् ।
कामना मंत्र संख्या च शतं चैव चर्तुदश ।।२।।
मध्ये मंत्रान् सप्तशतं होमकाले तु योजयेत् ।
पाठे मंत्र पुटं वाच्यं होम मंत्राः पृथक् — पृथक् ।।३।।
होम संख्या च मंत्राणां शतं वै चैक विंशतिः ।
पाठे बीज पुटं वाच्यं होमे बीज पुटं हुनेत् ।।४।।

(दुर्गा कल्प,अनुः प्रकाश).

पुनः मंतातरे (कर्मठ गुरौ):— कर्मठ गुरु मे प्रतिष्ठा सागर में से एक श्लोक दिया है जिसका स्पष्टीकरण पूरा नही होने से अपवाद भ्रांति पैदा होती है।

सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यहऽपि (प्रति+एहि+अपि) तथैव च ।
नानाऽर्थसिद्धि वैकल्ये होमन्तु विपुलं चरेत् ।।

यहाँ यह तो साफ लिखा है कि होम बहुत तरह से होता है संपुट से हवन नही करे, परन्तु ऐसा करते है प्रथम पंक्ति के तीन आशय बनते है —

(१) एक पाठ के साथ १० माला नर्वाण का विधान भी लिखा है अतः एक शतचण्डी प्रयोग मे १०० पाठ के साथ एक लाख जप नवार्ण के हुये ऐसी परिस्थिति में संपुट के कामना बीज मंत्रो की २१०० आहुति एवं नवार्ण के जाप के दशांश होम से विधान बहुत बढ जाता है तब संपुटित विधान से हवन न करे

एवं नवार्ण का दशांश (एक अयुत) होम करे । यथा—

होमकाले बीज संयोगे दुर्गामंत्रेण पृथक हुनेत् ।

(२) **"संपुटे हवनं नास्ति"** दूसरा आशय यह है कि कामनामंत्र एवं दुर्गासप्तशती का मंत्र (१) तीनां का एक ही होम (पुटीत होम) न करें।

(३) **"संपुटे हवनं नास्ति"** दुर्गापाठ मंत्र (१) एवं कामना मंत्र का (२) का अलग अलग हवन नहीं करें परन्तु ऐसा करते तो हैं तथा हवन की बहुत सी विधियाँ भी है। पुनः सुपुट हवन (२१००) आहुति विधान भी प्रचलन में स्वीकार किया है जो कि श्लोक दूसरी पंक्ति में उद्धृत है।

स्तोत्रे न्यासऽभावे विचारः -

ऋषिछन्दादिकं न्यस्य पठेत् स्तोत्रं विचक्षणः ।
स्तोत्रं न दृश्यते यत्र प्रणवं तत्र विन्यसेत् ॥

अर्थात् जहां स्तोत्र के ऋषि, छंद उपलब्ध हो वहां उनके अनुसार न्यासादि करें एवं जहां स्तोत्र के ऋषि, छंद, कीलकादि उपलब्ध नहीं हो वहां प्रणव से ही न्यासादि करने चाहिये।

यथा — **ॐ शिरसि, ॐ छंदसे नमः मुखे, ॐ देवतायै नमः हृदयाय नमः, ॐ कीलकाय नमः नाभौ, ॐ नमः सर्वाङ्गे।**

एवं हृदयादि न्यास भी प्रणव से करे।

मंडप कार्येषु भूमिशोधनम्

यजमान के चन्द्र तारा बल अनुकुल हो उस दिन कुण्ड निर्माण हेतु **"शिववास"**, **"कूर्मवास"** शुभ दिन देखकर गणेशादि देवता स्मरण कर भूमि पूजन करें। पूर्व दिशा को शोधन करके कार्यारंभ करें।

यज्ञ से पहले ध्वजारोहण करना हो तो उस दिन **"स्तंभ चक्र"**, **"कूर्मवास"**, **"शिववास"** भी देखना चाहिये। ये मुहुर्त्त इस पुस्तक में कुण्ड निर्माण विधी में बताऐ गये है।

आचार्य यजमान सुवासीनियों तथा मंगलवाद्य सहित यज्ञ भूमि पर जावें। आसन पर विराजमान होकर आचम्य, प्राणायाम करके गणपति स्मरण तथा

संकल्प तत्पश्च्यात् दिग्रक्षण कर गणेशाम्बिका, भूमि पूजन करें। "व्रतेन दीक्षामाप्नोति" इस मंत्र से ब्राह्मण व आचार्य का वरण करें।

आचार्यो हि यथा स्वर्गे शक्रादिनां बृहस्पतिः ।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ।।

भूम्यावाहनम् – पृथ्वी का स्पर्श करके कहे।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री । पृथिवीं यच्छपृथिवींदृ ठं हः पृथिवीं मा हि ठं सी ।।१।।

ॐ महिद्यौः पृथिवीचन इमं यज्ञंमिमिक्षताम् । पिपृतान्नोभरीं मभिः।।२।।

ॐ घृतवती भुवानानाभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदधेसु पेशसा । द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभितेऽअजरे भूरिरेतसा ।।३।।

आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणी ।
उद्धृतासिवराहेण सशैलवन – कानना ।।
रत्नाकरे विष्णुना त्वं धृता वाराहरूपिणा ।
आगच्छ वरदे धात्रि! यज्ञेऽस्मिन् शुभदायिनी ।।

"मनोजूतिर्जुषातामास्य" मंत्र से सुप्रतिष्ठा करें। फिर नमस्कार करें।

ॐ भूमिर्भूमिमिव प्रागान्माता मातरमप्यगात् ।
भूयाम पुत्रः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स नश्यतु ।।
ॐ शेषमूर्ध्नि स्थितां रम्यां नाना सुख प्रदायिनीम् ।
विश्वधात्रीं महाभागां विश्वस्य जननीं पराम् ।।
यज्ञभागं प्रतीक्षस्व सुखार्थ प्रणमाम्यहम् ।
तवोपरि करिष्यामि मण्डपं सुमनोहरम् ।।

ताम्रपात्र में पंचगव्य लेवे दस बार "ॐ" या गायत्रीमंत्र का उच्चारण करें हरिकुशाओं से भूमि का प्रोक्षण करें।

ॐ इरावती धेनुमतीहि भूतः सूयवसिनी मनवेदशस्या । व्यस्कं भारोदसी विष्णवे तेदाधर्त्थ पृथिवीमभीतो मयूखैः स्वाहा ।।१।। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा ठं सुरे स्वाहा ।।२।।

ॐ मानस्तोके तनये मानआयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः। मानो

वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मंत: सदमित्वाहवामहे ।।३।। ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपोभवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तुन: ।।४।। ॐ शन्नो मित्र: शं वरुण: शन्नो भवत्त्वर्य्यमा। शन्न इन्द्रो बृहस्पति: शन्नो विष्णुरुरुक्रम: ।।५।।ॐ देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्याम्पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वतै वाचौ यन्तुर्यन्त्रोणाग्ने: साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ।।६।। ॐ नृसिंह उग्ररूपं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा ।।

इसके बाद सरसों लेकर "अपसर्पन्तु ये भूता" तथा "पूर्वे रक्षतु गोविन्दो" इत्यादि मंत्रो से दिग्रक्षण करें। इसके बाद षोडशोपचार से पृथिवी पूजन करें। ताम्रपात्र में जल, गंध, दुर्वा, यव, पुष्प, फल लेकर उत्तराभिमुख (उदङ्मुख) होकर अपने जानु को अवनीकृत करके अंजलिपुट होकर भूमि के "अर्घ्य" देवें।

वसुधे पूजितासि त्वं विष्णुना शंकरेण च ।
पार्वत्या चैव गायत्रा स्कन्द वैश्रवणादिभि: ।।१।।
मण्डपं कारयाम्यद्य त्वदूर्ध्व शुभ लक्षणम् ।
गृहाणार्घ्यं मयादत्तं प्रसन्ना भव सर्वदा ।।२।।

इसके बाद हल चला कर भूमिशोधन करें। गायों को यज्ञभूमि में बिठाया जाता है। सप्तधान्य का बीजारोपण भी करते है। यथा लोकाचारानुसार करें।

अथ मण्डप निर्माण कार्यम्

मंडप एक हाथ ऊँचा बनावें। १६ एवं १८ हाथ का मंडप उत्तम, १२—१४ हाथ का मण्डप मध्यम एवं ८—१० हाथ का मण्डप कनिष्ठ कहा जाता है। लंबाई चौडाई समान होवे। पूर्व दिशा का शोधन करके कार्य करें।

चारों दिशाओं में द्वार बनायें, प्रवेश द्वार पश्चिम दिशा का होगा। मध्य में चौकोर गुम्बज जैसा बनायें।

मंडप के चारों और जौ या सप्तधान्य बोने के लिये ईंटों का या पत्थर के छोटे टुकडों से घेरा बनाते है।

कुण्डनिर्माण जो पुस्तक के पृष्ठ भाग में है उस विधि से बनायें।

कुण्ड के प्रत्येक दिशा के तीन भाग करके ९ खंड प्राप्त करें। मध्य खण्ड के चारों कोणों पर चार स्तंभ आठ हाथ के तथा बाहर मंडप के चारों कोणों में

४ तथा बीच मे दो–दो स्तंभ = ८ कुल १२ स्तंभ पांच हाथ के गाड़े। प्रत्येक स्तंभ के पांचवे भाग तक भूमि में रोपण करें।

१६ खंभों पर १६ बल्लियां देवे। उन्हे छिद्र वाली चूडी मे पहिनावें। पूर्वादि चारों दिशाओं में दो–दो बल्लियां और ४ कोणों में चार बल्लियां इस तरह कुल २८ बल्लियां रोपें। मध्य भाग में लट्टू की तरह का शिखर बनायें।

मध्य के चारों कोणों पर ४ बल्लियां लट्टू से खंभ तक देने से ३२ बल्लियां हुई। स्तंभो के साथ देने से कुल ४८ बल्लियां हुई।

मध्य भाग में शिखर बनाकर बांस, चटाई या फूस आदि से चारों द्वारों को छोडकर छा देवें। चारों तरफ टाटी से ढ़क देवें।

वायु एवं पशु आदि से रक्षार्थ चार टाटी चारों द्वारों के लिये बनावें

तोरणादि

पूर्व में बड़ या पिपल का, दक्षिण में गूलर का, पश्चिम में पीपल का या पाकर का, उत्तर में पाकर या बड़ का तोरण बनायें अभाव में एक ही लकडी के सभी तोरण बनाये जा सकते है। द्वार भी इन्हीं लकड़ियों से बनाने को कहा गया है। तोरण द्वार मण्डप द्वार से एक हाथ दूर होता है।

शिवयाग एवं देवीयाग में चारों दिशाओं में त्रिशूल तथा विष्णुयाग में शंख, चक्र, गदा, पद्म पूर्वादि क्रम से लगावें।बड़ी ध्वजा २ हाथ या ३ हाथ चौड़ी ५ हाथ लंबी बनावें।अन्य ध्वजापताकाओं के रंग एवं वाहन पुस्तक में कुण्ड निर्माण विधि के साथ दिये गये है।

महाध्वज ईशान में लगाना चाहिये उसका बांस १०, १६, २१ या २३ हाथ का होवे। ध्वज ३ हाथ चौड़ा ५ या १० हाथ लंबा होवे। उसके कोण पर घंटी, घुंघरू तथा चंवर बांधना चाहिये।

पताका :— पताकायें १ हाथ चौड़ी ३–५–७ हाथ लंबी होवे उसमें दशदिक्पालों के चिन्ह अंकित कर दशों दिशाओं में स्थापित करें। यथा पूर्व दिशा में वज्र, अग्निकोण मे शक्ति, दक्षिण मे दण्ड, नैर्ऋत्य मे खड्ग, पश्चिम में पाश, वायव्य मे अंकुश, उत्तर मे गदा, ईशान में त्रिशूल, पूर्वईशान मध्य में कमण्ड्लु एवं पश्चिम नैर्ऋत्य मध्य मे चक्र बनावें। ध्वजायें भी एक हाथ लंबी दिकपालों के रंग निर्देश के अनुसार पताकाओं की तरह होवे।

कुण्ड निर्माण — कुण्ड निर्माण पुस्तक में दिये अनुसार करें।

वेदी निर्माण – नवग्रह वेदी १$\frac{1}{2}$ हाथ, सर्वतोभद्र की २ हाथ तथा अन्य वेदियां एक—एक हाथ की बनायें। अथवा नवग्रह पीठ ३४ अंगुल, मातृका पीठ १६ अंगुल, वास्तुपीठ, योगिनी एवं क्षेत्रापाल पीठ १२—१२ अंगुल के चौकोर बनावें।

पूर्व और उत्तर के मध्य में नवग्रह मंडल, उनके नीचे रुद्रकलश का स्थान एवं दीप का स्थान होगा। नवग्रह के पास पूर्व में सर्वतोभद्र मंडल, नैर्ऋत्य कोण में ६४ कोष्ठात्मक वास्तु मंडल, वायव्य मे क्षेत्रपाल मंडल बनावें। पश्चिम दिशा में वरुण मंडल बनायें।

योगिनी मातृका के पास पूर्व में स्थापित करें या क्षेत्रपाल के साथ वायव्य कोण में करें। (यही अधिक प्रचलित है।)

मंडप के स्तंभो पर वस्त्र वेष्टन – मंडप के मध्य में स्थित ईशान के स्तंभ पर काला (या लाल), अग्नि कोण मे लाल (या काला), नैर्ऋत्य एवं वायव्य में पीला वस्त्र लगायें।

बाहरी स्तंभो पर १. ईशान में लाल (या काला) २. ईशान एवं पूर्व मध्य में श्वेत ३. पूर्व एंव अग्निकाण के मध्य काला ४. अग्निकोण में काला (या लाल) ५. अग्नि कोण व दक्षिण के मध्य में श्वेत ६. दक्षिण एवं नैर्ऋत्य के मध्य में धूम्र ७. नैर्ऋत्य कोण में पीत ८. नैर्ऋत्य एवं पश्चिम के मध्य में श्वेत ९. पश्चिम एवं वायव्य कोण के पास श्वेत १०. वायव्य कोण में पीला ११. उत्तर एवं वायव्य के मध्य में पीला १२. उत्तर एवं ईशान के मध्य में लाल रंग का वस्त्र वेष्टन करें।

हेमाद्रि स्नानादि कर्म

थाली में स्वास्तिक बनाकर दशविधस्नान की सामग्री लेवें। यथा–

शंख, गरुड़घंटा, तुलसी, वपनप्रबन्ध, जलप्रबन्ध गूलर की दातून, यज्ञभस्म, गोमय, मृत्तिका चोराहे की, पंचगव्य, गोरज, यव, फल, सर्वोषधी, कुशा, सुवर्ण, यज्ञोपवीत, कांसी की कटोरी छायादान के लिये।

सबसे प्रथम कार्य आचार्य और ब्राह्मण सपत्नीक यजमान को तड़ाग पर या अन्यत्र कहीं भी दशविध स्नान करावे छायापात्र या पापघट का दान कराये और हेमाद्रि संकल्प, स्नान तथा स्नानांग तर्पण करावे। यथा–

अथ दश विध स्नानानि

संकल्प :-

ततौ देशकालौ संकीर्त्य मम समस्त पापक्षय पूर्वक विष्णु प्रीत्यर्थं ऽममुक कर्म साध्यर्थं वा अमुक देव प्रतिष्ठा कर्माधिकारार्थं शरीर शुद्ध्यर्थं च अमुक प्रायश्चित्त भूतान्यादौ भस्मादिभि स्नानानि करिष्ये।

भस्मस्नानम् । बायें हाथ मे भस्म लेवे थोड़ा जल डाले दक्षिण हाथ से मले एवं मंत्र पढें ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म। जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म ॐ व्योमिति भस्म सर्व ठं ह वा इदं भस्म सिर, पैर, मुख हाथ हृदय के लगायें।ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः। बाहुभ्यामुतते नमः-॥ यथाग्निर्दहते भस्म तृणकाष्ठादि सञ्चयम्॥ तथा मे दह्यतांपापं कुरु भस्मशुचेशुचिम् ॥ २॥ *अथमृत्तिकास्नानम्* । इदंविष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्यपाठं सुरे स्वाहा। उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना। मृत्तिके हर मे पापं यन्मयादुष्कृतं कृतम्॥ मृत्तिके ब्रह्मपूतासि काश्पनाभिवन्दिता। मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम्॥ ३॥ *अथ गोमयस्नानम्* । ॐ मानस्ताकेतनयेमानऽ आयुषिमानो गोषुमानोऽ अश्वेषुरीरिषः। मानोवीरानरुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे॥ गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्वमंगला। स्नानार्थं संस्कृता देवी पाप मे हर गोमय॥ अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने वने। तासामृपभपत्नीनां पवित्रं कार्यशोधनम्॥ यन्मे रोगं च शोकं त मे दहतु गोमयं ॥ ४॥ *अथ पंचगव्यस्नानम्* । ॐ सह-स्त्रशीर्षापुरुषः सहस्त्राक्षः, सहस्त्रपात्। सभूमिर्ठं सर्व्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठ्ठद्दशांगुलम् ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः समन्वितम्। सर्वपापविशुद्ध्यर्थं पञ्चगव्यं पुनातुमाम्॥ ५॥ *अथ गोरजः स्नानम्* ।ॐ आयं गौः पृश्निरक्क्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्चत्प्रयंत्स्वः ॥ गवां खुरेण निधूतं यद्रेणु गगने गतम्। शिरसा तेन संलेपे महापातक-नाशनम् ॥६॥ *अथधान्यस्नानम्*-ॐ धान्न्यमसि धिनुहि देवान्प्राणा यत्वोदानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्ग्घामनुप्प्रसिति मायुषे धान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिः प्प्रतिगृब्भ्णात्वच्छिद्रेण

पाणिना चक्षुषे त्वामहीनाम्पयोसि॥ धान्यौषधी मनुष्याणां जीवनं परमम्मृतम्। तेनस्त्रानेन देवेश ममपापंव्यपोहतु ॥७॥ *अथफलस्नानम्-* ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽपुष्पा याश्चपुष्पिणीः। बृहस्पतिप्प्रसूतास्तानो मुञ्चनत्वर्ठुंहसः ॥ वनस्पति रसोदिव्यः फल पुष्पवृतःसदा। तेनस्त्राननमे देव फललब्धमनंतकम् ॥ ८॥ *अथसर्वौषधीस्नानम्* ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोतिब्ब्राह्मणस्त ठुंराजन्पारयामसि॥ ओषध्यः सर्ववृक्षाणां तृणगुल्मलतास्तु याः। दूर्वासर्षपसंयुक्ता सर्वोषध्यः पुनतुं माम् ॥९॥ अथ कुशोदकस्नानम्-ॐ देवस्यत्वासवितुः प्प्रसवेश्विनोर्ब्बाहुव्भ्या-म्पूष्णो हस्ताभ्याम्॥ कुशमूले स्थितोब्रह्मा कुशमध्येजनार्दनः। कुशाग्रे शंकरो देवस्तेन नश्यतु पातकम् ॥ १०॥ *अथहिरण्यस्नानम्* - ॐ आकृष्ष्णेन रजासाव्वर्त्तमानो निवेशयन्नऽमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्। हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनंतपुण्यफलदमतः शान्तिम्प्रयच्छमे॥ ११॥

॥इतिदशविधस्नानानि॥

इसके बाद छायापात्र या पापघट का दान करें अथवा पापघट दान दशविधस्नान से पहले करे भी तो उत्तम रहे।

अथ छायापात्र दानम्

छायापात्र का दान किसी बड़े अनुष्ठान एवं यज्ञ के पूर्व तथा हेमाद्रि संकल्प स्नान के समय विशेष ग्रह पीड़ा समय कराया जा सकता है। तिलाक्षत पुञ्ज पर छाया पात्र रखे एवं उसे धृत से पूरित करें। छायापात्रं स्वपुरस्तिलराश्युपरि संस्थाप्य तत्र धारितशुद्धगोघृतं पूरयेत्, ततः सपत्नीको यजमानः स्वमुखमवलोकयेत्, तत्र मन्त्रौ--

ॐ आज्यं सुराणामाहारमाज्यं पापहरं परम्। आज्यमध्ये मुखं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १॥ घृतं नाशयते व्याधिं घृतञ्च हरते रुजम्। घृत तेजोधिकरणं घृतमायुः प्रवर्द्धते ॥ २॥

छाया पात्र में अपने मुंह की छाया देखें, पात्र के गंधाक्षत करे पंचरत्न गेरे

तथा संकल्प सहित विप्र को दान करें। **पापघट का दान** कराना हो तो **स्वर्ण या शीशे की पाप पुरुष की मूर्ति बनाये**। पूजन करके घट में रखकर दान करें।

पाप पुरुष ध्यानं :-

वामकुक्षि स्थितं कृष्णमंगुष्ठ परिमाणकं ।
विप्र हत्या शिरोयुक्तं कनकस्तेय बाहुकम् ॥१॥
मदिरापान हृदयं गुरु तल्प कटीयुतम् ।
तत्संयोगिपद द्वन्दमुपपातक रोमकम् ।
खड्ग चर्म धरं दुष्टमधोवक्त्रम् च दुःसहम् ॥२॥

पाप पुरुष का ध्यान कर पूजनकर, उसे **अधोमुख रखें।**

छायापात्राय नमः, एवं गन्धादिभिः पूजयेत्। ॐ अद्य० अमुकदेव प्रीतिपूर्वक सर्व ग्रह पीड़ा निवारणार्थे सोपकरणत्रछायापात्रदानं ददामि। इति विप्रकरे जलं दद्यात्।

संकल्प - **ॐ अद्येत्यादिदेशकालसङ्कीर्तनान्ते-अमुकगोत्रोत्पन्नोहं जन्मनामतः प्रसिद्धनामतश्चामुकशर्मा सपत्नीकोऽहं मम कलत्रादिभिस्सह दीर्घायुरारोग्यसुतेजस्वित्व सुभगत्व सर्वपापप्रशमनोत्तरजन्मराशेस्सका-शान्नामराशेस्सकाशाद्वा जन्मलग्नाद्वर्षलग्नाद्वोचराद्वा ये केचिञ्चतुर्थाष्टमद्वा-दशाद्यनिष्टस्थानस्थिताः क्रूरग्रहास्तैः सूचितं सूचयिप्यमाणञ्च यत्सर्वारिष्टं तद्विनाशार्थ ग्रहासु सर्वदा तृतीयैकादशशुभस्थान स्थिवदुत्तमफलप्राप्त्यर्थ कांस्यपात्रोपन्यस्तं घृतबिन्दुकणिकासम संख्यावच्छिन्नैरुज्य चिरञ्जी-वित्वकामैतत्स्वशरीछायावलोकितघृतपूरितं कांस्यपात्रं पञ्चरत्नादिसहितं सुपूजितं श्रीमहामृत्युञ्जयदेवताप्रीत्यर्थ रजत चन्द्रमाप्रजापति स्वर्ण बृहस्पतिदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।**

ॐ अद्य कृतैतच्छाया पात्रदान प्रतिष्ठार्थमेतद्द्रव्यममुकदैवतं यथानाम-गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे। *ततः प्रार्थयेत्*-**ॐ यानि कानि च पापानि मया कामं कृतानि च। छायापात्रप्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा ॥१॥ यत्कृतं मे स्वकायेन मनसा वचसा त्वघम्। तत्सर्वनाशमायातु छायापात्र प्रदानतः ॥२॥** *इति पठित्वा हस्तद्वयेन तत्पात्रं गृहीत्वा ब्राह्मणाय समर्पयेत्*-**ॐ सदक्षिणं मया तुभ्यं स्वात्मदेहमिदं परम्। छायापात्रपरं प्रीत्या गृहाण द्विजसत्तम। दानेनानेन मा सन्तु सर्वे रोगादयो मम। आयुरारोग्यमैश्वर्य प्रददातु**

दिवाकरः ॥ *इत्युच्चार्य छायापात्रं ब्रह्मणहस्ते दद्यात् ॥* ऐसा बोलकर छायापात्र ब्राह्मण को देवे

अथवा-आज्यपात्रे छायामवलोक्य देशकालौ स्मृत्वा ममायुरारोग्यप्राप्तये ससुवर्णमिदमाज्य सहितं छाया पात्रममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इति कस्मैचित् ब्रह्मणाय दद्यात्।

अथ हेमाद्रि कृतः स्नान संकल्प

आचम्य प्राणानायम्य। प्रार्थना करे

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थनामुपक्रमे ।
यं नत्वा कृतकृत्यास्यु स्तं नमामि गजाननम् ॥
स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम् ।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पति ॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं शनैश्चरम् ।
राहुंकेतुं नमस्कृस्त्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥
शक्रादि-देवताः सर्वानृषींश्चैव तपोधनान् ।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं पर्वतं तथा ॥
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलं ।
अगस्त्यं च पुलस्त्यं च दक्षमित्रं पराशरम् ॥
भरद्वाजं च माण्डव्यं याज्ञवल्क्यं च गालवम् ।
अन्ये विप्रास्तपोयुक्ता वेद-शास्त्र विचक्षणाः ।
तान् सर्वान् प्रणिपत्याहं शुभकर्म समारंभे ।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥
अग्रतः श्री-नृसिंहश्च पृष्ठतो देवकीसुतः ।
रक्षतां पार्श्वयोर्देवौ भ्रातरौ राम-लक्ष्मणौ ।

संकल्प :- ॥ ॐ॥ स्वस्ति श्री मुकुन्द-सच्चिदानन्दस्य ब्रह्मणोऽ-

निर्वाच्य-मायाशक्ति-विजृम्भिता विद्यायोगात् कालकर्म स्वभावाविर्भूतमह-त्तत्वोदिताहंकारोद्भूत-वियदादिपञ्च महाभूतेन्द्रिय-देवतानिर्मिते ऽण्डकटाहे चतुर्दश लोकात्मके लीलयातन्मध्यवर्तिभगवतः श्रीनारायणस्य नाभि-कमलोद्भूत सकललोक पितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्तदुद्धरणाय प्रजापतिप्रार्थितस्य समस्तजगदुत्पत्ति स्थितिलय- कारणस्य जगद्रक्षाशिक्षा-विचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य श्रीअच्युतानन्त वीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिन्त्यया परिमितशकृत्या ध्रियमाणस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणा नामनेक कोटिब्रह्मण्डा नामेकतमेऽव्यक्त महदहङ्कार पृथिव्यतेजो वाय्वाकाशाद्या वरणैरावृतै अस्मिन्महतिब्र ह्माण्डखण्डे आधारशक्ति श्रीमदादिवाराह दंष्ट्राग्र-विराजिते कूर्मानन्त -वासुकि तक्षक कुलिक कर्कोटक पद्म महापद्म शंखाद्यष्ट-महानागै-र्ध्रियमाणे ऐरावत पुण्डरीक वामन कुमुदाञ्जन पुष्पदन्त-सार्वभौम सुप्रतिकाष्ट-दिग्गज-प्रतिष्ठितानाम् तलवितल सुतल तलातल रसातल महातल पाताल लोकानामुपरिभागे भूलोक भुवर्लोक स्वर्लोक महलोक जनलोक तपोलोक सत्यलो-काख्य सप्तलोकानामधोभाग चक्रवाल शैलमहावलय नागमध्य वर्तिनो महाकाल महाफणिराज शेषस्य सहस्त्रफणानां मणिमण्डलमण्डिते दिग्दन्तिशुण्डोत्तम्भिते।

अमरावत्य शोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धर्वती काञ्च्यवन-त्यलकावती यशोवतीति पुण्यपुरी प्रतिष्ठिते तथैव इन्द्राग्नियमनिर्ऋति वरुण वायु कुबेरेशानाष्ट दिकपाल प्रतिष्टिते वसुध्रुवाधर सोमपा प्रभञ्जनान-लप्रभासाख्याष्ट वसुभिर्विराजितेहर त्र्यम्बक रुद्रमृगव्यधा-पराजित कपाली भैरव शम्भुकपर्दि वृषाकपि बटुरूपाख्यै-कादशरुद्रैः संशोभिते रुद्रोपेन्द्र सवितृ (सविता) धातृ - त्वष्ट्रर्यमेन्द्रेशानभगमित्र-पूषाख्य द्वादशादित्य-प्रकाशिते यमनियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा-ध्यानसमाध्यष्टागर्ग नरतवसिष्ठ वालखिल्य विश्वामित्र दक्ष कात्यायन कोण्डिन्य गौतमांगिरस पाराशर्य व्यासवाल्मीकि शुकशौनक भारतद्वाज सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार नारदादि मुख्यमुनिभिः।

पवित्रिते लोकालोकाचल वलयिते लवणेक्षु सुरा सर्पिर्दधि क्षीरोदक-युक्तसप्तार्णव परिधृते जम्बूप्लक्षशाल्मलि कुशक्रौंच शाक पुष्कराख्य सप्तद्वीपयुते इन्द्रकांस्य ताम्रगभस्ति नागसौम्य गन्धर्व चारण भरतेति

नवखण्ड मण्डिते सुवर्णगिरी कर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशतकोटि योजन विस्तीर्ण-भूमण्डले अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्च्यवन्तिका द्वारावतीति सप्तमुक्तिदापुरी-प्रतिष्ठिते महामुक्ति-प्रदस्थले शालग्राम शम्भल नन्दिग्रामेति त्रयविराजिते चम्पकारण्य बदरिकारण्य दण्डकारण्यार्बुदारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य गुह्यारण्य जम्बुकारण्य विन्ध्यारण्य द्राक्षरण्य नहुषरण्य काम्य कारण्य द्वैतारण्य नैमिषारण्यादीनां मध्ये नैमिषारण्ये सुमेरु निषध कूट शुभ्रकूट श्रीकूट हेमकूट रजतकूट चित्रकूट त्रिकूट किष्किन्धा श्वेताद्रिकूट-हिमविन्ध्याऽचलानां हरिवर्ष किम्पुषवर्षयोश्च दक्षिणे।

नवसहस्त्र-योजन- विस्तीर्णे भरतखण्डे मलयाचल सह्याचल विन्ध्याचलानां उत्तरेण स्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ सूक्तिक आवन्तक रमणक महारमणक पांचजन्य सिंहल लंकेति नवखंण्ड मंडिते सिंहललंकाऽ शोक-वत्यल कावती सिद्धवती गान्धर्ववत्यादि पुण्यपुरीणामधरोभागे नवखण्डो-पद्वीपमंडिते दक्षिणावस्थित रेणुकाद्वय सूकर काशी काञ्ची कालिर्वकाल-वटेश्वर कालञ्जर महाकालेति नवोखर युते द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग-गंगा (भागीरथी) गोदा (गौतमी) क्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापी पयोष्णी चन्द्रभागा कावेरी मन्दाकिनी प्रवरा कृष्णा वेण्या भीमरथी तुङ्गभद्रा मलापहा कृतमाला ताम्रपर्णी विशालाक्षी वञ्जुला चर्मण्वती वेत्रवती भोगवती विशोका कौशिकी गण्डकी वासिष्ठी प्रमदा विश्वामित्री फल्गुनी चित्रकाश्यपी सुवर्णरेखा शोणा भवना शिनी शीघ्रगा कुशवर्तिनी ब्रह्मानन्दा महितनयेत्यनेक पुण्यनदीभिर्विलसिते ब्रह्मपुत्र-सिन्धुनदयादि-परम पवित्र जलविराजिते।

हिमवन्मेरु गोवर्धन क्रौंच चित्रकूट हेमकूट महेन्द्र मलय सह्येन्द्र-कील-पारियात्राद्यनेक-पर्वत-समन्विते मतङ्ग माल्य किष्किन्ध-ऋष्यशृङ्गेति महानगसमन्विते अंग बंग कलिंग काश्मीर काम्बोज सौवीर सौराष्ट्र महाराष्ट्र मगध नेपाल केरल चोल पाञ्चाल गौड मालव मलय सिंहल द्रविड कर्नाटक ललाट करहाट पानाट पाण्ड्य निषध मागध आन्ध्र दशार्णव भोज कुरुक्षेत्र गान्धार विदर्भ विदेह वाल्हीक बर्बर कैकेय कोसल विराट शूसेन कोंकण कैकट मत्स्य भद्र पारसिक खर्जुर यावन म्लेच्छ जालन्धरेति सिद्धवत्यन्यदेश बिशेष भूमिपाल-विचित्रिते मालवादि देशे इलावृत कुरुभद्राश्व केतुमाल किम्पुरुष रमणक हिरणमयादि

नव वर्षाणां मध्ये भरतखंडे।

वकुल चंपक पाटलाब्ज पुन्नाग जाति करवीर रसाल कह्लार केतक्यादि नानाविध कुसुम स्तबक विराजिते कोकनत हिरण्य शृंग कुब्जार्बुद मणिकर्णोवटशालग्राम सूकर मथुरा गया निष्क्रमण लोहार्गल पोतस्वामी प्रभास बदरीतिचतुर्दश गुह्यविलसिते जम्बूद्वीपे कुरुक्षेत्रादि समभूमध्यरेखायाः पश्चिमदिग्भागे कुलमेरोर्दक्षिणदिग्भागे बिन्ध्यस्य दक्षिणे देशे श्रीशैलस्य वायव्यदेशे कृष्णावेण्योर्मध्यदेशे दशावताराणां मध्ये बोद्धावतारे गंगादि सरिद्भिः पवित्रिते नवसहस्र योजनविस्तीर्ण भारतवर्षे निखिलजन-पावन परमभागवतोत्तम शौनकादिनिवाससिते नैमिषारण्ये आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मा वर्तैकदेशे सूर्यान्वयभूभत्प्रतिष्ठिते।

श्रीमन्नारायण नाभिकमलोद्भूत सकल जगत्स्त्रष्टुः परार्द्धद्वय जीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथम दिवसे अह्नोद्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायंभुवादिमन्वतराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता द्वापर कलि संज्ञकानांचतुर्णां युगानां अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमे विभागे (पादे)।

श्रीमन्नृपविक्रमार्कात् श्रीमन्नृप शालिवाहनाद्वा यथासंख्यागमेन चन्द्र सावन सौर नाक्षत्रादिप्रकारेणागतानां प्रभवादि षष्टि संवत्सराणां मध्ये अमुक नाम्ने संवत्सरे उत्तरगोलावलम्बिनि श्रीमार्तण्डमण्डले अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणविशेषेण विशिष्टायां शुभ-पुण्यतिथौ अमुक शर्मणः (भार्ययासहऽधिकृतस्य) मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा बाल्ययौवन वार्धक्यावस्थासु वाक्पाणिपायूपस्था घ्राणरसना-चक्षुः स्पर्शनश्रोत्रमनोभिश्चरित-ज्ञाताऽज्ञात कामाऽकाम महापातकोपपातका-दिसञ्चितानां पापानांब्रह्महनन सुरापान सुवर्णस्तेय गुरुतल्पगमनतत्संसर्गरूप महापातकानां बुद्धिपूर्वकाणां मनो वाक्कायकृतानां बहुकालाभ्यस्तानां उप-पातकानां च स्पृष्टाऽस्पृष्ट-संकरीकरण-मलिनी करणाऽपात्रिकरणा जातिभ्रंश-करण विहिताकरण कर्मलोपजनितानां रसविक्रय-कन्या-विक्रय हयविक्रय गोविक्रय खरोष्ट्र विक्रय दासीविक्रया ऽजादिपशुविक्रय स्वगृह विक्रय नीलीविक्रयाक्के-यविक्रय पण्यविक्रय

जलचरादिजन्तुविक्रय स्थलचरा-दिविक्रय खेचरादिविक्रय सम्भूतानां निरर्थकवृक्षच्छेदन ऋणानपाकरणब्रह्मस्व अपहरण देवस्वापहरण राजस्वापहरण परद्रव्यापहरण-रूपाणां। ब्राह्मणनिन्दा गुरुनिन्दा वेदनिन्दा शास्त्रनिन्दा परनिन्दाऽभक्ष्य भक्षणा-भोज्यभोजनाचोष्य-चोषणाऽहिंस्य-हिंसनाऽवन्द्य-वन्दना ऽपेयपाना -ऽस्पृश्य-स्पर्शना ऽश्राव्य श्रवणाऽहिंस्य-हिंसनाऽवन्दना ऽ चिन्त्यचिन्त-नाऽयाजय याजनाऽपूज्यपूजन-रूपाणां मातृपितृतिरस्कार स्त्रीपुरुषप्रीति भेदन परस्त्रीगमन विधवागमन वेश्यागमन दासीगमन चाण्डालादिहीन -जातिगमन गुदागमन वेश्यागमन दासीगमन चाण्डालादिहीनजातिगमन गुदगमन रजस्वलागमन पश्वादि गमन-रूपाणां कूटसाक्षित्वपैशुन्य-वाद मिथ्यापवाद म्लेच्छसम्भाषण ब्रह्मद्वेषकरण ब्रह्मवृत्तिहरण वृत्तिच्छेदन परवृत्तिहरणारूपाणां।

वित्रवञ्चन स्वामिवंचनाऽसत्यभाषण गर्भपातन पथि ताम्बूलचर्वण हीनजातिसेवन परान्भोजन गणान्नभोजन लशुन पलाण्डु गृञ्जन-भक्षण ताल वृक्षफल-भक्षणोच्छिष्ट भक्षण मार्जारोच्छिष्टभक्षण पर्युषितान्न-भक्षण-रूपाणां पंक्तिभेदकरण भ्रूणहिंसा पशुहिंसा बालहिंसाद्यनेकहिंसो द्भूतानां शौचत्यागस्नानत्याग सन्ध्यात्यागोपासनाग्नित्याग वैश्वदेवत्याग-रूपाणां निषिद्धा-वरण कुग्रामवास ब्रह्मद्रोह पितृमातृद्रोह परद्रोह परनिन्दात्म-स्तुति दुष्टप्रतिग्रह दुर्जनसंसर्गरूपाणां गोयान वृषभयान-महिषीयान गर्दभया-नोष्ट्रयानाजयान भृत्याभरण स्वग्रामत्याग गोत्रत्याग कुलत्याग दूरस्थमन्त्रण विप्राशाभेदनावन्दिताशीर्वाद-ग्रहण पतित-सम्भाषण-रूपाणां पतितजन-पंक्तिभोजनाहः सङ्गम वृथामनोरथादि पापानां तथा-महापापोपपापानां नाना-योनिषु यत्कृतम्।

बालभावेन यत्पापं क्षुत्तडर्थे च यत्कृतम्। आत्मार्थे चैवयत्पापं परार्थे चैव यत्कृतम्। रागद्वेषादिजनितं काम क्रोधेन यत्कृतम्॥ महल्लघु च यत्पापं तन्मे नाशय जाह्नवि॥ ब्रह्महा मद्यपः स्तेयी तथैव गुरुतल्पगः। महापापानि चत्वारि तत्संसर्गी तु पंचमः॥ अतिपातकमन्यञ्च यन्न्यूनमुपपातकम्॥ गोवधो व्रात्यतास्तेय ऋणानां चानपक्रियाः॥ अनाहिताग्नितापण्य-विक्रयः परिवेदनम्। इन्धनार्थे द्रुमच्छेदः स्त्री- हिंसौषधि -जीवनम्॥ हिंसायात्रा विधानंच भृतकाध्यापनं तथा। कृमिकीटादिहननं यत्किञ्चित्प्राणि हिंसनम्। मातापित्रोरुशुश्रूषा तद्वाक्याकरणं तथा। अपूज्

पूजनं चैव पूज्यानां च व्यतिक्रमः। अनाश्रमस्थताग्न्यादि देवाशुश्रूषणं तथा॥ परकार्यापहरणं परद्रव्योप जीवनम्। ततो ज्ञानकृतं वापि कायिकं वाचिकं तथा॥ मानसं त्रिविधं पांप्रायश्चित्तैरनाशितम्। तस्मादशेषपापेभ्यस्त्राहि त्रैलोक्यपावनि॥ निष्पापोऽस्म्युधुना देवि प्रसादात्तव नान्यथा।

[*स्त्रीणांविशेषः*-पाणिग्रहणमारभ्य स्वकर्मापरिपालनम्। इन्द्रिया-भिरतिः पुंसु नानायोनिषुया भवेत्॥ कृमिकीटादिहननं पंक्तिभेदादिकं तथा। स्पृष्टास्पृष्टमनाचारं मनसादोषकल्पनम्॥ तत्सर्वं नाशयेः क्षिप्रं गंगे त्वं यात्र-यानया॥]

इत्यादि प्रकीर्ण-पातकानां एतत्काल--पर्यन्तं सञ्चितानां लघु स्थूल सूक्ष्माणां च निःशेष परिहारार्थं दशावरानृ दशापरान् आत्म-सहितान् एकविंश पुरुषानुद्धर्तुं ब्रह्मलोकावधि पञ्चाशत्कोटियोजन विस्तीर्णेऽस्मिन् भूमण्डले सप्तर्षिमंडलपर्यंत वालुकाभिः कृतराशेः वर्षसहस्त्रावसाने एकैकवालुका पकर्षक्रमेण सर्वराश्यपकर्ष संमित कालपर्यंतं ब्रह्मलोके ब्रह्मसायुज्यता प्राप्त्यर्थं कुरुक्षेत्रादि सर्वतीर्थेषु स्नान पूर्वकं सहस्त्र गोदान जन्यफल प्राप्त्यर्थं तथा-

मम समस्तपितृणां आत्मनश्च विष्णवादि लोक प्राप्तये अधीतनाना मध्येष्यमाणानां चाध्यायानां स्थापनविच्छेद क्रोशघोषण हन्तविवृत्ति दुर्वृत्त द्रुतोच्चारितवर्णानां पूर्वसवर्णानां गलोपलम्बितविवत्तोच्चारित वर्णानां श्लिष्टास्पष्ट वर्णविघटूनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यद्यातयामत्वे तत्परिहारार्थं अष्टत्रिंशदनध्यायाध्ययने रथ्या सञ्चरतः शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययने म्लेच्छान्त्यजादेः शृण्वतोध्ययने अशुचिदेशेऽ ध्ययनेआत्मनोऽशुत्वेध्ययने अक्षर स्वरानुस्वार पदच्छेद कण्डिका व्यञ्जन ह्रस्व दीर्घ प्लुत कण्ठ तालु मूर्धन्यौष्ठ्य दन्त्य नासिकानुनासिक रेफ जिह्वा मूलीयो पध्मानीयोदात्तानुदात्त स्वरिता दीनां व्यत्ययेनोच्चरे माधुर्याक्षरव्यक्तिहीन त्वाद्यनेकप्रत्यवाय परिहारपूर्वकं सर्वस्य वेदस्य सवीर्यत्व सम्पदनद्वारा यथावत्फलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवब्राह्मण सवितृ सूर्यनारायण-सन्निधौ गङ्गा भागीरथ्यां वा अमुकतीर्थे वा प्रवाहाभिमुखं स्नानमहं करिष्ये इति संकल्प्य स्नायात्॥

(इति हेमाद्रिकृतः संकल्पप्रयोगः॥)

स्नानांग तर्पणम्

ॐ ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्देवास्तृप्यन्ताम् ॐ भुवर्देवास्तृ प्यन्ताम्। ॐ स्वर्देवा स्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्भुवः स्वर्देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ सनकादि द्वैपायनादय ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ भुवर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ स्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ भूर्भुवः-स्वर्ऋषयस्तृप्यन्ताम् २। ॐ कव्यवाडवानलादयः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। भूः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ भुवः पितरस्तृप्यन्ताम् ३। ॐ स्वः पितर-स्तृप्यन्ताम् ३। ॐ भूर्भुवः स्वः पितरस्तृप्यन्ताम् ३।

(ततः आचम्य.सव्येन. यक्ष्मतर्पणं कुर्यात्) यक्ष्मतर्पणम्-यन्मया दूषितं तोयं शरीरमलसम्भवात्। तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैयत्तै तिलोदकम्॥ (इतिमन्त्रेण तीर्थतटे तिलमिश्रं जलाञ्जलिं निक्षिपेत्)

पश्चात् लतादिकेषु शिखोदकत्यागः-लतागुल्मेषु वृक्षेषु पितरो ये व्यवस्थिताः। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु मयोत्सष्टैः शिखोदकैः॥ (इतिमन्त्रेण) स्वदक्षिणभागे स्वशिखाग्रं निष्पीडयेत्। ततौ धौते वाससी परिधाय भस्मादि धृत्वा अथवा गृहे यथेच्छं सन्ध्यादि नित्यकर्माणि कुर्यात्)

इति स्नानाङ्गतर्पणम्॥

भगवत्पूजनं प्रायश्चित्त हवनम्

यज्ञोपवीत बदल कर शुद्ध वस्त्र पहन कर तीर्थ स्थान हो तो वहीं एक वस्त्र पर अक्षतों से अष्टदल बनाकर एक ताम्रकलश पर कटोरी में अक्षतों पर शालिग्रामजी की मूर्ति की पुरुषसूक्त से पूजा करके वेदी पर पंचभू संस्कार करके व्याहृति हवनपूर्वक अग्निपूजन करके बाद में प्रायश्चित मंत्रों से हवन कराके आरती कर पंचगव्य का तथा संस्त्रवप्राशन पूर्णपात्र दानादि करके यज्ञ करने योग्य स्थान पर आ जावे।

तत्रादौ षोडशाङ्ग न्यास पूर्वकं षोडशोपचार पूजनक्रमः।

स्वशरीर न्यास एवं पूजा मंत्र विभाग दानों साथ दिये गये है, अतः पहले न्यास करे फिर पूजा वाले मंत्र पढ़ें पुरुष सूक्त पृष्ठ संख्या ५१७ पर है।

संकल्प :-

अथास्मिन् शुभसंवत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौवासरे च अमुकगोत्रोत्पन्नेऽमुकनामाहं अमुकदेवताप्रतिष्ठायामधिकार सिद्ध्यर्थं कृत

हेमाद्रिप्रभृति दशविधस्नानोऽहं विष्णुश्राद्धमहं करिष्ये तत्रादौ देहशुद्ध्यर्थं पुरुषसूक्तेन अंगादिन्यासं कृत्वा षोडशोपचारैः शालिग्राम पूजनमहं करिष्ये एं प्रायश्चित्तांगभूतं हवनं च करिष्ये।

१ सहस्त्रशीर्षा०-आवाहनम्॥ इतिवामकरे **(२) पुरुषऽएवे०- आसनम्॥** इति दक्षिणकरे **(३) एतावानस्य०- पाद्यम्॥** इति वाम पादे **(४) त्रिपादूर्ध्व०- अर्घम्॥** इति दक्षिण पादे **(५) ततो व्विराडजायत०-आचमनीयम्॥** वाम जानौ **(६) तस्माद्यज्ञात्०-स्नानं॥** इति दक्षिण जानौ **(७) तस्माद्य० ऋचः। वस्त्रम्॥** वामकट्याम् **(८) तस्मादश्वा०-यज्ञोपवीतं॥** दक्षिण कट्याम् **(९) तं यज्ञम्०- गन्धाः॥** इति नाभौ **(१०) यत्पुरुषम्०-पुष्पाणि॥** इति हृदये **(११) ब्राह्मणोऽस्य० धूपः॥** इति वामकुक्षौ **(१२) चन्द्रमामनसः०- दीपः॥** दक्षिणकुक्षौ **(१३) नाभ्या आसीद०-नैवेद्यम्** इति कण्ठे। **यत्पुरुषेण०- दक्षिणायुतताम्बूलम्॥ नमस्कारः॥** वक्त्रे-**(१५) सप्तास्यासन्० आरार्तिक्यं प्रदक्षिणाम्॥** अक्ष्णोः **(१६) यज्ञेनयज्ञ०- पुष्पाञ्जलिं नमस्कारं॥** मूर्ध्नि **इति॥**

भगवान की षोडशोपचार से पूजा करलें अब **प्रायश्चित्त हवन** की विशेष विशेष बातें यहां लिखी जा रही है। **सरल ग्रहशांतिवत्** करे।*वि*

उपयमनकुशान् दक्षिणेन पाणिनाऽऽदाय वामहस्ते कृत्वा पवित्रे प्रणीतासु निदध्यात्। *अग्न्याधानम्*

अग्नि स्थापन करे।

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां२ आसादयादिह॥

अग्नेरुत्तरत आचार्यब्रह्मणोर्वरणं कुर्यात्। तत्र ग्रहशान्ति वत् संकल्पः ब्रह्मस्थानं दक्षिणे।

अग्नि के उत्तर में आचार्य और ब्रह्मा का वरण कर लेवें। तब संकल्प बोल लेवें॥ ब्रह्मा को दक्षिण में स्थान देवे॥

रेखात्रय की पूजा करे-

ॐ ब्रह्मणे नमः (पूर्वरेखायां) ॐ विष्णवे नमः (मध्यरेखायाम्) ॐ रुद्राय नमः (उत्तर रेखायाम्)

ततो विधिनाग्ने अग्नये नमः।

इससे अग्नि की पूजा करके फिर **सप्त जिह्वाओं** की पूजा करे--

ॐ करालयै नमः ॥ १ ॥ ॐ धूमिन्यै नमः ॥ २ ॥ ॐ श्वेतायै नमः ॥ ३ ॥ ॐ लोहितायै नमः ॥ ४ ॥ ॐ महालोहितायै नमः ॥ ५ ॥ ॐ सुवर्णायै नमः ॥ ६ ॥ ॐ पद्मरागायै नमः ॥ ७ ॥

फिर दक्षिण जानु को ढालकर **ब्रह्मणाऽन्वारब्ध** होकर प्रज्वलित अग्नि में चुपचाप स्रुवे से होमे-

ॐ प्रजापतये स्वाहा (इति मनसा) मन से बोलकर अग्नि में आहुति दें **इदं प्रजापतये न मम** मन से ही त्याग कर हुतशेष को प्रोक्षणी में डाल देवे। इसी प्रकार सर्वत्र जानें।

ॐ इन्द्राय स्वाहा॥ इदमिन्द्राय न मम॥ (इत्याधारौ) **ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम॥ ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम॥**

(ये दोनों आज्यभाग की आहुति दे) फिर १०८ वां २८ आहुतियां देवे-

ॐ भूः स्वाहा, इदं अग्नये न मम॥

ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम॥

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम॥

इस प्रकार सात बार करने पर २८ आहुतियां हो जाती हैं।

फिर **ब्रह्मकूच** से होम करे। यथा--**सुवर्णपात्र में गायत्री मंत्र से गोमूत्र। गन्धद्वारा इत्यादि से गोमय।**

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विष्वतः सोमवृष्ण्यम् (गोदुग्ध)

ॐ दधिक्राब्णो० से दधि। **ॐ तेजोसि शुक्रम्०** से घृत। **ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्॥** इससे कुशोदक लेवें।

इनका प्रणव से मंथन करके यज्ञियकाष्ठ से फिर मथ कर '**ॐ कार**' से उसे मंत्र कर सात से अधिक हरे दर्भपत्रों **से पंचगव्य का होम करे**। मंत्र ये हैं-

ॐ इरावती धेनुमती हि भूत ॐ सूयवसिनी मनवे दशस्या॥ व्यस्कंम्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा॥ इदं पृथिव्वै इदं न

मम॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०। इदं विष्णवे न मम॥

ॐ मानस्तोके०। इदं रुद्राय इदं न मम॥

ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय०। इदमद्भ्यो न मम॥

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्न मम॥ ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं सोमाय इदन्न मम॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्०। इदं सवित्रे इदन्न मम॥ ॐ "स्वाहा"। ॐ इदं परमेष्ठिने न मम। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥ इदं प्रजापतये न मम॥

इस प्रकार होमकर पंचगव्य और घी दोनों मिलाकर--

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा॥ इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥ इति स्विष्टकृत् होमः॥

फिर ब्राह्मणों से प्रार्थना करे--हे ब्राह्मणों मैं **व्रत ग्रहण करुंगा**। तब वे कहें के "**कुरुष्व**" कीजिये।

उनकी आज्ञा से प्रणव (ॐ) बोलकर हुत से शेष **पंचगव्य को पान करे**।

पश्चात् दूसरे दिन या उसी दिन संकल्प करके गौदान अथवा तन्निष्क्रय दक्षिणा देवे। फिर-

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये इदं न मम॥

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे, न मम॥

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय, न मम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम॥

इस प्रकार सात बार होम करके-

फिर ब्रह्मणान्वान्ब्ध होकर-

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम॥

ॐ भुवः स्वाहा। इदंवायवे न मम॥

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्यायः। इदं न मम॥

इसके बाद अग्नि में प्रायश्चित हवन की आहुतियां देवे।

गोदानादि — कई आचार्य प्रायश्चित्त हवन के बाद गौ, भू, तिल, हिरण,

आज्य, वस्त्र, धान्य, गुड, रजत एवं लवणादि का दान करवाकर मंगल स्नान कराकर वेदी समीप पूजा आचार्यादि वरण जलयात्रा से पहिले कराते है।

गोदानविधि – देशकालौ संकीर्त्य प्रारिप्सित प्रायश्चित्तस्य पूर्वांग तया विहितं गोदान करिष्ये।

धेनुपूजनं कुर्यात। गोपुच्छे देवर्षिपितृतर्पणं कृत्वा, कांस्यपात्रो गोपुच्छं निधाय दग्धतिलकुश सुवर्ण युतं कृत्वा। (खड़े होकर दान करें।)

यथा – देशकालौ स्मृत्वा मम समस्त पापक्षयार्थं अमुक देव प्रतिष्ठा यज्ञार्हता सिद्धये श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं इमां गां सवत्सा यथाशक्ति विभूषिताय रुद्रदेवतां तुभ्यमहं संप्रददे। संकल्प जल युतं गोपुच्छ विप्रहस्ते दद्यात्।।

ॐ यज्ञ साधन भूता या विश्वस्याघौघनाशिनी ।
विश्वरूपधरो देव: प्रीयतामनया गवा ।।

।इति प्राथयेत्।।

अथ प्रायश्चित्त होम:

ॐ त्वन्नेअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठा:। यजिष्ठो वह्नितम: शोशुचानो विश्वा द्वेषाᳬसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्याम् ॥ १॥ ॐ स त्वन्नो अग्ने वमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उपसोव्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ᳬ रराणो वीहि मृडीक ᳬ सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्याम्॥२॥ ॐ अयाश्चाग्ने स्यनभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ᳬस्वाहा। इदमग्नये ॥ ३॥ ॐ येते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्त:। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुविश्वे मुञ्चन्तु मरुत: स्वर्का: स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य: ॥४॥ ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधवं विमध्यमं ᳬश्रथाय। अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम॥५॥

ततः बर्हिर्होमं स्वाहा ॥ इससे बर्हिहोम करे।

''इदं प्रजापतये न मम'' यह भी बोल दे।

पश्चात् संस्रवप्राशन वा अवध्राण करके दो आचमन करके अग्नि में ''स्वाहा'' शब्द से पवित्री डालकर पूर्णपात्र दान देवे।

फिर अग्नि की प्रार्थना करे--

ॐ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रभ्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिष ७ स्वाहा ॥ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधया मेधाविनं कुरु स्वाहा। मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधांधाता दधातु मे ॥

उत्तरांग अग्निपूजन तथा पुनः प्रार्थना करे--

ॐ अग्नेनय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यसमज्जुहुराणमेनो भूमिष्ठांते नम उक्तिं विधेम। श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं बलं श्रियम्। आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥

बाद में संकल्प करें-

प्रायश्चित्तोत्तरांग विष्णुश्राद्ध संपत्तये ब्राह्मणचतुष्टयाय आमान्नं पक्कान्नं वा दास्ये ॥

ऐसा बोलकर ४ ब्राह्मणों को कच्चा या पका हुआ अन्न देवे।

पश्चात् त्र्यायुषीकरण (यज्ञभस्म लगावे) ॐ त्र्यायुषं जदमग्ने (ललाटे) कश्यपस्य त्र्यायुषम् (दक्षिणबाहुमूले) यद्देवेषु त्र्यायुषम् (दक्षिणबाहुमूले) तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् (हृदि)

फिर आचार्यदक्षिणा ब्राह्मणभोजन संकल्प भगवान की आरती पुष्पांजलि प्रदक्षिणा करके देवता तथा अग्नि का विसर्जन करे पीछे यजमान के तिलक कर रक्षाबंधनादि करे।

(इति होमारंभे प्रायश्चित्त प्रयोगः ॥)

जल यात्रा पूर्व वेदी समीप कार्यम्

यजमान एवं आचार्य यज्ञारंभ या अधिवासन आरंभ से पहले जलयात्रा करके कलश लायें इसके पहिले गणपति पूजन आचार्य वरण पुण्याहवाचन वेदी समीप ही करा देते है। अधिकतर आचार्य ऋत्वक् व अन्य ब्राह्मणों का वरण जलयात्रा के बाद करवाते है।

कार्यारंभ से पूर्व यजमान आसन पर बैठकर आचम्य, प्राणायाम करके स्थिर चित्त होवे। यजमान पत्नी का ग्रंथी बंधन करें ब्राह्मण "भद्रसूक्त" का पाठ करें।

पवित्रीकरणं — ॐ अपवित्र: पवित्रोवेत्यस्य वामदेव ऋषि गायत्री छंद: विष्णुदेवता पवित्र करणे विनियोग —

ॐ अपवित्र: पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा ।
य: स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स: बाह्याभ्यन्तर: शुचि: ।।

आचमन करें या बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से दक्षिण कर्ण के जल लगावें —

ॐ केशवाय नम:, ॐ गोविन्दाय नम:, ॐ माधवाय नम:।

हस्तप्रक्षालनं — ॐ हृषीकेशाय नम: ।।

ग्रंथिबंधनं -

यजमान एवं यजमान पत्नी का ग्रंथि बंधन करें।

ॐ तम्पत्नी भिरनुगच्छेम देवा: पुत्रौर्भ्रातृभिरुत वाहिरण्यै: ।
नाकङ्गृब्ण्नाना: सकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिव: ।।
गणाधिपं नमस्कृत्य उमालक्ष्मी सरस्वतीम् ।
दंपत्योर रक्षणार्थाय पटग्रंथि करोम्यहम् ।।
श्री देव देवकुरु मंगलानि, संतान वृद्धि कुरु संततञ्च ।
धनायु वृद्धि कुरु इष्टदेव, मद्ग्रंथि बंधे शुभदा भवन्तु ।।

यजमान भाले तिलकं कुर्यात् -

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा: ।

स्वति न स्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ॐ चंदनं वद्यते नित्यं पवित्रं पापनाशनम् ।
आपदा हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा ॥

यजमान पत्नि के तिलक -

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इषणन्निषाणामुम्मइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण॥

(आशीर्वाद के समय में)

सर्वलोक वशीकरं सर्वकार्य जयन्ततः ते ।
सर्वे तव वशं प्राघ दास्य भूता भवन्ति हि ॥

ॐ पृथिवीति मंत्रास्य मेरुपृष्ठ ऋषि सतुलं छंद कूर्मो देवता आसने विनियोगः ।

पृथिवी त्वयाधृतालोका देविस्त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥

बिन्दु-त्रिकोण वृत्त चतुरस्त्र कृत्वा पंचोपचारेन् पूजयेत -

ॐ कूर्मासनाय नमः, योगासनाय नमः, अनंतासनायय नमः, विमलासनाय नमः, आत्मासनाय नमः, ॐ परमासनाय नमः पद्मासनाय नमः ।

गुरु स्मरणम् -

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।१॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥२॥

भद्रसूक्तम्

ॐ आनोभद्द्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽ अपरीतासऽउद्भिदः। देवानोयथासद्मिद्वृधे ऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे ।।१॥ देवानाम्भद्द्रासुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ँ रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवानाँ

सक्ख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवान्ऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे ।।२।।
तान्नपूर्व्वयानिविदाहूमहेव्वयम्भगम्मित्रमदितिन्दक्ष मस्त्रिधम् ।
अर्य्यमणंवरुण ठ सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगामयस्करत् ।।३।।
तन्नोव्वातोमयोभुवातु भेषजन्तंमातापृथिवी तत्पिताद्द्यौः ।
तद्दग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम् ।।४।।
तमीशानञ्जगतस्तस्त्थुष स्प्पतिन्धिया–ञ्जिन्वमवसे हूमहेव्वयम् ।
पूषानो यथाव्वेदसा मसद्दव्वृधे रक्षिता पायुरदब्धयः स्वस्तये ।।५।।
स्वति न इन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वति नः पूषाव्विश्ववेदाः ।
स्वतिनस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वति नो बृहस्प्पतिर्द्दधातु ।।१।।
पृषदश्श्वामरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो व्विदथेषु जग्गमयः ।
अग्निर्जिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्श्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह ।।२।।
भद्द्रङ्कर्ण्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्द्रम्पश्ये–माक्षभिर्य्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ठ सस्तनू–र्भिर्व्यशेमहि देवहितँ य्यदायुः ।।३।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रा नश्च्चक्क्रा जरसन्तनूनाम् ।
पुत्त्रासो यत्रपितरो भवन्ति मानो मद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः ।।४।।
अदितिर्द्यौरदितिरंतरिक्ष मदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः ।
विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जात मदितिर्ज्जनित्त्वम्।।५।।
द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष ठ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरौषधयः शान्तिः। व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिब्र्ब्रह्मशान्तिः सर्व्व ठ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।६।। यतोयतः समीहसे ततोनोऽअभयंकुरु। शन्नः कुरुप्रजाभ्यो ऽभयन्नः पशुभ्यः ।।७।। सुशान्तिर्भवतु ।।

अथ संकल्प – ॐ विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतौ महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वन्मन्वतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखंडे तत्रापि परमपुनीते भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत

ब्रह्मावर्तेकदेशे कुमारिका नाम क्षेत्रे पुष्करारण्ये(अमुकारण्येके) गंगा यमुनयोः पश्चिम तटे नर्मदाया उत्तरे तटे, अमुक राज्ये, अमुक मंडलान्र्तगत अमुक नगरे, अमुक तीर्थसमीपे, अमुक क्षेत्रे, अमुक स्थाने, अमुक विक्रमसंवते अमुक शालिवाहन शताब्दे, अमुकायने अमुकर्तौ, अमुक अमुक राशि स्थाने स्थित ग्रहेषु, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रो अमुक योगे अमुक करणे अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्माऽहं ममात्मनः सपरिवारस्य सभार्यास्य इह जन्मनि पूर्वजन्म कृत सकल दोष उत्पात निखिल दुरितोपशमन द्वारा क्षेमायुरारोग्यादि संवृद्धि हेतवे, धन धान्यादि सम्मृद्धि सिद्धर्थ्यं दशानां पूर्वेषां दशानां परेषामात्मनश्च इत्येक विंशति कुलानां निरतिशयानन्द प्राप्यर्थं भगवद्‌भक्ति वृद्धर्थ्यं अद्यप्रतिष्ठास्यमान देवता वर प्रसाद द्वारा श्रुति स्मृति पुराणोक्त तत् प्रतिष्ठा जन्य फल सिद्धर्थ्यं अमुकां देवतानां अचञ्चल भाव भक्ति प्राप्त्यर्थं श्रीविष्णु प्रभति देवेषु देवकलासान्नि॰ यार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये स्वकारित देव प्रासाद प्रतिष्ठा मूर्तिप्रतिष्ठा सहितां सनवग्रहमखां एक (वाधिक) रात्राधिवासनै का॰ वरयुताम् श्रीलक्ष्मीनारायणयो (सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न हनुमत्समेतस्य श्रीरामचन्द्रस्य) (श्रीराधाकृष्णयोः) (पार्वतिपरमेश्वरयोः गणपति स्कन्द नन्दीश्वर सहितयोः) (श्रीमारुतेरः) अचलप्रतिष्ठाद्यारभ्य सप्ताहे पंचाहे, चतुरहे, तृतीयाहेश्वः सद्यो वां प्रतिष्ठां करिष्ये।

तदंगत्वेन गणपतिस्मरणं स्वस्ति – पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धमाचार्यादि वरण कर्म करिष्ये। तत्रादौ वरुण गणेशाम्बिका पूजन पूर्वकं जलयात्रा कर्म चाहं करिष्ये।

आचार्य थाली में गणेश मातृका नवग्रह पूजन करावें। कलश पूजन करवा कर पुण्याहवाचन करें। यजमान का रक्षाबंधन करें।

दिग्रक्षणं – **"रक्षोहणं बलगहनं"** इत्यादि ऋचाओं या **अपसर्पन्तु ये भूता** इत्यादि मंत्र पढ़ते हुये दिग्ररक्षण करें।

कर्मांगकलशार्चनम् – भूमि का स्पर्श करे।

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ्ठह पृथिवीं मा हि ठ सी:।।

कलश के निचे धान्य के हाथ लगावें।

ॐ औषधय समवदन्त सोमेन सहराज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ठ राजान पारयामसि ।।

कलश में वरुण का आवाहन करें —

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान स्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि:।
अहेडमानो वरुणे हबोध्युरुश ठ समान आयु: प्रमोषी: ।।

ॐ अस्मिन्कलशे वरुण इहागच्छेहतिष्ठ। ॐ अपांपतये वं वरुणाय नम:। गंधाक्षतपुष्पै: संपूज्य:।

कलशस्य मुखे विष्णु... एवं देवदानव संवादे... इत्यादि मंत्रो से प्रार्थना करें। इसके बाद दूर्वा से कलशोदक द्वारा आपोहिष्ठा मयोभुवास्तान... अथवा "पावमान सूक्त" से संप्रोक्षित करें।

ॐ पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसाधिय: ।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेद: पुनीहिमा ।१।।
पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत् । अग्नेकृत्वा क्रतूंरनु।।२।।

दीप पूजनं -

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो: सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणाश्च मुखादग्निरजायत ।।

दीप पूजनं कुर्यात् एवं प्रार्थयेत्।

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत ।
यावत्पूजा समाप्ति: स्यात्तावदत्र स्थिरो भव ।।

ततो हस्तप्रक्षालनम्।

अथ गणपति पूजनं

तत्रादौ हस्ते गन्धाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा गणेशावाहनं कुर्यात्।

ध्यानम् -

ॐ एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्त विघ्नौघ विनाशदक्ष ।

मांगल्यपूजा प्रथम प्रधान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥
ॐ गणानां त्वा गणपति ठ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ठ
हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ठ हवामहे वसो
मम आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च ममक्रतोः ।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां क्रतुं च रक्ष मे ॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्विबुद्वि सहित महागणाधिपतये नमः।
गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

षोड़शोपचार से पूजा कर अर्घ प्रदान करे –

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ।।१।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो ।
वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वाञ्छितार्थद ।।२।।

पुष्पांजलि व प्रार्थना –

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।१।।
भक्तार्तिनाशन पराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते ।।२।।

मातृका पूजनम् :-

गौरी पद्मा शचीमेधा सावित्री विजया जया ।
देव सेना स्वधा स्वहा मातरो लोकमातरः ॥
धृति पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुल देवताः ।

गणेशानाधिका ह्येता वृद्धो पूज्याश्चषोडश ।।

गंधोपचारादि से पूजन करें।

नवग्रहपूजनं :-

ब्रह्मामुरारीस्त्रिपुरांतकारी भानुः शशिः भुमि सुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रशनि राहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शांतिकराः भवन्तु ।।

नवग्रह मंत्र से आवाहन करके पूजा करें। इसके पश्चात्त रुद्रकलश का पूजन करें। संक्षिप्त "पुण्याहवाचन" कर कंकण बंधन करें।

रक्षा बंधन – यदाऽऽबद्ध्नं दाक्षायणा हिरण्य ठ शतानीकाय सुमनस्यमानाः तन्मः आबध्नामि शतं शरदायायुष्मांजरदष्टिर्यथा सम।।

इसके बाद जलयात्रा के लिये प्रस्थान करें।

अथ जलयात्रा विधानम्

तालाब या कूप के किनारे गोमयादि से भूमि को शुद्ध करें। स्वस्तिक बनाये। नववर्धिनी कलशो के लिये आटा गुलाल से अष्टदल बनावें उन पर कलश रखें, प्रधान ताम्र कलश बीच रखें। सप्तमातृकाओं के लिये कपड़े पर ७ अक्षत पुंज रखें या ७ सिंदूर या ७ कुंकुम की टींकी लगायें।

संकल्प :- ॐ जलयात्राङ्गभूत याज्ञिककार्य साङ्गतासिद्ध्यर्थे श्रीवरुणदेवता प्रसन्नार्थे, गणेश, जलमातृ, जीवमातृ, स्थलमातृ, सप्तसागर योगिनी, क्षेत्रपाल, भूमि पूजन नववर्द्धनी कलशेषु वरुण पूजन चाह करिष्ये।

(१८ कलश अलग मंडप हेतु पंचकुण्डीय यज्ञ मे लेवें) सर्षप विकरण कर दिग्रक्षण करें। गणपति पूजन करें।

जलमातृका पूजनं :– ७ टींकीं या अक्षतपूंजो पर –

(१) ॐ भू र्भुवः स्वः मत्स्यै नमः मत्सीवाहयामि स्थापयामि।

इस तरह नाम मंत्र के चतुर्थी लगाकर आवाहन व प्रथमा से स्थापन करें।

(२) ॐ भू कूर्म्यै.। (३) ॐ वाराह्यै नमः। (४) ॐ भू. मांडूक्यै नमः। (५) ॐ भू. मकर्यै नमः (६) ॐ भू. ग्राहक्यै नमः (७) ॐ भू. क्रौंचिक्यै नमः।

(७ पुंजेषु) सप्तजीवमातृका पूजनं :— (१) ॐ कुमारी आ.। (२) ॐ भू. धनदा आ. (३) ॐ भू. नन्दा. । (४) ॐ भू. विमलां.। (५) ॐ भू. मंगलां. (६) ॐ भू. अचलां.। (७) ॐ भू पद्मां आ. स्था।

(७ पुंजेषु) सप्तस्थलमातृका पूजनं :— (१) ॐ भू ऊर्म्यै नमः ऊर्मि आ. स्था.(२) ॐ भू लक्ष्म्यै.। (३) महामायाायै नमः। (४) ॐ भू पानादेव्यै. (५) ॐ वारुण्यै नमः। (६) ॐ भू निर्मलायै नमः। (७) ॐ भू गौधायै नमः।

(७ पुंजेषु) ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः।

मतांतरेण च (विशेष)

जीवमातृका— मत्सी कूर्मी जलौका च दर्दुरी जल गोधिका ।
मकरी तन्तुकी चैव सप्तैता जीव मातरः ।।
(अष्टमं कर्करी, नवमं सर्पिणी)

जलमातृकाः— उर्मिर्लक्ष्मीर्जला पाना वारुणी जलवासिनी ।
अपागा च क्रमेणैव सप्तैता जल मातरः ।।

स्थलमातृकाः— उमा लक्ष्मीर्महामाया पानादेवी तथैव च ।
वारुणी निर्मला गोधा सप्तैताः स्थलमातरः ।।

जल मातृका, स्थल मातृका एवं जीवमातृका का पूजन नव वर्धिनी कलशों पर करना लिखा है, परन्तु इसके लिये पहिले जलाशय या कूप से जल भरना चाहीये। बाद में जलाशय पूजन करें।

(मेरे दृष्टिकोण से पहले जलाशय पूजन करें फिर कलशों में जल भरें उस स्थिति मे मातृका पूजन अक्षत पुंजों पर अलग से करें।)

अगर नववर्धिनी कलशों मे इनका पूजन करना हो तो आठों दिशाओं में आठ एवं मध्य में प्रधान कलश रखें उसमें मातृका पूजन आदि पूर्वादि क्रमेण करें।

नोट :— मेरे विवेकानुसार मातृका पूजन उपरोक्त क्रम द्वारा इसी प्रकार से करना चाहिये। **यथा क्रम विधि :—**

जलमातृका पूजन समय पूर्वादि क्रम से उर्मिआदि सप्तमातृका तथा ईशान मे शुद्धा तथा मध्य मे वरुण का पूजन करें।

जीवमातृका पूजन समय मध्य कलश मे "ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये: नम:।", पूर्व मे "कूर्मी" आग्नेय मे "जलौकी" इस क्रम से आवाहन करते हुये उत्तर मे कर्करी तथा ईशान मे सर्पिणी का आवाहन करें।

स्थल मातृका पूजन समय पूर्वादि क्रम से उमा, लक्ष्मी........सप्तमातृका ईशान में "श्री" तथा मध्य मे प्रधान देव वरुण का पूजन करें।

सर्वेषां गंधादिभि संपूज्य

64 योगिनी :— ॐ भू भुर्वः स्वः दिव्यादि चतु:षष्टि योगिनिभ्यो नम:।अक्षत लेकर जल में छोडें जल में उनकी पूजा करायें।

क्षेत्रपाल :— वायव्य कोण मे त्रिकोण मंडल पर क्षेत्रपाल पूजन करें।

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्यनाभिरसि। मा त्वाहि ठ सीन्मा मा हि ठ सी:। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नम:। क्षेत्रपाल आ. स्था.। गंधादिभि संपूज्य।

बलिदानम् :— दीपक उड़द दही भात नमकीन से बलि देवें।

क्षेत्रापाल महाबाहो महाबल महापराक्रम ।
बलिं गृहाणदेवेश क्षेत्ररक्षण — हेतवे ।।

भो क्षेत्रपाल दिशं रक्ष: बलिं भक्षय सकुटुम्बस्य आयुंकर्ता क्षेमकर्ता तुष्टि पुष्टिकर्ताभव।

जलमध्ये सप्तसागराणाम् पूजनम्

ॐ समुद्रादूर्मिर्मधूमाँ२ उदारदुवाठ शुनासममृतत्वनाट् ।
धृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानामृतस्य नाभि ।।

ॐ भू भुर्व स्वः लवणेक्षु सुरासर्पिदधिक्षीर जलमध्यान् सप्तसागरान् आ. पूजयामि।

जल पूजनम् :- ॐ अद्भ्यो नम:। पुष्करादितीर्थभ्यो नम:। ॐ तत्वायामि ब्राह्यणा...। से पूजन करें। पेड़े की बलि प्रदान करें जल मे पंचामृतप्रेक्षण करें। तथा स्रुव से द्वादश घृत की आहुति देवें। (१) ॐ अद्भ्य: स्वाहा इदं अदभ्यो नम: (२) ॐ वार्भ्य: स्वाहा (३) ॐ उदकाय स्वाहा (४) ॐ तिष्ठन्तीभ्य: स्वाहा (५) ॐ स्रवन्तीभ्य स्वाहा (६)

स्यन्दमाभ्य स्वाहा (७) ॐ कूपाभ्य स्वाहा (८) ॐ सूद्याभ्य स्वाहा (९) ॐ धायाभ्य स्वाहा (१०) ॐ अर्णवाय स्वाहा (११) ॐ समुद्राय स्वाहा (१२) ॐ सरिताय स्वाहा।

"वरुणस्योत्तंभनमसि" मंत्र से ३ बार अर्घ देवें।

नव कलाशों का स्थापन पूजन ग्रह शान्त्यानुसार करें। उनको जल से पूर्ण करें। पूजन करें। वैसे विस्तृत में नव कलशों के अलग–अलग मंत्र व सूक्त है।

कलशपूजनम् :-

विनियोग :– ॐ महीद्योरित्यस्य मेधातिथि ऋषिः गायत्री छंदः द्यावा पृथिवी देवते भूमि स्पर्शने विनियोगः ।

(अष्ट दलाग्रे भूमिं स्पृष्ट्वा।)

ॐ महिद्यौः पृथिवी च नः इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नोभरीमभि।।

अष्ट दलों पर धान्य रख कर विनियोग छोडें।

विनियोग :– ॐ ओषधयो इत्यस बंधुर्ऋषिः निवृदनुष्टुप् छंदसी ओषधयो देवता यव प्रक्षेपे विनियोगः।

ॐ ओषधयः समवन्दत सोमेन सह राज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ठ राजन्या पारमसि ।।

कलश स्थापन करके कलश के हाथ लगाकर कहें

ॐ आजिघ्र कलशम्मह्य त्वा विशिन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रन्धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयि।

कलशों पर सप्तदर्भो से छींटें देकर पवित्र करें।

ॐ चित्पतिर्मा पुनातु वाक्यतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।।

कलशों के नीचे आधार लगा कर उन्हें स्थिर करें।

ॐ स्थिरोभव वीडवंग आशुर्भव वाज्यर्वन ।
पृथुर्भव सुषदंस्त्वमग्ने पुरीषवाहणः ।।

इसके पश्चात नवकुंभो को जल से आपूरीत करें। प्रत्येक दिशा के कलशों

को जल से पूरित करते समय निम्न ऋचायें पढ़ें —

1. ***मध्यकलशे :—***

ॐ समुद्रज्येष्ठा: सलिलस्यमध्यात्पुनानायंत्यनिविशमाना ।
इन्द्रो या वज्री वृषभोररादता आपो देवीरिह मामवन्तु ।।

2. ***पूर्वकलशे :—***

ॐ या आपो दिव्या उतवास्रवन्ति खनित्रिमा उतवाया: स्वंयजा:।
समुद्रार्थाया: शुचयो पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ।।

3. ***आग्नेयकलशे :—***

ॐ या सा राजा वरुणोयाति मध्येसत्यानुते अवपश्यञ्जनाना।
मधुश्चुत: शुचयो या: पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ।।

4. ***दक्षिणकलशे :—***

ॐ यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा यासूर्जं मदन्ति।
वैश्वानरो यास्वग्नि: प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ।।

5. ***नैर्ऋत्यकलशे :—***

ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहान्तरिक्षंगच्छ स्वाहा देव ठं सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौगच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दार्ठसि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरठं गच्छ स्वाहा मे हार्दिं यच्छ दिवन्ते धूमो गच्छतु स्वज्योर्ति: पृथिवीं भस्मना पृण स्वाहा।।

6. ***पश्चिमकलशे :—***

ॐ समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिताय त्वा वाताय स्वाहा।
अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा प्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा।
अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहा शिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा।।

7. ***वायव्यकलशे :—***

ॐ समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानु: शम्भूर्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा मारुतोऽसि मारुतांगण: शम्भूर्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा वस्यूरसि

दुवस्वाच्छम्भूर्मयो भूरभि मा व्वाहि स्वाहा ॥

8. उत्तरकलशे :—

ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय त्वामवस्युराचके ॥

9. ईशानकलशेजलपूरणम् :—

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीह ॥

सब कुंभो में धान्यप्रेक्षप :—

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि ॥

गंधप्रक्षेप :—

ॐ त्वांगन्धर्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमच्युत ॥

कलशं वस्त्रेणवेष्टनम् :—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातुवसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः॥

अथ सर्वौषधीः :—

ॐ या ओषधिः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा मनैनु बभ्रुणामह ठं शतं धामानि सप्त च ।

अथ दूर्वाप्रक्षेपः :--

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।

अथ कलशे कुशाप्रक्षेपः :-

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम् ।

इसके बाद "स्योना पृथिवी" से सप्तमातृका, या "फलनीर्या" से पूगीफल

कलश में डालें।

द्रव्य प्रक्षेण :– पूर्व कलश में इक्षुरस, दक्षिण कलशे **स्वादूदकाय** (मीठा रस) पश्चिम कलश में **"क्षीर"** उत्तर कलश मे **दधि** तथा मध्य कलश में **"षड्रस"** डालें।

पंचरत्नप्रक्षेप :–

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत । दधद्रत्लानि दाशुषे ।।

दक्षिणाप्रक्षेप :–

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

पंचपल्लवाः :– (वट, पीपल, गूलर, आम, पलाश)

ॐ अश्वथेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पुरुषम् ।।

इसके बाद **"पूर्णादर्वि"** से पूर्णपात्र तथा **"श्रीश्चते"** मंत्र से नारेल को मोली या वस्त्र से वेष्टन करके रखें। तत्पश्चात् **वरुण पूजा** तथा तीर्थवाहन करें।

(**विशेष विधि** में आवाहन में प्रथम कलश में **"दश दिक्पालों"** के मंत्रो से, द्वितीय मे **"श्री सूक्त"** एवं **"लक्ष्मी सूक्त"** से, तृतीय में **"पुरुष सूक्त"** से, चतुर्थ में **"नारायण अनुवाक"** से, पंचम मे **"पञ्च ब्रह्म"** मंत्रो से, षष्टम मे **"अम्भ्स्य पारेण अनुवाक"** सप्तम में **"ब्रह्मानंदवल्ली"** अष्टम में **"भृगुवल्ली"** मंत्र ऋचाओं से आवाहन, मध्य के **नवम** कलश मे वरुण एवं तीर्थों के मंत्रों से आवाहन करके पूजा करें।)

स्वशरीरे वरुण मंत्र न्यासः :–

ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये: अंगुष्ठाभ्यां नमः।। हृदयाय नमः ।।
ॐ रुं वरुणाय जलाधिपतये: तर्जनीभ्यां नमः।। शिरसे स्वाहा।।
ॐ णां वरुणाय जलाधिपतये: मध्यमाभ्यां नमः।। शिखायैवषट् ।।
ॐ यं वरुणाय जलाधिपतये: अनामिकाभ्यांनमः।। कवचाय हुं।।
ॐ नं वरुणाय जलाधिपतये: कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। नैत्रत्रयाय वौषट्।।
ॐ मं वरुणाय जलाधिपतये: करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।। अस्त्रायफट्।।

कलश में वरुण देवता की प्रतिष्ठा करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणे हबोध्युरुश ठं समानऽआयुः प्रमोषीः ।।१।।
ॐ वरुणस्योत्तम्भनसि........।।२।। ॐ भुर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छेह, इहतिष्ठ। इत्यावाह्य ॐ वरुणाय नमः ।

सर्वदेवाऽऽवाहनम् :-

कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्र समाश्रितः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृता ।।१।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी ।
ऋग्वेदो यजुर्वेदा सामवेद च अथर्वणः ।।२।।
अंगैश्च कलशस्तु सर्वेसमाश्रिता ।।३।।
आगच्छन्तु महाभागाः समुद्राः सरितोह्वदा ।
प्रभासं पुष्करं चैव विशाला विरजा गया ।।४।।
कुरुक्षेत्रं प्रयागं च भद्रकर्णं पृथूदकम् ।
गंगा च यमुना चैवं ब्रह्मपुत्रा सरस्वती ।।५।।
ताप्ती गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा ।
नदाश्च विविधाजाता नद्यः सर्वस्तथापरा ।।६।।
एवमादीनि तीर्थानि यानि सन्ति धरातल ।
आयान्तु तानि सर्वाणि कलशेषु समन्ततः ।।७।।

श्वेत गंधाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य ताम्बूलं नानाफल दक्षिणाभि. संपूज्य। नारिकेलेनार्घ्यं दद्यात्।

सर्वोपचार पूजा पश्चात् कलश से प्रार्थना करें।

देवदानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोऽसि तदाकुंभ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।।१।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।।२।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।

आदित्य वसवो रुद्रा विश्वेदेवा: सपैतृका: ।।३।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत: कामफलप्रदा: ।
त्वत् प्रासादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ।।४।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नोभव सर्वदा ।।५।।

नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय,
सुश्वेत हाराय सुमंगलाय ।
सुपाशहस्तोय झषासनाय,
जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ।।

पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मनी — जीवनायकम् ।
यावत् कर्म समाप्ति तावत्त्वं स्थिरो भव ।।

(पुष्पांजली प्रदान करें।)

ब्राह्मणों को तिलक करें एवं दक्षिणा देवें।

पश्चात् यजमान पत्नि व अन्य सुवासिनियां कलश को धारण करें। अन्य २८ कलश मंडप के कलश भी सुवासिनियां धारण करें। राजमार्ग होते हुये जल यात्रा यज्ञ मंडप की ओर प्रस्थान करें।

अर्द्धमार्ग में किसी चौराहे पर क्षेत्रपाल, भैरव को बलि प्रदान करें। चौराहे पर भूमि को गोबर से लिपकर अक्षत पुंज पर सिंदूर लगाकर पाषाण या सुपारी रखें उस पर क्षेत्रपाल, भैरव का आवाहन करें।

ॐ नहिस्पशम विदन्नन्य— मस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्ने ।
एमे नमवृधन्नमृता अमर्त्य वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवा: ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: क्षेत्रपालाय नम: । क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि।
स्नान, वस्त्रा, गंधोपचार से पूजन कर बलि प्रदान करें।

ॐ क्षेत्रस्योत्वमसि क्षत्रस्य जराय्वसि क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसिन्द्रस्य बार्त्रघ्नमसि मित्रस्यासि वरुणस्यासि त्वयायं वृत्रं वधेत्। दुवासि रुजासि क्षमासि। पातैनं प्राञ्चं पातैन प्रत्यञ्चं पातैन तिर्यञ्चं दिग्भ्य: पात: ।।

ॐ ऐहि ऐहिदेवीपुत्र बटुकनाथ कपिल जटा भार भास्वर ज्वालामुख

क्षेत्रपाल अवतर अवतर कपिल पिंगल त्रिनेत्र उर्ध्वकेश जिह्वाललन शत्रुन छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि कुरु कुरु मुरु मुरु चल चल लं ल: ह्रां ह्री ह्रूं ह्रैं ॐ भगवन् क्षेत्रपाल मम यज्ञं रक्ष रक्ष इमं दधिमाषमुद्गभक्त सुगन्धित तैल रक्तवस्त्रादियुतं बलिं गृहाण स्वाहा ।।

आचार्य व ब्राह्मण मार्ग मे तथा यज्ञ मंडप मे प्रवेश करते समय **"भद्रसूक्त"**, **"शांतिसूक्त"**, **"पावमानसूक्त"**, **"शाकूनसूक्त"** **(सुमंगलसूक्त)** आदि सूक्त पढ़ें।

पावमान सूक्तम्

(१)

यह पावमान सूक्त रक्षाकरण, पवित्रीकरण, त्रिसूत्रीकरण, प्रोक्षण एवं अभिषेक में भी काम आता है।

ॐ पुनन्तु मा देव जना: पुनन्तु मनसाधिय:। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेद: पुनीहिमा ।।१।। पवित्रेण पुनीहिमा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने कृत्वा क्रतूँरनु ।।२।। यत्ते पवित्र मर्चिष्यग्ने वितत मन्तरा । ब्रह्म तेन पुनातु मा ।।३।। पवमान: सोअद्यन: प्रवित्रेण व्विचर्षणि:। य: पोता स पुनातु मा ।।४।। उभाभ्यान्देव सवित: पवित्रेण सवेन च। माम्पुनीहि विश्वत: ।।५।। वैश्वदेवी पुनतीदेव्व्या गाद्यस्यामिमा बहव्यस्तन्वो वीतपृष्ठा: । तयामदन्त: सधमा देषुवयꣳस्यामपतयो रयीणाम् ।।६।।

।। इति पावमान सूक्तम् ।।

(२)

ॐ पवमान: सवर्जन:। पवित्रेण विचर्षणि:। य: पोता सपुनातुमा। पुनन्तु मा देवजना: । पुनन्तु मनवोधिया । पुनन्तु विश्वआयव: । जातवेद: पवित्रवत्। पवित्रेण पुनिहिमा। शुक्रेण देवदीद्यत्। अग्नेक्रत्वा क्रतू ठं रनु ।।१।। ॐ यत्ते पवित्रमर्चिषि । अग्ने विततमन्तरा । बह्मतेन पुनीमहे। उभांभ्यादेव सवित: पवित्रेण सवेन च ।इदं ब्रह्म पुनीमहे ।। वैश्वदेवी पुनती देव्यागात्। यस्मै बह्वीस्तनुवो वीतपृष्ठा:।

तया मदंतः सदमाद्येषु। वय ठं स्यामपतयो रयीणाम्।।२।। ३ॐ वैश्वानरो रश्मिभिर्मा पुनातु । वातः प्राणेनेषिरो मयोभूः । द्यावा पृथिवी पयसा पयोभिः । ऋतावरी यज्ञिये मा पुनीताम । वृहद्भिः सवित स्तृभिः । वर्षिष्ठै र्देवमन्मभिः अग्ने दक्षैः पुनीहिमा । येनदेवा अपुनत । येनापो दिव्यंकशः। तेन दिव्येन ब्रह्मणा। इदं ब्रह्मपुनीमहे ।।३।। ३ॐ यः पावमानी रध्येति । ऋषिभिः संभृत ठं रसम्। सर्वठंसपूत मश्नाति। स्वदितं मातरिश्वना। पावमानी र्यो अध्येति। ऋषिभिः संभृत ठं रसम्। तस्मै सरस्वती दुहे। क्षीर ठं सर्पिर्म धूदकम्। पावमानीः स्वस्त्यनीः ।।४।।

३ॐ सुदुघाहि पयस्वतिः । ऋषिभिः संभृतोरसः । ब्रह्मणेष्वमृतं हितम्। पावमानी दिशंतुनः । इमं लोक मथोअमुम्। कामान्त्समर्धयन्तुनः । देवी र्देवैः समाभृताः। पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघाहिवृतश्चुतः । ऋषिभिः संभृतोरसः ।।५।। ३ॐ ब्रह्मणेष्वममृत ं हितम् । येन देवाः पवित्रेण। आत्मानं पुनतेसदा। तेनसहस्रधारेण। पावमान्यः। पुनन्तुमा। प्राजापत्यं पवित्रम् । शतोद्याम ं हिरण्मयम् । तेन ब्रह्म विदोवयम्। पूतं ब्रह्मपुनीमहे। इन्द्रः सुनीती सहमापुनातु । सोमः स्वस्त्या वरुणः समीच्या। यमोराजा प्रमृणाभिः पुनातु मा। जातवेदा मोर्जयत्या पुनातु ।।६।।

।। इति पावमान सूक्तम् ।।

अथ सुमंगलम् सूक्तम्

(शाकून सूक्त)

(मंडप प्रवेशे गृह प्रवेशे, शुभकार्येषु मूर्ति प्रतिष्ठा स्थापन प्रवेशसमये)

३ॐ कनिक्रदज्जनुषं प्रबुवाणऽइयर्तिवाचमरितेव नावम् । सुमंगलश्च शकुने भवासि मा त्वा काचिदभिभा विश्व्याविदत्।।१।। मात्वा श्येन उद्वधीन्मा सुपर्णो मात्वाविदद्दिषुमान् वीरोऽस्ता ।

पित्र्यामनु प्रदिशं कनिक्रदत् सुमंगलो भद्रवादीवदेह ।।२।।
अवक्रन्द दक्षिणतो गृहाणां सुमंगलो भद्रवादी शकुन्ते ।
मानः स्तेन ईशत माघशं सो बृहद्वदेम विदथे सुविराः ।।३।।

।। इति सुमंगलम् सूक्तम् ।।

अथ स्वस्ति सूक्तं

शुभ कार्य में, प्रवेश में तथा तिलक एवं आशिर्वाद समय पढ़ें।

ॐ स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः ।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावा पृथिवी सुचेतना ।।१।।
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः ।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ।।२।।
विश्वेदेवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये ।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ।।३।।
स्वस्ति मित्र वरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ।।४।।
स्वस्ति पंथामनुचरेम सूर्या चन्द्रमसाविव ।
पनुर्ददता घ्नता जानता सङ्गमेमहि ।।५।।   (इति ऋग्वेदीय)
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाविश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्योंअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ।।६।।

।। इति स्वस्ति सूक्तम् ।।

अथ पूजनप्रकरण:

मंडपे

हाथ में पुष्प अक्षत पुन: लेकर गणेश जी का ध्यान करें—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक: ।
लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायक ।।१।।
धुम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन: ।
द्वादशैतानि नामानि य: पठेच्छृणुयादपि ।।२।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।।३।।
अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो य: सुरासुरै: ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नम: ।।४।।
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।५।।
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सवार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ।।६।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्ण चतुर्भजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।७।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनो हरि: ।।८।।
तदैव लग्नं सुदिनं तदैव विद्याबलं दैवबलं तदैव ।
ताराबलं चन्द्रबलं तदैव लक्ष्मीपतेस्तेऽङ्घ्रियुगंस्मरामि ।।९।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजय: ।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दन: ।।१०।।
यत्र योगेश्वर: कृष्ण यत्र पार्थो धनुर्धर: ।
तत्र श्रीर्विजयोभूतिर्ध्रुवा — नीतिर्मतिर्मम ।।११।।

सर्वेष्वारम्भकार्येषु देवास्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवाः दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ।।१२।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणौम्यादौ सर्वकार्यार्थसिद्धये ।।१३।।
विश्वेशं माधवं ढुण्डिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।
वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।।१४।।

श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यांनमः, उमामहेश्वराभ्यांनमः शचीपुरन्दराभ्यांनमः वाणीहिरण्यगर्भाभ्यांनमः । इष्टदेवताभ्योनमः, कुलदेवताभ्यो नमः, स्थानदेवताभ्योनमः, वास्तुदेवताभ्योनमः, ग्रामदेवताभ्योनमः, मातापितृभ्यो नमः। सर्वेदेवेभ्योनमः सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। एतत्कर्म प्रधान देवताय नमः।

प्रधान संकल्प :— पृष्ठ संख्या ५४ के अनुसार करें।

दिग्रक्षणं :— (बायें हाथ मे सरसों लेकर दाहिने हाथ से ढकें। सूक्त पृष्ठ संख्या ५२२ पर दिया गया है।)

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मेनिष्ट्यो यममात्यो निचखादेन महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे समानो यम समानो निचखादेन महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सबंधु र्यम सबंधुर्निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि यम्मे सजातो यम सजातो निंचखानोत्कृत्याङ्किरामि।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः, सर्वतोदिशम् ।
सर्वेषामवरोधेन पूजाकर्म समारंभे ।।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।।
भूतप्रेत — पिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसा ।
स्थानादस्माद् व्रजन्त्वन्यत्स्वीकारोमि भुवंत्विमाम् ।।
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन ।

ते सर्वेऽप्यप गच्छन्तु पूजा कर्म करोम्यहम् ॥

इसके बाद थोड़ी सरसों लेकर चारों दिशाओं मे बिखेरें फिर दसों दिशाओं में दिग्रक्षण करें।

ॐ पूर्वे रक्षतु गोविन्दः आग्नेयां गरुड़ध्वजः ।
याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋत्ये ॥
वारुण्या केशवो रक्षेद्वायव्यां मधुसूदनः ।
उत्तरो श्रीधरो रक्षेदीशाने तु गदाधरः ॥
उर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ।
एवं दशदिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ॥

या –

प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यमग्निदेवता ।
दक्षिणेऽवतु वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी ॥
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ।
उदीच्यां पातु कौमारी ऐशान्यां शूलधारिणी ॥
उर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेद् धस्ताद् वैष्णवी तथा ।
एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ।
अजिता वामवाश्र्वे तु दक्षिणे चापराजिता ॥

शिखाबंधन :-

ॐ ब्रह्मवाक्यसहस्रेण शिववाक्यशतेन च ।
विष्णोर्नामसहस्रेण शिखाग्रंथि करोम्यहम् ॥

(ततौ वाम पादेन त्रिवारं भूमि ताडयेत्)

दुष्टानां दमनं कृत्वा पापानिघ्नन्तुमेऽमराः ।
निर्यान्तुते सर्वविघ्नाः आगच्छन्तु अत्र देवता ॥

प्राणायाम् :– १६ बार ॐ या व्याहृति से पूरक, ६४ बार जप से कुंभक तथा ३२ बार जप से रेचक करें। अथवा मूल मंत्र का जाप १–४,२ के अनुपात से करें।

भूत शुद्धि

(अपनी बांई कोख में पाप पुरुष का ध्यान करें।)

वाम कुक्षि स्थितं कृष्णमंगुष्ठ परिमाणकं ।
विप्रहत्या शिरोयुक्तं कनकस्तेये – बाहुकम् ।।
मदिरा पान हृदयं गुरु तल्प कटीयुतम् ।।
तत्संयोगि पदद्वन्द्वयमुप पातक रोमकम् ।
खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रम् च दुःसहम् ।।

इसके बाद **"यं"** बीज मंत्र १६ बार जपता हुये बायीं नासिका से वायु के साथ भगवती के तेज का स्मरण कर पूरक करें। फिर कुंभक करें **"रं"** का ६४ बार जाप करे और समझे इससे पाप पुरुष भस्म हो गया है, **"यं"** मंत्रा ३२ बार जपता हुआ रेचक करें। यह समझें की पाप पुरुष की भस्मी बाहर चली गई है।

फिर **"वं"** का १६ बार जाप करें भवना करें की सहस्रार के अमृत से मरी देह अमृतमय हो गयी है। **"लं"** इस मंत्र का १६ बार जाप करें और समझें मेरी देह वज्र समान हो गई है।

अथवा – **"ॐ हौं"** इस मंत्र का १०८ बार जाप करें।

वरुण पूजा

पृथ्वी पर यंत्र बनाकर अक्षत रख उस पर वरुण पात्र रखें। (यंत्र में बिन्दु त्रिकोण वृत्त उस पर वरुण चतुस्त्र बनावें।)

ॐ महीद्यौः पृथ्वी च नऽइमं यज्ञंमिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।

कलश के हाथ लगावें या अनामिका से स्पर्श करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणहवोध्युरुश ठ समान आयुः प्रमोषीः ।।
मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् ।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसां पतिम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन्कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवार सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि।

स्नानं –

ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभ सर्जनीस्थो । वरुणस्य

ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसद नमासीद।।

पंचामृतंप्रक्षेप –

ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्त्रोतसः ।
सरस्वती तु पंचधासोदेशे भवत्सरित् ।।

गंगाजल डलें –

नमामि गंगे तव पादपंकजं, सुरासुरैर्वन्दित दिव्य रूपम् ।
भुक्तिं च मुक्तिं प्रददासि नित्यं, भावानुसारेण सदा नराणाम् ।।

वस्त्रम् –

सर्वभूषाधिके शुद्धे लोक लज्जा निवारणे ।
मयोपपादिते वस्त्रे गृहाण परमेश्वर ।।

उपवस्त्रम् –

ॐ सुजातो ज्योतिषा सहशर्म वरुथ मा सदत्स्वः ।
वासो अग्नेविश्वरूपः ठ संव्ययस्व विभावसो ।।

गंधम् –

गंधद्वारां दुराधर्षां नित्य .पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

अक्षताः –

अक्षताधवलाः शुभ्राः कुंकुमेन विराजिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।।

पुष्पं

पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।
गृहाणार्घं मयादत्तं देहि मे वांछितं फलम् ।।

धूपं –

वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यं सुमनोरहरः ।
आघ्रेयः सर्वं देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

दीपं –

साज्यं च वर्तिं संयुक्तं वन्हिना योजितं मया ।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापह ।।

सुगंधित द्रव्यं -

ॐ अ ठ शुनाते अ ठ पृच्यताम्परुषापरुः ।
गंधस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः ।।

नैवेद्यं -

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारं भक्ष्यभोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृहताम् ।।

आचमनीयम् -

शीतलं निर्मलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम् ।
आचम्यतां सुरश्रेष्ठ मयादत्तं च भक्तितः ।।

ताम्बूलं समर्पयामि -

नागवल्लीदलं चैव पूगीफलं समन्वितम् ।
कर्पूरेण समायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगह्यताम् ।।

पूगीफलं समर्पयामि -

समुद्रतीरसम्भूतं नानारोगनिवारणम् ।
पूगीफलं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरम् ।।

दक्षिणा समर्पयामि -

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो ।
अनंतपुण्यफलद मतः शांतिं प्रयच्छ मे ।।

विशेष आवाहन -

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धो कावेरि जलेऽस्मिसन् सानिध्यं कुरु ।।
ब्रह्माण्डोदर तीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ।।
पूर्वेऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे
सामवेदाय नमः उत्तरे अथर्वण वेदायनमः

अंकुश मुद्रा से सूर्य मंडल के तीर्थो का आवाहन करें, "वं" मंत्र बोलकर

धेनुमुद्रा से अमृतीकरण, हुँ मंत्र से चुटकी बजाकर (चारों ओर) रक्षा करें। कलश पर बाँयां हाथ रखकर उस पर दाहिना हाथ रखकर मत्स्य मुद्रा बनावें और "वं" वरुण मंत्र का जाप करें।

पुष्पांजलिमादाय -

नमोनमस्ते स्फटिकप्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमंगलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमोनमस्ते ।।
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मीनी जीवनायकम् ।
यावत्कर्म समापप्येत् तावत् त्वं स्थिरो भवेत् ।।

इसके बाद जल से पूजा सामग्री का प्रोक्षण करें —

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान् ऊर्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे।
योवः शिव तमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः ।।

इसके बाद भूमि पर जल छोडें।

तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ ।
(पुनः प्रोक्षण) — आपोजन यथाचनः ।।

दीपपूजनम् (हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करें)

ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्नि स्वाहा। सूर्यो ज्योति ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ।
सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिःस्वाहा।।
ॐ दिवे दिवे सदृशी रन्यमर्ध्यकृष्णा असेदधपसद्म नोजा ।
अहं दासा वृषभो वस्नपयं तोदव्रजे वर्चिनं शं वरं च ।।

फिर दीपक को षोडशोपचार से पूजन एवं प्रार्थना करे।

भो दीप देवस्वरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत ।
यावत्पूजासमाप्ति स्यात्तावदत्र स्थिरो भव ।।

शंख पूजनम्-

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्य पुरोहितः । तमीमहे महागयम्।
उपयामगृहीतोस्यग्नये त्वा वर्चस ऽएषतेयोनिरग्नये त्वावर्चसे।।
ॐ शङ्ख चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम् ।

पृष्ठे प्रजापति विद्यादग्रे गंगा – सरस्वती
त्र्यैलोक्य यानि तीथानि वासुदेवस्य चाज्ञया ।
शङ्खे तिष्ठति वै नित्यं तस्माच्छंखं प्रपूजयेत ।।

शङ्ख की पूजा के बाद प्रार्थना करे।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ।
नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोस्तुते ।।

गरुड पूजनम्

ॐ सुपर्णोसि गुरुत्क्माँ स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथंतरेपक्षौ।
स्तोम आत्क्माच्छान्दा ँ स्यज्ञानियजू ँषिनाम ।।
सामते तनूर्वाम देव्यं यज्ञा यज्ञि यम्पुच्छन्धिष्ण्या: शफा: ।
सुपर्णो सिगरुत्क्मान्दिवङ्गच्छस्व: पत ।।

ध्यानम् –

आजानोस्ततप्त हेमप्रभममलहिमं प्रख्य मानहि तस्मादकर्ण
कुंकुमाभं भ्रमरकुलभि वश्यामलं मूहिर्त केशम् ।
ब्रह्माण्ड व्याप्त देहं भुजमिह प्रवैरभूषणैर्भूषिताङ्ग पिङ्गाक्षं
ताक्ष्र्यद्रंष्ट्रै वरदमभयदं ताक्ष्र्यमुग्रं नमामि ।।

पूजन करने के बाद घंटा बंजायें।

आगमनार्थं तु देवानां गमनार्थन्तु राक्षसाम् ।
कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ ।।

(देवता के स्नान, नैवेद्य तथा आरती के समय घंटा नाद करें।)

स्नाने धूपे च नैवेद्ये दीपे वस्त्रे च भूषणे ।
घण्टानाद प्रकुर्वीत तथा नीराजनेपि च ।।

गणपति पूजनम्

स्वस्तिक बनाकर, उसके मध्य में अक्षत पर, दीपपात्र के अक्षत पर सुपारी के मोली लपेटकर रखें।

हाथ में पुष्प अक्षत लेकर स्वति चक्र की पीठ देवियों का ध्यान पूर्वादि क्रम से करें।

तीव्रा चालिनी नंदा भोगदा कामरूपिणीम् ।
उग्रा तेजोवती सत्यान्ततो विघ्नविनाशनीम् ।।१।।
रक्तांग राग वसना माल्याभरण भूषिताम् ।
वराभीति करा सर्वा प्रसूनादिभिरर्चयेत ।
तस्योपरि स्वस्ति चक्रं कल्पयित्वा यथा विधि ।।२।।

पुन: हाथ मे अक्षत पुष्प लेकर गणपति का ध्यान एवं आवाहन करें। **(गणानांत्व मंत्रेण)**

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो व्रातेभ्यो
व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च
वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ।।१।।
सजयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरण् ।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नशयति विघ्नानाम् ।।२।।
गंडपाली गलद्दान पूरलाल समानसान ।
द्विरेफान कर्णतालाभ्यां वारयन्तुं मुहुर्मुहुः ।।
कराग्रधृतमाणिक्य कुंभवक्त्रे र्विनिर्गतैः ।
रत्नवर्षैः प्रीणयन्तं साधकान् मद विह्वलम् ।।
माणिक्यमुकुटो पेतं सर्वाभरणभूषितम् ।।३।।
ॐ हे हेरम्ब त्वमेह्येहि ह्यंबिका त्र्यम्बकात्मज ।
सिद्धि बुद्धिपतेत्र्यक्ष लक्षलाभ पतिः पित्रः ।।४।।
नागास्य नागहारत्वं गणराज चतुर्भुजम् ।
भूषितः स्वायुधैर्दन्त पाशांकुश परश्वद्यै ।।५।।
श्री महागणाधिपतये रिद्धि सिद्धि लाभ शुभ सहिताय आवाह्यामि ।।
आवाह्यामि पूजार्थ रक्षार्थ च मम क्रतोः ।
इहागत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ।।

(बांयी ओर की दो लकीरों में रिद्धि एवं लाभ, दाहिनी ओर की दो लकीरों में शुभ व बुद्धि का आवाहन करें। बीच की चार बिन्दुओं में अग्नि कोण में

शिव, वायव्य मे दुर्गा, नैऋत्य में सूर्य, ईशान में विष्णु का आवाहन करें)

(*नोट* :— षोडशोपचार के वैदिक व पौराणिक दोनों मंत्र दिये है। सभी मंत्र पढ़ना अनिवार्य नहीं है, किसी एक मंत्र से सभी पूजा करा सकते है।)

आसनम् -

ॐ वर्स्मोऽस्मि समानानामुद्यता मिव सूर्यः ।
इमन्तमभितिष्ठामि यो माकश्चाभि दासति ॥
ॐ पुरुष एवेदः ठसर्वयद्भूतं यच्चभावव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति ॥
विचित्र रत्न खचितं दिव्यास्तरण संयुक्तम् ।
स्वर्ण सिंहासनं चारु गृहाण गुहाग्रजः ॥
ॐ सिद्धि बुद्धि सहित श्री महागणपतये आसनं समर्पयामि॥

पाद्यम् -

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्चपुरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥
उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध संयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगह्यताम् ॥ पाद्यं स.॥

अर्घ्यम् -

ॐ त्रिपादूर्द्ध उदैत पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
ततो विस्वङ व्यक्रामत् साशनानशनेऽअभि ॥
गणाध्यक्ष नमस्तेस्तु गृहाण करुणाकर ।
अर्घ्यं च फल संयुक्तं गंधमाल्याक्षतैर्युतम्।।अर्घ्यम् स. ॥

आचमनीयम् -

ॐ इमम्मे वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ।
कर्पूर वासितं तोयं मंदाकिन्याः समाहृतम् ।
आचम्यतां जगन्नाथ मयादत्तं प्रयत्नतः ॥ आच. स.॥

स्नानम् -

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।

पशूंस्ताश्चक्रे वायव्यान् आरण्यान् ग्राम्यांश्च ये ।।
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितास्तथा ।
आवाहिता मया तुभ्यं कुरु स्नानं गणेश्वर ।।

पयः स्नानं -

ॐ पयसो रूपं यद्यवाद्दध्नो रूपङ्कर्कन्धूनि ।
सोमस्य रूपं वाजिनः सौम्यस्यरूप मामिक्षा ।।
ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधा।
पयस्वतिः प्रदिशः सन्तु मह्ययम् ।।
कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थ प्रति गृह्यताम् ।।

फिर शुद्धोदक स्नान कराकर, पुनः आचमन करायें।

दधिस्नानम् -

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिर्नो मुखा करत्प्रण आयु ठं षितारिषत ।।
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मयोदेव स्नानर्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

पुनः शुद्धोदक स्नान एवं आचमन

घृत स्नान -

ॐ घृतेनांजन्तसम्पथो देवयानान्प्रजान्वाज्यप्येतुदेवान ।
अनुत्वासप्ते प्रदिशः सचन्ता ठं स्वधा मस्मै यजमानाय धेहि।।१।।
ॐ घृतं घृतपावनः पिबतवसां वसापावानः पिबतांतरिक्ष हविरसि
स्वाहाः ।। दिशः प्रदिश आदिशो विदिशउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहाः।।२।।
नवनीतं समुत्पन्नं सर्व संतोषकारक ।
घृतं तुभ्यं प्रदस्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।३।।

(पुनः शुद्धोदक स्नान एवं आचमन करायें)

मधुस्नानं -

ॐ स्वाहा मरुद्भिः परिश्रीयस्व दिव

स ठ स्पृशस्पाहि मधु मधु मधु ।१॥
ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिंधवः ।
माध्वीर्नः संत्वोषधीः मधुनक्त मुतोष सो मधु
मत्पार्थिव ठ रजः मधु द्यौरस्तुनः पिता ॥२॥
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥३॥
पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुर मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥४॥

(पुनः शुद्धोदक स्नान एवं आचमन करायें)

शर्करा स्नानं -

ॐ अपां ठ रसमुद्वय सः ठ सूर्येसन्तः ठ समाहितम् ।
अपां ठ रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युत्तम मुपयाम ।
गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृहाणाम्येषते ।
योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टत्तमम् ।१॥
इक्षुसारसमुद्भूतं शर्करा पुष्टिदा शुभा ।
मलापहारिका दिव्या स्नानर्थं प्रतिगृहताम् ॥२॥

(शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शद्धोदक स्नानान्ते आचनीयं सम.)

गंधोदक स्नानः -

ॐ गंधर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै ।
यजमानस्य — परिधि — रस्यग्निरिड ऽ ईडितः ।१॥
चम्पकाशोक — वकुलं — मालती मोगरादिभि ।
वासितं स्निग्धता हेतु चारु प्रतिगृह्यताम् ॥२॥

(गंधोदक स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शुद्धो. स्ना.आचनीयं सम.)

कुशोदक स्नानम् -

ॐ शरासः कुशरासो दर्भासः सैर्याउत ।
मोंजाअदृष्टा वैरिणा सर्वेसाकं न्यलिप्सत ॥

उद्वर्तन स्नानम् -

ॐ अ ठं शुनाते अ ठं शुः पृच्यतां पुरुषा परुः ।
गंधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽ अच्युतः ।।

पुनः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि । शद्धोदक स्नान्ते आचनीयं सम.

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः ।
श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये
कर्णायामा ऽ अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः ।।

अभिषेक -

गणपति अथर्वशीर्ष से करायें या गणपतिध्यान मंत्रो से अथवा गणपति द्वादश मंत्रावलि से करायें। पृष्ठ ५३० पर अवलोकन करें।

शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।शद्धोदक स्नान्ते आचनीयं सम.

वस्त्रम् (उपवस्त्र) -

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरा सः कवयऽउन्नयंति स्वाध्यो मनसा देवयंतः ।१।।

यज्ञोपवीतं -

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
उपवीत मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ।।

(ॐ भू भुर्वः स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय महागणाधिपतये यज्ञो. स.)

देव देव नमस्तुभ्यं त्रायस्व भवसागरात् ।
ब्रह्मसूत्र मयादत्तं गृहाण परमेश्वर ।।

यज्ञोपवितान्ते आचमनीयम् समर्पयामि

उपवस्त्र (पट्टवस्त्र) -

वसो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्रमसि
सहस्त्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः
पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष्वः ।

गंधम् -

ॐ त्वां गंधर्वा अखनं स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ।।१।।
श्रीखण्डं चंदनं दिव्यं गंधाढ्य सुमनोरहम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम् ।।२।।

अक्षताः -

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत । अस्तोषत
स्वभानवो विप्रान विष्ठयामती योजान्विन्द्रते हरी ।।१।।
अक्षताधवलाशुभ्राः कुंकुमेन विराजिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ।।२।।

सिन्दूर -

ॐ मध्याह्न चण्डार्क मरीचि सन्निभम् ।
विघ्नेश्वर श्रीहनुमद बहुप्रियम् । भो सिन्धु पुत्र्या
सह नंदनात्मज सिन्दूरचूर्णं परिगृह्यतां विभो ।।

पुष्प -

ॐ औषधीः प्रतिमोद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव साजित्वरी र्वीरुधः पारयिष्णवः ।।
पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।
गृहाणार्घं मयादत्तं देहि मे वांछित फलम् ।।

सुगन्धितद्रव्य -

ॐ अ ठं शुनाते अ ठं शुःपृच्यताम्परुषापरुः ।
गंधस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ।।
ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

(पुनः आचमनम् समर्पामि)

अबीर गुलाल -

ॐ अहिरिव भौगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्यायाहेतिं परिबाधमानः ।

हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्धान् पुमान् पुमा ठ संपरिपातु विश्वत:।।

धूपं -

ॐ अश्वस्यत्वा वृष्ण: शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्या:।
मखायत्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ।।१।।
ॐ धूरसि धूर्वंधूर्वन्तं धूर्वं तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयंधूर्वाम: ।
देवानामसि वह्नितम ठसस्नितमं प्रप्रित मज्जुष्टतमं देवहूतमम्।।२।।
वनस्पति — रसोद्भूतो गंधाढ्य: सुमनोहर: ।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।। धूपं घ्रापयामि ।।

दीपं -

ॐ दिवे दिवे सदृशी रन्यमर्ध्यंकृष्णा असेदधपसद्म नोजा ।
अहं दासा वृषभो वस्नपयं तोदव्रजे वर्चिनं शं वरं च ।।

दूर्वांकुर समर्पण -

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुष: परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।१।।
दूर्वे ह्यमृत संपन्ने शतमूले शतांकुरे ।
शत — पातक — संहन्त्री शतमायुष्य वार्धिनी ।।२।।
विष्णवादि सर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रीतिदासदा ।
क्षीरसागरसम्भूते वंशवृद्धिकरी भव ।।३।।

नेवैद्यम् -

ॐ अन्नपते ऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिण: ।
प्रप्रदातारं तारिष ऊर्जनो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।।१।।
ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ठ शीर्ष्णो द्यौ: समवर्त्तत ।
पद्भयां भूमिर्दिश: श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ।।२।।
अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसै: समन्तिवतम् ।
नैवेद्यं गृह्यता देव: भक्ति मे ह्यचलां कुरु ।।३।। नै. स.

आचमनीयम्-

ॐ इममे वरूण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥
शीतलं निर्मल तोयं कर्पूरेण सुवासितम् ।
आचम्यतां सुर श्रेष्ठ मयादत्तं च भक्तितः॥ आ. स.

(पुनः नैवेद्यं पुनराचमनीयं समर्पयामि नमः)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मइध्मः शरद्धविः ॥

करोद्वर्तनम्-

करोद्वर्तनकं देवः सुगन्धैः परिवासितै ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम् ॥

(करोद्वर्तनार्थे सुगंधि जलम् समर्पयामि)

हस्त प्रक्षालनम् -

गंधतोयं समानीतं सुवर्ण कलशे स्थितम् ।
हस्तप्रक्षालनार्थाय पानीयं ते निवेदये ॥

ऋतु फलम् -

द्राक्षाखर्जूर कदली पनसाम्र कपित्थकम् ।
नारिकेलेक्षु जंबुवादि फलानि प्रतिगृह्यताम् ॥

मुखवासार्थे ताम्बुलं -

ॐ उतस्मादस्यद् द्रव तस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः ।
श्येनस्येवद्ध्रजतोऽअङ्कसंपरि दधिक्राव्णः सहोर्जातरित्रः स्वाहा ॥

पूगीफलम् -

ॐ याः फलिनिर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चंत्व ठ हसः ॥२॥

दक्षिणा -

ॐ यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः ।
तदग्नि वैश्वकर्मणः स्वर्द्देवेषु नोदधत् ॥१॥
ॐ हिरण्य गर्भ गर्भस्थं हिरण्यबीज विभवसो ।

अनंतपुण्य: फलद: सुख शांतिं प्रयच्छ मे ।।२।।
ॐ हिरण्य गर्भ: समवर्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेकआसीत्।
सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मैदेवाय हविषा विधेम ।।३।।

आरती -

ॐ आरात्रि पार्थिव ठ रज: पितुरप्रायिधामभि: ।
दिव: सदा ठ सिबृहतीवितिष्ठ सऽआत्वेषंवर्त्ततेतम: ।।१।।
ॐ इदᳬहवि: प्रजननमे अस्तु दशवीर ठसर्वगणठस्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि ।
अग्नि: प्रजां बहुलां मेकरोत्वन्न पयोरेतो अस्मासुधत्त: ।।२।।
चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्नि स्तथैव च ।
त्वमेव सर्व ज्योतिषि आर्तिक्यं प्रतिगृहताम् ।।३।।

अर्घम् -

पान पर गंध अक्षत पुष्प जल दक्षिणा ले कर अर्घ देवें ।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात ।।१।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो ।
वरद त्वं वरं देहि वांछित वांछितर्थद: ।।२।।

पुष्पांजलिम् -

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ।।१।।
भक्तार्तिनाशन पराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते ।।२।।

त्वां विघ्न शत्रु दलनेति च सुंदरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति ।
विद्या प्रदेत्यघ हरेति च ये स्तुवन्ति
तभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥३॥

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय नमः
नमस्ते रुद्र रूपाय करिरूपाय नमः ।
विश्वरूप स्वरूपाय नमः ब्रह्मधारिणे
भक्त प्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक ॥४॥

नमस्ते मूषिकारूढ शुभंकरायवै नमः
नमः कात्यायनी पुत्र लम्बकर्णायवै नमः ।
गजदंत विरूपात्मन विद्याबुद्धिविचक्षणः
देहि मे पुत्रसौभाग्यदेहि मे सुखसंपदः ॥५॥

इच्छासमधिपं देवं वरं विनायकेश्वरम्
शत्रु दुष्टाश्च ये केचिद् दुर्जनांश्चैव ये ऽखिला ।
तेषा दंड हितार्थाय प्रार्थये त्वां गणेश्वरम्
नाशयेत् सर्व विघ्नानि कल्याणं मे प्रदेतसदा ॥६॥

लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदक प्रिय ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥७॥

॥ इति गणपति पूजा विधानम् ॥

वैश्वदेवकर्मः

अविघ्नो मंडपश्चैव मातृणां पूजनंसुकृत। वैश्वदेवं वसोर्द्धारानान्दी श्राद्धमतः परम् । अविघ्नपूजनत्पूर्वं विधाय च ॥

एक पात्र में चावल भरकर फल व दक्षिणा लेकर ब्राह्मण को देवें।

तद्करणे संकल्पः -

इदं वैश्वदेव हवनीय द्रव्यं सदक्षिणाकमत्रावसरे वैश्वदेवाकरण जनित प्रत्यवाय परिहारार्थ करण जनित फल प्राप्त्यर्थम् अमुकशर्मणे ब्रह्मणाय

विष्णुरूपाय तुभ्यमहं संप्रददे ।

अनेन् वैश्वकरण जनित फलसिद्धिरस्तु ।।

षड्विनायकपूजा

गोधूमादिधान्य हरिद्रा रंजित करके षटकोण बनायें (षटकोष्ठक बनावें) फिर उसमें षड्विनायक का आवाहन करें **ॐ मोदाय नमः, ॐ प्रमोदाय नमः, ॐ सुमुखाय नमः, ॐ दुर्मुखाय नमः, ॐ अविघ्नाय नमः, ॐ विघ्नकर्त्रे नमः।**

ॐ भूर्भुवः स्वः मोदादिषड् विनायकाः सुप्रतिष्ठता वरदा भवत। एवं षोडशोपचारैः संपूज्य। अनयापूजया मोदादि षड्विनायकाः प्रीयन्ताम्। (जल छोडें)

अथ गौर्यादि मातृकाणां पूजनम्

अग्किोण में (उत्तराभिमुख पूजन करें तो स्वदक्षिण याने ईशानकोण में) रक्त वस्त्र पर गोधूमाक्षत पुञ्ज से षोडश कोष्ठक बनायें। फिर गणेश गौर्यादि का आवाहन करें।

आवाहन क्रम —अगर मध्य के चार कोष्ठक को एक भाग माने तो शेष १२ खाने उनके चारों और बन जातें है।

मध्य के चार कोष्ठक में वायव्य में गणेश, नैर्ऋत्य में गौरी, अग्नि कोण में पद्मा ईशानमें कुलदेवी का आवाहन करें।

स्वधा	मातरः	लोकमातरः	स्वाहा
देवसेना	कुलदेवी	पद्मा	सावित्री
जया	गणेश	गौरी	विजया
धृतिः पुष्टि	मेघा	शची	तुष्टि

यथा —

कुलदेवीं गणेशं च गौरीं पद्मासमन्विताम् ।
पूजयेन्मध्यमे कोष्ठे शेषा बाह्ये हि कोष्ठके ।।
गणेशं वायुकोणे च मध्यमे च कुलेश्वरीम् ।
गौरीं च नैर्ऋत्ये पूज्या पद्मा पावक कोणके ।।

शची च पश्चिमे स्थाप्या मेधा चैवद्वितीयके ।
सावित्री दक्षिणे पूज्या विजया च द्वितीयके ।।
जया च उत्तरे स्थाप्या देवसेना द्वितीयके ।
स्वाहाऽऽग्नेयां समभ्यर्च्या ईशानां च स्वधा तथा ।।
पूर्वतु मातरः पूज्यास्वदग्रे लोकमातरः ।
धृतिः पुष्टिर्वायुकोणे तुष्टिं च नैर्ॠते तथा ।।
एवं हि मातरः स्थाप्याः स्व स्वस्थाने पृथक् पृथक् ।।

गणपति आवाहन – (मध्य चतुर्कोष्ठे वायव्य कोणे)

ॐ गणानान्त्वाः मंत्रेण । ॐ गणेशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।
भो गणपते इहागच्छ इहतिष्ठ।

गौरी (मध्यचतुर्कोष्ठे नैर्ॠत्यकोणे) –

हिमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरव प्रियाम् ।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ।।
ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः ।
पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ।।१।। गौर्यै नमः। गौरीम् आ. स्था।

पद्मा (मध्य चतुष्कोष्ठे अग्निकोणे) –

ॐ हिरण्य रूपा ऽउषसो विरोक ऽउभाविंद्रा ऽउदिथः
सूर्यश्च । आरोहतं वरुण मित्र मित्रगर्तंततश्चक्षाथा
मदितिं दितिं च मित्रोसि वरुणोऽसि ।।
सुवर्णाढ्यां पद्महस्तां विष्णोर्वक्षस्थले स्थिताम् ।
त्रैलोक्ये पूजितां देवीं पद्मामावाहयाम्यहम् ।।२।।

शची (पश्चिमे) –

ॐ कदाचनस्तरीरसिनेन्द्र सश्चसिदाशुषे ।
उपोपेन्नुमघवन्भूयऽइन्नुतेदानं देवस्य पृच्यतआदित्त्येभ्यस्त्वा ।।
उत्पलाक्षीं सुवदनां शचीं (शशि) कुंडल धारिणीम् ।
देवराज प्रियां भद्रां शचीमावाहयाम्यहम् ।।३।।

मेधा (पश्चिम वायव्यतः द्वितीय कोष्ठे)

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्नि: प्रजापति: ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधांधाताददातु मे स्वाहा ॥
वैवस्वत प्रफुल्लाभाममलेंदीवर स्थिताम् (सुगंधि पद्मवासिताम्)
बुद्धि प्रसादिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम् ॥४॥

सावित्री : (दक्षिणे - अग्निकोण के नीचे द्वितीय कोष्ठक) -

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियोयोन: प्रचोदयात् ॥
जगत्स्रष्टीं जगद्धात्रीं पत्निं (पक्षि) रूपेण संस्थिताम् ।
ओंकाराक्षीं भगवतीं सावित्री माह्वायाम्यहम् ॥५॥

विजया (दक्षिणे - नैऋत्य से दूसरा कोष्ठक पूर्व की ओर). -

ॐ विज्यंधनु: कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ ३ उत ।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधि: ॥
दैत्यपक्ष — क्षयकरीं देवानां चाभयप्रदाम् ।
गीर्वाण वंदितां देवीं विजयामावाहयाम्यहम् ॥६॥

जया (उत्तरे वायव्य कोण से पूर्व की ओर द्वितीय कोष्ठक) -

ॐ याते रुद्र शिवातनूर घोरा पापकाशिनी
तयानस्तन्वा शंतमया गिरिशंताभि चाकशीहि ॥
विश्वभद्रां जयां रक्तां रक्तांबर धरांसदा (विष्णु रुद्रार्कशक्रादि
गीर्वाणेषुव्यस्थिताम्)त्रैलोक्यवंदितां देवींजयामावाहयाम्यहम् ॥७॥

देवसेना (उत्तरे - वायव्यकोण से पूर्व की ओर तृतीय कोष्ठक)-

ॐ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ठरातिरभिनोनिवर्त्तताम् ।
देवानां ठसख्य मुपसेदिमा व्वयन्देवानऽ आयु: प्रतिरंतु जीवसे ॥
मयूरवाहनारूढां शक्तिखड्ग धनुर्द्धराम् (धनुर्धराम्)
आवाहयेद्देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥८॥

स्वधा (ईशाने) -

ॐ पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा: नम:। पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम:। प्रपितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: । अक्षन्नपितरोऽमीमदंत पितरोतीतृपंतपितर: पितर: शुन्धध्वम् ॥
कव्यमादाय सततं पितृभ्यो या प्रयच्छति
पितृलोकार्चितां देवीं स्वधामावहयाम्याहम् ॥९॥

स्वाहा (अग्निकोणे) –

ॐ स्वाहा यज्ञंमनस: स्वाहोरोरंतरिक्षात्स्वाहा । द्यावा पृथिवीभ्या स्वाहा वातादार भे स्वाहा ॥
हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति ।
वह्निप्रिया तु स्वाहा समगच्छतु मे ऽध्वरे ॥
(स्वर्गे लोचते स्वाहे समागच्छममाध्वरे) ।१०॥

मातर: (पूर्वे, ईशान से द्वितीय कोष्ठक अग्निकोण की ओर)–

ॐ आपोऽअस्मान्मातर: शुंधयंतु घृतेनो घृतप्व: पुनंतु । विश्वर्ठ हिरप्रम्प्रवहंति देवीरुदिदाभ्य: शुचिरापूतऽएमि । दीक्षातपसो—स्तनूरसितान्त्वाशिवा ठंशग्माम्परि दधे भद्रंवर्णं ष्यन् ॥
भूतग्राममिमं कृस्त्नं यया उत्पदितं पुरा (मया प्रीत्यादितं पुरा) ।
त्रैलोक्य पूजितां देवीं मातरं आवाहयाम्यहम् ।१९॥

लोक मातर: (मध्य चतुर्कोष्ठे – ईशाने)

ॐ स्वाहा यज्ञं वरुण: सुक्षत्रो भेषजं करत् । अतिच्छंदा ऽइन्द्रियं वृहदृष भोगौर्वयोदधु: ॥
ॐ भवतन्न: समनसौ सचेत सावरे पसौ । मा यज्ञ ठं हि ठं सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौशिवौभवतमद्यन: ॥
मावाहयेल्लोकमातरं जगत्पालन संस्थिताम् ।
शक्रांद्यैर्वंदिता देवीं स्तोत्रपाठाभिचारकै(देवीं तत्रैत्यैश्च सुरैरपि) ।१२॥

धृति, पुष्टि (दोनों ही वायव्य कोण में) –

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्जोति रंतरमृतं प्रजासु ।

यस्मान्नऽऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥
नमस्तुष्टिकरीं (मनस्तुष्टिकरीं) देवीं लोकानुग्रह कारिणीम् ।
सर्वकाम समृद्ध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहम् ।१३॥

पुष्टि -

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणे हवोध्युरुश ठ समाान ऽआयुः प्रमोषीः ॥

ॐ रयिश्चमे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभुच मे प्रभुच मे। पूर्णं च मे पूर्णतरंच मे कुयवंच मे ऽक्षितं च मे ऽन्नं च मे ऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ प्रणतानां (प्रणता या) हि लोकेऽस्मिन् पुत्र पुष्टि सुख प्रदां। भक्तेभ्यश्चापि वरदां विद्युज्ज्वालार्क कुण्डला। (पुष्टिमावहयाम्यहम्) ।१४॥

तुष्टि (नैर्ऋत्यकोणे बाह्य कोष्ठे) -

ॐ बृहस्पते परीदिया रथेन रक्षोहा मित्राँ २ अपबाधमानः ।
प्रभंजन्त्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥
त्वष्टा तुरीपोऽअद्भुत ऽइन्द्राणी (ग्नी) पुष्टि वर्द्धना ।
द्विपदाच्छंद इन्द्रिय मुक्षागौर्नवयोदधुः ॥
आवाहयामि तां तुष्टिं सर्वलोकेषु पूर्णताम्। संतोष भवनादीनां
रक्षणाायाध्वरे (रक्षणीयेऽध्वरे) मम ।१५॥

आत्मकुलदेवताः (मध्यकोष्ठे ईशान कोणे) -

प्राणाय स्वाहा, ऽपानाय स्वाहा, व्यानायस्वाहा चक्षुषेस्वाहा, श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॥ अम्बे ऽ अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन । ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् ॥

त्वमात्मादिहितां (त्वमात्मा देहिना) देवी सर्वकाम फलप्रदाम् । वंश रक्षा करी गोत्री (कर्त्री) देवीमावाहयाम्ययहम् (आगच्छागच्छ मेऽध्वरे)॥

[illegible]ः अक्षत पुष्प हाथ में लेकर) -

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा

स्वाहा मातरो लोकमातरः ।। धृति पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः । गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्चषौडश ।।

ततस्तासांप्रतिष्ठं कुर्यात् –

ॐ तदस्तु मित्रा वरुणा तदग्नेशंयोरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् । अशी महिगाधमुत प्रतिष्ठान्नमो दिवे वृहतेसादनाय ।।१।।

मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ठं समिमंदधातु । विश्वेदेवा स ऽइहमादयंतामों ३ प्रतिष्ठ ।।२।।

एषव प्रतिष्ठा नामयज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितंभवति ।।३।।

साधारणतः नवदुर्गा, सप्तमातरः, अन्य मातृकाओं का पुजन इस मंडल पर करा देते हैं। या प्रधान मंडल पर कराते हैं –

यथा – ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा । वाराही चतथेंद्राणी चामुण्डा सप्तमातरः।। प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी। तृतीयं चन्द्रघंटेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ।। पंचमं स्कंदमातेति षष्ठं कात्यायनीति च। सप्तमं कालरात्रिति महागौरीति चाष्टमम्।। नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गाक्षमा शिवाधात्री स्वधा स्वाहा नमोस्तुते ।।

(अगर योगिनी क्षेत्रपाल का अन्य मंडल नहीं बनाया हो तो इसी मंडल पर आवाहन कर देना चाहिये।)

सर्वेषां मातृकेभ्यो मंडल दैव्यानां गंधादिभिः संपूज्य। पुष्पाञ्जली मादाय एवं सनारीकेल दक्षिणा सहिताय समर्पण कुर्यात् ।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देहि मे वांछित फलम् ।।
रूपं देहि जयं देहि भाग्यं भगवति देहि मे ।
पुत्रान देहि, धनं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे ।।

सप्तघृत मातृका पूजनं (वसोर्द्धारा)

किसी पट्ट, शिला या दीवार पर सिन्दूर से बिंदिया नीचे से ऊपर की ओर ७,६,५,४,३,२,१ संख्या में बनावें उनके ऊपर १,१,१ क्रम से स्तूप बनावें (स्तूप में चार बिन्दु अगल—बगल में ३,३) बनावें इन मातृकाओं की बांयी-ओर गणेश, गौत्र (नीचे ३ फिर २,१,१) तथा दाहिनी ओर कालाभैरव मन्दिर या नीचे ३ फिर २,१,१ आकृति बनावें । कुल ५२ बिन्दु होते है।

घृत देने का मंत्र -

ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्र धारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधरेण सुप्वा कामधुक्ष: ।।

तत्पश्चात् सातों बिन्दुओं को गुड से एकीकृत करें, कुंकुमादि से अलंकारित करें। हाथ में अक्षत लेकर एक—एक देवी की प्रतिष्ठा करें।

कीर्ति लक्ष्मी र्धृतिर्मेधा सिद्धि: प्रज्ञा सरस्वती । मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता: घृतमार:। अन्यच्च: श्रीश्च लक्ष्मीघृति मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती। मांगल्येषु प्रयूज्यन्ते.....। मतांतरे — श्रीश्च लक्ष्मी धृतिर्मेघा पुष्टि श्रद्धा सरस्वती। मांगल्येषु.....।

श्रीप्रतिष्ठापनम् -

ॐ मनस: काममाकूतिं वाच: सत्यमशीय पशूना ठं रूपमन्नस्य रसोयश: श्री: श्रयतां मयि स्वाहा ।।१।।

("मयि" पदभेदेन — रुपमन्नस्य मयि श्री श्रयतांयश:)

ॐ भूर्भुव: स्व श्रियै नम: श्रियम् आवाह्यामि स्थापयामि।

लक्ष्मीप्रतिष्ठापनम् -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्क्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण।।२।।

ॐ भूर्भुव: स्व: लक्ष्मै नम: । लक्ष्मीम् आवाह्यामि स्थापयामि।

धृतिप्रतिष्ठापनम् -

ॐ भद्रंकर्णेभि: श्रृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा: । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु: ।।३।।

ॐ भूर्भुव: स्व: धृत्यैनम:। धृतिमावहयामि स्थपयामि।

मेधाप्रतिष्ठापनम् –

ॐ मेधाम्मे वरुणो ददातु मेधामग्नि: प्रजापति ।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा ।।४।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मेधायै नम: । मेधाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।

स्वाहाप्रतिष्ठापनम् –

ॐ प्राणय स्वाहा: ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा मनसे स्वाहा ।।५।।

ॐ भूर्भुव: स्व: स्वाहाये नम: । स्वाहाम् आवाह्यामि स्थापयामि।

प्रज्ञाप्रतिष्ठापनम् –

ॐ आयंगौ पृश्निर क्रमीद सदन्मान्तरम्पुर:। पितरंचप्रयन्तस्व: ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: प्रज्ञायै नम: प्रज्ञाम् आवाह्यामि स्थापयामि ।।५।।

सरस्वतीप्रतिष्ठापनम् –

ॐ पावकान: सरस्वतीवाजेमि र्वाजनीवति। यज्ञवष्टुधियावसु: ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: सरस्वतै नम: । सरस्वतीम् आवाह्यामि स्थापयामि।

सामूहिक रूप से चावल चढाते हुये **निम्न मंत्रों से प्रतिष्ठा करें। –**

ॐ मनोजुतिर्जुषतामाज्यस्येती मनसावाऽइद ठ सर्वमाप्त तन्मनसेवैतत्सर्वमाप्नोति बृहस्पतिर्यामिमन्तो त्वरिष्टं यज्ञ ठ समीमंद घातृवीतीयद्विवृढंऽतत्संदधाती विश्वेदेवा सऽइहमादयंता मिति सर्वं वैविश्वेदेवा: सर्वेणैवै तत्संदधाति सयदि कामेयत्ब्रुयात्ब्रुयु: प्रतिष्ठेति। एषवै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेने यज्ञेनयजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठतं भवति।।

गणेश गौत्र प्रतिष्ठापनम् –

ॐ भूर्भुव: स्व: गणेश गौत्र देवेभ्यो आवाह्यामि स्थापयामि।

भैरव प्रतिष्ठापनम् – वसोर्द्धारा के दाहिनी ओर **बं बटुकाय नम:। काल भैरवाय नम:। गौर भैरवाय नम:।** से प्रतिष्ठापन करें।

तत्पश्चात् सर्वेभ्यो देवेभ्यो गंधादिभिः पूजयेत्।

अथ नान्दीश्राद्धम्

नान्दीश्राद्ध में कुछ बातें ध्यान रखने योग्य है –

१. इस श्राद्ध से स्वधा की जगह **"स्वाहा"** कर उच्चारण करें।

२. मूल रहित दर्भा ग्रहण करें।

३. सारे कर्म सव्य (दक्षिण यज्ञोपवित) से करना चाहिये।

४. नान्दी श्राद्ध पूजन समय यजमान अकेला पूजन करें पत्नि को दूर बिठायें।

५. ब्राह्मण, कुशा दर्भ दूर्वा प्रत्येक वस्तु युग्म हो।

६. इस कार्य मे यजमान उत्तराभिममुख हो तो ब्राह्मण पूर्वाभिमुख होवे। यजमान पूर्वाभिमुख हो तो ब्राह्मण उत्तराभिमुख बैठे।

७. इस श्राद्ध में पिण्डों के विषय में दही, मधु, दाख, आँवला, बेर, (मतांतर मे आम्रफल) काम में लिये जाते है।

८. लाल पुष्प माला काम में नहीं आती, मालती, कमल, केतकी, मल्लिका ग्राह्य है।

९. तिल व पितृतीर्थ जल काम में नहीं लिया जाता है। अपसव्य नहीं होता।

१०. श्राद्ध का अंगरूप तर्पण भी नहीं होता है।

११. नांदीश्राद्ध में पिता, दादा और षडदादा (प्रपितामह), माता, नाना, पडनाना, षडनाना (वृद्धप्रमातामह), का स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है, जो जीवित हो उनका नाम नहीं बोलते है।

१२. कर्पूर से आरती नहीं होती है।

१३. सर्वत्र उच्चारण विषय में नाम व गौत्र का उच्चारण नहीं होता, गौत्र की जगह **"काश्यप गौत्र"** नाम की जगह **"नारायण"** नाम का उच्चारण किया जाता है।

१४. प्रथमा विभक्ति को लगाकर अन्त में संकल्प किया जाता है।

१५. वर का द्वितीय विवाह होतो नांदिश्राद्ध वर स्वयं करे पिता नहीं करे।

१६. अष्टकादिश्राद्ध में नांदिश्राद्ध नहीं होता है।

१७. विधवा नांदीश्राद्ध संकल्प करे कर्म अन्य से या ब्राह्मणों से कराये।

१८. गौरी एवं मातृका पूजन का नांदीश्राद्ध अंग समझना इसके बिना मातृका पूजन यथेष्ट नहीं

१९. वोपदेव, कालदर्श, श्राद्ध कौमुदी, मत्स्यपुराण के अनुसार पुन्सवन, सीमान्त, व्रतनामकरण, अन्नप्राशन, चौल, उपनयन, आधान, अग्न्याधान, विवाह, यज्ञ, पुत्रजन्म, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा, पुत्र का प्रथममुख दर्शन, आश्रम स्वीकार राज्याभिषेक, स्त्री के प्रथम रजोदर्शन पर, वृक्ष, जल एवं देवप्रतिष्ठा में तीर्थ यात्रा और वृषोत्सर्ग में नान्दीश्राद्ध वृद्धिश्राद्ध करना कहा है, परन्तु कामधेनु में कहा है कि जलाशय व माता पिता के वृषोत्सर्ग में नान्दीश्राद्ध नहीं करना चाहिये।

अथ नान्दीश्राद्ध प्रयोग

यदि यजमान पूर्वाभिमुख हो तो दक्षिण जानु दबाकर पात्र दूने या पात्र में उत्तरमुख वाले दोब के युग्म चट स्थापित करें। वैश्वदेव के स्थान पर २ चटें व २ सुपारी। २ सुपारीयाँ व चटे २ सपत्निक पितृपार्वण के स्थान पर। २ सुपारीयाँ व २ चटे सपत्निक मातामह पार्वण के स्थान पर रखें।

क्षणदानं कुर्यात् -

(१) यव हाथ में लेकर निम्न मंत्र से विश्वेदेवा पर छोड़ें।

ॐ सत्यवसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां नान्दीमुखानाम् अद्य कर्तव्य प्रधान संकल्पोक्तकर्माङ्ग सांकल्पिक नान्दी श्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम्।

यजमान ब्राह्मणों से कहें — **प्राप्नुतां भवन्तौ।**

ब्राह्मण प्रतिवचन कहें — **प्राप्नवाव**

(२) पुनः यव हाथ में लेवें — (गौत्राः)

गोत्राणां नान्दीमुखानां पितृ पितामह प्रपितामह प्रपितामहनां सपत्निकानाम् अद्य कर्तव्य प्रधान संकल्पोक्त कर्मांगसांकल्पित नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यां क्षणः क्रियताम् (ऐसा कहकर यव छोडें)

यजमान ब्राह्मणों से कहें — **प्राप्नुतां भवन्तौ।**

ब्राह्मण प्रतिवचन कहें — **प्राप्नवाव**

(३) पुनः यव हाथ में लेवें —

द्वितीय गोत्राः

द्वितीय गोत्राणां नान्दीमुखानां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां सपत्निकानाम् अद्य कर्तव्य प्रधान संकल्पोक्त कर्मांग

सांकल्पिक नान्दीश्राद्धे भवद्भ्यांक्षण: क्रियताम् ।

ऐसा कहकर यव छोडें ।

यजमान ब्राह्मणों से कहें — **प्राप्नुतां भवन्तौ।**

ब्राह्मण प्रतिवचन कहें — **प्राप्नवाव**

पाद्यदानम् -

एक तामड़ी या सुराई में दही, रोली, जौ, दूध, मधु व जल इकट्ठा करें तथा जल को दर्भा से हिलाते रहें, फिर जब **स्वाहानामयं च वृद्धि:** बोलें तब दूर्वांकुर या दर्भा के मोटक से जल चटों पर छोड़ते जायें।

(१) ॐ सत्यवसुसंज्ञका: विश्वेदेवा नान्दीमुखा: ॐ भर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं स्वाहानामयं च वृद्धि:।

गोत्रा: -

(२) ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्य: नान्दीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहानामयं च वृद्धि । ॐ पितृपितामह प्रपितामहा: नांदीमुखा ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहानामयं च वृद्धि ।

द्वितीय गोत्रा: -

(३) ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा: सपत्नीका: नांदीमुखा: ॐ भूर्भुव: स्व: इदं व: पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं स्वाहानामयं च वृद्धि ॥

रक्षाविधानम् — पहले पाद्य पात्र को हटालें तथा दूसरे कर्मपात्र की स्थापना करें। संकल्प इसी कर्म पात्र के जल से करें। कर्मपात्र में दूर्वा कुशादि धरें और **"शन्नोदेवी"** मंत्र से जल भरें। **"स्वस्ति न इन्द्रो"** इस मंत्र से यवाक्षत द्वारा रक्षा विधान करे।

यवप्रक्षेप -

यवोसि यव यास्मद् द्वेषोयव यारातीदिवे त्वान्तरिक्षायत्वा पृथिव्यै त्वाशुन्धंताँलोका: पितृसदना: पितृसदनमसि ।

संकल्प -

अद्य पूर्वोच्चारित शुभपुण्यतिथौ साङ्कल्पितविधिना नान्दीश्राद्धंकरिष्ये।

आसन दानम् –

(१) ॐ सत्य वसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमोनमः नान्दी श्राद्धे क्षणौ क्रियेतां।

पूर्व की ओर मुंह करके यजमान कहें **प्राप्नुवन्तोभवतः**। ब्राह्मण कहें **प्राप्नुवामः** ऐसा कह कर चट के नीचे डाब (दर्भा) या पुष्प का आसन दें। इसी तरह दानों गोत्रों को आसन देवें।

गोत्राः –

(२) नान्दीमुखाः पितृ पितामह प्रपितामह प्रपितामहाः सपत्निकाः इदं वः आसनं स्वाहानामयं च वृद्धिः ।

द्वितीय गोत्राः –

(३) नान्दीमुखाः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्निकाः इदं व आसनम् स्वाहानामयं च वृद्धिः ।

एवं चन्दन पुण्य छोड़ें, दधिक्राव्णो मंत्र से दही डाले।

फिर यवाक्षत लेकर **"स्वस्तिनऽ इन्द्रो"** से पूर्वादि दिशाओं में दिग्बंधन करे।

गंधादिदानम् –

गंधदान में गंध चन्दन धूप अगरबत्ति, धूप(लगावे) ताम्बूल, पूगीफलं, वस्त्र, यज्ञोपवीत चटों पर चढ़ावे। निम्न मंत्र से पित्रों को दो-दो बार गंधादि दान करें –

यवोसि सोम देवत्यो गोवसे देवनिर्मितः। प्रत्नवद्भिः पत्तः पुष्ट्या नान्दीमुखान् पितृनिमाँल्लोकान् प्रीणया हि नः स्वाहा न मम।

(१) ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भू र्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चन यथा विभागं स्वाहा संपद्यतां च वृद्धिः।

(2) गोत्राः –

नान्दीमुखाः पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीकाः इदं वो गन्धाद्यार्चनं यथाविभागं स्वाहा सम्पद्यतां च वृद्धिः ।

(३) द्वितीय गोत्राः

नान्दीमुखाः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः इदंवो गन्धाद्यार्चनं यथाविभागं स्वाहा सम्पद्यतां च वृद्धिः ।

(४) *गणेशाम्बिकयोः* **ॐ भूर्भुवः स्वः वः इदं आसन गंधाद्युपचार**

कल्पनं स्वाहानामयं च वृद्धिः।

दीपकं – ज्योतिः सूर्योज्योतिः दीपकं ज्योतिः – दीपकं दर्शयामि स्वाहा नामयं च वृद्धिः। पाणिहोम करे तो **अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा। सोमाय पितृमते स्वाहा** इन दो आहुतियों से करे।

विश्वेदवाओं व पित्रों को साग्नि या आग्न्याधानरहित सबशाखा वाले अन्यपाक को अर्पण करे। दाख आंवला आदि चटों पर चढ़ावे।

भोजननिष्क्रयद्रव्यदानम् –

यजमान दो ब्राह्मणो से कहें कि आप हमारे घर पर यथारुचि तृप्त होकर भोजन करें।

ब्राह्मण कहें कि भोजन हुआ। भोजन दक्षिणा के साथ द्राक्षा आंवला भी देवे।

(१) ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवा नान्दीमुखाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तां निष्क्रयीभूतं किञ्चित् हिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण वः स्वाहानामयं च वृद्धिः।

(2) *गोत्रा* -

नान्दीमुखाः पितृ पितामह प्रपितामहाः सपत्नीकाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तां निष्क्रयी भूतं किञ्चित हिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण वः स्वाहानामयं च वृद्धिः।

(२) *द्वितिय गोत्राः*

नान्दीमुखाः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तां निष्क्रयीभूतं किंचत् हिरण्यदत्तम् अमृतरूपेण इदं वः स्वाहा सम्पद्यतां च वृद्धि ।

(३) श्री गणेशाम्बिकयोः ॐ भू र्भुवः स्वः इदं वः युग्म ब्राह्मण भोजनं पर्याप्तां निष्क्रयीभूतं किञ्चित् हिरण्यं दत्तम् अमृतरूपेण वः स्वाहानामयं च वृद्धिः।

इत्यष्ट ऋचः पठेत् -

(इस ऋचाओं को पढ़ सकें तो ठीक अन्यथा आगे का क्रम करें)

ॐ उपास्मैगायतानरः पवमानयोदेवे। अभिदेवाँ इयक्षते ।।१।।

येत्वाहिहत्येमघवन्नुवर्द्धन्येशाम्बरेहवोयेगविष्टौ । ये त्वानून मनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोम ठ सगणो मरुद्भिः ।।२।। जनिष्ठा ऽउग्रः सहसे तुरायमन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः । अवर्द्धनिंद्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरन्दधनद्धनिष्ठा ।।३।। आतूनऽइन्द्र वृत्र हन्नस्माकमर्द्धमागाहि।

महान्महीभिरुतिभिः ।।४।। त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वाऽअसिस्पृधः। अशस्ति हाजनिता विश्वतूरसि त्वन्तूर्य। तरुष्यतः ।।५।। अनुतशुष्म–न्तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुन्नमातरा । विश्वास्तेस्पृधः श्रथयन्त मन्यवे वृत्रंयदिन्द्र तूर्वसि ।।६।। यज्ञो देवानाम्प्रत्येति सुम्नमादित्या सो भवता मृडयन्त । आवोर्वाची सुमतिर्वावृत्याद ठ होश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ।।७।। अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्व ठ शिवे भिरद्य परिपाहिनोगयम् । हिरण्य जिह्वः सुवितायनव्यसे रक्षामाकिर्नो अघशर्ठसऽईशत ।।८।।

सक्षीरयवमुदक दानम् (तत्पश्चात् चटों पर दूध जल पंचामृत चढ़ावें)

(१) ॐ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् च वृद्धिः ।

(२) (गोत्राः) नान्दीमुखाः पितृपितामह प्रपितामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम्।

(३) (द्वितीय गोत्राः) नान्दीमुखाः मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः प्रीयन्ताम् ।

ततो जलं दद्यात् (अंगुठे से ब्रह्मतीर्थ मुद्रा से चटों पर ज़ल चढावें)

ॐ अघोराः पितरः सन्तु। सन्तु अघोराः पितरः (इति जलम्)

ततः पुष्पम् – ॐ सौमनस्यमस्तु (इति पुष्पम्)

ततः यवाः – ॐ अक्षतं चारिष्टं चाऽस्तु (इति यवाः)

बद्धांजलि आशीर्ग्रहणम् –

(यजमान हाथ जोड़कर पितरो से आशीर्वाद ग्रहण करें यजमान वचन माँगता जाये ब्राह्मण प्रतिवचन कहें)

गोत्रं नो वर्धताम्	–	वर्धताम् वो गोत्रम्।
दातारोनऽभिवर्द्धन्ताम्	–	अभिवर्द्धन्ता वो दातारः।
वेदाश्चनोऽभिवर्द्धन्ताम्	–	अभिवर्द्धन्ता वो वेदाः।

सन्ततिनोऽभिवर्द्धन्ताम् — अभिवर्द्धन्ता वःसंतति।
श्रद्धा च नो मा व्यगमत् — माव्यगमद्वः श्रद्धा।
बहुदेयं व नो अस्तु — अस्तु वो बहुदेयम्।
अन्नं च नो बहुभवेत् — भवतु वो बह्वन्नम् ।
अतिथीश्च लभेमहि — अतिथींश्च लभध्वम्।
याचितारश्च नः सन्तु — सन्तु वो या चितारः ।
एता आशिषः सत्याः सन्तु — सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम् -

(ब्राह्मणों को द्रव्य दक्षिणा, यव दाख आँवले फल पुष्प दक्षिणा देवें)

(१) ॐ सन्तु वसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः कृतस्य नांदीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षमलकयव मूल निष्क्रयीयभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः।

(2) गोत्रेभ्य -

नान्दीमुखेभ्यः पितृपितामह प्रपितामहेभ्य सपत्नीकेभ्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयव मूल निष्क्रयीयभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः।

(3) द्वितीय गोत्रेभ्यः -

नान्दीमुखेभ्यः मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयव मूल निष्क्रयीयभूतां दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे संपद्यतां वृद्धिः।

अर्घ्य -

फिर चट के आगे अर्ध्य दान करते हुये इन दो मंत्रों को पढ़ें।

ॐ उपास्मैगायतानरः पवमानायेन्देवे। अभि देवां ऽ इयक्षते ।।१।।
ॐ इडामग्नेपुरूद ठं स ठं सनिङ्गो शश्वत्तम ठं हवामनायसाध।
स्थान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने साते सुमतिर्भूत्वमस्ये ।।२।।

(अब यजमान कहें नान्दीश्राद्ध संपन्नम् । ब्राह्मण कहें — सुसम्पन्नम्।

यजमान कहें —

तेन श्रीकर्मांग देवता: प्रीयन्तां वृद्धि:। ३ॐ विश्वेदेवा: प्रीयन्ताम्।।

देवविसर्जनम् –

ॐ वाजे वाजे वतवाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृता ऽऋतज्ञा: ।
अस्यमद्ध्व: पिबतमादयध्वं तृप्तायातपिथभिर्देवयानै: ।।

इतना कहकर जल छोडें, पात्र टंकार करें या घंटा बजाते हुये विश्वदेवों का विसर्जन करें।

पितृविसर्जनम् –

ॐ आमावाजस्य प्रसवो जगम्यादेमेद्द्यावा पृथिवी विश्वरूपे ।
आमागन्तां पितरामातरा चामासोमो ऽअमृतत्वेगम्यात् ।।

(पितरो की चटों को पात्र टंकारते हुये विसर्जन करें)

यजमान हाथ में जल लेवें

मयाऽऽचरिते ऽस्मिन्सांकल्पिक नान्दीश्राद्धेन्यूनातिरिक्तो यो विधि: स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनाच्छ्री नान्दीमुख प्रासादाच्च सर्व: परिपूर्णोस्तु ।।

ब्राह्मण कहें – अस्तु परिपूर्ण: । अनेन सांकल्पिक विधिनानांदीश्राद्धेन नान्दीमुखा: पितर: प्रीयन्ताम् ।

।इति नान्दीश्राद्ध प्रयोग:।।

पुण्याहवाचनरुद्रकलशप्रधानकलशानां स्थापनम्

तीनों कलशों की स्थापना विधि एक ही है, निम्न क्रम से करें।

निम्न मंत्र से भूमि स्पर्श करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ।
पृथिवीं यच्छ पृथिवींदृ ठं ह पृथिवीं मा हि ठं सी: ।१।
ॐ महीद्यौ: पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् ।
पिपृतान्नो भरीमभि: ।।

कलश के नीचे धान्य के हाथ लगावें।

ॐ ओषधय: समवदन्त सोमेन सहराज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ठ राजन् पारयामसि ।।

फिर कलश स्थापना करें या कलश के हाथ लगाये।

ॐ आजिघ्र कलशंमह्या त्वा विशन्त्विन्दव: । पुनरूर्जा निवर्त्तस्वसान: सहस्रं धुक्ष्वोरुघारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयि:।।

कलश में जल भरें -

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो । वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।।

कलश के हाथ लगाकर मंत्र पढ़ें —

ॐ आकलेशु धावति पवित्रे परिषिंच्यते । उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते ।

तीर्थजल -

इमंमे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्ण्या । असिकन्या मरुद्वृथे वितस्तयार्जीकीये श्रृणुह्यासुषोमया ।।

सर्वोषधि डालें -

ॐ या: ओषधी: पूर्वाजाता देवभ्यस्त्रियुगंपुरा । मनैनु बभ्रूणामह ठ शतं धामानि सप्त च ।।

चंदनंप्रक्षेप -

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ।।

सप्तधान्य, मूंग, साबुत हल्दी, साबुत धान आदि डालें —

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो दानायत्वा व्यानात्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान देवो व: सविता हिरण्यपाणि: प्रतिगृहभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वा महीनाम्पयोऽसि ।।

पंचपल्लव -

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता । गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ।।

दूर्वा –

दूर्वेह्यमृत संपन्ने शतमूले शतांकुरे । शत पातक संहन्त्री शतमायुष्य वर्धिनी ।। विष्णुवादि सर्वदेवानां दूर्वे त्वं प्रितिदासदा । क्षीर सागर सम्भूते वंशवृद्धिकरी भव ।।१।। ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषपरि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।२।।

कुशाप्रक्षेप –

पवित्रस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्यते पवित्र पते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।

सप्तमृतिका प्रक्षेप –

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।।

पूगीफलप्रक्षेप –

ॐ या फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणी । बृहस्पतिः प्रसूतास्तानो मुञ्चंत्व ठं हसः ।।१।। ॐ उतस्मास्यद्रवतस्तुरण्यत्तः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः । श्येनस्ये वद्धजतोऽ अंक संपरिदधि क्राव्णः सहोर्जातरित्रतः स्वाहा ।।२।।

पंचरत्न –

ॐ सहिररण्यत्नानि दाशुषेसुवातिसविताभगः । तं भागं चित्रमीमहे।।१।। ॐ परिवाजपतिः कविरग्नि र्हव्यान्य क्रमीत । दधद्रत्नानि दाशुषे।।

हिरण्यप्रेक्षण –

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम ।। ॐ हिरण्य रूपः सहिरण्य सहगयान्नयात्सेदु हिरण्यवर्णः । हिरण्य यात्परियोने निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्तमस्मै ।

सूत्रेण वेष्टनम् –

युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्स ऽउश्रेयान् भवति जायमानः ।

तं धीरा सः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः ॥
ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमादत्स्वः ।
वासो अग्ने विश्वरूप ठ सव्ययस्व विभावसो ॥

पूर्णपात्र – चावल से भरकर पूर्णपात्र कलश पर रखें।

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणाबहा ऽइषमूर्ज ठ शतक्रतो ॥

इसके बाद नारियल पर मोली या लाल वस्त्र लपेट कर कुंकुमादि लगाकर पूर्णपात्र पर रखें।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ॥

फिर कलश पर वरुण का ध्यान कर आवाहन करें।

ॐ अस्य तत्वायामीत्यस्य शुनः शेष ऋषि त्रिष्टुपुछन्दः वरुणो देवतावाहने विनियोगः ॥

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणे हवोद्ध्युरुश ठ समान आयुः प्रमोषीः ॥
मकरस्थं पाशहस्तमम्भसां पतिमीश्वरम् ।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं यादसा पतिम् ॥
देव दानव संवादे मध्यमाने महोदधौ ।
उत्पन्नोसि यदाकुंभ विधृतो विष्णुना स्वयं ॥
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयितिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठताः ॥
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवोरुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयितिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमं पूजा कर्तुमीहेजलोद्भव ।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।

ततो षोडशोपचारैः गंधादिभिः संपूज्य।

प्रार्थना –

कलशस्य मुखे विष्णुः ग्रीवायां च महेश्वरः ।
मूले चैव स्थितोब्रह्मा मध्येमातृगणाः स्मृताः ।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यर्थवणः ।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।
गायत्री चैव सावित्री शान्तिः पुष्टि करी तथा ।।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ।
सर्वेसमुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः ।
आयान्तु (मम) यजमानस्य दुरितक्षय कारकाः ।।

(एवं श्रीवरुणदेवताप्रसादात् सर्वविधेः परिपूर्णतास्तु)

अथ रुद्रकलशे रुद्रावाहनम्

कलश स्थापन पूर्व विधि से किया जा चुका है उस पर रुद्र का आवाहन करे।

ॐ असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम् ।
तेषां ठ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि ।।

अथ पुण्याहवाचनं

संपूज्य गंधमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान स्वस्ति वाचयेत्। धर्मकर्मणि मांगल्ये संग्रामे ऽद्भुतदर्शने। प्रथमं शांति पात्रं त्याज्यपात्रं च भूमौ स्थापयेत्।। यजमानः अवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुल सदृशमञ्जलिं शिरस्याधाय आचार्य स्वदक्षिणेन पाणिना ताम्रकलशं यजमानाञ्जलौ धारयेत् ।

यजमान दोनों घुटनों को जमीन पर टेक देवें कहीं पर दक्षिण जानु ही टिकाया जाता है, पश्चात् कमल मुकुलाकार अंजलि करके उसमें ताम्रपात्र कलश, नारेल, पुष्प, दक्षिणा सहित धारण करें जिसका पूजन किया है।

निम्न मंत्र से सिर के लगायें — (स्वशिरसा एवं पत्नि शिरसा)

ॐ त्रीणिपदाविचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः ।
अतो धर्माणि धारयन् ।।

दक्षिण भुजा के लगाये –

ॐ त्रीणित आहुर्द्दिवि बंधनानि त्रीण्यप्सुत्रीण्यन्तः समुद्रे ।
उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन्यत्रात आहुः परमं जनित्रम् ।।

वाम भुजा के लगावें –

ॐ त्रयादेवा एकादशत्रयस्त्रिंशाः सुराधसः ।
बृहस्पति पुरोहिता देवस्य सवितुः सर्वे देवा देवैरवन्तुमा ।।

हृदय के लगावें –

ॐ दीर्घानागानद्यो गिरयास्त्रीणि विष्णुपदानि च ।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुस्त्विति । भवन्तो ब्रवन्तु।।

ब्राह्मण कहें – तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ।।

पश्चात् वामहस्तं दूरीकारयित्वा आचार्यो हस्ताभ्यां तं कलशं भूमौ स्थापयेत्

फिर ब्राह्मणों के हाथों पर जल डालें – **(ब्राह्मणानां हस्ते सुप्रोक्षितमस्तु)**

शिवा आपो भवन्तु ताः ।। शिवाः आपः सन्तु।

ब्राह्मण कहें – सन्तु शिवाः आपः।

फिर यजमान, ब्राह्मण के हाथ में पुष्प देते हुये कहें –

यजमान –

लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसति पुष्करे ।
सा मे वसतु वै नित्यं सौमनस्यं तथास्तु नः ।।

यजमान कहें – सौमनस्यमस्तु। ब्राह्मण कहें – अस्तु सौमनस्यम् ।

यजमान ब्राह्मणों के हाथ में अक्षत देते हुआ मंत्र बोलें –

यजमान – अक्षताश्चास्तु मे पुण्यं दीर्घमायुर्यशोबलम् ।
यद्यच्छ्रेयस्करं लोके तत्तदस्तु सदामम ।।
अक्षताः पान्तु। अक्षतं चारिष्टं वास्तु।

ब्राह्मण – अस्त्वक्षतमरिष्टं च।

इसी तरह गंध, पुष्प, ताम्बूल दक्षिणा देवें ब्राह्मण पुनः शुभाशिर्वाद कहें।

यजमान — गंधाः पान्तु। *ब्राह्मण* — सौमाङ्गल्यं चास्तु कहें।

यजमान — पुष्पाणिपान्तु से पुष्प देवे। *ब्राह्मण* — सौश्रियमस्तु कहें।

यजमान — अक्षताः पान्तु से अक्षत देवें। *ब्राह्मण* — आयुष्यमस्तु कहें।

यजमान — ताम्बूलानिपान्तु से पान देवें। *ब्राह्मण*—ऐश्वर्यमस्तु कहें

यजमान — पूगीफलानि पान्तु *ब्राह्मण* — बहुफलमस्तु कहें।

यजमान — दक्षिणाः पान्तु से ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें।

ब्राह्मण —

आरोग्यमस्तु। दीर्घमायुः श्रेयः शांतिः पुष्टिस्तुष्टिचास्तु ।
श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं आरोग्यं चास्तु ॥

यजमान — यत्कृत्वा सर्वदेवयज्ञ क्रियाकरण कर्मारम्भः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्तेतमहमोंकारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः सामाथर्वणाशीर्वचनं बह्वर्षि संमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।

ब्राह्मण बोलें — वाच्यताम्।

अगर समय हो तो निम्न ऋचायें बोलें —

द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत नेष्ट्राद्दतुभिरिष्यत ।१।। सवितात्वा सवाना ठ सवितामग्नि गृहपतीना ठ सोमोवनस्पतीनाम् ।। बृहस्पतिर्वाच ऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ।।२।। ॐ नतद्रक्षा ठ सिन पिशाचास्तरंति देवानामोजः प्रथमज ठंह्येतत्। योबिभर्ति दाक्षायण ठ हिरण्य ठ सदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ।।३। उच्चातेजातमन्धसोदिवि सद्भूम्याददे। उग्रं ठ शर्ममहिश्रवः ।।४।।

यजमान — व्रतनियम तपः स्वाध्याय क्रतु दयादमदान विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम् ।

ब्राह्मण — समाहितमनसः स्मः।

यजमान — प्रसीदन्तु भवन्तः। *ब्राह्मण* — प्रसन्नाः स्मः।

तत्पश्चात् पुण्याहवाचन कलश से जल यजमान के मस्तक पर डालें या हाथों को इस तरह रखें कि उनका जल प्रथम पात्र (कटोरी) में गिरता रहे एवं त्याज्य भूमि या दूसरे पात्र में करें।

ब्राह्मण निम्न मंत्र का उच्चारण करें एवं अभिषेक करें –

यजमान कहें – **मम गृहे शांतिरस्तु।**

ब्राह्मण – **अस्त्विति प्रतिवचनं** (इसी तरह सर्वत्र कहे)

हस्तयो: – **शांतिरस्तु, पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु, वृद्धिरस्तु, ऋद्धिरस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, शिवमस्तु, शिवकर्मास्तु, कर्मसमृद्धिरस्तु, धर्मसमृद्धिरस्तु, वेदसमृद्धिरस्तु, शास्त्र समृद्धिरस्तु, पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु धन्यधान्य समृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु।**

द्वितीय पात्र में – **अनिष्टनिरसनमस्तु, यत्पापं रोगमशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।**

हस्तयो: – **यच्छ्रेयस्तत्तदस्तु उत्तरेकर्मणि निर्विघ्नमस्तु, उत्तरोत्तरमहरहरभि वृद्धिरस्तु, उत्तरोत्तरा: क्रिया: शुभा: शोभना: संपद्यन्तां तिथि करण मुहूर्त नक्षत्र ग्रह लग्नादि देवता: प्रीयन्ताम् । तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदवते प्रीयन्ताम्।। दुर्गा पांचाल्यौ प्रीयन्ताम्। अग्नि पुरोगा विश्वेदेवा: प्रीयन्ताम् इन्द्र पुरोगा मरुद्गणा प्रियन्ताम्। वसिष्ठ पुरोगा ऋषिगणा: प्रीयन्ताम्। माहेश्वरी पुरोगा उमामातर: प्रीयन्ताम्। अरुंध्तीपुरोगा एकपत्न्य: प्रीयन्ताम्। विष्णुपुरोगा: सर्वेदेवा: प्रीयन्ताम्। ब्रह्मपुरोगा: सर्ववेदा: प्रीयन्ताम्। आदित्य पुरोगा: सर्वेग्रहा: प्रीयन्ताम्। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। अम्बिका सरस्वत्यौ प्रीयन्ताम्। श्रद्धामेधेप्रीयेताम् भगवति कात्यायनी प्रीयन्ताम्। भगवति माहेश्वरी प्रीयन्ताम्। भगवति ऋद्धिकरी प्रीयन्ताम्। भगवति वृद्धिकरी प्रीयन्ताम्। सिद्धिकरी प्रीयन्ताम्। भगवति तुष्टिकरी प्रीयन्ताम्। भगवतौ विघ्न विनायकौ प्रीयन्ताम्। सर्वा: कुलदेवता प्रीयन्ताम्। सर्वाग्रामदेवता प्रीयन्ताम्। सर्वाइष्ट देवता: प्रीयन्ताम्।**

द्वितीय पात्रे (भूमौ) – हताश्च ब्रह्मद्विष:। हताश्चपरिपन्थिन:।

हताश्चविघ्नकर्तारः। शत्रवः पराभवभवंयान्तु। शाम्यंतु घोराणि, शाम्यन्तु पापानि, शाम्यंत्वीतयः।

प्रथम पात्रे हस्तयोः – शुभानि वर्द्धन्ताम्। शिवा आपः सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा अग्नयः सन्तु । शिवा आहुतयः सन्तु। शिवा ओषधय सन्तु। शिवा वनस्पतयःसन्तु । शिवा अतिथयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्।

ॐ निकामे निकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽओषधयः। पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

शुक्राङ्गारक बुध बृहस्पति शनैश्चरराहुकेतुसोमसहिता आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयन्ताम्। भगवान्नारायणः प्रीयन्ताम्। भगवानपर्जन्यः प्रीयन्ताम्। भगवानमहासेनः प्रीयन्ताम्। पुनुरुवाक्ययायत् पुण्यं तदस्तु याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

प्रथम प्रात्र कटोरी के जल से यजमान का अभिषेक करके दूसरा त्याज्य पात्र किसी को देवें, द्रोण पात्र हो तो बाहर फेंक देवें। (अभिषेक मंत्र पृष्ठ संख्या ५०० पर है)

यजमान कहें – ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्टयुत्पादन कारकम् ।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रवन्तुनः ।।

भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे पाठ(होमे) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण – ॐ पुण्याहम् ३। ॐ पुनन्तु मादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनिहिमा।।

यजमान – पृथिव्यामृद्धतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम्। ऋषिभिः सिद्ध गंधर्वैस्तकल्याणं ब्रुवन्तुनः। भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे देव प्रतिष्ठाकाले दुर्गापाठे (होमे) कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः – ॐ कल्याणं ३। यथेमांवाचं कल्याणी मावदानी

जनेभ्यः ब्रह्म राजन्याभ्या ठ शुद्राय चार्याय च स्वायचारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिहभूया समयम्मेकामः समृद्धयता मुपमादो नमतु।।

यजमानः – सागरस्यतु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता। सम्पूर्णा सुप्रभावा च तां तामृद्धिं ब्रवन्तु नः। भो ब्राह्मणाा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य दुर्गापाठे होमे प्रतिष्ठाकाले ऋद्धिं भवंतो ब्रवंतु।।

ब्राह्मणः –ऋद्ध्यताम् ३। सत्रस्यऽऋद्धिरस्य गन्मज्योतिरमृताऽअभूम।

दिवं पृथिव्याऽअद्ध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्व ज्योतिः।

यजमानः – स्वस्तिस्तु या ऽविनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा। विनायक प्रिया नित्यंतांतां स्वस्तिं ब्रुवन्तुनः।। भो ब्राह्मणः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे दुर्गापाठे होमे प्रतिष्ठाकाले स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणः – ॐ स्वस्ति ३।

यजमानः – समुद्रमथनाज्जाता जगदानंदकारिका। हरिप्रिया च मांगल्यतां श्रियं च ब्रुवन्तुनः। भो ब्राह्मणा मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणः – ॐ श्री ३।

फिर यजमान के तिलक करें।

ॐ स्वति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।।

यजमान के रक्षासूत्र, कंकण बंधन करें कहीं–कहीं इस मंत्र से व अन्य ऋचाओं से अभिषेक कर बाद में तिलक करते हैं। राखी बाँधते है।

मृकंड सूनोरायुर्यद ध्रुव लोमशायोस्तथा ।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्। शतंजीवंतु भवंतः ।।३।।

-: अन्य ऋचायें :-

यजमान – शिव गौरी विवाहे याया श्रीः रामनृपात्मजे। धनदस्य गृहे या श्रीरस्माकं सास्तु सद्मनि।। भो ब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य श्रीरस्तु इतीभवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण: — ३ॐ अस्तु श्री ३। ३ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनाँरूपमन्नस्य रसोयशः श्रीः श्रयतांमयि स्वाहा।।१।। प्रजापति र्लोकपालो धाताब्रह्मासदेवराट्। भगवाञ्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षतु सर्वतः।।

ब्राह्मण: — भगवान्प्रजापति प्रीयताम्।

यजमान: — प्रजापतेनत्व देतानन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव। यत्कामस्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वय ममुष्य पितासावस्य पितावय ठं स्यामपतयो रयीणा ७ँ स्वाहा।।१।। आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे। कृता सर्वाशिषः संतु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।२।। देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे। एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम ।।३।।

ब्राह्मण: — आयुष्मते स्वस्ति ३।। ३ॐ स्वस्तये वायु मुप्रब्रवामहे सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्वपतिं सर्व गणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवंतु नः।।

यजमान: — ३ॐ प्रतिपन्थाम पद्महिस्वस्तिगामनेहसम्। ये न विश्वाः परिद्विषोवृणक्ति विन्दते वसु।।

ब्राह्मण: — ३ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न ऽआसुव।। (यजमान व पत्नि का अभीषेक करे पश्चात् ब्राह्मण कुछ अक्षत यजमान पर घुमाकर ईशान कोण में फेंके।)

मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । (यजमान पर)
शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्रणामुदयस्तव ।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ब्रह्म ।
वक्त्रेस्थिता (ब्रह्म वक्त्रे सदा) नित्यं निघ्नंतु तवशात्रवान् ।।

(ईशाने पान्तु)

(इसके बाद यजमान दोनों हाथो की अंगुलियों को पंजीकृत कर ब्राह्मणों के हाथों से अक्षत पुष्प ग्रहण करें। अक्षत पुष्प हृदय व मस्तक के लगाकर पीछे फेंक देवें।)

ब्राह्मण: —

अक्षतान्विप्र हस्तात्तु नित्यंगृहणयन्ति ये नरा ।
चत्वारितेषां वर्धते आयु: कीर्तिर्यशोबलम् ।।

यजमान: —

आयुष्यकामो यशस्कामो पुत्र पौत्रस्तथैवच ।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वेकामा: भवन्तु मे ।।

ब्राह्मण: —

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानम्महीयते ।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायु: अस्तु।।

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु गोवाजिवृद्धि धनधान्य समृद्धिरस्तु। ऐश्वर्यमस्तु कुशलोऽस्तु रिपुक्षयोस्तु संतानवृद्धि सहिता हरिभक्तिरस्तु ।

आनन्दकाले स्थिरराज्यलक्ष्मी:, शिव प्रसादाद्बहुवाक्य सिद्धि: । वाचाकृतं शत्रुविनाशनं च दकारशब्दन्तु दरिद्रनाश ।।

इसके बाद यजमान पत्नि व यजमान के तिलक व मोली बंधन करें। यजमान पत्नि के राखी बंधन "श्री श्चते लक्ष्मीश्चते" मंत्र से या निम्न मंत्र से करें —

ॐ तम्पत्नीभिरनुगच्छेम देवा: पुत्रै र्भ्रातृभिरुत वाहिरण्यै: ।
नाकङ्गृभ्ण्णाना: सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधिरोचने दिव: ।।

आचार्यादि - ऋत्विग्वरणम्

एक पात्र में जल, दूध, कुशाग्र, दधि, चन्दन, अक्षत, दूर्वा, सरसों ये आठ वस्तुयें डालें, रक्तसूत्र से वेष्टन कर अर्घपात्र बनाये।

यजमान तीन बार उच्चारण करें — ॐ पुण्याहमिति ३ । यजमान पत्नि के हाथ में कलश देवें। दोनों ब्राह्मणों से प्रार्थना करें —

***ब्राह्मण प्रार्थना* — पावना: सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिण:। अनुगृह्णन्तु मामद्य ग्रहशान्त्याख्य (मूर्ति प्रतिष्ठा, अनुष्ठान, शतचण्डी) कर्मणि।। स्वस्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदा:। श्रोत्रिया: सत्यवाचश्च ग्रह**

ध्यानरता: (देवीध्यानरता:) सदा। आपाद्विघ्न विनाशाय शत्रु बुद्धिक्षयाय च। आयुरारोग्य पुत्रादिसुख श्रीप्राप्तयेमम।। चतुर्भिश्चैव वेदैश्चरुद्रेण सहिता स्तथा। स्वागतं वो द्विज श्रेष्ठा मदनुग्रहकारका:।।

इसके बाद एक ब्राह्मण अर्घ बनाकर लेकर कहें — **अर्घोर्घोऽर्घ:**

यजमान कहें — **"अर्घप्रतिगृह्यताम"**। अह कह कर अर्घपात्र ब्राह्मण के हाथ में देवें या सम्मुख स्थापित करें। तब ब्राह्मण कहें — **"अर्घप्रतिगृह्णामि"**।

इसी तरह पाद्य पात्र के लिये — **"ॐ पाद्यं पाद्यं पाद्यं"** कोई ब्राह्मण कहें।

यजमान कहें **पाद्यं प्रतिगृह्यतान**। यजमान पत्नि पाद्य पात्र से ब्राह्मणो के चरणों पर जल डालें और यजमान प्रक्षालन करें, पत्नि वाम भाग में रहें।

मंत्र -

यत्पुण्यं कपिलादाने कार्त्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे ।
तत्फलं पाण्डवश्रेष्ठ विप्राणां पादशौचने ।।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि तानितीर्थानि सागरे ।
ससागराणि तीर्थानि विप्रस्य दक्षिणपदे ।।

फिर ब्राह्मणों के मोली बांधे —

यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ठशतानीकाय सुमनस्य माना: ।
तन्म ऽआबध्नामि शत शारदाया — युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ।।

फिर यजमान हाथ में यज्ञोपवित, सुपारी, दक्षिणा वरण सामग्री लेकर दक्षिण जानु ढालकर विप्र के दक्षिण जानु का आलंभन करें **स्वगोत्रादि** का उच्चारण कर कहे—

अमुकप्रवरान्विता अमुकगोत्र: शुक्ल यजुर्वेदम्नाय वाजि माघ्यन्दिनीय शाखाध्यायी "अमुक शर्मा यजमानोऽहम्" (ब्राह्मण का गोत्र) **शुक्ल यजुर्वेदाम्नाय वाजिमाध्यन्दिनीय शाखा स्वाध्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मण मस्मिन् ग्रहशांत्याख्ये, प्रतिष्ठापने, दुर्गापाठे, हवन कर्माणिवा आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।**

ब्राह्मण — वरण सामग्री ग्रहण करें और कहें — **"वृतोऽस्मि" प्रतिवचनम्।**

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।

दक्षिणा – श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया – सत्यमाप्यते ॥

आचार्य से यजमान कहें –

आवाहयाम्यहं विप्रमाचार्य यज्ञकारिणम् ।
पुराण – न्याय – मीमांसा – धर्म शास्त्रार्थ पारगम् ॥
आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ।
ग्रहशांत्याख्य (प्रतिष्ठायां) यज्ञेऽस्मिन्नाचार्य स्त्वंतथाभव ॥
यावत्कर्म समाप्येत तावत्त्वमाचार्यो भव ।

आचार्यो वदेत् – भवामि॥ ॐ बृहस्पते अतियदर्यो .....।

ब्रह्मावरणम् – पहले की तरह उच्चारण करें – अस्मिन् कर्मणि त्वंब्रह्माभव

ब्रह्मा कहें – भवामि । ॐ ब्रह्मजज्ञानं...।

यजमान –

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वर्गे लोके पितामहः ।
तथा त्वंम यज्ञेस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥

इसी विधि से अन्य ब्राह्मणों व ऋत्विजों का वरण करें।

ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन् ।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विजसत्तमाः ॥
ॐ युञ्जंतिव्रध्नमरूपं चरतं परितस्तस्थुषः रोचते रोचनादिवि।
युञ्जत्यस्य काम्या हरि विपक्ष समथे शोणाधृष्णुवां हसा॥

इसके बाद **"स्वस्ति न इन्द्रो"** से शांति पाठ करें स्वस्ति सूक्त पेज ६९ से पढें एवं अर्घपात्र की मोली से यजमान के कंकण बंधन कर यजमान का व्रत बंध करें, इस कंकण को यज्ञ सम्पन्न होने पर उतार कर दूसरा रक्षा कंकण सूत्र बांधते है।

रक्षासूत्र मंत्र -

येनबद्धो बलिराजा दानवेंद्रो महाबलः। तेनत्वाबधुबध्नामि रक्षेमाचल माचल ॥१॥ ॐ त्वयंतिष्ठ दाशुषे नृपाहि शृणुधीगिरः रक्षातोकमुतन्मनाः ॥२॥ दाक्षायणा शतानीकम बध्नन्सुहिरण्यकम् । आबध्नामि तदेवाहमायुष्यस्याभिवृद्धये ॥३॥ (यजमान पत्नि के) गृह यज्ञ फलावाप्त्यै

कंकणं सूत्रनिर्मितम् । हस्ते बध्नामि सुभगे त्वं जीव शरदां शतम् ।।४।।
ॐ तम्पत्नीभिरनुगच्छेदेवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वाहिरण्यैः। नाकङ्गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधिरोचने दिवः ।।५।।

अथ नवग्रह स्थापनम्

संकल्पं कुर्यात् :— तत्रादौ शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः यजमानस्य वा जन्मराशेः नामराशेः सकाशाद्वा जन्मलग्नाद्, वर्षलग्नाद्वा, चतुर्थाष्टम् द्वादशादि अनिष्टस्थानस्थित तथा दशा अंतरदशा समये नवग्रह पीड़ा परिहारद्वारा आयुष्यारोग्य प्राप्त्यर्थं सूर्यादि देवता सानुकूलता सिद्ध्यर्थ नवग्रह स्थापनं, अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता स्थापनं चाहं करिष्ये।

सूर्य :- (रक्तपुष्पाक्षतै)

ॐ आकृष्णेन रजसावर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यंच ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यप सगौत्र रक्तवर्ण भो सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ। मध्य मण्डल मध्ये आवाहयेत् ।

(ध्यानम्) शोणाम्भोरुह संस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयीविग्रहं दानाम्भोज युगामयानि दधतं हस्तैः प्रवालप्रभम्। केयूराङ्गदहार कङ्कणधरं कर्णोल्लसत्-कुण्डलं लोकोत्पत्ति विनाशपालनकरं सूर्यं गुणाब्धिं भजे ।।

तांत्रिके :-

सूर्य की आठ शक्तियों का पूर्वादि क्रम से पूजन करें। दीप्तायै नमः, सूक्ष्मायै नमः, जयायै, भद्रायै, विभूत्यै, विमलायै, अमोघायै, विद्युतायै, मध्ये सर्वतो मुखे नमः।

पुनः अग्न्यादिकोणे – उषायै, प्रज्ञायै, प्रभायै ध्यायै नमः।

पूर्वादिक्रमेण :— आदित्याय नमः, रवये नमः, भानवे नमः, भास्कराय नमः। सूर्य मंडल पर १२ अंगुल वृत्ताकार या यथा मंडल के स्थान विभाग के अनुसार करें।

चन्द्रमा :— (अग्निकोणे – चन्द्राकृति ४ अंगुल लम्बा चोड़ा आयत अथवा यथा मंडल विभाग) श्वेत पुष्पाक्षतै

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न ठं सुबद्धम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय

महते ज्यानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमम्ममुष्यै पुत्रममुष्यै पुत्रमष्यै विशऽएषवोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेय सगोत्र शुक्ल वर्ण चन्द्रमा देवतायै इहागच्छ इहतिष्ठ ।

कर्पूरस्फटिकावदातमनिशं पूर्णेन्दुबिंबाननं। मुक्तादाम विभूषितेन वपुषा निर्मूलयंते तमः ।। हस्ताभ्यां कुमुदं वरं च दधतं नीलाल कोद्भासितं। स्वस्याङ्कस्थ मृगोदिताश्रयगुणं सोमं सुधाब्धिं भजे।

तांत्रिके :— चन्द्र यंत्र के आठों दिशाओं में रोहिण्यै नमः, कृतिकायै नमः, रेवत्यै नमः, भरण्यै नमः, रात्र्यै नमः, आर्द्रायै नमः, ज्योत्सनायै नमः, कलायै नमः।

ततः गौदुग्धेन अर्घ्यः। ॐ आप्यायष्व स्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्टयं। भवावाजस्य संगथे।। अप्स्वग्ने सधिष्ठ वसौ स्वधीरनुरुध्य से। गर्भेसंजाय से पुनः।।

भौम :- *(दक्षिणकोष्ठे)* रक्तपुष्पाक्षतै

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम ।
अपां ँ रेता ँ सि जिन्वति ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजसगोत्ररक्तवर्ण उर्ध्वमुखी (या दक्षिणमुखी) त्रिकोण मध्ये आवाहयेत् ।

(स्त्री देवता का त्रिकोण अधोमुखी, पुरुष देवता का उर्ध्वमुखी होता है।)

ध्यान :-

जपाभं शिवस्वेदजं हस्तपद्मेर्गदाशूल — शक्तिर्वरंधारयंतम् ।
अवंति समुत्थं सुमेषासनस्थं धरानंदनं रक्तवस्त्रं समीडे ।।

बुध :- (ईशानकोष्ठे) पीतपुष्पाक्षतै

ॐ उद्बुद्ध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्ठा पूर्ते स ँ सृजेथा मयंच।
अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ।।
ॐ उद्बुध्य ध्वं समनसः सखायः समग्निमिध्वं वहवः सनीलाः ।
दधिक्रामग्नि मुषसं च देवीमिन्द्रावतो बसे निकृयेव ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगध देशोद्भव आत्रेय सगोत्र पीतवर्ण भो बुध इहागच्छ इहतिष्ठ (उदङ्गमुखं ऐशान्यां दिशिवाणकारे चतुरंगुले मण्डले)

ध्यानः-

पीतांबरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दंडधरश्च सौम्यः ।
चर्मासिधृक सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च ॥

गुरु (उत्तर कोष्ठे) - पीतपुष्पाक्षतै

(६ अंगुली लम्बा २ अंगुल चौडा पीत खंड अथवा यथा रुचि)

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु देशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ ।

रत्नाष्टापद वस्त्र राशिममलं दक्षात्किरंतं ।
करादासीनं विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम ॥
पीतालेपन पुष्प वस्त्रमखिलालंकार संभूषितं ।
विद्या सागर पारगं सुरगुरुं वंदे सुवर्ण प्रभम् ॥

तांत्रिके – गुरु मंडले – आग्नेयादिकोणे– धर्माय नमः ज्ञानाय नमः वैराग्याय नमः, ऐश्वर्याय नमः ॥ पूर्वादि क्रमेण – अधर्माय, अज्ञानाय, अवैराग्य अनैश्वर्याय नमः।

शुक्र (पूर्वकोष्ठे) - *(श्वेत वर्ण 9 अंगुल प्रमाण पंचकोण या षट्कोण बनाये)* श्वेतपुष्पाक्षतै

ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः
सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ
शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोमृतम्मधु ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकोट देशोद्भव भार्गव सगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र इहागच्छ इहतिष्ठ ।

ॐ शुक्र ज्योतिश्च चित्र ज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च ।
शुक्रश्चऋतपाश्चात्यठहाः ।

श्वेतांभोज निषण्णमापणतटेश्वेतांबरलेपनं। नित्यं भक्तजनाय संप्रददतं वासोमणीन्हाटकम् ।। वामेनैव करेण दक्षिण करे व्याख्यान मुद्राङ्कितं । शुक्रं दैत्यवरार्चितंस्मितमुखं वंदे सिताङ्गप्रभम् ।।

ॐ शुक्रते अन्यद्य जतंते अन्याद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि ।
विश्वाहिमाया अवसि स्वधावो भद्राते पूषन्निहरातिरस्तु ।।

शनि - (पश्चिम कोष्ठे) कृष्णपुष्पाक्षतै

(धनुषाकृति कृष्णवर्ण १०—११ अंगुल लम्बा २ अंगुल चौडा)

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय, आपोभवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः ।। १ ।। ॐ शमग्नि रग्निभिः करच्छनस्तपतु सूर्यः । शं वातो वाप्वरपा अपसिधः ।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्र देशोद्भव काश्यपगोत्रस कृष्णवर्ण भो शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठ।

नीलद्युति शूलधरः किरीटी गजस्थित स्त्रासकरो धनुष्मान् ।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशांतः सदास्तु मह्यं वरदो महात्मा ।।

(नैर्ऋत्य कोणे शूर्प आकृति १२ × ८ अंगुल)

राहु - (*शूर्पाकारे द्वादशंगुले मण्डले - नैऋत्या*) धुम्रपुष्पाक्षतै

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूति सदावृधः सखा कयाशचिष्ठयावृता ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भव (बर्बरके देशे संजातः) पैठिनसगौत्र नीलवर्ण भो राहो इहागच्छ इहतिष्ठ।

नीलांबरोनीलवपुः किरीटी कराल वक्त्रः करवालशूली ।
चतुर्भुजश्चर्मधरश्च राहुः सिंहासनस्थो वरदोस्तु मह्यम् ।।

केतुः -

(वायव्य कोष्ठे) — पताका आकृति ६ अंगुल कृष्ण वर्ण ।। धुम्रपुष्पाक्षतै

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अंतर्वेदि समुद्भव जैमिनिसगोत्र केतो इहागच्छ इहतिष्ठः।

धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाभृद् गृधासनस्थो विकृताननश्च । किरीट

केयूर विभूषितांबरः सदास्तु मे केतुगणः प्रशांतः।।

इसके बाद ग्रहों का षोडशोपचार पूजन कर पुष्पांजली देवें।

ब्रह्मा मुरारीस्त्रिपुरांतकारी भानुः शशीः भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रशनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शांतिकराः भवन्तु ।।

ॐ ग्रहाऊर्जाहुत योव्यन्तो विप्रायमतिम्। तेषांविशिप्रियाणां वोहमिष मूर्जः समग्रभमुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वाजुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रारयत्वाजुष्टतम्।।१।। ॐ सम्पृचौस्त्थः संमाभद्रेणपृङ्क्तं विपृचौस्थो विमापाप्मना पृङ्क्तम ।।२।।

ग्रहा राज्यं प्रयच्छंति ग्रहाराज्यं हरंति च। ग्रहैस्तु व्यापितं सर्व त्रैलोक्यं स चराचरम्।। कल्याणानि दिवामणिः सुललिता कान्ति कलानां निधि। लक्ष्मीक्ष्मा तनयो बुधश्च बुधता, जीवश्चिरञ्जीविताम्।। साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयतो, राहुर्बलोत्कर्षतां। केतुर्यच्छतु वांछित फलं, सुख संपदाम्।।

सूर्यं शौर्यमथेन्दुरिन्द्रपदवीं सुमंगलं मंगलं सद्बुद्धिश्च बुधो गुरुश्च गुरुताम्। शुक्रः सुखं शं शनिः राहुर्बाहुबलं केतुश्च कुलोश्योन्नतिम्।।

(अनेन पूजनेन श्री नवग्रह देवता प्रीयन्ताम् कह कर जल छाड़ें)

ग्रहमातृका पूजनम्

ग्रहमातृका का क्रम पहले कहीं आया नहीं है, परन्तु पूजन करे तो ठीक ही है। **मेरुतंत्र** में विधान है। यथा —

नौ ग्रहों की नौमातृका सूर्यादि ग्रहों के मंडल पर यथा क्रम से स्थापित करें।

(१) मंगलायै नमः — सूर्य मंडल पर
(२) पिंगलायै नमः— चन्द्र मंडल पर
(३) धान्यायै नमः — भौम मंडल पर
(४) भ्रामरयै नमः — बुध मंडल पर
(५) भद्रिकायै नमः— गुरु मंडल पर
(६) उल्कायै नमः — शुक्र मंडल पर
(७) सिद्धायै नमः — शनि मंडल पर

(८) संकटायै नमः – राहु मंडल पर

(९) विकटायै नमः– केतु मंडल पर

मेरु तंत्र में सूर्यादि गहों की नौमाताओं का उल्लेख है अतः मातृका पूजन से ग्रहारिष्ट कम होता है।

मंगला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा उल्का सिद्धा संकटा च विकटा गर्भ पालिका।

अथ अधिदेवताऽवाहनम्

आवाहन स्थान – वैसे तो अधिदेवता क्रमशः सूर्यादि ग्रहों के दक्ष पार्श्व व प्रत्यधि देवता क्रमशः ग्रहों के वाम भाग में स्थापित करते है परन्तु कहीं–कहीं मतभेद है सो दोनों ही विधान दे रहें है।

शिव 1. (सुर्य के दक्ष पार्श्व में) -

ॐ त्र्यंबकम् यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम् ।
उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शंभो इहागच्छ इह तिष्ठ।

उमा 2. (चन्द्रमा के दक्ष या अग्निकोणे दिशि) -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विन्नौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उमे इहागच्छ इह तिष्ठ।

स्कंद 3. (भौम के दक्षिण भाग में या याम्य भाग में) -

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ।
श्येनस्यपक्षा हरिणस्यबाहू उपस्तुत्यं महिजाततंतेअर्वन् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कंद इहागच्छ इह तिष्ठ।

विष्णु 4. (बुधस्य दक्ष पार्श्वे या बुधस्य पूर्वे) -

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो र्ध्रुवोसि वैष्णव मसि विष्णवेत्वा ।

ॐ भूर्भुवः स्वः नारायण इहागच्छ इह तिष्ठ।

ब्रह्मा 5 . (गुरु के दक्षिण पार्श्व में) -

ॐ आ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्ति पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः । सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योग क्षेमो नः कल्पताम् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ।

इन्द्र 6. (शुक्र के दक्षपार्श्व या पूर्व में) -

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमंपिबवृत्रहा शूर विद्वान । जहि शत्रुँ३रपमृधोनुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतोनः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

यम 7. (शनि के दक्ष पार्श्व या पश्चिम में) -

ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ँ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यमः इहागच्छ इह तिष्ठ।

कालः 8. (राहु के दक्ष पार्श्व में) -

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाः ऽक्षित्या उन्नयामि समापो ऽअद्भिरग्मत्समोषधीभिरोषधी ॥ ।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालः इहागच्छ इह तिष्ठ।

चित्रगुप्त 9. (केतु के दक्ष पार्श्व में या नैर्ऋत्य भाग में) -

ॐ चित्रावसो स्वस्तिते पारमशीय ।

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्त इहागच्छ इह तिष्ठ।

अथ प्रत्यधिदेवतानामाऽवाहनं

अग्नि 1. (सूर्य के वाम वार्श्व में या शिव के आगे) -

ॐ सनः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनोभव। सचस्वानः स्वस्तये।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नि इहागच्छ इह तिष्ठ॥

(या) अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ २ आसादयादिह ॥

मंत्रेण.

आप 2. (चन्द्रमा के वाम पार्श्वे या उमाके नैऋत्य में) -

ॐ अपोअद्यान्वचारिष ठं रसेन समसृक्ष्महि । पयस्वानग्नऽआगमंतम्मास ठं सृजवर्चसा प्रजया च धनेन च ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आप इहागच्छ इह तिष्ठ।

धराः 3. (मंगल के वामपार्श्वे या स्कंद के वायुकोण में) -

ॐ चिदसि तया देवतयांगिरस्वद् ध्रुवासीद । परिचिदसि तया देवतयांगिरस्वद् ध्रुवासीद ।

ॐ भू भुर्वः स्वः धरे इहागच्छ इह तिष्ठ। या श्योनापृथिवी. मंत्रेण।।

विष्णु 4. (बुध के वामपार्श्वे या नारायण के उत्तर में) -

ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे — त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा ँ सुरे स्वाहा ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ।

इन्द्र 5. (गुरु के वामपार्श्वे या ब्रह्मा के उत्तर में) -

ॐ इन्द्र आसान्नेता बृहस्पति र्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः । देवसेना नामभिभंजतीनां जयंतीनां मरुतोयं त्वग्रम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

इन्द्राणी 6. (शुक्र के वामपार्श्वे या इन्द्र के पश्चिम में शुक्र मंडल पर) -

ॐ इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽ भवन्यथेन्द्र दैवी र्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोऽभवन् । एवमिमं यजमानन्दैवीश्च विशोमानुणीश्चानु वर्त्मानो भवंतु ।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ।

प्रजापति 7. (शनि के वामपार्श्वे या यम के पश्चिम में) -

ॐ प्रजापतेनत्व देतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिताव्यय ँ स्याम पतयोरयीणा ँ स्वाहा ।

रुद्रयत्ते क्रिविपरन्नाम तस्मिन् हुतमस्यमेष्टमसि स्वाहा ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छ इह तिष्ठ।

पन्नगा 8. (राहु के वामपार्श्वे या काल के पश्चिम में) –

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पन्नगा इहागच्छ इह तिष्ठ।

ब्रह्मा 9. (केतु के वामपार्श्व में या चित्रगुप्त के ईशान में)

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः ।
सबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठा सतश्च योनिमसतश्च विवः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मा इहागच्छ इह तिष्ठ।

पंच लोकपाल स्थापनम्

लोकपाल में स्थापना स्थान के बारे में मतभेद है। एक मत में कहा है कि शनैः केतोश्च पूर्वेण, गुरोः सूर्यस्य पश्चिमे अन्य मत से राहु के उत्तर में गणपति तथा राहु के दक्षिण में अंतरिक्ष, शनि के उत्तर में दुर्गा, रवि के उत्तर में वायु, केतु के दक्षिण में अश्विन का स्थान कहा है।

गणपति – 1. (राहु के उत्तर में या सूर्य के वायव्य कोण में)

ॐ गणानां त्वा गणपति ठ ऽहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ठ
हवामहे निधीनांत्वा निधिपति ठ हवामहे ।
वसोमम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ।

दुर्गा – 2. (शनि के उत्तर में या गुरु के उत्तर में)

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छ इह तिष्ठ

वायु – 3. (रवि के उत्तर में)

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथा सस्ते भिरागहि ।नियुत्वान्त्सोमपीतये।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इह तिष्ठ।

अंतरिक्ष 4. (राहु के दक्षिण में या शनि के पश्चिम में)

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतांतरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अंतरिक्ष इहागच्छ इह तिष्ठ।

अश्विन्य - 5. (केतु के दक्षिण में या सूर्य के पूर्व में)

ॐ यावां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती तया यज्ञं मिमक्षतम्।

ॐ भूभुर्वः स्वः अश्विनाविहागच्छतम् इहागच्छ इह तिष्ठ।

क्षेत्रपाल (गुरु के उत्तर में)

ॐ नहि स्पशमविदनन्यमस्माद् वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः ।
एमे नम वृधन्नमृता अमृर्त्यं वैश्वानरङ्क्षेत्र जित्याय देवाः ।।

वास्तु (क्षेत्रपाल के उत्तर में)

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् त्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः ।
यत्व महे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदे शं चतुष्पदे ।।

अथ नक्षत्र स्थापनम्

नक्षत्र स्थापना के दो मत है अधिक भी हो सकते है।

(१) परिधि समीप में पूर्वादि चारों दिशाओं में अभिजित सहित सात–सात नक्षत्र स्थापित करें।

(२) विंशोत्तरी दशामत से ३–३ नक्षत्र उस ग्रह के समीप स्थापित करें जैसे **– (१) सूर्य मंडले – कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उ.षा., (२) चन्द्र समीपे – रोहिणी, हस्त, श्रवण (३) भौम समीपे – मृग, चित्रा, धनिष्ठा (४) बुध समीपे – आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती (५) गुरु समीपे – पुन, विशाखा, पू. भा. (६) शुक्र समीपे – भरणी, पू. फा., पू. षा. (७) शनि समीपे – पुष्य, अनुराधा, उभा, (८) राहु समीपे – आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा (९) केतु समीपे – अश्विनी, मघा, मूल (१०) सूर्य चन्द्र मध्ये अभिजित्।**

अश्विनी - तेजसा दस्रम् ।

ॐ अश्विनातेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् ।

वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ।।१।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दस्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

भरणी -

ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः। सर्ठस्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः याम्यभ्य इहागच्छ इह तिष्ठ।

कृतिका -

ॐ अयमग्निः सहस्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः । मूर्द्धा कवी रयीणाम् ।।३।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कृतिके इहागच्छ इह तिष्ठ।

रोहिणी -

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्च विवः ।।४।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रोहिणी इहागच्छ इह तिष्ठ।

मृगशिरा -

ॐ सोमो धेनुर्ठ सोमो ऽ अर्वन्तमाशु ठ सोमोवीङ्कर्मण्यददाति । सादन्यं विदथ्यऽ सभेयं पितृश्रवणं योददाश दस्मै ।।५।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौम्य इहागच्छ इह तिष्ठ।

आर्द्रा -

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोत ऽइषवेनमः । बाहुभ्यां मुतते नमः ।।६।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रौद्रभ इहागच्छ इह तिष्ठ।

पुनर्वसु -

ॐ अदिति द्यौरदितिरंतरिक्ष मदिति र्माता सपिता सुपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजनाऽ अदिति र्जातमदिति र्जनित्वम् ।।७।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आदितेय इहागच्छ इह तिष्ठ।

पुष्य -

ॐ वाचस्पतये पवस्व वृष्णोऽअ ठ शुभ्यांगभस्ति पूतः ।

देवो देवेभ्य पवस्वयेषां भागोसि ।।८।।

ॐ भूर्भुव: स्व: पुष्य इहागच्छ इह तिष्ठ।

आश्लेषा -

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवीमनु ।
ये ऽ अंतरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्पेभ्यो नम: ।।९।।

ॐ भूर्भुव: स्व: आश्लेषे इहागच्छ इह तिष्ठ।

मघा -

पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम: । पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: । प्रपितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: ।
अक्षन्नपितरो मीमदंत पितरोतीतृपंत पितर: पितर: शुंधध्वम् ।।१०।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मघे इहागच्छ इह तिष्ठ।

पूर्वाफाल्गुनी -

ॐ भणप्रणेत भर्ग सत्यराधो भगेमां धियमुदवाददन्न: ।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वै भर्ग प्रन्नृभिर्नृवंत: स्याम ।।११।।

ॐ भूर्भुव: स्व: पूर्वाफाल्गुनी इहागच्छ इह तिष्ठ।

उत्तराफाल्गुनी -

ॐ दैव्यावध्वर्यू ऽआगत ँ रथेन सूर्य त्वचा मध्वायज्ञ ठ समंजाये । तम्प्रक्त्लथा यं वेनश्चित्रन्देवानाम् ।।१२।।

ॐ भूर्भुव: स्व: उत्तराफाल्गुनी इहागच्छ इह तिष्ठ।

हस्त -

ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपत्ताव विह्रुतमम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजा: पुपोष पुरुधा विराजति ।।१३।।

ॐ भूर्भुव: स्व: हस्त इहागच्छ इह तिष्ठ।

चित्रा -

ॐ त्वष्टातुरीपो ऽअद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना ।
द्विपदाच्छन्द ऽइंद्रियमुक्षा गौर्नवयोदधु: ।।१४।।

ॐ भूर्भुव: स्व: चित्रे इहागच्छ इह तिष्ठ।

स्वाति -

ॐ पीवोऽ अन्ना ँ रयिवृध: सुमेधा श्वेत: सिषक्ति नियुक्ततामभि श्री:। ते वायवेसमनसो वितस्थुर्विश्वेनर: स्वपत्यानि चक्रु: ।।१५।।

ॐ भूर्भुव: स्व: स्वाते इहागच्छ इह तिष्ठ।

विशाखा -

ॐ इन्द्राग्नी ऽआगत ठ सुतङ्गीभिर्न्नभो वरेण्यम् । अस्य पातंधियेषिता ।।१६।।

ॐ भूर्भुव: स्व: विशाखे इहागच्छ इह तिष्ठ।

अनुराधा -

ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवाय तदृत ठ सपर्यत । दूरे दृशे देव जातायकेतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायश ठ सत ।।१७।।

ॐ भूर्भुव: स्व: मैत्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

ज्येष्ठ -

ॐ सइषु हस्तै: सनिषङ्गिभिर्वशीस ँ स्रष्टा सयुध ऽइन्द्रोगणेन । स ठ सृष्टजित्सोमपाबाहुशर्द्ध्युग्र धन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ।।१८।।

ॐ भूर्भुव: स्व: ज्येष्ठे इहागच्छ इह तिष्ठ।

मूल -

ॐ मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्य मग्नि ठ स्वेतयोनावभारुषा । तांविश्वैर्देवै ऋतुभि: संविदान: प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु ।।१९।।

ॐ भूभुर्व: स्व: मूल इहागच्छ इह तिष्ठ।

पूर्वाषाढ -

ॐ अपाघमप किल्विषमप कृत्यमपोरप: । अपामार्ग त्वमस्मदपदु:स्वप्न्य ठ सुव ।।२०।।

ॐ भूर्भुव: स्व: पूर्वाषाढा इहागच्छ इह तिष्ठ।

उत्तराषाढा -

ॐ विश्वे ऽ अद्यमरुतो विश्वऊती विश्वेभवन्त्वग्नय: समिद्धा: विश्वेनोदेवा ऽअवसा गमंतु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे ।।२१।।

ॐ भूभुर्वः स्वः उत्तराषाढे इहागच्छ इह तिष्ठ।

अभिजित् -

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि । धियो योनः प्रचोदयात् ।।१२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अभिजित् इहागच्छ इह तिष्ठ।

श्रवण -

ॐ इदं विष्णुर्विचक्र मे त्रेधा निदधेपदम् । समूढमस्यपा ठं सुरे स्वाहा ।।१३।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रवण इहागच्छ इह तिष्ठ।

धनिष्ठ -

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् । देवास्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः ।।२४।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धनिष्ठे इहागच्छ इह तिष्ठ।

शतभिषा -

ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभ सर्जनीस्त्थो वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद ।

ॐ भूर्भुवः स्वः शतभिषे इहागच्छ इह तिष्ठ।

पूर्वभाद्रपद -

ॐ उतनो ऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज ऽएकपात् पृथिवी समुद्रः । विश्वेदेवाऋता वृधोहुवानास्तुतामंत्राः कविशस्ताऽअवंतु ।।२६।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वभाद्रपदे इहागच्छ इहतिष्ठ।

उत्तराभद्रपद -

ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामाहि ठं सीः । निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ।।२७।।

ॐ भूभुर्वः स्वः अहिर्बुध्न्य इहागच्छ इह तिष्ठ।

रेवती -

ॐ पूषन्तवव्रते वयन्नरिष्येम कदाचन् ।
स्तोतारस्त ऽइहस्मसि ॥२८॥

ॐ भूर्भुवः स्वः रेवति इहागच्छ इह तिष्ठ।

योगा - (ईशान कोणे)

ॐ योगे योगेतवस्तरं वाजे वाजे हवामहे ।
सखाय ऽइन्द्रमूर्तये ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः योगा इहागच्छ इह तिष्ठ।

करणा - (अग्निकोणे)

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः करणाः इहागच्छ इह तिष्ठ।

ध्रुव - (ग्रहाणां मध्ये)

ॐ ध्रुवासि ध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात् ।
घृतेनद्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्यच्छदिरसि । विश्वजनस्यच्छाया॥

ॐ भूर्भुव्रः स्वः सतारक ध्रुव इहागच्छ इह तिष्ठ।

सरिताः - (आदित्य मंडल पर वामभागे अधिदेवयोः)

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियंति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पंचधा सोदेशे भवत्सरित् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सरित इहागच्छ इह तिष्ठ।

सप्तऋषयः - (गुरु व सूर्य के मध्य में)

ॐ सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षंति सदमप्रमादम् ।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयु स्तत्र जाग्रतो
अस्वप्नजौसत्र सदौ च देवौ ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तऋषय इहागच्छ इह तिष्ठ।

सागराः - (आदित्य मंडल पर पंचनद्य सप्तसरित के नीचे)

ॐ इमंमे वरुण श्रुधीहव मद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सागरा इहागच्छ इह तिष्ठ।

पर्वता - (उत्तरे परिधि समीपे)

ॐ प्रपर्वतस्य वृषभस्थ पृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानाः।
ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ता ऽअहिर्बुध्न्य मनुरीयमाणाः।
विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णो र्विक्रांतमसि विष्णोः क्रांतमसि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः पर्वता इहागच्छ इह तिष्ठ।

रैवंत - (सूर्य और आप के मध्य में या सूर्य के नीचे)

ॐ जवोयस्ते वाजिन्निहितो गुहायः श्येनेपरीत्तोअचरच्चवाते।
तेन नो वाजिन्बलवान् बलेनवाजजिच्च भवशमने च पारयिष्णुः।
वाजिनो वाजजितो वाज ठंसरिष्यन्ती बृहस्पते र्भागमवजिग्रत ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः रैवंत इहागच्छ इह तिष्ठ।

सुपर्ण - (बुध मंडल पर उत्तर दिशा)

ॐ सुपर्णोसि गुरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रं चक्षुर्बृहद्रथंतरे पक्षौ। स्तोम आत्माछन्दा ँ स्यंगानियजू ँ षि नाम साम तेतनूर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियं पुच्छंधिष्ण्याः शफाः सुपर्णोसिगरुत्मान् दिवङ्गच्छस्वः पत ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गरुड इहागच्छ इह तिष्ठ।

अथ विशेष देवाऽवाहनम्

विष्णु - (प्रजापतेरग्रेशानिमंडले)

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सभूमि ठं सर्वत स्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णु इहागच्छ इह तिष्ठ।

वास्तु - (राहुमंडल या बृहस्पति के समीप)

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी—ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः।
यत्त्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१॥
अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्याविशन् सखासुशेवएधिनः ॥२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छ इह तिष्ठ।

गणेश – (वायव्यां केतु मंडले)

ॐ गणानांत्वेति. । ॐ भूर्भुवः स्वः गणेश इहागच्छ इह तिष्ठ।

क्षेत्रपाल – (गुरु मंडल पर वास्तु के उत्तर या चन्द्रमंडल पर उमा के आगे)

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अंतरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपाल इहागच्छ इह तिष्ठ।

चामुण्डा – (रुद्र के अग्रभाग में या सूर्य शनि के मध्य में)

ॐ जातवेद से सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः ।
सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः ।।

गौरी – (स्कंद के नीचे)

ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यादिमातर इहागच्छ इह तिष्ठ।

चतुर्वेद – (सूर्य मंडल पर पूर्वादि क्रम से निम्न श्लोक या चारों ऋचाओं से आवाहन करें)

वाग्ब्रह्मरूपिणः ख्याता ब्रह्मणो मुखनिर्गताः ।
वेदा आयान्तु चत्वारो यज्ञेऽस्मिन् कृपयाद्य मे ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्ववेंदा इहागच्छ इह तिष्ठ।

ऋग्वेद – (पूर्वे)

ॐ अग्नि मीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारंरत्नधातमाम् ।१।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ऋग्वेद इहागच्छ इह तिष्ठ।

यजुर्वेद – (दक्षिणे)

ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमायकर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा
अयक्ष्मामावस्तेन ऽईशतमाघशर्ठ सो ध्रुवाऽअस्मिन्
गौपतौ स्यात वव्ही – र्यजमानस्य पशूनुपाहि ।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यजुर्वेद इहागच्छ इह तिष्ठ।

सामवेद - (पश्चिमे)

ॐ अग्न आयाहिवीतये गृणानो हव्यदातये ।
निहोतासत्सि बर्हिषि ।।३।।

अथर्वण - (उत्तरे)

ॐ शंनोदेवीरभिष्टय आपोभवंतुपीतये । शंय्योरभिस्रवंतुनः ।।४।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्वण इहागच्छ इह तिष्ठ।

अथ दिक्पाल स्थापनम्

पूर्वादि अष्ट दिशाओं तथा ब्रह्मा व अनंत के स्थान में आवाहन करें, ग्रहमंडल की दूसरी रक्त परिधि पर।

इन्द्र -

ॐ त्रातारमिंद्र मवितारमिंद्र ठं हवेहवे सुहव ठं शूरमिंद्रम् ।
ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिंद्र ँ स्वस्तिनो मघवाधात्विंद्रः ।।१।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ।

अग्नि -

ॐ त्वन्नो ऽअग्नेतव देव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्चवंद्य ।
त्रातातोकस्यतनये गवामस्य निमेष ठंरक्षमाणस्तवव्रते ।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ।

यम -

ॐ सुगन्नु पंथां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्न आयुः ।
अपैतुमृत्युरमृतंम आगा द्वैतवैस्वतो नो अभयं कृणोतु ।।३।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ।

नैऋत्य -

ॐ असुन्वंतम यजमान मिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितस्करस्य।
अन्य मस्मदिच्छसात ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।।४।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नैऋत्ये इहागच्छ इह तिष्ठ।

वरुण –

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेडमानो वरुणे हवोध्युरुश ठ समान आयुः प्रमोषीः ।।५।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ।

वायु –

ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ठ सहस्त्रिणीभिरूपयाहि यज्ञम्।
वायो अस्मिनृत्सवने मादयस्व यूयं पातस्वस्तिभिः सदानः ।।६।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे इहागच्छ इह तिष्ठ।

कुबेर –

ॐ वय ठ सोमव्रते तव मनस्तनूषुविभ्रतः प्रजावंत सचेमहि ।।७।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धनद इहागच्छ इह तिष्ठ।

महेश्वर –

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियञ्जिन्व मवसे हूमहेवयम् ।
पूषानो यथा वेदसा अमसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।८।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान इहागच्छ इह तिष्ठ।

ब्रह्मा –

ॐ अस्मेरुद्रा मेहनापर्वतासो वृत्रहत्यै भरहूतौ सजोषाः ।
यः शर्ठसतेस्तुवतेधायि पज्र इंद्र ज्येष्ठा अस्माँ २ अवंतु देवाः।।९।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन इहागच्छ इह तिष्ठ।

अनंत –

ॐ स्योना पृथिविनोभवा नृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः ।

ॐ भूर्भुवः स्वः धराधिपते अनंत इहागच्छ इह तिष्ठ।

फिर हाथ में अक्षत लेकर छोड़ें।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ इन्द्रादि लोकपाल देवेभ्यो सांगाय सपरिवाराय सशक्तिकाय सवाहनाय आवाहयामि स्थापयामि ।

अथ अष्टनाग-अष्टवसु स्थापनम्

बहुधा यह नहीं करवाते है, परन्तु सामान्यविधि से भी इनका आवाहन करने पर राहु, केतू, शनिकृत विशेष दोष, कालसर्प योग का दोष भी कुछ कम होता है।

इनका आवाहन कृष्ण परिधि पर नवग्रह मंडल पर कर सकते है।

***अष्टनाग* - (पूर्वादिक्रमेण)**

ॐ अनंताय नमः, ॐ वासुकये नमः, शेषाय नमः, पद्मनाभाय नमः, कम्बलाय नमः, शंखपालाय नमः, धृतराष्ट्राय नमः, तक्षकाय नमः, मध्ये कालीयाय नमः।

कहीं पर इसमें भिन्नता है – **यथा मध्ये अनंताय नमः एवं पूर्वादि क्रमेण शेषाय, वासुकीये, तक्षकाय, कर्कोटकाय, शंखपालाय, नीलाय, कंबलाय, महापद्माय नमः।**

खण्डदीक्षित पद्धति के अनुसार – **(१) ॐ शेषाय नमः रवेः पूर्वे (२) वासुकीये नमः सोमस्याग्रे (३) भोमाग्रे तक्षकाय नमः (४) कर्कोटकाय नमः बुधोत्तरे (५) पद्माय नमः बृहस्पत्यग्रे (६) ॐ महापद्माय नमः शुक्रोत्तरे (७) शङ्ख पालाय नमः शनि पश्चिमे (८) ॐ कालाय नमः राहुपुरतः (९) ॐ कुलीराय नमः केतुपुरतः ॥**

नागशक्त्यैः – १२ नागिनी का चतुर्थी से आवाहन करें।

१. जरत्कारु, २. जगद्गौरी, ३. मनसा, ४. सिद्धयोगिनी, ५. वैष्णवी ६. नागभागिनी, ७. शैवी, ८. नागेश्वरी, ९. जरत्कारुप्रिया १०. आस्तीकमाता ११ विषहरा १२. महाज्ञानयुता ॥

अष्टवसु – **(दिग्गज) ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदंत, सर्वभौम, सुप्रतीक ॥**

अथवा इनके लिये अलग से अष्ट दल मंडल बनाकर भी पूजा करा सकते है। अगर समय हो तो निम्न देवताओं का आवाहन करें।

ॐ गङ्गादिनदीभ्यो नमः, सप्तकुलाचलेभ्यो नमः, एकादशरुद्रेभ्यो

नमः, ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः, एकोन पञ्चाशन्मरुद्भ्यो नमः, ॐ षोडश मातृकेभ्यो नमः ॐ षट्ऋतुभ्यो नमः ॐ द्वादशमासेभ्यो नमः, ॐ द्वयऽयनाभ्यां नमः, ॐ पञ्चदशतिथिभ्यो नमः, ॐ षष्टि संवत्सरेभ्यो नमः, ॐ यक्षेभ्यो नमः, ॐ गंधर्वेभ्यो नमः, ॐ विद्याधरेभ्यो नमः, ॐ अप्सरेभ्यो नमः, ॐ अक्षोभ्यो नमः, ॐ मनुष्येभ्यो नमः।।

इसके पश्चात् नवग्रह मंडल पर आवाहित अधिदेवता, प्रत्यधिदेवता विशेषदेवता, पंचलोकपाल, दिक्पाल व अन्य सभी देवताओं का षोडशोपचार पूजन करें।

ॐ भूर्भुवः स्व सर्वेभ्यो आवाहित देवेभ्यो अनया पूजनया सुप्रसन्ना वरदो भव।

वास्तु पूजनम्

उत्पत्ति :— एक बार अन्धक नामक राक्षस व भगवान शंकर में युद्ध हुआ दोनों के पसीने की बूंदे एक साथ पृथिवी पर गिरी उससे दोनों के बीच एक विशाल देव उत्पन्न हुआ, जो वास्तु पुरुष के नाम से विख्यात हुआ। भगवान विश्वकर्मा ने आकर युद्ध रुकवाया एवं **वास्तु पुरुष** को अपने साथ ले गये और इसे भूमि के नीचे के अष्टदोषों को शांत करने का काम सौपा। **अतः भूमि निर्माण, गृहप्रवेश, यज्ञकर्म में तथा एक हजार से ज्यादा आहुति हो वहाँ वास्तु पूजन का उल्लेख है।**

वास्तु मंडल स्वरूप :— इस मंडल के निर्माण हेतु श्वेत वस्त्र पर कुंकुम से या रंग से १० रेखा पूर्व से पश्चिम व १० रेखा दक्षिण से उत्तर की ओर सुवर्ण या रजत सलाका से खींचे इससे ८१ कोष्ठक बन जायेंगें। उनमें चित्र के अनुसार अक्षत पुंज रखें।

इसमें स्थापना में **ब्राह्मण विशेषकर जो त्रुटि करते है वे शिखने नमः** नैर्ऋत्य कोष्ठक से प्रारंभ कर एक—एक कोष्ठक में एक—एक देवता के हिसाब से आवाहन कर नैर्ऋत्य से अग्निकोण तक करते है, फिर दूसरे कोष्ठक से पूर्व की ओर करते है।

ध्यान देने लायक बात यह है कि **शिखिनेनमः वास्तु का शिर है वह ईशान कोण से प्रारंभ होता है,** इसके बाद दक्षिण की ओर एक कोष्ठक याने एक पद

(पीत रंग) पर्जन्य (द्विपद यानि दो कोष्ठक) उसके आगे इसी तरह अग्नि कोण तक, अग्नि कोण से नैऋत्य कोण, नैऋत्य से वायव्यकोण, वायव्य कोण से ईशान कोण तक इसी क्रम में नवपद ब्रह्मा के चारों ओर आवाहन कर ४५ वें श्लोक पर मध्य में नवपद पर ब्रह्मा का आवाहन करें। पैतालीसवाँ श्लोक पूरा होने पर वास्तु का पूरा रूप बनता है, तदंतर **वास्तु मंत्रो** से २ या ५ मंत्रो से आवाहन करें एवं **अघोर मंत्र** से शिव का आवाहन करें। श्वेत परिधि पर चरक्यै आदि ८ देवियों व देवों का आवाहन करें। रक्त परिधि पर दशों दिक्पालों का आवाहन, कृष्ण परिधि पर पूर्वादि क्रम से हेतुकाय आदि देवो का आवाहन करें।

अथ 81 पद वास्तुमण्डलदेवानांपूजनम्

चार लोहे की नागफणी बनावें या लाहे की कीलें लेंवें, वास्तु मंडल के चारों कोणों में या सिकोरे या गिलास में धान्यादि भरकर उनमें ये लोहे के शंकु स्थापित करें ३ या ५ सूत्रों से अग्निकोण से प्रारंभ कर चारों कोणों में शंकुओ को वष्टित करें दूसरा भाग वास्तु मूर्ति से सम्बन्ध कर देवें। चारों शंकुओ का पूजन कर बलि देवें। (**द्विगुणीकृत सूत्रेण वेष्टनं कुर्यात्** ऐसा भी लिखा है।)

विशन्तु भूतले नागा लोकापालाश्च सर्वतः ।
अस्मिन् गृहे ऽवतिष्ठन्तु ह्ययुर्बलकराः सदा ।।

ततो त्रिसूत्रेण सर्वशंकुवेष्टनं कृत्वा माषभक्तदध्योदन बलिं स्थापयेत् तदो वदेत्।

उड़द, चावल, दधि ओदन, नमकीन, पापड़ पायस, मिठाई से बलि समर्पण करें।

ॐ अग्नये नमः इमं बलि समर्पयामि। नैऋत्ये नमः इमं बलिं समर्पयामि। वायवे नमः इमं बलिं सम.। ईशानाय नमः इमं बलिं सम.।

पश्चाद्दशरेखादेवीश्च नाममंत्रेण पूजयेत् **यथा पश्चिम से पूर्व की ओर :— ॐ शांत्यैनमः, यशोवत्यैनमः, कांत्यैनमः, विशालायैनमः, प्राणवाहिन्यैनमः। सत्यैनमः, सुमत्यैनमः, नंदायैनमः, सुभद्रायैनमः, सुरथायैनमः।**

तथैव दक्षिणारंभ उदगन्ताः (याम्योत्तर) रेखा पूजनम् **यथा हिरण्यायै,**

सुव्रतायै, लक्ष्म्यै, विभूत्यै, विमलायै, प्रियायै, जयायै, ज्वालायै (कालयै) विशोकायै (विशालायै), इडायै (इन्द्रायै) नमः।। आ. स्था. यथा शक्ति पूजयेत्।

ये ८१ पद के वास्तु में शिरा कही जाती है।

64 पद के वास्तु में मतान्तरे – पूर्वापर की रेखाओं में श्रियै, यशोवत्यै, कान्तायै, सुप्रियायै, यशैः, शिवायै, शोभनायै, सधनायै, इडायै नमः।

याम्योत्तर रेखाओं के नाम – धन्यायै, धरायै, विशालायै, स्थिरायै, रूपायै, गदायै, निशायै, विभावायै, प्रभावायै नमः।

अब ८१ खानों में ईशानकोण से पूजन प्रारंभ करें जहाँ एक पद है वहाँ १ कोष्ठक में, द्विपद हो तो दो कोष्ठक में, अर्थात् अगर पूजन पूर्व दिशा में है तो पूर्व के कोष्ठक के नीचे का कोष्ठक सहित, दक्षिण दिशा में द्विपद हो दूसरा पद उत्तर का, पश्चिम में पूजन हो तो दूसरा पद पूर्व दिशा का, उत्तर दिशा में हो तो दूसरा पद दक्षिण दिशा का होगा।

अधिकांशतः ८१ खानों के बाहर श्वेत, रक्त, श्याम परिधियाँ बना देते है। ब्रह्मा के बाद अन्य देवताओं का पूजन इन परिधियों में होगा। हो सके तो बाहर की परिधियों में चरकी आदि आठ देवता, दिक्पालों व हेतुकाय आदि देवों के अलग–अलग रंग पुंज रखें।

नाम के आगे ॐ **भूर्भुवः स्वः** एवं चतुर्थी लगाकर आवाहन तथा प्रथमा से स्थापन करें।

ईशान कोण से अग्नि कोण की ओर (१) **ऐशान कोण पदे** – (रक्त १) **ॐ भूर्भुवः स्वः शिखने नमः शिखिन आ. स्था.** – इसी विधि से सभी का आवाहन करें। (२) **तद् दक्षिणैक पदै.–पर्जन्याय.** (पीत १) (३) **तद्द दक्षिण पदद्वयै–जयन्ताय.** (पीत २) (४) **तद् दक्षिण पदद्वये–कुलिशायुधाय.** (पीत २) (५) **तद् दक्षिण पदद्वये–सूर्याय.** (रक्त २) (६) **तद् दक्षिण पदद्वये–सत्याय.** (श्वेत २) (७) **तद्द दक्षिण पदद्वये–भृशाय** (कृष्ण २) (८) **तद्द दक्षिणैक पदै–आकाशाय.** (कृष्ण १) (९) **तद्द दक्षिणाग्नेयकोणपदे –वायवे नमः** (धूम्र १ पद)।।

अग्नि कोण से नैर्ऋत्य कोण की ओर (१०) तत्पश्चिमैक पदे पूष्णे. (रक्त १) (११) तत्पश्चिम पदद्वये—वितथाय. (श्वेत २) (१२) तत्पश्चिमे—पदद्वये गृहक्षताय. (पीत २) (१३) तत्पश्चिमे पदद्वये—यमाय (कृष्ण २) (१४) तत्पश्चिमे पदद्वये—गंधर्वाय नमः (रक्त २) (१५) तत्पश्चिमे पदद्वये— भृङ्गराजाय. (कृष्ण २) (१६) पश्चिमौ परिस्थितैक पदे मृगाय (पीत १) (१७) तत्पश्चिमे नैऋत्य कोण पदे पितृभ्यो नमः (रक्त १) ॥

नैर्ऋत्य कोण से वायव्य की ओर (१८) तदुत्तरैकपदे — दौवारिकाय. (रक्त १) (१९) तदुत्तरेपदद्वये — सुग्रीवाय. (श्वेत २) (२०) तदुत्तरपदद्वये — पुष्पदन्ताय. (रक्त २) (२१) तदुत्तरोपदद्वये — वरुणाय (श्वेत २) (२२) तदुत्तरेपदद्वये — असुराय. (पीत २) (२३) तदुत्तरेपदद्वये — शोषाय नमः (कृष्ण २) (२४) तदुत्तरोपरिस्थितैक पदे पापाय नमः (पीत १) (२५) तदुत्तरे वायव्यकोणपदे रोगाय नमः (रक्त १)॥

वायव्य कोण से ईशान कोण की ओर (२६) तत्प्रागेकपदे — अहये. (रक्त १) (२७) तत्प्राक्पदद्वये — मुख्याय. (रक्त २) (२८) तत्प्राक्पदद्वये — भल्लाटाय. (कृष्ण २) (२९) तत्प्राक्पदद्वये — सोमाय. (श्वेत २) (३०) तत्प्राक्पदद्वये — सर्पाय. (कृष्ण २) (३१) तत्प्राक्पदद्वये — अदित्यै. (पीत २) (३२) तत्प्रागुपरिस्थितैकपदै — दित्यै नमः (पीत १)॥

अब मध्य कोष्ठको में ब्रह्मा के चारों कोण ईशानादि में दो—दो पद रहेंगें एवं पूर्वादि क्रम में तीन—तीन पद प्रत्येक देवता का पूजन होगा।

दिति के दक्षिण व शिखिने के नीचे एक पद में (३३) आपाय. (श्वेत १) (३४) मध्येनवपदात् ईशाने—एक पदे— आपवत्साय. (श्वेत १) (३५) मध्येनवपदात्पूर्वे पदत्रये — अर्यम्णे. (कृष्ण ३) (३६) नवपदात् आग्नेयेक पदे — सावित्रे. (रक्त १) (३७) सावित्री वायोर्मध्येक पदे अग्निकोणे — सावित्राय. (श्वेत १) (३८) नवपदात् दक्षिणे पदत्रये — विवस्वते नमः (श्वेत ३) (३९) तत्पश्चिम नैऋत्य कोणेकपद विबुधाय

(रक्त १) (४०) तत् नैऋत्यै — विबुध पितृमध्ये — जयंताय. (श्वेत १) (४१) नवपदात्पश्चिमे — मित्राय. (श्वेत ३) (४२) तदुत्तर वायव्य कोणेक पदे — राजयक्ष्मणे. (रक्त १) (४३) तत्वायवे — राजयक्ष्मणे — रोगात् मध्ये —रुद्राय. (रक्त १) (४४) नवपदातुत्तरे पदत्रये पृथिवीधराय नमः (रक्त ३) (४५) मध्ये नवपदेषु — ब्रह्मणे नमः (श्वेत ३ पीत ६)।।

इन देवताओं के आवाहन पर वास्तु का अंग पूर्ण बन चुका है अतः यज्ञादि में "मयुख ग्रंथों" में इसके बाद का ५ ऋचाओं से पूजन, आवाहन, हवन करें फिर शिव पुत्र होने के कारण अघोर मंत्र से हवन का विधान लिखा है चरक्यादि का इसके बाद में पूजा हवन होता है। (प्रतिष्ठा मयूख)

साधारणतया ब्रह्मा के बाद के सभी देवताओं की पूजा एक साथ ही करातें है और बाद में वास्तु मूर्ति की पूजा कराते है।

मैं हवनोक्त पद्धति के आधार पर वास्तु मूर्ति पूजा कलश स्थापन विधान करना यही उचित समझता हूँ। आचार्य अपनी सुविधानुसार करें या जो उचित समझें वही करें।

कलश में वरुण देवता का आवाहन करें जल से भरें और उसमें सर्वोषधि, सप्तमातृका, पंचपल्लव, पंचकषाय छोड़ देवें उस पर पूर्णपात्र स्थापित करें एवं वास्तु पुरुष की मूर्ति को अग्न्युत्तारण एवं प्राण प्रतिष्ठा (पृष्ठ ५२५) करके स्थापित करें इसके बाद पुष्पाक्षत लेकर निम्न ऋचाओं से आवाहन करें —

१. ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान त्स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

२. ॐ वास्तोष्पते प्रतरणो न एधिगयस्फानो गोभि रश्वेभिरिंदोः अजरासस्ते सख्ये स्याम् पितेव पुत्रान् प्रतितन्नो जुषस्व। शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

३. ॐ वास्तोष्पते शग्मया सर्ठ सदाते सक्षीम हिरण्यमया गातु मत्या याहिक्षेम उतयोगे वरन्नो यू यं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

४. ॐ अमी वहा वास्तोष्पते विश्वरूपाण्या विशन् सखा सुशेव एधिः नः।।

५. ॐ वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां सत्रं सौम्यानां द्रप्सोभेत्ता पुरां शाश्वती

ना मिक्षे मुनीनां सखा।।

ॐ भूर्भुव: स्व: भो वास्तु पुरुष इहागच्छेह तिष्ठ।।

शिव पुत्र होने के कारण शिव का ध्यान करें –

ॐ अघोरेभ्यो ऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य: ।
सर्वेभ्य सर्व शर्वभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्य: ।।

श्वेत परिधौ (६) ईशान्याम् (धूम्रवर्ण पुंजेषु) चरक्यै.। (४७) आग्नेय्याम् (रक्त पुंजेषु) विदार्यै (४८) नैऋत्यां (पीत पुंजेषु) पूतनायै। (४९) वायव्याम् (कृष्ण पुंजेषु) पापराक्षस्यै.। (५०) पूर्वे (रक्त पुंजेषु) स्कंदाय.। (५१) दक्षिणे (कृष्ण पुंजेषु) अर्यम्णे.। (५२) पश्चिमे (रक्त पुंजेषु) जृम्भकाय.। (५३) उत्तरे (पीत पुंजेषु) पिलिपिच्छाय.।

मण्डलाद्वहि द्वितीय रक्त परिधौ – (५४) पूर्वे इन्द्राय: (५५) आग्नेयाम्—अग्नेये. (५६) दक्षिणे—यमाय (५७) नैऋत्याम्—निर्ऋत्ये. (५८) पश्चिमे—वरुणाय. (५९) वायव्यां—वायवे (६०) उत्तरे—कुबेराय. (६१) ईशान्याम्—ईश्वराय. (६२) पूर्वशानयोर्मध्ये—ब्रह्मणे (६३) निर्ऋतिपश्चिमयो र्मध्ये—अनंताय.

(६४) पूर्वेइन्द्रादुत्तरत: (शुक्ल पुंजेषु) उग्रसेनाय: (६५) दक्षिणे यमादुत्तरत: (कृष्ण पुंजेषु) डामराय. (६६) पश्चिमे वरुणादुत्तरत: (कृष्ण पुंजेषु) महाकालाय. (६७) उत्तरे सोमादुत्तरत (पीत पुंजेषु) पिलिपिच्छाय.।

मण्डलाद्वहि तृतीय कृष्ण परिधौ – (पूर्वादि क्रमेण) (६८) पूर्वे कृष्ण पुंजेषु—हेतुकाय. (६९) अग्निकोण कृष्ण पुंजेषु—त्रिपुरान्तकाय (७०) दक्षिणे कृष्ण पुंजेषु—अग्नि वैतालय. (७१) नैऋत्य कोणे (पीत पुंजेषु)—असिवैतालाय. (७२) पश्चिमे (कृष्ण वर्णे) —कालाय. (७३) वायव्ये (रक्त वर्णे)—करालाय. (७४) उत्तरे (पीतवर्णे)—एकपादाय. (७५) ईशान्याम् (रक्त वर्णे)—भीमरूपाय (७६) पूर्वईशानमध्ये (पीत वर्ण) रवेचराय. (७७) नैऋत्य वरुणमध्ये (पीत वर्ण)—तलवासिने नम:।

गंधाक्षत पुष्प हाथ में लेकर ऋचायें पढ़ें – ॐ वास्तोस्पते

प्रतिजानीह्यमान्स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।१ ।।ॐ अमीवहा वास्ताष्पते विश्वरूपाण्या विशन् सखा सुशेवऽएधिनः।

ॐ वास्तवे नमः ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वेवास्तुमण्डलदेवता इहागच्छन्तु इहतिष्ठन्तु। सर्वेषां देवानां षोडशोपचारै प्रपूजयेत। बलिम् दद्यात्।

वैसे तो सब देवताओं के अलग—अलग बलिद्रव्य है परन्तु सामुहिक रूप से दधिमाष, चर्वण(नमकीन), पय, मिष्ठान्न व सुवर्ण की बलि प्रदान करें। गंधाक्षत करें।

भो वास्तुमंडल देवताया दिशं रक्ष बलिं भक्षय मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुकर्तारः क्षेमकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदाः भवत।।

क्षमा प्रार्थना – वास्तुदेव नमस्तेऽस्तु भूशय्याभिरत प्रभो। मद्गृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा।। ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तु पुरुष महाबल पराक्रम सर्वदेवाश्रित शरीर। ब्रह्मपुत्र सकलब्रह्माण्डधारक संकटेभ्यो मां रक्ष रक्ष।।

(दुर्ग देवालय शल्योद्धार में विशेषकर ६४ पद के वास्तु का पूजन करना चाहिये कहीं—कहीं पर दुर्ग हेतु १०० पद वास्तु का पूजन उल्लेख है)

वास्तु खनने विशेष :— वास्तु—खनन, मूर्ति प्रतिष्ठा समय वास्तु को अधोमुख करके अग्निकोण या ईशान कोण मे स्थापित करें पूजन के लिये मंडल नैऋत्य में होता है।

।। इति ८१ पद वास्तु पूजनम्।।

अथ चतुषष्टिपद वास्तुमण्डल देवतास्थापनम्

गृह प्रतिष्ठा में ८१ पद, जीर्ण गृह में ४९ पद, देवप्रतिष्ठा में ६४ पद, दुर्ग व विशाल भवन में १०० पद एवं विशेषकर दुर्ग कार्यों में १२१, १४४, १६९, १७६, २२५, २५६, २८९, ३२४, ३६१, ४००, ४४१ एवं इस तरह वृद्धि क्रम से १००० कोष्ठक पद के वास्तु मंडल का विधान लिखा है जो देखने में कम ही

आता है। एवं विधान अनुपलब्ध सा है। अधिकतर प्रयोगों में ६४ पद देवकार्यों में, गृहकार्य में ८१ पद का विधान सर्वत्रोपयोगी है एवं प्रचलित है। कूप जलाशय व बगीचे की प्रतिष्ठा में १६९ पद वास्तु का उल्लेख भी है।

अथ शंकु पूजनम्

वास्तु मंडल के चारों ओर कोणें में शंकु रोपे पूजा करें एवे बलि देवें। उनको त्रिसूत्रीकरण से २ बार वेष्टन करें। (द्विगुणीतकृत सूत्रेण वेष्टनं भी लिखा है।)

विशन्तु भूतले नागा लोकपालश्च सर्वत: ।
अस्मिन्(प्रासादे) गृहेऽवतिष्ठन्तामायुर्बलकरा: सदा ॥

अग्निकोण शंकु समीपे बलिं संस्थाप्य -

ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिता ।
बलिंतेभ्य: प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तम् ॥

नैर्ऋत्यकोण शंकु समीपे बलि संस्थाप्य -

ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां ये च राक्षसा: ।
बलिंतेभ्य: प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तम् ॥

वायव्यकोण शंकु समीपे बलिं संस्थाप्य -

ॐ नमो वै वायु रक्षोभ्यो ये चान्ये तान्समाश्रिता: ।
बलिंतेभ्य: प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तम् ॥

ऐशानकोण शंकु समीपे बलिं संस्थाप्य -

ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो ये चान्ये तान्समश्रिता: ।
बलिं तेभ्य प्रयच्छामि गृह्णन्तु सततोत्सुका: ।

शंकु देवताभ्यो नम: बलिं समर्पयामि ।

अथ रेखाकरणं पूजनंच -

पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर – ॐ लक्ष्म्यै नम:। यशोवत्यै., कान्तायै., सुप्रियायै., विमलायै., शिवायै., सुभगायै., सुमत्यै. इडायै।

दक्षिण दिशा से उत्तर की ओर – धन्यायै., प्राणायै., विशालायै, स्थिरायै., भद्रायै., जयायै., निशायै., विरजायै., विभवायै नम:।

ॐ रेखा देवताभ्यो नम:, पञ्चोपचारै: पूजयेत्।

ततो वास्तुमण्डलदेवतास्थापनं प्रतिष्ठा च पूजनं कुर्यात्

आवाहन की सरलता के लिये यहाँ ८१ कोष्ठक वास्तु से इस वास्तु पूजा में क्रम संख्या में ३३ से ४५ तक भिन्नता कर दी गई है।

सभी देवताओं का चतुर्थी लगाकर आवाहन तथा प्रथमा से स्थापना करें।

ईशान से अग्निकोण तक १ से ८ —

।।१।। ऐशानकोणदक्षिणार्ध पदे — ॐ शिखिने नमः शिखिनम् आ. स्था. (रक्त $\frac{1}{2}$) **।।२।। तद्दक्षिणे सार्धपदे–पर्जन्याय नमः पर्जन्य आ. स्था.** (पीत १$\frac{1}{2}$) **।।३।। तद्दक्षिण पदद्वये– जयन्ताय** (श्वेत २)**।।४।। तद्दक्षिण पदद्वये कुलिशायुधाय.** (पीत२)**।।५।। तद्दक्षिणे पदद्वये– सूर्याय.** (रक्त २) **।।६।। तद्दक्षिण पदद्वये–सत्याय.** (श्वेत २) **।।७।। तद्दक्षिणे सार्धपदे–भृशाय.** (कृष्ण १$\frac{1}{2}$) **।।८।। तद्दक्षिणाग्नेय पदार्धे –आकाशाय.** (कृष्ण $\frac{1}{2}$) **(अग्नि कोण से नैर्ऋत्य कोण तक ९ से १६) ।।९।। तत्पश्चिमार्द्धे–वायवे** (धूम्र $\frac{1}{2}$)**।।१० तत्पश्चिमे सार्धपदे पूष्णे.** (रक्त १$\frac{1}{2}$)**।।११।। तत्पश्चिमे पदद्वये दक्षिणपार्श्वे–वितथाय.** (श्वेत २)**।।१२।। तत्पश्चिमे पदद्वये दक्षिण पार्श्वे–गृहताक्ष.** (पीत२)**।।१३।। तत्पश्चिमे पदद्वये दक्षिणोरुभागे–यमाय.** (कृष्ण २)**।।१४।। तत्पश्चिम पदद्वये–गंधर्वाय.** (रक्त २)**।।१५।। तत्पश्चिम सार्द्धपदे–भृङ्गराजाय.** (कृष्ण १$\frac{1}{2}$) **।।१६।। पश्चिमे. नैर्ऋत्यपदार्द्धे–मृगाय.**(पीत $\frac{1}{2}$)। (नैर्ऋत्य से वायव्य तक १७ से २४)**।।१७।। तदुत्तरार्द्धपदे –पितृभ्यो** (रक्त $\frac{1}{2}$) **।।१८।। तदुत्तरे सार्द्धपदे–दौवारिकाय. (रक्त १$\frac{1}{2}$) ।।१९।। तदुत्तरेपद्वये–सुग्रीवाय.** (श्वेत २) **।।२०।। तदुत्तरेपद्वये– पुष्पदन्ताय.** (रक्त २) **।।२१।। तदुत्तरपद्वये–वरुणाय.** (श्वेत २) **।।२२।। तदुत्तरेपदद्वये–असुराय.** (पीत २) **।।२३।। तदुत्तरेसार्द्ध पदे–शोषाय.** (कृष्ण १$\frac{1}{2}$)**।।२४।। तदुत्तरे वायव्य पदार्द्धे–पापाय** (पीत $\frac{1}{2}$)।

(वायव्य से ईशान कोण तक २५ से ३२) **।।२५।। तत्प्राक्यार्द्ध पदे–रोगाय.** (रक्त $\frac{1}{2}$)**।।२६।। तत्प्राक्पदार्द्धे–अहये.** (रक्त १$\frac{1}{2}$) **।।२७।। तत्प्राक्पदाये–मुख्याय.** (रक्त २) **।।२८।। तत्प्राक्पद्वये–भल्लाटाय.**

(कृष्ण २) ।।२९।। तत्प्राक्पदद्वये—सोमाय. (श्वेत २) ।।३०।। तत्प्राक्पदद्वये —सर्पाय. (कृष्ण २) ।।३१।। तत्प्राक्सार्द्धपदे—आदित्यै. (पीत १$\frac{1}{2}$) ।।३२।। तत्प्रागर्द्धपदे— दित्यै (रक्त १$\frac{1}{2}$)।।

(मध्य पदों के ईशान, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य कोंणो में)

ईशानेऽर्द्धपदे आपाय. (शुक्ल $\frac{1}{2}$)।। ३४ आग्नेयपदोत्तरार्धे—सावित्राय. (रक्त $\frac{1}{2}$) ।। ३५ नैर्ऋत्यपदोत्तरार्धे—जयाय. (श्वेत $\frac{1}{2}$)।।३६।। वायव्य पदोत्तरार्धे—रुद्राय (रक्त $\frac{1}{2}$)।।

ब्रह्मा के पूर्व से ईशान तक क्रमशः ।।३७।। मध्येप्राक्पद्वये—अर्यम्णे (कृष्ण २) ।।३८।। आग्नेयपद पूर्वार्द्धे—सवित्रे. (रक्त $\frac{1}{2}$) ।।३९। तत्पश्चिमपदद्वये—विवस्वते. (श्वेत २) ।४०।। नैर्ऋत्य पदपूर्वार्द्धे—विबुधाधिपाय. (रक्त $\frac{1}{2}$) ।४१।। तदुत्तर पदद्वये—मित्राय. (श्वेत २) ।४२। तदुत्तरेवायव्य पद पश्चिमार्द्धे—राजयक्ष्मणे. (रक्त $\frac{1}{2}$)।४३। तत्प्राक्पदद्वये—पृथ्वीधराय. (रक्त २) ।४४।। ईशान पददक्षिणार्द्धे —आपवत्साय. (श्वेत $\frac{1}{2}$) ।४५।। ततो मध्येपदचतुष्टये—**ब्रह्मणे नमः ब्रह्मण आ. स्था.** (श्वेत ४)।।

वैसे यहाँ वास्तु का अंग पूर्ण बन गया है अतः वास्तु मंत्र की ५ ऋचाओं व अघोरेभ्यो मंत्र से आवाहन करना चाहीये सम्पूर्ण पूजन क्रम ८१ कोष्ठक में जो लिखा है वह अवलोकन करने से ६४ पद का पूजन भी समझ में आ जायेगा अथवा सभी वास्तु देताओं का आवाहन करके मध्य में कलश पूर्णपात्र श्रीफल [illegible] उस पर वास्तु की मूर्ति की अग्न्युत्तरण कर प्रतिष्ठा (पृष्ठ संख्या ५२५) फिर ऋचायें पढ़ें जो पृष्ठ संख्या १४१ पर है।

शिव पुत्र होने के कारण शिव का ध्यान करें —

ॐ अघोरेभ्यो ऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्य सर्व शर्वभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ।।

श्वेत परिधौ (४६) ईशान्याम् (धुम्र पुंजेषु) **चरेक्यै.। (४७) अग्नियाम्** (रक्त पुंजेषु) **विदार्यै (४८) नैऋत्यां** (पीत पुंजेषु) **पूतनायै.। (४९) वायव्याम्** (कृष्ण पुंजेषु) **पापराक्षस्यै.। (५०) पूर्वे** (रक्त) **स्कंदाय.। (५१) दक्षिणे** (कृष्ण) **अर्यम्णे. (५२) पश्चिमे** (रक्त) **जृम्भकाय. (५३)**

उत्तरे (पीत) पिलिपिच्छाय।

मण्डलाद्बहि द्वितीय रक्त परिधौ — (५४)पूर्वे—इन्द्राय: (५५) आग्नेयाम्—अग्नेये. (५६) दक्षिणे—यमाय (५७) नैऋत्याम्—निर्ऋत्ये. (५८) पश्चिमे—वरुणाय. (५९) वायव्यां—वायवे (६०) उत्तरे—कुबेराय. (६१) ईशानन्यम्—ईश्वराय. (६२) पूर्वेशानयोर्मध्ये—ब्रह्मणे (६३) निर्ऋति पश्चियो र्मध्ये—अनंताय नमः अनंतम् आ. स्था.।

ॐ भूर्भुवः स्वः शिख्यादि वास्तुमण्डल देवताभ्यो नमः ।।
सर्वेषां पूजनं कुर्यात् (बलिं दद्यात्)।।

अथ मंत्रसहितम् वास्तुअंगदेवता आवाहनम्

आपका वास्तु मंडल ६४ या ८१ पद का है उसी के अनुसार रेखा देवताओं का आवाहन व शंकु पूजन करें जैसा कि पूर्व मे नामावली से आवाहन में बताया है।

इसके बाद वास्तु के अंग देवताओ का मंत्र सहित आवाहन ईशान कोण से प्रारंभ करते हुए करे। ६४ व ८१ पद के देवताओं का आवाहन मंत्र एक ही है अंतर केवल पद का है अर्थात पद में $\frac{1}{2}$, १$\frac{1}{2}$। पद एवं ८१ पद में एक पद द्विपद आदि पद भेद है।

नोट :— वास्तु पुरुष को सभी देवताओं नें मिलकर भूमि पर **अधोमुख** गिरा दिया था **और उस समय जिन—जिन देवताओं ने उसके अंगों को खड़े होकर दबाया उसी क्रम में अधोमुख वास्तु पर उनके आवाहन मंत्र है, अतः पूर्ण आवाहन के बाद स्वाभिमुख वास्तु का ध्यान करें।**

तद्यथा — **तत्रेशानकोणादारभ्याधोमुखपातित वास्तु पुरुष शिर स्थाने ईशानकोण पदे। (आवाहन में स्वाभिमुख एवं खनन विषये अधोमुख ध्यान करे)**

(१). कर्पूरधवलं वृषवाहनं शिखिनमेकपम्
आवाहयामि देवेशं शंकरं शिखिरूपिणम् ।।
चतुर्हस्तं त्रिनेत्रं च स्नुक् शूलं दक्षिणे करे ।

डमरुं स्रुवकं वामे स्वाहोमासहितं विभुम् ।।

आगच्छ त्वं शिखिन्देव क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव।। ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च। मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। इत्यावाह्य भोः शिखिन् इहागच्छ।।

शिखी कर्पूरधवल — स्त्रिनेत्रो वृषवाहनः ।
वरत्रिशूलहस्तश्च वास्तोः शिरसि संस्थितः ।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषपतिं धियंजिन्वमवसेहूमहेवयम्।। पूषानोयथा वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुर दब्धः स्वस्तये।। ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिन्निहागच्छ इह तिष्ठ ॐ शिखने नमः।१ ।।

(२). (तद्दक्षिणपदे नेत्रैकपदे पर्जन्यमावाहयेत्)

आवाहयामि पर्जन्यं यादसां मुख्यनायकम् ।
कुंभीरथ — समारूढं पाशहस्तं वरप्रदम् ।।

ॐ शन्नोवातः पवता॰शन्नः स्तपतुसूर्यः।। शन्नःकनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु।। इत्यावाह्य भोः पर्जन्य इहागच्छ इह तिष्ठ।।

नौस्थस्तडित्वान्पर्जन्यो नानावर्ण परिप्लुतः ।
ज्योतिर्भूतां बुवाहात्मा वास्तोर्दक्षे दृशि स्थितः ।।

ॐ महाँइंद्रो वज्रहस्तः षोडशीशर्मयच्छतु।। हंतु पाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि।। उपयाम गृहीतोसि महेंद्रायत्वेषते योनिर्महेंद्रायत्वा।१ ।। ॐ भूर्भुवः स्वः पर्जन्य इह तिष्ठ ॐ पर्जन्याय नमः।।२।।

(३). (तद्दक्षिणे) तदधः पदे च श्रोत्रे द्विपदं जयंतं ध्यात्वा ऽऽवाहयेत्।।

आवाहयामि तं देवं महेन्द्रतनयं प्रभुम् ।
मुद्रिका कंकणैर्युक्तं सर्वाभरण भूषितम् ।
वरदाभयंहस्तं च जयंत पूजयाम्यहम् ।

ॐ मर्म्माणि तेवर्म्मणाच्छादयामि सोमस्त्वाराजामृते नानुवस्ताम्।। उरोर्वरीयो वरुणस्तेकृणोतु जयंतं त्वानुदेवामदंतु।१ ।। ॐ भूर्भुवः स्वः भो जयंत इहागच्छ।।

जटिलः श्मश्रुलः श्रांतः कमंडल्वक्षसूत्रभृत् ।
जयंतोऽब्जासनो गौरो वास्तोर्दक्षश्रवस्थितः ॥

ॐ जीमूतस्येव भवति प्र.॥ इति स्थापनम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः जयंत इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ जयंताय नमः॥३॥

(४). (तद्दक्षिणपदद्वये अंसे कुलिशायुधं ध्यात्वैन्द्रमावाहयेत्।

एहि देव सहस्राक्ष देवारिबलसूदन ।
ऐरावत — समारूढ शचीहृदयनंदन ।
वज्रहस्तं सुराध्यक्षमिंद्रमावाहयाम्यहम् ॥

ॐ आयात्विंद्रोवसउपन दूहस्तुतः सधमादस्तु शूरः॥ वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीद्यौर्नक्षत्रमभिभूतिपुष्यात् भो इद्रं इहागच्छ इह तिष्ठ॥

इन्द्र ऐरावतारूढः पीतो दैत्यविमर्द्दकः ।
कुलिशाक्षकरो वास्तोरंसस्थल समाश्रितः ॥

ॐ इन्द्रश्चसम्राड् वरुणश्चराजातौतेभक्षं चक्रतुरग्रएतम्॥ तयो रहमनु भक्षंयामिवाग्देवी जुषाणा सोमस्यतृप्यतु सहप्राणेन स्वाहा॥ ॐ भूर्भुवःस्वः इंद्र इहागच्छ इह तिष्ठ ॐ इंद्राय नमः॥४॥

(५). (तद्दक्षिण पदद्वये दक्षिणबाहौ सूर्यमावाहयेत्)

आवाहयामि देवेशं भास्करं तिग्मतेजसम् ।
कलिंग काश्यपं रक्तं सप्ताश्वं सप्तरज्जुकम् ॥
द्विभुजं पद्महस्तं च त्रैलोक्य तिमिरापहम् ।
सर्वसौख्यप्रदातारं कर्मसाक्षिणमीश्वरम् ।
आगच्छ भगवन्सूर्य क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ॥

ॐ बण्महाँ२ असिसूर्यबडादित्यमहाँअसि॥ महस्ते सुतोमहिमा पनस्यतेद्धा देवमहाँअसि॥

भोः सूर्य रक्तो ग्रहाध्यक्षो धृताब्जो द्विभुजः प्रभुः ॥
सप्ताश्वरथगो भास्वान्वास्तोर्दक्षांससंस्थितः ॥

ॐ सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविताज्ज्योतिरुदयाऽअजस्त्रम्।। तस्य पूषा प्रसवेयाति विद्वान संपश्यन विश्वाभुवनानि गोपाः। ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इह आगच्छ इहतिष्ठ। सूर्याय नमः।

(६). (तद्दक्षिण पदद्वये दक्षिण प्रवाहौ सत्यमावाहयेत्)

आवाहयामि तं सत्यं पुण्ययुक्तम कल्मषम् ।
पद्महस्तं महाबाहुं वरदं निर्मलं शुभम् ।।
ज्ञानमुद्राधरं देवं चिंतितं ब्रह्मकेवलम् ।
आगच्छ देव सत्य त्वं क्षेत्रेऽस्मिन्सन्निधो भव ।।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।। दक्षिणया श्रद्धामाप्नोतिश्रद्धया सत्यमाप्यते।। भोः सत्य इहागच्छ।।

सत्यो भूतहितो धर्म्मो वरदाभय पाणिकः ।
प्रसन्नाब्जनिभो वास्तवोर्दक्षबाहौ च संस्थितः ।।

ॐ सत्यंचमे श्रद्धाच मे जगच्चमे धनंचमे यज्ञेनचमे यज्ञेनकल्पंताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सत्य इह तिष्ठ ॐ सत्याय नमः।।६।।

(७). (तद्दक्षिण पदद्वये दक्षिण प्रबाहो दक्षिणकूर्परि भृशमावाहयेत्)

आवाहयेऽहं भृशमादिदेवं संचारशीलं भुवनत्रयेऽपि ।
एकेन हस्तेन वरं दधानमभीष्टदानं त्वपरेण तेन ।।

ॐ आत्वाहार्षमंतरेभृध्र्धुवस्तिष्ठाविचाचलिः।। विशस्त्वा सर्व्वावांछतु मात्वद्राष्ट्रमधिब्भ्रशत्।। भो भृश इहागच्छ।।

भृशः पुष्पविमानस्थः सपुष्पेषुधनुः करः ।
गौरो नादरतः कामी यो वास्तोर्दक्षबाहुगः ।।

ॐ भायैदार्वाहारं प्रभाया अग्नेधं ब्रध्नस्यविष्टपायाभिषेक्तारंवषिष्ठाय नाकायपरिवेष्टानरन्देवलोकायपेशितारं मनुष्य लोकाय प्रकारितार७ सर्वेभ्योलोकेभ्यऽउपसेक्तारमवऋत्यैव धायोप मंथितारंमेधाय वासः पल्पूलींप्रकामायरजयित्रीम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः भो भृश इह तिष्ठ ॐ भृशाय नमः।।७।।

(८). (तद्दक्षिणपदे बाहौ आकाशमेकपदमावाहयेत्)

आवाहये तमाकाशं विष्णोः पदमनंतकम् ।
यत्र देवास्तथा यक्षा ग्रहाः सर्वे प्रतिष्ठिताः ।
आगच्छ त्वं महाकाश क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव।।

ॐ यावांकशा मधु मत्यश्विना सूनृतावती।। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यांत्वैषते योनिर्माध्विभ्यांत्वा।। भो आकाश इहागच्छ।।

शंखचक्रधरं देवमसितं स्वस्तिकासनम् ।
सशब्दं सर्वगं व्योम प्रबाहौ चैव संस्थितम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इह तिष्ठ ॐ आकाशाय नमः।।८।।

(९). (तद्दक्षिणपदे आग्नेयकोणे प्रबाहौ वायुमेकपदमावाहयेत्)

आवाहयामि देवेशं भूतानां देहधारिणम् ।
आगच्छ भगवन्वायो क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधोभव ।।

ॐ वायोयेतेसहस्रिणोरथासस्तेभिरागहि।। नियुत्वान्त्सोमपीतये।। भो वायो इहागच्छ।।

वायुर्धन्वी मृगारूढो जगत्प्राणश्चलो युवा ।
अंकुशध्वज बिभ्राणः प्रबाहोर्दण्डसंस्थितः ।।

ॐ वातोवामनोवागधर्वाःसप्तवि७शतिः।। तेऽग्रेश्वमायुंजंस्तेऽअस्मिञ्जव मादधुः ।। ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इह तिष्ठ ॐ वायवे नमः।।९।।

(१०). (मंडलदक्षिणभागे वायुपदाधः पदे मणिबंधे पूषणमेक पदमावाहयेत्)

आवाहयामिदेवेशं पद्महस्तं वरप्रदम् ।
रक्तवस्त्रपरीधानं विद्युद्वर्णे महाबलम् ।
आगच्छ भगवन्पूषन्क्षेत्रेऽस्मिसंनिधोभव ।।

ॐ पूषंतवव्रतेवयंनरिष्येमकदाचन।। स्तोतारस्तइहस्मसि ।। ॐ भूर्भुवः स्वः पूषन्निहागच्छ।।

महास्वन: शोणवर्णो द्विभुजाब्जकमंडलु: ।
पूषा गजासन: शुभ्रो मणिबंध समाश्रित: ।।

ॐ स्वयं भूरसिश्रेष्ठोरश्मिर्वर्चोदाअसिवर्चोव्येदेहि।। सूर्यस्या' वृत्तमन्वावर्ते।। ॐ भू र्भुव: स्व: पूषन्निह तिष्ठ ॐ पूष्णे नम:।।१०।।

(११). (तदध: द्विपदे दक्षिणपार्श्वे वितथतमावाहयेत्)

आवाहयेत्तं वितथं पुराणं द्यावापृथिव्यंतरचारिणं च ।
गृहाण पूजां चणकौदनाख्यां बलिं च गृह्णन्भगवन्नमस्ते।।

ॐ तत्सूर्यस्यदेवत्वंतन्महित्वंमद्ध्याकर्तोर्विततठंसंजभार।। यदेदयुक्त हरित: सधस्थादाद्रात्रीवासस्तनुतेसिमस्मै।। भो वितथ इहागच्छ।।

कृष्णवर्णस्तु वितथ: कलेरप्रतिमासन: ।
मद्यमांसालयो रक्तकरश्चालस्थ पार्श्वग: ।।

ॐ सविताप्रथमेहन्नग्निर्द्धितीये वायुस्तृतीय ऽआदित्यश्चतुर्थे
चंद्रमा: पंचम ऋतु: षष्ठे मरुत: सप्तमेबृहस्पतिरष्टमे ।
मित्रोनवमे वरुणो दशम इंद्र एकादशे विश्वेदेवा द्वादशे।।

ॐ भू र्भुव: स्व: वितथ इह तिष्ठ ॐ वितथाय नम:।।११।।

(१२). (तदध: पदद्वये दक्षिणपार्श्वे गृहक्षतं द्विपद मावाहयेत्)

आवाहयामि त्वां देव गृहक्षत समाख्यक ।
पूजां गृहाण देवेश मम स्वस्तिकरो भव ।।

ॐ अक्षन्नमीमदंतह्यवप्रियाअधूषत।। अस्तोषतस्वभानवो विप्रान विष्ठयामती। योजान्विंद्रतेहरी।। भो गृहक्षत इहागच्छ।।

गृहक्षत: पाटलांगो गदासिवरचर्मभृत् ।।
पंचास्यवाहन: क्रूरो वास्तोर्दक्षकटिस्थित: ।।

ॐ गृहमाविभीतमावेयध्वमृर्जे बिभ्रतएमसि।। ऊर्जेबिभ्रद्व: सुमना: सुमेधा गृहानैमिमनसा मोदमान:।। ॐ भूर्भुव: स्व: भो गृहक्षत इह तिष्ठ ॐ गृहक्षताय नम:।।१२।।

(१३). (तदधः दक्षिणरुभागे द्विपदं यममावाहयेत्)

आवाहयामि देवेशं दक्षिणां दिशमाश्रित् ।
महिषे च समारूढ मंजनाद्रिसमप्रभम् ।।
चित्रगुप्तसहायं तं दंडमुद्गरधारिणम् ।
सप्तर्षिभिः समायुक्तं धर्माधर्म प्रवर्तकम् ।।
लोकसंयमनार्थाय किंकरैः परिवारितम् ।
आगच्छ भगवन्धर्म क्षेत्रेऽस्मिन्सिंनिधो भव ।।

ॐ यमायत्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। भो यमइहागच्छ।।

रक्ताक्षो महिषारूढो दंडपाशधरो यमः ।
कर्मज्ञोऽअञ्जनसंकाशो वास्तोर्दक्षिण संश्रितः ।।

ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसे।। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याःसँ स्पृशस्पाहि।। अचिरसि शोचिरसि तपोसि ॐ भूर्भुवः स्वः भो यम इह तिष्ठ ॐ यमाय नमः।।१३।।

(१४). (तदधः पदद्वये दक्षिणजानुप्रदेशे गंधर्वं द्विपदमावाहयेत्।।)

आवाहयामि गंधर्वं षड्विंशद्रागतत्परम् ।
वीणां गृहीत्वा हस्तेन तद्वादनरतं विभुम् ।।
अप्सरोगण संकीर्णं नानागंधैश्च चर्चितम् ।
गंधर्व त्वमिहागच्छ पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ गंधर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ।। मित्रा वरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽईडितः।। भो गंधर्व इहागच्छ।।

सुष्ठुवेषः शिखीगौरो गंधर्वो ध्यानवच्छुचिः ।
वीणाकमंडलु धरो वास्तोर्दक्षिणजानुगः ।।

ॐ ऋष्ताषाड् ऋतधामाग्निर्गंधर्वस्तस्यौषधयोप्सरसोमुदोनाम।। सन

इदं ब्रह्मक्षत्रंपातु तस्मैस्वाहा वाट्ताभ्य: स्वाहा।। ॐ भूर्भुव: स्व: भो गंधर्व इह तिष्ठ ॐ गंधर्वाय नम:।।१४।।

(१५). (तदध: पदद्वये दक्षिणजंघायां भृंगराजं द्विपद मावाहयेत्)

आवाहयामि तं देवं भृंगराजं महाबलम् ।
षट्पदै: सेव्यमानं च कुसुमामोदसंयुतम् ।
आगच्छालिकुल त्वं हि क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ।।

ॐ सौरी बलाकाशार्गा: सृजय: शयाकस्तेमैत्रा: सरस्वत्यै शारि: पुरुषवाक्श्वाविद्भौमीशार्दूलोकवृक: पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुक: पुरुषवाक्।। भो भृंगराज इहागच्छ।।

सुनीलांगो महाकाय: कुंकुमारुणविग्रह: ।
खड्गखेटधरो वास्तोर्दक्ष जंघासमाश्रित: ।।

ॐ यमायत्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा।। स्वाहा धर्मायस्वाहा धर्म: पित्रे।। ॐ भूर्भुव: स्व: भृंगराज इह तिष्ठ ॐ भृंगराजाय नम:।।१५।।

(१६). (तदध: पदे दक्षिणस्फिचि मृगमेकपदमावाहयेत्)

मृगमावाहयिष्यामि शशांककृत चिन्हकम् ।
कृष्णवर्णं चतुष्पादं श्वेतोदरविषाणकम् ।
आगच्छ भगवनिह क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ।।

ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगोन भीम: कुचरोगिरिष्ठा:।। यस्योरुषुत्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियंति भुवनानि विश्वा।। भो मृग इहागच्छ।।

मृग: कृष्णो भूषितांगो वरदाभयमुद्रिक: ।
वरासनश्चारुनेत्रो वास्तोर्दक्षिण स्फिक्स्थित: ।।

ॐ पुरुषमृगश्चंद्रमसो गोधा कालकादार्वाघाटस्ते वनस्पती नांकृकवाकु: सावित्रोहंस: सोवातस्यनाक्रोमकर: कुलीकयस्ते कूपार स्यैंद्रियैशल्यक:।। ॐ भूर्भुव: स्व: मृग इह तिष्ठ ॐ मृगाय

नमः।।१६।।

(१७). (तदधः पदे नैऋत्यकोणे पादयोः पितृगणमेक पदमावाहयेत्।।)

पितृनावाहयिष्यामि सोमपादीननुक्रमात् ।
पिगाक्षान्कपिल जटान्हस्तेकुशमंडलूकन् ।।
दधानान् सितवस्त्राणि सितयज्ञोपवीतिनः ।
गृहणीयुः कृशरान्नं च पितृन् संपूजयाम्यहम् ।।

ॐ उशं तस्त्वानिधीमह्युशंतः समिधीमहि।। उशन्नुशत आवह पितृन्हविषे अत्तवे।। भो पितरः इहागच्छ।।

कुशपिंड धराः स्वस्थाः पितरः श्यामलांगकाः ।
महोदराः सोमलोकवासिनो वास्तुपादगाः ।।

ॐ पुनंतुमापितरः सोम्यासः पुनंतुमा पितामहाः पुनंतु प्रपितामहाः।। पवित्रेणशतायुषा।। विश्वमायुव्यश्नवै।। ॐ भू र्भुवः स्वः पितरः इह तिष्ठ ॐ पितृभ्यो नमः।।१७।।

(१८). (अथ मंडल पश्चिम भागे निर्ऋतिकोणोत्तर वामस्फिचि प्रदेशे दौवारिकमेक पदमावहयेत्।।)

एह्येहि दौवारिक रक्षणाय द्वाराणि सर्वाणि च मंदिरस्य ।
पैष्टं बलिं वासितदन्तकाष्ठं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

ॐ द्वेविरूपे चरतः स्वर्थेऽअन्यान्यावत्समुपधापयेते।। हरिरन्यस्यांभवति स्वधावान शुक्रो ऽअन्यस्यांदद्दशे सुवर्चाः।। ॐ स्थिरो भव वीड्वंग आशुर्भववाज्यर्वन। पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः।। भो दौवारिक इहागच्छ।।

दौवारिको वेत्रमुद्राधरो भूति विभूषितः ।
मुक्ताभपाकारूढो वास्तोर्वामस्फिचि स्थितः ।।

ॐ द्वारोदेवीरन्वस्य विश्वेव्रतादतेअग्नेः।उरुव्यचसोधाम्नापत्यमानाः।। ॐ भूर्भुवः स्वः दौवारिक इह तिष्ठ ॐ दौवारिकाय नमः।।१८।।

(१९). (तदुत्तरपदोर्ध्वपदे वामजंघायां सुग्रीवं द्विपद्मावाहयेत्।।)

आवाहये तं कपिराजमुख्यं सुग्रीवराजं नभमंडलेऽस्मिन्।
पाषाणवृक्षौ दधतं कराभ्यां गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ नीलग्रीवा: शितिकंठा दिव ठं रुद्राऽउपश्रिता:॥ तेषां ᳚ सहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि॥ भो: सुग्रीव इहागच्छ॥

पद्मासनो हेमवर्ण: सुग्रीवोऽध्वरगात्रभृत ।
द्विभुज: कामदो वास्तोर्वामजंघासमाश्रित: ॥

ॐ सुषुम्ण: सूर्यरश्मिश्चंद्रमा गंधर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयोनाम। सन इदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा वाट्ताभ्य: स्वाहा॥ ॐ भूर्भुव: स्व: सुग्रीव इह तिष्ठ ॐ सुग्रीवाय नम:।१९॥

(२०). (तदुत्तर पदद्वये वामजानुप्रदेशे पुष्पदंतं द्विपदमावाहयेत्॥)

आवाहयामि देवेशं पुष्पदंतं विनायकम् ।
लंबोदरं महाकाय गजवक्रं चतुर्भुजम् ॥
सिद्धिबुद्धि समायुक्तं सर्वविघ्नविनाशनम् ।
पुष्पदंत समागच्छ पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ नमोगणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वोनमो। नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो। नमो विरूपेभ्यो नमो। विश्वरूपे भ्यश्च वो नमो नम:। भो पुष्पदंत इहागच्छ॥

पुष्पदंतोऽभ्रसंकाश: खगपक्षविराजित: ।
महाबलो व्यालहस्त: श्रीवास्तोर्वामजानुग: ॥

ॐ ओषधी: प्रतिमोदध्वंपुष्पवती: प्रसुवरी: अश्वा इव सजित्वरी वीरुध: पारयिष्णव: ॥ ॐ भूर्भुव: स्व: पुष्पदंत इह तिष्ठ ॐ पुष्पदंताय नम:॥२०॥

(२१). (तदुत्तर पदद्वये वामोरौ वरुणं द्विपदमावाहयेत्॥)

आवाहयामि देवेशं वरुणं जलनायकम् ।
कुम्भीरथसमारूढं श्वेताद्रिशिखरोपमम् ॥
पाशहस्तं महाबाहुं यादोगणसमन्वितम् ।

आगच्छ वरुण त्वं हि क्षेत्रेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ इमंमे वरुण श्रुधी हवमद्याचमृडय॥ त्वामवस्युराचके॥ भो वरुण इहागच्छ॥

वरुणो यादसां नाथो नक्रस्थः पाटलांशुकः ।
शंखपाशधरः शुभ्रो वास्तोर्वामोरुसंश्रितः ॥

ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऽऋतसदनमसि वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद॥ ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इह तिष्ठ ॐ वरुणाय नमः॥२१॥

(२२). (तदुत्तर पदे वाम पार्श्वे असुरं द्विपदमावाहयेत्)

असुर त्वं समागच्छ रक्षोगणसमन्वितः ।
शक्तिशूलधरो नित्यं रक्ताक्षश्च महाबलः ।
हिरण्यपाशभृद्देव पूजां स्वीकुरु मे प्रभो ॥

ॐ यमश्विनानमुचेरा सुरादधि सरस्वत्यसुनोदिंद्रियाय॥ इमंत ठं शुक्रंमधुमंत मिंदु ठं सोम ठं राजमिहभक्षयामि॥ भो असुर इहागच्छ॥

असुरो मेचकाभासः करालास्योंगवर्जितः ।
सिंहारूढो वारुणाक्षो वास्तोर्वामकटि स्थितः ॥

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुंच माना असुराः संतः स्वधयाचरंति। परापुरोनिपुरोये भरंत्यग्निष्टॉल्लोका त्प्रणुदात्य स्मात्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः असुर इह तिष्ठ ॐ असुराय नमः॥२२॥

(२३). (तदुत्तर पदद्वये वामपार्श्वे शेषं द्विपदमावाहयेत्)

आवाहयामि देवेशं पातालतलवासिनम् ।
सहस्रशिरसं नागं फणामणिविराजितम् ॥
कर्पूरपूरविशदं नागराजं महाबलं ।
परोपकारनिरतमनतं विष्णुवाहनम् ।
आगच्छ नागराज त्वं क्षेत्रेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

ॐ या इषवो यातुधाना नायेवा वनस्पति ठं रनु।। येवावटेषु शेरतेतेभ्य: सर्पेभ्यो नम:।। ॐ भूर्भुव: स्व: भो: शेष इहागच्छ।।

शेष: कृष्णतनु: शूरो वरशूलेषुचापभृत् ।
गृध्रपक्ष: कृशो दीर्घो वास्तोर्वै वामपार्श्वग: ।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपोभवंतु पीतये।। शंय्योरभिस्त्रवंतुन:।। ॐ भूर्भुव: स्व: शेष इह तिष्ठ ॐ शेषाय नम:।।२३।।

(२४). (तदुत्तरोपरिदाधस्थैक पदे वाममणिबन्धे पापयक्ष्माण मेकपदमावाहयेत्)

आवाहयामि तं पापं नाम्ना यक्ष्मेति विश्रुतम् ।
निर्मांसं निघृणं चैव शक्तिपाणिं महाबलम् ।
आगच्छ भगवन्पाप पूजा मे प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ एतत्ते रुद्रा वसंतेन परोमूजवतोतीहि।। अवतत धन्वा पिनाका वस: कृत्तिवासा अहि ष्ं सन्न: शिवोतीहि।। भो यक्ष्मन्निहागच्छ।।

पापयक्ष्मा धूम्रवर्णो गदावरदमुद्रिक: ।
कपोतवाहनो वामे मणिबंधे समाश्रित: ।।

ॐ बट सूर्यश्रवसामहाँ असिसत्रादेवमहाँअसि।। मह्नादेवानामसूर्य्य: पुरोहितो विभुज्ज्योतिरदाभ्यम्।। ॐ भूर्भुव: स्व: पापयक्ष्मन्निह तिष्ठ ॐ पापयक्ष्मणे नम:।।२४।।

(२५). (तदुत्तरतो वायव्य कोणपदे वामप्रबाहौ रोगमेकपदमावाहयेत्)

आवाहयामि तं रोगं वातादित्रिगुणात्मकम् ।
त्रिपादं त्रिशिरो रक्तनेत्रं भस्मविभूषितम् ।।
लोकनां च सुखं देहि बलिभिर्घृतमोदकै: ।
पूजां गृहाण भो रोग क्षेत्रे ऽस्मिनसंनिधो भव ।।

ॐ द्रापे ऽअंधसस्पते दरिद्र नीललोहित।। आसां प्रजानां मेषांपशूनां माभेर्म्मारोङ्मोचन: किंचनाममत्।। भो रोग इहागच्छ।।

रोग: पापधरो रक्तो दुरात्मा ब्याधिसंगह: ।।

दुष्कर्ममदर्दको वास्तोर्वामदोर्दंड संस्थितः ॥

ॐ यद्देवा देव हेडनं देवा सश्च कृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेवसो विश्वान् मुंचत्व ठं हसः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रोग इह तिष्ठ रोगाय नमः॥२५॥

(२६). (अथ मंडलोत्तरभागे वायव्यकोणपदोर्ध्वपदे वामबाहौ अहिमेकपद मावाहयेत्)

अहिमावाहयिष्यामि त्रैलोक्यांतरचारिणम् ।
शेषवंशे समुद्भूतं चक्षुः कर्णमहीश्वरम् ।
आगच्छ त्वं हि नागेंद्र क्षेत्रेऽस्मिन्सन्निधो भव ॥

अहिरिवभोगैः पर्य्येति बाहुंज्याय हेतिम्परिबाधमानः॥ हस्तघ्नो विश्वाव्वयुनानि विद्वान्पुन्मापुमा ठं संपरिपातुविश्वतः ॥

भो अहे इहागच्छ॥

अहिराजोऽब्जवच्छुभ्रः फणामणि विराजितः ।
अक्षकुंडधरो वास्तोर्वामिबाहौ व संस्थितः ॥

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्योयेके च पृथिवीमनु॥ ये अंतरिक्षे येदिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अहे इह तिष्ठ ॐ अहये नमः॥२६॥

(२७). (तदूर्ध्व पदद्वयेवामकूर्परे मुख्यं द्विपदमावाहयेत्)

आवाहयामि तं शैवं गणानां मुख्य नायकं ।
जटाजूटधरं सौम्यं शूलपट्टिशधारिणम् ।
नमस्ते मुख्य देवेश क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ॥

ॐ अवतत्यधनुष्ट्व ठं सहस्राक्षशतेषुधे॥ निशीर्यशल्यानांमुखा शिवोनः सुमनाभव॥ भो मुख्य इहागच्छ॥

मुख्योऽसौ विश्वकर्मा तु वास्तुकुंभाक्षसूत्रधृक् ।
निपुणस्तुलुलायस्थो वास्तुवामभुजाश्रितः ॥

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः॥ मानोव्वीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मंतः सदमित्वा हवामहे॥ ॐ भूर्भुवः

स्वः मुख्य इह तिष्ठ ॐ मुख्याय नमः।।२७।।

(२८). (तदूर्ध्वपद द्वये वामबाहौ भल्लाटं द्विपदमावाहयेत्)

आवाहयामि देवेशं भल्लाटं शिवरूपिणम् ।
भिल्लवेषधरं कृष्णं धनुर्बाणसिधारिणम् ।।
भिल्लमोहनकर्तारं बर्हिपिच्छैस्त्वलंकृतम् ।
आगच्छ भगवन्देव क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ।।

ॐ इमा रुद्रायतवसे कपर्दिन क्षयद्वीरायप्रभरामहेतीः।। यथाशम सद्विपदे शं चतुष्पदे विश्वंषुष्टंग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।। भो भल्लाट इहागच्छ।।

भल्लाटश्चंद्रसंकाशो वरमुद्रागदाधरः ।
हयपुत्रो वास्तुपुंसो वामदोमूल देशगः ।।

ॐ आप्या यस्वसमेतुते विश्वतः सोमवृष्णयम् ।। भवावाज-स्यसंगथे।। ॐ भूर्भुवः स्वः भल्लाट इह तिष्ठ ॐ भल्लाटाय नमः।।२८।।

(२९). (तदूर्ध्वपद द्वये वामप्रबाहोवेव सोमं द्विपदमावाहयेत्)

आवाहयामि देवेशं शशांक रजनीपतिम् ।
क्षीरोदधिसमुद्भूतं हरमौलिविराजितम् ।।
सुधाकरं द्विजाधारं त्रैलोक्यप्रीतिकारकम् ।
औषधाप्यायनकरं सोमं कंदर्पवर्द्धनम् ।
आगच्छ भगवन्सोम क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ।।

ॐ सोमराजा नमवसेग्निमन्वारभामहे।। आदित्यान्विष्णु ठं सूर्यब्रह्माण च बृहस्पति ठं स्वाहा।। भो सोम इहागच्छ।।

सोमो नरविमानस्थो वरहस्तो गदाधरः ।
गौरो महोदरः श्रीमानवास्तोर्वामांस संस्थितः ।।

ॐ वय ठं सोम व्रते तवमनस्तुनूषूबिभ्रतः।। प्रजावंत सचेमहि ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सोम इहतिष्ठ ॐ सोमाय नमः ।।२९।।

(३०). (तदूर्ध्वपदद्वये वामांसे सर्प द्विपदमावाहयेत्)

आवाहयेच्च तं नागं फणासप्तकसंयुतम् ।
आगच्छोरगराजंस्त्वं क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ।।

ॐ विष्णुर्नुकंवीर्य्याणी प्रवोचंय: पार्थिवानिविममेरजा ठं सियोऽअस्माक भायदुत्तर ठं सुधस्थं विचक्रमाण स्त्रेधोरुगायो विष्णवेत्वा।। भो सर्प इहागच्छ।।

कुंभमालाधरो द्वाभ्यां चतुर्बाहु: फणामणि: ।
सर्पोरक्तभ्रमो वास्तोर्वामोरुस्थलमाश्रित: ।।

ॐ उरु ठं हिराजावरुणश्चकारसूर्य्याय पंथामन्वेतवाऽउ।। अपदेपादा प्रतिधातवेकरुतापवक्तात्द्धदयाव्विधश्चित्।। नमोवरुणायाभिष्टितो वरुणस्यपाश:।। ॐ भूर्भुव: स्व: सर्प इह तिष्ठ ॐ सर्पाय नम:।।३०।।

(३१). (तदूर्ध्वपदद्वये वामश्रोत्रे अदितिं द्विपदामावाहेत्)

आवाहयामि तां देवीमदितिं देवमातरम् ।
द्विभुजां पद्महस्तां च सर्वाभरणभूषिताम् ।।
कश्यपस्य प्रियां भार्यां सुरूपां वामलोचनाम् ।
समागच्छदिते त्वं हि क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधा भव ।।

ॐ इडऽएह्यदितऽएहि काम्याऽएत।। मयिव: कामधरणंभूयात्।। भो अदिते इहागच्छ।।

सूत्रवज्रांकुशाभीती बिभ्राणाख्यानभूषिता ।
अदितिश्चारुगौरांगी वास्तोर्वामिश्रुति स्थिता ।।

ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य: शृणोत्वजऽएकपात्पृथिवी समुद्र: ।
विश्वेदेवाऋतावृधोहुवानास्तुता। मंत्रा: कवि शस्ता अवंतु ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: अदिते इहागच्छ ॐ अदितये नम: ।।३१।।

(३२). (तदूर्ध्वपदे वामनेत्रे दितिमेकपदामावाहयेत्)

दितिमावाहयिष्यामि दैत्यानां चैव मातरम् ।
शुभ्रांगी द्विभुजां चैव शूलपट्टिशधारिणीम् ।

अत्रागच्छ दिते त्वं हि क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधा भव ॥

ॐ अदिति द्यौरदितिरंतरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः।। विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्।। भो दिते इहागच्छ।।

दितिस्तु श्यामला खड्गधारिणी शूलधारिणि ।

वृषासन्ना वास्तुपुंसो वामलोचनसंस्थिता ॥

ॐ हिरण्यरूपा उषसोविरोकउभाविदाउदिथः सूर्यश्च।। आरोहतं वरुण मित्रगर्तंततश्चक्षाथामदितिंदितिं च मित्रासि दिव्वरुणोसि।। ॐ भूर्भुवः स्वः दिते इह तिष्ठ ॐ दितये नमः।।३२।।

नोट :— ३२ से ४५ तक आवाहन क्रम में रंगीन चित्र में क्रमांक में भिन्नता है इसलिये क्रम अवलोकन करके स्थापना करे।

(३३). (ततः शिखिपदाधः स्थित कोणपदे मुखे अप एकदा आवाहेत्)

आप आवाहयिष्यामि सर्वदा वरदाः शिवाः ।

आपस्त्वायांतु सततं पवित्रा मंगला वराः ।

समागच्छंतु आपो वैकुर्वत्वस्मिन् हि संनिधिम् ॥

ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तान ऊर्ज्जेदधातन। महेरणायचक्षसे।। भो आप इहागच्छत।।

आपो नीलाः पीतवस्त्रघनगाः पद्मभूषणाः ।

अक्षाब्जपाशपात्राणि बिभ्रत्यो वास्तुवक्रगाः ॥

ॐ आपोअस्मान्मातरः शुंधयन्तुघृतेननोघृतप्वः पुनंतु।। विश्व ठं हिरिप्रंवहंतिदेवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽएमि।। भो आप इह तिष्ठ ॐ अद्भ्यो नमः।।३३।।

(३४). (आग्नेयपदाधः कोणे पदेदक्षिणहस्ते सावित्रमेक पदमावाहयेत्)

हे सावित्र त्वमागच्छ सर्वध्वांतनिवारक ।

पूजां गृहाण देवेश मया भक्त्या समर्पिताम् ॥

ॐ हस्त आधाय सविताबिभ्रदभ्रि ठं हिरणमयीम्।। अग्नेर्ज्योतिर्निचा

य्यपृथिव्याऽ अद्ध्या भरदानुष्टभेनछंदसांगिरस्वत्।। भो सावित्र इहागच्छ।।

सावित्रो द्विभुजः पद्मगौरः पद्मासनस्थितः ।
वेदपाठरतोनित्यं वास्तोर्दक्षकराश्रितः ।।

ॐ उपयाम गृहीतोसि सावित्रो सिचनोधाश्चनोधाऽअसिचनोमयिधेहि। जिंवयज्ञं जिन्वपतिं भगायदेवीयत्वासवित्रे।। ॐ भूर्भुवः स्वः भो सावित्रे इह तिष्ठ ॐ सावित्राय नमः।।३४।।

(३५). (नैर्ऋति पितृगणोर्ध्वपदे मेढ्रे जयमेक पदतमावाहयेत्)

आवाहयामि तं देवं जयं यष्टिविधारकम् ।
जय त्वं हि समागच्छ क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ।।

ॐ आषाढंयुत्सु पृतनासुपप्रि ७ँ स्वषामप्सां वृजिनस्य गोपाम्।। भरेषुजा ठँ सुक्षिति ठँ सुश्रव संजयं तंत्वामनुमदेम सोम।। भो जय इहागच्छ।।

जयो वज्रधरो देवो महोग्रोऽतुलविक्रमः ।
पीतवर्णो गजारूढो वास्तोर्मेढ्रसमाश्रितः ।।

ॐ गोत्रभिदगोविदं वज्रंबाहुं जयंत मज्मप्रमृणं तमोजसा।। इम ठँ सजाता ऽअनुवीरयध्वमिंद्र ठँ सखायो ऽअनुसठँरभध्वम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः भो जय इह तिष्ठ ॐ जयाय (जयंताय)नमः।।३५।।

(३६). (वायव्य कोण पदे वामहस्ते रुद्रमेकपदमावाहयेत्)

आवाहयामि तं रुद्रं सर्वदा शंकरं विभुम् ।
उमाधिष्ठितवामांगं वरदाभय हस्तकम् ।।
जटागंगाधरं सौम्यं कर्पूराद्रिसमप्रभम् ।
आगच्छ भगवन् रुद्र क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ।।

ॐ अव रुद्र मदीमह्य वदेवं त्र्यंबकम्। यथा नो वस्य सस्करद्यथानः श्रेयसस्करद्यथानोव्यवसाययात्।। भो रुद्र इहागच्छ।।

रुद्रो गोस्थो जटी त्र्यक्षोऽरुग्वराभयसूत्रधृक् ।
शुभ्रः कृत्त्यंबरो वास्तोर्वाम पाणितलाश्रितः ।।

ॐ यातेरुद्र शिवातनूर घोराऽपापकाशिनी।। तयानस्तन्वा शंतमया गिरिशंताभिचाकशीहि।। ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्र इह तिष्ठ ॐ रुद्राय नमः।।३६।।

(३७). (ततो मध्यसंलग्नो परिस्थित पूर्व पदत्रये दक्षिणस्तने अर्यमणं त्रिपदमावाहयेत्)

अर्यमन् कुरु मे भद्रं संज्ञया सह सर्वदा ।
गृहाणेमां मया दत्तां पूजां देव नमोऽस्तु ते ।।

ॐ यदद्य सूर उदितेर नागामित्रोऽअर्य्यमा।। सुवाति सविताभाग:।। भो अर्यमन्निहागच्छ।।

अर्यमाऽर्जुनवर्णस्तु दीप्तिमान् रथवाहनः ।
सुपद्ममाली खट्वांगी वास्तोर्दक्षस्तन स्थितः ।।

ॐ अर्यमणं बृहस्पति मिंद्रंदानायचोदय।। वाचंविष्णु ँ सरस्वती ँ सवितारंचवाजिन ठं स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः अर्य्यमन्निह इह तिष्ठ ॐ अर्यम्णे नमः।।३७।।

(३८). (तद्दक्षिणाग्नेय कोण पदे दक्षिणहस्ते सवितारमेक पदमावाहयेत्)

आवाहये सवितृमंडल मध्यसंस्थं सप्ताश्ववाहनयुतं
धृतपंकजं त्वाम् । केयुर कुंडलविधारक देहि
सौख्यं गृह्णीष्वमेऽर्चनमिदं भगवन्नमस्ते ।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।। यद्भद्रंतन्नआसुव।। भो सवितः इहागच्छ।।

सविता जनिता विश्वं द्विबाहुररुणच्छविः ।
रथगामी पद्मपाणिर्वास्तूदककरांगगः ।।

ॐ सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचात्वष्ट्रारूपै पूष्णा पशुभिरिंद्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाग्निनातेजसा सोमेनराज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसुतः प्रसर्पामि।। ॐ भूर्भुवः स्वः सवितरिह इह तिष्ठ ॐ

सवित्रे नमः।।३८।।

(३९). (तदधो नैऋत्यकोणे पदादुपरि पदत्रये जठरदक्षिणभागे विवस्वंतं त्रिपदमावाहयेत्)

एह्येहि देव त्रिगुणात्मक त्वं हैमं समारुह्य तमो नुदन्वै ।
हस्तद्वये वै धृतचक्रपद्म गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

ॐ विवस्वन्नादित्यैषते सोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व।। श्रदस्मैनरो वच से दधातन यदाशीर्दादंपती वाममश्नुतः।। पुमान्पुत्रो जायते व्विंदतेव्व स्वधा विश्वाहारप ऽएधतेगृहे।। भो विवस्वान्निहागच्छ।।

विवस्वान् द्विभुजः शोणद्युतिश्चंडश्च पंकजी ।
कर्मसाक्षी रथी वास्तोः क्रोडदक्षिणभागगः ।।

ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोवोदेवस्यसानसि।। द्युम्नंचित्रश्रवस्तमम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः विवस्वन्निह तिष्ठ ॐ विवस्वते नमः।।३९।।

(४०). (तदधो नैऋत्यकोणैक पदे मेढ्रे बुधाधिपमेकपदमावाहयेत्)

एह्येहि वास्तौ विबुधाधिप त्वं गजाधिरूढो ममरक्षणाय।
वराप्सरोभिश्च विवीज्यमानो गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते।।
ॐ वसोवोधिसूरिर्म्मघवा वसुपते वसुधावन्यु योधास्म
द्वेषां ठ सि विश्वकर्मणे स्वाहा ।।

भो विबुधाधिप इहागच्छ।।

सहस्राक्षो गजारूढः पीतांगो विबुधाधिपः
वज्रोत्पलकरः श्रीमान्वास्तोर्दक्षस्तनाश्रितः ।।

ॐ इंद्र आसांनेता बृहस्पति र्दक्षिणायज्ञः पुरएतुसोमः।। देवसेना नामभि भंजतीनां जयंतिनां मरुतोयंत्वग्रम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः विबुधाधिप इह तिष्ठ ॐ विबुधाधिपतये नमः।।४०।।

(४१). (तदुत्तरपदत्रये जठरवामभागे मित्रं त्रिपदमावाहयेत्)

मित्र त्वमेह्यहि तमोपशांत्यै रत्नांब्जवज्रध्वज युक्त हस्त।
श्यामोर्ध्वभागेऽर्धसितस्वरूपो यथामनःस्थो भगवन् नमस्ते।।

ॐ मित्रोनऽएहिसुमित्रध ऽइंद्रस्यो रुमाविश दक्षिणमुशन्नुशंत ठं स्योनः स्योनम्।। स्वानभ्राजाङ्घोर बम्भारेहस्त सुहस्त कृशानवेतेवः सोमक्रयणास्तान्रक्षध्वंमावोदभन्।। भो मित्र इहागच्छ।।

हलाब्जध्वज वज्राख्यहस्तो मित्रो हरिस्थितः ।
ऊर्ध्वाधः श्यामगौरो वा वामपाण्यंगुलि स्थितः ।।

ॐ मित्रस्य चर्षणी धृतोवोदेवस्य सानसि।। द्युम्नंचित्र श्रवस्तमम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः मित्र इह तिष्ठ ॐ मित्राय नमः।।४१।।

(४२). (तदुत्तरैक पदे वामहस्ते राजयक्ष्माणमेक पदमावाहयेत्)

आवाहयामि तं देव यक्ष्माणं राजसंज्ञकम् ।
नानाव्याधि समाकीर्णं रोगैश्च परिशोभितम् ।।
वामेन वरदं चैव दक्षिणेनाभयप्रदम् ।
आगच्छ यक्ष्मभगवन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ नाशयित्री बलासस्यार्शसऽउपचितामसि ।। अथोशतस्य यक्ष्माणाम्याकरोरसिनाशनी।। भो राजयक्ष्मन्निहागच्छ।।

वरशक्तिधरो ब्रह्मचर्यवान्बर्हिवाहनः ।
राजयक्ष्मा च नीलांगो वास्तोर्मेंद्रंसमाश्रितः ।।

ॐ इमंदेवाऽअसपत्न ठं सुवद्धंमहतेक्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेंद्रस्येंद्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशएषवोमीराजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ठं राजा।। ॐ भूर्भुवः स्वः राजयक्ष्मन्निह इह तिष्ठ ॐ राजयक्ष्मणे नमः।।४२।।

(४३). (तत्राक्पदत्रये वामहस्ततले पृथ्वीधरं त्रिपदमावाहयेत्)

पृथ्वीधर त्वं मम मंडलेऽस्मिन्नाधारभूतो जगतीतलस्थः।
गृहे सुखं देहि सुखप्रद त्वं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।।

ॐ स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी।। यच्छानः शर्म्मसप्रथाः।। भो पृथ्वीधर इहागच्छ।।

सहस्त्रवदनः श्रीमाञ्छंखचक्राक्ष कुंभभृत् ।

नीलः पृथ्वीधरो वास्तोर्वाम हस्तांगुलिस्थितः ।।

ॐ यदग्रामे यदरण्येयत्सभायां यदिन्द्रिये।। यदेनश्चकृमावयमिदंत दवयजामहे स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वीधर इह तिष्ठ ॐ पृथ्वीध राय नमः।।४३।।

(४४). (तदुपरि एकपदे वक्षः स्थले आपवत्समेकपदमावाहयेत्)

आपवत्स त्वमेह्येहि कूर्मस्कंध वरप्रद ।
पूजां गृहाण देवेश कुंभहस्त नमोऽस्तु ते ।।

ॐ आतेवत्सोमनो यमत्परमाच्चित्सुधस्थात्।। अग्नेत्वां कामयागिरा।। भो आपवत्स इहागच्छ।।

आपवत्सोमहातेजा द्विभुजः सिंहवाहनः ।
वर पाशधरो गौरो वास्तवोर्वक्षसि संस्थितः ।।

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जेदधातन।। महेरणायचक्षसे।। ॐ भूर्भुवः स्वः आपवत्स इह तिष्ठ ॐ आपवत्साय नमः।।४४।।

(४५). (मध्ये नवपदे वास्तोर्र्द्धये ब्रह्माणं नवपदमावाहयेत्)

आवाहयामि देवेशमूर्द्धभागे व्यवस्थितम् ।
हंसयानसमारूढं सूर्यकोटि समप्रभम् ।।
चतुर्मुखं चर्तुबाहुं चर्तुर्वेदसमन्वितम् ।
पुस्तकं चाक्षसूत्रादि दधानं च कमंडलुम् ।
विश्वकर्माख्यनामानं देवतागण पूजितम् ।।

आगच्छ भगवन्ब्रह्मन्क्षेत्रे ऽस्मिन्संनिधो भव।। ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरंधिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरोजायतां निकामेनिकामेनः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योनऽ ओषधयः पच्यंतां योगक्षेमोनः कल्पताम्।। भो ब्रह्मन्निहागच्छ।।

चतुर्मुखोऽरुणो ब्रह्माऽक्ष मालास्त्रुवतोयभृत् ।

लंबोदरोहंसरथः श्मश्रुलो वास्तुत्त्ह त्स्थितः ।।

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः।। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः।। ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निह इह तिष्ठ ॐ ब्रह्मणे नमः।।४५।।

(४६). (ततो मंडलस्य बाह्ये ईशानादिकोणेषु क्रमेण चरकीं १ विदारीं २ पूतनां ३ राक्षसीं ४ पूजयेत्।। तद्यथा अहमावाहयिष्यामि चरकीं नाम राक्षसीम्)

अंकुशं डमरुं शंखे कुंडलं चापि बिभ्रतीम् ।
आगच्छ चरकि त्वं हि पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ यंतेदेवी निर्ऋतिराबबंध पाशंग्रीवास्व विचृत्यम्।। तन्ते व्विष्याम्यायुषोनमद्ध्यादथैतं पितुमद्धिप्रसूतः।। नमोभूत्यैयेदंचकार।। ॐ भू भुर्वः स्वः चरकी इहागच्छेह तिष्ठ ॐ चरक्यै नमः।।१।।

(४७). (आग्नेय्यां विदारीमावाहयेत्)

आवाहयामि तां दैत्यां बिडालीसद्दशाननाम् ।
विशालरोममांसाढ्यां चापबाणधरां वराम् ।
विदारि त्वमिहागच्छ पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ अक्षराजाय कितवंकृताया दिनवदंशत्रितायै कल्पिनंद्वापराया धिकल्पिन मास्कंदाय सभास्थाणु मृत्यवेग्गोव्यच्छमंतकाय गोघा तंक्षुधे योगां विकृंतंतं भिक्षमाण उपतिष्ठति दुष्कृतयाचरकाचार्यं पाप्मनेसैलगम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः विदारि इहागच्छेह तिष्ठ ॐ विदार्य्यै नमः।।२।।

(४७). (ततोनैर्ऋत्यां पूतनामावाहयेत्)

पूतने त्वमिहागच्छ राक्षसीगण संयुते ।
मया निवेदितां पूजां गृहाण वरदा भव ।।

ॐ इंद्रस्य क्रोडोदित्यै पाजस्यन्दिशांजत्रवोदित्यै भसज्जी—मूतान्त्ध्दयौपशेनांतरिक्षम्पुरीतता नभऽउदर्येण चक्रवाकौमतस्नाभ्यां

दिवंवृक्षाभ्यांगिरीन्प्लाशिभि रुपलान्प्लीन्हावल्मीकान्क्लोमभि ग्लौं भिर्गुल्माह्निराभिः स्रवंतीर्ह्रदान्कुक्षिभ्या ७ समुद्रमुदरेणवैश्वानरंभस्मना।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः पूतने इहागच्छेह तिष्ठ पूतनायै नमः।।३।।

(४९). (अथ वायव्ये पापराक्षसीमावाहयेत्)

अहमावाहयिष्यामि राक्षसीं पापपूर्विकाम् ।
रक्ताननां धूम्रवस्त्रां राक्षसीगण संयुताम् ।
राक्षसि त्वमिहागच्छ पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ।।

३ॐ यस्यास्तेघोरआसं जुहोम्येषांबंधानाम व सर्जनाय।। यांत्वाज नोभूमिरिति प्रमंदते निर्ऋतिन्त्वाहम्परिवेदविश्वतः।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः।।४।।

(५०). (पूर्वदक्षिण पश्चिमोत्तरदिक्षु क्रमेण)

स्कंदम् १ अर्यमणं २ जृंभकं ३ पिलिपिच्छम् ४ आवाहयेत्।। तथाहि।। (स्कंद)

आवाहयामि देवेशं षण्मुखं कृत्तिकासुतम् ।।
रुद्रतेजस्समुत्पन्नं देवसेना समन्वितम् ।।
मयूरवाहनं शक्तिपाणिं वै ब्रह्मचारिणम् ।
आगच्छ भगवन्स्कंद क्षेत्रेऽस्मिन्संनिधो भव ।।

३ॐ यत्र बाणाः संपतंतिकुमारा विशिखाइव।। तन्नऽइंद्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतु विश्वाहाशर्मयच्छतु।। । ३ॐ भूर्भुवः स्वः स्कंद इहागच्छेह तिष्ठ ३ॐ स्कंदाय नमः।।१।।

(५१). (दक्षिणे अर्यमणमावाहयेत्)

आवाहयामि देवेशमर्यमणं पितृनायकम् ।
महिषंदिव्यमारूढं दंडपाणिं शुभेक्षणम् ।।१।।
कर्मणां फलदातारं लोकानां कर्मसाक्षिणम् ।
एहि त्वमर्यमन्देव क्षेत्रेऽस्मिसंनिधो भव ।।२।।

३ॐ यदद्यसूर उदितेरनागामित्रोऽअर्यमा सुवति सविताभगः।। ३ॐ

भूर्भुवः स्वः अर्यमन्निह तिष्ठ अर्यम्णे नमः।।२।।

(५१). (पश्चिमे जृंभकमावाहयेत्)

आवाहये तं प्रचुरं च मुख्यं जृंभायमाणं वरखङ्गहस्तम् ।
प्रत्यग्दिशायां च सुरक्षणीयमत्रैव वासं कुरु जृंभक त्वम् ।।

ॐ हिङ्कारायस्वाहा हिङ्कृतायस्वाहा क्रन्दतेस्वाहा वक्रंदाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रपोथाय स्वाहा गंधाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा संदिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा। सीनायस्वाहा शयानायस्वाहा स्वपतेस्वाहा जाग्रतेस्वाहा कूजतेस्वाहा प्रबुद्धायस्वाहा विजृंभमाणायस्वाहा विचृत्तायस्वाहा सठं हानायस्वाहो पस्थितायस्वाहा यनायस्वाहा प्रायणायस्वाहा । ॐ भूर्भुवः स्वः जृंभक इह तिष्ठ ॐ जृभकायः नमः।।३।।

(५३). (उत्तरे पिलिपिच्छमावाहयेत्)

आवाहये तं पिलिपिच्छकं च मयूरपिच्छानि विधारयंतम् ।
वामे तु हस्ते धनुरादधानं बाणं दधानं त्वितरे तु हस्ते ।।

ॐ कास्विदासीत्पूर्व चित्तिः कि ठं स्विदासीद्बृहद्वयः।। कास्विदासीत्पिलिप्पिलाका स्विदासीत्पिशंगिला।। । ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छ इह तिष्ठ ॐ पिलिपिच्छाय नमंः।।४।।

(एवं प्रागादिदिक्षु गणेशं १ दुर्गो २ वायुं २ बीभत्सं ४ यथानुक्रमेण स्थापयेत्।।)

कई पद्धतियों में यह आवाहन नहीं है अतः स्वविवेकानुसार करें।

पूर्वे गणेशाय नमः गणेशं स्थापयामि।।१।। दक्षिणे दुर्गायै नमः दुर्गे स्थापयामि।।२।। पश्चिमे वायवे नमः वायुं स्थापयामि।।३।। उत्तरे बीभत्साय नमः बीभत्सं स्थापयामि।।

(५४—५७). (एवं तथा लोकपालचतुष्टयं स्थापयेत्)

पूर्वे उग्रसेसनाय नमः उग्रसेनंस्थापयामि।।१।। दक्षिणे डामराय

नमः डामरं स्थापयामि।।२।। पश्चिमे महाकालाय नमः महाकालं स्थापयामि।।३।। उत्तरे अश्विभ्यां नमः अश्विनौ स्थापयामि।।४।।

(५८—६५). (पूर्वाद्यष्टदिक्षु)

इन्द्रस्त्वग्निर्यमश्चैव निर्ऋतिर्वरुणस्तथा वायुः सोमश्च रुद्रश्च इत्यष्टौ दिशी देवताः।१।। तद्यथा—

(पूर्वे इन्द्रमावाहयेत्)

चतुर्दंतगजारूढो वज्रपाणिः पुरंदरः ।
दंप्राचीपतिस्तु ध्यातव्यो नानाभरण भूषितः ।।
ॐ त्रातारमिंद्रमवितारमिंद्र ठं हवे हवे सुहवठं शूरमिन्द्रम्
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र ठं स्वस्ति नो मघवा धात्विंद्रः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वे इन्द्रमावाहयामि।। भो इंद्र इहागच्छेह तिष्ठ ॐ इंद्राय नमः।१।।

(अग्निकोणेऽग्निमावाहयेत्)

पिंगलः श्मश्रुकेशाक्षः पिंगक्षो जटिलोऽरुणः ।
छागस्थः साक्षसूत्रश्च सप्तार्चिः शक्तिधारकः ।।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवया सिसीष्ठाः।। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वेद्वेषां ठं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत्।। ॐ भूर्भुवः स्वः अग्निमावाहयामि।। भो अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ ॐ अग्नेय नमः।।२।।

(दक्षिणे यमावाहयेत्)

ईषत्पीतो यमो ध्येयो दंडहस्तो विजानता।१।। ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्यस्यत्वातपसे।। देवस्त्वा सवितामध्वानक्तपृथिव्याः स ठं स्पृशस्पाहि।। अर्चिरसि शोचिरसितपोसि।। ॐ भूर्भुवः स्वः यममावाहयामि।। भो यम इहागच्छेह तिष्ठ ॐ यमाय नमः।।३।।

(अथ नैर्ऋतिमावाहयेत्)

रक्तदृक्पाशधृैक्क्रुद्धो निर्ऋति विंकृताननः ।

पुंस्थित: खड्गहस्तश्च भूतवान् राक्षसप्रिय: ।।

ॐ असुन्वंतम यजमान मिच्छस्तेन स्येत्यामन्विहितस्करस्य।। अन्यमस्मदिच्छसात इत्यानमोदेवि निर्ऋतेतुभ्यमस्तु।। ॐ भूर्भुव: स्व: निर्ऋतिमावाहयामि।। भो निर्ऋते इहागच्छेह तिष्ठ ॐ निर्ऋत्ये नम:।।४।।

(अथ पश्चिमे वरुणमावाहयेत्)

वरुण: पाशभृत्सौम्य: प्रतीच्यां मकराश्रित: ।
अवाहयामि वरुणं क्षेत्रेऽस्मिन्सन्निधो भव ।।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वंदमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भि:।। अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुश ठं समानऽआयु: प्रमोषी:।। ॐ भूर्भुव: स्व: वरुणमावाहयामि।। भो वरुण इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वरुणाय नम:।।५।।

(अथ वायव्वे वायुमावाहयेत्)

धावन्हरिणपृष्ठस्थो ध्वजधारी समीरण: ।
वरदानकरो धूम्रवर्ण: कार्यो विजानता ।।

ॐ आनोनियुद्भि: शतिनीभिरध्वर ठं सहस्त्रिणी भिरुपयाहियज्ञम्।। वायोऽअस्मिन्सवनेमादय स्व यूय यातस्वस्तिभि: सदान:।। ॐ भू भुव: स्व: वायो मावाहयामि।। भो वायो इहागच्छेह तिष्ठ ॐ वायवे नम:।।६।।

(उत्तरे कुबेरमावाहयेत्)

दशाश्वरथग: सोमो गदाधारी नृरूपधृक् ।
उदीचीदिक्संप्रविष्ट: कुबेर: पातु सर्वदा ।।

ॐ वय ठं सोमव्रते तवमनस्तनूषुबिभ्रत:।। प्रजावंत: सचेमही।। ॐ भूर्भुव: स्व: कुबेरमावाहयामि स्थापयामि ॐ कुबेराय नम:।।७।।

(ईशाने ईशानमावहयेत्)

ईशान: पंचवक्त्रश्च खट्वांगी चंद्रशेखर: ।

भक्ताभयप्रदो देवः पूजां गृह्णातु मत्कृताम् ॥

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्वमवसेहूमहेवयम्॥ पूषा नोयथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानमावाहयामि स्थापयामि ॐ ईशानाय नमः॥८॥

ततो रुद्रं १ भूमिं २ चावाहयेत्॥

(६६). (तत्रेशानपूर्वेयोर्मध्ये रुद्रेमावाहयेत्)

पंचवक्रं दशभुजं त्रिनेत्रं स्मितसुन्दरम् ।
कर्पूरगौरं चंद्रार्धशेखरं सुविभूषितम् ॥
नीलग्रीवमनाहारं व्याघ्रचर्मां बरावृतम् ।
कमंडल्वक्षसूत्रादि पाश शूलधरं हरम् ।
उद्दंड दंड डमरुं खट्वांगाभयपात्रकम् ॥

ॐ अस्मेरुद्रामेहना पर्वतासोवृत्रहत्येभरहूतौ सजोषाः॥ यःश ठ व्रतेस्तुवते धायिपज्रऽइंद्रज्येष्ठाऽअस्माँअवंतुदेवाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि ॐ रुद्राय नमः॥९॥

(६७). (निर्ऋतिपश्चिमयोर्मध्ये भूमिमावाहयेत्)

ससुवर्णा मही प्रोक्ता सर्वाभरण भूषिता ।
चतुर्भुजा सौम्य वपुश्चंद्रांश सद्दशाबरा ॥
रक्तपात्रं सस्यपात्रं पात्रमौषधि संयुतम् ।
पद्माकरां भूमिदेवीमिह चावाहयाम्यहम् ॥

ॐ स्योना पृथिवि नोभवानृक्षरा निवेशनी॥ यच्छानः शर्मसप्रथाः॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भूमिमावाहयामि स्थापयामि ॐ भूम्यै नमः॥

मण्डलाद्वहि कृष्णपरिधौ पूर्वादि क्रमेण — (६८) हेतुकाय नमः (६९) त्रिपुरान्तकाय नमः (७०) अग्निवैतालाय नमः (७१) असिवैतालाय. (७२) कालाय. (७३) करालाय. (७४) एकपादाय. (७५) भीमरूपाय., (७६) पूर्वईशानमध्ये — खेचराय.। (७७) नैर्ऋत्य वरुणमध्ये — तलवासिने नमः।

अत्र: ब्रह्मादिपंचचत्वारिशत्सुरान्प्रत्येकत्र वा कांडानुसमयेन पदार्थानुसमयेन वा षोडशोपचारै: पंचोपचारैर्वा प्रणवादिनमोतेन स्वस्वनाममंत्रेण पूजयेत्।।

वास्तुमूर्ति अग्न्युतारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठा कुर्यात्

इति पीठ देवता: संपूज्य आवाह्य अनंतरं वास्तुमंडल मध्येगृहस्योत्तरे वा यथाविधि घटं पीठं वा संस्थाप्य प्रधानवास्तुपुरुषं पूजयेत्।। इत्यादीन् देवान् सकलोपचारै: पृथक् पूजयेत्तंत्रेण वा।। इह स्थापितदेवताभ्य इमानि गंधाक्षत पुष्पधूप दीपाच्छादनानी प्रत्येकं पात्रस्थित नैवेद्यमेकत्र वा नैवेद्यमुदक फल तांबूलादीनुपचारान् सर्मपयामि नमः।। यथा यथाविभागं पूजनम्।। इत्यङ्गदेवता: संपूज्य तदनंतरं मंडलमध्ये एवं मंडूकादिदेवेभ्यो नममः।। तत्रादौ वास्तुमूर्ति ताम्रपात्रे संस्थाप्य अग्न्युत्तारणं कुर्यात्।। आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ३ॐ तत्सदिति अस्यां मूर्तौ अवघातादिदोषपरिहारार्थग्न्युत्तारणं देवतासांनिध्यार्थे प्राणप्रतिष्ठां च करिष्ये।। समुद्रस्यत्वेत्सष्टाभिर्ऋग्भि: प्रथमावृत्तौ दुग्धधारां द्वितीयावृत्तौ जलधारां च प्रतिमायां पात्रस्थितायां दद्यात्।।

तत्र मंत्रा:— ३ॐ समुद्रस्यत्वावकयाग्नेपरिव्ययामसि।। पावको अस्मभ्य ठं शिवोभव।१।। हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि।। पावको अस्मभ्य ठं शिवोभव।।२।। उपज्मन्नु पवेत सेवतरनदीष्वा।। अग्नेपित्तमपाम — सिमंडूकिताभिरागहिसेमन्नो यज्ञंपावक वर्णठं शिवंकृधि।।३।। अपामिदन्न्ययन ठं समुद्रस्य निवेशनम्। अन्यास्ते अस्मत्तपंतुहेतय: पावकोअस्मभ्य ठं शिवो भव।।४।। अग्नेपावक रोचिषामंद्रयादेव जिह्वया। आदेवान्वक्षियक्षि च।।५।। सन: पावक दीदिवोऽग्नेदेवाँ।। इहावह।। उपयज्ञ ठं हविश्चन:।।६।। पावक यायश्चित यंत्या कृपाक्षामन्नुरुच ऽउषसोनभानुना।। तूर्वन्नयामन्नेतशस्य

नूरणऽआयोघृणेन ततृषाणोऽ अजरः।।७।। नमस्ते हरसेशोचिषेनमस्ते अस्त्वर्चिषे।। अन्याँस्ते अस्मत्तपंतुहेतयः पावको अस्मभ्य ठ शिवोभव।।८।। इति पात्रस्थवास्तु प्रतिमोपरि अनेनाग्निसूक्तेन समग्रेण दुग्धधारां दद्यात्।। द्वितीयावृत्तिसूक्तं पठंजलधारां दद्यात्।। इति रीत्याऽग्न्युत्तरणं कुर्यात्।। ततः शुद्धजलेन प्रक्षाल्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।।

पश्चात् षोडशोपचार से पूजा करे।

अथ चतुष्षष्टि योगिनी स्थापनम्

साधारण क्रम में अगर मंडल नहीं बनाये तो मातृका मंडल पर प्रत्येक कोष्ठक में चार चार का आवाहन करें।

अलग मंडल बनायें तो ६४ खानो का मंडप वस्त्र पर वायव्य कोण में मंडल बनावें। कई पद्धितियों में नैऋत्य से अग्निकोण यानेः पश्चिम से पूर्व के ओर क्रमशः कोष्ठक में स्थापित करने की लिखी है परन्तु तंत्र के अनुसार प्रत्येक योगिनी दिशा के द्दष्टिकोण से सही नहीं बैठता है अतः रक्त वस्त्र पर पहले नव कोष्ठक वनायें, मध्य कोष्ठक में योनि बनायें।

मध्य कोष्ठक के बाहर सब अष्ट कोष्ठो में अष्टदल बनायें एवं पूर्वादि क्रम से हर कोष्ठक में अष्टयोगिनियों की स्थापना करें।

वैसे तो वास्तु योगिनी क्षेत्रपाल आदि के प्रत्येक देवताओं के चारों वेदों के चार—चार मंत्र है पहले केवल नाम मात्र से आवाहन फिर वेदमंत्र से आवाहन पूजा क्रम दिया गया है। आवाहन चतुर्थी से व स्थापना प्रथमा से करें।

मध्यकोष्ठे कलश पूर्णपात्रोपरि योनिमध्ये -

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः महाकाल्यै नमः महाकाली आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः आ. स्था.। ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै नमः आ. स्था.।।

पूर्वे अष्टदलेषु -

।।१।। गजाननायै. ।।२।। सिंहमुख्यै. ।।३।। गृध्रास्यायै. ।।४।।

काकतुण्डै. ।।५।। उष्ट्रग्रीवायै. ।।६।। हयग्रीवायै. ।।७।। वाराह्यै. ।।८।। शरभाननायै।

आग्नेयां अष्टदलेषु -

।।९।। उलूकिकायै. ।।१०।। शिवारावायै. ।।११।। मयूर्यै. ।।१२।। विकटाननायै. ।।१३।। अष्टवक्रायै. ।।१४।। कोटराक्ष्यै. ।।१५।। कुब्जायै. ।।१६।। विकटलोचनायै।। आ. स्था.।

दक्षिणस्याम् अष्टदलेषु -

।।१७।। शुष्कोदर्यै. ।।१८।। ललज्जिह्वायै. ।।१९।। अश्वदंष्ट्रायै. ।।२०।। वानराननायै. ।।२१। रुक्षाक्ष्यै. ।।२२।। केकराक्ष्यै. ।।२३।। बृहत्तुण्डायै. ।।२४।। सुराप्रियायै. ।। आ. स्था.।।

नैर्ऋत्यां अष्टदलेषु -

।।२५।। कपालहस्तायै. ।।२६।। रक्ताक्ष्यै. ।।२७।। शुक्यै. ।।२८।। श्वेन्यै. ।।२९। कपोतिकायै. ।।३०।। पाशहस्तायै. ।।३१।। दण्डहस्तायै. ।।३२।। प्रचण्डायै. ।। आ. स्था.।।

पश्चिम्यां अष्टदलेषु -

।।३३।। चण्डविक्रमायै. ।।३४।। शिशुघ्न्यै. ।।३५।। पापहन्त्र्यै. ।।३६। काल्यै. ।।३७।। रुधिरपायिन्यै. ।।३८।। वसाधयायै. ।।३९।। गर्भभक्षायै. ।।४०।। शवहस्तायै. ।। आ. स्था.।।

वायव्यां अष्टदलेषु -

।।४१।। आमन्त्रमालिन्यै. ।।४२।। स्थूलकेश्यै. ।।४३।। बृहत्कुक्ष्यै. ।।४४।। सर्पास्यायै. ।।४५।। प्रेतवाहनायै. ।।४६।। दन्दशूककरायै. ।।४७।। क्रोञ्च्यै. ।।४८। मृगशीर्षायै. ।। आ. स्था.।।

उत्तरे अष्टदलेषु -

।।४९।। वृषाननायै. ।।५०।। व्यात्तास्यायै. ।।५१।। धूमनि:श्वासायै. ।।५२। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे. ।।५३।। तापिन्यै. ।।५४।। शोषणीदृष्ट्यै. ।।५५।। कौटर्यै. ।।५६।। स्थूलनासिकायै. ।। आ. स्था.।।

ईशाने अष्टदलेषु -

।।५७ विद्युत्प्रभायै. ।।५८।। बलाकास्यायै. ।।५९।। मार्जायै. ।।६०।।

कटपूतनायै. ।।६१।। अट्टाट्टहासायै. ।६२।। कामाक्ष्यै. ।।६३। मृगाक्ष्यै. ।।६४।। मृगलोचनायै. ।। आ. स्था.।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ह्रीं सर्वार्थ सिद्धिदात्रि योगिन्यै नमः गजनानादि चतुःषष्टि योगिनी सहिताय इहेगच्छेह तिष्ठ।

ततो सर्वेषां गंधादिना संपूजयेत्।। बलिं दद्यात्।।

अथ मंत्रसहितेन् योगिन्या ऽऽवाहनम्

योगिनी मंडल पर मंत्र सहित आवाहन करना हो तोमध्य में महाकाली, महालक्ष्मी का आवाहन करें। तत्पश्चात् पूर्वादिक्रम के आठ कोष्ठकों के अष्टदलों अष्ट–अष्ट योगिनीयों का आवाहन करे। चतुर्थी से आवाहन तथा प्रथमा से स्थापन करें।

मध्य कोष्ठे कलशोपरि योनि मध्ये -

ॐ खड्गं चक्र.....मंत्रेण। ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः महाकाली आवाहयामि स्थापयामि।। ॐ अक्षस्रक् परशु.....। ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मी आ. स्था.। ॐ घंटाशूल हलानि.....। ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वतै नमः महासरस्वती आ. स्था.।।३।।

पूर्वे अष्टदलेषुः-

तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पति धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये।। ॐ भूर्भुवः स्वः गजाननायै नमः आ. स्था.।।१।। आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइष व्योति व्याधि महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहमुख्यै नमः आ. स्था.।।२।। ॐ महाँऽइंद्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे। उपयाम गृहीतोऽसि महेन्द्रायत्वेषते यानिर्महेन्द्राय त्वा।। ॐ भूर्भुवः स्वः गृधास्यायै नमः आ. स्था.।।३।। सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानाम भवत्पुरोगाः। अस्य होतुः प्रदिश्यतस्य वाचिस्वाहा

कृत ँ हविरदन्तु देवा:।। ॐ भूर्भुव: स्व: काकतुण्डै नम: आ. स्था. ।।४।।

ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्धि हरसा माभिम ठं स्था: शतायुषं कृणुहि चीयमान:।। ॐ भूर्भुव: स्व: उष्ट्रगीवायै नम: आ. स्था. ।। ॐ स्वर्ण घर्म: स्वाहा स्वर्णार्क: स्वाहा स्वर्ण शुक्र: स्वाहा स्वर्ण ज्योति: स्वाहा स्चर्ण सूर्य: स्वाहा।। ॐ भूर्भुव: स्व: हयग्रीवायै नम: आ. स्था.।।६।। ॐ सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च म महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुव: स्व: वराह्यै नम: आ. स्था.।।७।। ॐ भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितार ठं सर्वेभ्यो लोकेभ्य: उपसेक्तारम व ऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वास: पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्।। ॐ भूर्भुव: स्व: शरभाननायै नम: आ. स्था.।।८।।

आग्नेयां अष्टदलेषु

ॐ जिह्वा मे भद्रं वाङ्महोमनोमन्यु: स्वराड् भाम:। मोदा: प्रमोदा अंगुलीरङ्गानि मित्रं मे सह:।। ॐ भूर्भुव: स्व: उलूकिकायै नम: आ. स्था.।।९।। ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा वक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रपोथाय स्वाहा गंधाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा स ठं हानाय स्वाहो पस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणायस्वाहा।। ॐ भूर्भुव: स्व: शिवारावायै नम: आ.स्था. ।।१०।। अग्निश्च मे घर्मश्च मे ऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्वमेघश्च मे पृथिवी च मे ऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे ऽङ्गुलय: शक्यरयो दिशश्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुव: स्व: मयूर्यै नम:। आ. स्था.।।११।। ॐ पूषन तवव्रतेवयं न

रिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त ऽइहस्मसि।। ॐ भूर्भुवः स्वः विकटाननायै नमः। आ. स्था.।१२।।

ॐ वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना।। ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवक्रायै नमः। आ. स्था ।१३।। ॐ अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः कोटराक्ष्यै नमः। आ. स्था.।१४।। ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।। ॐ भूर्भुवः स्वः कुब्जायै नमः। आ. स्था.।१५।। ॐ यमाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ठं स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।। ॐ भूर्भुवः स्वः विकटलोचनायै नमः। आ. स्था.।१६।।

दक्षिणकोष्ठे अष्टदलेषु -

ॐ यमेम दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथम अध्यतिष्ठत्। गंधर्वो अस्य रशनाम गृब्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट।। ॐ भू र्भुवः स्वः शष्कोदर्यै नमः। आ. स्था.।१७।। ॐ मित्रस्य चर्षणी घृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्र श्रवस्तमम्।। ॐ भू र्भुवः स्वः लल्लजिह्वायै नमः। आ. स्था.।१८।। ॐ अग्ने ब्रह्मगृब्भ्णीस्व धरुणमस्तरिक्षं दृ ठं ह ब्रह्मवनि त्वा क्षवनि सजात वन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय। विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्य ऽउपदधामि चित्तस्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यद्ध्वम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः अश्वदंष्ट्रायै नमः आ. स्था.।१९।। ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भगप्रनोजनय गोभिरश्वैर्भग प्रन्नृभिर्नृवन्तः स्याम।। ॐ भूर्भुवः स्वः वानराननायै नमः। आ. स्था.।।२०।।

ॐ सुपर्णो ऽसि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्याःसीद। भासान्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तमान तेजसा दिश उद्दृ ठं ह ।। ॐ भूर्भुवः स्वः रुक्षाक्ष्यै (ऋक्षाक्ष्यै) नमः। आ. स्था.।। ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्य स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः

स्वधायिभ्य स्वधा नमः। अक्षन्पितरो ऽमीमदन्त पितरो ऽती तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः केकराक्ष्यै नमः। आ. स्था. ।।२२।। ३ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ता भिचाकशीहि।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः बृहत्तुण्डायै नमः। आ. स्था.।।२३।। ३ॐ वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतान्न सुराषधसः।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः सुरप्रियायै नमः। आ. स्था. ।।२४।।

नैर्ऋत्यां अष्टदलेषु -

३ॐ ह ठ स: शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्होता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरस दृत सद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृह .: ३ॐ भूर्भुवः स्वः कपाल हस्तायै नमः। आ. स्था.।।२५।। ३ॐ सुसन्दृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषी महि। प्रनूनं पूर्णबन्धुरस्तुतो यासिवशां ऽअनु यो जान्विद्रते हरि।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः रक्ताक्ष्यै नमः। आ. स्था।।२६।। ३ॐ देवीरापो अपान्नपाद्यो ऊमिर्हविष्य इन्द्रियावान्मदिन्तमः। तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्यै नमः। आ. स्था. ।।२७।। ३ॐ प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा संपदे त्वा तेजोऽसि तेजसे त्वा त्रिवृदसि।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः श्वेन्यै नमः। आ. स्था.।।२८।।

३ॐ द्वारो देवी रन्वस्य विश्वेव्रता ददन्ते अग्नेः। तुरु व्यचसो धाम्ना पत्यमानाः।। ३ॐ भू. कपोतिकायै नमः। आ. स्था.।।२९।। ३ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। आददे नारिरसि।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः पाशहस्तायै नमः। आ. स्था.।।३०।। ३ॐ भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवोभिः। दिवि मूर्द्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने च कृषे हव्यवाहम्।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डहस्तायै नमः। आ. स्था.।।३१।। ३ॐ कदाचन स्तरीरसि नेन्द सश्चसि दाशुषे। उपोपेन्नु मघवन्भूयः इन्नुते दानन्देवस्य पृच्यत आदित्येभ्यस्त्वा।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचण्डायै नमः। आ. स्था।।३२।।

पश्चिम कोष्ठे अष्टदलेषु -

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डविक्रमायै नमः। आ. स्था.।।३३।। ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थं देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इंद्राय भागं प्रजवतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघ श ठं सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौस्यात् बह्वीर्यजमानस्यस्य पशून् पाहि।। ॐ भूर्भुवः स्वः शिशुघ्न्यै नमः। आ. स्था.।।३४।। ॐ देवी द्यावा पृथिवी मखस्य वामद्यशिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे।। ॐ भूर्भुवः स्वः पापहन्त्र्यै नमः।। आ. स्था।।३५।। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।। ॐ भूर्भुवः स्वः काल्यै नमः। आ. स्था.।।३६।।

ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्ते नस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सात इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।। ॐ भूर्भुवः स्वः रुधिरपायिन्यै नमः। आ. स्था.।।३७।। ॐ अग्निश्चमे घर्मश्चमे अर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मे ऽश्मेघश्च मे पृथिवी च मे ऽदितिश्चमे दितिश्चमे द्यौश्चमे ऽगुंलयः शक्करयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः वसाधयायै नमः।। आ. स्था.।।३८।। ॐ वह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिचश्चाकृणोति समनावगत्य। इषुधिः लंकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्घो जयति प्रभूतः।। ॐ भूर्भुवः स्वः गर्भभक्षायै नमः। आ. स्था.।।३९।। ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः शवहस्तायै नमः। आ. स्था.।।४०।।

वायवां अष्टदलेषु -

ऋतंचमे ऽमृतंचमे ऽयक्ष्मंचमे ऽनामयच्चमे जीवातुश्चमे दीर्घायुत्वंचमे ऽमित्रंचमे ऽभयंचमे सुखंचमे शयनंचमे सूषाश्चमे सुदिनंचमे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः आन्त्रमालिन्यै नमः। आ. स्था.।।४१।। ॐ ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यता ठं संविदाने आर्त्नी इमे विस्फुरन्ती अमित्रान्।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलकेश्यै

नम:। आ. स्था.।।४२।। ॐ वेद्या वेदि: समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रयम्। यूपेन यूप आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना।। ॐ भूर्भुव: स्व: वृहत्कुक्ष्यै नम:। आ. स्था.।।४३।। ॐ पावका न: सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टुधिया वसु:।। ॐ भूर्भुव: स्व: सर्पास्यायै नम:। आ. स्था. ।।४४।।

ॐ अस्कन्नमद्य देवभ्य: ऽआज्य ठं संभ्रिया समङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिष वसुमतीमग्ने तेच्छायामुपस्थेषं विष्णो: स्थानमसीत इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वो ऽध्वरआस्त्थात्।। ॐ भूर्भुव: स्व: प्रेतवाहनायै नम:। आ. स्था.।।४५।। ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे। अप शत्रून्विध्यता ठं संविदाने आर्त्नी इमे विस्फुरन्ती अमित्रान्।। ॐ भूर्भुव: स्व: दन्दशूककरायै नम:। आ. स्था.।।४६।। ॐ महीद्यौ: पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभि।। ॐ भू र्भुव: स्व: क्रोञ्च्यै नम:। आ. स्था.।।४७।। ॐ उपयाम गृहीतोऽसि सावित्रोऽसि च नो मयि धेहि। जिन्व यज्ञपति भगाय देवाय त्वा सवित्रे।। ॐ भूर्भुव: स्व: मृगशीर्षायै नम:। आ. स्था.।।४८।।

उत्तरे अष्टदलेषु -

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वत: सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे।। ॐ भूर्भुव: स्व: वृषाननायै नम:। आ. स्था.।।४९।। ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोष- धीभिरोषधी:।। ॐ भूर्भुव: स्व: व्यात्तास्यायै नम:। आ. स्था.।।५०।। ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बंधनादितो मुक्षीय मामुत:।। ॐ भूर्भुव: स्व: धूमनिश्वासायै नम:। आ. स्था.।।५१।। श्रीश्चते लक्ष्मीश्च ते पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुंम इषाण सर्वलोकम्म इषाण।। ॐ भूर्भुव: स्व: व्योमैक चरणोर्ध्वदृशे नम:। आ. स्था.।।५२।। ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: स्यूरसि विष्णो

धुर्वोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।। ॐ भूर्भुवः स्वः तागिन्यै नमः। आ. स्था.।।५३।। ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषि मार्षेय ठं सुधातु दक्षिणम्। अस्मद्राता देवत्रागच्छत प्रदातारमाविशत् । ॐ भूर्भुवः स्वः शोषणीदृष्ट्यै नमः। आ. स्था.।।५४।। ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासो अपरीतासः उद्भिदः। देवानो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। ॐ भूर्भुवः स्वः कोटर्यै नमः। आ. स्था.।।५५।। ॐ एका च मे तिस्रश्चमे पञ्चमे पञ्चमे सप्तचमे सप्तचमे नवचमे नवचमे एकादशचमे एकादशचमे त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे पञ्चदशचमे पञ्चदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचमे एकविर्ठशतिश्चमे एकविर्ठशतिश्चमे त्रयोविर्ठशतिश्चमे त्रयोविर्ठशतिश्चमे पञ्चविर्ठशतिश्चमे पञ्चविर्ठशतिश्चमे सप्तविर्ठशतिश्चमे सप्तविर्ठशतिश्चमे नवदिर्ठशतिश्चमे नवविर्ठशतिश्चमे एकत्रिर्ठशच्चमे एकत्रिर्ठशच्चमे त्रयत्रिर्ठशच्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलनासिकायै नमः। आ. स्था.।।५६।।

ईशानकोष्ठे अष्टदलेषुः –

ॐ ब्रह्माणि मे मतयः श ठं सुतासः शुष्म इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः। आशासते प्रतिहर्यन्त्युक्थेमा हरोवहतस्ता नो अच्छ।। ॐ भूर्भुवः स्वः विद्युत्प्रभायै नमः। आ. स्था.।।५७।। ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषार्ठ सहस्त्र योजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ॐ भूर्भुवः स्वः बालाकास्यायै नमः। आ. स्था.।।५८।। ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रं चक्षुबृहथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दा ठं स्यङ्गानि यजूर्ठषिनाम। सामते तनूर्वामदेव्यं यज्ञाः यज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफा सुपर्णो गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत।। ॐ भूर्भुवः स्वः मार्जायै नमः। आ. स्था.।।५९।। ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। ॐ भूर्भुवः स्वः कटपूतानायै नमः। आ. स्था. ।।६०।। ॐ देवी द्यावा पृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्या सं देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे।। ॐ भूर्भुवः स्वः अट्टाटहासायै

नमः। आ. स्था.॥६१॥ ३ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्य पा ठं सुरे स्वाहा॥ ३ॐ भूर्भुवः स्वः कामाक्ष्यै नमः। आ. स्था.॥६२॥ ३ॐ वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदाराष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदाराष्ट्रममुष्यै देहि वृषसेनोसि राष्ट्रदाराष्ट्रम्मे देहि स्वाहा। वृषसेनोऽसि राष्ट्रदाराष्ट्रममुष्यै देहि॥ ३ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाक्ष्यै नमः। आ. स्था.॥६३॥ ३ॐ भायै दार्वाहारं प्रभाया अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितार ठं सर्वेभ्यो लोकेभ्य उपसेक्तारमव ऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूली प्रकामाय रजयित्रीम्॥ ३ॐ भूर्भुवः स्वः मृगलोचनायै नमः। मृगलोचनीं आ. स्था.॥६४॥

३ॐ भूर्भुवः स्वः ह्रीं सर्वार्थ सिद्धिदात्रि योगिन्यै नमः। गजाननादि चतुःषष्टि योगिन्यै सहिताय इहेगच्छेहतिष्ठ। ततो गंधादिभि संपूजयेत्। बलिं दद्यात्॥

॥ इति चतुष्षष्टी योगिनी पूजनम्॥

अथ एकपंचाशत्क्षेत्रपाल स्थापनम्

वायव्य कोण में कृष्ण अथवा रक्त वा श्वेतवस्त्र पर नवकोष्ठक बनायें मध्य कोष्ठक में अष्टदल या उर्ध्वमुखी त्रिकोण बनाये, कलश स्थापन करें।

मध्ये स्थापित कलशोपरि पूर्णपात्रे -

॥१॥ ३ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं। ३ॐ भूर्भुवः स्वः बटुकाय, क्षेत्रपालाय नमः, आवाहयामि स्थापयामि। भो क्षेत्रपाल इहागच्छ इह तिष्ठ।

पूर्वे षड्दलेषु -

॥२॥ अजराय. ॥३॥ व्यापकाय. ॥४॥ इंद्रचौराय. ॥५॥ इंद्रमूर्तये. ॥६॥ उक्षाय. ॥७॥ कृष्माण्डाय.

आग्नेयदिकोष्ठे षड्दले -

॥८॥ वरुणाय. ॥९। बटुकाय. ॥१०॥ विमुक्ताय. ॥११॥ लिप्तकाय. ॥१२॥ लीलाकाय. ॥१३॥ एकद्रष्ट्राय. ।

दक्षिणदिक्कोष्ठे षड्दले -

।।१४।। ऐरावताय. ।।१५।। ओषधिघ्नाय. ।।१६।। बंधनाय. ।।१७। दिव्यकाय. ।।१८।। कंबलाय. ।।१९। भीषणाय. ।

नैर्ऋत्यदिषड्दले -

।।२०।। गवयाय. ।।२१।। घण्टाय. ।।२२।। व्यालाय. ।।२३।। अणवे ।।२४।। चन्द्रवारुणाय. ।।२५।। पटाटोपाय. ।।

पश्चिमदिषड्दले -

।।२६।। जटालाय. ।।२७।। क्रतवे ।।२८।। घंटेश्वराय. ।।२८।। विटङ्काय. ।।३०।। मणिमानाय. ।।३१।। गणबन्धवे.।

वायव्यदिषड्दले -

।।३२।। डामराय. ।।३३।। दुण्ढिकर्णाय. ।।३४।। स्थविराय. ।।३५।। दन्तुराय. ।।३६।। धनदाय. ।।३७।। नागकर्णाय. ।

उत्तरदिषड्दले -

।।३८।। महाबलाय. ।।३९।। फेत्काराय. ।।४०।। चीकराय. (चीत्काराय) ।।४१।। सिंहाय: ।।४२।। मृगाय. ।।४३।। अंतिमृदले अर्धभागे– यक्षाय. ।।४४।। अंतिमृदले उत्तरार्धभागे मेघवाहनायै.।

ईशानदिषड्दले -

- ।।४५।। तीक्ष्णोष्ठाय. ।।४६।। अनलाय. ।।४७।। शुक्ल तुण्डाय. ।।४८।। सुधापालाय. ।।४९।। बर्बरकाय. ।।५०।। अन्तिमददलार्धे – पवनाय. ।।५१।। अन्तिम दलार्धे पवनादुत्तरत: – पावनाय.। ॐ भूर्भूव: स्व: सर्वेभ्यो क्षेत्रपालेभ्यो नम:। गंधादिभि: संपूज्य बलिं दद्यात्।

अथ प्रति मंत्रेण क्षेत्रपाल देवताऽऽवाहन्

इस पुस्तक में जो नाम क्षेत्रपालों के पूर्व में नामावलि में दिये गये है उसी क्रम में मंत्र दिये गये है संख्या ३१ के बाद से क्रम अन्य प्रचलित मंत्रात्मक पद्धति से भिन्न है।

पूर्वे षड्दलेषु

१. ॐ इमौ ते पक्षा वजरौपतत्रिणौयाभ्या ठं रक्षा ठं स्यपह ठं

स्यग्ने। ताभ्यां पतेम सुकृतामुलोकं यत्र ऋषयो जग्मु:। प्रथमजा: पुराणा:।

ॐ भूर्भुव: स्व: अजराय नम:। आ. स्था.।

२. ॐ प्रथमावा ठं सरथिना सुवर्णौ देवौ पश्यन्तौ भुवनानिविश्वा । अपिप्रयञ्चोदना वामिमाना होतारा ज्योति: प्रदिशादिशन्ता।।

ॐ भूर्भुव: स्व: व्यापकाय नम:। आ. स्था.।

३. ॐ इन्द्रस्यवज्रोसि वाजसास्त्वयायं वाज ठं सेत् । वाजस्यनु प्रसवे मातरम्महीं—मदितिन्नाम वचसा करामहे। यस्यामिदं विश्वम्भुवनमाविवेशतस्यान्नो देव: सविता धर्म साविषत् ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: इन्द्रचौराय नम:। आ. स्था.।

४. ॐ एवेदिन्द्रम् वृषणं वज्र बाहुं वसिष्ठासो ऽअभ्यर्चन्त्यर्कै: । सनस्तुतो वीर वद्धातु गोमद्यूयम्पात स्वस्तिभि: सदान: ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: इन्द्रमूर्तये नम:। आ. स्था.।

५. ॐ उक्षा समुद्रो अरुण: सुपर्ण: पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश । मद्ध्ये दिवोनिहित: पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: उक्षणे नम:। आ. स्था.।

६. ॐ यद्देवा: देवहेडनन्देवा सश्चकृमावयम् । अग्निर्मातस्मादेन सोविश्वान् मुञ्चत्व ठं हस: ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: कूष्माण्डाय नम:। आ. स्था.।

(आग्नेय पटद्दलेषु)

७. ॐ स न इन्द्रायज्ज्यवे वरुणाय मरुद्भय:। वरिवोवित्परिस्त्रव ।।

ॐ भूर्भुव: स्व: वरुणाय नम:। आ. स्था.।

८. बाहु मे बलमिन्द्रिय ठं हस्तौ मेकर्म्मवीर्यम्। आत्क्माक्षत्रमुरोमम।।

ॐ भूर्भुव: स्व: बटुकाय नम:। आ. स्था.।

९. ॐ मुञ्चन्तु मा शपत्थ्यादथो वरुण्यादुत। अथोयमस्य पड्वी शात्सर्वस्माद्देव किल्बिषात् ॥

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विमुक्ताय नमः। आ. स्था.॥

१०. ॐ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ठं समाः । एवन्त्वयिनान्यथेतोस्तिन कर्मलिप्यतेनरे ॥

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लिप्तकाय नमः। आ. स्था.॥

११. ॐ सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोभ्य वह्नियमाणः सलिलः प्रप्लुतोययोरोजसास्कभितारजा ठं सिवीर्ये भिर्वीरतमा शविष्ठा। या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू ऽ अगन्वरुणा पूर्वहूतौ ॥

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः लीलाकाय नमः। आ. स्था.॥

१२. ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः ॥

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः एकदंष्ट्राय नमः। आ. स्था.॥

(दक्षिणे षड्दलेषु)

१३. ॐ अर्मेभ्यो हस्ति पंजवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसे जपालमिरायै कीना शङ्कीलालायसुराकारं भद्राय गृहप ठं श्रेयसे वित्तधमाद्ध्यक्षा यानुक्षत्तारम् ॥

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ऐवरावताय नमः। आ. स्था.॥

१४. ॐ ओषधिःप्रति मोदद्धुं पुष्पवती प्रसूवरीः । अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः औषधीध्नाय नमः। आ. स्था.॥

१५. ॐ त्र्यबकं यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बंधननान् मृत्योमुक्षीय मामृतात् ॥

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः बन्धनाय नमः। आ. स्था.॥

१६. ॐ देवसवितरेषते सोमस्त ठं रक्षस्वमात्वादभन्। एतत्वन्देव सोमदेवो देवाँ २ उपागा इदमहं मनुष्यांत्सहरायस्पोषेण स्वाहा निर्वरुणस्य पाशान्मुच्ये ।।

।। ॐ भूर्भुव: स्व: दिव्यकराय नम:। आ. स्था.।।

१७. सीसेन तन्त्रम् मनसा मनीषिण ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति । अश्विना यज्ञ ठं सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपंवरुणोभिषज्यन् ।।

।। ॐ भूर्भुव: स्व: कम्बलाय नम:। आ. स्था.।।

१८. ॐ आशु: शिशानो वृषभो न भीमो घनाघन: क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनो निमिष एकवीर शत ठं सेना अजय त्साकमिन्द्र: ।।

।। ॐ भूर्भुव: स्व: भीषणाय नम:। आ. स्था.।।

नैऋत्यां षड्दले

१९. ॐ इम ठं साहस्रम् ठं शतधार मुत्संव्यच्यमान ठं सरिरस्यमध्ये। घृतन्दुहानामदितिञ्जना याग्नेमाहि ठं सी: परमे व्योमन् ।।

।। ॐ भूर्भुव: स्व: गवयाय नम:। आ. स्था.।।

२०. ॐ कुंभो विनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन् ऽग्नेयोन्याङ्गर्भोऽअंत:। ल्पाशिर्व्यक्त: शतधार उत्सोदुहेन कंभी स्वधां पितृभ्य: ।।

।। ॐ भूर्भुव: स्व: घण्टाय नम:। आ. स्था.।।

२१. ॐ आक्रन्दय बलमोजोन आधानिष्ठ निहि दुरिता बाधमान: । अपप्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व ।।

।। ॐ भूर्भुव: स्व: कालाय नम:। आ. स्था.।।

२२. ॐ इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता ऽइमेत्वायव: । अण्वीभिस्तना पूतास: ।।

।। ॐ भूर्भुव: स्व: अंशवे नम:। आ. स्था.।।

२३. ॐ चन्द्रमा अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि । रयिं पिशङ्गम्बहुलं पुरुस्पृह ठं हरिरेति कनिक्रदत् ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रवारुणाय नमः। आ. स्था.।।

२४. ॐ गणानांत्वा गणपति ठं — इति मन्त्रेण।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः घटाटोपाय नमः। आ. स्था.।।

पश्चिमे षट्दलेषु

२५. ॐ उग्रं लोहितेन मित्र ठं सौव्रत्येन रुद्रन्दौः व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेनमरुतो बलेन साद्धयान्प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्य ठं रुद्रस्यान्तः पार्श्वर्य महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्टुः पशुपतेः पुरीतत् ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः जटिलाय नमः। आ. स्था.।।

२६. पवित्रेण पुनीहिमा शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने कृत्वा क्रतूँरनू ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतवे नमः। आ. स्था.।।

२७. ॐ अजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशान्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्त्त स्वसानः। सहस्त्रं धुक्क्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टेश्वराय नमः आ. स्था.।।

२८. ॐ वायोशुक्रो अयामिते मद्धो अग्रदिविष्टिषु । आयाहि सोमपीतये स्पार्हो देवनियुत्वता ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः विकराय नमः। आ. स्था.।।

२९. ॐ देव्या होतारा भिषजेन्द्रेण सयुजायुजा । जगतीच्छन्द इन्द्रिय मनड्वां गौर्वयोदधुः ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्व; मणिमानाय नमः। आ. स्था.।।

३०. ॐ त्रीणि त आहुः दिविबन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे । उतवमे वरुणच्छन्त्स्यर्वन्य त्रात आहुः परमं जनित्रम् ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणबन्धनाय नमः । आ. स्था.।।

(वायव्यादि कोष्ठे षट्दलेषु)

३१. सि ठं ह्यसि स्वाहा सि ठं ह्यस्यादित्यवनिः स्वाहा सि ठं हयसि ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः स्वाहा सि ठं हयसि सुप्रजावनी रायस्पोषवनिः

स्वाहा सि ठं ह्यस्यावह देवान्यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यस्त्वा ।।

।।ॐ भूर्भुवः स्वः डामराय नमः। आ. स्था.।।

(मतांतरयाय)

३१. ॐ प्रतिश्रुत्काया अर्तनङ् घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकठं शब्दायाडं बराघातं महसे वीणा वादङ्क्रोशाय तूणवध्म मवस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनप मन्यतोरण्यायदावपम् ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः मुण्डाय नमः आ. स्था.।।

३२. ॐ भद्रं कर्णेभि श्रृणुयाम् देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः ढुण्ढिकरणाय नमः। आ. स्था.।।

उत्तरे षड्दलेषु

३३. ॐ अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्त्तयः विश्वायद जयस्पृधः।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्थविराय नमः। आ. स्था.।।

३४. ॐ वातंप्राणेना पानेन नासिके उपयाम मधरेणौष्ठेनसदुत्तरेण प्रकाशेनान्तर मनूकाशेन बाह्यन्निवेष्यं मूर्द्धान् स्तनयित्कु – निर्बाधेनाशनिं मस्तिष्केण विद्युतङ्कनीकाभ्याङ्कर्णाभ्या ठं श्रोत्र ठं श्रोणाभ्याङ्कर्णौते दनीमधर कण्ठेनापः शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभिरदिति ठं शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जः जल्येन शीर्ष्णा सङ्क्रोशैः प्राणां न्रेष्माण ठंस्तुपेन।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः दन्तुराय नमः। आ. स्था.।।

(मतांतरयाय)

३४. ॐ सुपर्णे वस्ते मृगो अस्यादन्तोगोभिः सन्नद्धा पततिप्रसूता । यत्रानरः सञ्चविचद्र वन्तितत्रास्मभ्यमिषवः शर्मय ठं सन् ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः वैनाय नमः आ.। स्था.।।

३५. ॐ इद ठं हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीर ठं सर्वगण ॳ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्य भय

सनि। अग्निः प्रजांबहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासुधत्त।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः धनदाय नमः। आ. स्था.।।

३६. ॐ खङ्गौ वैश्वदेवः। श्वाकृष्णः कर्णोगर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सि ठं होमारुतः कृकलासः पिपाका शकुनिस्तशरव्यायै विश्वेषान् देवानां पृषतः ।।

।।ॐ भूर्भुवः स्व नागकर्णकाय नमः। आ. स्था।।

उत्तरादि षड्दले

३७. ॐ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावतऽ आजगन्था परस्याः। सृक ठं स ठं शाय पविमिन्द्र तिग्मं शत्रून ताड्ढि विमृधो नूदस्व ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः महाबलाय नमः। आ. स्था.।।

३८. ॐ इन्दुर्दक्षः श्यनऽऋता वाहिरण्य पक्षः शकुनो भुरण्यः । महांत्सधस्थेद्धुव आनिषतो नमस्ते अस्तु मा माहि ठं सीः ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः फेत्कराय नमः। आ. स्था.।।

३९. ॐ चित्रन् देवाना मुदगादनीकञ्चक्षुः मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्राद्यावा पृथिवी अंतरिक्ष ठं सूर्य आत्मा जगतस्तस्त्थुषश्चः स्वाहा।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः चित्काराय नमः। आ. स्था.।।

ईशानादि षड्दलेषु

४०. ॐ तीव्रान्घोषान् कृण्वते वृषपाणयोश्वारथेभिः सहवाजयन्तः। अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूँरनपव्ययन्तः ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहाय नमः। आ. स्था.।।

४१. ॐ अग्निदूतम् पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रवे। देवाँ आसादयादिह।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः। आ. स्था.।।

४२. आदित्यास्त्वा मूर्द्धन्नाजिघर्भि देवयजने पृथिव्या इडायास्पदमसि घृतवत् स्वाहा। अस्मेरमस्वास्मेते बन्धु स्त्व

रायोमेरायो मावायः रायस्पोषेण वियौष्मतो तोरायः ।।

।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षाय (विक्षाय) नमः। (अंतिम दलार्द्ध भागे) आ. स्था.।।

४३. ३ॐ द्यौस्तेपृथिवीं अंतरिक्षं वायुः छिद्रं पृणातुते । सूर्यस्ते नक्षत्रैः सहलोकंकृणोतु साधुया ।।

।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः मेघवाहनाय नमः (अंतिम दले उत्तर भागे)। आ. स्था.।।

४४. ३ॐ सबर्हिरग्निः पूषण्वान्त्स्तीर्ण बर्हिरमर्त्यः । बृहतीच्छन्दद इन्द्रियन्त्रिवत्सो गौर्वयोदधुः ।।

।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः तिक्षणाय नमः। आ. स्था.।।

४५. ३ॐ अग्नि मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिवा ऽअयम । अपां ठ रेता ठ सिजिन्वति ।।

३ॐ भूर्भुवः स्वः अनलाय नमः। आ. स्था.।।

४६. ३ॐ अभ्यर्षत सुष्टुतिङ्ग व्यमाजिमस्मा सुभद्रां द्रविणानिधत्त। इमं यज्ञन्नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ।।

।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः (शुक्राय) शुक्लतुण्डाय नमः। आ. स्था.।।

४७. ३ॐ वनस्पते वीड्वङ्गोहिभूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः । गोभिः सनद्धो असिवीडयस्वास्त्थाता तेजयत जेत्वानि ।।

।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः सुधापालाय नमः। आ. स्था.।।

४८. ३ॐ शुद्धबालः सर्वशुद्ध बालो मणिबालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रान नभोरूपाः पार्जन्याः ।।

।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः बर्बूकराय नमः आ. स्था.।।

४९. ३ॐ अग्ने अच्छा वदेहनः प्रतिनः सुमनाभव । प्रनोयच्छ सहस्त्र जित्व ठ हि धनदा असि स्वाहा ।।

।। ३ॐ भूर्भुवः स्वः पवनाय नमः। अंतिमदले पूर्वार्धभागे आ. स्था।।

५०. ॐ पवमानः सोऽअद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः ।
य: पोता स पुनातु मा ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः पावनाय (माला) नमः। (अंतिम दले उत्तरार्द्धभागे) आ. स्था.।।

मध्यकोष्ठे

५१. ॐ क्षां क्षीं क्षौं क्षं क्षः क्षेत्रपालाय नमः ॐ क्षेत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्यनाभिरसि मा त्वाहि ठ सीन्मा हि ठ सीः ।।

।। ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः। आ. स्था.।।

अथ सर्वतोभद्रमंडल देवता स्थापनम्

सर्वतो भद्रमंडल में मध्य में चार श्वेत पद में ब्रह्मा का स्थान है उसके चारों ओर १२ रक्त पद है, उनके चारों ओर पीतवर्ण के २० पद है जिसको कर्णिका कहते है। परिधि समीप चारों कोणों में श्वेत पुंज त्रिपद खण्ड है। कर्णिका व परिधि के बीच चारों दिशा में श्वेत पुंज की २४ पद की वापी है। हर वापी के दोनों ओर रक्त पुंज के ९ पद के भद्र है, कुल आठ भद्र है बनते है। ब्रह्मा से ईशानादि चतुष्कोणों में कृष्ण वर्ण की ५ पद की बल्लियाँ है, प्रत्येक बल्लि के दोनो ओर हरित श्रृंखला है।

हस्ते पुष्पाक्षत मादाय - मध्ये कलशोपरि

१. ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इहतिष्ठ।

दिक्पाल स्थापनम्—परिधि समीप श्वेत खण्डो में उत्तर से वायव्यतक।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोम इहागच्छ इहतिष्ठ (उत्तरे)।
३. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः ईशान इहागच्छ इहतिष्ठ (खण्डेंदौ)।
४. ॐ भूर्भुवः स्वः इंद्राय नमः इंद्र इहागच्छ इहतिष्ठ (पूर्वे)।
५. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः अग्निम् इहागच्छ इहतिष्ठ (खण्डेंदौ)।
६. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः यमेहागच्छ इहतिष्ठ (दक्षिणे)।
७. ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋतये नमः नैर्ऋत्येहागच्छ इहतिष्ठ (नैऋत्ये, खण्डेंदौ)।
८. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ (पश्चिमे)।
९. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ (वायव्ये,

खण्डेंदौ)।

भद्रमंडले स्थापनम् - (रक्त पुंजेषु)

10 वायु सोमयोर्मध्ये -

ॐ भूर्भुव: स्व: अष्टवसुभ्यो नम: अष्टवसु आ. स्था.।

11. सोमईशानयोर्मध्ये-

ॐ भूर्भुव: स्व: एकादशरुद्रेभ्यो नम: एकादशरुद्रान् आ. स्था.।

12. ईशानपूर्वयोर्मध्ये-

ॐ भूर्भुव: स्व: द्वादशादित्येभ्यो नम: द्वादिशादित्यान् आ. स्था.।

13. इन्द्र0ग्नयोर्मध्ये-

ॐ भूर्भुव: स्व: अश्विनाभ्यां नम: अश्विनौ आ. स्था.।

14. अग्नियमयोर्मध्ये-

ॐ भूर्भुव: स्व: विश्वेभ्यो देवेभ्यो पितृभ्यो नम: विश्वेदेवा स पितरान् आ. स्था।

15. यमनिर्ऋतिर्मध्ये-

ॐ भूर्भुव: स्व: सप्तयक्षेभ्यो नम: सप्तयक्षान् आ. स्था.।

16. निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये-

ॐ भूर्भुव: स्व: भूतनागेभ्यो सर्पेभ्यों नम: भूतनागान्, सर्पान् आ. स्था.।

17. वरुणवाय्वोर्मध्ये-

ॐ भूर्भुव: स्व: गंधर्वाप्सरोभ्यो नम: गंधर्वाप्सरस: आ. स्था.।

18 उत्तरे – (ब्रह्म सोमयोर्मध्ये श्वेत २४ पुंजेषु वाप्याम् कर्णिका के समीप में)

ॐ भूर्भुव: स्व: स्कंदाय नम: स्कन्द इहागच्छेह तिष्ठ।

19. स्कंद के उत्तर में -

ॐ भूर्भुत: स्व: नन्दिने नम: नंदीश्वर इहागच्छेह तिष्ठ(वाप्याम्)।

20. नंदी के उत्तर में (वाप्याम्)

ॐ भूर्भुव: स्व: शूलमहाकालाभ्यां नम: शूलमहाकालौ आ. स्था.।

21. ब्रह्मेशानयोर्मध्ये (कृष्ण पुंजेषु वल्लायाम्)

ॐ भू दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः — दक्षादिसप्तगणान् आ. स्था.।

22 ब्रह्मेन्द्रयोर्मध्ये वाप्याम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः दुर्गा आ. स्था.।

23. तत्रैव दुर्गापूर्वे -

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः विष्णो इहागच्छेह तिष्ठ।

24. ब्रह्माग्न्योर्मध्ये वल्लायाम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधा आ. स्था.। (कही कहीं पर पितरो का आवाहन का भी उल्लेख है)

25. ब्रह्मयमयोर्मध्ये वाप्याम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगाभ्यां नमः मृत्युरोगौ आ. स्था.।

26. ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये वल्लयाम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिम् इहागच्छेह तिष्ठ।

27. ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये वाप्याम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः आपः आ. स्था.।

28. ब्रह्मवाय्वोर्मध्ये वल्लाम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः मरुतः आ. स्था.।

29. ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकायाम् -

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः पृथिवीम् आ. स्था.।

30. तत्रैव पृथिव्या उत्तरतः -

ॐ भूर्भुवः स्वः गंगादिभिसरितेभ्यो नमः गंगादिव सप्तसरितः आ. स्था.।

31. तत्रैव गंगात्त्युतरे -

ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरान् आ. स्था.।

32. ब्रह्मणः मस्तके कर्णिकोपरि -

ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः मेरुम् आ. स्था.।

३३. उत्तरेसोमसमीपे—ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः गदाम् आ. स्था.।।

३४. ईशानसमीपे – ॐ भूर्भुव: स्व: त्रिशूलाय नम: त्रिशूलं आ. स्था।।
३५. इन्द्रसमीपे – ॐ भूर्भुव: स्व: वज्राय नम: वज्रं इहागच्छेह तिष्ठ।
३६. अग्निसमीपे – ॐ भूर्भुव: स्व: शक्तये नम: शक्तिम् आ. स्था।।
३७. यमसमीपे–ॐ भूर्भुव: स्व: दण्डाय नम: दण्डं इहागच्छेह तिष्ठ।
३८. नैर्ऋतिसमीपे– ॐ भूर्भुव: स्व: खड्गाय नम: खड्गम् आ. स्था।

39. पश्चिमेवरुण समीपे -

ॐ भूर्भुव: स्व: पाशाय नम: पाशम् आ. स्था.।

40. वायव्यां वायुसमीपे -

ॐ भूर्भुव: स्व: अंकुशाय नम: अंकुशम् आ. स्था.।

(मंडल के बाहरी ओर रक्तपरिधि में उत्तर से वायव्य पर्यन्त)

४१. उत्तरे – ॐ भूर्भुव: स्व: गौतमाय नम: गौतमम् इहागच्छेह तिष्ठ।
४२. ऐशान्याम्–ॐ भूभुर्व. भारद्वाजाय नम: भारद्वाजं इहागच्छ इहतिष्ठ।
४३. पूर्वे–ॐ भूर्भुव: स्व: विश्वामित्राय नम: विश्वामित्रं इहागच्छेहतिष्ठ।
४४. आग्नेयाम् – ॐ भूर्भुव: स्व: कश्यपाय नम: कश्यपं इहागच्छेहष्ठि।
४५. दक्षिणे–ॐ भूर्भुव: स्व: जमदग्ने नम: जमदग्निं इहागच्छेह तिष्ठ।
४६. निर्ऋते–ॐ भूर्भुव: स्व: वसिष्ठाय नम: वसिष्ठं इहागच्छेह तिष्ठ।
४७. पश्चिमे – ॐ भूर्भुव: स्व: अत्रये नम: अत्रिं इहागच्छेह तिष्ठ।
४८. वायव्यां–ॐ भूर्भुव: स्व: अरुन्धत्यै नम: अरुन्धतिं इहागच्छेहतिष्ठ।

ततो (मण्डल के बाहर कृष्ण परिधि में पूर्वादि क्रमेण)

४९. पूर्वे – ॐ भूर्भुव: स्व: ऐन्ध्रै नम: ऐन्द्रीम् आ. स्था.।
५०. आग्नेयाम्–ॐ भू र्भुव: स्व: कौमार्यै नम: कौमारीम् आ. स्था.।
५१. दक्षिणे – ॐ भूर्भुव: स्व: ब्राह्यै नम: ब्राह्मीम् आ. स्था.।
५२. निर्ऋत्ये – ॐ भूर्भुव: स्व: वाराह्यै नम: वाराहीम् आ. स्था.।
५३. पश्चिमे – ॐ भूर्भुव: स्व: चामुण्डायै नम: चामुण्डाम् आ. स्था।
५४. वायव्याम्–ॐ भूर्भुव: स्व: वैष्णव्यै नम: वैष्णवीम् आ. स्था.।
५५. उत्तरे– ॐ भूर्भुव: स्व: माहेश्वर्यै नम: माहेश्वरीम् आ. स्था।
५६. ईशाने– ॐ भूर्भुव: स्व: वैनायक्यै नम: वैनायकीम् आ. स्था।

अथ मंत्रसहितम् सर्वतोभद्रमण्डलदेवता स्थापनम्

वैदिक मंत्रो की आवाहन की दो परंपरायें प्रचलित है अतः दोनों मंत्रों के मुद्रण आकार में अन्तर कर दिया है। अतः यहां लोकाचार में जो मंत्र विधि प्रचलित हो उसी मुद्रण के क्रम से आवाहन करें। दोनो वैदिक मंत्र पढने जरुरी नहीं है।

(1) सर्वतोभद्रमंडल मध्ये (कलशे) -

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः ।
सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिम सतश्चविवः ॥

त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मास्वर्गे लोके पितामहः ।
आगच्छ मण्डले चास्मिन् मम सर्वार्थ सिद्धये ॥

भो ब्रह्मन् अस्मिन् मण्डले इहागच्छ इहतिष्ठ पूजां गृहाण सुप्रसन्नो वरदो भव १॥

उत्तर से परिधि समीप मे पूर्वादि क्रम से लोकपालों श्वेतवापी में आवाहन करें।

(2) उत्तरे परिधि समीपे -

ॐ वय ठं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥

ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् ।
भवावाजस्यसंगथे ॥

क्षीरोदार्णव संभूतं लक्ष्मीं बंधुं निशाकरम् ।
मण्डले स्थापयाम्यम सोमं सर्वार्थ सिद्धये ॥

भो सोमेहागच्छहेतिष्ठ ॥२॥

(3) ईशान्यां खण्डेदौ -

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसा—मसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्ध स्वस्तये ॥

ॐ अभित्वादेव सवितरीशानं वार्याणाम् । सदावन्भागमीमहे॥

ईशानींपालकं श्रेष्ठ सर्वलोक भयंकरं ।
मण्डले स्थापयामीह ईशान्यां सर्वसिद्धये ॥

भो ईशान इहागच्छेहतिष्ठ ।।४।।

(4) पूर्वे -

ॐ त्रातारमिद्र मवितारमिंद्र ठं हवे हवे सुहव ठं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिंद्र ठं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ।।

ॐ इन्द्रं वो विश्वत स्परिहवामहे जनेभ्यः ।
अस्माकमस्तु केवलः ।।

सर्वलोकाधिपं श्रेष्ठं देवर्षिणां स पालकं ।
पूर्वदिक् पालकं देवराजं वै स्थापयाम्यहम् ।।

भो इंद्र इहागच्छेहतिष्ठ ।।४।।

(5) आग्नेयखण्डेदौ -

ॐ त्वन्नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्च वंद्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ठं रक्षमाणस्तव व्रते ।।

ॐ अग्नीदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।।

त्रिपादं मेष वाहनं च त्रिशिखं च त्रिलोचनम् ।
आग्नेयां स्थापयाम्यत्र अग्निं पुरुष--मुत्तमम् ।।

भो अग्ने इहागच्छेतिष्ठ ।।५।।

(6) दक्षिणे वाप्याम् - परिधि समीपे

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ।
स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ।।

ॐ यमाय सामे \ सुनुतयमाय जुहुता हविः ।
यमंहयज्ञो गच्छत्यग्नि दूतो अरंकृतः ।।

नन्तकः अन्तकः सर्वलोकानां धर्म राज इतिश्रुतः ।
अतस्त्वां स्थापयाम्यत्र दक्षिणस्यां स्थिरोभव ।।

भो यम इहागच्छइहतिष्ठ ।।६।।

(7) *नैऋत्यांखण्डेदौ – (परिधि समीपे)*

ॐ असुन्वन्तम यजमान–मिच्छस्तेनस्योत्या मन्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छसात इत्या नमो देव निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥

ॐ मोषुण: परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणा वधीत ।
यदीष्ट तृष्णयासह ॥

नैऋत्यां वसतिर्यस्य घोररूपी सदाहि य: ।
नैर्ऋतिं स्थापयाम्यत्र नैर्ऋत्यां मण्डले शुभे ॥

भो निर्ऋति इहागच्छतिष्ठ ॥७॥

(8) *पश्चिमेवाप्याम् – परिधि समीपे*

ॐ तत्वायासि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भि: ।
अहेडमानो वरुणे हबोध्युरुश: ঁ समान आयु: प्रमोषी: ॥

अपांपतिं पाशधरं यादसां च पतिं शुभं ।
वरुणं स्थापयाम्यत्र वारुणयां मंडले शुभे ॥

भो वरुण इहागच्छइहतिष्ठ ॥८॥

(9) *वायव्यांखण्डेदौ –*

ॐ आनो नियुद्भि: शतनीभिरद्धर ठं सहस्त्रिणीभि रुपयाहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन् त्सवने मादयस्व यूयं पातस्वस्तिभि: सदान: ॥

ॐ वायो शतं हरिणां युवस्व पोष्याणाम् ।
उतवाते सहस्त्रिणो रथ आयातु पाजसा ॥

भो वायो इहागच्छइहतिष्ठ ॥९॥

अष्ट रक्तभद्रमंडलो पर क्रमश: –

(10) *वायुसोमयोर्मध्ये –*

ॐ सुगावो देवा: सदना अकर्मय आजग्मेद ठं सवनञ्जुषाणा: ।
भरमाणावहमाना हवी ঁ ष्यस्मेधत्त वसवो वसूनि स्वाहा ॥

ॐ ज्मया अत्रवसवो रंतिदेवा उरावंतरिक्षे मर्जयंत: शुभ्रा: ।
अर्वाक्पथ उरुज्रय: कृणुध्वं श्रोतो दूतस्य जग्मुषोनो अस्य ॥

इत्यष्टवसूनावाहयामि स्था. ॥१०॥

(11) सोम ईशानमध्ये -

ॐ रुद्रा स ठं सृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधरे ।
तेषां भानुरजस्र इच्छुक्रो देवेषु रोचते ॥

ॐ आ रुद्रासः इन्द्रवंतः सजोषसो हिरण्य रथाः सुविनाय गंतनः इयं वो अस्मन् प्रतिहर्यते मति स्तृणजेन दिव उत्सा उदन्यवे ॥

त्रिनेत्र रुद्ररूपाय त्रिजटाय महात्मने ।
नमस्कृत्य स्थापयामि मण्डलोपरिमध्यतः ॥

एकदश रुद्रानावाहयामि स्थापयामि ॥११॥

12. इन्द्रेशानयोर्मध्ये -

ॐ यज्ञो देवानोम्प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः ।
आवोर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ठं हो शिचद्द्या वरिवो वित्तरासदादित्येभ्यस्त्वाः॥

*ॐ त्यांनु क्षत्रियां अव आदित्यान्या चिषामहे ।
सुमृडीकां अभिष्टये ॥*

आदित्यं भास्करं चैव प्रभाकर दिवाकरौ ।
सूर्य ग्रहपतिं बुध्नं तेजोरूप धारम् हरिम् ॥
सप्ताश्वं देवमूर्तिं च त्रिदैवत्यं क्रमेण च ।
इत्यादि द्वादशदित्यान् मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥

द्वादशादित्यामावाहयामि स्था. ॥१२॥

13. इन्द्राग्न्योर्मध्ये -

ॐ यवाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती तया यज्ञम् मिमिक्षतम्।
उपयाम गृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैषते योनिर्मादध्वीभ्यान्त्वा ॥

*ॐ अश्विनावर्ति — रस्मदागोमद्दस्रा हिरण्यवत् ।
अर्वाग्रथं समनसा नियच्छतम् ॥*

अश्विनावाहयामि स्था. ॥१३॥

14. अग्नियमोर्मध्ये -

ॐ ओमासश्चर्षणी धृतो विश्वेदेवास आगत ।
दाश्वां सो दाशुषः सुतम् । उपयामगृहीतोसि
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः एषते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः ।।

देवेकर्मणि पित्रो च यौ मुख्यो सर्वदा शुभौ ।
मण्डले स्थापयामि सुखानुष्ठान सिद्धये ।।

विश्वादेवानावाहयामि स्था. ।।१४।।

15. यमनिर्ऋतियोर्मध्ये -

ॐ अभीत्यं देव सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्य
सवरत्नधामभि प्रियं मतिं कवि मूर्ध्वा यस्या मतिर्भा अदिद्युतत्स
वीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः ।।

यकृच्छया पर्यटं तो यक्ष राजा महितले ।
कौतुकं प्रेक्षितं घोरा मण्डले सन्तु सस्थिरा ।।

सप्तयक्षनावाहयामि स्था. ।।१५।।

16. निर्ऋति वरुणयोर्मध्ये -

ॐ भूताय त्वा नारातये स्वरभिविक्ख्येषन्दृ ठँ
हन्तान्दुर्याः पृथिव्या मुर्वन्तरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वा नाभौ
सादयाम्यदित्या उपस्थेऽअग्ने हव्य ठँ रक्ष ।

ॐ आयंगौः पृश्निर क्रमीद सदनमातरं पुरः ।
पितरं च प्रयन्त्स्वः ।।

आवन्तो वासुकिश्चैव कालियो मणिभद्रकः ।
शंखश्च शंखपालश्च कालकोटि धनञ्जयौ ।।
धृतराष्ट्रश्च नागेशाः स्वीकुर्वन्तु ममार्चनं ।
मण्डले पूजयामत्र सर्वारिष्ट प्रशान्तये ।।

ॐ सर्पानावाहयामि स्था. ।।१६।।

17. वरुणावय्वोर्मध्ये -

ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निः गंधर्वस्तस्यौषधयो ऽप्सरसो मुदो

नाम । स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्ताभ्य: स्वाहा।

ॐ अप्सरसां गंधर्वाणां मृगाणां चरणे चरन् ।
केशीके तस्य विद्वान् सखास्वावुर्मदिन्तम: ।।

उर्वशीप्रमुखा: सर्वा: स्ववेश्या: शक्र पूजिता ।
गंधर्वैश्च सदायान्तु मण्डलेस्मिन् सुशोभना: ।।

ॐ गंधर्वाप्सरा आवाहयामि स्था. ।।१७।।

18. उत्तरे – (ब्रह्म सोमयोर्मध्ये २४ पुंजेषु वाप्याम् कर्णिका के समीप में)

ॐ आशु: शिशानो वृषभो न भीमो घनाघन: क्षोभणीश्चर्षणीनाम्।
सक्रन्दनो निमिष एकवीर: शत ठं अजयत्साकमिन्द्र: ।।

ॐ यदक्रंद: प्रथमं जायमानऽ उद्यन् त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन् ।।

षडाननं चतुर्हस्तं स्कंद शैल सुतात्मजं ।
इहैव पूजायिष्यामि सर्व कामार्थ सिद्धये ।।

ॐ स्कंदमावाहयामि स्था. ।।१८।।

19. स्कंदस्योत्तरे -

ॐ ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषासहि
हंतारं शत्रूणांम् ऋधि विराजं गोपतिं गवां ।।

शिवद्वार गतस्त्वं च शिववाहनमुत्तमम् ।
पार्वत्या: प्रीतिकृन्मित्य – मिहागच्छ स्थिरोभव ।।

भो नंदीश्वर इहागच्छ इहतिष्ठ ।।१९।।

20. नंदीस्योत्तरे -

ॐ कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे । वोचेमशंतमं हृदे ।।

त्र्यंबकं च त्रिपुरुषं नीलकण्ठं सदाशिवं ।
मण्डले स्थापयामिह सुखानुष्ठान सिद्धये ।।

ॐ शूलायरुद्ररूपिणे आ. स्था. ।।२०।।

21. शूलस्योत्तरे -

ॐ कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा विभर्ति न ददाति पित्रे ।
अनीकमस्य नमिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ ॥
अदितिर्देवमाता त्वं दक्षपुत्रि सुशोभने ।
मण्डलेस्मिन् समागच्छ यावत्पूजां स्थिरोभव ॥
ॐ महाकालीसहिताय महाकालाय नमः। आ. स्था. ॥२१॥

22. ब्रह्मेशानयोर्मध्ये कृष्णपुंजेषुवल्लयाम् -

ॐ अदिति र्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ।
तान्देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबंधवः ॥
दक्षोऽसि सर्वकार्येषु महान यज्ञकरः प्रियः ।
ऋषीणां सर्व दक्ष मण्डले ऽस्मिन् स्थिरोभव ॥
ॐ दक्षादिसप्त गणेभ्यो आवाहयामि स्था. ॥२२॥

23. ब्रह्मन्द्रयोर्मध्ये वाप्याम् -

ॐ तामग्निवर्णा तपसा ज्वलन्तीम् वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गा देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः ।
तामाग्निवर्णा ज्वलन्तीं तपसा सर्वदा शुभाम् ।
भक्तानां वरदां नित्यं दुर्गां आवाहाम्यहम् ॥
ॐ दुर्गामावाहयामि स्था. ॥२३॥

24. तत्रैव दुर्गापूर्वे -

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढमस्य पा ठं सुरे।
कृष्णाय गोपीनाथाय चक्रिणे मुरवैरिणे ।
नमस्तुभ्यं जगद्धात्रे मण्डलेस्मिन् स्थिरोभव ॥
ॐ विष्णुं आ. स्था. ॥२४॥

25. ब्रह्माग्न्योर्मध्ये वल्लयाम् -

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः
स्वधा नमः प्रपितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधा नमः ॥
ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः । पितरः सोम्यासः

अंसुयईयुरवृका ऋतज्ञास्तेनो ऽवंतु पितरो हवेषु ॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि मण्डले ऽस्मिन् स्थिराभव ॥

ॐ स्वधामावाहयामि स्था. ॥२५॥

26. ब्रह्मयमयोर्मध्ये वाप्याम्

ॐ परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात् ।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा ँ रीरिषो मोत वीरान् ॥

मृत्युरोगानंतकस्य प्रेष्यान् प्राणहरान क्षणात् ।
मण्डले स्थापयामीह पूजार्थ लोक – नाशकान् ॥

ॐ मृत्युरोगेगभ्यो नमः। आ. स्था. ॥२६॥

27. ब्रह्म निर्ऋतिर्मध्ये वल्ल्याम् -

ॐ गणानांत्वा गणपति ठँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ठँ हवामहे निधिनांत्वा निधिपति ठँ हवामहे वसो मम आहमजासी गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।

ॐ गणानांत्वा गणपति ठँ हवामहे कवि कविना मुपमश्रवस्तमम् । ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः श्रृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥

भो गणपति इहागच्छ इहतिष्ठ ॥२७॥

28. ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये वाप्याम् -

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्त्रवंतुनः॥

पावनाः सर्वलोकानां निमग्नाः शुद्धिकारकाः ।
सर्वपापहराः श्रेष्ठा मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥

भो आपः इहागच्छ इहतिष्ठ ॥२८॥

29. ब्रह्मवायवोर्मध्ये वल्ल्याम् -

ॐ मरुतोयस्यहिक्षये पाथदिवोविमहसः । स सु गोपात मोजनः ॥

सुगंधिनश्च शैत्याढ्या मन्द मन्द वहाः सदा ।
तानहं स्थापयामीह मरुतो मण्डले शुभे ॥

ॐ मरुतमावाहयामि स्था. ।।२९।।

30. ब्रह्मपादमूले कर्णिकाधः -

ॐ स्योना पृथिवी नो भवा नृक्षरा निवेशनी ।
यच्छानः शर्म्म सप्रथाः ।।

पृथिव्याधार्यते विश्वं दुर्वाहं सागरैर्नगै ।
अतस्त्वां स्थापयामिह मण्डले ब्रह्मणः पदे ।।

भो भूमे इहागच्छ इहतिष्ठ ।।३०।।

31. तत्रैव गंगादि नदीभ्यः -

ॐ इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं स च तां परुष्णाया
असिकन्या मरुद्वृधः वितस्तयार्जीकीये श्रृणुह्या सुषोमया ।।

गंगा सिन्धु सरस्वति च यमुना गोदावरी नर्मदा ।
कावेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका ।।
क्षिप्रा वेदवती महासुरनदी ख्याता गया गण्डकी ।
पूर्णाः पूर्ण जलैः समुद्र सहितां आयान्तु मे मण्डले ।।

भो गंगादि नद्य इहागच्छ इहतिष्ठ ।।३१।।

32. तत्रैव -

ॐ इमम्मे वरुण श्रुधि हवद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ।।
ॐ धाम्नो धाम्नोराजन् नितो वरुण नो मुंच ।
यदायो अध्न्या वरुणेति शपामेह ततो वरुण नो मुंच ।।

समुद्रः सर्वतोयेषु श्रेष्ठो वै हरिवल्लभः ।
मण्डले स्थापयामिह तं नदीशं सुखाप्तये ।।

भो सागरः इहागच्छ इहतिष्ठ ।।३२।।

33. ब्राह्मणः मस्तके कर्णिकोपरि -

ॐ भुर्भुवः स्वः मेरवे नमः आ. स्था. ।।३३।।

३४. परिधिसमीपे—सोमस्योत्तरतः— ॐ गदायै नमः। आ. स्था।।३४।।

३५. ईशान्यां — ॐ त्रिशूलाय नमः। त्रिशूलं आ. स्था. ।।३४।।

३६. इन्द्रस्यपूर्वे — ॐ वज्राय नमः। वज्रं आ. स्था. ।।३६।।

३७. आग्नेयां — ॐ शक्तये नमः। शक्तिं आ. स्था. ।।३७।।
३८. दक्षिण — ॐ दण्डाय नमः। दण्डं आ. स्था. ।।३८।।
३९. नैर्ऋत्यां — ॐ खड्गाय नमः। खड्ग आ. स्था. ।।३९।।
४०. पश्चिमे — ॐ पाशाय नमः। पाशं आ. स्था. ।।४०।।
४१. वायव्यां — ॐ अंकुशाय नमः। अंकुशं आ. स्था. ।।४१।।

42. उत्तरे -

ॐ अभित्वा गोत्तमागिरा जातवेदो विचर्षणे । द्युम्नैरभि प्रणोनुमः।।

।। ॐ गौतमं आ. स्था. ।।४२।।

43. ईशान्यां -

ॐ एवानः स्पृधः समजा समत्विन्द्ररा रंध्रिमिथतीरदेवीः ।
विद्यामवस्तोर वसा गृणंतो भारद्वाजा उतत इन्द्र नूनम् ।।

।। ॐ भारद्वाजं आ. स्था. ।।४३।।

44. पूर्वे -

ॐ प्रसूतोभक्षमकरं च रावपिस्तोयं चेमं प्रथमः सूरिरून्मृजे ।
सुते सातेन यद्यागमं वां प्रति विश्वामित्र जमदग्नीदये ।।

।। ॐ विश्वामित्रं आ. स्था. ।।४४।।

45. आग्नेयां -

ॐ ऋये मंत्र कृतां स्तोयै कश्यपोद् वर्धयन् गिर सोमंनमस्य
राजानं यो जज्ञे वारूधांपतिरिन्द्रायेन्दो परिस्त्रव ।

।। ॐ कश्यपं आ. स्था. ।।४५।।

46. दक्षिणे -

ॐ गणाना जमदग्निनायोना वृतस्य सीदतं । पातं सोममृतावृधा।।

।। ॐ जमदग्निं आ. स्था. ।।४६।।

47. नैर्ऋत्यां -

ॐ उतासि मैत्रा वरणो वसिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन् मनसोधिजातः ।
द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वेदेवाः पुष्करे त्वा ददन्ता ।।

।। ॐ वसिष्ठं आ. स्था. ।।४७।।

48. पश्चिमे -

अत्रिर्यद्वाभवरोहंन्वीत सम जोहवीन्नाध मानेवयोषा ।
श्येमस्य चिज्जन सा नूतने नागच्छत मश्विना शंतमेन ।

।। ॐ अत्रिं आ. स्था. ।।४८।।

49. वायव्यां -

ॐ अत्रेर्यथानु सूर्यास्याद्वसिष्ठ स्याप्यरुंधती
कोशिकस्य यथा सती तथा त्वमपिभर्तरि ।।

ॐ अरुंधतीं आ. स्था. ।।४९।।

५०. पूर्वे – ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः। ऐन्द्रीं आ. स्था. ।।
५१. आग्नेयाम्–ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै नमः। कौमारीं आ. स्था. ।।
५२. दक्षिणे – ॐ भ र्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः। ब्राह्मीं आ. स्था. ।।
५३. निऋत्ये – ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः। वाराहीं आ. स्था. ।।
५४. पश्चिमे–ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः। चामुण्डां आ. स्था।।
५५. वायव्यां – ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीं आ. स्था. ।।
५६. उत्तरे –ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीं आ. स्था. ।।
५७. ईशाने–ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः। वैनायकीं आ. स्था. ।।

सर्वताभद्र मण्डले विशेषदेवता आवाहनम्

अन्य विशेष देवताओं में अष्ट भैरव, अष्टरुद्र एवं अष्ट नाग देवताओं के "चतुर्थी "से आवाहन एवं प्रथमा से स्थापन पूर्वादि क्रम से करें।

अष्ट भैरव :– ॐ असितांग भैरवाय नमः पूर्वे। ॐ रूरू भैरवाय नमः। ॐ चण्ड भैरवाय नमः। ॐ क्रोध भैरवाय नमः। ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। ॐ कपाल भैरवाय नमः। ॐ भीषण भैरवाय नमः। ॐ संहार भैरवाय नमः।

रुद्रावाहनम् :– ॐ भवाय नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ उग्राय नमः। ॐ भीमाय नमः। ॐ महते नमः।

अष्ट नाग आवाहनम् – ३ॐ अनंताय नमः। ३ॐ वासुकये नमः। ३ॐ तक्षकाय नमः। ३ॐ कुलिशाय नमः। ३ॐ कर्कोटकाय नमः। ३ॐ शंखपालाय नमः। ३ॐ कंबलाय नमः। ३ॐ अश्वराय नमः।

इस प्रकार आवाहन करके प्रतिष्ठा करें।

३ॐ मनोजुतिर्जुषतामाजस्य......। ३ॐ तदस्तु मित्रा वरुणतदग्ने शंयोर स्मभ्यमिदमस्तु शस्तं। अशीमपि गाधे मुतप्रतिष्ठां नमो दिवे वृहते सादनाय।।

एता ब्रह्मादि देवताः सर्वतोभद्र मण्डले सुप्रतिष्ठाः मम संमुखा सुप्रसन्ना वरदाभवत। सुप्रतिष्ठिता सन्तु।।

स्वर्ण मूर्ति बनायी हो तो "प्राण प्रतिष्ठा" विधि व मंत्रो से पृष्ठ संख्या ५२५ के अनुसार करके मंडल पर स्थापित करें।

तत् पश्चात् आवाहितदेवताओं का षोडशोपचार से पूजन करें।

नोट :– सर्वतोभद्र मंडल पर सभी देवताओं का आवाहन किया जा सकता है। जिस देवता की प्रधान पूजा हो उसकी प्रतिमा या स्वर्ण मूर्ति मंडल के मध्य स्थापित करें।

विष्णु पूजन में कहीं–कहीं अपवाद हो जाता है कि सर्वतोभद्र व विष्णु पूजन में अक्षत (चावल) नहीं **"यवाक्षत"** चढाये जाते है परन्तु **"शालिग्राम प्रतिमा"** पर ही **चावल का निषेध** है एवं विशेषतः एकादशी के दिन विष्णु के चावल नहीं चढाये जाते है। यथा लोकाचारानुसार भी किया जा सकताहै।

विष्णु विशेषांग पूजा एवं अभिषेक

विष्णु कि विशेष पूजा में भगवान के पृथक–पृथक अंगो में उनके पृथक नाम से अंग देवता की पूजा तथा भिन्न–भिन्न स्वरूप पत्र व पुष्प भी चढाये जाते है। पुरुष सूक्त एवं विष्णु सूक्त से अभिषेक करें।

अथ विष्णु सूक्तम्

३ॐ विष्णोर्नुकंवीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानिविमये रजांसि । यो ऽ अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रयायस्त्रे धोरुगायः ।१।। विष्णोरराट्मसि

विष्णोः श्नप्त्रेस्थो । विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।।२।। तदस्य प्रियमभिपाथो अस्यां नरोयत्र देव यवो मदंति । उरूक्रमस्य सहिबन्धुरित्था विष्णोः पदे परमेमध्व उत्सः ।।३।। प्रतद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणे स्वधिक्षियंति भुवनानि विश्वा।।४।। परो मात्रया तन्वावावृधान नते महित्व मन्वश्नुवन्ति । उभेतेविद्म रजसी पृथिव्या विष्णोर्देव परमस्य वित्से ।।५।। विचक्रमे पृथिवी मेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन् । ध्रुवासो अस्यकीर योजना स उरूक्षितिं सुजनिमाचकार ।।६।। त्रिर्देव पृथिवी मेष एतां विचक्रमे शतचंस महित्वा । प्रविष्णु रस्तु तव सस्तवीयान् त्वेषं ठं ह्यस्यध्थविरंत्रनाम् ।।७।। अतो देवा अवंतुनो यत्तो विष्णुः विचक्रमे। पृथिव्याः सप्तधामभिः ।।८।। इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम्। समूढमस्य पा ठं सुरे ।।९।। त्रीणिपदा विचक्रमेविष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन् ।।१०।। विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानिपश्यशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ।।११।। तद्विष्णोः परमं पदं सदापश्यंतिसूरयः। दिवी व चक्षुराततम् ।।१२।। तद्विप्रासो वियन्यवो जागृवां ठं सः समिंधते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ।।१३।।

।।इति विष्णु सूक्तम्।।

पुरुष सूक्त, विष्णु सूक्त से महाभिषेक के बाद शुद्धोदक स्नान करायें। वस्त्र, यज्ञोपवित, अलंकार धारण करायें। कुंकुम, गंध, अक्षत, सुगन्धित द्रव्य अर्पण करें। **तुलसी अर्पण करें –**

तुलसी हेमरूपां च रत्नरूपां च मंजरी ।
भवमोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि हरिप्रियाम् ।।

अथ अंगपूजा

भगवान के सभी अंगो में गंध पुष्पाक्षत से अर्चन करें।

ॐ अनंताय नमः पादौ। पूजयामि नमः।।१।। ॐ संकर्षणाय नमः गुल्फौ। पूजयामि नमः।।२।। ॐ पद्मनाभाय नमः। जंघे पूजयामि नमः।।३।। ॐ विश्वरूपाय नमः जानुनी। पूजयामि नमः।।४।। ॐ

केशवाय नमः उरू। पूजयामि नमः।।५।। ३ॐ विश्वस्यै नमः कटिं। पूजयामि नमः।।६।। ३ॐ प्रद्युम्नाय नमः नाभिं। पूजयामि नमः।।७।। ३ॐ परमात्मने नमः हृदये। पूजयामि नमः।।८।। ३ॐ वैकुण्ठाय नमः कण्ठं। पूजयामि नमः।।९।। ३ॐ शस्त्रधारिणे नमः बाहुं। पूजयामि नमः।।१०।। ३ॐ वाचस्पतये नमः मुखं। पूजयामि नमः।।११।। ३ॐ सहस्राक्षाय नमः नेत्रं। पूजयामि नमः।।१२।। ३ॐ मधुसूदनाय नमः ललाटं। पूजयामि नमः।।१३। ३ॐ सर्वात्मने नमः शिरः। पूजयामि नमः।।१४।। ३ॐ सर्वेश्वराय नमः सर्वाङ्गे। पूजयामि नमः।।१५।।

अथ पत्र पूजा

भगवान के विभिन्न स्वरूपों को भिन्न–भिन्न पत्र व पुष्प प्रिय है। अत: उनके उन नामों का स्मरण करते हुये पत्र व पुष्प चढावें।

३ॐ अनंताय नमः। तुलसी पत्रं समर्पयामि नम।।१।। ३ॐ संकर्षणाय नमः। भृंगराज पत्रं समर्पयामि नमः।।२।। ३ॐ परमात्मने नमः। जातीपत्रं समर्पयामि नमः।।३।। ३ॐ विश्वरूपिणे नमः। अपामार्ग समर्पयामि नमः।।४।। ३ॐ विश्वनाथाय नमः। बिल्वपत्रं समर्पयामि नमः।।५।। ३ॐ पद्मनाभाय नमः। करवीरपत्रं समर्पयामि नमः।।६।। ३ॐ महात्मने नमः। शमीपत्रं समर्पयामि नमः।।७।। ३ॐ श्रीकण्ठाय नमः। अर्जुनपत्रं समर्पयामि नमः।।८।। ३ॐ सर्वास्त्रधारिणे नमः। धत्तूरपत्रं समर्पयामि नमः।।९।। ३ॐ वाक्पतये नमः। विष्णुक्रांतपत्रं समर्पयामि नमः।।१०।। ३ॐ केशवाय नमः। दाडिमीपत्रं समर्पयामि नमः।।११।। ३ॐ सर्वात्मने नमः। मातुलिंगपत्रं समर्पयामि नमः।।१२।। ३ॐ महीधराय नमः। देवदारुपत्रं समर्पयामि नमः।।१३।। ३ॐ अच्युताय नमः। मरुपत्रं समर्पयामि नमः।।१४।।

अथ पुष्प पूजा

३ॐ अनंताय नमः। पद्मपुष्पं सम.।।१।। ३ॐ विष्णवे नमः। जातीपुष्पं सम.।।२।। ३ॐ शिष्टेष्ठाय नमः। कर्मवीरपुष्पं सम.।।३।। ३ॐ केशवाय नमः। चंपकपुष्पं सम.।।४।। ३ॐ अच्युताय नमः। कल्हारपुष्पं सम.

।।५।। ॐ सहस्रजिते नमः। केतकीपुष्पं सम.।।६।। ॐ अनंतरूपाय नमः। पारिजात पुष्पं सम.।।७।। ॐ इष्टाय नमः। शतदलपुष्पं सम. ।।८।। ॐ विशिष्टाय नमः। पन्नागपुष्पं सम.।।९।।

अंग पूजा आवाहन पश्चात् चर्तुगंध, सौभाग्यद्रव्य, सुगंधित द्रव्य, धूप दीप नैवेद्य अर्पण करें।

आचमन्, अपोशन, हस्तप्रक्षालन, मुखप्रक्षालन करावें। करोद्वर्तनार्थे चंदन अर्पण करें। पूगीफल, ताम्बूल, दक्षिणा, फल भेंट करके (ऋतुफल, श्रीफल सहित) विशेषार्घ प्रदान करें।

छत्र अर्पण करें। चामर अर्पण करें। —

ॐ नक्षत्र राजेन्द्र मरीचि शुभ्रैर्नक्षत्रयैलागरूवासितैश्च ।
नक्षत्रिणं विष्णुमहं भवंतं श्रीतालवृन्तैः परिवीजयामि ।।

दर्पण –

ॐ कर्पूर कुन्देदु करावदातं गोरत्न वैडूर्यखचिन्मनोज्ञं ।
प्रकल्पितं ते वदनाम्बुजाग्रै लक्ष्मीपते स्वीकुरु दर्पणं च ।।

पादुका अर्पण करें एवं नीराजन करें। पुष्पांजली अर्पण करें।

पार्षदपूजा :– ॐ विश्वक्सेनाय नमः। ॐ उद्धवाय नमः। ॐ अक्रूरादि पार्षदाय नमः।

अथ गणपतिभद्रमण्डलदेवता स्थापनम्

गणपतिभद्रमण्डल देवता आवाहन २ तरह से है।

(१) **सर्वतोभद्रमण्डल** देवताओं की तरह आवाहन।

(२) **तांत्रिक क्रमेण** भद्रमण्डल देवता आवाहन। इसमें गणपति के ही विशेष अंग देवताओं को आवाहन है जो मुख्य है।

अतः दोनों ही विधियों से देवता स्थापन क्रम दिया जा रहा है। यथा रुचि आवाहन करें।

(1) गणपति भद्रमण्डले सर्वतोभद्र विधिनाऽवाहनम्

1. मध्ये –

उद्यद्दिनेश्वर रुचिं निजहस्त पद्मैः

पाशांकुशाभय वरादन्दधतं गजास्यम् ।
रक्तांबरं सकलदुःखहर गणेशं
ध्यायेत्प्रसन्नामखिलाभरणाभिरामम् ।।

ततो "गणानानां त्वां" मंत्रेण गणपतिं आवाह्य । भो गणपति इहागच्छ इहतिष्ठ प्रसन्नो भव।।

दिक्पालस्थापनम् – परिधि समीप वापी व श्वेत खण्डेंदुओं में।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः। सोम इहागच्छ इहतिष्ठ।। (उत्तरे)
३. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः। ईशान इहागच्छ इहतिष्ठ।। (ईशांन)
४. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः। इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ।। (पूर्वे)
५. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नेय नमः। अग्नि इहागच्छ इहतिष्ठ।। (आग्नेय)
६. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः। यम इहागच्छ इहतिष्ठ।। (दक्षिणे)
७. ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋत्यये नमः। निर्ऋते इहागच्छ इहतिष्ठ।। (नैऋत्ये)
८. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः। वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ।। (पश्चिमे)
९. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः। वायो इहागच्छ इहतिष्ठ।। (वायवे)

भद्रमण्डले स्थापनम् (रक्तपुंजेषु)

१०. वायुसोमयोर्मध्ये – ॐ भू. अष्ट वसुभ्यो नमः अष्टवसुं आ. स्था।।
११. सोमईशानयोर्मध्ये – ॐ भू. एकादशरुद्रेभ्यो नमः एकदश रुद्र आ. स्था. ।।
१२. ईशानपूर्वयोर्मध्ये – ॐ भू. द्वादश आदित्येभ्यो नमः द्वादश आदित्य इहागच्छ इहतिष्ठ।।
१३. इन्द्राग्न्योर्मध्ये – ॐ भू. द्वादश अश्विनाभ्यां नमः अश्विनौ इहागच्छ इहतिष्ठ।।
१४. अग्नियमयोर्मध्ये – ॐ भू. विश्वेभ्यो देवेभ्यो पितृभ्यो नमः। आ. स्था.।।
१५. यमनिर्ऋतिमध्ये – ॐ भू. सप्तयक्षेभ्यो नमः। सप्तयक्षान् आ. स्था।।
१६. निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये – ॐ भू. भूतनागेभ्यो नमः। भूतनाग आ.

स्था ।।

१७. वरुणवायव्योर्मध्ये – ॐ भू. गंधर्वप्सरेभ्यो नमः। गंधर्वप्सरसः आ. स्था.

वाप्याम् (श्वेत भद्रे) उत्तर पूर्वादि क्रमेण

१८. उत्तरे।। ॐ भू. प्रमोदाय नमः प्रमोदं आ. स्था.।।

१९. पूर्वे।। ॐ भू. सुमुखाय नमः सुमुखं आ. स्था.।।

२०. दक्षिणे।। ॐ भू. दुर्मुखाय नमः दुर्मुखं आ. स्था.।।

२१. पश्चिमे।। ॐ भू. विघ्ननाशाय नमः विघ्ननाश आ. स्था.।।

वल्ल्याम् ईशान आग्नेयादि क्रमेण -

२२. ब्रह्म ईशानमध्ये।। – ॐ भू. दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः दक्षादिगणान् आ. स्था.।।

२३. ब्रह्माग्नियोर्मध्ये।। – ॐ भू. स्वधायै नमः स्वधां आ. स्था.।।

२४. ब्रह्मनिऋत्योर्मध्ये।। – ॐ भू. सूर्याय नमः सूर्य आ. स्था.।।

२५. ब्रह्मवायव्योर्मध्ये।। – ॐ भू. मरुद्भयो नमः मरुतः आ. स्था.।।

२६. कर्णिका वापीयोर्मध्ये उत्तरे।। – ॐ भू. स्कंदाय नमः स्कंद आ. स्था।।

२७. स्कंदस्योत्तरे।। – ॐ भू. नंदिने नमः नंदीं आ. स्था.।।

२८. नंदीस्योत्तरे।। – ॐ भू. शूलमहाकालाभ्यां नमः शूलमहाकाल आ. स्था।।

२९. ब्रह्मइंद्रयोर्मध्ये वाप्याम्।।–ॐ भू. दुर्गायै नमः दुर्गा आ. स्था।।

३०. दुर्गा पूर्वे।। – ॐ भू. विष्णवे नमः विष्णुं आ. स्था.।।

३१. ब्रह्मयमयोर्मध्ये।। – ॐ भू. मृत्युरोगाभ्यां नमः मृत्युरोगान् आ. स्था.।।

३२. ब्रह्मणपादमूले।। ॐ भू. पृथिव्यै नमः पृथ्वीं आ. स्था.।।

३३. तत्रैव पृथिव्योत्तरतः।। – ॐ भू.गंगादिसरितभ्यो नमः गंगादिसप्तसरितः आ. स्था.।।

३४. ।तत्रैव गङ्गाद्युतरे।। – ॐ भू. सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरान्

आ. स्था.।।

३५. ब्रह्मणः मस्तके कर्णिकोपरि।। – ॐ भू. मेरवे नमः मेरुं आ. स्था।।

सत्वपरिधौ उत्तर, ईशान, क्रमेण वायव्यपर्यन्त आयुधानि स्थापयेत्।

।।३६।। ॐ भू. गदायै नमः। ।।३७।। ॐ भू. त्रिशूलाय नमः । ।।३८।। ॐ भू. वज्राय नमः । ।।३९।। ॐ भू. शक्त्यै नमः । ।।४०।। ॐ भू. दण्डाय नमः । ।।४१।। ॐ भू. खड्गाय नमः । ।।४२।। ॐ भू. पाशाय नमः । ।।४३।। ॐ भू. अंकुशाय नमः अंकुशं आ. स्था.।

रजपरिधौ उत्तर ईशान क्रमेण वायव्य पर्यन्त ऋषीन् आवाह्य।

।।४४।। ॐ भू. गौतमाय नमः । ।।४५।। ॐ भू. भारद्वाजाय नमः । ।।४६।। ॐ भू. विश्वामित्राय नमः । ।।४७।। ॐ भू. कश्यपाय नमः । ।।४८।। ॐ भू. जमदग्नये नमः । ।।४९।। ॐ भू. वसिष्ठाय नमः । ।।५०।। ॐ भू. अत्र्यै नमः । ।।५१।। ॐ भू. अरुन्धत्यै नमः ।

तमः परिधौ पूर्वादिक्रमेण ईशान पर्यन्त मातृका आवाह्य।

।।५२।। ॐ भू. ऐन्द्र्यै नमः । ।।५३।। ॐ भू. कौमार्यै नमः । ।।५४।। ॐ भू. ब्राह्म्यै नमः । ।।५५।। ॐ भू. वाराह्यै नमः । ।।५६।। ॐ भू. चामुण्डायै नमः । ।।५७।। ॐ भू. वैष्णव्यै नमः । ।।५८।। ॐ भू. माहेश्वर्यै नमः । ।।५९।। ॐ भू. वैनाक्यै नमः वैनाकीं आ. स्था.।

ततो मनोजूति मंत्रेण सुप्रतिष्ठा कुर्यात् एवं षोडशोपचारै संपूज्य पुष्पांजलिं मादाय। प्रार्थयेत् –

गलद्दान गण्डं महाहस्ति तुण्डं
सुपर्व प्रचण्डं धृतार्द्धेन्दु खण्डम् ।
करास्फोटि ताण्डं महाहस्त दण्डं
हताढ्यारि मुण्डं भजे वक्रतुण्डम् ।।१।।

स्मरणास्तव शंभु विध्यजेन्द्विन शक्रादि सुराः कृतार्थताम् ।
गणपाऽऽपुरद्याघभंजन–द्विपराजास्य सदैव पाहिमाम् ।।२।।
शरणं भगवान्विनायकः शरणं मे सततं च सिद्धि का ।

शरणं पुनरेवतावुभा शरणं नान्यदुपैमि दैवतम् ।।३।।

अथ गणपतिभद्रमण्डले तंत्रोक्तविधिना देवता स्थापनम्

इस विधि में गणपति के प्रधान स्वरूपों का विशेष आवाहन है अतः इसका विशेष महत्व है।

१. *गणपति भद्रमण्डले मध्ये* – *गणानां त्वां* इति मंत्रेण गणपतिं आवाह्य भो वरद गणपतिं इहागच्छ इहतिष्ठ प्रसन्नो वरदो भव।

सत्व परिधौ समीपे उत्तरारंभ वायव्य पर्यन्त तत् पश्चात् मंडल मध्ये गणपति पीठ शक्तिं आवाह्य।

२. *पूर्वे परिधि समीपे* – ॐ भू. तीव्रायै नमः तीव्रां आ. स्था.।।

३. *आग्नेय खण्डेंदौ समीपे* – ॐ भू. चालिन्यै नमः चालिनीं .स्था।।

४. *दक्षिणे* – ॐ भू. नंदायै नमः नंदां आ. स्था.।।

५. *नैऋत्यां खण्डेंदों*– ॐ भू. भोगदायै नमः भोगदा आ. स्था.।।

६. *पश्चिमे परिधि समीपे* – ॐ भू. कामरूपिण्यै नमः कामरूपिणीं आ. स्था.।।

७. *वायवे खण्डेंदौ समीपे* – ॐ भू. उग्रायै नमः उग्रां आ. स्था.।।

८. *उत्तरे परिधि समिपे* – ॐ भू. तेजोवत्यै नमः तेजवतीं आ. स्था।।

९. *ईशान खण्डेंदौ समीपे* – ॐ भू. सत्यायै नमः सत्यां आ. स्था।।

१०. *मण्डल मध्ये* – ॐ भू. विघ्ननाशिन्यै नमः विघ्ननाशिनीं आ. स्था।।

अष्टभद्रे (रक्त पुंजेषु) गणपति शक्ति आवाह्य।

११. *ईशान पूर्व मध्ये* – ॐ भू. विद्यायै नमः विद्यां आ. स्था.।।

१२. *पूर्वआग्नेय मध्ये* – ॐ भू. विधात्रै नमः विधात्रीं आ. स्था.।।

१३. *आग्नेय दक्षिणमध्ये* – ॐ भू. भोगदायै नमः भोगदां आ. स्था।।

१४. *दक्षिण निऋति मध्ये* – ॐ भू. विघ्नघातिन्यै नमः विघ्नघातिनीं आ. स्था.।।

१५. ***निर्ऋति पश्चिममध्ये*** – ॐ भू. निधिप्रदायै नम: निधिप्रदां आ. स्था.।।

१६. ***पश्चिम वायोर्वोर्मध्ये*** –ॐ भू. पापघ्नै नम: पापघ्नीं आ. स्था।।

१७. ***वायुसोमयोर्मध्ये*** – ॐ भू. पुण्याय नम: पुण्यां आ. स्था.।।

१८. ***सोमईशानयोर्मध्ये***–ॐ भू. शशिप्रायै नम: शशिप्रभां आ.स्था।

सत्त्वपरिधौ समीपे - दशगणपति स्वरूपं आवाह्यं।

१९. *पूर्वे वाप्याम्*–ॐ भू. एक वक्रतुण्डाय नम: वक्रतुंडं आ. स्था।।

२०. *आग्नेयां खंडेंदौ*–ॐ भू. एक दंष्ट्राय नम: एकदंष्ट्रं आ.स्था।।

२१. *दक्षिणे वाप्याम्*–ॐ भू. लंबादराय नम: लंबोदरं आ. स्था.।।

२२. *निर्ऋत्यां खण्डेंदौ*–ॐ भू. विकटाय नम: विकटं आ. स्था.।।

२३. *पश्चिमे वाप्याम्*–ॐ भू. धूम्रवर्णाय नम: धूम्रवर्ण आ. स्था.।।

२४. *वायव्यां खण्डेंदौ*–ॐ भू. विघ्नराजाय नम: विघ्नराजं आ. स्था।

२५. *उत्तरे वापी समीपे* –ॐ भू. गजाननाय नम: गजाननं आ. स्था।

२६. *ईशान खण्डेंदौ*–ॐभू. विनायकाय नम: विनायकं आ. स्था।।

२७. *प्राची ईशानमध्ये*–ॐ भू. गणपतये नम: गणपतिं आ. स्था.।।

२८. *पश्चिम निर्ऋति मध्ये* – ॐ भू. हस्तिदंताय नम: हस्तिदंत आ. स्था.।।

ईशानकोणसमारभ्यवायव्य पर्यन्त कृष्णश्रृंखलायेषु -

२९. *ईशाने कृष्ण श्रृंखलां*–ॐ भू. विष्णवे नम: विष्णुं आ. स्था।।

३०. *आग्नेय कृष्ण श्रृंखलां*–ॐ भू. शिवाय नम: शिवं आ. स्था।।

३१. *नैर्ऋत्ये कृष्ण श्रृंखलां*–ॐ भू. सूर्याय नम: सूर्यं आ. स्था.।।

३२. *वायव्ये कृष्ण श्रृंखलां*–ॐ भू. देव्यै नम: देवीं आ. स्था.।।

ईशान , आग्नेय, निर्ऋति, वायव्य कोणे नील वल्ल्याम् प्रतिकोणेषु द्वौ द्वौ मातृकां स्थापयेत्।

ईशानकोणे -

३३. ॐ भूर्भुव: स्व: ब्राह्मयै नम: ब्राह्मीं आ. स्था.।।

३४. ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीं आ. स्था.॥

आग्नेयकोणे -

३५. ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै नमः कौमारीं आ. स्था.॥

३६. ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः वैष्णवीं आ. स्था.॥

नैऋतिकोणे -

३७. ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः वाराहीं आ. स्था.॥

३८. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः इंद्राणीं आ. स्था.॥

वायव्यकोणे -

३९. ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः चामुण्डां आ. स्था.॥

४०. ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीं आ. स्था.॥

श्वेतभद्रे वाप्यां पूर्वादि क्रमेण -

४१. *पूर्ववाप्याम्*—ॐ भूर्भुवः स्वः सुमुखाय नमः सुमुखं आ. स्था.॥

४२. *दक्षिण वाप्याम्*—ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्मुखाय नमः दुर्मुख आ. स्था॥

४३. *पश्चिम वाप्याम्*—ॐ भूर्भुवः स्वः विघ्ननाशाय नमः विघ्ननाश आ. स्था.॥

४४. *उत्तर वाप्याम्*—ॐ भूर्भुवः स्वः प्रमोदाय नमः प्रमोद आ. स्था॥

ततौ सत्त्व परिधौ दिक्पाल तथा रजः परिधौ आयुध एवं तमः परिधौ अष्टभैरवं आवाहयेत्।

सत्त्वपरिधौ -

४५. *पूर्वे*— इंद्राय नमः। ४६. आग्नेयां — अग्नये नमः। ४७. दक्षिणे — यमाय नमः। ४८. नैर्ऋत्ये — नैर्ऋत्ये नमः। ४९. पश्चिमे — वरुणाय नमः। ५०. वायव्यां — वायवे नमः। ५१. उत्तरे — कुबेराय नमः।

रजपरिधौः — ५२. पूर्वे— वज्राय नमः। ५३. आग्नेयां — शक्त्यै नमः। ५४. दक्षिणे — दण्डाय नमः। ५५. नैर्ऋत्यां — खड्गाय नमः। ५६. पश्चिमे — पाशाय नमः। ५७. वायव्यां — अंकुशाय नमः। ५८. उत्तरे — गदाय नमः। ५९. ईशाने — त्रिशूलाय नमः।

तमः परिधौ पूर्वादि क्रमेण अष्टभैरवं आवाहयेत् ।

६०. **पूर्वे** — ॐ भू. असितांग भैरवाय नमः। आ. स्था.। ६१. आग्नेये — ॐ भू. रुरुवभैरवाय नमः। ६२. दक्षिणे — ॐ भू. चण्डभैरवाय नमः। ६३. नैर्ऋत्यां — ॐ भू. क्रोधभैरवाय नमः। ६४. पश्चिमे — ॐ भू. उन्मत्तभैरवाय नमः। ६५. वायव्यां — ॐ भू. कापालि भैरवाय नमः। ६६. उत्तरे — ॐ भू. भीषणभैरवाय नमः। ६७. ईशाने — ॐ भू. संहार भैरवाय नमः।

"ॐ मनोजूति" मंत्रेण गणपतिभद्रमण्डल देवता संस्थाप्य। षोडशोपचारेन् संपूज्य।

अथ त्रिचत्वारिंशदं (43) रेखात्मक हरिहरमण्डलस्थ द्वादशलिंगतोभद्र अग्निपुराणोक्त मण्डल देवता स्थापनम्

हरिहरात्मक द्वादशलिङ्गतोभद्र ३६ रेखा एवं ४३ रेखा के दोनों तरह के प्रयोग में आते है।

दोनों ही मे मध्य में सर्वतोभद्र मण्डल देवताओं को आवाहन होता है। तथा सर्वतोभद्र मण्डल के बाहर द्वादश लिंगों के देवताओं का आवाहन, पूजन होता है। संकल्प करके पूजन प्रारंभ करें।

"आदौ सर्वतोभद्रमण्डल देवता आवाहन "

(मण्डल मध्य भागे) विधान पूर्व में दिया गया है।

ततो द्वादशलिंगोक्तदेवता आवाह्य -

"ईशानादि क्रम" से पूर्व दशा के तीनों लिंगों पर आवाहन करें।

चतुर्थी नाम मंत्र से आवाहन तथा प्रथमा से स्थापन करें। —

।१।। ॐ भूर्भुवः स्वः शिवाय नमः। शिवमावाहयामि स्थापयामि।। भो शिव इहागच्छ इहतिष्ठ।। (एवं विधि सर्वत्र)

।।२।। ॐ भू. तत्पुरुषाय नमः आ. स्था.।।३।। ॐ भू. पशुपतये

नमः आ. स्था.।

दक्षिण दिशा के तीनों लिंगो पर अग्निकोण से नैऋति की ओर क्रमशः

।।४।। ॐ भू. उग्राय नमः आ. स्था.।।५।। ॐ भू. अघोराय नमः आ. स्था.। ।।६।। ॐ भू. रुद्राय नमः आ. स्था.।

पश्चिम दिशा के तीनों लिंगो पर नैर्ऋत्य से वायव्य क्रमशः -

।।७।। ॐ भू. भवाय नमः आ. स्था.। ।।८।। ॐ भू. सद्योजाताय नमः आ. स्था.।।९।। ॐ भू. सर्वजाताय नमः आ. स्था.।

उत्तर दिशा के तीनों लिंगों पर क्रमशः -

।।१०।। ॐ भू. महालिंगाय नमः आ. स्था.।।११।। ॐ भू. वामदेवाय नमः आ. स्था.। ।।१२।। ॐ भू. भीमाय नमः आ. स्था.।

पूर्व दिशा में ईशानादि क्रम से वायव्य पर्यन्त प्रत्येक दिशा की चारों वापी कुल १६ वापियों में प्रत्येक देवता का आवाहन करें। —

।।१३।। ॐ भू. असितांग भैरवाय नमः आ. स्था.। ।।१४।। ॐ भू. रुरुभैरवाय नमः आ. स्था.।।१५।। ॐ भू. चण्ड भैरवाय नमः आ. स्था.। ।।१६।। ॐ भू. क्रोधभैरवाय नमः आ. स्था.।।१७।। ॐ भू. उन्मत्त भैरवाय नमः आ. स्था.। ।।१८।। ॐ भू. कपालि भैरवाय नमः आ. स्था.।।१९।। ॐ भू. भीषण भैरवाय नमः आ. स्था.।।२०।। ॐ भू. संहार भैरवाय नमः आ. स्था.। ।।२१।। ॐ भू. भवाय नमः आ. स्था.।।२२।। ॐ भू. शर्वाय नमः आ. स्था.। ।।२३।। ॐ भू. ईशानाय नमः आ. स्था.।।२४।। ॐ भू. पशुपतये नमः आ. स्था.। ।।२५।। ॐ भू. रुद्राय नमः आ. स्था.।।२६।। ॐ भू. उग्राय नमः आ. स्था.। ।।२७।। ॐ भू. भीमाय नमः आ. स्था.।।२८।। ॐ भू. महते नमः आ. स्था.।

ईशानेन्द्रयोर्मध्ये भद्रे — ।।२९।। ॐ भू. शूलिने नमः आ. स्था।।

इन्द्राग्न्योर्मध्ये — ।।३०।। ॐ भू. चन्द्रमौलिने नमः आ. स्था।।

अग्नियमयोर्मध्येभद्रे —।।३१।। ॐ भू. चन्द्रमसे नमः आ. स्था.।।

यमनिर्ऋत्योर्मध्ये — ।।३२।। ॐ भू. वृषभध्वजाय नमः आ. स्था.।।

निर्ऋति वरुणयोर्मध्येभद्रे – ।।३३।। ॐ भू. विलोचनाय नमः आ. स्था.।। *वरुणवायव्योर्मध्ये भद्रे* – ।।३४।। ॐ भू. शक्तिधराय नमः आ. स्था.।। *वायुसोमयोर्मध्ये भद्रे* –।।३५।। ॐ भू. महेश्वराय नमः आ. स्था.।। *सोमईशानयोर्मध्ये भद्रे* ।।३६।। ॐ भू. शूलधारिण्ये नमः आ. स्था.।।

ईशान कोण से वायव्य कोण पर्यन्त प्रतिकोणे दो दो बल्लियों में क्रमशः अष्ट देवताओं का स्थापन करें।

।।३७।। ॐ भू. अनंताय नमः आ. स्था. ।।३८।। ॐ भू. तक्षकाय नमः आ. स्था. ।।३९।। ॐ भू. कुलिशाय नमः आ. स्था. ।।४०।। ॐ भू. कर्कोटकाय नमः आ. स्था. ।।४१।। ॐ भू. शंखपालाय नमः आ. स्था.।।४२।। ॐ भू. कंबलाय नमः आ. स्था. ।।४३।। ॐ भू. अश्वतराय नमः आ. स्था. ।।४४।। ॐ भू. पृथिव्यै नमः आ. स्था.।।

अग्निकोणे सप्तशृंखला देवता स्थापयेत् -

।।४५।। ॐ भूम्यै. ।।४६।। ॐ हैहयाय. ।।४७।। ॐ माल्यवते. ।।४८।। ॐ पारिजाताय. ।।४९।। ॐ दिक्पतये. ।।५०।। ॐ महादेवाय. ।।५१।। ॐ विष्णवे नमः आ. स्था.।।

नैर्ऋत्यकोणे सप्तशृखला देवताः स्थापयेत् -

।।५२।। ॐ माल्यवते. ।।५३।। ॐ महारुद्राय. ।।५४।। ॐ कालाग्निरुद्राय. ।।५५।। ॐ द्वादशादित्येभ्यो. ।।५६।। ॐ महेश्वराय. ।।५७।। ॐ मृत्युरोगाभ्यां. ।।५८।। ॐ वैनायक्यै.।।

वायव्यकोणे सप्तशृखला देवताः स्थापयेत् -

शाकुन्तले।।५९।। ॐ हेमकूटाय. ।।६०।। ॐ भरताय. ।।६१।। ॐ नलाय. ।।६२।। ॐ रामाय. ।।६३।। ॐ सर्वभौमाय. ।।६४।। ॐ नैषधाय. ।।६५।। ॐ विन्ध्याचलाय.।।

ईशानकोणे सप्तशृखला देवताः स्थापयेत् -

।।६६।। ॐ हेमकूटाय. ।।६७।। ॐ गंधमादनाय. ।।६८।। ॐ कुलाचलाय. ।।६९।। ॐ हिमाचलाय. ।।७०।। ॐ पृथिव्यै. ।।७१।।

ॐ अनंताय. ।।७२।। ॐ कमलासनाय.।।

ईशानादि चारों कोणों में खण्डेन्दुओं में देवताओं का स्थापन करें।

ऐशान्ये – ।।७३।। ॐ अश्विनिकुमाराभ्यां.। आग्नेये – ।।७४।। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो.। नैर्ऋत्ये – ।।७५।। ॐ पितृभ्यो.। वायव्यां – ।।७६।। ॐ नागेभ्यो नमः आ. स्था.।

तद्बहिः सत्त्व परिधौ पूर्वे – ।।७७।। ॐ इन्द्राय.। । आग्नेय – ।।७८।। ॐ आग्नेय.। दक्षिणे – ।।७९।। ॐ यमाय.। नैर्ऋत्ये – ।।८०।। ॐ निर्ऋतये.। पश्चिमे – ।।८१।। ॐ वरुणाय.। वायव्ये – ।।८२।। ॐ वायवे.। उत्तरे – ।।८३।। ॐ कुबेराय.। ऐशाने – ।।८४।। ॐ ईशानाय.

तद्बहि रजः परिधौ – पूर्वे –।।८५।। ॐ वज्राय.। आग्नेये–।।८६।। ॐ शक्त्ये.। दक्षिणे – ।।८७।। ॐ दण्डाय.। नैर्ऋत्ये – ।।८८।। ॐ खड्गाय.। पश्चिमे – ।।८९।। ॐ पाशाय.। वायव्ये – ।।९०।। ॐ अंकुशाय.। उत्तरे – ।।९१।। ॐ गदायै.। ऐशाने – ।।९२।। ॐ त्रिशूलाय नमः आ. स्था.।

(तद्बिहि तमः परिधौ ऋषीन् स्थापयेत्) पूर्वे – ।।९३।। ॐ कश्यपाय। आग्नेये – ।।९४।। ॐ अत्रये.। दक्षिणे – ।।९५।। ॐ भारद्वाजाय.। निर्ऋत्ये – ।।९६।। ॐ विश्वामित्राय.। पश्चिमे – ।।९७।। ॐ गोतमाय.। वायव्ये – ।।९८।। ॐ जमदग्ने.। उत्तरे – ।।९९।। ॐ वसिष्ठाय.। ऐशाने ।।१००।। – ॐ भूर्भुवः स्वः भृगवे नमः भृगुमावाहयामि स्थापयामि ।। भो भृगु इहागच्छ इहतिष्ठ।।

ततो प्रतिष्ठापनम् – ॐ मनोजुति. ।। ॐ षट्पञ्चाशदुत्तर शत संख्यका हरिहरमण्डलदेवताः सुप्रतिष्ठाः वरदाः भवतः।।

षोडशोपचारैः वा अन्योपचारैः संपूज्य तेभ्यो पायस बलिं दद्यात्।।

पूजनान्ते सर्मपणम्—अनया पूजया हरिहर मण्डल देवताः प्रीयन्ताम्।।

।। इति हरिहरात्मक मण्डल देवता स्थापनम् ।।

अथ चतुर्विंशत्रद्रेखात्मकं द्वादशलिंगतोभद्र मंडल देवता स्थापनम्

इस मंडल में – मध्य में अष्टदल या रुद्र यंत्र बनाये उसके बाहर ३२ पद की पीत कर्णिका, कर्णिका के बाहर चारों दिशा में षटपद कृष्ण भद्र आठ संख्या में होंगें उनके बीच मे एकं नवपद श्वेतभद्र चारों ओर चार संख्याओं में होंगे। कृष्ण भद्र के नीचे नव भद्र पद रक्त होंगे। भद्र चारों दिशा में आठ भद्र द्वादश लिंगो पर प्रत्येक दिशा में मध्य के लिंग पर श्वेत लिंग पर श्वेत भद्र व अन्य दो पर दो पीत भद्र होने से कुल चार श्वेत भद्र आठ पीत बनेंगें। द्वादश लिंगो के साथ १३ पद की श्वेत षोडशवापी होगी। वापी के पास में षटपद अष्ट रक्त भद्र बनाये। चारों कोणों में श्वेत भद्र त्रिपद बनाये। त्रिखण्ड के ऊपर १० पद कृष्ण शृङ्खला बनाये। कृष्ण शृङ्खला के पास अष्ट २१ कुल पद की हरीत या नील बल्ली बनाये। बल्ली के समीप सप्तपद पीत वल्ली दोनों और बनाये। बाहर श्वेत रक्त कृष्ण परिधि बनाये।

अथ आवाहनम् :– हाथ में कुंकुंम गंध चर्चित अक्षत् व पुष्प लेंवें, देवता के आवाहित स्थान पर सुपारी रखें व अक्षत छोडें। मण्डुकादि पीठ पूजन में कहीं–कहीं भेद है। प्रत्येक देवता के नाम के पहिले ॐ या ॐ भू भुर्व: स्व: का उच्चारण करें। **(कर्णिका मध्ये)**

१. ***खण्डेन्दो*** - ईशान्याम् – **ॐ गुरवेनम: गुरुम् आ. स्था.,** आग्नेय्याम्–**गणपतये नम: गणपति आ. स्था.**। नैर्ऋत्याम्–**दुर्गायै नम: दुर्गा आ. स्था.**। वायव्याम् **क्षेत्रपालाय नम: क्षेत्रपाल आ. स्था.**। मध्ये **सदाशिवाय नम: आ. स्था.**।

२. ***अष्टदलमध्ये*** – **मंडूकाय नम:, कूर्माय., कालाग्निरुद्राय., वराहाय, पृथिव्यै., अनंताय.। स्कंदाय.। सुधासिंधवे.। नलाय.। पद्माय.। सर्वेषु –पत्रेभ्यो. केसरेभ्यो, पत्राग्रे(दलाग्रे)–कर्णिकायै.। मध्ये–सिंहासनाय: पद्मासनाय. नम:।**

३. ***अष्टदलवाह्ये*** – **पीतकर्णिका मध्ये** – अग्निकोणे – **धर्मायनम:,** नैर्ऋत्यै–**ज्ञानाय., वायवे–वैराग्यायै.**। ऐशान्यां–**ऐश्वार्याय.**। पूर्वे–

अर्धमाय.। दक्षिणे– अज्ञानय.। पश्चिमे–अवैराग्यायै। उत्तरे – अनैश्वर्याय.। अष्टदल मध्ये–चिदाकाशाय., योग पीठाय., साम्ब सदाशिवाय नमः।

४. *पीतकर्णिकोपरि पूर्वतश्चतुर्दिक्षु* – पृथिव्यै नमः पृथ्वी आ. स्था.। कपालाय नमः कपालं आ. स्था.। सप्तसरद्भ्यो नमः सप्त सरित आ. स्था.। सप्त सागरेभ्यो नमः सप्तसागरान् आ. स्था.।

५. *कर्णिका समीपे चत्वारि श्वेतभद्राणि सन्ति तेषु पूर्वादिचतुर्दिक्षु* – तत्पुरुषाय नमः तत्पुरुषा आ. स्था.। सद्योजाताय नमः सद्योजात आ. स्था.। अघोराय नमः अघोर आ. स्था.। सद्योजाताय नमः सद्योजात आ. स्था.। वामदेवाय नमः वामदेव आ. स्था.।

६. *श्वेतभद्रसमीपे कृष्णान्यष्ट भद्राणि सन्ति तेषु ईशानद्यष्ट दिक्षु* – भगवत्यैनमः भगवतिं आ. स्था.। उमायै नमः उमा आ. स्था.। शंकर प्रियायै नमः शंकर प्रियां आ. स्था.। पार्वत्यै नमः पार्वतीं आ. स्था.। गौर्यै नमः गौरीं आ. स्था.। काल्यै नमः कालीं आ. स्था.। कौमार्यै नमः कौमारिं आ. स्था.। विश्वंभर्यै नमः विश्वंभरी आ. स्था.।

७. *कृष्ण भद्राण्यद्यः अष्टौ नवपद रक्तभद्राणि सन्ति तेषु ईशान्याष्ट दिक्षु* – नंदिने नमः नंदी आ. स्था.। महाकालाय नमः महाकाल आ. स्था.। महावृषभाय नमः महावृषभ आ. स्था.। भृंगकिरीटने नमः भृंगकिरीट आ. स्था.। स्कंदाय नमः स्कंदाय आ. स्था.। उमापतये नमः उमापतिं आ. स्था.। चण्डेश्वराय नमः चण्डेश्वर आ. स्था.। योगसूत्राय नमः योगसूत्र आ. स्था.।

८. *चतुर्लिंगतोपरि श्वेत भद्राणी सन्ति तेषु* – पूर्वादि चतुर्दिक्षु –धात्रे नमः धात्रिं आ. स्था.। मित्राय नमः मित्र आ. स्था.। यमाय नमः यम आ. स्था.। रुद्राय नमः रुद्र आ. स्था।

९. *तत्समीपेलिंगोपरि अष्टौ पीतभद्राणिसन्ति तेषु ईशानाद्यष्ट दिक्षु* – वरुणाय नमः वरुण आ. स्था.। सूर्याय नमः

सूर्य आ. स्था.। भगाय नमः भगं आ. स्था.। विवस्वते नमः विवस्वत आ. स्था.। पुरुषोत्तमाय नमः पुरुषोत्तम आ. स्था.। सावित्रे नमः सावित्रीं आ. स्था.। त्वष्ट्रे नमः त्वष्टा आ. स्था.। विष्णवे नमः विष्णु आ. स्था.।

१०. *द्वादशलिंगतो देवतानां स्थापनम्* – पूर्वे – शिवाय नमः शिव आ. स्था.। तद्दक्षिणे–एकनेत्राय नमः एकनेत्र आ. स्था.। तद्दक्षिणे एकरुद्राय नमः एकरुद्र आ. स्था.।

दक्षिणस्याम् – त्रिमूतर्य नमः त्रिमूर्ति आ. स्था.। तत्पश्चिमे – श्रीकंठाय नमः श्रीकंठ आ. स्था.। तत्पश्चिमे वामदेवाय नमः वामदेव आ. स्था.।

पश्चिमायाम् – ज्येष्ठाय नमः ज्येष्ठं आ. स्था.। तदुत्तरे – श्रेष्ठाय नमः श्रेष्ठं आ. स्था.। तदुत्तरे – रुद्राय नमः रुद्रं आ. स्था.।

उत्तरे – कालाय नमः काल आ. स्था.। तत्पूर्वे – कलविकरणाय नमः कलविकरण आ. स्था.। तत्पूर्वे – बलविकरणाय नमः बलविकरण आ. स्था.।

११. *षोड्श श्वेत वापीषु* – (पूर्व मध्य की २ में) अणिमायै नमः अणिमा आ. स्था.। महिमायै नमः महिमा आ. स्था.। (दक्षिण मध्य की २ में) लघिमायै नमः लघिमा आ. स्था.। गरिमायै नमः गरिमा आ. स्था.। (पश्चिममध्य की २ में) प्रात्यै नमः प्राप्तीं आ. स्था.। प्राकाम्यै नमः प्राकाम्य आ. स्था.। (उत्तर मध्य की २ में) ईशितायै नमः ईशित्व आ. स्था.। वशितायै नमः वशितां आ. स्था.। (पूर्वी ईशाने) ब्रह्माणै नमः ब्रह्मीं आ. स्था.। (पूर्वी आग्नेय) माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीं आ. स्था.। (दक्षिणी आग्नेय) कौमार्यै नमः कौमारीं आ. स्था.। (दक्षिणी नैऋत्य) वैष्णव्यै नमः वैष्णवीं आ. स्था.। (पश्चिमी नैऋत्य) वाराह्यै नमः वाराहीं आ. स्था.। (पश्चिमी वायव्य) इंद्राण्यै नमः इंद्राणी आ. स्था.। (उत्तरी वायव्य) चामुण्डायै नमः चामुण्डां आ. स्था.। (उत्तरी ईशाने) चण्डिकायै नमः चण्डिकां आ. स्था.।

१२. *वापी समीपे अष्ट रक्तभद्राणि (षटपद) सन्नितेषु*

ईशान्याद्य अष्टदिक्षु — (पूर्वी ईशाने) असितांग भैरवाय नमः असितांग भैरव आ. स्था.। (पूर्वी आग्नेये) रुरुभैरवाय नमः रुरुभैरव आ. स्था.। (दक्षिणी आग्नेये) चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरव आ. स्था.। (दक्षिणी नैऋत्ये) क्रोध भैरवाय नमः क्रोध भैरव आ. स्था.। (पश्चिमी नैऋत्ये) उन्मत्त भैरवाय नमः उन्मत्त भैरव आ. स्था.। (पश्चिमी वायव्ये) काल भैरवाय नमः काल भैरव आ. स्था.। (उत्तरी वायव्ये) भीषण भैरवाय नमः भीषण भैरव आ. स्था.। (उत्तरी ईशाने) संहार भैरवाय नमः संहार भैरव आ. स्था.।

१३. *ईशानाद्य दिक्षु नील वर्ण वल्ली देवता* — घृताच्यै नमः — घृताचि आ. स्था.। मेनकायै नमः मेनका आ. स्था.। रम्भायै नमः रम्भा आ. स्था.। उर्वश्यै नमः उर्वशीं आ. स्था.। तिलोत्तमायै नमः तिलोत्तमा आ. स्था.। सुकेशायै नमः सुकेशं आ. स्था.। मंजुघोषयै नमः मंजुघोषं आ. स्था.। अप्सरोभ्यो नमः अप्सरां आ. स्था.।

१४. *मण्डलमध्ये परिधि समीपे कृष्ण वर्ण दशपदा शृंखला देवता स्थापनम्* — (आग्नेयम्) ॐ भवाय नमः भवं आ. स्था.। शिवाय नमः शिव आ. स्था.। रुद्राय नमः रुद्रं आ. स्था। पशुपतये नमः पशुपतिं आ. स्था.। उग्राय नमः उग्रं आ. स्था। भीमाय नमः भीमं आ. स्था.। महादेवाय नमः महादेवं आ. स्था.। ईशानाय नमः ईशानं आ. स्था.। अनंताय नमः अनंत आ. स्था.। वासुकीये नमः वासुकिं आ. स्था।

नैऋत्याम् — तक्षकाय नमः तक्षकं आ. स्था.। कुलीरकाय नमः कुलीरकं आ. स्था.। कर्कोटकाय नमः कर्कोटकं आ. स्था.। शंखपालाय नमः शंखपालं आ. स्था.। कंबलाय नमः कंबलं आ. स्था.। अश्वतराय नमः अश्वतर आ. स्था.। वैन्याय नमः वैन्यं आ. स्था.। अंगाय नमः अंगं आ. स्था.। हैहयाय नमः हैयय आ. स्था.। आ. स्था.। अर्जुनाय नमः अर्जुनं आ. स्था.।

वायव्यां – शाकुन्तलोयाय नमः शकुन्तले आ. स्था.। भरताय नमः भरतं आ. स्था.। नलाय नमः नलं आ. स्था.। रामाय नमः रामं आ. स्था.। सर्वभोमाय नमः सर्वभोमं आ. स्था.। निषधाय नमः निषधं आ. स्था.। विंध्याचलाय नमः विंध्याचलं आ. स्था.। माल्यवते नमः माल्यवतिं आ. स्था.। परियात्राय नमः परियात्रं आ. स्था.। सहयाय नमः सहयं आ. स्था.।

ऐशान्याम् – हेमकूटाय नमः हेमकूटं आ. स्था.। गंधमादनाय नमः गंधमादनं आ. स्था.। कुलाचलाय नमः कुलाचलं आ. स्था.। हिमवते नमः हिमवतं आ. स्था.। रैवताय नमः रैवतं आ. स्था.। देवगिरये नमः ददेवगिरि आ. स्था.। मलयाचलाय नमः मलयाचलं आ. स्था.। कनकाचलाय नमः कनकाचलं आ. स्था.। पृथिव्यै नमः पृथिवीं आ. स्था.। अनंताय नमः अनंतं आ. स्था.।

१५. *आग्नेयादि चतुर्दिक्षु खण्डेन्देषु* – अग्निकुमाराभ्यां नमः अग्निकुमार आ. स्था.। विश्वभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वदेव आ. स्था.। पितृभ्यो नमः पितरः आ. स्था.। नागेभ्यो नमः नागं आ. स्था.।

१६. *मण्डलाद्बहि श्वेतपरिधौ पूर्वादि क्रमेण* – इंद्राय नमः इंद्रं आ. स्था.। अग्नये नमः अग्निं आ. स्था.। यमाय नमः यमं आ. स्था.। निर्ऋत्ये नमः निर्ऋतिं आ. स्था.। वरुणाय नमः वरुणं आ. स्था.। वायवे नमः वायुं आ. स्था.। कुबेराय नमः कुबेरं आ. स्था.। ईशानाय नमः ईशानं आ. स्था.। उर्ध्वयाम् ब्राह्मणे नमः ब्रह्मं आ. स्था.। अधः अनन्ताय नमः अनन्तं आ. स्था.।

१७. *रक्तपरिधौ पूर्वादि क्रमेण* – वज्राय नमः वज्रं आ. स्था.। शक्त्यै नमः शक्तिं आ. स्था.। दण्डाय नमः दण्ड आ. स्था.। खड्गाय नमः खड्गं आ. स्था.। पाशाय नमः पाशं आ. स्था.। अंकुशाय नमः अंकुशं आ. स्था.। गदायै नमः गदां आ. स्था.। त्रिशूलाय नमः त्रिशूलं आ. स्था.। पद्माय नमः पद्मं आ. स्था.। चक्राय नमः चक्रं आ. स्था.।

१८. *कृष्णपरिधौ पूर्वादि क्रमेण* – कश्यपाय नमः कश्यपं

आ. स्था.। अत्रये नमः अत्रिं आ. स्था.। भारद्वाजाय नमः भारतद्वाजं आ. स्था.। विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रं आ. स्था.। गौतमाय नमः गौतमं आ. स्था.। जमदग्नये नमः जमदग्निं आ. स्था.। वसिष्ठाय नमः वसिष्ठं आ. स्था.। अरुंधत्यै नमः अरुंधतिं आ. स्था.।

१९. **पूर्वे** — ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेदं आ. स्था.। दक्षिणे — यजुर्वेदाय नमः यजुर्वेदं आ. स्था.। पश्चिमे — सामवेदाय नमः सामवेदं आ. स्था.। उत्तरे — अथर्वेदाय नमः अथर्वेदं आ. स्था.।

।। इति द्वादश लिंगतोभद्र स्थापन पूजनम् ।।

अथ अष्टादशरेखात्मक चतुर्लिंगतोभद्र मण्डल

(व्रतोद्यापान चन्द्रिकानुसारेण)

(१). ***पूर्वलिंगेषु*** — (अधः, मध्य, अग्रभागे) वीरभद्राय नमः वीरभद्र आ. स्था.। (१) शंभवे नमः शंभु आ. स्था.। (२) अजैकपदे नमः अजैकपाद आ. स्था.। (३) *दक्षिणलिंगेषु* — अहिर्बुध्न्याय नमः हिर्बुध्न्य आ. स्था.। (४) पिनाकनये पिनाकिन आ. स्था.। (५) शूलपाणये नमः शूलपाणि आ. स्था.। (६)

पश्चिम लिंगेषु — भुवनाधीश्वराय नमः भुवनाधीश्वर आ. स्था.। (७) कपालिने नमः कपालिन आ. स्था.। (८) दिकपतये नमः दिकपतिं आ. स्था.। (९)

उत्तर लिंगेषु — रुद्राय नमः रुद्र आ. स्था.। (१०) शिवाय नमः शिव आ. स्था.। (११) महेश्वराय महेश्वर आ. स्था.। (१२)

चतुष्पद वल्यकाम् हरितखंडे ईशानाद्याष्ट दिक्षु — असितांग भैरवाय नमः असितांग भैरव आ. स्था.। (१३) रुरुभैरवाय रुरुभैरव आ. स्था.। (१४) चण्डभैरवाय नमः चण्डभैरव आ. स्था.। (१५) क्रोध भैरवाय नमः क्रोध भैरव आ. स्था.। (१६) उन्मत्त भैरवाय नमः उन्मत्त भैरव आ. स्था.। (१७) काल भैरवाय नमः काल भैरव आ. स्था.। (१८) भीषण भैरवाय

नमः भीषण भैरव आ. स्था.। (१९) संहार भैरवाय नमः संहार भैरव आ. स्था.। (२०)

३. ***शृंखला समीपे त्रिपद पीतवल्ल्याम् ईशानाद्यष्ट दिक्षु चतुर्विंशति देवता*** – भवाय नमः भवाय आ. स्था.। (२१) शर्वाय नमः शर्वं आ. स्था.(२२)। रुद्राय नमः रुद्रं आ. स्था.(२३)। पशुपतये नमः पशुपतिं आ. स्था.(२४)। महते नमः महन्तं आ. स्था.। (२५) भीमाय नमः भीमं आ. स्था.(२६)। ईशानाय नमः ईशानं आ. स्था.(२७)। अनंताय नमः अनंतं आ. स्था.(२८)। तक्षकाय नमः तक्षकं आ. स्था.(२९)। वासुकये वासुकिं आ. स्था.(३०)। कुलीशकाय नमः कुलीशं आ. स्था.(३१)। कर्कोटकाय नमः कर्कोटकं आ. स्था.(३२)। शंखपालाय नमः शंखपालं आ. स्था.(३३)। कंबलाय नमः कंबलं आ. स्था.(३४)। अश्वतराय नमः अश्वतर आ. स्था.(३५)। शूलिने नमः शूलिनं आ. स्था.(३६)। चन्द्रमौलये नमः चन्द्रमौलिं आ. स्था.(३७)। चन्द्रमसे नमः चन्द्रमसं आ. स्था.(३८)। वृषभध्वजाय नमः वृषभध्वजं आ. स्था.(३९)। त्रिलोचनाय नमः त्रिलोचनं आ. स्था.(४०)। शक्तिधराय नमः शक्तिधरं आ. स्था.(४१)। महेश्वराय नमः महेश्वरं आ. स्था.(४२)। शूलधारिणे नमः शूलधारिणं आ. स्था. (४३)। स्थाणवे नमः स्थाणुं आ. स्था.(४४)।

४. ***मध्येकार्णिकायाम्*** – ब्रह्मणे नमः ब्राह्मण आ. स्था.(४५)। (उत्तर शिवलिंगस्याध:) सोमाय नमः सोमं आ. स्था.(४६)। ईशान्यां खण्डेदो – ईशानाय नमः ईशानं आ. स्था.(४७)। (पूर्वालिंगस्याध:) इंद्राय नमः इंद्रं आ. स्था.(४८)। आग्नये खंडेदौ – अग्नेये नमः अग्निं आ. स्था.(४९)। (दक्षिण लिंग स्याध:) यमाय नमः यमं आ. स्था.(५०)। नैर्ऋत्यां खंडेदौ – निर्ऋत्यये नमः निर्ऋत्यं आ. स्था.(५१)। पश्चिम लिंगास्याध – वरुणाय नमः वरुणं आ. स्था.(५२)। वायव्यां खण्डेदौ – वायवे नमः वायुं आ. स्था.(५३)।

५. ***अष्ट रक्तभद्रे*** – वायुसोमयोर्मध्ये – अष्टवसुभ्यो नमः अष्टवसुं आ. स्था.(५४)। सोमेशानयोर्मध्ये – एकादशरुद्रेभ्यो एकादशरुद्रान् आ. स्था.(५५)। ईशानेन्द्रयोर्मध्ये – द्वादशादित्येभ्यो नमः द्वाशादित्यान् आ.

स्था.(५६)। इन्द्राग्नेयोर्मध्ये – अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आ. स्था.(५७)। अग्नियमयोर्मध्ये – विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः विश्वदेवान् आ. स्था.(५८)। यमनिर्ऋत्योर्मध्ये – सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षान् आ. स्था.(५९)। निर्ऋत्यवरुणयोर्मध्ये – भूतनागेभ्यो नमः भूतनागान् आ. स्था.(६०)। वरुणवायव्योर्मध्ये – गंधर्वाप्सरोभ्यो नमःगंधर्वाप्सरसः आ. स्था.(६१)।

६. ***उत्तरलिंगस्याधः*** – स्कंदाय नमः स्कंद आ. स्था.(६२)। तत्रैव – नन्दीश्वराय नमः नन्दीश्वर आ. स्था.(६३)। *तत्रैव* – शूलमहाकालाभ्यां नमः शूलमहाकाल आ. स्था.(६४)।

ब्रह्मेशानयोर्मध्ये शृंखलायाम् – दक्षादि सप्तकाय नमः दक्षादि सप्तकान् आ. स्था.(६५)। *पूर्वलिंगस्याधः* – दुर्गायै नमः दुर्गा आ. स्था.(६६)। *तत्रैव* – विष्णवे नमः विष्णुं आ. स्था.(६७)।

ब्रह्माग्नयोर्मध्यो शृंखलायाम् – स्वधायै नमः स्वधा आ. स्था.(६८)। *दक्षिणलिंगस्यधः* – मृत्युरोगाभ्यां नमः मृत्युरोगौ आ. स्था.(६९)। *ब्रह्म निर्ऋत्योर्मध्ये शृखलायाम्* – गणपतये नमः गणपतिं आ. स्था.(७०)। *पश्चिमलिंगास्याधः* – अद्भ्यो नमोऽपः आ. स्था.(७१)। *ब्रह्मवायोर्मध्ये शृखलायाम्* – मरुद्भ्यो नमः मरुतः आ. स्था.(७२)।

७. ***ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकायाम्*** – पृथिव्यै नमः पृथिवीं आ. स्था.(७३)। तत्रैव – गंगादिनदीभ्यो नमः गंगादिनदीः आ. स्था.(७४)। सप्तसागरेभ्यो नमः सप्तसागरान् आ. स्था.(७५)। ब्रह्मणो मस्तके कर्णिकोपरि – मेरवे नमः मेरुम् आ. स्था.(७६)।

८. ***उदकलिंगे*** – सद्योजाताय नमः सद्योजात आ. स्था.(७७)। प्राच्यालिंगे वामदेवाय नमः वामदेव आ. स्था.(७८)। *दक्षिणलिंगे* – अघोराय नमः अघोर आ. स्था.(७९)। *प्रतीची लिंगे* – तत्पुरुषाय नमः तत्पुरुषाय आ. स्था.(८०)। कर्णिकायां मेरुपरि ईशानाय नमः ईशान आ. स्था.(८१)।

९. ***मध्य परिधौ (पीतवर्णे षोडश पदे)*** – परिधवे नमः परिधि आ. स्था.(८२)। मेरोः परिधि – समंतात् लिंगानां स्कन्धे विशांति रक्त कोष्ठेषु (पंचपदा प्रीतकोणेषु) –चतुः पुरीभ्यो नमः चतुश्पुरीः आ. स्था.

(८३)। आग्नेयादिषु त्रिपद कोणेषु शृखला शिरसि – ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेद आ. स्था.(८४)। यजुर्वेदाय नमः यजुर्वेद आ. स्था.(८५)। सामवेदाय नमः सामवेद आ. स्था.(८६)। अथर्वेदाय नमः अथर्ववेद आ. स्था.(८७)।

१०. ***उत्तरलिंगास्य दक्षिणवापीमारभ्य वामवापी पर्यन्तासु पंचदा वाप्यां*** – भवाय नमः भवाय आ. स्था.(८८)। शर्वाय नमः शर्व आ. स्था.(८९)। पशुपतये नमः पशुपतिं आ. स्था.(९०)। ईशानाय नमः ईशान आ. स्था.(९१)। उग्राय नमः उग्रम् आ. स्था.(९२)। रुद्राय नमः रुद्रं आ. स्था.(९३)। भीमाय नमः भीम आ. स्था.(९४)। महते नम महान्तम् आ. स्था.(९५)।

११. ***वापीसमीपस्थैकैकपदेषु पीतवर्णेषु क्रमशः*** – भवान्यै नमः भवानीं आ. स्था.(९६)। शर्वाण्यै नमः शर्वाणीं आ. स्था.(९७)। पशुपत्यै नमः पशुपतिं आ. स्था.(९८)। ईशान्यै नमः ईशानीं आ. स्था.(९९)। उग्रायै नमः उग्राम् आ. स्था.(१००)। रुद्राण्यै नमः रुद्राणीं आ. स्था.(१)। भीमायै नमः भीमां आ. स्था.(२)। महत्यै नम महातीं आ. स्था.(३)।

१२. ***पूर्वादिक्रमेण परिधि समीपे*** – (पूर्वे) ॐ पृथ्वी तत्वाय नमः आ. स्था.(४)। (दक्षिणे) जलतत्वाय नमः आ. स्था.(५)। (पश्चिमे) तेजस्तत्वाय नमः आ. स्था.(६)। (उत्तरे) वायुतत्वाय नमः आ. स्था.(७)। मध्ये – आकाश तत्वाय आ. स्था.(८)।

१३. ***बाह्यश्वेत परिधौ उत्तरतः सोमारभ्य वायुपर्यन्तमायुधानि*** – गदायै नमः गदा आ. स्था.(९)। त्रिशूलाय नमः त्रिशूलम.(१०)। वज्राय नमः वज्रम.(११)। शक्तये नमः शक्तिं.(१२)। दण्डाय नमः दण्डम्.(१३)। खड्गाय नमः खड्गं.(१४)। पाशाय नमः पाशम्.(१५)। अंकुशाय नमः अंकुशं.(१६)।

१४. ***तद्बाह्ये रक्तपरिधौ उत्तरतः क्रमेण*** – गौतमाय नमो गोतमं आ. स्था.(१७)। भारद्वाजाय नमो भारद्वाजं.(१८)। विश्वामित्राय नमा विश्वमित्रं.(१९)। कश्यपाय नमः कश्यपं आ. स्था.(२०)। जमदग्नये नमः जमदग्निं आ.(२१)। वशिष्ठाय नमो वशिष्ठ.(२२)। अत्रये नमो ऽत्रयिम्.

(२३)। अरुंधत्यै नमो ऽ रुन्धतीम्. आ. स्था.(२४)।

१५. *तद्बाह्ये कृष्ण परिधौ उत्तरतः क्रमेण* – ऐन्द्र्यै नमः ऐन्द्रीं आ.(२५)। कौमार्यै नमः कौमारीं.(२६)। ब्राह्म्यै नमो ब्राह्मीं.(२७)। वाराह्यै नमः वाराहीं आ.(२८)। चामुण्डायै नमः चमुण्डां आ.(२९)। वैष्णव्यै नमः वैष्णवीं आ.(३०)। माहेश्वर्यै नमो माहेश्वरीं आ.(३१)। विनायिक्यै नमो वैनायिकीं आ. स्था.(३२)।

।। एताः चतुर्लिंगतो भद्र मंडल देवता सुप्रतिष्ठताः वरदा भवन्तु ।।

ततः चतुर्लिंगतो भद्र मंडल देवतानां पूजनम्

ध्यानम्

ॐ नवशक्तिवने रम्ये ध्यायेद्देव उमापतिम् ।
चन्द्रकोटीप्रतीकाशं त्रिनेत्रं चन्द्रभूषणं ।।
आपिंगल जटाजूट रत्नमौलिविराजितम् ।
नीलग्रीव मुदारांगं नानाहारोपशोभित् ।।
वरदाभयहस्तं च हरिणं परश्वधं ।
दधानंगनागवलयं केयूरांगद भूषणम् ।।
व्याघ्रचर्मपरीधानं रत्नसिंहासनस्थितं ।
ध्यात्वा तद्वामभागे च गिरिजां भक्तवत्सलाम् ।।

आवाहनम् -

ॐ आगच्छ देवदेवेश महादेव महेश्वरः ।
गृहाण सहपार्वत्या सपरिवार देवता तव पूजांमया कृतां ।।

आसन -

दर्भाणां विष्टेरेणैव मयादत्तेन वै प्रभो ।
आसनं कुरु देवेश प्रसन्नोभव सर्वदा ।। आ.स. ।।

पाद्यम् -

ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये अस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करन्नमः ।। पा.स. ।।

अर्घ्यं -

ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टप् पंक्त्या सह बृहत्युष्णिहा ।
ककुप्प सूचीभिः शमम्यंतु त्वा ।। अर्घ्यं. स. ।।

आचमनम् -

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।। आ.स. ।।

स्नानं -

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो
वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि
वरुणस्य ऋतसदनमासीद ।।

पयस्नानम् -

गोक्षीरधामन्देवेश गोक्षोरेण गवाकृतम् ।
स्नपनं देवेश गृहाण शिवशंकर ।।

दुग्ध. स्ना. पुनर्जल स्नानं समर्पयामि।।

दधि -

दध्नाचैव मयादेव स्नपनं क्रियते तव ।
गृहाण भक्त्या दत्तं मे सुप्रसन्नो भवाव्यय ।।

दधि स्नानं, पुनः जल स्नानं।

घृत -

सर्पिषा देवदेवेश स्नपन क्रियतेमया ।
उमाकान्त गृहाणेदं श्रद्धया सुरसत्तम ।।

घृत स्नानं पुनः जल स्नानं।

मधु -

इदं मधु मयादत्तं तव तुष्ट्यर्थमेव च ।
गृहाणशंभो मे भक्त्या सुप्रसन्नो भव प्रभो ।

मधु स्नानं, पुनः जल स्नानं।

शर्करा -

शितया देवदेवेश स्नपन क्रियतेमया ।

गृहाणशंभो मे भक्त्या सुप्रसन्नो भव प्रभो ।

शर्करा स्नानं, पुनः जल स्नानं।

पंचामृत स्नानं -

पञ्चामृतं मयानीतं पयोदधि समन्वितम् ।
घृत मधु शर्करा स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम् ।।

पञ्चामृत स्नानं, पुनः जल स्नानं।

शुद्धोदक स्नान -

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा
अवप्लिता रौद्रा नभौरूपाः पार्जन्याः ।।

शुद्ध स्नानं समर्पयामि।

गंधोदक स्नानं -

कृष्णागरु प्रचुर कर्दम गन्धसार कस्तूरिकामलय चर्चित
रोचनादयै। सत्केशरैश्च रुचिरैश्च सुशीतलैश्च भक्त्या
निरंतरमहं स्नपयामि शंभो ।। गं. स्ना. स. ।।

कुशोदक स्नानं -

गोधूमगुंद्र कुश मुंज उशीर दूर्वा काशोयवास्तुलसी मंजरी
बिल्वखंडाः। मंदार बल्वजशरांकुर धान्यकेन भक्त्यो
निरन्तरमहं स्नपयामि शंभो ।। कु. स्ना.।।

पुष्पोदक स्नानं -

कोदण्ड खण्डित पुरत्रियारोषच्चूर्णी कृता समशराप ललाट
वक्त्रेत्स्तुत्या। सुरादिभि रजस्त्र मतिस्तुताप स्नानाप तेस्तु
सुरभीकृत पुष्पतोयं ।। पुष्प. स्नान. ।।

फलोदक स्नानं -

खर्जूर जम्बू कदली पनसाम्रपक्व पूगी कपित्थ बदरी
जमुदुबराणी। धात्रीफलानी रुचिराणि मनोहराणि भक्त्या
निरन्तरमहं स्नपयामि शम्भो ।। फल. स्नान.।।

रत्नोदक स्नानं -

रत्नोदकैर्मणिगणै रुदितार्क बिंब तुल्यै समान विमलैर्गुण मौक्तिकानि। वज्र प्रवाल मणिरंजित नीलकाद्यै भक्त्या निरंतरमहं स्नपयामि शंभो ।। रत्नो. स्नान. ।।

उद्वर्तन स्नान -

ॐ अ ठं शुनाते अ ठं शु: पृच्यताम्परुषा परु: । गंधस्ते सोम मवतुमदाय रसो अच्युत: ।। उद्व. स्नान. ।।

गंदोदक स्नान -

ॐ इमंमे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रिस्तोमं सचतापरुष्ण्या। असिकन्या मरुद्वृथे वितस्तयार्जीकये श्रृणुह्या सुषोमया:।।

अभिषेक स्नानम् -

रुद्रसूक्तेन अभिषेकं कुर्यात्। पुन: शुद्ध स्नानं।

वस्त्र -

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्व मुभयो रात्क्न्योर्ज्याम् । याश्च ते हस्तऽइषव: पराता भगवोवप: ।।

व.स. आच. स. ।।

कोपीनवस्त्रम् -

ॐ नम: कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नम: सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो।।

कोपी. स.।।

यज्ञोपवीतं

ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमत: सुरुचो वेन आव:। स बुध्न्या उपमाअस्य विष्ठा: सतश्चयोनिम मसतश्च विव:।।

यज्ञो. स. पुन: आच. ।।

गन्धं -

ॐ नम: श्वभ्य: श्वपतिभ्यश्च वोनमो नमो भवाय च रुद्राय च नम:। शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च

शितिकंठाय च ॥ गं. स्ना. ॥

अक्षता -

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

अक्षतानि सम. ॥

पुष्प -

नमः पार्य्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च
नमस्तीर्थ्याय च कूल्ल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्यायच॥

पुष्पं सर्मपयामि ॥

बिल्व पत्र -

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्म्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चा हनन्याय च नमो घृष्णवे॥१॥ बि. स.॥ दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्। अघोर पाप संहारं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्॥२॥ त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥३॥ अखण्डै बिल्वपत्रैश्च पूजये शिव शंकरम्। कोटिकन्या महादानं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्॥४॥ गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वर। सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुम प्रिय ॥

बिल्व स.॥

तुलसी मंजरी -

ॐ शिवो भव प्रजाभयो मानुषीभ्यस्त्वमंगिरः ।
माद्यावा पृथिवी अभिशोचीर्मान्तरिक्षम्मा वनस्पतीम् ॥

तु. स. ॥

दूर्वा -

दूर्वेह्यमृत सम्पन्ने शतमूलेशतांकुरे ।
शत पातक संहन्त्री शतमायुष्यवर्धिनी ॥

दुर्वा समर्पयामि॥

शमीपत्र -

अमंगलाना शमनी शमनीं दुष्कृतस्य च ।
दुःस्वप्ननाशिनी धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम् ।।श. स. ।।

आभूषणं -

वज्र माणिक्य वैडूर्यैमुक्ता विद्रूम माण्डतम् ।
पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रति गृहताम् ।। आ. स. ।।

सुगंधित द्रव्य -

ॐ त्र्यंबकं यजामहे ।। सु. द्र. समर्पयामि ।।

धूपं -

ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षाय च शताध न्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो ।। धूपं. स।।

दीपं -

ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च नमः शीग्घ्र्याय शीभ्याय च नमऽऊर्म्याय चावस्वन्याय च नमो नादेयाय च दीप्याय च ।।
दीपं दर्शयामि ।। हस्त प्रक्षालनम्

विजया आभरणं -

ॐ विज्यं धनुः कपर्दिने विशल्यो वाणवाँ २ ऽउत
अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः ।। वि. स. ।।

नैवेद्य -

ॐ नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय नमो जघन्याय च बुध्न्याय च ।। नै. निवेदामि ।।

मध्ये जलं -

ॐ नमः सोभ्याय च प्रति सर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चा वसान्याय च नमः उर्वर्याय च खल्याय च।। म. स. ।।

ऋतु फलं -

फलानीमानि रम्याणि स्थापितानि तवाग्रतः । तेन मे
सफला वाप्तिर्भवेञ्जन्मनि जन्मनि ।। ऋतु. स. ।।

आचमनं -

त्रिपुरान्तकं दीनार्तिनाश श्रीकण्ठ शाश्वत गृहाणाचमनीय
च पवित्रोदक कल्पितम् ।। आ. स. ।।

अखण्ड ऋतुफलम् -

कुष्माण्ड मातुलिङ्गञ्च नारिकेल फलानि च रम्याणि
पार्वतीकान्त सोमेश प्रतिगृह्यताम् ।। अ. ऋ. सम. ।।

ताम्बूल पूगीफल -

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः
यथा शमसद्द्विपदेशं चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे ऽअस्मन्न
नातुरम् ।। ता. सम. ।।

दक्षिणा -

न्यूनातिरिक्त पूजायां संपूर्ण फल हेतवे ।
दक्षिणां काञ्चनी देव स्थापयामि तवाग्रत ।। द. स. ।।

प्रार्थना -

ऋण परतक दौर्भाग्यं दारिद्र्य विनित्र द्वापो ।
अशेषाघ विनाशाय प्रसीद मम शंकर ।।
दुःख शोकाग्नि संतप्त संसार भयपीडितं ।
महारोगा कुलं दीन त्राहिमां वृषवाहन ।।१।।
वन्दे देवमुमापति सुरगुरु वन्दे जगत कारणम् ।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम् ।।
वन्दे सूर्यशशाङ्क वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं ।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ।।२।।
अनेन पूजने श्रीलिंगतो भद्र मंडल देवता प्रियतां न मम् ।।

नन्दीश्वर मंत्र -

आयङ्गौः पृश्निर क्रमीद सदन्मातरम्पुरः पितरञ्च प्रतंत्स्वः ।।

वीरभद्र -

भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैः
स्तुष्टुवा ठं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।१।।
भद्रोनो अग्नि राहुतो भद्रा राति सुभगभद्रो अध्वरः ।
भद्रा उत प्रशस्तयः ।।२।।

स्वामी कार्तिक -

यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहु उपस्तुत्यम्महि जातन्ते अर्वन ।।१।।
यत्रबाणा सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव ।
तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु
विश्वाहाशर्म यच्छतु विश्वाहाशर्म यच्छतु ।।२।।

कुबेर -

कुविदङ्ग यवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व वियूय ।।१।।
इहे हैषां कृणुहि भोजनानि ये वर्हिषो नम उक्तिंयजंति ।
वय सोमव्रते तव मनस्तनूषू विभ्रितः । प्रजावन्तः सुचेमहि ।।२।।

।इति चतुर्लिंगतोभद्र पूजनम्।

अथ दुर्गा यंत्र देवता स्थापनम्

अपने हृदय में इष्ट देवता का ध्यान करें, हाथ में पुष्पाक्षत लेंवें फिर बांयी नासिका से उन पुष्पों पर श्वांस छोड़ें भावना करें कि इष्ट देवता, हृदय कमल से बाहर आकर साकार सगुण रूप में पूजा ग्रहण करेंगें। तत्पश्चात उन पुष्पों को यंत्र मध्ये बन्दिुओं में स्थापित करें। सर्वत्र नाम के बाद **"नमः"** का उच्चारण करें।

१. *बिन्दु मध्ये* :– ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी श्रीत्रिगुणात्मिका स्वरूपाये श्रीमहादुर्गा देवताये नमः।

फिर गुरु मण्डल का ध्यान करें –

२. श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवम्। सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूति क्रमं मण्डलम्।।१।। वीरानऽष्ट चतुष्कषष्टि नवकम् वीरावलि पंचकम्। श्रीमन् मालिनी मंत्रराज सहितं वन्दे श्री गुरु मण्डलम्।।२।।

इसके बाद द्विव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ गुरु तथा गुरु चतुष्टय का आवाहन करें। देवी को श्रीकुलस्वस्वरूप मानने से दिव्यायौघादि श्री यंत्र पूजा वाले लेंवें।

३. "काली समष्टिमानने से" कलिका के दिव्यौघादि गुरु पूजन करें।

यथा दिव्यौघ — ॐ महादेव्याम्बामयी श्री। ॐ महादेवानंदमयी.। ॐ त्रिपुराम्बामयी। ॐ त्रिपुरभैरवानंदनाथमयी आ. स्था.।

४. *सिद्धौघ गुरु* :— ॐ ब्रह्मानंदनाथमयी। ॐ पूर्णदेवानन्दनाथमयी आ. स्था.। ॐ चलचित्तानंदनाथमयी आ. स्था.। ॐ लोलानंदनाथमयी। ॐ कुमारानंदनाथमयी। ॐ क्रोधानंदनाथमयी। ॐ वरदानंदनाथमयी। ॐ स्मरद्वियानंदनाथमयी। ॐ मायाम्बानंदनाथमयी। ॐ मायावत्यानंदनाथमयी।

५. *मानवौघ गुरु* :— ॐ विमलानंदनाथमयी आ. स्था.। ॐ कुशलसानंदनाथमयी। ॐ भीमसेनानंदनाथमयी। ॐ सुधाकरानंदनाथमयी। ॐ मीनानंदनाथमयी। ॐ गोरक्षानंदनाथमयी। ॐ भोजदेवानंदनाथमयी। ॐ प्रजापत्या नंदनाथमयी। ॐ मूलदेवा नंदनाथमयी। ॐ रंतिदेवा नंदनाथमयी। ॐ विघ्नेश्वरानंदनाथमयी। ॐ हुताशना नंदनाथमयी। ॐ समरानंदनाथमयी। ॐ संतोषा नंदनाथमयी।

६. गौं गुरुवे नमः, परमगुरुवे नमः, परात्परगुरुवे नमः, परमेष्ठिगुरुवे नमः।

अपने गुरुकुल के चारों गुरुवों का स्मरण करें

७. *महादुर्गा की षड्ंग पूजा करें*। ऐं हृदयायनमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। क्लीं शिखायै वषट्। चामुण्डायै कवचाय हुं। विच्चे — नेत्रत्रयाय वौषट। मूलमंत्रेण — अस्त्राय फट्।

८. *त्रिकोणे* :— स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन क्रमेण — स्वरया सह विधात्रे आ. स्था.। श्रिया सह विष्णवे आ. स्था.। उमाया सह शिवाय आ. स्था।

दक्षिणे क्षुं नमः सिंहाय। वामे हुं नमः महिषाय आ. स्था.।,

९. *षट्कोणे* :– ऐं नंदजायै नमः अग्निकोणे। ह्रीं रक्तदंतिकायै नमः ईशाने। क्लीं शाकम्भर्यै नमः निर्ऋत्ये कोणे। दुं दुर्गायै नमः वायव्वे। हुं भीमायै नमः पूर्वे। ह्रीं भ्रामर्यै नमः पश्चिमे (स्वग्रे)

१० *अष्टदले* :– (पूर्वादिक्रमेण) ऐं ब्राह्मै.। ह्रीं माहेश्वर्यै.। क्लीं कौमार्यै.। ह्रीं वैष्णव्यै.। हुं वाराह्यै.। क्ष्यौं नारसिंह्यै.। लं ऐन्द्र्यै.। स्फें चामुण्डायै नमः आ. स्था.।

११ *अष्टदले पत्राग्रे* :– (पूर्वादिक्रमेण) असितांङ्ग भैरवाय नमः। रुरुभैरवाय.। चण्डभैरवाय.। क्रोधभैरवाय.। उन्मत्तभैरवाय.। कपालि भैरवाय.। भीषण भैरवाय.। संहार भैरवाय. नमः संहार भैरव आ. स्था.।

ततपश्चतुर्विंशतिदले :–

१२. *पूर्वादिक्रमेण* :– विं विष्णुमायायै नमः। चें चेतनायै.। बुं बुद्ध्यै। निं निंद्रायै.। क्षुं क्षुधायै.। छां छायायै.। शं शक्तयै.। तृं तृष्णायै। क्षुं क्षान्त्यै.। जां. जात्यै.। लं लज्जायै नमः। शां शान्त्यै। श्रं श्रद्धायै। कांत्यै। लं लक्ष्म्यै.। धृं धृत्यै.। वृं वृत्त्यै.। श्रुं श्रत्यै.। स्मृं स्मृत्यै.। दं दयायै.। तुं तुष्टयै.। पुं पुष्ट्यै। मां मातृभ्यो.। भ्रां भ्रान्त्यै. नमः भ्रान्ति आ. स्था.।

१३. *भूपूरे कोण चतुष्टये* :– गं गणपतये. अग्नियै। क्षं क्षेत्रपालाय. नैऋत्ये। बं बटुकाय. वायव्ये। यां योगिन्यै. ईशाने।

१४. *भूपूरे पूर्वादि क्रमेण* :– इन्द्राय.। अग्नये.। यमाय.। निर्ऋतये। वरुणाय.। वायवे.। सोमाय.। ईशानाय.। ब्रह्मणे.। अनंताय.।

१५. *तद्बहि* :– वज्रहस्तां गजारूढायै कादंबरीदेव्यै.। शक्ति हस्तायै अजवाहनायै उल्का देव्यै.। दण्डहस्तायै महिषारूढायै कराली देव्यै.। खड्गहस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षीदेव्यै.। पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षीदेव्यै.। अंकुश हस्तायै मृगवाहनायै हरिताक्षीदेव्यै.।

गदाहस्तायैसिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै.। शूलहस्तायै वृषभवाहनायै काली देव्यै.। पद्महस्तायै हंसवाहनायै सुरजेष्ठा देव्यै.। चक्र हस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञी देव्यै नमः।

ॐ यंत्रस्थदेवताभ्यो नमः। यथाशक्त्या पूजनं कुर्यात्।

आगच्छवरदे देवि दैत्यदर्प निषूदिनि ।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते, शंकर प्रिये ।।

श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी दुर्गे देवते आवाहित भव स्थापिता भव। सन्निहिता भव। सन्निरुद्धा भव। संमुखीकृता भव। षडङ्गन्यासेन सकलीकृता भव। अवगुंठिता भव। परमीकृता भव। अमृताकृता भव। ॐ मनोजूति......। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणि श्रीमहादुर्गा देवता सुप्रतिष्ठिता वरदा भव। ततः श्रीसूक्तेन देवीन्यास कृत्वा षोढशोपचारैः पूजयेत्।

अथ गौरी तिलक मंडल देवता पूजनम्

अगर तंत्रोक्त देवी यंत्र नहीं बनायें तो गौरीतिलक मंडल अवश्य बनावें। तथा गौरीतिलक मंडल पर देवी यंत्र – प्रतिमा स्थापन कर पूजा करें। गौरी तिलक मंडल का यंत्र चौपड़ की आकृति का बनता है।

१. हाथ में अक्षत लेकर (१) **यंत्र के मध्य** में कलश में मूल मंत्र से देवी का आवाहन करें। (२) **चतुर्थी से आवाहन** तथा **प्रथमा** से स्थापन करें। **ॐ गौर्यै नमः गौरी आवाहयामि स्थापयामि।**

२. मंडल के मध्य में **८ पीत कोष्ठक** है इनमें ईशानादि ४ कोणों में १. ।।१।। **ॐ महाविष्णवे नमः ईशान्याम् ।।२।। महालक्ष्म्यै नमः आ. स्था. आग्नेयां ।।३।। महेश्वराय नमः नैर्ऋत्यां। ।।४।। महामायाय नमः वायव्याम्।**

पहले सभी श्वेत कोष्ठों के देवता की पूजा करें मध्य, पूर्व, अग्नि, दक्षिण, नैर्ऋत्य, उत्तर, एवं ईशान कोष्ठकों में होगी।

३. ***षडङ्ग पूजायाम् हृदयांग पूजा*** – श्वेत कोष्ठे मध्ये

चतुर्षुश्वेत कोष्ठेषु — (रक्त के चारों ओर) **ऋग्वेदाय नमः** पूर्वे। **यजुर्वेदाय नमः** दक्षिणे। **सामवेदाय नमः** पश्चिमे। **अथर्ववेदाय नमः** उत्तरे।

परिधि समीपे पूर्वे श्वेत काष्ठेषु वामसे दक्षिण की ओर

१. ॐ अद्भ्यो नमः २. ॐ जलोद्भयो नमः ३. ॐ ब्रह्मणे नमः ४. ॐ प्रजापतये नमः ५. ॐ शिवाय नमः।

अग्निकोण के दो श्वेत कोष्ठकों में — १. ॐ अनंताय नमः। २. ॐ परमेष्ठिने नमः।

पुनः अग्निकोण खण्ड में कृष्ण कोष्ठक के चारों ओर श्वेत कोष्ठकों में —

१. ॐ धात्रे नमः २. ॐ विधात्रे नमः ३. ॐ अर्य्यैम्णे नमः ४. ॐ मित्राय नमः।

दक्षिण दिशा में पांच श्वेत कोष्ठकों में — १. ॐ वरुणाय नमः २. ॐ अंशुमते नमः३. ॐ भगाय नमः ४. ॐ इंद्राय नमः ५. ॐ विवश्वते नमः।

नैऋत्यकोण के दो श्वेत कोष्ठकों में — १. ॐ पूष्णे नमः २. ॐ पर्ज्जन्याय नमः।

नैऋत्यकोण खण्ड के कृष्ण कोष्ठकों के चारों ओर श्वेत कोष्ठकों में —

१. ॐ त्वष्ट्रे नमः २. ॐ दक्षयज्ञाय नमः ३. ॐ देववसवे नमः ४. ॐ महासुताय नमः।

पश्चिम दिशा में पांच श्वेत कोष्ठकों में — १. ॐ सुधर्मणे नमः २. ॐ शङ्खपदे नमः ३. ॐ महाबाहवे नमः ४. ॐ वपुष्मते नमः ५. ॐ अनंताय नमः।

वायव्य कोण के दो श्वेत कोष्ठों में १. ॐ महेरणाय नमः २. विश्वावसवे नमः।

वायव्य खण्ड कोण के कृष्ण कोष्ठकों के चारों ओर श्वेत कोष्ठकों में —

१. ॐ सुपर्वणे नमः २. ॐ विष्टराय नमः ३. ॐ रुद्रदेवताय नमः ४. ॐ ध्रुवाय नमः।

... में पांच श्वेत कोष्ठों में — १. ॐ धराय नमः। २. ॐ सोमाय

नमः। ३. ॐ आपवत्साय नमः। ४. ॐ नलाय नमः। ५. ॐ अनिलाय नमः।

ईशान कोण खण्ड में कृष्ण कोष्ठ के चारों ओर श्वेत कोष्ठों में —

१. ॐ आवर्त्ताय नमः २. ॐ सांवर्त्ताय नमः ३. ॐ द्रोणाय नमः ४. पुष्कराय नमः

ईशान कोण के दो श्वेत कोष्ठों में :— १. ॐ प्रत्युषाय नमः २. ॐ प्रभासनाय नमः।

॥इति हृदयाङ्ग पूजा॥

(४) *अथ शिरोङ्ग शक्ति पूजा* — हरित कोष्ठों में पूजा करें।

मंडल में ५ हरित कोष्ठक बनते है। मध्यखण्ड १६ कोष्ठक का बनता है, बाकी चारों कोणों में प्रत्येक खण्डों में तीन दिशाओं के मिलाकर ११ खण्ड बनते हैं उनमें पूजा करें।

ईशान कोण की हरित शृंखला में ११ कोष्ठों में वायव्य से ईशान की ओर व निर्ऋत्य दिशा की तरफ।

१. ॐ ह्रींकार्य्यै नमः। २. ॐ ह्रीयै नमः। ३. ॐ कात्यायन्यै नमः। ४. ॐ चामुण्डायै नमः। ५. ॐ महादिव्यायै नमः। ६. ॐ महाशब्दायै नमः। ७. ॐ सिद्धिदायै नमः। ८. ॐ ह्रींकार्य्यै नमः। ९. ॐ ऐं नमः। १०. ॐ श्रीं श्रियै नमः। ११. ॐ ह्रीयै नमः।

ईशान कोण में कृष्ण कोष्ठ के चारों ओर आठ पीत कोष्ठों में—

१. ॐ लक्ष्म्यै नमः। २. ॐ श्रियै नमः। ३. ॐ सुधायै नमः। ४. ॐ मेधायै नमः। ५. ॐ प्रज्ञायै नमः। ६. ॐ मत्यै नमः। ७. ॐ स्वाहायैनमः। ८. ॐ सरस्वत्यै नमः।

अग्नि कोण की हरित शृङ्खला में वायव्य कोण से नैर्ऋत्य की ओर ११ कोष्ठो में —

१. ॐ गौर्यै नमः। २. ॐ पद्मायै नमः। ३. ॐ शच्यै नमः। ४. ॐ सुमेधायै नमः। ५. ॐ सावित्र्यै नमः। ६. ॐ विजयायै नमः। ७. ॐ देवसेनायै नमः। ८. ॐ स्वाहायै नमः। ९. ॐ स्वधायै नमः। १०. ॐ

मात्रे नमः। ११. ॐ गायत्र्यै नमः।

अग्नि कोण में कृष्ण कोष्ठ के चारों ओर पीत कोष्ठकों में

१. ॐ लोकमात्रे नमः। २. ॐ धृत्यै नमः। ३. ॐ पुष्ट्यै नमः। ४. ॐ तुष्ट्यै नमः। ५. ॐ आत्मकुल देवतायै नमः। ६. ॐ गणेश्वर्य्यै नमः। ७. ॐ कुलमात्र्यै नमः। ८. ॐ शान्त्यै नमः।

पूवार्द्ध भागे पीत कोष्ठेषु (१० खण्ड) उत्तर दिशा में दो पीत में से एक खण्ड, तीन खण्ड ईशान, २ पूर्व, ३ अग्नि कोण, एक दक्षिण का पीत खण्ड कुल दस खण्डों में। (उत्तर से दक्षिण तक क्रमशः पूजन करें)

१. ॐ जयन्त्यै नमः। २. ॐ मंगलायै नमः। ३. ॐ काल्यै नमः। ४. ॐ भद्रकाल्यै नमः। ५. ॐ कपालिन्यै नमः। ६. ॐ दुर्गायै नमः। ७. ॐ क्षमायै नमः। ८. ॐ शिवायै नमः। ९. ॐ धात्र्यै नमः। १०. ॐ स्वधायै स्वाहाभ्यां नमः।

(५) *अथ शिखाङ्ग देवपूजनम्* — नैऋत्य कोण की हरित शृंखला में ११ कोष्ठों में अग्निकोण से ईशान की ओर —

१. ॐ दीप्यमानायै नमः। २. ॐ दीप्तायै नमः। ३. ॐ सूक्ष्मायै नमः। ४. ॐ विभूत्यै नमः। ५. ॐ विमलायै नमः। ६. ॐ परायै नमः। ७. ॐ अमोघायै नमः। ८. ॐ विद्युतायै नमः। ९. ॐ सर्वतोमुख्यै नमः। १०. ॐ आनन्दायै नमः। ११. ॐ नंदिन्यै नमः।

नैऋत्य कोणे (खण्डे)— कृष्ण कोष्ठक के चारों ओर ८ पीत कोष्ठों में

१. ॐ शक्त्यै नमः। २. ॐ महासूक्ष्मायै नमः। ३. ॐ करालिन्यै नमः। ४. ॐ भारत्यै नमः। ५. ॐ ज्यातिष्मत्यै नमः। ६. ॐ ब्राह्म्यै नमः। ७. ॐ माहेश्वर्य्यै नमः। ८. ॐ कौमार्य्यै नमः।

वायु कोण में हरित शृंखला के ११ कोष्ठों में नैऋत्य से ईशान की ओर —

१. ॐ वैष्णव्यै नमः। २. ॐ वाराह्यै नमः। ३. ॐ इंद्राण्यै नमः। ४. ॐ चंडिकायै नमः। ५. ॐ बुद्ध्यै नमः। ६. ॐ लज्जायै नमः। ७. ॐ वपुष्मत्यै नमः। ८. ॐ शान्त्यै नमः। ९. ॐ कान्त्यै नमः। १०. ॐ रत्यै नमः। ११. ॐ प्रीत्यै नमः।

वायु कोण खण्ड में कृष्ण खंड के चारों ओर ८ पीत खंडों में —

१. ॐ कीर्त्यै नमः। २. ॐ प्रभायै नमः। ३. ॐ काम्यायै नमः। ४. ॐ कान्त्यायै नमः। ५. ॐ ऋद्ध्यै नमः। ६. ॐ दयायै नमः। ७. ॐ शिवदूत्यै नमः। ८. ॐ श्रद्धायै नमः।

पश्चिमार्द्ध पीतकोष्ठेषु — दक्षिण का एक नैऋत्य के तीन, पश्चिम के दो वायव्य के तीन तथा उत्तर का एक खण्ड (१० खण्डों)में —

१. ॐ क्षमायै नमः। २. ॐ क्रियायै नमः। ३. ॐ विद्यायै नमः। ४. ॐ मोहिन्यै नमः। ५. ॐ यशोवत्यै नमः। ६. ॐ कृपावत्यै नमः। ७. ॐ सलीलायै नमः। ८. ॐ सुशीलायै नमः। ९. ॐ ईश्वर्यै नमः। १०. ॐ सिद्धश्वर्यै नमः।

(६) *अथ कवचाङ्गेषु* — परिधि समिपे अरुण कोष्ठये ऋषीन् पूजयेत्

पूर्वे — १. ॐ द्वैपायनाय नमः। २. ॐ भारतद्वाजाय नमः।

दक्षिणे — १. ॐ गौतमाय नमः। २. ॐ सुमन्तवे नमः।

पश्चिमे — १. ॐ देवलाय नमः। २. ॐ व्यासाय नमः।

उत्तरे — १. ॐ वसिष्ठाय नमः। २. ॐ च्यवनाय नमः।

ईशाने एको कृष्ण कोष्ठये — १. ॐ कण्वाय नमः। अग्निकोण एको कृष्ण कोष्ठये — १. ॐ मैत्रेयाय नमः। नैर्ऋत्य कोणे कृष्ण कोष्ठये — १. ॐ कवये नमः। वायव्यकोणे एको कृष्ण कोष्ठये — १. ॐ विश्वामित्राय नमः।

मध्ये खण्डे अष्ट पीतकोष्ठेषु (रक्त कोष्ठ के चारों ओर)

१. ॐ वामदेवाय नमः। २. ॐ सुमन्ताय नमः। ३. ॐ जैमिन्ये नमः। ४. ॐ क्रतवे नमः। ५. ॐ पिप्पलादाय नमः। ६. ॐ पाराशराय नमः। ७. ॐ गर्गाय नमः। ८. ॐ वैशम्पाय नमः।

मध्य खण्डे द्वादश कृष्ण कोष्ठेषु प्रागेषु ईशानतः — १. ॐ दक्षाय नमः। २. ॐ मार्कण्डेयाय नमः। ३. ॐ मृकण्डाय नमः। ४. ॐ लोमशाय नमः। ५ ॐ पुलहाय नमः। ६. ॐ पुलस्त्यायनमः। ७. ॐ

बृहस्पतये नमः। ८. ॐ जमदग्नये नमः।.९ ॐ जामदग्न्याय नमः।१०. ॐ दलभ्याय नमः। ११. ॐ शिलोञ्छनाय नमः। १२. ॐ गालवाय नमः।

मध्ये षोडश हरित्कोष्ठेषु पूर्वादिक्रमेण ईशानतः –

१. ॐ याज्ञवल्क्याय नमः। २. ॐ दुर्वासाये नमः। ३ ॐ सौरभाये नमः। ४. ॐ जावालये नमः। ५. ॐ वाल्मीकये नमः। ६. ॐ बह्चाय नमः। ७. ॐ इन्द्रप्रमितये नमः। ८. ॐ देवमित्राय नमः। ९. ॐ जाजलये नमः। १०. ॐ शाकल्याय नमः। ११. ॐ मुद्गलाय नमः।१२. ॐ जातुकर्ण्याय नमः।१३. ॐ बलाकाय नमः।१४. ॐ कृपाचार्याय नमः।१५. ॐ सुकर्मणे नमः।१६. ॐ कौशल्याय नमः।

(७) *अथ नेत्राङ्ग पूजनम्* – (१) (ईशान कोणे द्वादश अरुणकोष्ठेषु प्राग्रषु ईशानतः)

१. ॐ ब्रह्माग्नये नमः। २. ॐ गार्हष्पत्याग्नये नमः। ३. ॐ ईश्वराग्नये नमः। ४ . ॐ दक्षिणाग्नये नमः। ५. ॐ वैष्णवाग्नये नमः। ६. ॐ आहवानीयाग्नये नमः। ७. ॐ सप्तजिह्वाग्नये नमः। ८. ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमः। ९. ॐ प्रवर्ग्याग्नये नमः।१०. ॐ बडवाग्नये नमः। ११. ॐ जठराग्नये नमः। १२. ॐ लोकिकाग्नये नमः।

(२) *अग्निकोणे द्वादश अरुण कोष्ठेषु* – १. ॐ सूर्याय नमः। २. ॐ वेदाङ्गाय नमः। ३. ॐ भानवे नमः। ४. ॐ इंद्राय नमः। ५. ॐ खगाय नमः। ६. ॐ गभस्तिने नमः। ७. ॐ यमाय नमः। ८. ॐ अंशुमते नमः। ९. ॐ हिरण्यरेतसे नमः। १०. ॐ दिवाकराय नमः। ११. ॐ मित्राय नमः। १२. ॐ विष्णवे नमः।

(३) *नैऋत्यकोणे द्वादश अरुण कोष्ठेषु* – १. ॐ शम्भवे नमः। २. ॐ गिरिशयाय नमः। ३. ॐ अजैक पदे नमः। ४. ॐ अर्हिर्बुध्न्याय नमः। ५. ॐ पिनाकपाणये नमः। ६. ॐ अपराजिताय नमः। ७. ॐ भुवनाधीश्वराय नमः। ८. ॐ कपालिने नमः। ९. ॐ विशाम्पतये नमः। १०. ॐ रुद्राय नमः। ११. ॐ वीरभद्राय नमः।

१२. ३ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः।

(४) *वायु कोणे द्वादश कोष्ठेषु* — १. ३ॐ आवहाय नमः। २. ३ॐ प्रवहाय नमः। ३. ३ॐ उद्वहाय नमः। ४. ३ॐ सम्वहाय नमः। ५. ३ॐ विवहाय नमः। ६. ३ॐ परीवहाय नमः। ७. ३ॐ परीवहाय नमः। ८. ३ॐ धरायै नमः। ९. ३ॐ अद्भयो नमः। १०. ३ॐ अग्नये नमः। ११. ३ॐ वायवे नमः। १२. ३ॐ आकाशाय नमः।

(७) *अथास्त्राङ्ग पूजानंतरे 48 कृष्ण कोष्ठकेषु ऋषीन्पूजयेत्* — प्रत्येक दिशा में १ + १ + ७ + १ + १ के अनुसार ११ कृष्ण कोष्ठक है कुल चारो दिशाओं में ४४ हुये तथा मध्य खण्डों के १–१ करके चार कुल ४८ हुये।

(१) *पूर्व दिशायाम्* — (ईशान से अग्नि कोण तक १ + १ + ७ + १ + १) १. ३ॐ हिरण्यनाभाय नमः। २. ३ॐ पुष्पञ्जयाय नमः। ३. ३ॐ द्रोणाय नमः। ४. ३ॐ शृङ्गिणे नमः। ५. ३ॐ वादराणाय नमः। ६. ३ॐ अगस्त्याय नमः। ७. ३ॐ मनवे नमः। ८. ३ॐ कश्यपाय नमः। ९. ३ॐ धौम्याय नमः। १०. ३ॐ भृगवे नमः। ११. ३ॐ वीतिहोत्राय नमः।

(२) *दक्षिणे कृष्ण कोष्ठेषु* — (अग्नि कोण से नैर्ऋत्य तक १ + १ + ७ + १ + १) १. ३ॐ मधुछन्दसे नमः। २. ३ॐ वीरसेनाय नमः। ३. ३ॐ कृतवृष्णवे नमः। ४. ३ॐ अत्रये नमः। ५. ३ॐ मेधातिथये नमः। ६. ३ॐ अरिष्टनेमये नमः। ७. ३ॐ अङ्गिरसाय नमः। ८. ३ॐ इंद्रप्रमादाय नमः। ९. ३ॐ इध्मबाहवे नमः। १०. ३ॐ पिप्पलादाय नमः। ११. ३ॐ नारदाय नमः।

(३) *पश्चिमे कृष्ण कोष्ठेषु* — (नैर्ऋत्य कोण से वायव्य कोण तक १ + १ + ७ + १ + १) १. ३ॐ अरिष्टसेनाय नमः। २. ३ॐ अरुणाय नमः। ३. ३ॐ सनकाय नमः। ४. ३ॐ सनन्दनाय नमः। ५. ३ॐ सनातनाय नमः। ६. ३ॐ सनत्कुमाराय नमः। ७. ३ॐ कपिलाय नमः। ८. ३ॐ कर्दमाय नमः। ९. ३ॐ मरीचये नमः। १०. ३ॐ क्रतवे नमः। ११. ३ॐ प्रचेतसे नमः।

(४) *उत्तरे कृष्ण कोष्ठेषु* – (वायव्य से ईशान कोण तक १ + १ + ७ + १ + १) १. ॐ उत्तमाय नमः। २. ॐ दधीचये नमः। ३. ॐ श्राद्धदेवताभ्यो नमः। ४. ॐ गणदेवेभ्यो नमः। ५. ॐ विद्या ६ रेभ्यो नमः। ६. ॐ अप्सरेभ्यो नमः। ७. ॐ यक्षेभ्यो नमः। ८. ॐ रक्षेभ्यो नमः। ९. ॐ गंधर्वेभ्यो नमः। १०. ॐ पिशाचेभ्यो नमः। ११. ॐ गुह्यकेभ्यो नमः।

(५) *मध्ये चतुर्कृष्ण कोष्ठेषु ईशानात वायव्य पर्यन्त* – १. ॐ सिद्ध देवताभ्यो नमः। २. ॐ औषधीभ्यो नमः। ३. ॐ भूतग्रामाय नमः। ४. ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय नमः।

।। इति हेमाद्रि लिखित गौरीतिलक पूजनम् ।।

अथ गायत्री यंत्र पूजा

भगवती श्रीगायत्री की विशेष है, इसका विस्तृत पूजा प्रकरण है यह एकापदा, द्विपदा, त्रिपदा, चतुष्पदा, पंचपदा, षट्पदा सप्तपदा, अष्टपदा, नवपदा..... शतपदा एवं सहस्राक्षरी भी है। अतः इसकी उपासना का क्षेत्र वृहद् है।

सामान्यतया त्रिपदागायत्री की उपासना प्रचलित है **रात्रि समय तुरीय संध्या में चतुष्पदा गायत्री करें। अलग–अलग दीक्षा क्रम है। दीक्षा बाद के क्रम सिद्धि में भिन्न पाद गायत्री क्रम करना चाहिये अन्यथा सफलता में बाधायें रहती है।**

अच्छिन्नाद् गायत्री ब्रह्महत्यां प्रयच्छति ।
भिन्नपाद गायत्री ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।।

अर्थात् **ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ (इस तरह भिन्नपाद गायत्री हुई)**

कामना भेदद से **ऐं, ह्रीं, श्रीं क्लीं** कोई भी बीज मंत्र लगाकर भिन्नपाद मंत्र जपा जा सकता है।

प्रणव न्यास **:– ॐ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छंद परमात्मा देवता शरीर शुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्री छंदसे नमः मुखे। ॐ

परमात्मदेवायै नमः हृदि।

सप्त व्याहृति न्यास — ३ॐ सप्तव्याहृतीनां जगदग्नि भारद्वाजात्रि गौतम कश्यप विश्वामित्र वसिष्ठाः ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहती पङ्क्ति त्रिष्टुब्जगत्यश्छंदासि, अग्निवायु सूर्य बृहस्पति वरुणेंद्र विश्वेदेवा देवताः न्यासे जपे विनियोगः।

३ॐ जगदग्नि भारद्वाजात्रि गौतम कश्यप विश्वामित्र वसिष्ठः ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

३ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टु ब्बृहती पङक्ति त्रिष्टुब्जगती छंदोभ्यो नमः मुखे। अग्निवायु सूर्य बृहस्पति वरुणेंद्र विश्वेदेव देवताभ्यो नमः हृदि।

ऋष्यादिन्यास :— ३ॐ अस्य श्री गायत्री मंत्रस्य विश्वामित्र ऋषिः गायत्री छंदः। सविता देवता। न्यासे जपे च विनियोगः।

३ॐ विश्वामित्र ऋषिये नमः शिरसि। ३ॐ गायत्री छन्दसे मुखे। ३ॐ सवितृदेवतायै नमः हृदि।

३ॐ भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः। ।। हृदयाय नमः।।

३ॐ भुवः तर्जनीभ्यां नमः। ।। शिरसे स्वाहा ।।

३ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः। ।। शिखायै नमः ।।

३ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम् अनामिकाभ्यां नमः। ।। कवचाय हुँ।

३ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि, कनिष्ठकाभ्यां नमः। ।। नेत्रत्रयाय वाषट्।।

३ॐ धियो यो नः प्रचोदयात्, करतलपृष्ठाभ्यां नमः।। अस्त्राय फट्।।

व्याहृति न्यास :— १. ३ॐ भू नमः हृदये। २. ३ॐ भुवः नमो मुखे। ३. ३ॐ स्वः नमो दक्षांसे। ४. ३ॐ महः नमो वामांसे। ५. ३ॐ जनः नमो दक्षिणोरौ ६. तपः नमो वामोरौ ७. सत्यः नमः जठरे।

अथ गायत्री वर्ण न्यास :— १. ३ॐ तत् नमः पादद्वयांगुलिमूलयोः। २. ३ॐ सं नमः गुल्फयोः। ३. ३ॐ विं नमः जानुनोः। ४. ३ॐ तुर् नमः पादमूलयो। ५. ३ॐ वं नमः लिंगे। ६. ३ॐ रें नमः नाभौ। ७. ३ॐ णिं नमः हृदये। ८. ३ॐ यं नमः कण्ठे। ९. ३ॐ भं नमः हस्तद्वांगुली

मूलयो:। १०. ॐ र्गो नम: मणिबंधयो। ११. ॐ दें नम: कर्पूरयो:। १२. ॐ वं नम: बाहुमूलयो:। १३. ॐ स्यं नम: आस्ये मुखे। १४. ॐ धीं नम: नासापुटयो:। १५. ॐ मं नम: कपोलयो:। १६. ॐ हिं नम: नेत्रयो:। १७. ॐ धीं नम: कर्णयो:। १८. ॐ यों नम: भ्रूमध्ये। १९. ॐ यों नम: मस्तके। २०. ॐ नं नम: पश्चिमवक्त्रे। २१. ॐ प्रं नम: उत्तरवक्त्रे। २२. ॐ चों नम: दक्षिणवक्त्रे। २३. ॐ दं नम: पूर्ववक्त्रे। २४. ॐ यात् नम: उर्ध्ववक्त्रे।

पदन्यास :— ॐ तत् नम: शिरसि। . ॐ सवितुर्नम: भ्रुवोमध्ये। . ॐ वरेण्यं नम: नेत्रयो। . ॐ भर्गो नम: मुखे। . ॐ देवस्य नम: कंठे। . ॐ धीमहि नम: हृदये। ॐ धियो नम: नाभौ। ॐ यो नम: गुह्ये। ॐ न: नम: जानुनो:। ॐ प्रचोदयात् नम: पादयो: । ॐ आपोज्योतिरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरोम् नम: शिरसि।

षडङ्ग देवन्यास :— ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नम: । ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा। ॐ भर्गोदेवस्य रुद्राय शिखायै वषट्। ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुँ। ॐ धियो योन: सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्रायफट्।

व्यापक न्यास :— ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं नम: नाभ्यादि पादांगुलि पर्यन्तम्। ॐ भर्गोदेवस्य धीमहि नम: हृदयादि नाभ्यान्तरम्। ॐ धियो यो न: प्रचोदयात् मूर्द्धादि हृदयांतम्।

इसके बाद मूल मंत्र से दोनों हाथों की हथेलियों से शिर से पांव तथा पैर से शिर क ४ बार व दो—दो बार दोनों पार्श्व में करें।

।। सर्वदेवानां यंत्रस्थमंडलेषु पीठ पूजा ।।

अपने सामने विशेषार्घ पात्र के पृष्ठ भाग में जो सिंहासन रखा है या मंडल बना रखा है उसका प्रोक्षण करें, अष्टदल मण्डल रचित तश्तरी में या कलश पात्र पर श्रीयंत्र, गायत्रीयंत्र या साध्य देव यंत्र को स्थापित करें।

पीठ पूजा :-

हस्ते अक्षतान्गृहीत्वा — ॐ पूं पूर्व पीठाय नम:। ॐ पूं पूर्णपीठाय

नमः। कं कामपीठाय नमः। प्राच्यां दिशी — ॐ उडड्डीयानपीठाय नमः। आग्नेयां—मातृपीठाय नमः। दक्षिणे—जं जलंधरपीठाय नमः। नैर्ऋत्य—कं कोल्हापुरपीठाय नम्ः। पश्चिमे पूं पूर्णगिरिपीठाय नमः। वायव्यां—सौं—सौहारोपपीठाय नमः। उत्तरे कं कोल्हागिरिपीठाय नमः। ऐशानां—कं कामरूपपीठाय नमः।

दक्षिणे — गुरुवे.। परम गुरुवे.। परात्पर गुरुवे.। परमेष्ठि गुरुवे.। मातृपितृभ्यां। उपमन्यु, नारद, सनक, व्यासादिभ्यो नमः।

वामे — गं गणपतिये.। दुं दर्गाये.। सं सरस्वत्यै.। क्षं क्षेत्रपालाय।

पीठ देवता स्थापनम् :-

मं मण्डूकाय नमः। कां कालाग्निरुद्राय नमः। मूं मूल प्रकृत्यै नमः। आं आधार शक्तै नमः। कूं कूर्माय नमः। ॐ अनंताय नमः। वं वराहाय नमः। पृं पृथिव्यै.। ॐ अमृतावर्णवाय.। ॐ आं...क्षं नवरत्नमय मणिद्वीपाय नमः। नं नंदनोद्यानाय नमः। कं कल्पवृक्षाय नमः। स्वं स्वर्ण प्राकाराय नमः। चिं चिंतामणि मण्डपाय.। रं रत्न वदिकायै.। रं रत्नसिंहासनाय नमः।

मंडल के चारों कोनों में पूजा करें।

धं धर्माय नमः.आग्नये। ज्ञां ज्ञानाय नमः नैर्ऋत्ये। वैं वैराग्य नमः वायव्ये। ऐं ऐश्वर्याय नमः ईशाने।

इसके बाद मंडल की पूर्वादि चारों दिशाओं में :-

अं अधर्माय नमः पूर्वे। अं अज्ञानाय नमः दक्षिणे। अं अवैराग्य नमः पश्चिमे। अं अनैश्वर्याय नमः उत्तरे।

इसके बाद मण्डल के मध्य में :-

ह्रीं आदिमायायै नमः। विं विद्यायै.। आं आनन्दकन्द पद्ममाय.। सवित्रालाय नमः। प्रं प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। विं विकारमय केसरेभ्यो नमः। रं वह्नि मण्डलाय नमः। अं सूर्य मण्डलाय नमः। वं सों सोममण्डलाय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। मं महात्मने नमः। मां मायात्वाय नमः। विं विद्यातत्वाय नमः। शं

शिवतत्वाय नमः। ब्रं ब्रह्मणे नमः। विं विष्णवे नमः। मं महेश्वराय नमः।

इसके बाद आग्नेयादि चारों कोणों में आं आत्मने नमः आग्नये।।अं अंतरात्मने नमः वायव्ये। अं परात्मने नमः नैऋत्ये। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ईशाने।

अथ नवशक्ति स्थापयेत (दुर्गोपसनायाम्) — तद्यथा पूर्वाद्यष्टसु — नं नन्दायै नमः। भगवत्यै नमः। रक्तदन्तिकायै नमः। शाकम्भर्यै नमः। दुर्गायै नमः। भीमायै नमः। कालिकायै नमः। भ्रामर्यै नमः। मध्ये शिवदूत्यै नमः।

धं धर्मस्वरुपाय सिंहाय नमः।

(ललितोपसनायाम्) पूर्वादिक्रमेण — इं इच्छायै नमः पूर्वे। ज्ञां ज्ञानायै नमः आग्नये। किं क्रियायै नमः दक्षिणे। कां कामिन्यै नमः नैऋत्यै। कां कामदायै नमः पश्चिमे। रं रत्यै नमः वायव्ये। रं रतिप्रियायै उत्तरे। नं नन्दायै नमः इंशाने। मध्ये मं मनोन्मयै नमः। ऐं परायै अपरायै हसौः सदाशिव महाप्रेतपद्मासनाय नमः।

गायत्री यंत्रस्थदेवतानां स्थापनं पीठ पूजा

पीठ पूजा का सूक्ष्म क्रम इस तरह से है।

ॐ मण्डूकाय नमः। ॐ कूं कूर्माय नमः। ॐ कां कालाग्नि रुद्राय नमः। ॐ अं अमृतसागराय नमः। ॐ मं मणि द्वीपाय नमः। ॐ रं रत्न द्वीपाय नमः। ॐ नं नंदनोद्योपनाय नमः। ॐ कं कल्पवृक्षेभ्यो नमः। ॐ रं रत्न वेदिकायै नमः। ॐ रं रत्न सिंहासनाय नमः। ॐ अं अग्नि मण्डलाय नमः। ॐ अं अर्क मण्डलाय नमः। ॐ सों सोम मंडलाय नमः।

मध्ये-पूर्वादिक्रमेण अष्टदलेषु :— ॐ रां दीप्तायै नमः। ॐ रीं सूक्ष्मायै नमः। ॐ रुं जयायै नमः। ॐ रें भद्राय नमः। ॐ रैं विभूत्यै नमः। ॐ रों विमलायै नमः। ॐ रौं अमोघायै नमः। ॐ रं विद्युतायै

नमः। मध्ये ॐ रः सर्वतोमुख्यै नमः।

त्रिकोण मध्ये (बिन्दु से) :– पूर्वादि चतुर्दिक्षुमध्ये – ॐ प्रभुताय नमः। ॐ विमलाय नमः। ॐ साराय नमः। ॐ समाराध्याय नमः। ॐ मध्ये परमसुखाय नमः।

इसके बाद पीठ पर कलश मध्ये गायत्री देवी का आवाहन करें।

ध्यान :-

मुक्ता–विद्रुम हेम नील धवलच्छायै मुर्खैस्त्रीक्षणैः
युक्तामिन्दु–निबद्ध रत्नमुकुटां तत्वात्म–वर्णात्मिकाम् ।
गायत्री वरदाभयाङ्कुश–कुशां शुभ्रं कपालं गुणैः
शंखं चक्रमथारविन्द–युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ।।

अथ गायत्री यंत्र पूजनम्

मंत्र महार्णव के अनुसार बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त, अष्टदल एवंभूपुर युक्त यंत्र बनावें। स्त्री देवता के पूजन में त्रिकोण को मुँह नीचे की ओर तथा पुरुष देवता के पूजन में त्रिकोण का मुँह ऊपर की ओर होता है।

पूजन तर्पण के लिये पात्रा साधन करें। या विशेषार्घ जल एवं पंचामृत एक पात्र में मिलाकर तर्पण करें पात्र की पूजा करें। गंध, अक्षत, खुले पुष्पों को एक पात्र में एकत्र करें। पूजन तर्पण यंत्र पर करें या यंत्र व अपने मध्य में अन्य पात्र रखलें उसमें पूजन तर्पण करते रहें। पूजन दो व्यक्ति अलग–अलग करें या स्वयं करें तो प्रत्येक नामावलि के साथ **"श्री पादुकां पूजयामि नमः तर्पयामि स्वाहा" उच्चारण करते हुये दाहिने हाथ से ज्ञान मुद्रा से पुष्पाक्षत गंध अर्पण करें तथा बायें हाथ से तत्वमुद्रा से तर्पण करें।**

नमस्करोति -

ॐ सचिन्मये परे देवि परामृत रस प्रिये ।
अनुज्ञां देहि गायत्री! परिवारार्चनाय मे ।।

अथ प्रथमावरणम् -

(१) बिन्दु में मूल मंत्र से **"श्रीसविता देवता" श्री पादुकां पूजयामिनमः तर्पयामि।**

अत्रैव :-

स्वगुरु क्रम — (१) ॐ अमुकानंदनाथ स्वगुरु श्री पा. पू. न. त. (२) ॐ अमुकानंदनाथ परमगुरु श्री पा. पू. न. त. (३) ॐ अमुकानंदनाथ परात्परगुरु श्री पा. पू. न. त. (४) ॐ अमुकानंदनाथ परमेष्ठिगुरु श्री पा. पू. न. त.

अत्रैव षडङ्ग पूजा -

(१) ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः श्री पा. पू. न. त.।

(२) ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा श्री पा. पू. न. त.।

(३) ॐ भर्गोदेवस्य रुद्राय शिखायै वषट् श्री पा. पू. न. त.।

(४) ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुँ श्री पा. पू. न. त.।

(५) ॐ धियो यो नः सदाशिव नेत्र त्रयाय वौषट् श्री पा. पू. न. त.।

(६) ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट् श्री पा. पू. न. त.।

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ।।

पुष्पांजलीं समर्पयामि।

"पूजिताः तर्पिताः सन्तु" उच्चारण कर सामान्यर्घ से तृप्त करें।

अथ द्वितीयाऽवरणम् — (त्रिकोणे) जिस गुरु क्रम में पूजन रेखाओं में कहा है उस क्रम में पूर्व रेखा नैऋत्य एवं वायव्य रेखा में करें एवं जिस गुरु क्रम में कोणों में पूजन बताया है वे अग्निकोण, पश्चिम एवं ईशान कोण में पूजन करें। **(१) ॐ गायत्र्यै नमः श्री पा. पू. न. त.। (२) ॐ सावित्र्यै नमः श्री पा. पू. न. त। (३) ॐ सरस्वत्यै नमः श्री पा. पू. न. त.।**

ॐ अभीष्ट सिद्धिं....द्वितीया ऽवरणार्चनम्। पुष्पं स.। "पूजिताः तर्पिताः सन्तु" उच्चारण कर तृप्त करें।

अथ तृतीयावरणम् — (त्रिकोण के बाहरी कोणों वृत्त में) **(१) ॐ ब्रह्मणे नमः श्री पा. पू. न. त.। (२) ॐ विष्णवे नमः श्री पा. पू. न. त.। (३) ॐ रुद्राय नमः श्री पा. पू. न. त.। अभीष्ट सिद्धिं ....**

तृतीयावरणार्चनम्। पुष्प स.। "पूजिताः तर्पिताः सन्तु" अर्घ जल तृप्त करें।

अथ चतुर्थावरणम् — अष्ट दल में पूर्वादि क्रमेण — (१) ॐ आदित्याय नमः श्री पा. पू. न. त.। (२) ॐ उषायै नमः। (३) ॐ भानवे नमः। (४) ॐ प्रज्ञायै नमः। (५) ॐ भास्कराय नमः। (६) ॐ प्रभायै नमः। (७) ॐ रवये नमः। (८) ॐ संध्यायै नमः। श्री पा. पू. न. त.। ॐ अभिष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।। पुष्पांजलि अर्पण करें "पूजिताः तर्पिताः सन्तु" कहकर अर्घ जल से तृप्त करें।

अथ पंचमावरणम् — पुनः अष्टदले पूर्वादिक्रमेण (केसरेषु) (१) ॐ प्रल्हादिन्यै नमः श्री पा. पू. न. त.। (२) ॐ प्रभायै नमः। (३) ॐ नित्यायै नमः। (४) ॐ विश्वम्भरायै नमः। श्री पा. पू. न. त.। (५) ॐ विशालिन्यै नमः। (६) ॐ प्रभावत्यै नमः। (७) ॐ जयायै नमः। (८) ॐ शान्त्यै नमः। श्री पा. पू. न. त.। अभिष्ट सिद्धिं....पंचमावरणार्चनम् पुष्पांजलि अर्पण करें "पूजिताः तर्पिताः सन्तु" कहकर अर्घ जल से तृप्त करें।

अथ षष्टमावरणम् — पूर्ववत् अष्ट दलों के मूल भागों में पूर्वादि क्रमेण—

ॐ कान्त्यै नमः कान्ति श्रीपा.।।१।। ॐ दुर्गायै नमः दुर्गा श्री पा. ।।२।। ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वती श्रीपा. ।।३।। ॐ विश्वरूपाय नमः विश्वरूपा श्रीपा.।।४।। ॐ विशालायै नमः विशाला श्रीपा. ।।५।। ॐ ईशायै नमः ईशा श्रीपा.।।६।। ॐ चापिन्यै नमः चापिनी श्रीपा.।।७।। ॐ विमलायै नमः विमला श्रीपा.।।८।।

ॐ अभीष्ट सद्धि मे देहि शरणागत वत्सले ।
भक्त्या समर्पयं तुभ्यं षष्ठमावरर्णाचनम् ।।

अथ सप्तमावरणम् — अष्टदल के मध्य में प्राची क्रमेण...

(१) ॐ अपहारिण्यै नमः। (२) ॐ सूक्ष्मायै नमः। श्री पा. पू. न.

त.। (३) ॐ विश्वयोन्यै नमः। (४) ॐ जयावहायै नमः। (५) ॐ पद्मालयायै नमः। (६) ॐ परायै नमः। (७) ॐ शोभायै नमः। (८) ॐ पद्मरूपायै नमः। ॐ अभिष्ट सिद्धिं...सप्तमावरणाचैनम्। पुष्पांजलि अर्पण करें "पूजिताः तर्पिताः सन्तु" कहकर अर्घ जल से तृप्त करें।

अथ अष्टमावरणम् — अष्टदलाग्रे (कर्णिकायै) पूर्वादिक्रमेण (१) ॐ आं ब्राह्म्यै नमः श्री पा. पू. न. त.। (२) ॐ ई माहेश्वर्यैनमः। (३) ॐ ऊं कौमार्यै नमः। (४) ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः। (५) ॐ ॡंवाराह्यै नमः। (६) ॐ ऐं इंद्राण्यै नमः। (७) ॐ औं चामुण्डायै नमः। (८) ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः। ॐ अभिष्ट सिद्धिं...अष्टमावरणार्चनम्। पुष्पांजलि अर्पण करें "पूजिताः तर्पिताः सन्तु" कहकर अर्घ जल से तृप्त करें।

अथ नवमावरणम् — भूपूरे (प्रथम श्वेत परिधौ) पूर्वादि क्रमेण (१) ॐ शुं शुक्राय नमः। (२) ॐ सों सोमाय नमः। (३) ॐ बुं बुध ायै नमः श्री पा. पू. न. त.। (४) ॐ गुं गुरवे नमः। (५) ॐ भौं भोमाय नमः। (६) ॐ शं शनैश्चरायै नमः। (७) ॐ रां राहवे नमः। (८) ॐ कें केतवे नमः। ॐ अभिष्ट सिद्धिं...नवमावरणार्चनम्। पुष्पांजलि अर्पण करें "पूजिताः तर्पिताः सन्तु" कहकर सामान्यअर्घ से तृप्त करें।

अथ दशमावरणम् — भूपुरे रक्त परिधौ (पूर्वादिदशदिक्षु) — (१) ॐ लं इंद्राय नमः। श्री पा. पू. न. त.। (२) ॐ रं अग्नये नमः। (३) ॐ मं यमाय नमः। (४) ॐ क्षं निर्ऋतये नमः। (५) ॐ वं वरुणाय नमः। (६) ॐ यं वायवे नमः। (७) ॐ सं सोमाय नमः। (८) ॐ ईं ईशानाय नमः। (९) (ईशान पूर्वयोर्मध्ये) ॐ आं ब्रह्मणे नमः। (१०) (निर्ऋति पश्चिमयोऽर्मध्ये) ॐ अं अनंताय नमः। श्री पा. पू. न. त.। ॐ अभिष्ट सिद्धिं...दशमावरणार्चनम्। पुष्पांजलि अर्पण करें "पूजिताः तर्पिताः सन्तु" कहकर अर्घ जल से तृप्त करें।

अथ एकादशमावणरम् :— भूपूरे कृष्ण परिधौ (पूर्वादिदशदिक्षु) (१) ॐ वं वज्राय नमः। श्री पा. पू. न. त.। (२) ॐ शं शक्तये नमः। (३) ॐ दं दण्डाय नमः। (४) ॐ खं खड्गाय नमः। (५) ॐ पं

पाशाय नमः। (६) ॐ अं अंकुशाय नमः। (७) ॐ गं गदायै नमः। (८) ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः। (९) ॐ पं पद्माय नमः। (१०) ॐ चं चक्राय नमः। श्री पा. पू. न. त.। ॐ अभिष्ट सिद्धिं...एकादशमावरणम्। पुष्पांजलि अर्पण करें "पूजिताः तर्पिताः सन्तु" कहकर अर्घ जल से तृप्त करें।

"ॐ...(मूल मंत्रेण) श्री गायत्री यंत्र स्थापित देवताभ्यो प्रसन्ना वरदा भव" कहकर पुष्पांजलि अर्पीत करें।

अगर यंत्र पर पूजन किया हो तो निर्माल्य कर यंत्र को शुद्धकर गंधोपचार से पूजन कर धूप दीप नैवेद्य अर्पण कर नीरांजन करें।

।। सविता देवता वरदा भवन्तु ।।

अथ सूर्यभद्रमंडल देवता स्थापनम्

सूर्य भद्रमंडल के परिवार देवता के आवाहन से पहिले सूर्य वंश को कुछ संक्षिप्त वर्णन दिया जा रहा है, क्यों कि प्रस्तुत पूजा विधि में सूर्य परिवार व तंत्रोक्त पूजन क्रम के आधार पर ही आवाहन क्रम दिया गया है।

सूर्य का विवाह प्रजापति विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा से हुआ। **संज्ञा के तीन संतानें** हुई **(१) वैवस्वत – मनु (२) यम (३) यमुना(युगल)।**

सूर्य के अत्यंत तेज को सह नहीं पाने के कारण संज्ञा ने **"छाया के रूप में"** अपनी प्रतिबिम्ब शक्ति को सूर्य के पास रहने की आज्ञा दी। छाया से दो पुत्र **"संवीर्ण"** और **"शनि"** तथा **तपती(तापती नदी)** की उत्पत्ति हुई।

संज्ञा जो **"उत्तरकुश"** में अश्विनी (घोड़ी) के रूप में विचरण कर रही थी, उससे सूर्य का पुनः संयोग होने पर दोनों **"अश्विनी कुमारों"** की उत्पत्ति हुई।

सूर्य की **दो पत्नियां** और थी। राजा रैवत की पुत्री **राज्ञी**(रात्री), से **रेवत** तथा अन्य पत्नि **प्रभा** से **प्रभात** की उत्पत्ति हुई।

पुराणों के अनुसार सूर्य के सम्पूर्ण रूप से १० पुत्र एवं ३ पुत्रियां हुई।

भद्रमंडल देवता आवाहनम्

मंडल मध्ये पूर्वादि क्रमेण :-

।१।। ॐ ब्रह्मणे तेजोमण्डलाय नमः ।।२।। विष्णवे तेजोमण्डलाय

नम: ।।३।। रुद्राय तेजोमण्डलाय नम: ।।४।। अग्नये तेजोमण्डलाय नम:।

मध्ये :— ।।५।। ३ॐ सूर्य तेजोमण्डलाय नम:।

ध्यानम् :-

रक्ताम्बुजासनमशेष गुणैक सिंधुं
भानुं समस्तजगतामधिपं भजामि ।
पद्मद्वयाभय वरान् दधत: कराब्जै
माणिक्य मौलिमरुणाङ्ग रुचिं त्रिनेत्रम् ।।

३ॐ आकृणेन रजसा... इति मन्त्रेण आवाह्य। भो सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ। प्रसन्नो वरदो भव।

परिधि समीपे त्रिपद पीत भद्रों में ८ पीठ शक्तियों का आवाहन करें।

।।६।। पूर्व ईशान मध्ये — **३ॐ दीप्तायै नम:।** ।।७।। पूर्व आग्नये मध्ये — **३ॐ सूक्ष्मायै नम:।** ।।८।। आग्नये दक्षिण मध्ये — **३ॐ जयायै नम:।** ।।९।। दक्षिण निर्ऋति मध्ये — **३ॐ भद्रायै नम:।** ।।१०।। निर्ऋति पश्चिम मध्ये — **३ॐ विभूत्यै नम:।** ।।११।। पश्चिम वायवो मध्ये — **३ॐ विमलायै नम:।** ।।१२।। वायवोत्तर मध्ये — **३ॐ अमोघाय नम:।** ।।१३।। उत्तरीशान मध्ये — **३ॐ विद्युतायै नम:।**

परिधि समीपे अष्ट ग्रहान् स्थापयेत् :—

।।१४।। पूर्वे परिधि समीपे — **३ॐ शुक्राय नम:।** ।।१५।। आग्नेयां खंडेन्दौ — **३ॐ सोमाय नम:।** ।।१६।। दक्षिणे परिधि समीपे — **३ॐ अंगारकायनम:।** ।।१७।। नैऋत्यां खंडेंदौ — **३ॐ राहवे नम:।** ।।१८।। पश्चिम परिधि समिपे — **३ॐ शनैश्चराय नम:।** ।।१९।। वायव्यां खंडेंदौ — **३ॐ केतवे नम:।** ।।२०।। उत्तरे परिधि सभापे — **३ॐ गुरुवे नम:।** ।।२१।। ईशान खंडेंदौ — **३ॐ बुधाय नम:।**

कृष्ण श्रृंखलायाम् सूर्य पुत्रान् ईशान आग्नेयादि क्रमेण आवाहयेत्

।।२२।। ईशाने कृष्ण शृंखलायाम् — ॐ **वैवस्वत मनवे नमः।** ।।२३।। आग्नेयां कृष्ण शृंखलायाम् — ॐ **अश्विनीकुमाराभ्यां नमः।** ।।२४।। नैऋत्यै कृष्ण शृंखलायाम् — ॐ **संवीर्णाय नमः।** ।।२५।। वायवे कृष्ण शृंखलायाम् — ॐ **रेवताय प्रभाताय नमः।**

प्रतिकोणे ७ पद द्वौ—द्वौ नीलवल्ली अस्ति तेषां ईशानादि क्रमेण —

।।२६।। ईशाने — ॐ **भूर्भुवादि सप्त लोकेभ्यः नमः।** ।।२७।। ईशाने — ॐ **रेवन्तादि सप्ताश्वाय नमः।** ।।२८।। आग्नेये — ॐ **सुषुम्णा, सुरादना, उदन्वसु, विश्वकर्मा, उदावसु, विश्वव्यचा हरिकेशादि सप्त रश्मि देवतायै नमः।** ।।२९।। तत्रैव आग्नेयां — ॐ **काली कराली मनोजवादि सप्त जिह्वा देवतायै नमः।** ।।३०।।

आग्नेयां द्वितीय वल्लीमध्ये **सप्तगंधर्व अप्सरसः देवतायै।** ।।३१।। नैऋत्यां — ॐ **दक्षादि सप्तगणेभ्यो नमः।** ।।३२।। नैर्ऋत्यां — **तल, अतल, वितल आदि सप्त पातालाअधिपतये नमः।** ।।३३।। वायव्यां — **आवहाय, प्रवहाय, उद्वहाय, वहाय, विवहाय, परावहाय परिचहाय आदि सप्तमरुद गणेभ्यो नमः।** ।।३४।। वायव्यां — **सप्त ऋषीन् आ. स्था.।**

मंडलमध्ये कर्णिका समीपे चतुष्पद श्वेत भद्रे पूर्वादिक्रमेण —

।।३५।। पूर्वे — ॐ **आदित्याय नमः।** ।।३६।। दक्षिणे — ॐ **रवये नमः।** ।।३७।। पश्चिमे — ॐ **भानवे नमः।** ।।३८।। उत्तरे — ॐ **भास्कराय नमः।**

मण्डल मध्ये चतुर्दिक्षु द्वादश पद रक्त भद्राणि सन्ति: तेषां पूर्वादिक्रमेण :—

।।३९।। पूर्वे — ॐ **उषायै नमः।** ।।४०।। दक्षिणे — ॐ **प्रज्ञायै नमः।** ।।४१।। पश्चिमे — ॐ **प्रभायै नमः।** ।।४२।। उत्तरे — ॐ **संध्यायै नमः।**

मण्डलमध्ये ।।४३।। सूर्यस्य वामभागे — ॐ **संज्ञायै नमः।** ।।४४।।

सूर्यस्य दक्षिण भागे — ॐ छायायै नमः। ।।४५।। सूर्यस्य पादमूले — ॐ यमुनायै नमः। ।।४६।। तत्रैव — ॐ तात्प्यै नमः। ।।४७।। तत्रैव — ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः। ।।४८।। सूर्यस्य मस्तकोपरि — ॐ मेरवे नमः।

ततः द्वादशमासाधिपति द्वादश सूर्यान् आवाहयेत्

चैत्र, वैशाख, जेष्ठादि मासों के नाम क्रमशः मधु, माधव, शक्र, शुचि, नभ, नभस्य, तप, तपस्य, सह, पुष्य, इस्र, एवं ऊर्ज है। अतः उनके मास स्वामि सूर्य का पूर्वादि क्रम से (प्रत्येक दिशा में तीन—तीन) आवाहन करें।

।।४९।। *पूर्वे प्रथम* — मधुमासाधिपतये — धातायै नमः। ।।५०।। माधव मासधिपतये — अर्यमाये नमः। ।।५१।। शक्रमासाधिपतये — मित्राय नमः। ।।५२।। *(दक्षिणे)* शुचिमासाधिपतये — वरुणाय नमः। ।।५३।। नभ (श्रावण)मासाधिपतये — शक्राय नमः। ।।५४।। नभस्य (भाद्रपद) मासा धिपतये — विवस्वाने नमः। ।।५५।। *पश्चिमे* तप (आश्विन) मासाधिपतये — पूषायै नमः। ।।५६।। तपस्यमासाधिपतये — पर्जन्याय नमः। ।।५७।। सहमासाधिपतये — अंशुवे नमः। ।।५८।। *(उत्तरे)* पुष्यमासाधिपतये — भङ्गाय नमः। ।।५९।। इस्रमासाधिपतये — त्वष्टायै नमः। ।।६०।। ऊर्ज मासाधिपतये — विष्णवे नमः।

सप्तपरिधौ पूर्वादिक्रमेण :— ।।६१।। पूर्वे — इंद्राय नमः। ।।६२।। आग्नयां — अग्नये नमः। ।।६३।। दक्षिणे — यमाय नमः। ।।६४।। नैर्ऋत्यां — निर्ऋतये नमः। ।।६५।। पश्चिमे — वरुणाय नमः। ।।६६।। वायव्यां — वायवे नमः। ।।६७।। उत्तरे — कुबेराय नमः। ।।६८।। ईशाने — ईशानाय नमः।

रजः परिधौ पुनः पूर्वादिक्रमेण :— ।।६९।। वज्राय नमः। ।।७०।। शक्त्यै नमः ।।७१।। दण्डाय नमः।।७२।। खड्गाय नमः ।।७३।। पाशाय नमः।।७४।। अंकुशाय नमः।।७५।। गदायै नमः।।७६।। त्रिशूलाय नमः।

ततः परिधौ पुनः पूर्वादिक्रमेण अष्टमातृकां आवाहयेत् :—

।।७७।। ब्राह्म्यै नमः। ।।७८।। आग्नये — कौमार्यै नमः। ।।७९।।

दक्षिणे — वैष्णव्यै नमः। ।।८०।। नैऋत्यां — वाराह्यै नमः। ।।८१।।
पश्चिमे — इंद्राण्यै नमः। ।।८२।। वायव्यां — इंद्राण्यै नमः। ।।८३।।
उत्तरे — चामुण्डायै नमः। ।।८४।। ईशाने — महालक्ष्म्यै नमः।

"ॐ मनोजूति" इति मन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य सूर्य मण्डल मध्ये प्राण —प्रतिष्ठा पूर्वकं संस्थाप्य एवं मण्डल परिवारदेवतायै सर्वोपचाराय पूजनं कुर्यात्।

अथ पंचवक्त्र (शिव) पूजनम्

भगवान आशुतोष के पंचवक्त्र ब्रह्म स्वरूप पूजन में आवाहन, ध्यानक्रम एक तंत्रेण दिया गया है। तदुपरान्त पूजन एकतंत्रेण कर सकते है।

श्वेत गंधाक्षत पुष्पों से नमस्कार करें, प्राण प्रतिष्ठा की हुई मूर्ति में आवाहन नहीं होता है अतः नाम मंत्र के साथ ध्यान करते हुये पूजन करें।

पश्चिमवक्त्र पूजा :— ॐ सद्योजातमित्यस्य जमदग्नि सद्योजातः ऋषिं त्रिष्टुप छंद सद्योजातो देवता श्वेत वर्ण हंसवाहनं पश्चिमवक्त्रं पृथिवीतत्वं पश्चिमवक्त्र नमस्कारे पूजने विनियोगः।

ॐ सद्योजातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानाम भवत्पुरोगाः ।
अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहा कृत ठ हविरदन्तु देवाः।।१।।
ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमो नमः ।।२।।

(गंधसिताक्षत श्वेत पुष्पैः) सद्योजाताय श्वेतवर्णाय हंसवाहनाय पश्चिम वक्त्राय पृथिवि तत्त्वाय सृष्टिरूपात्मने ब्रह्मणे नमः।

धेनुर्बाणमुद्रा प्रदर्शय

वामस्य मध्यमाग्रं तु तर्जन्यग्रे नियोजयेत् ।
अनामिका कनिष्ठां च तस्याङ्गुष्ठेन पीडयेत् ।
दर्शयेद् दक्षिण स्कंधे धनुर्मुद्रेयमीरिता ।।
दक्ष मुष्टिस्थतर्जन्या दीर्घया बाणमुद्रिका ।।

(इति बाणमुद्रा)

ध्यानम् :-

प्रालेयामलबिन्दु कुंद धवलं गोक्षीर फेनप्रभं
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदमन ज्वालावलीलोचनम् ।
ब्रह्मेन्द्रादि मरुद्गणैः स्तुति परैरभ्यर्चितं योगिभि–
र्वन्देऽहं सकलं कलंक रहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ।।

ततः सद्योजातस्य कला देवता पूजनम् :—

ॐ ऋद्ध्यै नमः। ॐ सिद्ध्यै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ प्रभायै नमः।

अथोत्तरवक्त्रपूजा :— ॐ वाममद्येत्य च वामदेवायत्यस्य मंत्रस्त्रय भारद्वाज–वामदेव ऋषि, त्रिष्टुप जगती छंद, सविता–विष्णु देवता, गरुड़ वाहन नमस्कार पूजने विनियोगः।

ॐ वाममद्य सवितर्वाममुश्वो दिवे दिवे वामस्मभ्यः सावीः ।
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वामभाजः स्याम ।।१।।
ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः
कालाय नमः कलविकरणाय नमो बल विकरणाय नमः ।।२।।

वामदेवाय कृष्णवर्णाय गरुड़ वाहनायोत्तर वक्त्रायापस्तत्वाय अमृतरूपात्मने विष्णवे नमः इति प्रणम्य पद्ममुद्रा प्रदर्शनम्।

करौतु संहता कृत्वासम्मुखावुन्नतांगुली ।
तलान्तर्मिलितांगुष्ठौ कुर्यादिवऽब्ज मुद्रिका ।।
(इति पद्ममुद्रा)

ध्यानम् -

गौरं कुंकुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डु गण्डस्थलं
भ्रू विक्षेप कटाक्ष वीक्षण लसत्संसक्त कर्णोत्पलम् ।
स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलाल कालङ्कृतं
वन्दे पर्ण शशाङ्क मण्डल निभ वक्त्रं हरस्योत्तरम् ।।

ततः त्रयोदश कला देवता पूजनम् :—

ॐ रजसे नमः। ॐ रक्षायै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ पाल्यायै नमः। ॐ कामायै नमः। ॐ संजीविन्यै नमः। ॐ प्रियायै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ धात्रै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ ज्वरायै नमः।

अथ दक्षिणवक्त्र पूजा :— ॐ यातेरुद्र शिवेत्यस्य मंत्रस्य परमेष्ठि ऋषि अनुष्टुप छंद एको रुद्रो देवता तथा ॐ अघोरेभ्य इत्यस्य अघोरऋषि अनुष्टुप छंद रुद्रो देवता नीलवर्ण कूर्मवाहनं दक्षिणवक्त्रं तेजस्तत्वं नमस्कार पूजने विनियोगः।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ।।१।।
ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्य सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररुपेभ्यः ।।२।।

ध्यानम् :–

कालाभ्र भ्रमराञ्चनाचल निभं व्यावृत्त पिङ्गेक्षणं
खण्डेन्दु द्वय मिश्रितांशु दशनाप्रोद् भिन्न दंष्ट्राङ्कुरम् ।
सर्प प्रोत कपाल शक्ति सकलं व्याकीर्णसच्छेखरं
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य कुटिलभ्रूभङ्गरौद्रं मुखम् ।।

नमस्कारं एवं ज्ञान मुद्रां प्रदर्शय।

ततौ अष्ट कलां प्रपूजयेत् — ॐ तमसे नम। ॐ मोहायै नमः। ॐ क्षयायै नमः। ॐ निद्रायै नमः। ॐ व्याधये नमः। ॐ मृतवे नमः। ॐ क्षुधायै नमः। ॐ तृषायै नमः।

अथ पूर्वक्त्र पूजा — ॐ यत्पुरुषमित्यस्य नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छंदः जगद्बीजं पुरुषो देवता तथा तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छंदः रुद्रो देवता पीतवर्णम् अश्ववाहनं पूर्ववक्त्रं वायु तत्वं पूर्ववक्र नमस्कार पूजने विनियोगः।

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते ।।१।।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।।२।।

तत्पुरुषाय पीतवर्णाया ऽश्ववाहनाय पूर्ववक्राय वायुतत्वाय चैतन्यात्मने आदित्याय नमः । इति प्रणम्य कवच मुद्रां प्रदर्शय। (करद्वन्दांगुल्यो वर्मणिस्यु)

ध्यानम् –

संवर्त्ताग्नि तडित्प्रतप्त कनक प्रस्पर्द्धितेजोरुणं
गंभीर स्मृति निः सृतोग्र दशनप्रोद्भासिताम्राधरम् ।
बालेन्दु द्युति लोलपिङ्गल जटाभार प्रबद्धोरगं
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्र नमितं पूर्व मुखं शूलिनः ।।

अथ कला पूजनम् – ॐ निवृत्यै नमः। ॐ प्रतिष्ठायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ शांत्यै नमः।

अथोर्ध्ववक्त्रपूजा – ॐ तमीशानमित्यस्य गौतम ऋषिः जगती छंदः ईशानो देवता तथा ॐ ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप छंदः रुद्रो देवता गोक्षीरवर्णं वृषभवाहनं आकाश तत्वं उर्ध्ववक्त्र नमस्कार पूजने विनियोगः

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियान् जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसा मसदवृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।।१।।
ॐ ईशानः सर्वविधानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति ब्रह्मणोधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे ऽ अस्तु सदाशिवोम् ।।२।।

ध्यानम् –

व्यक्ताव्यक्त गुणोत्तरं सुवदनं षट्त्रिंशतत्वाधिकं
तस्मादुत्तर तत्वमक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः ।
वन्दे तामसवर्जितेन मनसा सूक्ष्माति सूक्ष्मं परं शान्तं
पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम् ।।

ततः पञ्चकला पूजनम् — ॐ शशिन्यै नमः। ॐ अङ्गदायै नमः। ॐ इष्टायै नमः। ॐ मरीच्यै नमः। ॐ ज्वालिन्यै नमः।

अथ यथायथोपचारैन पंचवक्त्र पूजनम् (एक तंत्रेण)

पश्चिमवक्त्र पूजा — गंध मनशिला चन्दन श्वेताक्षतपुष्प गुग्गुलु धूप घृत दीप पायस नैवेद्यदिभिः पूजनम् । एवं प्रार्थयेत्

शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवप्रदम् ।
शुद्ध स्फटिक संकाशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम् ।।

उत्तर वक्त्र पूजा — हरिचन्दन तुलसीशतपत्र(मंजरी) पुष्प पंचसौगंधिक धूप घृत पक्कगोधूमान्न नैवेद्याभिः पूजनम्। एवं प्रार्थयेत् —

वामदेवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्रगण सेवितम् ।
अजन्मानमुमाकान्तं वन्देऽहं ह्युत्तरं मुखम् ।।

दक्षिणवक्त्र पूजा — कृष्णागरु चन्दन नीलोत्पल करवीरपुष्प सितागरु धूप माषान्न नैवेद्यादिभिः पूजनम्। एवं प्रार्थयेत्—

नीलाभ्रवर्णमोकारमघोरं घोरदंष्ट्रकम् ।
दंष्ट्राकराल मत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिणं मुखम् ।।

पूर्ववक्त्र पूजा — हरिताल चन्दन दुर्वांकुरार्कपुष्पान्यतर पुष्प कृष्णागरु धूप मोदक नैवेद्यादिभिः पूजनम्। एवं प्रार्थयेत—

बालार्कवर्णमारक्तं पुरुषं च तडित्प्रभम् ।
दिव्यं पिङ्गजटाधारं वन्देऽहं पूर्वदिङ्मुखम् ।।

उर्ध्ववक्त्र पूजा — भस्म चन्दन बिल्वपत्र कनकपुष्प ॠतु भवान्य पुष्प हरिचन्दन धूप शर्करा दध्योदन नैवेद्यादिभिः पूजनम्। एवं प्रार्थयेत्—

ईशानं सूक्ष्ममव्यक्तं तेजः च पुञ्जपरायणम् ।
अमृतस्त्रावि चिद्रूपं वन्देऽहं पंचमं मुखम् ।।

इति पवक्त्र पूजां कृत्वा देवस्यवामभागे शक्ति पूजनम् - ॐ उमायै नमः। ॐ शंकर प्रियायै नमः। ॐ पार्वत्यै नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ कोटर्यै नमः। ॐ विश्वधारिण्यै

नमः। ॐ ह्रां नमः। ॐ ह्रीं नमः। ॐ गंगादेव्यै नमः।

ततः ॐ गणपतये नमः। ॐ कार्तिकाय नमः। ॐ पुष्पदंताय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणये नमः। ॐ ईश्वराय नमः। ॐ दण्डपाणये नमः। ॐ नंदिने नमः। ॐ महाकालाय नमः।

।। इति संपूज्य।।

ततः एकादश रुद्रार्चनम् -

ॐ अघोराय नमः। ॐ पशुपतये नमः। ॐ शर्वाय नमः। ॐ विश्वरूपिणे नमः। ॐ त्र्यम्बकाय नमः। ॐ कपर्दिने नमः। ॐ विरूपाक्षाय नमः। ॐ भैरवाय नमः। ॐ शूलपाणयै नमः। ॐ ईशानाय नमः। ॐ महेश्वराय नमः।

ततो रुद्राभिषेकं कृत्वा। शुद्धोदक स्नान वस्त्रोपवित गंधाक्षत पुष्पाणि समर्प्य। बिल्वपत्रार्पणं कुर्यात्। तदनंतर सौभाग्यद्रव्य धूप दीप नैवेद्य ताम्बूल दक्षिणा आर्तिक्य प्रदक्षिणा मंत्र पुष्पांजली विशेषार्घाद्युपचारान् समर्प्य।

राजोपचारै - (यथा)

छत्रं च चामरं चैव व्यञ्जनं दर्पण तथा ।
पादुकानि च सर्वाणि गृह्यतां परमेश्वर ।।

(अभावे कल्पयामि)

।। इति पंचवक्त्र पूजा विधानम्।।

अथ यज्ञविधानं प्रारंभते

मंत्राणां अरि-मित्र विचार

मंत्राक्षर त्रिगुणं कृत्वा नामाक्षर समन्विता (स्वयं की नामाक्षर संख्या) द्वादशौ तु हरेर्भागं अरिमूलं निकन्दते। एकौ नव पंचमे सिद्धि, द्वी, षट, दश, युग्मकम् त्रीसप्त एकादशौ सुसाध्य, चत्वाराष्टौद्वादशो अरि।

वार बलि विचार

रविवारे पायसान्नं, सोमवारेण मोदकं, भौमेगुडाज्य गोधूमा। बुधश्च दधि शर्करा गौधूमा पूरिका युक्ता घृतमध्ये सुपार्जिता। गुरु चणक खाण्डाज्यं केवलं चणका भृगु शनि माषान्न तैलं च। एतेवारे बलिक्रमा।

कर्मविशेषे अग्निनामानि (प्रयोगरत्ने च)

पावक कार्य में लोकिक नाम की अग्नि, मारुत गर्भाधाने, पुंसवसने पावमान, सीमन्ते—मंगल, जातककर्मणिप्रबल, प्राशने पार्थिव, चौलसंस्कारे—सभ्य, व्रतोपवासे—समुद्भव। गोदाने—सूर्याग्नि, विवाहे योजक। आवसथ्ये—द्विज, वैश्वदेवे—रुक्मक, प्रायश्चिते—विट्, पाकयज्ञेषु—पावक,:। देवानां —हव्यवाह, पितृणां—कव्यवाहनः। शांति के वरदाग्नि, पौष्ठिके—बलवर्धनः। पूर्णाहुत्यां मृडनामाग्नि, अभिचारे क्रोधाग्नि। वशीकरणे—कामदः, वनदाहे—दुषकः। कुक्षौ जठराग्नि। मृतदाहके क्रव्यादः। लक्षहोमे—वाह्निनामाग्नि, कोटिहोमे—हुताशनः। वृषोत्सर्गेऽध्वरो। शुचिकर्मे—ब्राह्मणः। ब्रह्मयज्ञे—गार्हपत्यः। शिवे—दक्षिणाग्नि। विष्णु—त्रयऽग्नयः। दुर्गा होमे—शतमंगल। उपनयन समये - व्रतादौ-जातवेदस् नाम्ने, बह्मचारिणव्रते-प्रकृतिऽग्नि, समिधादाने-पाणिनाग्नि वंदारंभसमये-लोकिकाग्नि।

ग्रहहोमे (स्कान्दे) :— आदित्ये कपिलाग्नि। सोमे—पिङ्गलः। भौमे—धूमकेतू। बुधे—जठराग्नि। गुरौ—शिखि। शुक्रे—हाटकः। शनैश्चरे—महतेजा। राहुकेतु—हुताशन नामाग्नि।

कर्म विशेषे सप्तजिह्वानि (कौलावलि)

एवं न्यासविधि :-

न्यासस्थानं	सात्विकी	राजसी	तामसी	जिह्वा देवता
लिंगे	हिरण्या	पद्मरागा	काली	गीर्वाण (सुर)
गुदे	गगना	सुवर्णा	कराली	पितृ
शिरसि	रक्ता	भद्रलोहिता	मनोवजा	गंधर्व
मुखे	कृष्णा	लोहिता	सुलोहिता	यक्ष
नासिका	सुप्रभा	श्वेता	धूम्रवर्णा	नाग
नेत्रायो:	बहुरूपा	धूमिनी	स्फुलिंगिनी	पिशाच
सर्वांगे	अतिरिक्ता	करालिका	विश्वरुचि	राक्षस

(तामसी जिह्वा क्रम में **"कौलावली"** एवं **"स्कंद"** में भेद है)

जिह्वा स्थानानि

कुण्डस्य पूर्वदिग्भागे काली जिह्वा प्रकीर्तिता। आग्नये करालाख्या दक्षिणे तु मनोजवा।। सुलोहिता नैऋते च धूम्रवर्णा तु वारुणे। स्फुलिङ्गिनी तु वायव्ये सौम्ये विश्वरुचिस्तथा।

क्रिया विशेषे **:— पौष्टिक तथा शांति कार्य में काली, कराली, अभिचार में मनोजवा। सुलोहिता उच्चाटन में, धूम्रवर्णा विद्वेषण में, आर्कषण हेतु स्फुलिङ्गिनी, सर्व कार्येषु विश्वरुचि:।**

जैसा कार्य हो उसी जिह्वा की पूर्व में पूजा कर क्रमश: अन्य जिह्वाओं का पूजन करें।

होमे द्रव्य प्रमाणं :— घी १ तोला, दूध, पंचगव्य, मधु आधा तोला, गुड़, शक्कर आधापल। दुग्धान्न बहेरा सदृश्य, दही प्रसूति प्रमाण, लावा, धान्य मुष्ठी मात्र। खीर आधाग्रास, ईख एक पर्व, पुष्प एक पंखुरी, पूप एक, केला, नारंगी एक—एक फल लेवें। मूंग, उड़द, धान, तिल, गेहूँ, तंडुल एक मुष्ठी। कूष्माण्ड व कटहल के आठ या दशखण्ड, नारियल के आठ, मातुलिंग (बिजौरा) के चार, मालूर के तीन। केथा खरबूजा के तीन—तीन फलों का एक खण्ड प्रमाण लेना चाहिये।

गुंजा, कालीमिर्च २० नग, गुग्गुलु, हींग, बेर तुल्य चन्दन, कर्पूर, अगर इसी प्रमाण में हल्दी पिसी आधा तोला, नमक, राई, सुक्ति प्रमाण में लेंवें। केसर

किस्तुरी यथा संभव लेवें। (दुर्गाकल्पे, कौलावली)

अग्निचक्रम्

विवाह यात्रा व्रत गोचरेषु चूड़ोपवीते ग्रहणे युगादौ ।
दुर्गाविधाने च सुत प्रसूतौ न वाऽग्नि चक्रं परिचिन्तनीयम् ।।१।।
व्रतबंधे विवाहे च नवरात्रे च नित्यके ।
कुलदेव्यार्चने धीमान्नो कुर्यादाग्निचिन्तनम् ।।२।।
ग्रहणोद्वाह (विवाह) गण्डान्ते तथा दुर्गोत्सवेऽपि च ।
तदाऽग्नि चक्रं नालोक्यं ग्रहशान्तौ विचारयेत् ।।३।।

अग्निवास :— जिस समय हवन करना हो उस समय तात्कालिक तिथि और वार संख्या में १ जोड़कर ४ कर भाग देवें। यदि ३ या शून्य शेष रहें तो अग्निवास पृथ्वी पर शुभ है। शेष १ बचे तो आकाश में प्राणहानि कारक, शेष २ बचे तो पाताल में धन हानि करें। तिथि गणना शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से करें। वार गणना रविवार से करें मेरे अनुमान से तिथी सूर्योदयी न गिनकर तात्कालिक तिथी लेनी चाहिये क्यों कि मुहुर्त्त विधान यही कहता है।

विष्णु यागे :-

रोहिण्यधिप नक्षत्रं वारस्तिथिनु क्रमातः। घृतिभि (१८)
श्चयुतं कार्य युग (४) संख्यैर्हरेत्पुनः ।
त्रिवेदे (३/४) वसते भूमौ । भूमि लोके सुखावहम् ।।

रुद्रयागे :-

तिथिवारश्च नक्षत्रं कलाभि (१६) श्च समन्वितम् ।
वेद संख्यैर्हरेद्भागं वह्नि चक्रं विलोकयेत ।।

तिथि + वार + नक्षत्र + १६ के योग में ४ का भाग देवें। शेष १ में स्वर्ग, २ शेष होने पर पाताल हानि करे। ३ या ४ बचे तो पृथ्वी पर शुभ होवे।

दुर्गा होमे :-

ब्राह्मी च कौमारी च वैष्णवी च वाराही ऐन्द्री त्वथ चंडिका ।
च मेधा च माहेश्वरी नारसिंही क्रमेण सूर्यादिनभं त्रिक च ।।

अर्थात सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक ३—३ भाग करें।

मातृका :-

ब्राह्मी कौमारी वैष्णवी वाराही ऐन्द्री चण्डिका मेधा माहेश्वरी नारसिंही

नक्षत्र -

३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३ ३

फल -

लक्ष्मीपुत्र शौक भय धन राज्य रोग विद्या सुख सम्मान

(ज्योतिषसार सम्मुचे)

अग्नि सम्मुखीकरण विषये

प्रश्न :-

अधोमुखः ऊर्ध्वपादः प्राङ्मुखो हव्यवाहनः ।
तिष्ठत्येव स्वभावेन आहुतिः कुत्र दीयते? ॥

उत्तर :-

आधारो नासिका ज्ञेया, आज्यभगे च चक्षुषी ।
वक्रश्चोदर कुक्षी च कटि व्याहितिभि स्मृताः ।।१।।
शिरोहस्तौ च पादौ च पंचवारुणका स्मृताः ।
प्रजापति स्विष्टकृतं श्रोत्रे द्वे परिकीर्ति ते ।।२।।
सधूमोग्नि शिरो ज्ञेयो निर्धूमा चक्षुरे वचः ।
ज्वलत् कृशो भवेत्कर्णः काष्ठमग्ने मनस्तथा ।।३।।
अग्नि ज्वालयते यत्र शुद्ध स्फटिक सन्निभः ।
तन्मुखं तस्य विज्ञेयं चातुरङ्गले मानतः ।।४।।
प्रज्वलोऽग्निस्तथा जिह्वा एतदेवाग्नि लक्षणम् ।
आस्यान्तर्जुहुयादग्ने र्विपश्चित्सर्व कर्मसु ।।५।।

अन्यच्च :-

सपवित्राम्बुज हस्तेन वह्नेः कुर्यात्प्रदक्षिणाम् ।
हव्यवाट् सलिलं दृष्ट्वा विभीतो संमुखो भवेत् ॥

कारिकाम् :-

कर्ण होमे भवेद्व्याधि, नेत्रेऽन्धत्वमुदाहृत्तम् ।
नासिकायां मनः पीडा मस्तके च धनक्षयम् ॥

संस्कार भास्करे :-

अग्निकर्णेहुतं दद्यादुर्भिक्षं मरणं ध्रुवम् ।
नासिकायाम् मनोदुखं नेत्रे ग्रामो विनश्यति ।।

अग्निमातृ-पितरौः— (१) माता—भूमिः (२) पिता—वरुणः (३) पितरः — पार्वति परमेश्वराभ्यां पितरौ।

अग्निपुत्राः :— त्रय संति। (१) पावकः (२) पावमानः (३) शुचि (भागवते)

प्रणिता में विष्णु और प्रोक्षणी में अग्नि का ध्यान करें। (अग्निपुराण)

कुशा :-

इन्द्रवज्रं हरेश्चक्रं त्रिशूलं शंकरस्य च ।
दर्भरूपेण तेत्रीणि पवित्र छेदनाति च ।।
पुरावृत्रवधेप्राप्ते रक्तपूर्णा वसुन्धरा ।
द्वौ दर्भौ देवता त्रीणि पवित्र छेदनानि च ।।

उपयमन कुशा :— (वेणी रूपेण टेढी झुकी हुई) सप्त, पंच, त्रयोऽपि च।

यथा चक्रायुधे विष्णोर्यथा शूलं हरस्य च ।
यथा वज्रं सुरेन्द्राय तथा विप्रकरे कुशा ।।

पंच संस्कारों के कारण व महिमा

परिसमुह्य (त्रिदर्भैः)

कृमि कीट पतंगाश्च विचरंति महीतले ।
तेषां संरक्षणार्थाय परिसमुह्येति कथ्यते ।।

उपलिप्य *(गोमयादिकेन)*

पुराइन्द्रेण वज्रेण हतो वृत्रो महासुरः ।
व्यापिता मेदसा पृथ्वी तदर्थमुपलेपनम् ।।
गोमये वसते लक्ष्मीः पवित्रा सर्व मंगला ।
यज्ञार्थे संस्कृता भूमिस्तदर्थं मुपलेपनम् ।।

त्रिरुल्लेख :- *(कल्पवल्ल्या)*

उल्लेखनं ततः कुर्यादस्थिकण्टकमेव च ।
तेषामुद्धरणार्थाय उल्लेखः कथितो बुधैः ।।

उद्धृत :- (कारिकायाम्)

ये भ्रमन्ति पिशाचाद्या आकाशपथगामिनः ।
तेषां संरक्षणार्थाय उद्धृतं कथितं बुधैः ।।

अभ्युक्ष्य :- (कारिकायाम्)

आपोदेवगणाः सर्वेआपः पितृगणाः स्मृताः ।
तेनैवाभ्युक्षणं प्रोक्तमृषिभिर्देवतादिभिः ।।
(हरिहरः) मणिकाद्भिरभ्युक्ष्याभिषिंच्य ।

अथ यागविधिः

कुण्ड मंडप आदि का निर्माण **"क्रियासार"**, **"कुण्डभास्कर"**, **"कुण्डविंशति"**, **"यज्ञमधुसूदन"**, **"कुण्डप्रदीप"**, **"कुण्डमण्डपसिद्धि"** आदि ग्रंथानुसार अथवा इस पुस्तक के अनुसार करें।

"मयूखग्रंथों" के अनुसार कुण्डों में आहुति विभाग होना चाहिये। परन्तु ऐसा प्रायः इन दिनों यज्ञों में होता नहीं है। तथापि **"मयूख ग्रंथानुसार"** निम्न तरह से आहुति देवें। (प्रतिष्ठा मयूखे)

पंचकुण्डीययज्ञ पक्ष में ग्रहहवन क्रम

ग्रहो की आहुतियाँ १०८, २८, ८ के संख्या में से प्रत्येक की हो सकती है। ८ **आहुति क्रम में** — दो आवृत्ति में हवन होगा। अलग अलग द्रव्यों के लिये अलग अलग होता होगें।

(१) प्रथम आवृत्ति में पाँचों कुण्डों में आहुति होगी।

कुल आहुति = ५

(२) दूसरी आवृत्ति में आचार्य (मध्यकुण्ड) पूर्व, दक्षिण में आहुति होगी पश्चिम व उत्तर के होता बैठे रहेंगें। (या केवल घी की आहुति देवें)

कुल आहुति = ३

प्रत्येक ग्रह की आहुति = ८

२८ आहुति क्रम में :— ६ आवृत्ति में हवन होगा।

(१) प्रथम पाँच आवृत्ति में पांचो कुण्डों में आहुति देवें।

कुल आहुति = २५

(२) दूसरी आवृत्ति में आचार्य कुण्ड, पूर्व एवं दक्षिण कुण्ड में हवन होगा। पश्चिम व उत्तर के होता बैठे रहेंगें। (या केवल घी की आहुति देवें)

कुल आहुति = ३

प्रत्येक ग्रह की आहुति = २८

१०८ आहुति क्रम में :— २२ आवृत्ति में हवन होगा।

२१ आहुति सभी कुण्डों में (१०५) शेष ३ आहुति आचार्य पूर्व एवं दक्षिण कुण्ड में होगी।

अधिदेवता प्रत्याधि देवता :-

(१) अगर ग्रहों की ८ आहुति दी है तो ४ आहुति अधिदेवता प्रत्याधिदेवताओं की होगी। आचार्य पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, कुण्ड में हवन होगा। उत्तर में होता बैठे रहेंगें। या घी से आहुति देवे। २८ आहुति ग्रहों की होगी तो ८ आहुति अधिदेवता प्रत्यधिदेवताओं की पूर्वोक्त विधि से होगी। अगर १०८ आहुति प्रत्येक ग्रह की दी है तो २८ आहुति अधिदेवता प्रत्यधिदेवताओं की पहली विधि से होगी।

विनायक लोकपालः :— प्रत्येक ग्रह की आठ आहुति हो तो विनायक लोकपाल की दो आहुति आचार्यकुण्ड व पूर्वकुण्ड में होगी। २८ आहुति प्रत्येक ग्रहों की हो तो ४ आहुति आचार्यकुण्ड, पूर्व, दक्षिण व पश्चिम कुण्ड में होगी, उत्तर के होता बैठे रहेंगें या घी से हवन करें। १०८ आहुति प्रत्येक ग्रहों की हो तो ८ आहुति विनायक लोकपाल की पूर्व विधि से होगी।

नवकुण्डीय पक्ष में :— इसमें ग्रहों की आठ आहुति नहीं होती है, २८ आहुति ४ आवृति में होगी।

प्रथम ३ आवृति में सभी में हवन होगा।

कुल आहुति = २७

चतुर्थ आवृत्ति में केवल आचार्य कुण्ड में हवन होगा।

(अन्य में घी की आहुति होगी) आहुति = १

कुल आहुति = २८

इसी तरह अन्य क्रम का अनुपात अधिदेवता प्रत्याधिदेवता, विनायक व लोकपालों का होम ग्रहों की आहुति अनुसार होगा।

अधिदेवता प्रत्याधिदेवता की ८ आहुति होगी। ईशान कुण्ड को छोड़कर सभी कुण्डों में हवन होगा।

विनायक लोकपाल की ४ आहुति, आचार्य पूर्व, अग्नि व दक्षिण कुण्ड में हवन होगा बाकि होता बैठे रहेंगें या घी से हवन करें।

एक कुण्डीय पक्ष में – यहाँ जितने होता है उसी अनुपात में आवृत्ति होगी। द्रव्यविभाग में समिध, तिल, चरु, एवं आज्य चार द्रव्यों से आहुति देवें तो चार होता होगें सभी एक साथ द्रव्य देंगे तो एक आहुति प्रमाण होगा।

आहुति समये अग्निस्थितिः (कौलावली)

समिध के होम में वैश्वानर को खड़ा हुआ, तिलादि द्रव्यों के होम में बैठा हुआ एवं घी के होम में सोया हुआ ध्यान कर आहुति प्रदान करें। अतः समिध की आहुति खड़े होकर देवें तथा आहुति समिध, तिल, चरु व आज्य गी क्रमशः देवें। आज्य होम बैठ कर करें। समिध होम, लाजा होम, गोदान खड़े होकर करें। कन्या दान भी खड़े होकर करें।

दश विधी स्नान

मूर्ति प्रतिष्ठा व यागविधी मे पहले दशविधि स्नान, हेमाद्रिस्नान, छायापात्रदान, प्रायश्चित्त हवनादि कराना चाहिये। फिर जल यात्रा मंडपप्रवेश आदि करें। विशेष पृष्ठ संख्या **३६** पर है।

अथ जलयात्रा विधानम्

तालाब या कूप के किनारे गोमयादि से भूमि को शुद्ध करें। स्वस्तिक बनाये। नववर्धिनी कलशों के लिये आटा गुलाल से अष्टदल बनायें। उनमें कलश रखें, प्रधान ताम्र कलश बीच में रखें। सप्तमातृकाओं कें लिये कपड़े पर ७ अक्षत पुंज रखें या ७ सिंदूर या कुंकुम की टींकीं लगाये।

संकल्प :– **ॐ जलयात्राङ्गभूत याज्ञिक कार्य साङ्गतासिद्धयर्थे श्री वरुण देवता प्रसन्नार्थे गणेश, जलमातृका, जीवमातृ, स्थलमातृ, सप्तसागर, योगिनी, क्षेत्रपाल, भूमि पूजन पूर्वक नववर्द्धनी कलशेषु वरुण पूजनं चाहं करिष्ये।**

(१८ कलश अलग मंडप हेतु पंचकुण्डीय यज्ञ में लावें) सर्षप विकरण कर दिग्रक्षण करें। गणपति पूजन करें।

संपूर्ण विधि पृष्ठ संख्या ५८ पर दी है।

अथ मंडप प्रवेश षोडशस्तंभ पूजन विधानम्

यजमान बाजेगाजे के साथ जलकलश सहित प्रासाद की प्रदक्षिणा करें। विप्र भद्रसूक्त का पाठ करें तथा यजमान पश्चिम द्वार से प्रवेश करे। विप्र शाकुनसूक्त, पावमानसूक्त का पाठ करें।

संकल्प :— ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुक देवप्रतिष्ठाय ज्ञाङ्गतया गणेश पूजा पूर्वक मण्डप देवतास्थापनादि च करिष्ये।

दिग्रक्षण :— "अपक्रामन्तु" से सरसों छोड़े। "देवा आयन्तु यातुधाना अपयान्तु विष्णो देवयजनं रक्षस्व। पूर्वेरक्षतु गोविन्दो.।।"

इसके बाद गणेश, मातृका एवं वसोर्धारा पूजन कर पुण्याहवाचन करें। नांदीश्राद्ध करायें, आचार्यादि वरण करायें। भूमि पूजा करें।

वास्तु पूजन करे. त्रिसूत्रीकरण से रक्षा करे "पावमान सूक्त व रक्षोघ्न सूक्त" पढ़ते हुये चारों ओर दूध व जल की धारा देवे।

अथ षोडश स्तंभ पूजनम् :— (कलश स्थापन क्रम) ९ वर्धिनी कलश आचार्य कुण्ड के पास। १ कलश ईशान कोण में कुण्ड के पास ३ अन्य दिशाओं में सुशोभित हेतू। पूर्वादि चार दिशाओं में प्रत्येक में २ द्वार देवता के व १ तोरण का रखें। दश दिक्पालों के उनकी दिशाओं में रखें।

आचार्य कुण्ड (मध्य कुण्ड) के समीप के चारों स्तंभो में ईशानादि कोणों में।

(1) ईशान

(१) ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽआवः । सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ।।

ॐ भू र्भुवः स्वः ब्रह्मन्निहागच्छ इह तिष्ठेत्यावाह्य। ॐ ब्रह्मणे नमः। पाद्यादि से पूजन करे। **अत्रैव — ॐ सावित्र्यै नमः। ब्राह्मयै नमः। गंगायै नमः।** पूजाकर के निम्न मंत्र से स्तंभ का आलंभन करे।

ॐ उर्ध्व उषुण ऊतये तिष्ठाः देवोनः सविता ऊर्ध्वोवाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे ।

स्तंभशिरसि — ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

मंत्र -

आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः ।।

ॐ वनस्पति रसोद्भूतो निर्मितो विश्वकर्मणा ।
स्थिरो भवात्र रक्षार्थ यावत्कर्म समाप्तये ।।१।।

(2) आग्नये :-

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्य पा ठंसुरे।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ। अत्रैव – लक्ष्म्यै नम। नंदायै नमः। वैष्णव्यै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(3) नैर्ऋत्ये :-

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः शिव इहागच्छ इहतिष्ठ। शिवाय नमः। अत्रैव – माहेश्वर्यै नमः। गौर्यै नमः। शोभनायै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(4) वायव्यै :-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ठं हवे हवे सुहव ठं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामिशक्रम्पुरुहूतमिन्द्रठं स्वस्तिनोमघवा धात्विन्द्रः ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ। इन्द्राय नमः। अत्रैव – इन्द्राण्यै नमः। आनन्दायै नमः। विभूत्यै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(अब मंडप के बाहरी स्तंभों की ईशान क्रम से पूजा करें)

(5) बहिरीशाने :-

ॐ आकृष्णेन रजसाव्वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यंच ।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानिपश्यन् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ सूर्याय नमः। अत्रैव – सावित्र्यै नमः। मंगलायै नमः। भृत्यै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(6) *ईशान पूर्वयोर्मध्ये :-*

ॐ गणानान्त्वा गणपति ठ हवामहे प्रियाणान्त्वाप्रियपति ठ हवामहे निधिनांत्वानिधिपति ठ हवामहे व्वसोमम आहमजानिगर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ गणपतये नमः। अत्रैव – ॐ विघ्नहारिण्यै नमः। जयायै नमः। सरस्वत्यै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

आगे के पूजा क्रम में मतभेद है, अन्य क्रम में पूर्व अग्नि के मध्य में शेष अग्निकोण में स्कन्ध, अग्नि व यम के मध्य में यम का आवाहन है जबकि चतुर्थी लालजी के मत से इस प्रकार है।

(7) *पूर्वाग्नययोर्मध्ये :-*

ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे। देवस्त्वा सवितामध्वानक्तु पृथिव्याः स ठ स्पृशस्पाहि । अर्चिरसिशोचिरसि तपोऽसि ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ यमाय नमः। अत्रैव – पूर्वसंध्याय नमः। क्रूरायै नमः। नियन्त्र्यै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(8) *ततोअग्निकोण स्तंभे :-*

नमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये अंतरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शेष इहागच्छ इहतिष्ठ। शेषाय नमः। अत्रैव –

ॐ अधरायै नमः। पद्मायै नमः। महापद्मायै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(9) आग्नेय दक्षिणयोर्मध्ये :-

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्समुद्रादुतवापुरीषात् ।
श्येनस्यपक्ष हरिणस्यबाहु ऽउपस्तुत्यं महिजातन्तेऽअर्व्वन् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ स्कंदाय नमः। अत्रैव – ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ पश्चिमसंध्याय नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(10) दक्षिण नैर्ऋत्य मध्ये :-

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणोरथा सस्तेभिरागहि ।
नियुत्वान्त्सोमपीतये ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ वायवे नमः। अत्रैव–ॐ तिव्रायै नमः। गायत्र्यै नमः। वायव्यै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(11) नैर्ऋत्ये :-

ॐ आप्यायस्व स मेतु ते विश्वतः सोम व्वृष्ण्यं ।
भवाव्वाजस्य संगथे ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोम इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ सोमाय नमः। अत्रैव – ॐ सावित्र्यै नमः। अमृतकलायै नमः। विजयायै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि – ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(12) पश्चिम नैऋत्ययोर्मध्ये :-

ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय । त्वामवस्युराचके ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ वरुणाय नमः।

अत्रैव — ॐ वारुण्यै नमः। वार्हस्पत्यै नमः। पाशधारिण्यै नमः। गंध ाादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि — ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठ वल्लीं संपूज्य)

(13) पश्चिम वायव्ययोर्मध्ये :-

ॐ वसोः पवित्रमसिशतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् ।

देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष्वः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसव इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ वसुभ्यो नमः। अत्रैव —वितायै नमः। गरिमायै नमः। सम्भूत्यै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि — ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(14) वायव्ये :-

ॐ वय ठ सोमव्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धनद इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ धनदाय नमः। अत्रैव — ॐ आदित्यै नमः। सिनीवाल्यै नमः। लघिमायै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि — ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(15) वायव्योत्तर मध्ये :-

ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्य्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।

यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ बृहस्पतये नमः। अत्रैव — ॐ पौर्णमास्यै नमः। वेदमात्रै नमः। सन्नत्यै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये. से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि — ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

(16) उत्तरेशानयोर्मध्ये :-

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम् ।

तस्मैविशः समनमन्त पर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मन्निहागच्छ इहतिष्ठ। ॐ विश्वकर्मणे

नमः। अत्रैव — ॐ वास्तुदेवतायै नमः। वैश्वकर्मण्यै नमः। शारदायै नमः। गंधादिभि संपूज्य। ॐ ऊर्ध्व उषुण ऊतये तिष्ठा देवो नमः सविता उर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाद्यद्भिर्विह्वयामहे। से स्तंभ का आलंभन करें।

स्तंभशिरसि — ॐ नागमात्रे नमः (काष्ठवल्लीं संपूज्य)

तोरण पूजनम्

इसके बाद पश्चिम द्वार से निकल कर पूर्व दिशा में अश्वत्थ के बने तोरण की पूजा करें जो सिन्दूर सदृश्य महेन्द्र पर्वत व शंख के निशान से युक्त हो।

पूर्वे :-

हे अश्वत्थतौरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वनिघ्नान्निवारय ।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।होतारं रत्नधातमम्।।

ॐ ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणमावाहयामि ।

ॐ सुदृढतोरणाय नमः। गंधादिभि संपूज्य। अत्रैव :— कृतयुगाय नमः, राहवे नमः, बृहस्पतये नमः। गंधादिभि संपूज्येत्।

यहाँ एक कलश स्थापित कर उसकी सविधि पूजा करें। उसके ऊपर नारिकेल रखें कलश में ध्रुव की पूजा करें। **ॐ ध्रुवमावहयामि इत्यावाह्य। ॐ ध्रुवाय नमः।** गंधादिभिः संपूज्य। आचमन करें।

दक्षिणे :— तत्पश्चात दक्षिण में जाकर **औदुम्बर** का बना **विकट** नाम के तोरण की पूजा करें जो धूम्र वर्ण विंध्यगिरी युक्त चक्र के निशान से युक्त हो।

एह्येहि विकटतोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय ।

ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा वायवस्त्थदेवोवः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमध्न्याऽइन्द्राय भागंप्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा माऽवस्तेनऽ ईशतमाघशः ठ सोध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौस्यात् बह्वीर्य्ययजमानस्य पशून्पाहि ।।

ॐ यजुर्वेदाधिष्ठिताय विकटतोरणाय नमः आ.। त्रेतायुगाय नमः इति गंधादिभि संपूज्य। सूर्याय नमः। अङ्गारकाय नमः। गन्धादीन समर्पयेत्।

अब यहाँ एक कलश स्थापित करें, उस पर नारेल रखें उसमें **धरायै नमः** धरा का पूजन करें।

पश्चिमे :— प्लाक्ष का **"सुभीम"** नाम का तोरण स्वर्ग कांतिवर्ण गन्धमादन पर्वत एवं गदा के चिन्ह सहित पूजन करें।

एह्येहि सुभीम तोरणैनं यज्ञं रक्ष सर्वविघ्नान्निवारय । ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सिबर्हिषि।। सामवेदाधिष्ठिताय सुभीमतोरणाय नमः आ. स्था.। अत्रैव — द्वापरयुगाय नमः। शुक्राय नमः। बुधाय नमः। गन्धाद्यैरुपचारैः पूजनम्। एक कलश नारिकेल सहित स्थापित करें। उसमें **वाक्पति** का आवाहन पूजन कर आचमन करें।

उत्तरे — वटवृक्ष के सुप्रभ नामक तोरण का जो हिमपर्वत व पद्म से अंकित तथा स्फटिक कान्ति युक्त हो पूजन करें।

एह्येहि सुप्रभतोरणणैनं यज्ञं रक्ष सर्वघ्निन्निवारय । ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽआपोभवंतु पीतये। शय्योरभिस्रवंतुनः । अथर्ववेदाधिष्ठिताय सुप्रभतोरणाय नमः आ. स्था.। अत्रैव — सोमाय नमः आ. स्था.। केतवे नमः केतुमावाहयामि। शनैश्चर आवाहयामि। सर्वेषां गंधादिना प्रपूज्य।

यहाँ एक कलश स्थापित करें नारिकेल रखें उसमें **विघ्नेश** का आवाहन करें।

ॐ विघ्नेशाय नमः विघ्नेशमावाहयामि। गंधाद्यैः पूजयेत्।
इसके बाद दिक्पालद्वार शाखा पूजन व वेदपाठी विप्रों का वरण करे।

अथ दिक्पाल च द्वारशाखा पूजनम्

पूर्वे :— द्वार शाखा के पास दो कलश रखें उनमें **इन्द्र व ऐरावत** का आवाहन करें।

ॐ ऐरावतदिग्गजमावहयामि पूजयामि नमः। कलशों पर घी के दीपक रखें।

ऋग्वेदीया का वरण :-

ऋग्वेद पत्रपत्राक्षो गायस्त्रः सोमदैवतः। अत्रिगोस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव । प्रार्थयेत् गंधादिना पूजयेत् ।

श्री सूक्त, पावमान सूक्त, सुमंगलसूक्त, पौरुषसूक्त, रुद्रसूक्त, वामदेवसूक्त, का पाठ करें।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इहतिष्ठ, साङ्गंसपरि. सायुधं सशक्तिकमिन्द्रं द्वारकलशे आवाहयामि।

ॐ त्रातारमिन्द्र वितारमिन्द्र ठ हवे हवे सुहव ठ शूरमिन्द्रम । ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ठ स्वस्तिनोमघवा धात्विन्द्रः।इंद्राय नमः।

गंधाद्यैः पूजयेत्।

पीतपताका एवं ध्वजा पूजन :-

ॐ आशुः शिशानो वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्क्रन्दनोनिमिष ऽएकवीरः शत ठ सेना अजयत्साकमिन्द्रः ।।

द्वारशाखायाम् :— दक्षिणे धात्रे नमः, उत्तरे विधात्रे नमः, (उर्ध्वं) द्वाराश्रियै नमः, गणपतये नमः, (तदुपरि) वास्तुपुरुषाय नमः, अधो देहल्यै नमः, वामस्तंभे गणेशाय नमः, दक्षिणस्तंभे स्कंदाय नमः, कलशद्वये गंगायै नमः, यमुनायै नमः, इंद्राय नमः।

ततोमाषभक्तबलिं दत्वा :— ॐ इंद्राय साङ्गाय सपरिवाराय, सवाहनाय सायुधाय सशक्तिकाय माषभक्त बलिं समर्पयामि। इसके बाद आचमन करें।

अग्नये :- कलश स्थापित करें। तत्र पुण्डरीकाय नमः। पुण्डरीकमावाहयामि। अमृताय नमः अमृतमावाहयामि। पूजनं कृत्वा।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इहतिष्ठ। साङ्गं सप. सवा. सायुधं सशक्तिकं कलशे आवाह्य।

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ ऽऽआसादयादिह ।।

ॐ त्वन्नो अग्ने तवदेव पायुभिर्म्मघोनो रक्षतन्वश्चवन्द्य । त्रातातोकस्यतनयेगंवामस्य निमेष ठ रक्षमाणस्तववव्रते ।।

ॐ अग्नये नमः इति गंधादिना प्रपूज्य।

रक्त ध्वज पताका का पूजन करे ध्वजायै नमः पताकायै नमः। ॐ अग्नये सांगाय सप. सवा. साप्र. सश. एतंभाषभक्त बलिं समर्पयामि। इति बलिंदत्वाऽऽचमेत्। आचमन करें।

दक्षिणे:— द्वारशाखा के पास दो कलश रखें, उनमें दिक्पाल का आवाहन करें। वामनाख्यं दिग्गजमावाहयामि। ॐ वामनाख्य दिग्गजाय नमः इति संपूज्य दीपं दद्यात्।

तत्र :— (यजुर्वेदीयावरण) यजुर्वेदिनौ द्वारपालौ। कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रैष्टुभो विष्णुदैवतः। काश्यपेस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।

गंधादिभि संपूज्य।

अब आनोभद्रा, "आशुः शिशानक, यद्देवा त्रीणि" एवं पुनन्तुमाम सूक्त पढ़ें।

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इहतिष्ठ। यमं साङ्गं सप. सवा. सायुधं सशक्तिकं कलशे आवाह्य।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।। ॐ यमाय नमः। गंधादिभि संपूज्य। कलश में पूजा करे। कृष्ण ध्वज पताकायां पूजनं कृत्वा।

द्वारशाखायो :— वामे — बलाय नमः, दक्षिणे सबलाय नमः। (ऊर्ध्वम्) श्रियैनमः, गणपतये नमः। (अधः) देहल्यै नमः, वास्तुपुरुषाय नमः।

स्तंभयोः — दक्षिणे पुष्पदंताय नमः, वामे कपर्दिने नमः। कलशद्वये — गोदावर्यै नमः, कृष्णायै नमः। इति संपूज्य।

ॐ यमाय साङ्गां सपरि. सवा. एतंमाष भक्त बलिं समर्पयामि। बलि प्रदान कर आचमन करे।

नैऋत्ये :— कलश स्थापित करें। तत्रैव कुमुदमावाहयामि। दुर्ज्जयमावाहयामि। कुमुद दुर्ज्जयाभ्यां नमः। इति प्रपूज्य दीपोदेयः।

एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशाल वेताल पिशाचसङ्घैः। ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ लोकेश्वरस्त्वं भगवन्नमस्ते।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋत्ये इहागच्छ इहतिष्ठ। साङ्गं सप. सवा. सायुधं सशक्तिकं कलशे आवाह्य।

असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहितकरस्य ।
अन्यमस्मदिच्छसात ऽइत्यानमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ।।

ॐ निर्ऋत्ये नमः इति संपूज्य।

(नीलवर्ण) ध्वजा पताकेभ्यो नमः। संपूज्य।

ॐ निर्ऋतये साङ्गं सपरि. सवा. एतंमाष भक्त बलिं समर्पयामि। बलि प्रदान कर आचमन करे।

पश्चिमे :— दो कलाश स्थापित करे। कलश द्वये अंजनाख्यादिग्गजाय नमः। संपूज्य।

सामवेदीया वरण :— तत्रं सामवेदिनौ द्वौद्वारपालौ। सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जागतः शक्रदैवतः। भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।

तब पुरुषसूक्त, रुद्रसूक्त, एवं आज्य दोहादि के सूक्त पढ़ें।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ। साङ्गं सप. सवा. सायुधं सशक्तिकं कलशे आवाह्य। ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा.। ॐ वरुणाय नमः इति गंधादिभि संपूज्य।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद वाधमं वि मध्यमं ठं श्रथाय अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम्।।

(श्वेतो) ध्वजायै, पताकायै नमः। ॐ इम्मे वरुण.। संपूज्य।

द्वारशाखायाम् :— वामे जायायै नमः, दक्षिणे विजयायै नमः। (ऊर्ध्व) श्रियैनमः। गणपतये नमः। (अधः) देहल्यै नमः, वास्तुपुरुषाय नमः। स्तंभयो —वामे—नंदिने नमः (दक्षिणे) चन्द्राय नमः। कलशद्वये रेवायै नमः नर्मदाय नमः। गंधादिभि संपूज्य।

ॐ वरुणाय साङ्गां सपरि. सवा. एतंमाष भक्त बलिं समर्पयामि।

बलि प्रदान कर आचमन करे।

वायव्यां :— सनारिकेलं कलशं स्थापयेत तत्र पुष्पदंताय नमः। पुष्पदंतमावाहयामि संपूज्य।

पुनः कलशे :-

ॐ आनोनियुद्धिः शतिनीभिरध्वर ठ सहस्त्रिणी भिरुपयाहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्वयूयम्पात स्वस्तिभिः सदानः ।।

ॐ वायवे नमः। गंधादिभि संपूज्य। तत्रैव (धूम्रवर्ण) ध्वजायै नमः पताकायै नमः। भो वायवे साङ्गां सपरि. सवा. एतंमाष भक्त बलिं समर्पयामि।

बलि प्रदान कर आचमन करे।

उत्तरे :— दो कलश स्थापित करें। उनमें आवाहन करे।

ॐ सार्वभौम दिग्गजाय नमः। संपूज्य। दीपं दद्यात्।

अथर्वेदीया का वरण करें। (इन्हें द्वारपाल भी कहते है। द्वारपाल दो होते है। प्रत्येक द्वार के लिये दो विप्र का वरण होता है। शक्त्याभाव में एक विप्र का वरण अवश्य करें।)

वृहन्नेत्रो ऽथर्ववेदो ह्यनुष्टुब्रुद दैवतः। वैशम्पायन विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव। (एक हो तो — मखा भव) तिलक लगाये।

ये विप्र — अंङ्गरसोजन्मनी. सूक्त। रुद्रपत्पादि. रुद्रसूक्त। अपराजितादेवी परिवर्त्मनी. सूक्त। मधुवाता. मधूसूक्त। शन्न इंद्रानीत्यादि — शांतिअध्याय का पाठ करे। ॐ शन्नो देवीर.....।

तदन्तर कलशे सोमावाहय।

ॐ वय ठ सोमव्रते तवमस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि ।।
ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् ।
भवावाजस्य सङ्गथे ।।

ॐ सोमाय नमः सोमइत्याह्य । गंधादिभि संपूज्य ।

(श्वेत पताका व हरित ध्वज का पूजन करे) ॐ ध्वजाय नमः,

पताकाभ्यो नमः।

द्वारशाखा पूजनं :— वामे चण्डाय नमः, दक्षिणे प्रचण्डाय नमः, (उर्ध्वम्) द्वारश्रियै नमः, गणपतये नमः। (अधः) देहल्यै नमः, वास्तुपुरुषाय नमः।

स्तंभयो — (वामे) महाकालाय नमः (दक्षिणे) भृङ्गिने नमः। कलश द्वये — वारुण्यै नमः, वेण्यै नमः।

ॐ सोमाय साङ्गां सपरि. सवा. एतंमाष भक्त बलिं समर्पयामि। बलि प्रदान कर आचमन करे।

ईशाने :— एक कलश स्थापित करे नारिकेल रखे। तत्रैव — सुप्रतीकाय नमः, मंगलाय नमः। पूजन करे, दीपक करे।

तत्रैव :-

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिंधियं जिन्वमवसे हूमहेव्वयम् ।
पूषानो यथावेदसाम सद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ।

ॐ ईशानाय नमः। गंधोदकेन प्रपूज्य। (श्वेतवर्ण पताका व पंचवर्ण ध्वज) ॐ ध्वजायै नमः, पताकाभ्यो ॐ नमः, ॐ ईशानाय साङ्गां सपरि. सवा. एतंमाष भक्त बलिं समर्पयामि। बलि प्रदान कर आचमन करे।

ईशानपूर्वयोर्मध्ये :- एक कलश स्थापित करे।

तत्रैव -

ब्रह्मज ज्ञानं प्रथमं पुरस्तद्विसीमतः सुरुचोव्वेन आवः ।
सबुध्न्य उपमा अस्य विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ।

ॐ ब्रह्मणे नमः। गंधोपचारे पूजयेत।

(रक्तवर्ण ध्वजा पताका) ॐ ध्वजायै नमः, ॐ पताकायै नमः। पूजन कृत्वा। ॐ ब्रह्मणे साङ्गां सपरि. सवा. एतंमाष भक्त बलिं समर्पयामि। बलि प्रदान कर आचमन करे।

निर्ऋतिवरुणोर्मध्ये :— एक कलश स्थापि करें। तत्रैव :— ॐ भू भुर्वः स्वः अनन्त इहागच्छ इहतिष्ठ।

ॐ आयंगौ पृश्निरक्रमीद सदन्मातरम्पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः ।।

ॐ श्योनापृथिवी.....। ॐ अनंताय नमः।। गंधादिभि संपूज्य।

ॐ अनंताय साङ्गां सपरि. सवा. एतंमाष भक्त बलिं समर्पयामि। बलि प्रदान कर आचमन करें।

महाध्वज (मण्डपमध्ये या ईशाने) :— (पंचवर्णः महाध्वज संपूज्य दश सा सौलह हाथ के दण्ड सहित)

ॐ इंद्रस्य वृष्णो वरुणस्यराज्ञ आदित्यानांमरुता ठ शर्द्धउग्रम् ।
महामन साम्भुवनच्यवानां घोषोदेवानां जयता मुदस्थात् ।।१ ।।
इंद्राय नमः। ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथम्पुरस्ता.। ब्रह्मणे नमः। इंद्र, ब्रह्माणं पूजनं कुर्यात्। ॐ दण्डाय नमः दंडं पूजयेत्।

पूर्व दिशा में मंडप के बाहर थोड़ी भूमि का लेपन कर तथा सब देवों की बलि विशेष मात्रा में सामूहिक एक जगह प्रदान करें। दीप प्रदान करें।

अधश्चैव तु लोका असुराश्चैव पन्नगा। सपत्नीपरिवाराश्च प्रतिगृह्ण न्त्विमं बलिम्। त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च। ब्रह्म विष्णु शिवैः सार्द्ध रक्षां कुर्वन्तु ते सदा। देवदानवगंधर्वा यक्ष राक्षसपन्नगाः। ऋषयो मुनयो गावो देवमातरएव च। सर्वेममाध्वरे रक्षां प्रकुर्न्वन्तु मुदान्विताः।

ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्चक्षत्रेपालो गणैः सह। रक्षन्तु मण्डपं सर्वे घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः।। एते गृहणन्तु मयादत्तं बलिं वै सार्वभौतिकम्। अनेन बलिदानेन अधोलोकादयः प्रीयन्ताम्।।

इसके बाद आचमन करे हाथ पैर धोकर मंडप में प्रवेश करे।

रक्षा विधानम्

बायें हाथ में पीली सरसों, चावल, द्रव्य, मोली (रक्षासूत्र) लेकर दाहिने हाथ से ढ़ककर मंत्र पढ़ें।

ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ।
विष्णु रुद्रं श्रियं देवी वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ।।१ ।।
स्थानाधिपं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम्

धरणीगर्भसंभूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ।।२।।
दैत्याचार्य नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ।
राहुंकेतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ।।३।।
शक्राद्या देवता सर्वां नमस्कृत्य मुनींस्तथा ।
गर्गमुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम् ।।४।।
अगस्त्यं च पुलस्त्यंच याज्ञवल्यक्यं च गालवं ।
मार्कण्डेय नमस्कृत्य दक्षमित्र पाराशरम् ।।५।।
वशिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् ।
व्यास मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम् ।।६।।
विद्याधिका ये मुनय आचार्याश्च तपोधनाः ।
सर्वे ते मम यज्ञस्य रक्षां कुर्वन्तु विघ्नतः ।।७।।

इसके बाद सब दिशाओं में **"पूर्वे रक्षुतु गोविन्द"** ....आदि मंत्रो से सरसों फेंकें एवं रक्षा सूत्र सब मंडलों पर चढ़ावें यजमान के रक्षासूत्र बांधे।

कुण्ड पूजन प्रयोग

_संकल्प_ :— अद्येदिदेश कलौ संकीर्त्य. अमुक देवतायाः प्रतिष्ठाया अमुक कर्म पुरश्चरण सांगातासिद्ध्यर्थ अग्निप्रतिष्ठां करिष्ये तदङ्गस्तया समार्जन मेखलायोनि देवता स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

तंत्र ग्रंथों के अनुसार कुंड के १८ संस्कार होते है, परन्तु यथासंभव करे।

(१) मूलमंत्र से वीक्षण करें। (२) कुशाका स्पर्श करे — फट् मंत्र से ताडन करें। (३) मूल मंत्र से कुशोदक द्वारा प्रोक्षण करें।

अमुक देवताया कुण्ड स्थाण्डिलाय नमः ।

हाथ में पुष्पाक्षत लेवें। **कुण्डपूजनम्।**

ॐ आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्मविनिर्मितम् ।
शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठान — मद्भुतम् ।

ॐ कुण्डाय नमः। गंधादिभि संपूज्य। प्रार्थना करे।

ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डांगे याश्चदेवताः ।

ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं मुदान्विता ।१।।
हे कुण्ड तव निर्माण रचितं विश्वकर्मणा ।
अस्माकं वाञ्छितां सिद्धिं यज्ञसिद्धिं ददातु भोः ।।२।।

कुण्ड मध्य में विश्वकर्मा का पूजन करे। —

ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोकरवद्धयम् ।
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरमुग्रो विहव्योयथासत् ।।
उपयायमगृहीतो सींद्राय त्वा विश्वकर्मण एषते
योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे।। ॐ विश्वकर्मणे नमः।

अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषास्युः खननोद्भवाः। नाशाय त्वंहि तान्सर्वा न्विश्वकर्मन्नमोऽस्तुते।। इस प्रकार प्रार्थना करे। कुण्ड निर्माण करने वाले कारीगर विश्वकर्मा का भी पूजन आदर कर दक्षिणा दिलावें।

मेखला पूजनम् :— मेखला ऊपर की श्वेत रंग की (सत्व) मध्य की लालवर्ण की (रज) अधः मेखला कृष्ण वर्ण (तम) की होती है। सामान्य रूप मे ब्रह्मा, विष्णु, महेश की भावना मानते है। परन्तु अधिकांश ग्रंथों में ऊपर की श्वेत में विष्णु, मध्ये रक्तवर्ण में ब्रह्मा, अधः कृष्ण वर्ण में रुद्र का पूजन लिखा है।

ऊपरिश्वेतमेखलायाम् :- ॐ इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम। समूढमस्यपा ठ सुरे स्वाहा। ॐ विष्णवे नमः, विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ ।

ॐ विष्णु यज्ञपते देव दुष्ट दैत्यनिषूदन ।
विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डेसन्निहितोभव ।। गंधादिभिः संपूजयेत्।

मध्ये रक्तवर्णमेखलायाम् :- ॐ हंसपृष्ठरूढ देव देवगणावृत। रक्षार्थ ममयज्ञस्य कुण्डेसन्निधोभव ।

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः ।
सबुध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ।।
ॐ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ। अर्घ गंधादिभिः संपूज्य।

अधोमेखलायाम् (कृष्ण वर्णा) :— ॐ गंगाधर महादेव वृषारूढ़

महेश्वर। आगच्छ भगवन्रुद्र कुण्डे ऽस्मिन् सन्निधोभव।

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव ऽउतोत ऽइषवे पमः ।
बाहुभ्या मुतते नमः। ॐ रुद्राय नमः रुद्र इहागच्छ इहतिष्ठ।
त्र्यंबकं यजामहे...। गंधादिभिः संपूज्य।

योनि पूजा :-

ॐ जगदुत्पत्ति हेतुकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः। तत्र प्राक्दिशायां गौरीं पूजयेत्। ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयतिकश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवसिनीम्।। गौर्यै नमः।

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्यनाभिरसि मा त्वाहि ठ सीन्मामा हि ठ सीः। गंधादिभिः संपूज्य।

प्रार्थयेत् -

योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्ति हेतुका ।
मनोभवयुता देवी रतिसौख्य प्रदायिनि
मोहयित्री सुराणां च जगद्धात्रि नमोस्तु ते ।।

कंठ पूजा :— कंठ में रुद्र का पूजन करे।

ॐ निलग्रीवाः शितिकण्ठा शर्वा अधः क्षमाचराः
तेषा ठ सहस्र योजने ऽव धन्वानि तन्मसि ।।
कण्ठे रुद्राय नमः। गंधादिभिः च पुष्पाणि संपूज्य।

नाभिपूजा :-

ॐ नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यांधर्मोस्मि विशिराजा प्रतिष्ठितः ।
गंधादिभिः संपूज्य।

नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु देव्यैः सहप्रतिष्ठता ।
अतस्त्वं पूजिता देवीं शुभदा ऋद्धिदाभव ।।

वास्तुपूजनम् :— कुण्डमध्येनैऋत्यकोण में वास्तु का पूजन करे।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवोभवानः ।

यत्वेमहेप्रतितन्नो जुषस्यशन्नो भवद्विपदे शं चतुष्पदे ।।

ॐ वास्तुपुरुषाय नमः। गंधादिभिः संपूज्य। बलिंदद्यात्। प्रार्थयेत्। पितामहसुतो मुख्यस्तुभ्यं वास्तुपते नमः।

कुण्डसंस्कार :– "हुं" मंत्र से अवगुष्ठन। **दर्भैन परिसमुह्य, तान्कुशानीशान्यां परित्यज्य।**

तांत्रिके :– अस्त्र से **खनन** और **उद्धार, "ह्रीं"** मंत्र से **प्रपूरण, फट्** से **समीकरण,** ॐ हुं से **सेचन** करे। **ऐं** से **कुट्टन,** हुं से **मार्जन** करे।

गोमयोदकेनोलिप्य। स्रुवमूलेन उत्तरोत्तर त्रिरुलिख्य।

इन रेखओं की विष्णु, शिव, पुरन्दर के नाम से पूजा करे।

तांत्रिके :– कला रूप में कल्पना करे, त्रिसूत्रीकरण करे (३ या १९ सूत्र से) **ॐ** या **शिर** मंत्र से वज्रीकरण **ॐ ह्रीं** मंत्र से प्रोक्षण करे।

गोमय से उपलेपन करके स्रुव के मूल से या खादिर से तीन रेखायें **पश्चिम से पूर्वाग्र** खींचते हुये (प्रादेश मात्र या १२ अंगुल की) दक्षिण से उत्तरोत्तर दिशा में क्रमश: खींचे। अनामिका अंगुष्ठ से उनकी मिट्टी लेकर ईशान कोण में फेंके इन रेखाओं के नाम **विष्णु, शिव, पुरन्दर** है। इनकी पूजा करें।

इसी तरह तीन रेखायें दक्षिण से उत्तराग्र खींचें। पश्चिम से पूर्व की ओर पूर्वात् पूर्व क्रमश: खींचे। उनके नाम **ब्रह्मा, वैवस्वत (यम) एवं चन्द्र है**। उनकी पूजा करे।

अग्नियंत्र पूजनम् :– बहुधा स्थण्डिल व कुण्ड में अष्टदल बनाते है, अग्नि यंत्र नहीं बनाते है। अग्नियंत्र में त्रिकोण या षट्कोण के ऊपर वृत्त बनाकर चार दक्षिण व तीन उत्तर की ओर जिह्वा बनावें, या छजिह्वाओं की षट्कोण में एवं सातवीं की मध्य में पूजा करें।

नोट — कहीं कहीं यह भ्रांति है। कि अष्टदल तो विष्णु का होता है उस पर अग्नि कैसे रखें अत: केवल सप्तजिह्वा ही बनानी चाहिये। अत: उनकी भ्रांति निवारण हेतु विषय को समझना आवश्यक है। **अग्नि शिव का वीर्य है, कुण्ड मध्य में ऋतुस्नाता वागेश्वरी व वागीश या ऋतुस्नाता लक्ष्मी व नारायण का आवाहन करते है।** अग्नि का स्थापन व आहुति योनि मार्ग से करते है। अत: आपकी कामना मंत्रों के द्वारा उस स्वरूप का गर्भ, **हवनीय द्रव्यों व मंत्रों के**

समन्वय से वागेश्वरी धारण कर गर्भ स्थिति को प्राप्त होती है। एवं आपके अभीष्ट फल की संतति को जन्म देती है।

अग्नि पीठ पूजन :– विशेष में कूर्म अनन्तादि पूजन देवीपीठ पूजा करे। इसके बाद अग्नि की ९ पीठ शक्तियों का पूजन करें। यथा – पीतायै, श्वेतायै, अरुणायै, कृष्णायै, धूम्रायै, तीव्रायै, स्फुलिङ्गिन्यै, रुचिरायै तथा ज्वालिन्यै नमः।

ॐ रं वह्नेरासनाय नमः।

इसके बाद ह्रीं वागीश्वर्यै नमः ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः। गंधादिभिः प्रपूज्य। त्रिकोणे – वामायै, ज्येष्ठायै, रौद्रायै नमः। षट्कोणे – रां हृदयाय नमः, रीं शिरसे स्वाहा, रुं शिखायै वषट्, रें कवचाय हुँ, रौं नेत्रत्रयाय वोषट्। रः अस्त्राय फट्।

सप्तजिह्वा :– हिरण्यायै, गगनायै, रक्तायै, कृष्णायै, सुप्रायै, बहुरूपायै, अतिरिक्तायै (या काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिङ्गिनी, विश्वरुचि) का पूजन करे।

इसके बाद जिह्वा देवता :– देवताभ्यो नमः, पितृभ्यो, गंधर्वेभ्यो, यक्षेभ्यो, नागेभ्यो, पिशाचेभ्यो, राक्षसेभ्यो नमः।

षष्ट्कोणे :– सहस्त्रार्चिषे, हृद.। स्वस्तिपूर्णाय, शिरसे.। उत्तिष्ठ पुरुषाय, शिखायै.। धुम्रव्यापिने, कवचायै.। सप्तजिह्वाय, नेत्रत्रयाय। धनुर्धराय, अस्त्रायफट्।

अष्टदले अष्टाग्निदेवता :– (१) जातवेदसे नमः (२) सप्तजिह्वाय नमः (३) हव्यवाहनाय नमः (४) अश्वोदराजय नमः (५) वैश्वानराय नमः (६) कौमार तेजसे नमः (७) विश्वमुखाय नमः (८) देवमुखाय नमः।

भूपूरे :– पूर्वादिक्रमेण इंद्रादि देवता सायुधाय आवाहयेत्, पूजयेत्। सर्वेषा देवानां गंधादिभि प्रपूज्य।

अग्निस्थापनम् :— सूर्य से, अरणी से या अग्निहोत्री के घर से लौकिक अग्नि को एक कांस्य पात्र में स्थापित कर दूसरे कांस्य पात्र से आच्छादन करके चुपचाप (तूर्ष्णीं) अग्निकोण से लावे। **अग्निकोण में आमोद व नैऋत्य कोण मे क्रव्याद का त्याज्य करें।**

ततपश्यात् अग्नि को कुण्ड के प्रदिक्षण करते हुये (१ या ३ प्रदिक्षणा करें) दोनों जानुओं को पृथिवी पर रखकर अपने अभिमुख करके शिव के बीज की भावना से योनिमार्ग से कुण्डमध्य में स्थापित करे।

सूर्यकान्तमणेः सकाशात् वा अरणितः स्रोत्रियागारतो वा कांस्य पात्रेणपिहितमग्निं। ॐ फट् बोलकर ग्रहण करे। **अग्निकोण में आमोदांश का त्याज करे। हुं** मंत्र से पात्र को उठाये। **नैऋत्यां क्रव्यादांशं परित्यजेत्।** मूलमंत्र से वीक्षण करे। **फट्** मंत्र से प्रोक्षण, **कुशत्रय** से ताडन **हुँ मंत्र** से सिंचन करे। उसके बाद **स्वकीय उद्‌थ वैन्दनं** (परमात्मास्वरूप अग्नि व लायी हुई में एकता की भावना करे। मंत्र बोलकर उसे चैतन्य करे। **ॐ** मंत्र से धेनुमुद्रा व योनिमुद्रा दिखावे, व बीज मंत्र से अमृतीकरण करे। **फट्** से रक्षा करे, **हुँ** मंत्र से अवगुंष्ठन करे। **ॐ** मंत्र का उच्चारण करता हुआ १ या ३ बार घुमाकर आत्माभिमुख करके अग्नि को योनि से कुण्ड में स्थापित करे।) अरणी का पूजन करे। अग्नि प्राप्त होने पर उसे पय से प्रक्षालित करे।

पात्र विषय में कल्पवल्य में लिखा है कि **कांस्य पात्रे द्वयेनैवाग्नि रानेतव्यो न तु मृच्छरावेण तंत्र दोषश्रवणात् तद्यथा। शरावे भिन्नपात्रे वा कपाले चोल्मुके तथा। नाग्नेः प्रणयनं कार्य व्याधिशोक भयावहम्।**

कुलाल चक्रघटितं मृन्मयं पात्रमासुरम्। हस्तघटितं स्थाल्यादि दैविकं स्मृतम् (इति कल्पवल्ल्याम्)

अग्नि स्थापनम् :— **ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे। देवाँ २ आसादयादिह।।**

इस मंत्र द्वारा अग्नि की कुण्ड के प्रदक्षिणा कराकर स्वात्माभिमुख करके योनि मार्ग से कुण्ड में स्थापित करें एवं अग्नि को ३ आचमन घृत से करावें।

तद्रक्षार्थ किचिन्काष्ठं दद्यात्। एवं अग्नि को प्रज्वलित करे।

ॐ चित् पिंगल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाऽऽज्ञापय स्वाहा ।
ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनं ।
सुवर्ण वर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥

अग्नि को नमस्कार करें :-

ॐ चत्वारिशृंगा त्रयोअस्य पादाद्वेशीर्षे सप्त हस्तासोऽअस्य ।
त्रिधाबद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यॉं ३ अविवेश ॥

रुद्रतेजः समुद्भूतं द्विमूर्द्धानं द्विनासिकाम् । षण्नेत्रं च चतुश्रोत्रं द्विपादं सप्तहस्तकम्॥ याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम्। स्त्रुवं स्त्रुचं च शक्तिं च त्र्यक्षमालां च दक्षिणे॥ तोमरं व्यंजनं चैवघृतपात्रं तु वामके। विभ्रतं च सप्तभिर्हस्तैर्द्विमुखं सप्तजिह्वकम् ॥ दक्षिणं च चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वमुत्तरे मुखम्। द्वादश कोटिमूर्त्याख्यं द्विपञ्चाशत्कलायुतम्। स्वाहा स्वधा वषट्कौररङ्कितं मेषवाहनम्। रक्तामाल्याम्बरधरं रक्त पद्मासन स्थितम्॥ रौद्रंतु बह्निनामानं वह्निमावाह्याम्यहम्॥ त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमिमद्युते। आगच्छ भगवन्देव यज्ञेऽस्मिन् सन्निधौ भव।

वायव्य कोण में अग्नि की पूजा करे। अग्ने वैशवानर शाण्डिल्वय गोत्र शाण्डिल्य सितदेवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमि मातः, वरुणपितः, मेषध्वज प्राङ्मुखो मम सम्मुखो भव। ॐ अग्नये नमः। गंधादिभि संपूज्य।

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकार्याणि साधय स्वाहा।

ध्यानं :-

इष्ट शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैर्दीर्घैर्दोभिर्धाग्यन्त जपाम् ।
हेमा कल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलि जटाभिः॥

अग्नि के दक्षिण भाग में ''स्वधा'', वाम भाग में ''स्वाहा'' का पूजन करें।

अग्नि की सप्तजिह्वा व अष्ट अग्निमूर्तियों की पूजा करे।

सप्तजिह्वा :- ॐ स्प्रूँ हिरण्यायै नमः। ॐ ष्प्रूँ गगनायै नमः। ॐ श्प्रूँ रक्तायै नमः। ॐ व्प्रँ कृष्णायै नमः। ॐ ल्प्रूँ सुप्रायै नमः। ॐ प्रूँ बहु पायै नमः। ॐ प्रूँ अतिरिक्तायै नमः।

अष्टाग्निमूर्ति :- ॐ जातवेदसे नमः। सप्तजिह्वाय नमः। हव्यवाहनाय नमः। अश्वोदरजाय नमः। वैश्वानराय नमः। कौमारतेजसे

नमः। विश्वमुखाय नमः। देवमुखाय नमः।

(अथवा राजसी व तामसी क्रम की जिह्वा का पूजन करना चाहते हो वो करें)

अग्निपुराण के अनुसार पहिले अग्नि के गर्भाधान से विवाह पर्यन्त १५ संस्कार कराये जाते है फिर अग्नि यंत्र के देवता की आहुति देवें उसके बाद यज्ञ का अधिकार मिलता है अतः आधार होम "**प्रजापते स्वाहादि**" क्रम होम इसके बाद करे।

अन्यत्र प्रजापति इन्द्र की आहुति तथा **सूर्यसोम - अग्निस्विष्ट कृते** स्वाहा बाद **अग्नि के १५ संस्कार कराये**। यह बहुमत है।

जहाँ **पंचवारुणी** होम को प्रायश्चित हवन माना है वहाँ **अग्नि नामकरण** इनसे पहिले ही होगा।

स्वात्म मतानुसार :- वैसे प्रजापत्यादि आहुतियों से नासिका, नेत्र व मुख का उद्घाटन होता है। ग्रंथें में पंचवारुणी होम से सिर, दो हाथ, दो पैर एवं उदर, कुक्षि व कटि का विकास व्याहृति होम से माना है अतः अग्नि का पूर्णाङ्ग इन आहुतियों के बाद बना है। अतः नामकरण आदि इसके बाद होना चाहिये। एवं गर्भाधान, पुंसवन संस्कार प्रजापत्यादि के पहिले करे एवं वारुणी होम व्याहृति होम के बाद सीमन्तोन्नयन जातकर्म से लेकर विवाहादि संस्कार करें। और फिर अग्नि यंत्रस्थ देवताओं की आहुति प्रदान कर, गणपति की आहुति पश्चात् ग्रहादि का होम करें।

ब्रह्मादि पूजनम्

अग्नि के दक्षिण में ब्रह्मा को आसन दे। मंडल पर दो कुशा पूर्व की ओर मुंह करती हुई ब्रह्मा के आसन के लिये रखें। ५० कुशाओं का ब्रह्मा बनाकर रखें। **ब्रह्मणे आसनं दत्वा। (पञ्चाशत कुशनिर्मित) ब्रह्माणमग्नि प्रदक्षिण क्रमेणानीय कल्पितासने उपवेशयत्।**

'ॐ ब्रह्मजज्ञानं' मंत्रेण आवाह्य। पाद्य गंधादिभिः प्रपूज्य। ब्राह्मणों के चरण प्रक्षालन करें। **यत्पुण्यं कपिलादानं.। अर्घ प्रदान करें।** 'व्रतेन दीक्षा'. से व्रत बंध करे। कोई 'यद्दाक्षयिणा.'। को यहाँ बोलते है। व्रतेन. को पूगीफल यज्ञोपवीत वरण, दक्षिणा देते समय बोलते है।

यजमान हाथ में पूगीफल वरण सामग्री लेकर विप्र के दक्षिण जानु को आलंभन करते हुये कहे -

अमुक प्रवराविन्वतामुक गोत्रः शुक्ल यजुर्वेदाम्नाय वाजि-माध्यान्दिनीय शाखाध्यायी अमुकशर्मा यजमानोऽहम् (यजमान की शाखा) **अमुक प्रवरान्विता** (विप्र की गौत्र शाखा) **अमुकं गोत्र शुक्लयजुर्वेदाम्नाय वाजि माध्यान्दिनीय शाखा स्वाध्यायिनम्मुकशर्माणं** (विप्रका का नाम) **ब्रह्मण मस्मिन् याज्ञ कर्मणि आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।** वरण विप्र को प्रदान करे। **विप्रोवदेत् - वृतोऽस्मि।**

आचार्य से प्रार्थना करें - **आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत॥**

इसी तरह **ब्रह्मा भव। ऋत्वक्** भव से ब्रह्मा एवं ऋत्विकों का वरण करे। यथा-

चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकैक पितामहः। दुर्गायाज्ञाख्ये आस्मिन् यज्ञे ब्रह्माभव। द्विजोत्तम। यावत्कर्म समाप्येत् तावत्त्वं ब्रह्मा भव॥ विप्रोवदेत भवामि। इसके बाद ग्रहमखा पूजन, अधिदेवता, प्रत्याधिदेवता, लोकपाल, दिक्पाल, रुद्रकलश प्रधानमंडल पूजन करे।

स्वर्ण प्रतिमा का अग्न्युत्तारण पूर्वक प्राणप्रतिष्ठा कर पूजन करें। **(चरुपक्व पर्यन्त ग्रहादीनामारवाहनं कुर्यात्)**

मूर्तिनां-प्राणप्रतिष्ठा

अग्न्युत्तारण मंत्र तथा प्राणप्रतिष्ठा मंत्र पृष्ठ ५२५ पर है। **ॐ अस्य श्री प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्युजः सामाथर्वणि छंदासि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता। ॐ बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकं अस्यां नूतन मूर्तो प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।** निम्न मंत्र उच्चारते हुये पुष्प से या अंगुठे से मूर्ति के अंगो का स्पर्श करते हुये।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहऽम् आसां नूतनमूर्तीना प्राणा इह प्राणाः तिष्ठन्तु।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहऽम् अस्य प्रतिमायां जीव इहस्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हंसः सोहऽम् अस्य

प्रतिमायावाङ्मनस्त्वक् चक्षु, क्षोत्र, जिह्वा, घ्राण, पाणिपायूपस्थानि सर्वेन्द्रियाणि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। 3 बार कहें। **ॐ मनोजूति.।** गंधादिभि संपूज्य।

पात्रासाधनम्

तदन्तर वेदी व कुण्ड के उत्तर पश्चिम में ये सामग्रियाँ रखें। पवित्र तोड़ने की ३ डाम, पवित्र करने की २ डाम। १२ अंगुल लम्बी, ४ अंगुल चौड़ी ४ अंगुल गहरी प्रणिता पात्र, पद्माकृति १२ अंगुल विस्तीर्ण प्रोक्षणी पात्र, आज्यस्थाली, संमार्जनकुशा ५, वेणी रूप टेढी झुकी हुई उपयमनकुशा ७ (प्रादेश मात्र) समिध ३ (पलाश की प्रादेश मात्र) तिल्तण्डुल्शाकल्य। खैर का स्रुवा व स्रुची, चावल का पूर्णपात्र।

तत्पश्चात् :- कुशद्वयं वामहस्ते, कुशत्रयं च दक्षिण हस्तेधृत्वा, प्रादेश मात्रं सम्माण्य। कुशत्रयेन कुशद्वयस्य छेदनं कुर्यात्॥

द्वे ग्राह्ये त्रीणि त्याज्यानि। अर्थात् दो कुशायें बायें हाथ में ले तथा तीन कुशायें दाहिने हाथ में लेकर प्रोदश मात्र (अंगुष्ठ और तर्जनी के फैलाव जितना) नापकर कुशत्रय से बांयी ओर घुमाते हुये ३ आंटे देकर कुशद्वय को काटकर दो ग्रहण कर ले। तीन का त्याज करे और दो को ग्रहण करे उनको मोली बाँध कर पवित्रि बनावें। (कुशा वाले भाग की पवित्रि बनावें) उसको प्रणिता पर रखे। **अवशिष्ट कुशद्वयाग्रभागं गृहित्वा तं प्रणिता पात्रे निधाय।**

पूर्व दिशा को छोडकर मध्य मेखला पर अगर्भित दर्भा बिछायें। **कुशैराच्छदित प्रणिता पात्रेण ब्रह्मणो मुखवलोक्य पुनः अग्निरुत्तरतः पश्चिमे स्वस्थाने निधाय।**

१६, ६४, ८० दर्भा लेवे। इनसे अतिरिक्त एक ओर लेवे ताकि दर्भाओं (वर्हि या कुशा के पत्ते) का परिस्तरण करने के बाद हाथ खाली नहीं रहें।

***परिस्तरणः*- आग्नेयादीशानान्तम्।** बर्हिका चतुर्थ भाग, ४, १६ या २० अग्निकोण से ईशान कोण तक पूर्व की ओर दर्भा का अग्रभाग करते हुये रखें। कहीं कहीं उत्तर की ओर भी करते है।

***ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्*:-** कुशाओं का अग्र भाग पूर्व की ओर करते हुये ब्रह्मा से अग्निपर्यन्त (मेखला) तक रखें

***नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्* :-** नैर्ऋत्य से वायव्य तक, कुशाओं को अग्रभाग

पूर्व या उत्तर की ओर करते हुये रखें।

अग्नितः प्रणिता पर्यन्तम् :- कुशा का अग्रभाग पूर्व की ओर करते हुये अग्नि से प्रणिता तक रखें।

पवित्रहस्तेन प्रणीतोदकं त्रिःप्रोक्षणीपात्रे निक्षिप्य। पवित्रे को हाथ में रखकर दक्षिण से प्रणीता जल ३ बार प्रोक्षणी में डाले। **प्रोक्षणीपात्रे वामहस्तेधृत्वा, दक्षिणहस्तानामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रं गृहीत्त्वा त्रिरुत्पवनम्।** ततपश्चात् प्रोक्षणी पात्र को बायें हाथ में लेकर दाहिने हाथ कें अनामिका, अंगुष्ठ से पवित्र पकड़कर प्रोक्षणी के जल को ३ बार ऊपर उछालें। पवित्रे का अग्रभाग उत्तर की ओर रखें।

ततः प्रोक्षणी पात्रं वामहस्ते धृत्वा अनामिकांगुष्ठाभ्यां उत्ताग्रे पवित्रे गृहीत्वा त्रिरुद्दिंगनम्।

तत प्रोक्षणी पात्रं प्रणीतोदकेना पूरयेत्। भूमौ पतति चेत्तदा प्रायश्चित्तं गोदानम्।

प्रणीता का जल प्रोक्षणी में ध्यान से डालें भूमि पर नहीं गिरना चाहिये। यदि गिर जाये तो गोदान द्रव्यादि से प्रायश्चित करे।

कहीं कहीं प्रणतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणं लिखा है।

इसके बाद प्रोक्षणी के जल से सभी वस्तुओं पर छींटें देवें।

पुनः प्रोक्षणी पात्र जलेन सर्ववस्तु प्रोक्षणम् ।

अब सपवित्र प्रोक्षणी पात्र को अग्नि व प्रणिता के मध्य में स्थापित करे। **पुनः प्रोक्षणी पात्रं सपवित्रं स्वस्थाने निदध्ययाद्।**

स्त्रुवः प्रपतनम् :- दोनों हाथों से अधोमुख स्त्रुव को लेकर अग्रभाग को आगे रखते हुये मूल तक ३ बार पाये। संमार्जन कुशाओं के अग्रभाग से स्त्रुवादि के अग्रभाग, मध्य से मध्य मूल से मूल भाग का मार्जन कर, कुशाओं को अग्नि में छोड़ दें। प्रणीता के जल से छींटें देकर आसन पर रखें।

ततः स्त्रुवः प्रतपनं कृत्वा समार्जन कुशानामग्रैर्मूलतो अग्र भाग पर्यन्तं संमृज्य, प्रणतोदके नाभ्युक्ष।

अग्रेऽग्रे, मध्ये मध्ये, मूले मूले। (कुशोपरि निदध्यात्)

चरुसंस्कार :- **चरुस्थाल्यां तण्डुल निर्वापः। तण्डुलानि त्रिवारं प्रक्षाल्य।** (चरु पात्र में चावल डालकर ३ बार धोयें)। **प्रणतोदकमासिंच्य** (उसमें कुछ

प्रणीता करा जल डाल दें) **तस्मिन किञ्चत्पाक योग्यं पयोदत्वा, चरुपात्रं आचार्यो वेदी मध्ये स्थापयेत्।** (इसमें पकने योग्य दूध रखकर वेदी मध्य में रखें)

चरुपक्व पर्यन्तं ग्रंहादीनामावहनं कुर्यात् (कहीं पर अग्नि स्थापन के साथ ही करा देते है क्योंकि अग्नि तैयार हो तब तक अन्य पूजा हो जावे)

ग्रहामख, अधिदेवता, प्रत्याधिदेवता, दिक्पाल, लोकपाल, प्रधानदेवता व कलश पूजन के बाद यजमान का **पुण्याहवाचन** करे। रक्षासूत्र कंकण बंधन करे- **'येनराजा.।' 'तम्पत्नि.।'**

घृत संस्कार :- घृत के ७ संस्कार होते है। आज्य स्थाली को फट् मंत्र से अर्घजल से प्रोक्षण करें

विक्षणं:- उसमें घी डालकर मूल मंत्र से वीक्षण संस्कार करें। अशुद्धि को बाहर निकाल देवें।

तापनं :- कुण्डाग्नि के कुछ अंगारे दक्षिण भाग में निकालकर **''ह्रीं''** मंत्र पढकर आज्य स्थाली को रखें।

पवित्रिकरणं:- दो कुशाओं को जलाकर उन्हें घी में डुबोकर कुण्डााग्नि में **''ह्रीं''** मंत्र से छोड़ देवे।

अद्योतनं :- दो कुशाओ को जलाकर **''हूँ''** मंत्र घी के ऊपर घुमाकर अग्नि में छोड़ दें।

उद्योतनं- प्रज्वलित कुशाओं को घी को दिखाकर **''फट्''** मंत्र से अग्नि में छोड़ देवें।

उत्प्लवन :- घी को अंगारों पर से बाहर रखें अंगारों को अग्नि में छोड़ देवें। जल का स्पर्श करें और प्रादेश प्रमाण के दो कुशों को अंगुष्ठ व अनामिका से ग्रहण कर **''अस्त्राय फट्''** उच्चारण करता हुआ घी को तीन बार ऊपर ओर उछालें, कुशों का अग्रभाग उत्तर की ओर हो।

संप्लवन:- उक्त प्रकार से ही घी को **''ह्रीं''** मंत्र से स्वाभिमुख संप्लवन करें।

(कई जगह ताम्र का अग्नियंत्र - बिन्दु, त्रिकोण, षटकोण, अष्टदल एवं भूपूर युक्त कुण्ड मध्य मे रखकर पूजन कराते है, इस पुस्तक में इस यंत्र के

देवताओं के नाम व अग्नि यंत्र होम विधानादि, आगे दिया गया है)

आधार होम आदि के लिये घृत के विभाग करने पड़ते है। तदन्तर प्रादेश मात्र ग्रंथि सहित **दो कुशाओं को आज्यपात्र में डालें**, इससे घी के तीन भाग हो जायेगें। **वाम भाग में इड़ानाड़ी, दक्षिण भाग में पिंगला तथा मध्य भाग सुषुम्ना का हुआ।** इसी तरह वाम व दक्षिण भाग में **शुक्लपक्ष व कृष्णपक्ष** की कल्पना करें। **समिद् की आहुति** समय **अग्नि देवता खड़े होकर, चरु की बैठकर,** आज्य की शयन अवस्था में ग्रहण करता है। अत: **समिध की आहुति खड़े होकर देवें।** घृतका हवन करने वाला बायें हाथ में उपयमन कुशा रखें। (कौलावली)

हवन विधि:- **ॐ समिधोभ्यादाय स्वाहा** समिध से आहुति लेकर प्रजापत्यादि होम तक वेदिक विधि से करें। कौनसी आहुति घी के किस भाग से लेनी व कुण्ड में कहाँ आहुति देनी है यह विधि दी हुई है।

प्रादेश मात्र पलाश की ३ समिधा घी में भिगोकर खड़े होकर निम्न मंत्र से अग्नि में छोड़ें -

ॐ समिधोभ्यादाय स्वाहा । समिद् घी की आहुति देवें।

प्रोक्षणी पात्र को वायव्य में रखें, पवित्रे को प्रणिता पर रखें। ब्रह्मा से यजमान तक कुशा या मोली से अनवारब्ध करें। **ब्रह्मणा अन्वारब्ध आहुतिं दद्यात्, हुतशेषं च प्रोक्षणण्यांत्यर्गर्भाजेत्।**

अग्नि संस्कार हेतु घी से आहुति देवे।

ॐ अस्याग्ने गर्भधान संस्कारं करोमि स्वहा ॥१॥
ॐ अग्ने: पुंसवन: संस्कारं करोमि स्वाहा ॥२॥
ॐ अग्ने: सीमन्तोन्नयन संस्कारं करोमि स्वाहा ॥३॥

घृत के दक्षिण भाग से घी लेकर स्रुव को वायव्य से ईशान घुमाते हुये अग्निकोण तक प्रजापति की आहुति देवे।

१. **ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापते, इदं न मम। (इत्यपूर्वाधारो मनसा)**

२. घृत पात्र के वाम भाग से घी लेकर, नैऋत्य, अग्नि व ईशान पर्यन्त आहुति देवे। **ॐ इंद्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय इदं न मम।**(इत्य उत्तराधारो)

३. घृत पात्र के दक्षिण भाग से घी लेकर ईशान कोण में आहुति देवे।
ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम।(अग्निस्य दक्षिण नेत्रे)

४. घृत पात्र के वाम भाग से घी लेकर अग्नि कोण में आहुति देवे।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय, इदं न मम। (अग्निस्य वाम नेत्रे)

५. घृतपात्र के मध्य भाग से घी लेकर पूर्व में आहुति देवे।

ॐ अग्नि सोमाभ्याम् स्वाहा। इदं अग्निसोमाभ्यां, इदं न मम। (अग्निस्य मध्य नेत्रे)

६. घृत पात्र के दक्षिण भाग से कुण्ड के मध्य भाग में आहुति देवें।

ॐ अग्नये स्विष्ट कृते स्वाहा। इदं अग्निस्विष्टकृते, इदं नमम। (अग्नि मुखे)

७. घृत के दक्षिण भाग से – **ॐ भू. स्वाहा। इदं अग्नये ।**

घृत के वाम भाग से – **ॐ भूवः स्वाहा। इदं वायवे ।**

घृत के मध्य भाग से – **ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय ।**

बिना अन्वारब्धमेका आहुतिः।

ॐ प्रजापते स्वाहा। (ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा)**इदं प्रजापतये, इदं न मम।**

तत्पश्चात् अग्नि का पूजन करे।

(कहीं कहीं पंचवारुणी होम के बाद प्रजापति की आहुति दिलाते है)

ॐ शांति के वरदानाम्ने वैश्वानराय। व्रत विसर्जने बुधनाम्ने वैश्वानराय। गृहप्रवेशे पावक नामो वैश्वानराय इदमावाहनम्। गंधादिभिः संपूज्य नैवेद्यम् निवेदयामि, घृत आचमनं समर्पयामि।

पुनरन्वारब्धो जुहूयात्। स्रुवा के गंधाक्षत करे। ब्रह्मा से अन्वारब्ध करे।

अथ पंचवारुणी होमः

ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कंभ सर्जनीस्थौ वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॐ वरुणाय स्वाहा। इदं वरुणाय न मम । (१ या ५ बार आहुति देवें)

ॐ त्वन्नो अग्नेवरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः यजिष्ठोह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषांसि प्रमुमग्ध्यस्मत् स्वाहाः॥ इदं अग्नि वरुणाभ्यां ॥१॥ ॐ सत्वन्नो ऽअग्नेवमो भवोति नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नौ वरुण ठं रराणो वीहि मृडीक ठं सुहवो न

एधि स्वाहा। इदं अग्नि वरुणाभ्यां ॥२॥ **ॐ अयाश्चाग्ने ऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्वमित्व मया ऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ठं स्वाहा।** इदं अग्नये न मम ॥३॥ **ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा विततामहान्तः तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णु र्विश्वेमुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहाः** ।इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च ॥४॥ **ॐ उदुत्तमं वरुणपाशमस्मद वाधमं विमध्यम ठं श्रथाय। अथावय मादित्यव्रते तवा नागसोऽदितये स्याम स्वाहा।** इदं वरुणा दित्यायादितये ॥५॥ **अत्रोदकस्पर्शः**

उपरोक्त हवन के बाद या पंचवारुणी हवन के बाद निम्न मंत्र से ३ बार आहुति देवे। **ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्व कार्याणि साधय स्वाहा।** इसके बाद अन्वारब्ध हटा लेवें।

अग्नि के पंचादश संस्कार (तांत्रिके)

इसके बाद अग्नि के गर्भाधानादि संस्कार करें। विवाह पर्यन्त तक करे। क्रूर कर्म मारण अभिचार कर्म में अग्निका मरणान्त संस्कार भी करते है। प्रत्येक में घी की आहुति १ या २ बार देवें। अगर गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त संस्कार पहिले कर दिये हो तो जातकर्म संस्कार से करे।

॥१॥ ॐ अस्याग्ने गर्भाधान संस्कार करोमि स्वाहा ॥२॥ ॐ अग्नेः पुंसवन संस्कारं करोमि स्वाहा॥३॥ ॐ अग्नेः सीमन्मतोयन्न संस्कारं करोमि स्वाहा॥४॥ ॐ अग्नेः जातकर्म संस्कारं करोमि स्वाहा॥५॥ ॐ अग्नेः नामकर्म संस्कारं करोमि स्वाहा। (दुर्गा यागे - दुर्गाग्नि नामानि, विष्णु यागे - विष्णुऽग्नि, शिवयागे - शिवाऽग्नि इदंनामानि)

॥६॥ ॐ अग्नि निष्क्रमण संस्कारं करोमि स्वाहा ॥७॥ ॐ अग्ने कर्णवेध संस्कारं करोमि स्वाहा ॥८॥ ॐ अग्नेरन्नप्राशन संस्कारं करोमि स्वाहा ॥९॥ ॐ अग्ने श्चौल संस्कारं करोमि स्वाहा ॥१०॥ ॐ अग्नेरुपनयनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥११॥ ॐ अग्नर्वेदारम्भ संस्कारं करोमि स्वाहा ॥१२॥ ॐ अग्नेमहानाम्नी महाव्रत संस्कारं करोमि स्वाहा ॥१३॥ ॐ अग्नेरुपनिषद्व्रत संस्कारं करोमि स्वाहा ॥१४॥ ॐ अग्नेर्व्रतविसर्ग संस्कारं करोमि स्वाहा ॥१५॥ ॐ अग्ने केशान्त गोदान

संस्कारं करोमि स्वाहा ॥१६॥ ॐ अग्रे दुर्गाग्ने शिवसहिताय विवाह संस्कारं करोमि स्वाहा (लाजा सहित आहुति देवे, विष्णु यागे लक्ष्मीसहिताय, शिवयागे - पार्वति सहिताय विवाह संसकार करें।) ॐ पार्वती परमेश्वराभ्यां नमः। इति मंत्रेण संपूज्य।

ततो मूलाग्रघृत सप्लुताः पंचसमिधौ (मनसाधात्वा) जुहयात्। अब अग्नि की सप्त जिह्वाओं को आहुति प्रदान करें।

अथ अग्नियंत्र होमः

(तांत्रिके)

तद्यथा :-

१. ॐ स्प्रुं हिरण्यायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा। इदं हिरण्य अग्निजिह्वायै नमः॥

२. ॐ स्प्रुं गगनायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा। इदं गगनायै नममः॥

३. ॐ श्प्रुं रक्तायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा। इदं रक्तायै नमम॥

४. ॐ व्प्रुं कृष्णायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा। इदं कृष्णायै नमम॥

५. ॐ ल्प्रुं सुप्रभायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा। इदं सुप्रभायै नमम॥

६. ॐ प्रुं बहुरूपायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा। इदं बहुरूपायै नमम॥

७. ॐ प्रुं अतिरिक्तायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा। इदं अतिरिक्तायै नमम॥

जिह्वादिदेवता होमः (तांत्रिके)

१. ॐ देवताभ्योः नमः स्वाहा। इदं इदं देवः न मम॥

२. ॐ पतिृभ्यः स्वधा। इदं पितृभ्य न मम॥

३. ॐ गंधर्वेभ्यः स्वाहा। इदं गंध. न मम॥

४. ॐ यक्षेभ्यः स्वाहा। इदं यक्षेभ्य न मम॥

५. ॐ नागेभ्यः स्वाहा। इदं नागेभ्य. न मम॥

६. ॐ पिशाचेभ्यः स्वाहा। इदं पिशा. न मम॥

७. ॐ राक्षसेभ्यः स्वाहा। इदं राक्ष. न मम॥

अग्निः अंगदेवता होमः (तांत्रिके)

(तत षट्कोणेषु आग्न्यादिकोणमारंभ मध्ये दिक्षु च) इदं से त्याग करे।

१. ॐ सहस्त्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा।

२. ॐ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा।

३. ॐ उत्तिष्ठ पुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा।

४. ॐ धूम्र व्यापिने कवचाय हुँ स्वाहा।

५. ॐ सप्तजिह्वायै नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा।

६. ॐ धनुर्धरायास्त्राय फट् स्वाहा।

७. ॐ वैश्वानराय स्वाहा।

अष्टदले पूर्वादि क्रमेण अष्टाग्नि मूर्ति होमः (इदं से त्याग करे।)

१. ॐ अग्नये जातवेदसे नमः स्वाहा।

२. ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय स्वाहा।

३. ॐ अग्नये हव्यवाहनाय स्वाहा।

४. ॐ अग्नये अश्वोदरजातय स्वाहा।

५. ॐ अग्नये वैश्वानराय स्वाहा।

६. ॐ अग्नये कौमार तेजसे स्वाहा।

७. ॐ अग्नये वि[illegible]मुखाय स्वाहा।

८. ॐ अग्नये देवमुखाय स्वाहा।

सायुध दिक्पाल होमः (तांत्रिके)

(इदं से त्याग करे।)

१. ॐ इंद्राय सुराधिपतये वज्र हस्ताय स्वाहा।

२. ॐ वह्नये तेजोऽधिपतये छागवाहनाय शक्ति हस्ताय स्वाहा।

३. ॐ यमाय प्रेताधिपतये दण्ड हस्ताय स्वाहा।

४. ॐ निर्ऋत्ये रक्षाधिपतये खड़ग हस्ताय स्वाहा।

५. ॐ वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय स्वाहा।

६. ॐ वायवे प्राणाधिपते ध्वजहस्ताय स्वाहा।

७. ॐ सोमाय क्षेत्राधिपतये गदाहस्ताय स्वाहा।

८. ॐ ईशानाय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय स्वाहा।

९. ॐ ब्रह्मणे पद्महस्ताय स्वाहा।

१०. ॐ अनंताय चक्रहस्ताय स्वाहा।

दिक्पाल हवन के बाद स्रुव से चार बार स्रुचि में घी भर स्रुचि पर स्रुव को रखें खड़े होकर आहुति देवें -

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकार्याणि साधय स्वाहा वौषट्॥

इस मंत्र से आहुति देवे। तदन्तर विघ्नेश की दस आहुति देवें **१. ॐ स्वाहा। २. ॐ श्रीं स्वाहा। ३. ॐ श्रीं ह्रीं स्वाहा। ४. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा। ५. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं स्वाहा। ६. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं स्वाहा। ७. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये स्वाहा। ८. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद स्वाहा। ९. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवद सर्वजन मे स्वाहा। १०. ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवद सर्वजन मे वशमानय स्वाहा।**

इसके बाद अग्नि में इष्टदेवता का ध्यान करे, अग्निपीठ व इष्टदेवता की पूजा करे। मूलमंत्र से घी की २५ आहुति अग्नि के मुख में देवे। इसे **वक्त्रैकीकरण** कहते है। अग्नि व इष्टदेवता की अपने साथ ऐक्य भावना कर मूल मंत्र से एकादश आहुतियां देवे। यह **नाड़ी संधान** हुआ। इसके बाद ग्रह, अधिदेव., प्र. दे. लोकपाल, दिकपाल का हवन इष्टदेवता के यंत्र के आवरण देवताओंकी आहुतियां देवे।

॥इति तांत्रिके अग्नि स्थापन एवं अग्नियंत्र होमः॥

अथ गणपति होमः

'गणानांत्वा' मंत्रेण होमः। इदं गणपते न मम।

ॐ अंबे अम्बिकेम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्य श्वक सुभद्रिकाङ्काम्पील वासिनीम् स्वाहा। इदं अम्बिकायै न मम।

(इति गणेशाम्बिका होमः)

अथ ग्रहाणांहोम:

प्रत्येक ग्रह की प्रतिद्रव्य ८ आहुति देवे। प्रत्येक ग्रह की समिध को घी में भिगोकर खड़े होकर चरु, तिल, आज्य की बैठकर आहुति देवे।

लाजा होमे, समिद्धोमे उर्ध्वहोम तथैव च।

तिष्ठतेव हि कर्त्तव्या: स्वाहाकारामपि ध्रुवम्। लाजा व समिध होम खड़े होकर तथा तथा स्वाहा बैठकर होम करें।

स्रुव के ६ भाग होते है। मूल से प्रारंभ - अग्नि रुद्रोयमश्चैव विष्णु शक्र: प्रजापति। विष्णुभाग (मूल से चौथे) भाग से हवन करें।

होम विशेष में जितने द्रव्य हो उतने होता होवे। मंत्र के विभाग भी द्रव्य अनुपात में बनने चाहिये। एक होता हो तो मंत्र के प्रत्येक विभाग में स्वाहा के साथ प्रतिद्रव्य आहुति देवे। एक साथ ३ या ४ होता हवन करे तो पूरे मंत्र के साथ हवन करे।

निर्णय सिंधु में पृष्ठ ४७ पर लिखा है कि ग्रह होम में आकृष्णेन इत्यादि मंत्रों द्वारा आहुति नहीं हो सकती क्यों कि ग्रह मंत्रों का विभाग कैसे होगा।

कोटि होम पद्धति :- ये ग्रह मन्त्रेरवायुत लक्षहोमाद्याहुस्तन्निर्मूलम्। नवग्रह मंत्राणां विभागासंभवात्॥ भविष्योत्तरे :- होमो व्याहृतिभिश्चैव सर्वस्तत्र विधियते। नृसिंहपुराणे:- ततोव्यहृतिभि: पश्चाज्जुहुयान्ततिला दिकम्

स्थिति अनुसार हम निम्न संभावित विधियों से हवन कर सकते है।

(१) ॐ भू: स्वाहा (समिध) **इदं सूर्याय. (२) ॐ भूव: स्वाहा** (चरु) **इदं सूर्याय.(३) ॐ स्व: स्वाहा** (तिल) **इदं सूर्या. (४) ॐ सूर्याय स्वाहा** (आज्य) **इदं सूर्याय. (अथवा ॐ भूर्भुव: स्व: सूर्याय स्वाहा)**

अथवा

(२) गणपति मंत्र के १० विभाग करके आहुति कम अग्नि की तांत्रिक पूजा में जो विधान है उस विधि से करें।

(१) ॐ भू: स्वाहा (समिध) इदं सूर्याय.(२) ॐ भूर्भुव: स्वाहा (चरु) **इदं सूर्याय.(३) ॐ भूर्भुव: स्व: स्वाहा** (तिल) **इदं सूर्याय.**

(४) ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्या.

अथवा

(३) ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय स्वाहा । (सभी होता एक साथ होमे) इदं सूर्याय इदं न मम।

(४) आधुनिक में आकृष्णेन - सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्या.।

(५) ॐ भूर्भुवः स्वः आकृष्णेन .....सूर्या स्वा.। इदं सूर्या। (सभी होता एक साथ होमे)

(६) मंत्र - आकृष्णेन....। ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्या. स्वा.। इदं सूर्या।

(७) ॐ भू स्वाहा (समिध) इदं सूर्याय.। ॐ भुवः स्वाहाः (चरु) इदं सूर्याय। ॐ स्वः स्वाहा (तिल) इदं सूर्याय ॐ आकृष्णेन रजसा.....(आज्य) इदं सूर्याय न मम।

इस तरह (७) द्रव्य विभाग से होम करे यही क्रम उपयुक्त प्रतीत होता है। इस तरह सभी ग्रहों को, अधिदेवता, प्रत्याधिदेवताओं को आहुति प्रदान करे ।

अथ नवग्रह होमः

मंत्र पृष्ठ संख्या ११७ पर हैं।

(प्रत्येक ग्रह की ८-२८ या १०८ आहुतियां देवे)

(अर्कसमिध) ॐ भूर्भुवः स्वः आकृष्णेन । ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय स्वाहा इदं सूर्याय इदं न मम।

(पलाश समिध) ॐ इमन्देवा.। ॐ भू. सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम॥ (खैर समिध) ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः.। ॐ भू. भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय इदं न मम॥ (अपामार्ग-आंधीझाडा) ॐ उद्बुध्यास्वाग्ने.। ॐ भू. बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥ (पिप्पल समिध) ॐ बृहस्पते.। ॐ भू. बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये इदं न मम॥ (गूलर) ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो.। ॐ भू. शुक्राय स्वाहा। इदं शुक्राय इदं न मम॥ (शमी खेजड़ी) ॐ शन्नो देवी.। ॐ भू. शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनै. इदं न मम॥ (दूर्वा समिध) ॐ कयानश्चित्र.। ॐ भू. राहवे स्वाहा। इदं राहवे इदं न मम॥ (कुशा. डाभ) ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे.।

ॐ भू. केतवे स्वाहा। इदं केतवे इदं न मम॥

(जल छाड़ें) अनेन हवनेन श्री नवग्रह देवता प्रीयन्ताम् न मम।

षोडशमातृका होमः

मंत्र पृष्ठ संख्या ८८ पर है।

वैदिक मंत्रों से आहुति देवे तो मंत्र के बाद स्वाहा से हवन करे एवं इदं अमुक देवतायै इदं न मम से प्रोक्षणी में त्याज करे। अथवा नामावलि के हवन करे। प्रांरभ में ॐ या **व्याहृति** लगावे।

॥१॥ गौर्यै स्वाहा ॥२॥ पद्मायै स्वाहा ॥३॥ शच्यै स्वाहा॥४॥ मेधायै स्वाहा॥५॥ सावित्र्यै स्वाहा॥६॥ विजयायै स्वाहा॥७॥ जयायै स्वाहा॥८॥ देवसेनायै स्वाहा॥९॥ स्वधायै स्वधा। ॥१०॥ स्वाहायै स्वाहा (जिस मंत्र के अंत में स्वाहा हो उसके अंत में वाट् बोलकर स्वाहा बोलने का भी विधान मिलता है)

(स्वधा व पितृ होमान्ते मे स्वाहा की जगह स्वधा से होम होना चाहिये अतः स्वधायै स्वधा)

॥११॥मातृभ्यः स्वाहा ॥१२॥ लोकमातृभ्यः स्वाहा ॥१३॥ धृत्यै स्वाहा ॥१४॥ पुष्ट्यै स्वाहा॥१५॥ तुष्ट्यै स्वाहा॥१६॥ प्रणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं स्वाहा। इदं आत्मकुलदेव्यै इदं न मम॥

जल छोड़ें - **अनेन हवनेन श्री षोडशमातृका देवता प्रियन्ताम् न मम॥**

वसोर्धारा होमः

ॐ वसो पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष्वः स्वाहा॥

विशेष - नवाहुतयः

॥१॥ ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ ३ अवसादयादिह स्वाहा॥

॥२॥ ॐ अप्स्वग्ने सधिष्ठवसौषधी - रनुरुध्यसे। गर्भेसञ्जाय से पुनः स्वाहा॥

॥३॥ ॐ स्योनापृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सप्रथा स्वाहा॥

॥४॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढ मस्यपा ठ सुरे स्वाहा॥

॥५॥ ॐ महाँ ३ इंद्रोवज्रहस्तः षोडशी शर्मयच्छतु हन्तुपाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैषते योनिरिन्द्राय यत्व स्वाहा॥

॥६॥ ॐ शुक्र ज्योश्चि चित्र ज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च शुक्रश्चऋत पाश्चात्य ठ हाः स्वाहा॥

॥७॥ ॐ प्रजापतेनत्व देतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परितावभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोअस्तु वय ठ स्याम पतयो रयीणां स्वाहा।

॥८॥ ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरंचप्रयन्त्स्वः स्वाहा।

॥९॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनआवः सबुध्न्याउपमाअस्य विष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्चाव्विवः स्वाहा।

अधिदेवानां होमः

(वैदिक मंत्र पृष्ठ संख्या १२२ पर है, प्रत्येक देवता की ४ या ८ या २८ आहुति)

होम समय सभी जगह रुद्र तथा सर्प का त्याग ईशान में, अग्नि व पितर का अग्नि कोण में, यम, काल व चित्रगुप्त का दक्षिण में, नैऋति का नैऋत्य में त्याग करें। एवं प्रणिता जल से स्त्रुव का प्रोक्षण करें। यजमान के छींटें देवें। मंत्र यथा वाण प्रहाराण कवचं....वारणं स्मतम्। तथा देवोपघातानां शान्ति भवति वारणम्।

॥१॥ ॐ रुद्राय स्वाहा॥२॥ ॐ श्रियै स्वाहा॥३॥ ॐ स्कंदाय स्वाहा॥४॥ ॐ विष्णवे स्वाहा॥५॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा॥६॥ ॐ इंद्राय स्वाहा॥७॥ ॐ यमाय स्वाहा॥८॥ ॐ कालाय स्वाहा॥९॥

ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा

जल छोड़ें - **अनेन हवनेन् अधिदेवतानां प्रियन्ताम् न मम ॥**

प्रत्यधिदेवतानां होमः

(वैदिक मंत्र पृष्ठ संख्या १२३ पर है, प्रत्येक देवता की ४ या ८ या २८ आहुति)

॥१ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा ॥२ ॥ ॐ अद्भ्यः स्वाहा ॥३ ॥ ॐ पृथिव्यै स्वाहा ॥४ ॥ ॐ विष्णवे स्वाहा ॥५ ॥ ॐ इंद्राय स्वाहा ॥६ ॥ ॐ इंद्राण्यै स्वाहा ॥७ ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥८ ॥ ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा ॥९ ॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा

पंचलोकपाल होमः

(वैदिक मंत्र पृष्ठ संख्या १२५ पर है, प्रत्येक देवता की २ या ४ या ८ आहुति)

॥१ ॥ ॐ गणपतये स्वाहा ॥२ ॥ ॐ दुर्गायै स्वाहा ॥३ ॥ ॐ वायवे स्वाहा ॥४ ॥ ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा ॥५ ॥ ॐ अश्विन्यां स्वाहा इदं.॥

जल छोड़ें - **अनेन हवनेन पंचलोकपाल देवतां प्रियन्ताम न मम**

नक्षत्र हवन

(वैदिक मंत्र पृष्ठ संख्या १२६ पर है, प्रत्येक देवता की २ या ४ या ८ आहुति)

समस्त नामावलियों के नाम उच्चारण के बाद प्रत्येक नाम के साथ स्वाहा बोलकर हवन करे। इदं से त्याग करें।

॥१ ॥ ॐ अश्विन्यै ॥२ ॥ ॐ भरण्यै ॥३ ॥ ॐ कृत्तिकायै ॥४॥ ॐ रोहिण्यै ॥५ ॥ ॐ मृगशिरसे ॥६ ॥ ॐ आर्द्रायै ॥७ ॥ ॐ पुनर्वसवे ॥८ ॥ ॐ पुष्याय ॥९ ॥ ॐ अश्लेषाय ॥१० ॥ ॐ मघायै ॥११ ॥ ॐ पूर्वाफाल्गुन्यै ॥१२॥ ॐ उत्तराफाल्गुन्यै ॥१३ ॥ ॐ हस्तायै ॥१४॥ ॐ चित्रायै ॥१५ ॥ ॐ स्वात्यै ॥१६ ॥ ॐ विशाखायै ॥१७॥ ॐ अनुराधायै ॥१८॥ ॐ ज्येष्ठायै ॥१९॥ ॐ मूलायै ॥२०॥ ॐ पूर्वाषाढायै ॥२१ ॥ ॐ उत्तराषाढायै ॥२२ ॥ ॐ अभिजिते ॥२३॥ ॐ श्रवणाय ॥२४॥ ॐ घनिष्ठायै ॥२५ ॥ ॐ शतभिषायै ॥२६ ॥ ॐ पूर्वाभाद्रपदायै ॥२७॥ ॐ उत्तराभाद्रपदायै ॥२८॥ ॐ रेवत्यै स्वाहा ॥

जल छोड़ें - अनेन् हवनेन सवेभ्यो नक्षत्रेभ्यो प्रीयन्ताम् न मम।

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे। सखाय इंद्रमूर्तये। ॐ योगेभ्यः स्वाहा॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येम्माक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टवा ठ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।। ॐ करेणभ्यः स्वाहा॥

ॐ यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधया मेधाविनं कुरु॥ ॐ मेधायै स्वाहा॥

अथ विशेषदेवता होमः

(वैदिक मंत्र पष्ठ संख्या १३२ पर है, प्रत्येक देवता की ८ आहुति)

॥१॥ ॐ सहस्त्रशीर्षा. विष्णवे स्वाहा॥२॥ असंख्याताः सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषा ठ सहस्त्रयोजने वधन्वानि तन्मसि॥ ॐ एकादश रुद्रेभ्यः स्वाहा॥३॥ ॐ वरुणस्योत्तभनमसि.। ॐ कलशस्थ देवेभ्यः स्वाहा॥४॥ ॐ वास्तोष्पते.। वास्तुपुरुषाय स्वाहा। ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्या विशन्सखा सुशेव एधिनः ॥ ॐ वास्तवे स्वाहा॥५॥ ॐ गणानांत्वा.। ॐ गणपतये स्वाहा॥६॥ ॐ नमोस्तुसर्पेभ्यो. क्षेत्रपालाय स्वाहा॥७॥ ॐ जातवेदसे.। ॐ चामुण्डायै स्वाहा॥८॥ ॐ योव शिवतमो. गौर्यै स्वाहा॥९॥ ॐ चतुर्वेदभ्यः स्वाहा॥१०॥ ॐ ध्रवोसि. ॐ ध्रवाय स्वाहा॥११॥ ॐ पंचनद्य. सरितायै पंचनदीभ्यः स्वाहा॥१२॥ ॐ चतुःषष्टियोगिनीभ्यः स्वाहा॥१३॥ ॐ पंचभूतेभ्यः स्वाहा॥१४॥ ॐ सप्तऋषिय प्रतिहिता. सप्तऋर्षिभ्य स्वाहा॥१५॥ ॐ इमंम्मे वरुण. सप्तसागरेभ्य स्वाहा॥१६॥ ॐ प्रपर्वतस्य वृषभथ. ॐ पर्वतेभ्य स्वाहा॥१७॥ ॐ जवायस्ते. ॐ रेवन्ताय स्वाहा॥१८॥ ॐ सुपर्णोसि. ॐ गरुड़ाय स्वाहा॥१९॥ ॐ अष्टवसुभ्य स्वाहा॥२०॥ ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा॥२१॥ ॐ एकोन पंचाशन्मरुद्भ्यः स्वाहा॥२२॥ ॐ अष्टनागकुलेभ्यः स्वाहा॥२३॥ ॐ पितृभ्य स्वधा॥२४॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा॥२५॥ ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा

अथ दिक्पाल होमः

(वैदिक मंत्र पष्ठ संख्या १३४ पर है, प्रत्येक देवता की २, ४, या ८ आहुति)

॥१ ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा ॥२ ॥ ॐ अग्नये स्वाहा ॥३ ॥ ॐ यमाय स्वाहा ॥४ ॥ ॐ नैर्ऋत्याय स्वाहा ॥५ ॥ ॐ वरुणाय स्वाहा ॥६ ॥ ॐ वायवे स्वाहा ॥७ ॥ ॐ धनदाय स्वाहा ॥८ ॥ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥९ ॥ ॐ अंतरिक्षाय स्वाहा ॥१० ॥ ॐ धरायै स्वाहा

जल छाड़ें - **अनने हवनेन् इंद्रादि लोकपाल देवता प्रियन्ताम न मम।**

अथ सर्वतोभद्र मंडल देवतायाः होम

(वैदिक मंत्र पष्ठ संख्या १९७ पर है, प्रत्येक देवता की ८ आहुति)

सर्वतोभद्र होमः

ॐ मूलमंत्रेणः ॐ विष्णवे स्वाहा। प्रधान देवतायै स्वाहा॥

नामावलि के प्रत्येक मंत्र के बाद स्वाहा बोलकर होम करे। और **इदं न मम से त्याग करे।** वैसे प्रत्येक देवता की ८ आहुति का विधान है।

नोट :- पितृ का स्वधा से त्याग करें, अग्नि व यम के मध्य में त्याग करें। रुद्र का ईशान में यम रोगमृत्यु का त्याग दक्षिण दिशा व नैर्ऋति का नैर्ऋत्य में त्याग करें तथा प्रणीता जल से स्रुव व यजमान का प्रोक्षण करे, **'यथा बाणप्रहाराणां'** मंत्र से छींटें देवे। ॐ या व्याहृति सहित हवन करें।

॥१ ॥ ॐ ब्रह्मणे ॥२ ॥ ॐ सोमाय ॥३ ॥ ॐ ईशानाय ॥४ ॥ ॐ इंद्राय ॥५ ॥ ॐ अग्नये ॥६ ॥ ॐ यमाय ॥७ ॥ ॐ नैर्ऋतये ॥८ ॥ ॐ वरुणाय ॥९ ॥ ॐ वायवे ॥१० ॥ ॐ अष्टवसुभ्यः ॥११ ॥ ॐ एकादशरुद्रेभ्यः ॥१२ ॥ ॐ द्वादशादित्येभ्यः ॥१३ ॥ ॐ अश्विनिभ्यां ॥१४ ॥ ॐ विश्वेदेवेभ्यः ॥१५ ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधा ॥१६ ॥ ॐ यक्षेभ्यः ॥१७ ॥ ॐ भूतनागेभ्यः

॥१८ ॥ ॐ सर्पेभ्यः ॥१९ ॥ ॐ गंधर्वेभ्यः ॥२० ॥ ॐ अप्सरोभ्य ॥२१ ॥ ॐ स्कंदाय. ॥२२ ॥ ॐ नन्दीश्वराय. ॥२३ ॥ ॐ शूलमहाकालाभ्यां ॥२४ ॥ ॐ प्रजापतिभ्यः ॥२५ ॥ ॐ दुर्गायै. ॥२६ ॥ ॐ विष्णवे. ॥२७ ॥ ॐ पितृभ्यः स्वधा ॥२८ ॥ ॐ

मृत्युरोगेभ्यः ॥२९॥ ॐ गणपतये.॥३०॥ ॐ अद्भ्यः ॥३१॥ ॐ मरुद्भ्यः ॥३२॥ ॐ पृथिव्यै. ॥३३॥ ॐ सरिद्भ्यः ॥३४॥ ॐ सप्तसागरेभ्यः ॥३५॥ ॐ मेरवे.॥

आयुध होम विषय में सामान्यतया तिल व आज्य की आहुति सभी देवताओं केसमान व सभी हवन कुण्डों में करते है। वैसे प्रत्येक देवता की ८ आहुतियां है इनकी भी ८ होगी। आठ आहुतियों का विधान पंचकुण्डी व नवकुण्डी यज्ञ में हम पहिले मयूष मत के अनुसार लिख चुके है। परन्तु ऐसा करते नहीं है सभी कुण्डों में आहुतियां देते है जिससे ५ व ९ आहुतियां होती है दूसरी आवृति करेंगें तो १० या १८ आहुतियां होगी

इसी तरह आयुध होम की ८ आहुतियां आचार्य कर्तृक मानी गयी है अर्थात् ऋत्विक कर्तृक नहीं है। अर्थात केवल घी की आहुति होगी तिलादि की नहीं । (प्रतिष्ठा मयुख)

कहीं यह मत है कि पंचकुंडी पक्ष में यह होम आचार्य कुंड में करे अन्य कुण्डों के होता बैठे रहें या केवल घी की आहुति देवें।

अंग होम विषय में भी **"प्रतिष्ठा मयुख"** में होम आचार्य कर्तृक माना है। **ऋत्विक कर्तृक नहीं। पंचकुण्डी में अंग हवन में - पूर्वकुण्ड में हृदयाय स्वाहा। दक्षिण कुण्ड में - शिरसे स्वाहा। पश्चिम कुण्ड में - शिखायै वषट् स्वाहा। उत्तर कुण्ड में - कवचाय हुँ स्वाहा। आचार्य कुण्ड में - नेत्रत्रयाय वौषट्। पूर्व कुण्ड में पुनः अस्त्राय फट् स्वाहा।**

तथा प्रत्येक अंग होम में २० बार घृत से हवन करें।

॥३६॥ ॐ गदायै स्वाहा ॥३७॥ ॐ त्रिशूलाय स्वाहा ॥३८॥ ॐ वज्राय स्वाहा ॥३९॥ ॐ शक्त्यै स्वाहा ॥४०॥ ॐ दण्डायै स्वाहा ॥४१॥ ॐ खड्गाय. ॥४२॥ ॐ पाशाय. ॥४३॥ ॐ अंकुशाय.

अब तिलादि से आहुती देवे **॥४४॥ ॐ गौतमाय ॥४५॥ ॐ भारतद्वाजाय ॥४६॥ ॐ विश्वामित्राय ॥४७॥ ॐ कश्यपाय ॥४८॥ ॐ जमदग्नेये ॥४९॥ ॐ वशिष्ठाय ॥५०॥ ॐ अत्रये ॥५१॥ ॐ अरुन्धत्यै ॥५२॥ ॐ ऐन्द्र्यै ॥५३॥ ॐ कौमार्यै ॥५४॥ ॐ ब्राह्मयै ॥५५॥ ॐ वाराह्यै ॥५६॥ ॐ चामुण्डायै ॥५७॥ ॐ वैष्णव्यै ॥५८॥**

ॐ माहेश्वर्य्यै ॥५९॥ ॐ वैनायक्यै स्वाहा ॥६०॥ ॐ इंद्रादिलोकपालेभ्यः स्वाहा॥

जल छोड़ें – **अनेन होमेन सर्वतोभद्र देवताः प्रीयन्ताम न मम॥**

अथ ३४ रेखात्मक द्वादशलिंगतोभद्रदेवता होमः

प्रत्येक नाम के पहले **ॐ या व्याहृति सहित स्वाहा** बोलकर होम करें।

॥१॥ ॐ गुरवे ॥२॥ ॐ गणपतये ॥३॥ ॐ दुर्गायै ॥४॥ ॐ क्षेत्रपालाय ॥५॥ ॐ सदाशिवाय ॥६॥ ॐ कालाग्निरुद्राय ॥७॥ ॐ कूर्माय॥८॥ मंडूकाय ॥९॥ वाराहाय ॥१०॥ अनंताय ॥११॥ पृथिव्यै ॥१२॥ स्कंदाय ॥१३॥ सुधासिंधवे ॥१४॥ नलाय ॥१५॥ पद्माय ॥१६॥ पत्रेभ्यो ॥१७॥ केसरेभ्यो ॥१८॥ कर्णिकायै ॥१९॥ सिंहासनाय ॥२०॥ पद्मासनाय ॥२१॥ धर्माय ॥२२॥ ज्ञानाय ॥२३॥ वैराग्याय ॥२४॥ ऐश्वर्याय ॥२५॥ चिदाकाशाय ॥२६॥ योगपीठाय ॥२७॥ पृथिव्यै ॥२८॥ कपालाय ॥२९॥ सप्तसरिद्भ्यो ॥३०॥ सप्तसागरेभ्यो ॥३१॥ तत्पुरुषाय ॥३२॥ अघोराय ॥३३॥ सद्योजाताय ॥३४॥ वामदेवाय ॥३५॥ भगवत्यै ॥३६॥ उमायै ॥३७॥ शंकरप्रियायै ॥३८॥ पार्वत्यै ॥३९॥ गौर्यै ॥४०॥ काल्यै ॥४१॥ कौमार्यै१ ॥४२॥ विश्वंभर्यै ॥४३॥ नंदिने ॥४४॥ महाकालाय ॥४५॥ महावृषभाय ॥४६॥ भृंगकिरीटने ॥४७॥ स्कंदाय ॥४८॥ उमापतये ॥४९॥ चण्डेश्वराय ॥५०॥ योगसूत्राय ॥५१॥ धात्रे ॥५२॥ मित्राय ॥५३॥ यमाय ॥५४॥ रुद्राय ॥५५॥ वरुणाय॥५६॥ सूर्याय ॥५७॥ भगाय ॥५८॥ विवस्वते ॥५९॥ पुरुषोत्तमाय ॥६०॥ सवित्रे ॥६१॥ त्वेष्ट्रे ॥६२॥ विष्णवे ॥६३॥ शिवाय ॥६४॥ एकनेत्राय ॥६५॥ एकरुद्राय ॥६६॥ त्रिमूर्तये ॥६७॥ श्रीकंठाय ॥६८॥ वामदेवाय ॥६९॥ ज्येष्ठाय ॥७०॥ श्रेष्ठाय ॥७१॥ रुद्राय ॥७२॥ कालाय ॥७३॥ कलविकरणाय ॥७४॥ बलविकरणाय ॥७५॥ अणिमायै ॥७६॥ महिमायै ॥७७॥ लघिमायै ॥७८॥ गरिमायै ॥७९॥ प्राप्त्यै ॥८०॥ प्राकाम्यै ॥८१॥ ईशितायै ॥८२॥ वशितायै ॥८३॥ ब्रह्मायै ॥८४॥ माहेश्वर्यै ॥८५॥ कौमार्यै ॥८६॥ वैष्णव्यै ॥८७॥ वाराह्यै ॥८८॥ इंद्राण्यै ॥८९॥ चामुण्डायै ॥९०॥ चण्डिकायै

॥९१॥ असितांग भैरवाय ॥९२॥ रुरुभैरवाय ॥९३॥ चण्डभैरवाय ॥९४॥ क्रोधभैरवाय ॥९५॥ उन्मत्त भैरवाय ॥९६॥ काल भैरवाय ॥९७॥ भीषण भैरवाय ॥९८॥ संहार भैरवाय ॥९९॥ घृताच्यै ॥१००॥ मेनकायै ॥१०१॥

रंभायै ॥१०२॥ **उर्वश्यै** ॥१०३॥ **तिलोत्तमायै** ॥१०४॥ **सुकेशायै** ॥१०५॥ **मंजुघोषायै** ॥१०६॥ **अप्सरोभ्यो** ॥१०७॥ **भवाय** ॥१०८॥ **शिवाय** ॥१०९॥ **रुद्राय** ॥११०॥ **पशुपतये** ॥१११॥ **उग्राय** ॥११२॥ **भीमाय** ॥११३॥ **महादेवाय** ॥११४॥ **ईशानाय** ॥११५॥ **अनंताय** ॥११६॥ **वासुकीये** ॥११७॥ **तक्षकाय** ॥११८॥ **कुलीरकाय** ॥११९॥ **कर्कोटकाय** ॥१२०॥ **शंखपालाय** ॥१२१॥ **कंबलाय** ॥१२२॥ **अश्वतराय** ॥१२३॥ **वैन्याय** ॥१२४॥ **अंगाय** ॥१२५॥ **हैहयाय** ॥१२६॥ **अर्जुनाय** ॥१२७॥ **शाकुन्तलेयाय** ॥१२८॥ **भरताय** ॥१२९॥ **नलाय** ॥१३०॥ **रामाय** ॥१३१॥ **सार्वभौमाय** ॥१३२॥ **निषधाय** ॥१३३॥ **विंध्याचलाय** ॥१३४॥ **माल्यवत्ये** ॥१३५॥ **परियात्राय**

॥१३६॥ **सह्याय** ॥१३७॥ **हेमकूटाय** ॥१३८॥ **गंधमादनाय** ॥१३९॥ **कुलाचलाय** ॥१४०॥ **हिमवते** ॥१४१॥ **रैवंताय** ॥१४२॥ **देवगिरये** ॥१४३॥ **मलयाचलाय** ॥१४४॥ **कनकाचलाय** ॥१४५॥ **पृथिव्यै** ॥१४६॥ **अनंताय** ॥१४७॥ **अग्निकुमाराभ्यां** ॥१४८॥ **विश्वेभ्यो देवेभ्यो** ॥१४९॥ **पितृभ्यो स्वधा** ॥१५०॥ **नागेभ्यो** ॥१५१॥ **इंद्राय** ॥१५२॥ **अग्नये** ॥१५३॥ **यमाय** ॥१५४॥ **निर्ऋतये** ॥१५५॥ **वरुणाय** ॥१५६॥ **वायव्ये** ॥१५७॥ **कुबेराय** ॥१५८॥ **ईशानाय** ॥१५९॥ **ब्रह्मणे** ॥१६०॥ **अनंताय**

अस्त्रों की घृत से आहुति देवे या केवल आचार्य आहुति कुण्ड में हवन करे बाकी होता बैठे रहें या घृताहुति देवे। ॥१६१॥ **वज्राय** ॥१६२॥ **शक्त्यै** ॥१६३॥ **दण्डाय** ॥१६४॥ **खड्गाय** ॥१६५॥ **पाशाय** ॥१६६॥ **अंकुशाय** ॥१६७॥ **गदायै** ॥१६८॥ **त्रिशूलाय** ॥१६९॥ **पद्माय** ॥१७०॥ **चक्राय**

अब तिलादि से होम करे ॥१७१॥ **कश्यपाय** ॥१७२॥ **अत्रये** ॥१७३॥ **भारतद्वाजाय** ॥१७४॥ **विश्वामित्राय** ॥१७५॥ **गौतमाय** ॥१७६॥ **जमदग्नये** ॥१७७॥ **वसिष्ठाय** ॥७८॥ **अरुंधत्यै** ॥१७९॥ **ऋग्वेदाय** ॥१८०॥ **यजुर्वेदाय** ॥१८१॥ **सामवेदाय** ॥१८२॥ **अथर्ववेदाय स्वाहा**

इसके बाद प्रधान आहुतियां देवे।

अनेन हवनेन श्रीद्वादशलिंगतोभद्र देवाताः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ १८ रेखात्मक चतुर्लिंगतोभद्रदेवता होमः

प्रत्येक नाम मंत्र से पहले ॐ अथवा व्याहृति व नाम के बाद "स्वाहा" का उच्चारण करते हुये हवन करे। अस्त्र का होम आचार्य कुण्ड में अन्य कुण्डों में घृत आहुति से होगा।

॥१॥ वीरभद्राय ॥२॥ शंभवे ॥३॥ अजैकपदे ॥४॥ अहिर्बुध्न्याय ॥५॥ पिनाकिने ॥६॥ शूलपाणये ॥७॥ भुवनाधीश्वराय ॥८॥ कपालिने ॥९॥ दिकपतये ॥१०॥ रुद्राय ॥११॥ शिवाय ॥१२॥ महेश्वराय।

॥१३॥ असितांग भैरवाय ॥१४॥ रुरु भैरवाय ॥१५॥ चण्डभैरवाय ॥१६॥ क्रोधभैरवाय ॥१७॥ उन्मत्त भैरवाय ॥१८॥ कपाल भैरवाय ॥१९॥ भीषण भैरवाय ॥२०॥ संहार भैरवाय ॥२१॥ भवाय ॥२२॥ शर्वाय ॥२३॥ रुद्राय ॥२४॥ पशुपतये ॥२५॥ महते ॥२६॥ भीमाय ॥२७॥ ईशानाय ॥२८॥ अनंताय ॥२९॥ तक्षकाय ॥३०॥ वासुकीये ॥३१॥ कुलिशाय ॥३२॥ कर्कोटकाय ॥३३॥ शंखपालाय ॥३४॥ कंबलाय ॥३५॥ अश्वतराय ॥३६॥ शूलिने ॥३७॥ चन्द्रमौलिने ॥३८॥ चन्द्रमसे ॥३९॥ वृषभध्वजाय ॥४०॥ त्रिलोचनाय ॥४१॥ शक्तिधराय ॥४२॥ महेश्वराय ॥४३॥ शूलधारिणे ॥४४॥ स्थाणवे ॥४५॥ ब्रह्मणे ॥४६॥ सोमाय ॥४७॥ ईशानाय ॥४८॥ इंद्राय ॥४९॥ अग्नियै ॥५०॥ यमाय ॥५१॥ निर्ऋतये ॥५२॥ वरुणाय ॥५३॥ वायवे ॥५४॥ अष्टवसुभ्यो ॥५५॥ एकादशरुद्रभ्यो ॥५६॥ द्वादशादित्येभ्यो ॥५७॥ अश्विभ्यां ॥५८॥ विश्वेभ्यो देवेभ्यो ॥५९॥ सप्तयक्षेभ्यो ॥६०॥ भूतनागेभ्यो ॥६१॥ गंधर्वाप्सरोभ्यो।

॥६२॥ स्कंदाय ॥६३॥ नंदीश्वराय ॥६४॥ शूलमहाकालाय ॥६५॥ दक्षादिसप्तकाय ॥६६॥ दुर्गायै ॥६७॥ विष्णवे ॥६८॥ स्वधायै ॥६९॥ मृत्युरोगाभ्यां ॥७०॥ गणपतये ॥७१॥ अद्भयो ॥७२॥ मरुद्भ्यो ॥७३॥ पृथिव्यै ॥७४॥ गंगादिनदीभ्यो ॥७५॥ सप्तसागरेभ्यो ॥७६॥ मेरवे ॥७७॥ सद्योजाताय ॥७८॥ वामदेवाय ॥७९॥ अघोराय ॥८०॥ तत्पुरुषाय ॥८१॥ ईशानाय ॥८२॥ परिधवे ॥८३॥ चतुःपुरीभ्यो ॥८४॥ ऋग्वेदाय ॥८५॥ यजुर्वेदाय ॥८६॥ सामवेदाय ॥८७॥ अथर्ववेदाय स्वाहा

॥८८॥ भवाय ॥८९॥ शर्वाय ॥९०॥ पशुपतये ॥९१॥ ईशानाय ॥९२॥ उग्राय ॥९३॥ रुद्राय ॥९४॥ भीमाय ॥९५॥ महते ॥९६॥ भवान्यै ॥९७॥ शर्वाण्यै ॥९८॥ पशुपत्यै ॥९९॥ ईशानाय ॥१००॥ उग्राय ॥१०१॥ रुद्राण्यै

॥१०२॥ भीमाय. ॥१०३॥ महत्यै. ॥१०४॥ पृथिवी तत्वाय. ॥१०५॥ जलतत्वाय ॥१०६॥ तेजस्तत्वाय ॥१०७॥ वायुतत्वाय ॥१०८॥ आकाशतत्वाय ॥१०९॥ गदायै ॥११०॥ त्रिशूलायै ॥१११॥ वज्राय ॥११२॥ शक्त्यै ॥११३॥ दण्डाय ॥११४॥ खड्गाय ॥११५॥ पाशाय ॥११६॥ अंकुशाय।

॥११७॥ गौतमाय ॥११८॥ भारद्वाजाय ॥११९॥ विश्वामित्राय ॥१२०॥ कश्यपाय ॥१२१॥ जमदग्नये ॥१२२॥ वशिष्ठाय ॥१२३॥ अत्रये ॥१२४॥ अरुन्धत्यै ॥१२५॥ ऐन्द्र्यै ॥१२६॥ कौमार्यै ॥१२७॥ ब्राह्म्यै ॥१२८॥ वाराह्यै ॥१२९॥ चामुण्डायै ॥१३०॥ वैष्णव्यै ॥१३१॥ माहेश्वर्यै ॥१३२॥ विनायिक्यै।

इसके बाद प्रधान की आहुतियां दिलायें।

अनेन हवनेन श्रीचतुर्लिंगतोभद्र देवाताः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ लिंगतोभद्र होमः

यद्यपि हमने इसका पूजन विधान नहीं दिया है परन्तु सर्वतोभद्र मंडल के देवताओं के अलावा कुछ विशेष अन्य आहुतियां होगी जो निम्न है-

॥१॥ असितांग भैरवाय ॥२॥ रुरु भैरवाय ॥३॥ चण्ड भैरवाय ॥४॥ क्रोधभैरवाय ॥५॥ उन्मत्त भैरवाय ॥६॥ काल भैरवाय ॥७॥ भीषण भैरवाय ॥८॥ संहार भैरवाय

अनेन हवनेन श्रीलिंगतोभद्र देवाताः प्रीयन्ताम् न मम।

अथ वास्तुमंडलदेवता होमः

प्रत्येक नाम मंत्र के बाद "**स्वाहा**" का उच्चारण करते हुये हवन करे।

कहीं कहीं **वास्तु होम** में चरु होम लिखा है। "**मयूख**" मत से **औदुम्बर समिध, चरु, तिल, द्रव्य, आज्य से या ३ द्रव्य से प्रत्येक देवता की ८ आहुतियां, चरकी आदि ८ देवताओं की ४। इसके बाद इंद्रादि लोकपालों व अन्य की २ आहुति प्रति द्रव्य होगी।**

॥१॥ ॐ शिखिने ॥२॥ ॐ पर्जन्याय ॥३॥ ॐ जयन्ताय ॥४॥ ॐ कुलिशायुधाय ॥५॥ ॐ सुर्याय ॥६॥ ॐ सत्याय ॥७॥ ॐ भृशाय ॥८॥ ॐ आकाशाय ॥९॥ ॐ वायवे ॥१०॥ ॐ पूष्णे ॥११॥ ॐ वितथाय ॥१२॥ ॐ गृहक्षताय ॥१३॥ ॐ यमाय ॥१४॥ ॐ गंधर्वाय

॥१५॥ ॐ भृङ्गराजाय ॥१६॥ ॐ मृगाय ॥१७॥ ॐ पितृभ्यः स्वधा॥१८॥ ॐ दौवारिकाय ॥१९॥ ॐ सुग्रीवाय ॥२०॥ ॐ पुष्पदंताय॥२१॥ ॐ वरुणाय ॥२२॥ ॐ असुराय ॥२३॥ ॐ शेषाय ॥२४॥ ॐ पापाय ॥२५॥ ॐ रोगाय ॥२६॥ ॐ अहये ॥२७॥ ॐ मुख्याय ॥२८॥ ॐ भल्लाटाय ॥२९॥ ॐ सोमाय ॥३०॥ ॐ सर्पाय ॥३१॥ ॐ अदितये ॥३२॥ ॐ दितये ॥३३॥ ॐ अद्भ्य ॥३४॥ ॐ आपवत्साय ॥३५॥ ॐ अयर्मणे ॥३६॥ ॐ सावित्राय ॥३७॥ ॐ सवित्रे ॥३८॥ ॐ विवस्वते ॥३९॥ ॐ विबुधाय ॥४०॥ ॐ जयंताय ॥४१॥ ॐ मित्राय ॥४२॥ ॐ राजयक्ष्मणे ॥४३॥ ॐ रुद्राय ॥४४॥ ॐ पृथ्वीधराय ॥४५॥ ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।

यहां वस्तु का अंग बन चुका है अतः वास्तु की ५ ऋचाओं से बिल्व होम व सभी कुण्डों में होगी ऐसा मयूष का मत है। परन्तु आजकल पूरे नाम मंत्रों के बाद वास्तु ऋचा से २-४ आहुतियां देते है बिल्व होम व अघोर होम नहीं करते है करना चाहिये। इस कारण आजकल के अनुसार वास्तु ऋचायें नामावलि के बाद दी है। पहले शिखिने आदि की ८-८ आहुतियां दी हो तो चरक्यादि की चार आहुतियां देवें। आचार्य देवे। आचार्य से पश्चिम कुण्ड तक द्रव्यों से एक आहुति, उत्तर कुण्ड में घी से होम करे।

॥४६॥ ॐ चरक्यै स्वाहा ॥४७॥ ॐ विदार्यै ॥४८॥ ॐ पूतनायै ॥४९॥ ॐ पापराक्षस्यै ॥५०॥ ॐ स्कंदाय ॥५१॥ ॐ अर्यम्णे ॥५२॥ ॐ जृंभकाय ॥५३॥ पिलिपिच्छाय स्वाहा

यदि पहले शिखिने आदि की ८-८ आहुतियां दी हो तो अब लोकपालों आदि कि २-२ आहुतियों देवे। आचार्य व पूर्वकुण्ड में आहुति सभी द्रव्य से तथा अन्य कुण्डों में घी से आहुति देवें।

॥५४॥ ॐ इंद्राय स्वाहा ॥५५॥ ॐ अग्नये ॥५६॥ ॐ यमाय ॥५७॥ ॐ नैर्ऋत्ये ॥५८॥ ॐ वरुणाय ॥५९॥ ॐ वायवे ॥६०॥ ॐ कुबेराय ॥६१॥ ॐ ईश्वराय ॥६२॥ ॐ ब्रह्मणे ॥६३॥ ॐ अनंताय

६४ पद के वास्तु मंडल देवताओं में यहीं तक हवन होता है। इसके बाद की आहुतियां ८१ कोष्ठक वास्तु में होंगी। संख्या विभाग से इन देवताओं की भी २ आहुतियां प्रत्येक की होगी।

॥६४॥ ॐ पूर्वे उग्रसेनाय स्वाहा॥६५॥ ॐ दक्षिणे डामराय स्वाहा॥६६॥ ॐ पश्चिमे महाकालाय स्वाहा॥६७॥ ॐ उत्तरे पिलिपिच्छाय

स्वाहा ॥६८ ॥ ॐ हेतूकाय स्वाहा ॥६९ ॥ ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा ॥७० ॥ ॐ अग्निवैतालाय स्वाहा ॥७१ ॥ ॐ असिवैतालाय स्वाहा ॥७२ ॥ ॐ कालाय स्वाहा ॥७३ ॥ ॐ करालाय स्वाहा ॥७४ ॥ ॐ एकपादाय स्वाहा ॥७५ ॥ ॐ भीमरूपाय स्वाहा ॥७६ ॥ ॐ खेचराय स्वाहा ॥७७ ॥ ॐ तुलवासिन्यै स्वाहा

आजकल के साम्प्रदायिकों के अनुसार **अब बिल्व होम व अघोर होम करें।** यह हवन सभी कुण्डों में होगा इसका विभाग नहीं है। "**मस्त्यपुराण**" व "**मयूख**" के अनुसार **अघोर होम एक कृर्तक है** अर्थात् **एक ही होता करे। अघोर मंत्र से होम केवल घी से करे। बिल्व होम ५ या २५ बार निम्न पांच ऋचाओं से करें।** "**कमलाकर**" का मत है कि यह होम सभी द्रव्यों (उदुम्बर, सामिद, तिल, आज्य) से करे।

कहीं कहीं यह वास्तोष्पते आदि ४ ऋचाओं से सभी द्रव्य सहित होम एवं "**वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणा**" इस मंत्र से ५ या २५ संख्या में बिल्वफल होम लिखा है। ऋचायें निम्न है-

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवानः ।
यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शंचतुष्पदे ॥१॥
वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो ।
अजरा सस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति तन्नो जुषस्व ॥२॥
वास्तोष्पते शग्मया स ठ सदाते सक्षीमहिरणवाया गातुमत्यो ।
याहिक्षेम उतयोगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥३॥
अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्य विशन्। सखा सुशेव एधि नः ॥४॥
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांऽसत्रं (सन्न) सौम्यानाम् ।
द्रप्सो भेत्ता पुरां शाश्वतनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥५॥

इसके बाद अघोर होम की १०८ आहुति केवल घी से देवें।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ॥ स्वाहा ॥

जल छोड़ें - **अनेन हवनेन श्री शिख्यादि वास्तु वास्त्वङ्गदेवता प्रीयन्ताम् न मम ॥**

अथ चतुष्षष्टीयोगिनी होम:

प्रत्येक नाम मंत्र से पहले ॐ या व्याहृति व नाम के बाद "स्वाहा" का उच्चारण करते हुये हवन करे।

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै स्वाहा इदं महाकाल्यै न मम ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै स्वाहा इदं महालक्ष्म्यै न मम ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै स्वाहा इदं महासरस्वत्यै न मम ॥

॥१॥ ॐ गजाननायै स्वाहा ॥२॥ सिंहमुख्यै ॥३॥ गृध्रास्यायै ॥४॥ काकतुण्डै ॥५॥ उष्ट्रग्रीवाय ॥६॥ हयग्रीवायै ॥७॥ वाराह्यै ॥८॥ शरभाननायै ॥९॥ उलूकिकायै ॥१०॥ शिवारावायै ॥११॥ मयूर्यै ॥१२॥ विकटाननायै ॥१३॥ अष्टवक्रायै ॥१४॥ कोटराक्ष्यै ॥१५॥ कुब्जायै ॥१६॥ विकटलोचनायै ॥१७॥ शुष्कोदर्यै ॥१८॥ लल्लज्जिह्वायै ॥१९॥ अश्वद्रष्ट्रायै ॥२०॥ वानराननायै ॥२१॥ रुक्षाक्ष्यै ॥२२॥ केकराक्ष्यै ॥२३॥ बृहत्तुण्डायै ॥२४॥ सुराप्रियायै ॥२५॥ कपालहस्तायै ॥२६॥ रक्ताक्ष्यै ॥२७॥ शुक्यै ॥२८॥ श्वेन्यै ॥२९॥ कपोतिकायै ॥३०॥ पाशहस्तायै ॥३१॥ दण्डहस्ताय ॥३२॥ प्रचण्डायै ॥३३॥ चण्डविक्रमाय ॥३४॥ शिशुघ्न्यै ॥३५॥ पापहन्त्र्यै ॥३६॥ काल्यै ॥३७॥ रुधिरपायन्यै ॥३८॥ वसाधयायै ॥३९॥ गर्भभक्षकायै ॥४०॥ शवहस्तायै ॥४१॥ आन्त्रमालिन्यै ॥४२॥ स्थूलकेश्यै ॥४३॥ वृहत्कुक्ष्यै ॥४४॥ सर्पास्यायै ॥४५॥ प्रेतवाहनायै ॥४६॥ दन्दशूककरायै ॥४७॥ क्रौञ्च्यै ॥४८॥ मृगशीर्षायै ॥४९॥ वृषाननायै ॥५०॥ व्यात्तास्यायै ॥५१॥ धूमनिश्वासायै ॥५२॥ व्योमचरणोर्ध्वदृशे ॥५३॥ तापिन्यै ॥५४॥ शोषणीदृष्ट्यै ॥५५॥ कोटर्यै ॥५६॥ स्थूलनासिकायै ॥५७॥ विद्युत्प्रभायै ॥५८॥ बलाकास्यायै ॥५९॥ मार्जार्यै ॥६०॥ कटपूतनायै ॥६१॥ अट्टाट्टहासायै ॥६२॥ कामाक्ष्यै ॥६३॥ मृगाक्ष्यै ॥६४॥ मृगलोचनायै।

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिदात्रि योगिन्यै स्वाहा।

जल छाड़ें - **अनेन हवनेन श्रीचतुषष्ठी योगिनी देवता प्रीयनताम् नमम।**

अथ एकपंचाशत् क्षेत्रपाल होम:

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं स्वाहा। इदं

बटुकाय न मम।

१. ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय स्वाहा। इदं क्षेत्रपालाय न मम।

प्रत्येक नाम मंत्र से पहले ॐ अथवा व्याहृति व नाम के बाद "**स्वाहा**" का उच्चारण करते हुये हवन करे।

(२) अजराय (३) व्यापकाय (४) इंद्रचौराय (५) इंद्रमूर्तये (६) उक्षाय (७) कुष्माण्डाय (८) वरुणाय (९) बटुकाय (१०) विमुक्ताय (११) लिप्तकाय (१२) लीलाकाय (१३) एकद्रंष्ट्राय (१४) ऐरावताय (१५) ओषधिघ्नाय (१६) बंधनाय (१७) दिव्यकायाय (१८) कंबलाय (१९) भीषणाय (२०) गवयाय (२१) घण्टाय (२२) व्यालाय (२३) अणवे (२४) चन्द्रवारुणाय (२५) पटाटोपाय (२६) जटालाय (२७) क्रतवे (२८) घंटेश्वराय (२९) विटङ्काय (३०) मणिमानाय (३१) गणबन्धवे (३१) डामराय (३३) ढुण्डिकार्णाय (३४) स्थविराय (३५) दन्तुराय (३६) धनदाय (३७) नागकर्णाय (३८) महाबलाय (३९) फेतकराय (४०) चीत्काराय (४१) सिंहाय (४२) मृगाय (४३) यक्षाय (४४) मेघवाहनाय (४५) तीक्ष्णोष्ठाय (४६) अनलाय (४७) शुक्लतुण्डाय (४८) सुधापालाय (४९) बर्बरकाय (५०) पवनाय (५१) पावनाय स्वाहा

जल छाड़ें – **अनेन् हवनेन् श्रीपंचाशत क्षेत्रपाल देवता प्रीयनताम् नमम।**

अथ यंत्रादिदेवता होमः

विष्णु, गणेश, भैरव, काली, तारा, बगला, दुर्गा, श्रीललिता त्रिपुरसुन्दरी, मृत्युञ्जय, गायत्री किसी का भी यंत्र बनाया हो, स्थापित किया हो, तो आवरण देवताओं का हवन करना चाहिये। अस्त्रों व आयुध होम में केवल घी से आहुति देवे। क्यों कि निबंधकारों ने इसे आचार्य कृतक माना है, होता कृर्तृक नहीं अर्थात् होता होम नहीं करेंगें, तो समिद्, तिल की आहुति नहीं होगी। वैसे सभी आवरण देवताओं की ८-८ आहुति का विधान है। यह मत भी है कि यह आयुध हवन केवल आचार्य कुण्ड में ही करें अर्थात् सभी द्रव्यों के साथ। अन्य पक्ष का मत है कि पंचकुण्डी यज्ञ में पूर्वादि चारों कुण्डों में दो-दो आहुति तथा नवकुण्डी यज्ञ में आचार्यकुण्ड को छोड़कर बाकी आठ कुण्ड में एक एक आहुति देवें।

अतः यथा गुरु परंपरा व लोकाचारानुसार करें।

विशेषहोमः

गुग्गलुहोमः:- गुग्गुल व जायफल से विघ्न निवारण व मृत्युंजय मंत्र से गुग्गल आहुति लिखी है, परन्तु मृयुञ्जय को जायफल प्रिय है। अतः जायफल से मृत्युंजय की आहुति देवें। कहीं कहीं पिशाच बाधा निवारण हेतु देते हैं।

ॐ अद्यपूर्वोच्च - तिथि-मम गृहे भूतप्रेत पिशाच दोष परिहार्थ- ॐ जातवेदसे मंत्रेण गुग्गलु होम करिष्ये।

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातियतो निदहातिवेदः ।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधु दुरितात्यग्निः ॥

जातिफलेनहोमः **:-ॐ अद्यपूर्वोच्च - तिथौ मम सकुम्बस्य सपरिवारकस्य आयुरारोग्यादि वृद्ध्यर्थे श्रीमृत्युंजय देवता प्रीत्यर्थे हवने विनियोग।**

ॐ यंबकं यजामहे - मंत्रेण हवनं कृत्वा। (जायफल)

सर्षपहोमः **- अद्यपूर्वोच्च - तिथौ मम गृहे सर्वारिष्ट ५.रेहार्थ सर्व शत्रुक्षयार्थे सर्षप होममहं करिष्ये।**

ॐ सजोषाऽइंद्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिव वृत्रहा शूर विद्वान् ।
जहि शत्रूँ ३ऽरपमृधो नुद स्वाथाभयङ्कृणुहि विश्वतोनः स्वाहा॥

मरीचिहोमः **- अद्यपूर्वोच्च - तिथौ मम शत्रु क्षयार्थे मरीचि होम महं करिष्ये।**

ॐ सर्वाबाधा प्रशमनं.......इति मंत्रेण।

रोग निवारण हेतु 'रोगान शेषान्' मंत्र से सर्षप होम करे

लक्ष्मीहोमः:- लक्ष्मी हवन के लिये क्षीर, दूर्वा, दाडिम, सीताफल, मधु, शर्करा शमीपत्र, बिल्वपत्र, तंदुल, कदलीफल, आज्य सहति यथा उपलब्ध द्रव्यों के मिश्रण से हवन करे। श्रीसूक्त से हवन करें। (पृष्ठ संख्या ५०१)

अगर दूर्वांकुर अधिक मात्रा में सुखाकर रखी हो तो समिद् के रूप में काम आ सकती है। दुर्वांकुर अधिक ठीक है, दुर्वा होम से आयुवृद्धि होती है।

अतः दुर्वा समिद्, क्षीर, आज्य से ३ होता हवन करें घी से हवन करे।

व्याहृतिहोम **- यजमानः हस्ते जलमादाय। अद्यपूर्वोच्च-तिथौ अस्मिन् याख्ये कर्मणि देशतः कालस्तन्त्रतो मंत्रवाज्ञानतोऽज्ञानतोवा अयथाकरण-न्यूनकरण चतुर्विध कर्मातिरिक्तकरण भेषजात प्रत्यवाय परिहार द्वारा**

कर्मसाद्गुण्य सिद्ध्ये तथा प्रधान देवताश्चमध्ये गमने होम स्वाहा-कारयो पूर्वापराभावे अग्नि मध्ये हविर्गत कीटाद्युपघाते समिच्चरु तिलाज्य मध्ये कृमि कीटकादि संयोगे केशादिभिर्हव होमे पठन समये स्वरवर्णादि विस्मृतौ ज्ञाताज्ञात दोष परिहारार्थं घृताक्ततिल द्रव्येण व्यस्त समस्त व्याहृत्या अष्टोत्तरशतैरष्टाविंशतिराहुतिभिर्वा होम चाहं करिष्ये।

पुनर्जलमादाय - भूर्भुवः स्वरिति तिसृणां महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिनुष्टप्छन्दासि अग्नि वायु सूर्या देवताः सर्वासां वा प्रजापतिर्देवता प्रायश्चित्त होम विनियोगः।

(१) ॐ भूः स्वाहा (२) ॐ भुवः स्वाहा (३) ॐ स्वः स्वाहा (४) ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। (एवं सप्तवारं होमे अष्टाविंशत्या हुतयो भवन्ति)

उत्तर पूजनम्

हवन समय जो देवता यज्ञ में आये हैं उनकी अग्नि मे समप्ति हुई है अतः पूर्णाहुति पहले उनका पूजन होना जरुरी है। अतः मंडलो पर उत्तर पूजन करें। क्यों कि अगर पूर्णाहुति बाद उत्तर पूजन करते है तो पुनः मंडल देवताओं के बलिदान एवं दिक्पालबलि कर्म एकतंत्रेण हो सके यह युक्तिसंगत प्रतीत नहीं होता है परन्तु अधिकांश सर्वसाधारण में अग्नि का उत्तरपूजन व दिक्पालबलि भैरवबलि करके पूर्णाहुति करते है तथा मंडलों के देवताओं की उत्तरपूजा बाद में एकतंत्रेण करते है।

संकल्प :- हवनाख्य कर्मण साङ्गतासिद्ध्यर्थ स्थपित देवानां मृडाग्ने श्चोत्तर पूजनं करिष्ये।

ततो मंडल देवतानां पंचोपचारेन पूजनं कृत्वा।

गणपतिपूजनम् - ॐ गणानांत्वा... मंत्रेण।

मातृकापूजनम् -

ॐ समक्ख्ये देव्याधियासन्दक्षिणयोरुचक्षसा ।
मामऽआयुः प्रमोषीर्म्मोऽअहन्तववीरं विदयेतव देविसन्दृशि॥

वसोर्धारा- वसोः पवित्रमसि... मंत्रेण।

ग्रहमंडलदेवतापूजनम् - ॐ ग्रहाऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्रायमतिम्। तेषां विशिप्प्रियाणां वोहमिष मूर्ज्जः समग्रभमुपयाम गृहीतो सीन्द्राय

यत्त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याद्यावाहित ग्रह मण्डल देवताभ्यो नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुपुरुष सांगपरिवार देवताभ्यो नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वेभ्यो क्षेत्रपालेभ्यो नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः चतुषष्टि योगिन्यै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलशस्थ देवेभ्यो नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रधानमण्डल देवतायै सपरिवाराय नमः।

अग्निपूजनम् :-

ॐ अग्नेनय सुपथारायेऽअस्मान्विश्वानि देववयुनानि विद्वान् । युयोद्ध्यस्म जुहुराणामेनोभूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम॥

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा युताय मृडाग्नये नमः। सर्वोपचारार्थे गंधादिभिः संपूज्य।

स्विष्टकृतद्धोमं :- (ब्रह्मणा अन्वारब्धः)

ॐ यदस्य कर्मणो ऽत्यरीरिचं यद्वान्युनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे। ॐ अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्व प्रायश्चित्ताहुतिनां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान् समर्द्धय

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। उदकोपस्पर्शः॥

अथ नवाहुति होमः :- (ब्रह्मणा अन्वारब्धः)

(१) ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम (२) ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम (३) ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय न मम। (४) (वैदिक मंत्र पृष्ठ संख्या ३०१ पर है) ॐ त्वन्नो अग्ने ॐ अग्निवरुणाभ्यां स्वाहा। इदं अग्निवरुणाभ्यां न मम (५) ॐ सत्वन्नो ॐ अग्निवरुणाभ्यां स्वाहा। इदं अग्निवरुणाभ्यां न मम (६) ॐ अयाश्चाग्ने ॐ अग्नयेऽयसे स्वाहा। इदं अग्निभेषजाय न मम (७) ॐ ये ते शतं वरुण ॐ वरुणादिभ्य स्वाहा। इदं वरुणाय, सवित्रे, विष्णवे, विश्वेभ्यो, मरुद्भ्यः स्वर्केभ्य(८) ॐ उदुत्तमं वरुण ॐ वरुणादितिभ्यः स्वाहा। इदं वरुणायादित्यादितये इदं न मम। (९) (मनसा) - ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

बलिदान प्रयोग

विनियोगः :- (हस्ते जलमादाय) अस्मिन् हवनाख्यकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थ दिक्पाल देवतानां, स्थापितदेवतानां पूजनं पूर्वकं बलिदानं करिष्ये।

(१) यज्ञ वेदी के पास दशों दिशाओं में, पात्र में या दीपक में या ताम्बूलपत्रादि पर दधिमाष, चावल, पुष्प, बलि रखें। सिन्दूर से चर्चित करें, वर्ति रखें प्रज्वलित करें। इसी तरह सब मंडलों के आगे बलि रखें।

ब्रह्मादि देवताओं के लिये प्रतिष्ठाभास्कर व रुद्रकल्पद्रुम, प्रतिष्ठामयूख में पायस बलि का विधान लिखा है। परन्तु आजकल बलि की उपेक्षा कर देते है।

(२) *दिक्पालदेवता बलिदान* :- सभी देवताओं के नाम मंत्र या वैदिक मंत्रों से पूजन करें। **अमुक अमुक देवताया बलिद्रव्याय नमः।**

पूर्वादि क्रमेण कुण्ड की दशों दिशाओं में हाथ में जल ले लेवें और **अनामिका व अंगुष्ठ के संयोग से जल छोड़ें।** (प्रत्येक बलि पर)

पूर्वे - ॐ **इंद्राय सांगायै सपरिवाराय सवाहनाय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपमाष भक्त बलिं समर्पयामि।** (हाथ में गंधाक्षत पुष्प लेकर) **भो इंद्र स अनुचरेभ्यो नमः। दिशं रक्ष बलिं भक्षय मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता, क्षेमकर्ता, शांतिकर्ता, पुष्टिकर्ता, तुष्टिकर्ता, निर्विघ्नकर्ता वरदो भव।** (इस विधी से सर्वत्र करें)

आग्नेयां - अग्नि सांगं. सप. सवा. नमः। भो अग्ने अग्नेरनुचरेभ्यो दिशं रक्ष...॥

दक्षिणस्यां - यमाय नमः, यमाचनुरेभ्यो नमः। भो यम दिशं रक्ष...।

नैऋत्यां - नैर्ऋतये नमः, नैऋतेरनुचरेभ्यो नमः। भो नैऋते दिशं रक्ष..।

पश्चिमायां - वरुणाय नमः, वरुणस्यानुचरेभ्यो नमः। भो वरुण दिशं रक्ष...।

वायव्यां - वायवे नमः, वायोनुचरेभ्यो नमः। भो वायो दिशं रक्ष...।

उत्तरस्यां - कुबेराय नमः, कुबेरानुचरेभ्यो नमः। भो कुबेर दिशं रक्ष...।

ऐशान्यामीश्वराय नमः, ईश्वरानुचरेभ्यो नमः। भो ईश्वर दिशं रक्ष...।

पूर्व ईशानमध्ये - ब्रह्मणे नमः, ब्रह्मोनुचरेभ्यो नमः। भो ब्रह्म दिशं

रक्ष...।

पश्चिम निर्ऋति मध्ये - विष्णवे नमः, विष्णोनुचरेभ्यो नमः। भो विष्णो दिशं रक्ष...।

गणेश बलिं - गणपतिं सांग सप. नमः। भो गणपते दिशं रक्ष...।

मातृका बलिं - वसोर्द्धारा सहित सगणेश गौर्याद्यावाहित मातृभ्यः साङ्गा. सप. सश. नमः। एतेभ्यो सर्वेभ्यो मातृभ्यो इमं बलिं गृहित मम सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरु आयुकर्ता तुष्टि...।

ग्रहबलिं - भो भो आदित्याद्यावाहित देवताः इमं बलि गृहित मम सकुटुम्बस्या.....॥

ग्रह बलिम् - सूर्याय गुडौदनम्। सोमायघृतपायसम्। कुजाय मसून्नम्। बुधाय क्षीरौदनम्। बृहस्पतये दध्योदनम् शुक्राय घृतौदनम्। शनैश्चराय तिला पिष्टं कृच्छान्ना वा। राहवे पायसम। केतवे चित्रौदनम्। अन्येभ्य पायस बलीन्दद्यात्।

वास्तु बलिं - भो वास्तुपुरुषाद्यावाहित देवताः इमं बलिं गृहीत मम सकुटुम्बस्य सप. आयुकर्ता पुष्टि....।

योगिनी बलिं - भो चतुषष्टियोगिन्यै नमः इमं बलिं गृह्रीत मम सकुटुम्बस्य सप. आयुकर्ता पुष्टि....।

क्षेत्रपाल बलिं - हस्तेजलमादाय-यद्याख्य हवन कर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालाय पूजन पूर्वकं बलिदानं करिष्ये।

एक बड़े मृतिका पात्र को लेकर प्रोक्षण करें उसमें सिन्दूर से **त्रिकोण षट्कोण बनायें बलिद्रव्य रखें।** चौमुखा बनायें दीप प्रजवलित करें। सुपारी रखें उस पर क्षेत्रपाल का आवाहन करें पूजन करें बलि द्रव्य संस्थाप्य करें।

प्रार्थना - **ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वां भूतप्रेतगणाधिप। पूजां बलिं गृहाणेमं सौम्यो भवतु सर्वदा॥ आयुरारोग्यम्मे देहि निर्विघ्नं कुरु सर्वदा। मां विघ्नं माऽस्तु मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः॥ सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूतप्रेताः सुखावहाः॥**

यं यं यं यक्षरूपं दशशिव वदनं भूमिकम्पायमानं। सं सं सं संहार मूर्ति शिर मुकुट जटा शेखरं चन्द्रबिम्बम्॥ दं दं दं दीर्घकेशं विकृत

नखमुखं चोर्ध्वरेखाकपालं। पं पं पं पापनाशो प्रणतपशुपतिं भैरवं क्षेत्रपालं॥ ॐ नमः क्षेत्रपाल चित्र तुरङ्गवाहन सर्वभूत प्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी बेतालादि परिवृत दध्योदन प्रिय सकल शक्तिसहित इमां पूजां गृहाण।

कौलीरे चित्रकूटे हिमगिरिशिखरे कान्त जालन्धरे वा। सौराष्ट्रे सिन्धुदेशे मगधपुरवरे कौसले वा कलिंगे। कर्णाटेकौंकणे वा भृगुषु पुरवरे कान्यकुब्जे स्थिता वा। ते सर्वे यज्ञ रक्षां करण कृतिधियः पान्तु वः क्षेत्रपालाः।

ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ।

पुनः प्रार्थना करे - ॐ क्षेत्रपालाय शाकिनी डाकिनी भूतप्रेत बैताल पिशाच सहिताय इमं बलिं समर्पयामि।

भोः क्षेत्रपाल दिशं रक्ष बलिं भक्षय मम यजमानस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदोभव॥

अब पात्र को उठाकर यजमान की ओर ७ बार आवृत्त कर बिना पीछे मुड़े बाहर पात्र को चौराहे पर रखावें और उसके पीछे एक ब्राह्मण द्वार तक जल के छींटें देवें शांति पाठ करें। पात्र रखकर आनेवाला हाथ पैर धौकर आवे।

रुद्रकलश व ब्रह्मा बलिं - इनके पायस बलि प्रदान करे।

भो रुद्रकलश देवेभ्यो दिशं रक्षं बलिं भक्षय मम सकुटुम्बस्य आयुकर्ता तुष्टिकर्ता पुष्टिकर्ता वरदा भव॥

भो ब्रह्मादि देवेभ्यो दिशं रक्ष बलिं भक्षय मम सकुटुम्बस्य आयुकर्ता तुष्टिकता पुष्टिकर्ता वरदा भव॥॥

प्रधान बलिं - रुद्र विष्णु दुर्गादि मंडलों पर पायस बलि देवें। **दुर्गा होमविशेष में कुष्माण्ड बलि देवे।**

शत्रु की माषपिष्ठी से आकृति बनायें। गेहूं या मेदे के आटे से पशु आकृति तेल में पकाकर बनायें व उसको लाल रंग की शक्कर की चासनी में डुबोकर तैयार करें। या कुष्माण्ड पर सिन्दूर से मुख आदि आकृति बनायें। पात्र में ढककर लायें। वस्त्र हटा लें, स्मरण रहे देवी के सामने रखते समय बलि से पहले अंग भंग नहीं होना चाहिये अन्यथा अनिष्ट हो जायेगा।

पूर्णाहुतिहोमः

पूर्णाहुति में मृडनाम की अग्नि का पूजन होता है पहले नहीं किया हो तो इस समय करें। **ॐ मृडानाम्ने वैश्वानराय नमः ॥ इति मंत्रेण ॥** पूर्णाहुति से पहले स्रुव, स्रुक को तपाये, कुशाओं से मार्जन करें। प्रणीता के जल से प्रोक्षण करें पुनः तपायें।

विनियोगः **:- अद्य पूर्वोच्चारित तिथौ कृतस्य इदं यज्ञ हवनाख्यस्य संपूर्णता सिद्धयर्थं वसोर्द्धारा समन्वित पूर्णाहुति होमं चाहं करिष्ये।**

अब स्रुक में स्रुव से चार बार घी भरें उस पर नारिकेल में छेद करके रखें उसमें घी भरें तथा लाल वस्त्र लपेटें, मोलि बांधें, सुपारी रखें एवं स्रुव को उल्टा रखें। स्रुक को बायें हाथ में व स्रुव को दाहिने हाथ में पकड़ें। **उनमें मरुद्गणों** का पूजन करें। **ॐ एकोनपंचाशन्मरुद्गणेभ्यो नमः।** गंध, अक्षत, पुष्प माला आदि से पूजन करें। कहीं कही स्रुक् में घी भरकर उसमें सुपारी रखकर वस्त्र मोली से वेष्ठितकर उस पर नारिकेल रखते है। तिलादि द्रव्य रखें। अवशेष को अन्य होताओं को देवें।

पूर्णाहुति व वसोर्द्धारा के कहीं कहीं १५-१६ व १२-१३ मंत्र में है परन्तु सामान्य क्रम निम्न मंत्रों से पूर्णाहुति करें।

विनियोग **:- ॐ मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भारतद्वाज ऋषि वैश्वानरोदेवता त्रिष्टुपछंदः पूर्णाहुति होमे विनियोगः।**

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् ।
कवि ठ साम्राज्यमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१॥

ॐ समुद्द्रा दूर्म्मिर्म्मधुमाँ २ ऽउदारदुपा ठ शुनासममृतत्त्वमानट् ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वादेवाना ममृतस्य नाभिः ॥२॥

वयन्नाम प्रब्रवामा घृतस्यास्मिन् यज्ञे धारयामानमोभिः ।
उपब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोवमीद्गौर एतत् ॥३॥

एता अर्षन्ति हृद्ययात् समुद्राच्छत वज्रा रिपुणानावचक्षे ।
घृतस्य धाराअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसोमध्य आसाम् ॥४॥

ॐ चित्तिं जुहोमि मनसा घृतेन यथ्रा देवा इहागमन्वीति
होत्रा ऋता वृधः । पत्ये विश्वस्य भूमनो जुहोमि

विश्कर्मणे विश्वाहा दाभ्य ठ हविः ॥५॥

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नैव विक्रीणावहा । इषमूर्ज ठ शतक्रतो। पुनस्त्वादित्याः रुद्राः वसवः समिन्धताम् ॥६॥ पुनर्ब्रह्मणो वसुनीथयज्ञैः । घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः सर्व वै पूर्ण ठ स्वाहा ॥७॥

(श्रीफल को यजमान के सम्मुख करते हुये होम देवें)

वसोर्द्धाराहोम :- औदुम्बर की बनी वसोर्द्धारा पर स्त्रुक काअग्रभाग रखें, आज्यपात्र से स्त्रुचि में घी ड़ालते हुये वसोर्द्धारा देवें। (**अग्न्युपस्थान के कुछ श्लोक भी वसोर्द्धारा होम के समय बोलते है। श्लोक अगले पृष्ठ पर दिये गये है।**)

ॐ सप्तते अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऋषयः सप्तधामप्प्रियाणि सप्तहोताः सप्तधात्वा यजन्ति सप्तयोनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा ॥१॥

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिमाँश्च। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्य ठ हाः ॥२॥

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥३॥

स्त्रुक शेषं पश्चात् रुद्रकलशे त्यजेत्। इममिन्द्राय न मम। आज्य स्थली में जल डाल देवें। अग्नि की प्रदक्षिणा करें। एवं अपने स्थान पश्चिम दिशा में खडें होकर प्रार्थना करें।

त्राहिमां पुण्डरीकाक्ष न जाने परमं पदम्। कालष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासु चाच्युत ॥१॥ अकाल कलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितम्। कामये विष्णुपादौ तु सर्व जन्मसु केवलम् ॥२॥

स्त्रुवेण भस्मानीय दक्षिणकरानाकमकया गृहीत भस्मना त्र्यायुषं कुर्यात्। त्र्यायुषंजमदग्नेः इति ललाटे ॥

ॐ कश्यपस्यत्र्यायुषमिति ग्रीवायाम् ।**।यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिण** बाहुमूले **एवं वाम बाहूमूले ॥ ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषमिति**-हृदये ॥

यज्ञरुपुरुष की आरती करें। पुष्पांजलि देवें॥ (या अग्नि उपस्थान के बाद आरती करें)

ततः अग्न्युपस्थानम्

(हाथ जोड़कर अग्नि का ध्यान करें)

ॐ इंद्रं दैवीर्विशो मरुतोनुवत्मानोऽभवन् यथेन्द्रंदैवीर्विशो मरुतोनुवर्त्मानोऽभवन। एवमिमं यजमानं दैवीश्चव्विशोमानुषी श्चानुवर्त्मानो भवन्तु ॥१॥ सिंधोरिवप्राद् ध्वने सूघनासो व्वात प्रमियः पतयंतियह्वाः। घृतस्यधारा अरुषोनव्वाजी काष्ठार्भिदन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥२॥ ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवोमर्त्यां २ आविवेश ॥३॥ धामंते विश्वं भुवन मधिश्रितमंतः समुद्रेहृद्यंतरायुषि। अपामनीके समिथेयऽआभृतस्तमस्याम मधुमंतंतऽऊर्मिम् ॥४॥ चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च। हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः ॥५॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि मन्त्र कर्म क्रिया विधिः।
संपूर्ण कुरु यज्ञेश गार्हपत्य नमोस्तु ते ॥१॥
स्वस्ति श्रद्धां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम्।
आयुष्य चैवमारोग्यं देहि मे वांछित फलम् ॥२॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रिया दिषु।
न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो वंदे तमच्युतम् ॥३॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृतस्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥४॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥५॥
ॐ यज्ञ पुरुषाय नमः॥

ततो होमसंकल्प :- ॐ तत्सदद्य तिथौ अमुक गोत्रेणामुकशर्मणा मया आधारादि पूर्णाहुति पर्यंत यद्यद्द्रव्यं यावद्यावत्संख्या केन येन येन मंत्रेण यया यया कामनाया यस्यै यस्यैदेवतायै हुतं सा सा देवता प्रीयन्ताम्॥ ते देवाः शांतिदाः पुष्टिदास्तुष्टि दा वरदा भवंतु ॥

ततः संस्त्रवप्राशनं आचमनम् ॥

(प्रोक्षणी में हवन करते समय घी छोड़ा गया था उसको भक्षण करें, आचमन करें या सूँघें एवं प्रोक्षणी पात्र को ईशान दिशा में उल्टा रख दें)

ब्रह्मणोपूर्णपात्र दानम् **:- (प्रणीतोदकेन संकल्प) कृतस्य हवनाख्य कर्मणः - न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थ साङ्गता सिद्ध्यर्थं ब्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥**

यजमानो वदेत् :- प्रतिगृह्यताम् ॥ बह्मा - प्रतिगृह्णामि - ॐ द्यौस्त्वाददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्णातु ॥

इसी तरह से तिल, घृत, शर्करा, तुण्डुलादि से पूर्णपात्र सदक्षिणा ब्राह्मणों को देवें। **ततो ब्रह्मग्रंथि विमोकः ॥ अग्नि पश्चात् प्रणीता विमोकः - ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ ॐ सुमित्रिया न आपः ओषधयः सन्तु** इन मंत्रों से पवित्रयों के द्वारा प्रणीता के जल से यजमान के सिर पर जल छिड़कें - **ॐ दुर्म्मित्रियास्तस्मै संतु योस्मान् द्वेष्ट्यिं च वयं द्विष्मः ॥** (इस मंत्र से प्रणीता को ईशान में औंधा करके पवित्रे को अग्नि में डाल देवे। उसके बाद चारों ओर बिछी हुई दर्भा को उसी क्रम में उठाकर घी में भीगोकर होम देवें) **मंत्र -**

ॐ देवागातु विदोगातुंवित्वागातुमित। मनसस्पत इमं देव यज्ञ ठ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥

यजमानोभिषेक च श्रेयदानम्

अग्नि को ३ बार अर्घ देकर उसी जल से अपने नेत्रों को स्पर्श करें।

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नमः ओषधीभ्यः। नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ॥

भूयसी दक्षिणा ब्राह्मणों को देवें। क्योंकि पहले पुण्याहवाचन हो चुका है अतः **यजमान पत्नि को वाम भाग में बिठाकर वैदिक या पौराणीक मंत्रो से शिरों पर अभिषेक रुद्रकलश के जल से करें। पावमानसूक्त, शांतिसूक्त पढ़ें।**

(शिरसि) ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तान उर्ज्जेदधातन महेरणाय चक्षसे ॥१॥ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः। उशीतीरिव मातरः ॥२॥ (भूमौ) तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। (शिरसि) आपोजन यथाचनः ॥३॥ देवस्यात्वा सवितुः प्रसेवश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो

हस्ताभ्यां। सरस्वत्यै वाचौ यन्तुर्यन्त्रि येदधामि बृहस्पतेष्ट्वासाम्राजयेना-भिषिञ्चामि ॥४॥ पुनंतु मा देवजनाः पुनंतुमन साधियः। पुनंतुव्विश्वा-भूतानिजातवेदः पुनीहिमा ॥५॥ द्यौ शांतिरिक्ष ठं....॥६॥ श्रीर्वर्चस्वमायुष्य मारोग्यमाविधात्पवमानं महिते। धनं धान्यं पशुं पुत्रलाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः ॥७॥

अथाऽयुष्यमन्त्राः

आशीर्वाद, कंकण बंधन, रक्षाबंधन, ग्रंथिबंधन आदि निम्न मंत्रों के प्रयोग से करें।

ॐ आयुष्यं वर्चस्य ठं रायस्पोष मौदिद्भदम्।
इदं ठं हिरण्यं वर्चस्वजैत्राया विशतादुमाम ॥१॥

नतदद्रक्षा ठं सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ठं ह्येतत्।
यो विभर्ति दाक्षायण ठं हिरण्य ठं सदेवेषु कृणुते दीर्घमायु ॥२॥

यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ठं शतानीकाय सुमनस्यमानाः।
तन्म आबध्नामि शतशारदाया युष्मान जरदष्टिर्यथासम् ॥३॥

दीर्घायुस्त ऽ ओषधे खनितायस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥४॥

द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत। नेष्ट्रा दृतुभिरिष्यत ॥५॥

द्रविणोदा द्रविण सस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत्।
द्रविणो दावीर वतीमिषंनो द्रविणो दारासते दीर्घमायुः ॥६॥

नवो नवो भवति जायमानो ह्ना केतुरुष सामेत्यग्रम्।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायु ॥७॥

उच्चादिवि दक्षिणावन्तो ऽ अस्थुर्ये ऽअश्वदाः सहते सूर्येण।
हिरण्यदाऽ अमृतत्वं भजंते वासोदाः सोमप्रतिरंत आयुः ॥८॥

पौराणिक अभिषेकमन्त्राः

(सर्वेषु शांतिकार्येषु राज्याभिषेकेषु, दीक्षायां)

शक्राद्या देवताः सर्वा ब्रह्मविष्णु महेश्वराः।
सुरास्त्वामभिषिंचंतु प्रयच्छंतु धनानि च ॥१॥

नारायणो जगन्नाथ स्तथा संकर्षणो विभुः ।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च ऋद्धिं यच्छंतु ते सदा ॥२॥
इन्द्रो वह्निर्यमश्चैव नैऋतो वरुणास्तथा ।
वायुः कुबेरो रुद्रश्च दिक्पालाः पांतु व सदा ॥३॥
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधो जीवः सितोर्कजः ।
ग्रहास्त्वामभिषिंचंतु राहुः केतुस्तथैव च ॥४॥
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवामरुद्गणाः ।
लोकपालाः प्रयच्छंतु मंगलानि प्रियं यशः ॥५॥
नारदाद्या ऋषिगणाः ये चान्ये च तपोधनाः ।
भवंतु यजमानस्य आशीर्वाद परायणाः ॥६॥
गायत्री चैव सावित्री शची लक्ष्मीः सरस्वती ।
मृडानी मातरः सर्वा भवंतु वरदास्तव ॥७॥
कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धाक्रियामतिः ।
बुद्धिर्लज्जावपुः शांतिस्तुष्टिः क्षांतिस्त्रयोदशा ॥८॥
एतास्त्वामभिषिंचंतु देवपत्न्यः समावृताः ।
देवदानवगंधर्वा यक्ष राक्षसपन्नगाः ॥९॥
ऋषयो मानवा गावो देवमातर एव च ।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसांगणाः ॥१०॥
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ।
औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ॥११॥
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदानदाः ।
एते त्वामभिषिंचंतु सर्वकार्यार्थ सिद्धये ॥१२॥

श्रेयोदानम् :- (आशिका देना) ब्राह्मण अक्षत लेकर यजमान पर घुमाकर ईशान कोण में फेंकें। यजमान पूर्वमुख आचार्य उत्तर मुख बैठे।

मंत्रार्थाः सफलासन्तु पूर्णाः सन्तुमनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्रणामुदयोऽस्तु नः ॥१॥

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यर्वणः ।
ब्रह्मवक्त्रे सदा नित्यं निघ्नंतु तव शात्रवान ॥२॥

(यजमान पर घुमाकर ईशान में फेंकें)

इसके बाद यजमान दोनों हाथों की अंगुलियों को पंजीकृत कर ब्राह्मणों के हाथों से पुष्पाक्षत ग्रहण करें। निम्न मंत्र पढ़ें –

पुष्पाक्षत् हृदय व मस्तक के लगायें पीछें फेंक दें।

अक्षतान् विप्र हस्तात्तु नित्यं गृह्णन्ति ये नराः ।
चत्वारि तेषां वर्धंते आयुः कीर्तियशोबलम् ॥१॥

श्रेयदानः :– आचार्य सब ब्रह्मणों को वरण में सुपारियां इकट्ठी करें जल अक्षत पुष्प लेवें कहें।

भवन्नियोगेने अस्मिन् यज्ञाख्ये कर्मणि यत्कृतम् मंत्र जाप, दुर्गापाठ, वेदपाठ, यज्ञकर्मणि पाठ आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं ब्रह्मत्वं गाणपत्यं सादस्यं च यः कृतो होमस्मात् ब्रह्मत्वात् गाणपत्यात् मंत्रजाप दुर्गापाठ वेदपाठ सादस्यात् होमात् यदुत्पन्नं श्रेयं फलम् तत्तुभ्यमहं सम्प्रददे। तेन श्रेयसा त्वं श्रेयस्वीभव॥

यजमान कहें–(प्रतिगृह्य) भवामि।

दक्षिणादानम् – हस्ते जलमादाय – **अद्यपूर्वोच्च तिथौ मया आचरितस्य यज्ञाख्य कर्मणः साङ्गता सिद्धये आचार्यादिवृतेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः पूजन पूर्वकं दक्षिणा प्रदानं करिष्ये।** आचार्यादि के पाद्य अर्घादि प्रदान देवे। **ब्रह्मणों के चरण प्रक्षालन समय में पत्नी वाम भाग में रहें।**

देवविर्सजनम् – यजमान ब्रह्मणों की वंदना कर अग्नि तथा ग्रहों व देवों की प्रदक्षिणा करके वेदी समीप जाकर श्रीफलादि भेंट करें। पुष्प हाथ में लेकर कर कहें–

ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहांतरिक्ष गच्छ स्वाहा देव ठं सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रा वरुणौ गच्छ स्वाहा ऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छंदा ठं सिगच्छ स्वाहा। द्यावा पृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा। दिव्यं नभोगच्छ स्वाहा ऽग्निं वैश्वानरंगच्छ स्वाहा। मनोमेहार्द्दियच्छ दिवंते धूमोगच्छतु स्व ज्योंतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा ॥१॥ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयंतस्त्वे महे। उपप्प्रयंतुमरुतः

सुदानवऽइन्द्र प्राशु र्भवा सचा ॥२ ॥

यांतु देवगणांः सर्वेपूजामादाय याज्ञिकम्। इष्ट कामाना समृद्धयर्थं पुनरागमनाय च ॥३ ॥

यह पढ़कर सब मंडलों पर अक्षत फेंकें।

ब्राह्मण भोजन, कन्या भोजन, बटुक भोजन करायें। पुत्रवती सुवासिनियों से यजमान की आरती करावें। मंत्रः-

ॐ अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्य आयुर्मेदाः पुत्रवती दक्षिणत इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजामेदाः। सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुरधिपत्ये चक्षुर्मेदा आश्रुतिरुत्तरतो धातुरधिपत्ये रायष्पोषम्मेदाः।

अथ दुर्गासप्तशती हवन विधानम्

सप्तशती पाठ की आवृत्तियों के दशांश का हवन करें। शतचण्डी पाठ,हवन प्रयोग में **एक कुण्डी पक्ष** में दश होता, १ आचार्य, १ ब्रह्मा, एवं सहयोग हेतु १ या २ ऋत्विक् होने चाहिये। तिल की आहुति होता देवें आज्य की आचार्य देवें।

पञ्च कुण्डी हवन पक्ष में कुण्डों पर प्रत्येक पर २ होता १ आचार्य १ ऋत्विक् जरुरी है।

दुर्गापाठ केवल ब्राह्मण एक पाठ करें, होताओं के स्वाहा उच्चारण से ही मंत्र के साथ उनकी समिष्टि मान ली गई है। दशपाठ करना जरुरी नहीं है। दशपाठ का किसी किसी का मत है।

शतपाठ किये बिना भी किसी स्थान, समय की आवश्यकतानुसार केवल हवन (दश होताओं से) किया जा सकता है। इसका भी विशेष फल माना है। **कार्य सिद्ध होता है।**

हवन विधि

विनियोग :- हाथ में जल गंध अक्षत पुष्प दक्षिणा लेकर संकल्प करें।

अद्येतादि **:- मया स ब्राह्मणाः द्वारा कृतस्य शतचण्डी जपस्य संपूर्णता सिद्धयर्थं जपदशांशेन तिलादिमिश्रित पायस यथा कामनानुसार द्रव्येण होम महं करिष्ये।**

अगर मूल पाठ के साथ अलग से १० माला नवार्ण की प्रति पाठ के

अनुसार की है तो एक लाख नवार्ण के जाप हुये अतः मूल पाठ का हवन अलग तथा जप का हवन (दशसहस्र का) अलग से होगा।

अगर संपुटित पाठ किया है तो जिस तरह पठन किया उसी तरह हवन होगा। अतः कामना मंत्र (संपुटित मंत्र) संख्या १४००, मूल मंत्र संख्या ७००, कुल २१०० संख्या होम आहुति हुई।

निषेधआहुतियां :- चतुर्थ अध्याय की "**शूलेन पाहिनो**" अदि चार, प्रथम अध्याय की '**खड्गिनी शूलिनी**' पंचम अध्याय में '**दूत उवाच**' की दो आहुतियों का हवन नहीं करें।

अन्धकाख्यो महादैत्यो दुर्गाहोम परायणाः ।
कवचाहुति जात्पापान्महेशेन निपातितः ॥

मतांतरे **:- शूलेनचारभ्य खड्गशूलगदादीनि पर्यन्तं मूल मंत्रेण वृहद्वेलया आहुति विधानं वदन्तिः'** पायस या हलवा की आहुति देवे। **स्कांदे हिंगुलाद्रिखण्ड उत्तर संहिता** में कवचाहुति लिखि है।

चतुर्थ अध्याय में पायस मिश्रित तिलादि से हवन करें।

पंचम अध्याय में **नमस्तस्यै** आदि मंत्रों का निम्न विधि से हवन करें।

नोट :- **गुप्तवती टीका** के अनुसार प्रथम पंक्ति के बाद **नमस्तस्यै नमो नमः** पढ़ने से **२४ अक्षर त्रिपद गायत्री छंद बनता है।** अतः इसी क्रम से एक मंत्र की ३ बार आहुति देकर महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती हेतु प्रदान करें।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै स्वाहा। (या प्रथम पंक्ति के बाद) **नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा** (२४ अक्षर युक्त मंत्र से)। **इदं महाकाल्यै न मम॥**

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै स्वाहा। (या प्रथम पंक्ति के बाद) **नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा** (२४ अक्षर युक्त मंत्र से)। **इदं महालक्ष्म्यै न मम॥** (पायसमिश्रित तिलादि से)

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमो नमः। इदं महासरस्वत्यै न मम।

॥अथवा॥

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमो नमः स्वाहा

(२४ अक्षर युक्त मंत्र से)। **इदं महासरस्वत्यै न मम॥**

'उवाच' स्थलों पर एवं नमस्तस्यै मंत्रो के समय व **नारायणि स्तुति के हवन समय पत्र, पुष्प, फल सहित आहुति प्रदान करें।**

अन्य मंत्रो के जो द्रव्य हैं वे उनका अर्थ कामना व भावना से है। कुछ विधियाँ अध्याय की मंत्र महार्णव, अनुष्ठानप्रकाशः, दुर्गाकल्पद्रुम, दुर्गोपनिषद में है। कुछ अन्य तंत्रों में द्रव्यों के कामना फल लिखें है। कुछ लोकाचारानुसार दिये है।

श्रीकाम कमलं, कामार्थी दमनं, जयकामोः। अपराजितम्, वश्ये शिखीमूलं, हिङ्गलोच्चाटने॥ मारणेच्चाटने हुन्मांसं, मोहनेमधुंपायस। स्तंभने मातुलफलं, वश्ये तु सर्षपा॥ बिल्वदलैमधुत्रय युतैर्मांस होमः दशांशेनः क्षीर संयुते कमलैर्होमो लक्ष्मीप्राप्ति फलोऽयं प्रयोगः। राज्यप्राप्ति हेतु मधु अशोक पुष्प, कमलपुष्प। आकर्षणार्थ धत्तुरं ।

जैसे हल्दी को रात्रि भी कहते है। औषधी विज्ञान में शैलपुत्री-शिलाजीत, कालरात्री-दारुहल्दी, सिद्धिदात्री-आंवला को कहते है। जटामांशी-शिव, गौरी व केश शब्द की जगह। जहां स्तंभन व पाश की भावना है वहां हरताल, मेनसिल, हल्दी। पाणिग्रहण शब्द, बशीकरण, श्रीवृद्धि हेतु - लाजा, शमीपत्र। यद्यपि इसके लिये अलग से कोई प्रामाणिक ग्रंथ नहीं है। आदान प्रदान त्वचानिर्माल्य, विद्या, श्रद्धा भावना पर भोजपत्र, आकर्षण एवं शत्रु संहार(आसुरी दुर्गा)-राई। प्रेतबाधानिवारण हेतु - फूलप्रयंगु-आसावरी धूप, सावर्णि (सूर्य) अकसमिध। आदि द्रव्य ***'सुबोध दुर्गा सप्तशती एवं यागविधानम्'*** पुस्तक में हमने मंत्रों के साथ ही दे दीये है।

७०० मंत्रों के हवनीय द्रव्य व अध्याय समाप्ती पर विशेष आहुतियां भी साथ ही में उक्त पुस्तक में दी गई है।

अथ दुर्गा हवनम्

दिग्रक्षण व पुण्याहवाचन करके हवन प्रारंभ करें।

संकल्प के बाद पुस्तक का पूजन करें। कवचार्गला कीलक का पाठ करें।

मतांतरे **:- (स्कांदेहिगुलाद्रिखण्डे उत्तर संहितायाम्) चण्डी पाठेन होताव्या कृत्वातु कवचंपुरा। ततश्चाप्यर्गला चैव ततौवै कीलकं भवेत्। ततः सप्तशतीं चैव रहस्यं पल्लवं तथा चण्डी पाठे तथा होमे क्रम उक्तो मनीषिभिः॥**

स्वमत :- (मध्यमार्ग) कवच में नवदुर्गा की आहुति देवें। अर्गला पूरा पाठ होम करें। कीलक में ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय। तथा ॐ सर्वमंगल मांगल्ये की आहुति देवें।

रहस्य होम में :- प्रधान रहस्य में ॥महाकाली महालक्ष्मी, महासरस्वती की आहुति॥ श्लोक १२, १६, १८ से २४ तथा २६ । वैकृति रहस्य में १ से ४, ७ से १०, १४ से १६ तक। मूर्ति रहस्य में १ से ६ तथा १२ श्लोक २५ की आहुति देवें।

अगर हवन करें तो इस तरह करें। परन्तु पाठ पूरा अवश्य करें।

कवच - नवदुर्गा की निम्न द्रव्यों से आहुतियां देवें।

(१) ॐ शैलपुत्र्यै स्वाहा - (शिलाजीत)
(२) ॐ ब्रह्मचारिण्यै स्वाहा - (ब्राह्मी)
(३) ॐ चन्द्रघण्टायै स्वाहा - (सहदेवी)
(४) ॐ कुष्मा ण्डायै स्वाहा - (लोकी, कुष्माण्ड)
(५) ॐ स्कंदमातायै स्वाहा - (आमीहल्दी)
(६) ॐ कात्यायिन्यै स्वाहा - (बहड़)
(७) ॐ कालरात्र्यै स्वाहा - (नीम गिलोय)
(८) ॐ महागौर्यै स्वाहा - (दारुहल्दी)
(९) ॐ सिद्धदात्र्यै स्वाहा - (आंवला)

फिर निम्न मंत्र की आहुति देवें -

**ॐ नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ॥स्वाहा॥**

अगर कवच की आहुतियां ही देना चाहते है तो घी व गुग्गल की देवें

स्वमत : - हमारे प्रकाशन की पुस्तक **'सुबोध दुर्गासप्तशती एवं यागविधानम्'** के श्लोक संख्या १४, १५ में मंत्र बोलकर भगवती के अस्त्रों के गंधाक्षत करके नवार्णमंत्र से आहुति देवें। ४०, ४१, ४२ में लाजा एवं मिष्ठान्न की ४९ से ५४ तक सरसों सहित घी की बाकी आहुतियां घी एवं गुग्गल की होगी।

अर्गला :- पायसमिश्रित तिलादि से हवन करें।

कीलक :- निम्न मंत्र से आहुति देवें -

ॐ विशुद्धज्ञान देहाय त्रिवेदी दिव्य चक्षुषे ।

श्रेयः प्राप्ति निमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिण्ये ।।स्वाहा।।

कीलक में शरणापन्न भावना है अतः निम्न मंत्र की आहुति देवें तो शुभ रहे-

ॐ सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरी नारायणि नमोस्तुते ।।स्वाहा।।

इसके बाद **कुंजिका स्तोत्र** का पाठ करें।

नवार्ण मंत्र की अष्टोत्तर शत संख्या में आहुति देवें।

तत्पश्चात् दुर्गापाठ का सविधि हवन करें। पुनः नवार्ण मंत्र का अष्टोत्तरशत होम करें। तीनों रहस्यों के देवताओं की नामों की आहुति देवें। नवार्ण जप अलग से किये हो तो उनका दशांश हवन तर्पण मार्जन करें।

सप्तशती के पाठ का तर्पण मार्जन मंत्र से कर सकते है।

अर्थात् एक पाठ के संपुट में २१०० मंत्र हुये तो सौ पाठ में २,१०,००० मंत्र हुये अतः २१०० संख्या तर्पण व २१० मार्जन की हुये जो नवार्ण मंत्र से कर सकते है। एवं केवल मूल पाठ के ७०० तर्पण ७० मार्जन हुये।

कहीं कहीं यंत्र के आवरण देवता का होम सप्तशती हवन बाद लिखा है परन्तु आवरण देवता प्रधान अंग है अतः पहले आवरण देवता का हवन करना चाहिये।

दुर्गोपनिषत्कलपद्रुमसम्मतेन हवनम्

नोट :- विशेष एवं विशुद्ध विधान हेतु हमारे प्रकाशन की पुस्तक '**सुबोध दुर्गासप्तशती एवं याग विधानम्**' देखें।

देव्या विशेष हवन विधानम् (प्रचलित क्रमेण)

प्रथमोऽध्यायः

नोट :- कृपया ध्यान रखें कि सौभाग्य की वस्तुओं का होम करने से उच्चाटन होता है। अतः होम न करके समर्पण करे।

मंन्त्राः	वस्तुनाम्	मंन्त्राः	वस्तुनाम
ज्ञाननामपिचेतांसि	इलायची	बलादाकृष्यमोहाय	शर्करा
आस्तीर्य शेषमभजत्	कमलगट्टा	वञ्चिताभ्यामिति	तदाकर्पूर
विलोक्य ताभ्यां	कमलगट्टा	तथेत्युक्त्वा भगवता	मधुकेला गुग्गुल

प्रथमाध्यायस्य 'खडगिनित्यारभ्य ८० अहमीशान एवच' ८४ यावत् पञ्च

भिर्मन्त्रैर्हवनं न करणीयम् तत्तत्परिवर्ते मूलमंन्त्रेण पञ्चाहुतयो देया।

प्रथम अध्याय पूरा होने पर इस प्रकार आहुति देवे – एक पान पर कपित्थफल, मधु, कमलगट्टा, गुग्गुलु, गंधाक्षत्र, पुष्प, लौंग इलायची सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्त्रुचि मे रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

महाहुतिं – ॐ नमो देव्यै..........। (या) जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, सायुधायै वाग्भव बीजाधिष्ठायै महाकाल्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

बाद में ५ बार स्त्रुवे से घी की आहुति देवे।

मंत्र – ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः। पिबन्तारिक्ष हविरसि स्वाहा। दिश प्रदिश अद्दिशो विद्दिशो उद्दिशो दिग्भ्य स्वाहा। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके........स्वाहा।

द्वितीयोऽध्यायः

मंन्त्राः	वस्तुनाम	मंन्त्राः	वस्तुनाम
अस्त्राण्यनेकरूपाणि	कर्पूर	श्येनानुकारिणः	सरसों
क्षणेन तन्महासैन्य	राई	देव्या गणैश्चतै	पुष्प बिल्वपत्र

दूसरे अध्याय की समाप्ति पर हवनीय द्रव्य – महाहुति – एक पान पर शाकल्य, नारिकेल फल खण्ड, कमलगट्टा, गुग्गुलु, पुष्प, लौंग इलायची, सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्त्रुचि मे रखकर खड़े होर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

महाहुतिं – ॐ नमो देव्यै..........। या जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्रयै महालक्ष्मी भुवनेश्वरी देवतायै माहाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

बाद में ५ बार स्त्रुवे से घी की आहुति देवे।

ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके ऽम्बालिके नामानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पील वोसिनीम् स्वाहा।

तृतीयोध्यायः

मंन्त्राः	वस्तुनाम	मंन्त्राः	वस्तुनाम
बिडालस्यासिना	निंबू कागजी	ततः क्रुद्धा जगन्माता	गुड़, दुग्ध

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ	मधु	अर्धनिष्कान्त एवासो	घिया
तुष्टुवुस्तां सुरा देवी	पान-सुपारी		

महाहुति - एक पान पर बिजोरा, चंदन, नींमगिलोय, दधि, माष, भैंसा गुग्गल, कमलगट्टा, गुग्गुलु, पुष्प, लौंग २ पत्र, पुष्प फल इलायची, सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्रुक मे रखकर खड़े होर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै..........। (या) जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै अष्टविंशति वर्णात्मिकायै लक्ष्मी बीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै माहाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

बाद में ५ बार स्रुवे से घी की आहुति देवे।

मंत्र - ॐ घृतं घृतपावनः.......। ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके..... स्वाहा।

चतुर्थोऽध्यायः

मंन्त्राः	वस्तुनाम	मंन्त्राः	वस्तुनाम
देव्या यया ततमिदं	कदलीफल	हेतुः समस्तजगतां	बिल्व फल
यस्याः समस्तसुरता	श्वेतचन्दन	मेधासि देवि विदिता	कर्पूर
त्रैलोक्यमेतदखिलं	सीताफल	एवं स्तुता सुरैदिव्यैः	रक्तचंदन
भक्त्या समस्तेस्त्रि	धूप	रक्षणाय च लोकानां	धूप मधु

चतुर्थाध्यायेतु अध्यायस्य प्रथममन्त्रादारभ्य खडगशूल गदादीनि इति मन्त्र पर्यन्त पायसेन अथवा जवागुना (हलुआ)आहुतिविधानं वर्तते। अत्र केचित् शू लेन चारभ्य खड्गशूलगदादीनि पर्यंत मूलमन्त्रेण वृहद्वेलया आहुतिविधानं वदन्ति

महाहुतिं - एक पान पर शाकल्य पायस, कमलगट्टा, बिल्वफल, गुग्गुलु, पुष्प, लौंग इलायची सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्रुक में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै..........। या जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, सशक्त्यै श्रीलक्ष्मीबीजाधिष्ठात्र्यै त्रिवर्णात्मिकायै श्रीमहालक्ष्म्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

बाद में ५ बार स्रुवे से घी की आहुति देवें।

मंत्र – ॐ घृतं घृतपावान:.......। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके... स्वाहा।

पंचमोऽध्याय:

मंन्त्रा:	वस्तुनाम	मंन्त्रा:	वस्तुनाम
नमो देव्यै महादेव्यै	हलुआ	रौद्रायै नमो नित्यायै	आवला
कल्याण्यै प्रणतां	भोजपत्र	निधिरेष महापदम:	कमलगट्टा
यो मां जयति संग्रामे	कज्जल (समर्पण)	तदागच्छतु शुम्भोत्र	हिंगुल (समर्पण)
स त्वं गच्छ	ताम्बुल, इक्षु		

महाहुतिं – एक पान पर शाकल्य, कर्पूर, फल बिजोरा, श्वेत चन्दन, कमलगट्टा, गुग्गुलु, पुष्प, लौंग इलायची सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्रुचि में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवें।

ॐ नमो देव्यै.........। या जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, सशक्त्यै श्रविष्णुमायेति चतुर्विंशति देवतायै काम बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीमहासरस्वत्यै महाहुतिं समर्पयामि नम: स्वाहा।

बाद में ५ बार स्रुवे से घी की आहुति देवे।

मंत्र – ॐ घृतं घृतपावान:..........। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे... अम्बिके स्वाहा।

षष्ठमोऽध्याय:

मंन्त्रा:	वस्तुनाम	मंन्त्रा:	वस्तुनाम्
हे धूम्रलोचनाशु त्वं	गुग्गल	इत्युक्त: सोऽभ्यधाव	निंबू,बिजौरा
विच्छिन्नबाहुशिरस:	केसर	क्षणेन तद्बलं सर्व	राई
श्रुत्वा तमसुरं देव्या	सुपारी,लोहवान	केशेष्वाकृष्य बध्वा	भोजपत्र जटामांशी
तस्यां हतायां दुष्टा..	इक्षु, कनेर पुष्प		

महाहुति – एक पान पर शाकल्य कमलगट्टा, गुग्गुलु, भोजपत्र, कुष्माण्ड, नारंगी, नारिकेल फल, सब युग्म रखें घी से भिगोये एवं स्रुक में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै.........। या जयंति मंगला........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, सशक्त्यै शताक्ष्यै श्रीधूम्राक्षी देवतायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

बाद में ५ बार स्रुवे से घी की आहुति देवे।

मंत्र – ॐ घृतं घृतपावान:.......। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके....स्वाहा।

सप्तमोऽध्यायः

मंन्त्राः	वस्तुनाम	मंन्त्राः	वस्तुनाम
ततः कोपं चकार	कस्तूरी	उत्थाय च महासिं ह	कदलीफल
शिरश्चणडस्य काली	निंबूबिजौरा	तावानीतौ ततो दृष्ट्वा	कमलगट्टा
यस्माच्चण्डं च मुण्ड.	चिरौंजी	आम्रफल, पुष्प	

महाहुतिं – एक पान पर शाकल्य, चिरौजीं, कमलगट्टा, लाजवन्ती, कुष्माण्ड फल खण्ड, जायफल, लौंग, इलायची, कर्पूर सब युग्म रखें घी से भिगोये एवं स्रुक में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै..........। या जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै सशक्त्यै श्रीकर्पूर बीजाधिष्ठात्र्यै श्रीधूम्राक्षी काली चामुण्डा देवता महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

बाद में ५ बार स्रुवे से घी की आहुति देवे।

मंत्र – ॐ घृतं घृतपावान:.....। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके... स्वाहा।

अष्टमोऽध्यायः

मंन्त्राः	वस्तुनाम	मंन्त्राः	वस्तुनाम
इति मातृगणं क्रुद्धं	सरसों	रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ	लाल चन्दन
भक्ष्यमाणास्त्वया	लाल चन्दन	मुखेनकाल जगृहे	लाल चन्दन
तांचश्खादाथ चामुण्डाइक्षु		जघान रक्तबीजं	लाल चन्दन
नीरक्तश्च महीपाल	निंबू बिजोरा		

महाहुतिं – एक पान पर शाकल्य, कर्पूर, कुष्माण्ड फल खण्ड, मधु, रक्तचन्दन, कमलगट्टा, गुग्गुलु, पुष्प, लौंग इलायची सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्रुचि में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै.........। या जयंति मंगला........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, सशक्त्यै अष्टमातृका सहितायै रक्ताक्षीदेव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

बाद में ५ बार स्रुवे से घी की आहुति देवे।

मंत्र - ॐ घृतं घृतपावानः........। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे अम्बिके... स्वाहा।

नवमोऽध्यायः

मंत्राः	वस्तुनाम	मंत्राः	वस्तुनाम
विचित्रमिदख्यातं	निंबू बिजौरा	ततःपरशुहस्तं	कपीठ
पूरयामास ककुभो	केशर	भिन्नस्य तस्य शूलेन	निंबू, बिजौरा
तस्य निष्क्रामतो	गुग्गलु,इंद्रजौ	केचिद्विनेशुरसुराः	पान सुपारी बेलगिरी

महाहुतिं - एक पान पर शाकल्य, बिजौरा, कुष्माण्ड फल खण्ड, निंबू, इक्षु खण्ड, बिल्व फल, मेनफल कमलगट्टा, उड़द लौंग इलायची सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्रुचि में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै..........। या जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, देव्यै सशक्त्यै श्रीवाग्भव बीजाधिष्ठात्र्यै भगवति महाकाल्यै तारा देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

बाद में ५ बार स्रुवे से घी की आहुति देवे।

मंत्र - ॐ घृतं घृतपावानः.......। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे... अम्बिके स्वाहा।

दशमोऽध्यायः

मंत्राः	वस्तुनाम	मंत्राः	वस्तुनाम
निशुम्भं निहितं	केशर कस्तूरी	तमायान्तं ततो	पक्का केला
सगतासुः पपतोर्व्यां	भोजपत्र	जज्ज्वलुश्चाग्नयः	कर्पूर इंद्रजौ कमल गट्टा

वटपत्र में देवे

महाहुतिं - एक पान पर शाकल्य, कस्तूरी, कुष्माण्ड फल खण्ड, फल, पुष्प, मेनसलि, मातुलिंग, बिल्व फल, मेनफल कमलगट्टा, लौंग इलायची सब

युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्रुचि में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै.........। या जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, सशक्तयै सिंहवाहनायै शूलपाश धारिण्यै अंबिका भैरवी देव्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

मंत्र – ॐ घृतं घृतपावानः.......। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे... अम्बिके स्वाहा।

एकादशोऽध्यायः

मंन्त्राः	वस्तुनाम्	मंन्त्राः	वस्तुनाम्
त्वं वैष्णवी	बिजौरा निंबू	रोगानशेषानपहंसि	राई, गिलोय, काली मिर्च
सर्वाबाधा प्रशमनं	काली मिर्च	वैवश्वतेन्तरे प्राप्ते	सरसों
भक्षयन्त्याश्चतानुग्रान्	अनार	ततो मां देवताः	मजीठ
भूयश्चतवार्षिक्या	नारंगी	ततः शतेन नेत्राणां	कमलगट्टा
शाकम्भरीतिविख्यातिं	सोआ पालक	भ्रामरीति मां	कालीमिर्च
तदा तदावतीर्याहं	सरसों		

महाहुति – एक पान पर शाकल्य, कर्पूर, शर्करा, पत्र, पुष्प फल मिश्री, पायस गुग्गल, इक्षु खण्ड, दाडिम, कमलगट्टा, लौंग इलायची सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्रुचि में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै.........। या जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, सर्व नारायण्यै शक्त्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

मंत्र – ॐ घृतं घृतपावानः.........। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे... अम्बिके स्वाहा।

द्वादशोऽध्यायः

मंन्त्रा	वस्तुनाम	मंन्त्राः	वस्तुनाम
एभिः स्तवैश्च मां	अगर	बलिप्रदाने पूजायां	पेड़ा
सर्वाबाधाविर्निमुक्तो	मिष्ठान्नइलायची	उपसर्गाः शमं यांति	भोजपत्र

सर्व ममैतन्माहात्म्यम्	लौंग बिजौरा कर्पूर पुष्प	पश्यतामेव देवानां	सर्वोषधी
सैवकाले महामारी	अनार का छिलका	स्तुता सम्पूजिता	पुष्प

महाहुतिं - एक पान पर शाकल्य, अगर, केशर, कस्तूरी, जायफल खण्ड, पत्र, फल, पुष्प, मिश्री, बिल्व फल, कमलगट्टा, लौंग इलायची सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्रुचि में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै.........। या जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, बालात्रिपुरसुन्दर्यै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

मंत्र - ॐ घृतं घृतपावानः........। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे... अम्बिके स्वाहा।

त्रयोदशोऽध्यायः

मंन्त्रा	वस्तुनाम	मंन्त्राः	वस्तुनाम
ददतुस्तौ बलिं चैव	गुड़ पुष्प केला	ततो ब्रवे नृपो राज्यं	कालीमिर्च
सूर्य्याज्जन्म समासाद्य	पान सुपारी अर्कपुष्प		

महाहुतिं - एक पान पर शाकल्य, कस्तूरी, नारिकेल, फल, पुष्प, गुग्गल, शमीपत्र, श्वेत, केसर, कर्पूर, श्वेत पुष्प अर्कपुष्प बिल्व फल, कमलगट्टा, लौंग इलायची सब युग्म लेवें, सुपारी रखें घी से भिगोये एवं स्रुक में रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र से आहुति देवे।

ॐ नमो देव्यै.........। या जयंति मंगला.........। साङ्गयै सपरिवायै सवाहनायै, सशक्त्यै सर्व श्रीविद्या स्वरूपायै श्रीमहात्रिपुर सुन्दर्यै देव्यै श्रीविद्यायै महाहुतिं समर्पयामि नमः स्वाहा।

मंत्र - ॐ घृतं घृतपावानः........। या ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ व्यानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ अम्बे... अम्बिके स्वाहा।

बलिकर्म समये खड्गादि पूजाविधानम्

खड्ग पूजा **:- ॐ कालि कालि वज्रेश्वरी लौह दण्डाय नमः।**

खड्ग के मूल, मध्य, व अग्र भाग में क्रमशः **हुँ वागेश्वरी ब्रह्माभ्यां नमः। हुँ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। हुँ उमामहेश्वराभ्यां नमः। सर्वेषां देवानाम् गंधादिभिः संपूज्य।**

प्रार्थना करें **- ॐ खड्गाय खड्गधराय शक्तिकार्यार्थ तत्पर पशुन्छिन्द्यर्ता शीघ्रं खड्नाथ नमोस्तुते।**

अब पशु व कुष्माण्ड का सामान्य जल से मूल मंत्र से ३ बार प्रोक्षण करें, हुँ से अवगुण्ठन कर धेनु मुद्रा दिखावें। **एतत् पाद्य छागपशवे नमः** से पाद्यादि से पशु की पूजा करें।

मंत्र पढ़ें **- ॐ पशुपाशाय विद्महे विश्वकर्मणे धीमहि तन्नो जीवः प्रोचोदयात्।**

विनियोगः अद्येत्यादि श्रीमहादुर्गा देव्याः प्रीतिकामः इमं कुष्माण्ड छागपशुं श्रीमहादुर्गादेव्यै अहम् सम्प्रददे।

फिर हाथ जोड़ें। ॐ बलिं ग्रह्ण महादेवि पशुं कुष्माण्ड सर्वगुणान्वितम्। यथोक्तेन विधानेन तुभ्यमस्तु समर्पितम्।

॥अं हं फट्॥ से पशु के कंधे पर धीरे से खड्ग छुआयें।

निम्न मंत्र से शिरच्छेदन करें :-

ॐ स्फुर २ कुंभ २ सुनु २ गुलु २ धुनु २ मारय २ विद्रावय २ विदारय २ कंपय २ पूरय २ ॐ ह्रीं ॐ हुँ फट् २ हुँ मर्दय २ हुँ॥

सिर को एक थाली में रखें देवी के सामने रखें। शेष भाग को बाहर दे देवें। स्नान करके शुद्ध होवें। तामसी पूजा में छाग मस्तक में चौमुखा दीपक बनाकर आरती करते है।

अथ कुमारी पूजा

कुमारी पूजा बिना देवी पूजा अधूरी है, अतः नवदुर्गा स्वरूपा नवकन्या, एक गणेश व एक बटुक का पूजन अवश्य करना चाहिये। कुमारी पूजा एक स्वतंत्र तंत्र

है इसके न्यास, कवच, ध्यान सहस्त्रनामादि सभी पृथक से है।

वर्षभेदेन कुमारिका भेद **:- एक वर्षा भवेत्संध्या द्विवर्षा च सरस्वती। त्रिवर्ष च त्रिधामूर्तिश्चतुवर्षा च कालिका ॥१॥ सुभगा पंचवर्षा तु षडवर्षा च भवेदुमा। सप्तभिर्भिल्लिनी साक्षादष्टवर्षा तु कुब्जिका ॥२॥ नवभिः कालसंदर्भा दशभिश्चापराजिता एकादशे तु रुद्राणी द्वादशाब्देतु भैरवी ॥३॥ त्रयोदशे महालक्ष्मी द्विसप्ता पीठनायिका। क्षेत्रज्ञा पंचदशभिः षोडशेचाम्बिका मता ॥४॥**

एवं क्रमेण संगृह्य यावत्पुष्पं न जायते॥ अर्थात् जब तक रजोधर्म को प्राप्त नहीं हो कुमारी पूजा करें।

(विश्वसारेतु) अष्टवर्षा तु सा कन्या भवेद्गौरी वरानने। नववर्षा रोहिणी सा दश वर्षा तु कन्याका। अत उर्द्ध्वं महामायाभवेत्सैव रजस्वला। आरभ्य द्वादशाब्दाच्च यावद्विंशति संख्यकम्॥ सुकुमारी च सा सर्वतंत्र समन्विता॥

अलग-अगल कामना हेतु अलग-अलग वर्ण की कन्या का पूजन करें। **शांति हेतु - ब्राह्मण कन्या, आकर्षण हेतु - नटी, वंशवृद्धि हेतु - गोपाल कन्या, लक्ष्मीप्राप्ती हेतु - वैश्य कन्या, विजय हेतु - क्षत्राणी कन्या, अभिचारादि में - हीनकन्या व शूद्रकन्या।**

यथारुद्रामलये **:- नटीकन्यां, हीनकन्यां तथा कपालिकन्यकाम्। रजकस्यापि कन्यां च तथा नापित कन्यकाम्॥१॥ गोपाल कन्यकाचैव ब्रह्मणस्यापि कन्यकाम्। शूद्रकन्यां वैद्यकन्यां तथा वैश्यकन्यकाम्॥२॥ चाण्डाल कन्यका वापि यत्र कुत्राश्रमे स्थिताम्। सुहृद्वर्गस्य कन्यां च समानीय प्रयत्नतः॥३॥**

योगिनीतंत्रे **:- तस्मत्तां पूजयेब्दालां सर्व जाति समुद्भवाम्। जाति भेदो न कर्तव्यः कुमारी पूजने शिवे॥**

अथ कुमारी पूजाप्रयोग **:- पूजादिनात्पूर्वदिने गंध पुष्पाक्षतादिभिर्मलेन 'भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमंत्रिता ऽसि मां कृतार्थय' (इति निमंत्र्य)** पूजादिन बुलाकर स्नानादि करायें **एवं स्नापयित्वा गंधतैलेन शरीर संस्कुर्यात्। केशान् परिष्कृत्य, ललाटे सिंदूर, नयनयोः कज्जलं, सर्वांगे चन्दनं दत्त्वा वस्त्रालंकारैराभूष्य, अष्टदल पीठोपरि समावेश्य, पादौ प्रक्षाल्य, मुख संशोध्यः।**

विनियोग :- देशकालौ स्मृत्वा ऽमुकफलप्राप्तये ऽमुक कर्मण्य ऽमुक देव्याः प्रीतये कुमारी पूजनं करिष्ये॥

तत्पश्चात् - हृदयादि न्यास करें।

ध्यान :-

ॐ शंख कुन्देन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयम् ।
चन्द्रमध्य महां भोजहावभाव विराजिताम् ॥१॥
बालरूपां च त्रैलोक्यसुंदरीं वरवर्णिमीम् ।
नानालंकार नम्रांगी भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥२॥
चारु हास्यां महानन्दहृदयां शुभदां शुभाम् ॥३॥

एवं ध्यात्वा ऽऽत्मशिरसि करं दत्त्वा मानसौपचारैः संपूज्य, गंधादिभिसंपूज्य।

नवदुर्गा का **प्रथम शैलपुत्री**....क्रम से पूजा करें। **गणेश बटुक** का पूजन करे। **नीरांजन करें। शंख से अर्घ देवे।**

शंखमध्ये स्थितंतोय भ्रामितं ललितोपरि। अंग लग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥१॥ न रोगा न च कुष्माण्डाः पिशाचोरग राक्षसाः दृष्ट्वा शंखोदकंमूर्ध्नि व्याधयो विलयंगताः॥२॥

(देव्याः पादोदकं पीत्वा) अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधि विनाशनम् ।
देव्याः पादोदकं पीत्वा जठरे धारयाम्यहम् ॥

इसके बाद कन्याओं को सादर नैवेद्य निवेदन करें। तत्पश्यात् दक्षिणा प्रदान करें फल प्रदान करें।

ततो गतसारनैवेद्यं देव्याश्चोच्छिष्टं किंचिदुधृत्य ॥

'विष्वक्सेनाय नमः' इति मंत्रेण ईशाने संपूज्य ॐ उच्छिष्ट धारिणे नमः।
पादौदक का घर परिवार में सब जगह छींटें देवें।

जपसमर्पण :- **एतत जप पाठ हवनाख्य कर्मणः कुमारी पूजन फलं श्रीमहादुर्गार्पणमस्तु इति मंत्रेण देव्यावाम हस्ते जलं समर्पयेत्॥**

॥श्रीदुर्गा देव्या हवनाख्य, कुमारी पूजनं परिपूर्णमस्तु॥

अथ प्रासाद प्रकरण प्रारंभते

मूर्ति प्रतिष्ठा व नूतन प्रासाद बनाया हो तो वास्तु विषय में भी कुछ जानकारी विद्वानों को रहनी चाहिये इस विषय में मंदिरों के स्वरूप, लक्षण एवं उनके फल के विषय में कुछ जानकारी दी जा रही है ताकि जीर्णोद्धार या नूतन प्रासाद विषय में विद्वान सही निर्माण में सहायक सम्मति दें सकें। विस्तृत अध्यन्न के लिये पुस्तक **'भवन वास्तुशास्त्र एवं भाग्यफल'** देखें।

वास्तु मंडल वैसे चतुष्कोण ही बनाये जाते है परन्तु **'वास्तुविद्या'** में भरत मुनि के 'नाट्यशास्त्र' में त्रिकोण व **वृत्त वास्तु मण्डल का विधान भी बताया है जिसके चित्र पुस्तक के प्रारंभ में दर्शाये गये है।**

मूर्ति प्रतिष्ठा में प्रासादप्रतिष्ठा (नूतन व जीर्णोद्धार में)हवन मण्डप तो एक हो सकता है परन्तु प्रासाद में भी वास्तु मण्डल बनाया जाता है। उसके शोधन हेतु ८१ या ६४ कुंभ में जल, गंधोदक, पंचगव्य, पंचामृत, सर्वोषधी, केसर, गोरोचन आदि सुगंधित द्रव्य रखें जाते है।

वास्तु पूजन के पश्चात् उन द्रव्यों से प्रासाद का शोधन किया जाता है।

अथ प्रासाद लक्षणम्

गर्ग मुनि के मत, **मय** एवं **वाराहमिहिर** के मत के अनुसार **प्रसादस्वरूप** व **लक्षण** इस प्रकार है।

मंदिर निर्माण का फल :-

कृत्वा प्रभूतं ससलिलमारामान् विनिवेश्य च ।
देवतायतनं कुर्याद् यशोधर्माभिवृद्धये ॥१॥
इष्टापूर्तेन लभ्यन्ते य लोकास्तान् बुभूषता ।
देवानामालयः कार्यो द्वयमप्यत्र दृश्यते ॥२॥
इष्टं यज्ञेषु यद् दानं ततोऽन्यत् पूर्तमिष्यते ।

देवों का प्रिय स्थान :-

ससिललोद्यानयुक्तेषु कृतेष्वकृतकेषु च ।
स्थानेष्वेतेषु सान्निध्यमुपगच्छन्ति देवताः ॥३॥
सरःसु नलिनीछत्रनिरस्तरविरश्मिषु ।

हंसासाक्षिप्तकह्लारवीथीविमलवारिषु ॥४॥
हंसकारण्डव क्रौञ्चचक्र वाकविराविषु ।
पर्यन्तनिचुलच्छाया विश्रान्तजलचारिषु ॥५॥
क्रौञ्चकाञ्च कलापाश्च कलहंस कलस्वराः ।
नद्यस्तोयांशुका यत्र शफरी कृत मेखलाः ॥६॥
फुल्लतीरद्रुमोत्तंसाः सङ्गम श्रोणिमडलाः ।
पुलिनाभ्युन्नतोरस्या हंसवासाश्च निम्नगाः ॥७॥
वनोपान्त नदीशैल निर्झरोपान्त भूमिषु ।
रमन्ते देवता नित्यं पुरेषुद्यापवत्सु च ॥८॥

मंदिर हेतू भूमि का चयन :-

भूमयो ब्राह्मणादीनां याः प्रोक्ता वास्तुकर्मणि ।
ता एव तेषां शस्यन्ते देवतायतनेष्वपि ॥९॥

मंदिर वास्तु व द्वार निश्चय :-

चतुःषष्टि पदं कार्य देवतायतनं सदा ।
द्वारं च मध्यमं तस्मिन् समदिक्स्थं प्रशस्यते ॥१०॥
यो विस्तारो भवेद् यस्य द्विगुणा तत्समुन्नतिः ।
उच्छ्रायाद् यस्ततीयांशस्तेन तुल्या कटिः स्मत्ता ॥११॥
विस्तारार्ध भवेद् गर्भो भित्तयोऽन्याः समन्ततः ।
गर्भपादेन विस्तीर्ण द्वारं द्विगुणमुच्छ्रितम् ॥१२॥
उच्छ्रायात् पादविस्तीर्णा शाखा तद्वदुदुम्बरः ।
विस्तारपाद प्रतिमं बाहुल्यं शाखयोः स्मृतम् ॥१३॥
त्रिपञ्चसप्तनवभिः शाखाभिस्तत् प्रशस्यते ।
अधः शाखाचतुर्भागे प्रतिहारौ निवेशयेत् ॥१४॥
शेषं मङ्गल्यविहगैः श्रीवृक्षैः स्वस्तिकैर्घटैः ।
मिथुनैः पत्रवल्लीभिः प्रमथैश्चोपशोभयेत् ॥१५॥
द्वारमानाष्टभोगोना प्रतिमा स्यात् सपिण्डिका ।
द्वौ भागौ प्रतिमा तत्र तृतियांशश्च पिण्डिका ॥१६॥

देव मंदिरों के विंश भेद :-

मेरुमन्दरकैलाश विमानच्छन्दनन्दनाः ।

समुद्र पद्म गरुड नन्दिवर्धन कुञ्जराः ॥१७॥
गुहाराजो वृषो हंसः सर्वतोभद्रो घटः ।
सिंहो वृत्तश्चतुष्कोणः षोडशाष्टाश्रयस्तथा ॥१८॥
इत्येते विंशतिः प्रोक्ताः प्रासादाः संज्ञया मया ।
यथोक्तानुक्रमेणैव लक्षणानि वदाम्यतः ॥१९॥

मेरु, मन्दर, कैलास, विमानछन्द, नन्दन, समुद्र, पद्म, नन्दि, वर्धन, कुञ्जर, गुहराज, वृष, हंस, सर्वतोभद्र, घट, सिंह, वृत्त, चतुष्कोण, षोडशास्त्रि, अष्टास्त्रि,। ये २० प्रासाद भेद होते है जिनका नाममात्र यहाँ कहा गया है।

मेरु मंदिर लक्षण :-

तत्र षडश्रिर्मेरुर्द्वादशभौमो विचित्रकुहरश्च ।
द्वारैर्युतश्चतुर्भिर्द्वात्रिंशद्धस्त विस्तीर्णः ॥२०॥

मेरु नामक मन्दिर ६ कोणों वाला होता है। इसमें शिखर सहित १२ मंजिलें होती है। इसमें अनेक प्रकार से विभिन्न शैलियों में खिड़की, रोशनदान, गवाक्ष, वायु मार्ग बनाए जाते है। इसमें ४ दरवाजे होते है। चारों दिशाओं में एक एक द्वार होता है। इसकी चौडाई ३२ हाथ (४८ फीट) तथा ऊँचाई ६४ हाथ (९६ फीट) होती है। ९६ फीट की ऊँचाई में १२ मंजिल हो सकती है। वास्तव में ऐसे प्रासादों में १२ मंजिलों के बराबर ऊँचाई पर शिखर में घुमाव या विभाग, चिन्ह तथा गवाक्षादि देकर मंजिलों की कल्पना की जा सकती है।

प्रत्येक मंजिल, निचली मंजिल से १/१२ भाग कम होते जायेंगें। **'विश्वकर्मा प्रकाश'** में १६ मंजिल का मेरु कहा गया है। उसमें शेष बातें तो वही है, परन्तु १६ मंजिल व १०० (चोटियां)शिखर बताये गये है।

शमश्रृंगश्चतुद्वारो भूमिका षोडशोच्छ्रितः ।
नाना विचित्र शिखरो मेरु प्रासाद उच्यते ॥ २१ ॥(विश्वकर्म प्रकाशः)

इस उद्धरण से वास्तव में स्पष्ट है कि यथार्थ में मंजिलें न हो कर मंज़िलों के बराबर की ऊँचाई होती है। उक्त ऊँचाई मूल मंदिर की बताई गई है। मंदिर प्रांगण इसमें परिगणित नहीं है। चौड़ाई का १/४ भाग अधिक लम्बाई हो सकती है। मेरु नामक प्रासाद सबसे बड़ा व ऊँचा होता है।

मंदर व कैलाश का लक्षण :-

त्रिंशद्धस्तायामो दशभौमो मन्दरः शिखरयुक्तः ।
कैलासोऽपि शिखवानष्टाविंशाऽष्टभौमश्च ॥२२॥

मन्दर नामक प्रासाद में ३० हाथ (४५ फीट)चौड़ाई, ६० हाथ (६०) हाथ ऊँचाई, षट्कोण स्वरूप वाला, दस भूमिकाओं (मंजिल) वाला, अनेक शिखरों से युक्त होता है।

कैलास नामक प्रसाद में भी षट्कोण, कई शिखर, ८ मंजिलें, २८ हाथ (४२ फीट) चौड़ाई तथा ५६ हाथ या ८४ फीट ऊँचाई होती है।

विमान व नन्दन का लक्षण :-

जालगवाक्षकयुक्तो विमानसंज्ञस्त्रिसप्तकायामः ।
नन्दन इति षडभौमो द्वात्रिंशः षोडशाण्डयुक्त ॥२३॥

विमानच्छन्द संज्ञक मन्दिर में भी षटकोण होता है। जालियाँ व रोशनदान बनाए जाते है। २१ हाथ चौड़ाई व ४२ हाथ ऊँचाई होती है। इसमें ८ मंजिलों की ऊँचाई होती है। नन्दन नामक प्रासाद में ६ मंजिल, ३२ हाथ चौड़ाई, ६४ हाथ ऊँचाई, इसमें १६ घुमाव (शिखर या अण्डाकार घुमाव) होते है। इसमें भी ६ कोण होतें है।

समुद्र व पद्म प्रासाद :-

वृत्तः समुद्रनामा पद्मः पद्माकृतिः शया अष्टौ ।
शृङ्गेणैकेन भवेदेकैव च भूमिका तस्य ॥२४॥

समुद्र प्रासाद वृत्ताकार, पद्म आठ दल या पंखुडियों से युक्त, दोनों की चौड़ाई ८ हाथ, ऊँचाई १६ हाथ, एक शिखर, व एक भूम (मंजिल) होती है।

गरुड़ व नन्दीवर्धन प्रासाद :-

गरुड़ाकृतिश्च गरुड़ो नन्दीति च षट्चतुष्कविस्तीर्णः ।
कार्यस्तु सप्तभौमो विभूषितोऽण्डैस्तु विंशत्या ॥२५॥

गरुड़प्रासाद, गरुड़ के आकार वाला, पंख फैलाये हुए विशाल पक्षी के स्वरूप वाला एवं नन्दिवर्धन भी पंख व पूंछ से रहित पक्षी के आकार का होता है। इसमें २४ हाथ चौड़ाई व ४८ हाथ ऊँचाई होती है। इसमें ७ मंजिलें व २० शिखराखण्ड हाते है।

कुंजर व गुहराज :-

कुञ्जर इति गजपृष्ठः षोडशहस्तः समन्ततो मूलात् ।
गुहराजः षोडशकस्त्रिचन्द्रशाला भवेद् वलभी ॥२६॥

कुंजरप्रासाद हाथी की पीठ के आकार वाला, वर्गाकार, चारों ओर से १६ हाथ

चौड़ाई वाला, ३२ हाथ ऊँचा खड़े हाथी के आकार, एक भूमि वाला होता है।

गुहराज भी गुफा के आकार वाला १६ हाथ चौड़ा व ३२ हाथ ऊँचा होता है। इन दोनों प्रासादों में छज्जे व तीन चन्द्रशालायें होती है।

वृक्ष हंस व घट प्रासाद :-

वृष एकभूमिश्रृङ्गो द्वादशहस्तः समन्ततो वृत्तः ।
हंसो हंसकारे घटोऽष्टहस्तः कलशरूपः ॥२७॥

वृष एक मंजिल वाला व एक शिखर से युक्त, १२ हाथ चौड़ा, २४ हाथ ऊँचा व वृत्ताकार होता है। **हंस प्रासाद** हंसाकार, चोंच, पंख, व पूंछ से युक्त, १२ हाथ चौड़ा, २४ हाथ ऊँचा व १ मंजिला होता है। **घटप्रासाद** कलशाकार, ८ हाथ चौड़ा, १६ हाथ ऊँचा व १ मंजिला होता है।

	मंदर	कैलास	विमान	नन्दन	समुद्र	पद्म
चौड़ाई	45'	42'	31.6'	48'	12'	12'
ऊँचाई	90'	84'	63'	96'	24'	24'
कटि	30'	28'	21'	32'	8'	8'
गर्भ गृह चौड़ाई	22.6'	21'	15.9'	24'	6'	6'
द्वार चौड़ाई	5.7'	5.3'	4'	6'	1.6'	1.6'
द्वार ऊँचाई	11.3'	10.6'	8'	12'	3'	3'
पीठ	3.3'	3'	2.4'	3.6'	10.5'	10.5'
मूर्ति	6.7'	6.2'	4.8'	7'	21'	21'

प्रमाण फुट व इंच में है।

सर्वतोभद्र प्रासाद :-

द्वारैर्युतश्चतुर्भिर्बहुशिखरो भवति सर्वतोभद्रः ।
बहुरुचिरचन्द्रशालः षड्विंशः पञ्चभौमश्च ॥२८॥

सर्वतोभद्र प्रासाद चारों दिशाओं में ४ दरवाजे वाला, कई शिखरों वाला, कई

सुन्दर चन्द्रशालाओं से युक्त २६ हाथ चौड़ा, ५२ हाथ ऊँचा व ५ मंजिला होता है।

नेपाल का पशुपतिनाथ का मंदिर सर्वतोभद्र प्रासाद ही है। उसमें ४ द्वार व शेष सभी बातें भी यथावत है।

	गरुड़	नन्दि	कुंजर	गुह	वृष	हंस	घट	सिंह
चौड़ाई	24 हा.	24 हा.	16 हा.	16 हा.	12 हा.	12 हा.	8 हा.	8 हा.
ऊँचाई	48 ,,	48 ,,	32 ,,	32 ,,	24 ,,	24 ,,	16 ,,	16 ,,
कटि	16 ,,	16 ,,	10.16 ,,	10.16 ,,	8 ,,	8 ,,	5.8 ,,	5.8 ,,
गर्भ गृह चौड़ाई	12 ,,	12 ,,	8 ,,	8 ,,	6 ,,	6 ,,	4 ,,	4 ,,
द्वार चौड़ाई	3 ,,	3 ,,	2 ,,	2 ,,	1.2 ,,	1.12 ,,	1 ,,	1 ,,
द्वार ऊँचाई	6 ,,	6 ,,	4 ,,	4 ,,	3 ,,	3 ,,	2 ,,	2 ,,
पीठ	42 अं.	42 अं.	28 अं.	28 अं.	21 अं.	21 अं.	14 अं.	14 अं.
मूर्ति	84 ,,	84 ,,	56 ,,	56 ,,	42 ,,	42 ,,	28 ,,	28 ,,

माप हाथ एवं अंगुल प्रमाण से है।

सिंह वृत्त व चतुष्कोण प्रासाद :-

सिंहः सिंहोक्रान्तो द्वादशकोणोऽष्टहस्तविस्तीर्णः ।
चत्वारोऽञ्जनरूपाः पञ्चाण्डयुतस्तु चतुरस्रः ॥२९॥

सिंह प्रासाद, सिंह की मूर्तियों से अलंकृत १२ कोणों वाला, ८ हाथ चौड़ा, १६ हाथ ऊँचा होता है। वृत्ताकार व चतुष्कोण चौकोर, षोडशस्त्रि १६ कोणों वाला, अष्टास्त्रि ८ कोणों वाला होता है। इन चारों मंदिरों में अंधेरा रहता है। अर्थात् बाहर से रोशनी आने कोई प्रबन्ध नहीं होता है। चतुरस्र को छोडकर शेष सभी १ भूमिकाओं व १ शिखर से युक्त होते है। अंधकार युक्त मंदिरों में चारों ओर दीवार व पश्चिम में प्रवेश द्वार होता है। इनमें मणियुक्त प्रतिमाएँ स्थापित की जाती है।

सर्वतोभद्र प्रासाद का विस्तृत विचार इस प्रकार है। २६ हाथ ३९ फीट चौड़ा, ५२ हाथ या ७८ फीट ऊँचा होता है।

ऊँचाई के एक तिहाई यानि २६ फीट पर कटि हागी चौड़ाई २६ हाथ की आधी १३ हाथ या १९.६ फीट गर्भ गृह की चौड़ाई होगी। गर्भगृह की चौड़ाई का चतुर्थांश अर्थात् ३ हाथ ६ अंगुल या ४.१० फीट द्वार की चौड़ाई, ७ हाथ या लगभग १० फीट ऊँचा द्वार होगा। द्वार की ऊँचाई का अष्टमांश कम करने से १६८-२१ =१४७ अंगुल पीठ सहित मूर्ति की ऊँचाई होगी। इसमें ४९ अंगुल या २ हाथ १ अंगुल या ३.१ फीट लगभग पीठ व शेष ९८ अंगुल (४ हाथ या २ अंगुल) या १.६ फीट ऊँची मूर्ति होगी।

एक मंजिल की ऊँचाई :-

भूमिकाङ्गुलमानेन मयस्याष्टोत्तरं शतम् ।
सार्द्धं हस्तत्रयं चैव कथितं विश्वकर्मणा ॥३०॥
प्राहुः स्थपतयश्चात्र मतमेकं विपश्चितः ।
कपोतपालिसंयुक्ता न्यूना गच्छन्ति तुल्यताम् ॥३१॥

मय ने एक मंजिल की ऊँचाई १०८ अंगुल या साढ़े चार हाथ मानी है। लेकिन विश्वकर्मा ने ८४ अंगुल या साढ़े तीन हाथ कही है।

विद्वान् इसमें भेद नहीं समझते है। यदि भूमिकओं में कपोतपाली अर्थात् पक्षियों के बैठने के उपयोग में आने वाला शिखर का घुमाव या बाहर की ओर निकले कंगूरों की ऊँचाई जोड़ लें तो मय व विश्वकर्मा के नाप के बराबर हो जायेंगें।

कपोतपालिरहितं मानं चतुरशीतिकम् ।
भूमिकानां सहतया शतमष्टोत्तरं मतम् ॥३२॥
अंगुलानायतः साम्यं भूमिकासु प्रकीर्तितम् ॥३३॥

पीछे वराहमिहिर ने सभी प्रासादों की जो ऊँचाई बताई है वह विश्वकर्मा के मत से ठीक बैठती है। मय के मत से प्रत्येक मंजिल के मध्य १ हाथ का अगणनीय अन्तर रहेगा।

उद्धरण :- मेरु प्रासाद १२ मंजिल ×३ १/२ हाथ (एक मंजिल)= ४२ हाथ या ६३ फीट कुल ऊँचाई होती है। ४२ हाथ × ४२ = १००८ अंगुल कुल ऊँचाई में १००८/१२ = १ मंजिल ८४ अंगुल या साढ़े तीन हाथ की ही आती है।

अतः विश्वकर्मा की मंजिल शुद्ध ऊँचाई वाली है, जबकि मय की ऊँचाई संधि युक्त है।

अथ प्रतिष्ठाप्रकरण प्रारंभते

अथ प्रतिष्ठा प्रयोग हेतु विशेष

मूर्ति प्रतिष्ठा प्रयोग के पहले गर्भाधान संस्कार हेतु अन्नाधिवास करा दिया जाता है। उसके बाद **दुनिर्मत्तोपशमन होम** (सूक्ष्मरूपेण) अलग से करा दिया जाता है या यज्ञ के दौरान आहुतियां दे दी जाती है। **जलाधिवास** किसी बड़े पात्र में अथवा तालाब या नदीतीर पर करा दिया जाता है।

तत्पश्चात् ३ वेदियों पर यथा यथा विधि में विभिन्न कलश द्रव्यों से **स्नानाभिषेक** करायें। तदन्तर **नेत्रोन्मीलन** संस्कार करायें। मूर्ति की पूजा करें , **धूपादिवास, शयनादिवास, फलादिवास आदि अनेक अधिवास प्रयोग कराये जाते है।**

आचार्य व विप्रगण अधिवास के अनन्तर समय में पुरुषसूक्त या देवता के मंत्रों से आहुतियां, अभिषेक, स्तोत्र वंदना अर्चना कराते रहें।

यज्ञरक्षा हेतु मंडप बाहर **यूप** की स्थापना भी कि जाती है। कई जगह मंदिर के बाहर गरुड़ ध्वज, कीर्तिस्थंभ प्राषाण प्रतिमा भी स्थापित की जाती है। अतः इनका तथा प्रमुख ध्वजा, शंख, चक्र, गदा, वाण, त्रिशूल आदि अस्त्रों का भी अधिवास अलग से करते रहना चाहिये।

कूर्मशिला, ब्रह्मशिला, पिण्डीका का अधिवास कराये। प्रासाद प्रक्षालण करें। रात्रि जागरण करें।

यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद प्रतिमा को यज्ञमंडप की परिक्रमा एवं नगर परिक्रमा कराते हुये प्रासाद में शुभ मुहुर्त्त में स्थापित कर प्रधान न्यास व गायत्री मंत्र उच्चारण कर षोड़शोपचार पूजन चल मूर्ति प्रतिष्ठा में छोटी मूर्तियों का वेदी स्नान, अभिषेक, अधिवासन, प्रदक्षिणा यज्ञमंडप में ही करा दिये जाते है।

बड़ी मूर्तियों का वेदीस्नान, अधिवासन आदि प्रयोग में ही अलग से कर्मकुटीर बना करके कर लिया जाता है। अधिवास दौरान लघु हवनादि कर्म भी वहीं कर्मकुटीर में वेदी बनाकर संपादन हो सकता है।

प्रतिष्ठा हेतु विशेष मंत्राध्याय

(अर्थवेदोक्त)

अलग अलग देवताओं की प्रतिष्ठा समय उनके सहस्त्रनाम, सूक्त, अथर्वशीर्ष तथा वैदिक या तांत्रिक या पौराणिक मंत्रों से विशेष हवन किया जाता है।

सर्वदेव प्रतिष्ठा हेतु विशेष मंत्राः

अथर्ववेद में १८ ऋचायें दी गई है जो प्रतिष्ठा कर्म हेतु विशेष है जिनका प्रचलित पुस्तकों में किसी भी अचार्य ने उल्लेख नहीं किया है। मेरे दृष्टिकोण से इन ऋचाओं से होम वेदी स्नान के बाद एवं प्रतिष्ठा समय पूर्व करना यथार्थ व उचित है, इनका विशेष महत्व है। इन ऋचाओं में प्रार्थना है कि हे देवताओं आप वेदोक्त कर्म में प्रतिष्ठा और संकल्प में देवाह्वान और आशिर्वाद कर्म में मेरे रक्षक हों।

(मृत्यु एवं यम का त्याग दक्षिण में तथा पितर का त्याग अग्किोण में करें पश्चात् प्रणिताजल से यतमान स्त्रुव का मार्जन करें– अर्थवेद का.५ अ.५ सू.२४)

अथ संकल्प **:- ॐ सविता प्रसवादि मंत्रानां अथर्वाऋषि, सविताः प्रभूति देवता, शक्करी जगतीछंद, अस्मिन् कर्मणि क्षत्रे मूर्ति प्रतिष्ठादि कर्म निर्विघ्नता पूर्वक सांगता सिद्ध्यर्थं हवने विनियोगः।**

ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्या-मस्या -माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥१ ॥

अग्नि वनस्पतिना मधिपतिः समावतु। अस्मिन ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्या-मस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥२ ॥

द्यावापृथिवी दातृणा मधिपत्नी ते मावताम् । अस्मिन ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्या-मस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥३ ॥

वरुणोऽपामधिपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥४ ॥

मित्रा वरुणौ वृष्ट्याधिपते तौ मावताम्। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामाकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥५ ॥

मरुतः पर्वतानामधिपतयस्ते मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां

पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥६ ॥

सोमो वीरुधामधिपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥७ ॥

वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥८ ॥

सूर्यश्चक्षुषामधिपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥९ ॥

चन्द्रमा नक्षत्राणामधपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥१० ॥

इंद्रो दिवोऽधिपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥११ ॥

मरुतां पिता पशूनामधपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥१२ ॥

मृत्युः प्रजानामधपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥१३ ॥

यमः पितृणामधपतिः स मावतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ स्वाहा ॥१४ ॥

पितरः परे ते मावंतु। अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठ

स्वाहा ॥१५॥

तता अवरे ते मावन्तु अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधाया मस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठं स्वाहा ॥१६॥

ततस्ततामहास्ते मावंतुअस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधाया मस्यां प्रतिष्ठयामस्यां चित्त्यामस्या-माकूत्यामस्या-माशिष्यस्यां देवहूत्यां ठं स्वाहा ॥१७॥

अथ गणेश याग-प्रतिष्ठा मंत्राः

गणेश याग एवं प्रतिष्ठा में गणपत्यथर्वशीर्ष एवं यजुर्वेद के मंत्रो से होम होता है।

ॐ आ तू न ऽइंद्र व्वृत्रहन्नस्मा कमर्द्धमागहि। महान्महीभिरूतिभिः ॥१॥

त्वमिन्द्रप्प्रतूर्त्तिष्वभि व्विश्वाऽअसि स्पृधः। अशस्तिहा जनिता व्विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥२॥

अनु ते शुष्मन्तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुन्नमातरा। व्विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्न्यवे व्वृत्रं यदिन्द्र तूर्व्वसि ॥३॥

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आवोऽर्व्वाची सुमतिर्व्ववृत्त्यादठं होश्चिद्याव्वरिवोवित्तरासत् ॥४॥

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वठं शिवेभिरद्य परिपाहि नो गयम्। हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्न्नोऽअघशठं सऽ ईशत ॥५॥

प्रवीरया शुचयो दद्रिरे वामद्ध्वर्युभिर्म्मधुमन्तः सुतासः। व्वह व्वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय ॥६॥

गावऽउपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्ण्णा हिरण्यया ॥७॥

काव्ययोराजानेषु क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे। रिशादसा सधस्स्थऽआ ॥८॥

॥ इति गणेश याग मंत्राः॥

।। विष्णु याग प्रतिष्ठा ।।

विष्णु याग प्रतिष्ठा में विष्णु सहस्रसनाम व पुरुषसूक्त से हवन करें।

।। लक्ष्मी याग प्रतिष्ठा ।।

देवी प्रतिष्ठा में श्रीसूक्त, अथर्वशीर्ष एवं सहस्रनाम से हवन करें।

अथ रुद्रयाग स्वाहाकार प्रतिष्ठा मंत्राः

ॐ गणानान्त्वा. स्वाहा। ॐ अम्बेऽ. स्वाहा। इति हुत्वा, ॐ यज्जाग्रतः. (६ मंत्राः) स्वाहा। ॐ सहस्त्रशीर्षा. (१६ मंत्राः) स्वाहा। ॐ अद्भ्य सम्भृत. (६ मंत्राः) स्वाहा। ॐ आशुः शिशनः. (१२ मंत्राः) स्वाहा। ॐ विभ्राड बृहत्पिबतु. (१७ मंत्राः) स्वाहा।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्द्र मन्नयवऽउतोत-ऽइषवे नमः। बाहुब्भ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥१॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ॥२॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हि ठं सीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा ॥३॥

ॐ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्व मिज्जगदयक्ष्मठं. सुमनाऽअसत् स्वाहा ॥४॥

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भ यन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव स्वाहा ॥५॥

ऽअसौयस्ताम्म्रोऽ अरुणऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनठं. रुद्द्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशे वैषा ठ्ठ हेडऽईमहेस्वाहा ॥६॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोऽ पाअदृश्श्रन्न दृश्श्रन्नुदहार्य्यः सः दृष्ट्टो मृडयाति नः स्वाहा ॥७॥

ॐ नमोस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये ऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽ करन्नमः स्वाहा ॥८॥

ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योंर्ज्ज्याम। याश्च्च ते हस्तऽइषवः

परा ता भगवो व्वप स्वाहा ॥९॥

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनी व्विशल्यो बाणवाँ२ऽउत । अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा ॥१०॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयास्म्मा न्विश्श्वतस्त्व मयक्ष्मया परिभुज स्वाहा ॥११॥

ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः । अथोयऽइषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा ॥१२॥

ॐ अवतत्त्य घनुष्ट्वठ सहस्त्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा ॥१३॥

ॐ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे । उभाभ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा ॥१४॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्ब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम् । मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा ॥१५॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्श्वेषु रीरिषः । मा नो व्वीरान् रुद्द्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ॥१६॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च्पतये नमः स्वाहा ॥१७॥

ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशुनाम्पतये नमः स्वाहा ॥१८॥

ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥१९॥

ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२०॥

ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२१॥

ॐ नमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ॥२२॥

ॐ नमो रुद्द्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२३॥

ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२४॥

ॐ नमो रोहिताय स्त्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२५॥

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२६॥

ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२७॥

ॐ नमः ऽउच्चैर्ग्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२८॥

ॐ नमः कृ त्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२९॥

ॐ नमः सहमानाय निव्व्याधिनऽ आव्व्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३०॥

ॐ नमो निषीङ्गिणे ककुभाय स्तेनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३१॥

ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३२॥

ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३३॥

ॐ नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥३४॥

ॐ नमः सृकायिब्भ्यो जिघाᳬसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ॥३५॥

ॐ नमो ऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३६॥

ॐ नम ऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३७॥

ॐ नम ऽइषुमद्भ्यो धन्न्वायिब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥३८॥

ॐ नमऽआतन्न्वानेब्भ्यः प्प्रतिदधानेब्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥३९॥

ॐ नमऽ आयच्छद्भ्यो स्यद्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥४०॥

ॐ नमो व्विसृजद्भ्यो व्विद्ध्यद्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥४१॥

ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्ग्रद्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥४२॥

ॐ नमः शयानेब्भ्यऽ आसीनेब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥४३॥

ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥४४॥

ॐ नमः सभाब्भ्य सभापतिब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥४५॥

ॐ नमोऽश्श्वेब्भ्योऽश्श्वपतिब्भ्यश्च्चावो नमः स्वाहा ॥४६॥

ॐ नमः ऽआव्व्याधिनीब्भ्यो व्विविद्ध्यन्तीब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥४७॥

ॐ नमऽ उगणाब्भ्यस्तृᳬहतीब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥४८॥

ॐ नमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥४९॥

ॐ नमो व्व्रातेब्भ्यो व्व्रातपतिब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५०॥

ॐ नमो गृत्सेब्भ्यो गृत्सपतिब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५१॥

ॐ नमो व्विरूपेब्भ्यो व्विश्श्वरूपेब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५२॥

ॐ नमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५३॥

ॐ नमो रथिब्भ्योऽ अरथेब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५४॥

ॐ नमः क्षत्तृब्भ्यः सङ्गृहीतृब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५५॥

ॐ नमो महद्ब्भ्योऽ अर्ब्भकेब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५६॥

ॐ नमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५७॥

ॐ नमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५८॥

ॐ नमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ट्ठेब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥५९॥

ॐ नमः श्वनिब्भ्यो मृगयुब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥६०॥

ॐ नमः श्वब्भ्यः श्वपतिब्भ्यश्च्चवो नमः स्वाहा ॥६१॥

ॐ नमो भवाय च रुद्द्राय च स्वाहा ॥६२॥

ॐ नमो शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥६३॥

ॐ नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥६४॥

ॐ नमः कपर्द्दिने च व्व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥६५॥

ॐ नमः सहस्त्राक्क्षाय च शतधन्न्वने च स्वाहा ॥६६॥

ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्ट्टाय च स्वाहा ॥६७॥

ॐ नमो मीढुष्ट्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥६८॥

ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा ॥६९॥

ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा ॥७०॥

ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ॥७१॥

ॐ नमो ऽग्ग्रयाय च प्प्रथमाय च स्वाहा ॥७२॥

ॐ नमो आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥७३॥

ॐ नमः शीग्घ्र्याय च शीब्भ्याय च स्वाहा ॥७४॥

ॐ नमो ऊर्म्म्याय चावस्वन्न्याय च स्वाहा ॥७५॥

ॐ नमो नादेयाय च द्द्वीप्प्याय च स्वाहा ॥७६॥
ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥७७॥
ॐ नमो पूर्व्वजाय चापराय च स्वाहा ॥७८॥
ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥७९॥
ॐ नमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च स्वाहा ॥८०॥
ॐ नमः सोब्भ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा ॥८१॥
ॐ नमः याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा ॥८२॥
ॐ नमः श्लोक्क्याय च चावसन्न्याय च स्वाहा ॥८३॥
ॐ नमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा ॥८४॥
ॐ नमः व्वन्न्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा ॥८५॥
ॐ नमो श्रवाय च प्प्रतिश्रवाय च स्वाहा ॥८६॥
ॐ नमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥८७॥
ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥८८॥
ॐ नमो बिल्म्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥८९॥
ॐ नमो व्वर्म्मिणे च वरूथिने च स्वाहा ॥९०॥
ॐ नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥९१॥
ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च स्वाहा ॥९२॥
ॐ नमो धृष्णवे च प्प्रमृशाय च स्वाहा ॥९३॥
ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥९४॥
ॐ नमस्तीक्क्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ॥९५॥
ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्न्वने च स्वाहा ॥९६॥
ॐ नमः स्स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा ॥९७॥
ॐ नमः काट्याय च नीप्प्याय च स्वाहा ॥९८॥
ॐ नमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥९९॥
ॐ नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा ॥१००॥

ॐ नमः कूप्प्याय चावट्ट्याय च स्वाहा ॥१०१॥
ॐ नमो व्वीद्ध्र्याय चातप्प्याय च स्वाहा ॥१०२॥
ॐ नमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्त्याय च स्वाहा ॥१०३॥
ॐ नमो व्वर्ष्ष्याय चावर्ष्ष्याय च स्वाहा ॥१०४॥
ॐ नमो व्वात्त्याय च रेष्म्म्याय च स्वाहा ॥१०५॥
ॐ नमो वास्तव्व्याय च वास्तुपाय च स्वाहा ॥१०६॥
ॐ नमः सोमाय च रुद्द्राय च स्वाहा ॥१०७॥
ॐ नमस्ताम्म्राय चारुणाय च स्वाहा ॥१०८॥
ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ॥१०९॥
ॐ नमऽ उग्ग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥११०॥
ॐ नमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥१११॥
ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥११२॥
ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यो स्वाहा ॥११३॥
ॐ नमस्ताराय स्वाहा ॥११४॥
ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्त्राहा ॥११५॥
ॐ नमः शंकराय च मयस्कराय च स्वाहा ॥११६॥
ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥११७॥
ॐ नमः पार्य्याय चवार्य्याय च स्वाहा ॥११८॥
ॐ नमः प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥११९॥
ॐ नमस्तीर्त्थ्याय च कुल्ल्याय च स्वाहा ॥१२०॥
ॐ नमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा ॥१२१॥
ॐ नमः सिकत्त्याय च प्प्रवाह्याय च स्वाहा ॥१२२॥
ॐ नमः किंठ शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥१२३॥
ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥१२४॥
ॐ नमऽ इरिण्ण्याय च प्प्रपत्थ्याय च स्वाहा ॥१२५॥

ॐ नमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ट्ठ्याय च स्वाहा ॥१२६॥

ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥१२७॥

ॐ नमः हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥१२८॥

ॐ नमो काटट्याय च गह्वरेष्ट्ठाय च स्वाहा ॥१२९॥

ॐ नमः शुष्क्क्याय च हरित्त्याय च स्वाहा ॥१३०॥

ॐ नमः पार्ठ सव्व्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥१३१॥

ॐ नमो लोप्प्याय चोलप्प्याय च स्वाहा ॥१३२॥

ॐ नमऽ ऊर्व्व्याय च सूर्व्व्याय च स्वाहा ॥१३३॥

ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ॥१३४॥

ॐ नमऽ उद्गुरमाणाय चाभिग्घ्नते च स्वाहा ॥१३५॥

ॐ नमऽ आखिदते च प्प्रखिदते च स्वाहा ॥१३६॥

ॐ नमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च्च वो नमः स्वाहा ॥१३७॥

ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ७ हृदयेभ्यो स्वाहा ॥१३८॥

ॐ नमो व्विचिन्वत्केभ्यो देवाना ७ हृदयेभ्यो स्वाहा ॥१३९॥

ॐ नमो व्विक्षिणत्केभ्यो देवाना ७ हृदयेभ्यो स्वाहा ॥१४०॥

ॐ नमः आनिर्हतेभ्यो देवाना ७ हृदयेभ्यो स्वाहा ॥१४१॥

ॐ द्रापेऽअन्धसस्प्पते दरिद्द्र नीललोहित। आसाम्प्रजानामेषाम्प-
शूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मोचनः किञ्चनाममत् स्वाहा ॥१४२॥

ॐ इमा रुद्द्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्द्वीराय प्प्रभरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे व्विश्श्वम्पुष्ट्टङ्ग्रामेऽ
अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥१४३॥

ॐ या ते रुद्द्र शिवा तनूः शिवा व्विश्श्वाहा भेषजी ।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा ॥१४४॥

ॐ परि नो रुद्द्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परित्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः ।
अव स्त्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्ष्व मीड्ढ्वस्तोकाय
तनयाय मृड स्वाहा ॥१४५॥

ॐ मीढुष्ट्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव । परमेव्वृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिं व्वसानऽआचर पिनाकम्बिब्भ्रदागहि स्वाहा ॥१४६॥

ॐ व्विकरिद्द्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्त्र ठं हेतयोऽन्न्यमस्म्मन्निवपन्तुताः स्वाहा ॥१४७॥

ॐ सहस्त्राणि सहस्त्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखाकृधि स्वाहा ॥१४८॥

ॐ असङ्ख्याता सहस्त्राणि ये रुद्द्रा अधि भूम्म्याम् ।
तेषा ठं सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१४९॥

ॐ अस्म्मिन्न्महत्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि ।
तेषा ᳚ सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५०॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवठं रुद्द्राऽउपश्श्रिताः ।
तेषा ᳚ सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५१॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः क्षमाचराः ।
तेषा ᳚ सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५२॥

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्प्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ।
ॐ तेषा ᳚ सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५३॥

ॐ ये भूतानामधिपतयोव्विशिखासः कपर्द्दिनः ।
तेषा ᳚ सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५४॥

ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्य्युधः ।
तेषा ᳚ सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५५॥

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषा ᳚ सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५६॥

ॐ येऽन्नेषु विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषा ᳚ सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५७॥

ॐ येऽएतावन्तश्च्च भूयाठं. सश्च्च दिशो रुद्द्रा व्वितस्त्थिरे ।
तेषा ᳚ सहस्त्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि स्वाहा ॥१५८॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः तेब्भ्यो दश

प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्च्चनो द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥१५९॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽइषवः। तेब्भ्योदश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्च्चनो द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥१६०॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेब्भ्यो पृथिव्यां येषामन्नमिषवः। तेब्भ्योदश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्च्चनो द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥१६१॥

रुद्रपाठ के सातवें अध्याय के मंत्रों की आहुतियां देवे यथा –

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ व्वयर्ठ. सोम. (८ मंत्राः, पाठमात्रम्)। ॐ उग्रश्च. (७ मंत्राः, पाठमात्रम्)। ॐव्वाजश्च. ॥१॥ प्प्राणश्च. ॥२॥ ओजश्च ॥३॥ ज्यैठ्यं च. ॥४॥ स्वाहा।

(२) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)। ॐ सत्यञ्च. ॥१॥ ऋतञ्च. ॥२॥ यन्ता च. ॥३॥ शञ्च ॥४॥ स्वाहा।

(३) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)। ॐ ऊर्क्च. ॥१॥ रयिश्च. ॥२॥ वित्तश्च. ॥३॥ व्व्रीहयश्च ॥४॥ स्वाहा।

(४) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)। ॐ अश्मा च. ॥१॥ अग्निश्च. ॥२॥ वयसुच. ॥३॥ स्वाहा।

(५) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)। ॐ अग्निश्च मऽइन्द्रश्च. ॥१॥ मित्रश्च. ॥२॥ पृथिवी च. ॥३॥ स्वाहा।

(६) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)। ॐ अर्ठ. शुश्च. ॥१॥ आग्ग्रयणश्च. ॥२॥ स्त्रुश्च. ॥३॥ स्वाहा।

(७) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)। ॐ अग्निश्च. ॥१॥ व्रतञ्च. ॥२॥

(८) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)। ॐ एका च. ॥१॥

(९) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)। ॐ चतस्त्रश्च. ॥१॥

(१०) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)। ॐ त्र्यविश्च ॥१ ॥ॐ षष्ठ्ठवाट् च. ॥२ ॥ स्वाहा।

पुनः ॐ यज्जाग्रतः. (६ मंत्राः) स्वाहा।

ॐ सहस्त्रशीर्षा. (१६ मंत्राः) स्वाहा।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः. (६ मंत्राः) स्वाहा।

ॐ आशुः शिशानः (१२ मंत्राः) स्वाहा।

ॐ विब्भ्राड् बृहत पिबतु. (१७ मंत्राः) स्वाहा।

(११) ॐ नमस्ते. (१६१ आहुतयः)

ॐ व्वाजाय. स्वाहा ॥१ ॥ ॐ आयुर्य्यज्ञेन कल्पताम् . स्वाहा ॥२ ॥ ॐ ऋचं वाचम्. स्वाहा। ॐ यन्मे छिद्रम्. स्वाहा। ॐ भू र्भुवः स्वः तत्सवितुः. स्वाहा। ॐ कया न श्चित्र. स्वाहा। ॐ कस्त्वा सत्यो मदानाम्. स्वाहा। ॐ अभीषुणः. स्वाहा। ॐ कया त्वन्नऽ ऊत्याभि. स्वाहा। ॐ इंद्रो व्विश्वस्य. स्वाहा। ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः . स्वाहा। ॐ शन्नो व्वातः पवता ठं शन्नः. स्वाहा। ॐ अहानि शं भवतु नः स्वाहा। ॐ शन्नो देवीः स्वाहा। ॐ स्योना पृथिवी. स्वाहा। ॐ आपो हि ष्ठा. स्वाहा। ॐ यो वः शिवतमो रसः स्वाहा। ॐ तस्माऽ अरङ्गमाम वः. स्वाहा। ॐ द्यौः शांतिः. स्वाहा। ॐ दृते दृठं. ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा. स्वाहा। ॐ दृते दृठं. ह मा ज्योक्ते. स्वाहा। ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे. स्वाहा। ॐ नमस्ते अस्तु व्विद्युते. स्वाहा। ॐ यतोयतः समीहसे. स्वाहा। ॐ सुमित्रिया नऽ आपः. स्वाहा। ॐ तच्चक्षुर्द्देवहितम्. स्वाहा। ॐ सद्योजातम्. स्वाहा। (५ मन्त्राः, पाठमात्रम्)। ततः षडङ्गन्यासं कुर्यादिति।

॥इति ॥

सूर्य याग स्वाहाकार मंत्राः

ॐ व्विब्भ्राड् बृहत्पिबतु सोम्म्यं मद्ध्वायुर्द्दध यज्ञपताव विह्रुतम् ॥ व्वातजूतो योऽ अभिरक्षतित्मना प्प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति ॥१ ॥

उदुत्यं जातवेदसं देवं व्वहन्ति केतवः ॥ दृशे व्विश्वाय सूर्य्यम् ॥२ ॥

येना पावक चक्षसाभुरण्यन्तं जनाँ २ ॥ अनु। त्वं व्वरुण पश्यसि ॥३ ॥

दैव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽ आगतरठं. रथेन सूर्य्यत्वचा॥ मद्ध्वा यज्ञ ठं. समञ्जाथे॥ तं प्रत्नथाऽयं व्वेनश्चित्रं देवानाम्॥४॥

तं प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदरठं. स्वर्विदम्॥ प्रतीचीनं व्वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु व्वर्द्धसे॥५॥

अयं व्वेनश्चोदयत्पृश्निगब्भी ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने॥ इममपा ᳪ सङ्गमेसूर्य्यस्य शिशुन्न व्विप्प्रा मतिभीरिहन्ति ॥६॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणस्याग्ग्नेः ॥ आप्रा द्यावापृथिवीऽ अन्तरिक्ष ठं. सूर्य्यऽ आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥७॥

आ नऽ इडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्वानरः सविता देवऽ एतु॥ अपि यथा युवानो मत्सथा नो व्विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ॥८॥

यदद्य कच्च व्वृत्रहन्नुदगाऽ अभि सूर्य्य॥ सर्व्वं तदिन्द्र ते व्वशे॥९॥

तरणिर्व्विश्वदर्शतो ज्ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य॥ व्विश्वमाभासि रोचनम् ॥१०॥

तत्सूर्य्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततं ठं. सञ्जभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री व्वासस्तनुतेसिमस्मै॥११॥

तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति॥१२॥

बण्महाँ २ असि सूर्य्य बडादित्य महाँ२ असि। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धादेव महाँ२ असि॥१३॥

बट् सूर्य्य श्रवसा महाँ२ असि सत्रा देव महाँ२ असि। मह्ना देवानामसूर्य्यः पुरोहितो व्विभु ज्ज्योतिरदाब्भ्यम्॥१४॥

श्रायन्तऽ इव सूर्य्यं व्विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। व्वसूनि जाते जनमानऽ ओजसा प्प्रति भागं न दीधिम॥१५॥

अद्या देवाऽ उदिता सूर्य्यस्य निरठं. हसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नो मित्रो व्वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽ उत द्यौः॥१६॥

आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥१७॥

॥ *अथ हनुमत प्रतिष्ठायाम विषये* ॥

पुरुषसूक्त, रुद्रसूक्त, सौरसूक्त का पाठ व सहस्त्रनाम, हवन करें।

॥ *अथ श्रीराधाकृष्ण प्रतिष्ठा* ॥

श्रीसूक्त, पुरुषसूक्त, नारायण अथर्वशीर्ष, विष्णुसहस्त्रनाम एवं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र से हवन करें।

॥ *अथ विष्णु प्रतिष्ठा* ॥

पुरुषसूक्त व सहस्त्रनाम से हवन करें।

॥ *अथ भैरव क्षेत्रपाल प्रतिष्ठा* ॥

पुरुषसूक्त, रौद्रसूक्त, बटुक भैरव नामावलि से हवन करें।

अथ मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु अधिवासनादि

प्रतिष्ठा कर्म के १, ३, ५, ९ दिन पूर्व से यज्ञारंभ करवाकर उसकी पूर्णाहुति करवाकर मूर्ति विषय हेतु अधिवासनादि कर्म करायें या प्रतिदिन एक अधिवासन भी साथ में करते जायें।

आदौ वास्तु गर्तस्थापनम् :- (विशेष विधान पुस्तक के अंतिम पृष्ठों में है) वास्तु मूति को प्रासाद में खनन करके स्थापित करे उसके लिये प्रासाद के चौसठ भाग कल्पित करके अग्निकोण पद के उत्तर में आकाशपद में गड्ढा करे उसमें कच्ची मिट्टी के बर्तन (सिकोरे) में दही दूर्वा सप्तधान्य शैवाल्य (नदी की घास) गंधाक्षत, पुष्प युक्त वास्तु प्रतिमा को ढककर गर्त में रखें। गर्त में जल भरें वास्तु मूर्ति रखें पुनः मिट्टी से ढकदेवें। भूमि पर गंधाक्षत करें।

दुर्निमित्तोपशमन हवनम्

अगर शिल्पी के यहां से प्रतिमा लानी है तो शिल्पी के यहां पूजन कर दुर्निमित्तोपशमन होम करके मंगल वाद्य सुवासनियों सहित प्रासाद की परिक्रमा करके कर्म कुटीर या मंडप में रखें। शिल्पी को वस्त्रादि दान करें

देव प्रतिमा के आगे कलश स्थापन करें उनमें तीर्थों का आवाहन करें, एवं कलशों के चारो दिशाओं में दश दिक्पालो का आवाहन पूजन करें।

संकल्प :- ॐ पूर्वोक्त शुभ पुण्यतिथौयां अमुक गोत्रोत्पन्न अमुकाहं अस्य प्रतिमादिषु न्यूनातिरिक्त पाषाणदोष प्राणिवधादि दुर्निमित्तोपशमनार्थं प्रतिमा योग्यं घृतेन तिलैर्वा होमं करिष्ये।

स्थण्डिल पर प्रजाप्रत्यादि हवन करके प्रधान देवताओं की निम्न मंत्रों से प्रत्येक की १०८ आहुतियां शमीपल्लव व तिलादि द्रव्यों से देवे।

ॐ परंमृत्यो ऽ अनुपरेहि पन्थां यस्ते
ऽ अन्य इतरो देवयानात् ।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमिमानः प्रजाः ॐ
रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा ॥१॥

(इदं मृतवे न मम)

ॐ अघोरेभ्यो ऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्वेभ्य सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥२॥

(इदं अघोराय न मम)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिमं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥३॥

(इदं त्र्यंबकाय न मम)

ॐ यदग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये ।
यदेनश्च कृमा वयमिदं तदवयजामहे स्वाहा ॥४॥

(इदं रुद्राय न मम)

इसके बाद देव से प्रार्थना करें :-

ॐ त्वयि संपूजयामीशं नारायणमनामयम् ।
रहितः सर्वदोषैस्त्वमृद्धियुक्तः सदा भव ॥

इसके बाद प्रतिमा का कुशाओं से मार्जन करे। कलशों के जल से संप्रोक्षण करें।

अन्नाधिवास (गर्भाधान संस्कार)

यद्यपि प्रतिष्ठा पद्धतियों में व्रणभंग एवं जलाधिवास पहले लिखा है परन्तु लोकाचार में प्रतिमा को धान्य में अधिवासन पहले करवाकर गर्भाधान संस्कार की भावना कल्पित करते है। उसके बाद जलाधिवास करवाते है।

अथ जलाधिवास

बडी मूर्ति हो तो कर्मकुटीर में ही जलाधिवास कराते है। छोटी मूर्ति को रथ में बिठाकर नदी या जलाशय पर ले जाकर अधिवास करवाते है।

प्रतिमा को रथ में आरोपित करते समय मंत्र पढें -

ॐ रथेतिष्ठन्नयति वाजिनः पुरोयत्र यत्रकामयते सुखारथिः ।
अभिशूनां महिमानं पनायतमनः पश्चादनु यच्छन्तिरश्मयः ॥

व्रणभंग :- आचार्य मधु एवं घृत से अभ्यंग (स्नान) से व्रणभंग करे तत्पश्चात् मोम से नेत्रों का आवरण कर देवे। फिर गुरु से प्रार्थना करे -

देवस्य अवयवान् सम्यक निरीक्षस्व गुरो ।

"**ॐ अपसर्पन्तु**" इत्यादि मंत्रों से भूतोत्सारण करे, भगवान को उत्तर या पूर्वाभिमुख विराजमान करे।

॥ *अथ अग्न्युत्तारणम्* ॥

अग्न्युत्तारण इस समय करें या वेदी स्नान पूर्व भी करा सकते है। दोनों विधान प्रचलित है।

संकल्प **:-**

देशकालौ संकीर्त्य सपरिवाराणां विष्णवादि-शिवादि मूर्तिनां अङ्ग प्रत्यङ्ग संधि समुत्पन्न वासाग्निकष्टकान्या तपोग्नि निरासार्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये।

इस कर्म हेतु "**दो सूक्त**" विशेष प्रचलित है (१) "**समुद्रस्य त्वाव**" इत्यादि आठ ऋचायें (२) "**अग्निः सप्ति**" इत्यादि सप्त ऋचायें।

इनके अलावा "**पुरुषसूक्त**" शिवजी के लिये "**नमस्ते...**" इत्यादि १६ मंत्र देवी के लिसे "**श्रीसूक्त**" से दूध व जलधारा से अभिषेक करे।

"**अश्मन्नूर्य**" **अनुवाक, पावमानसूक्त, हिरण्यवर्णा** इत्यादि चार मंत्रों से भी अभिषेक कर सकते है।

(१) **समुद्रस्य त्वाव... ऋचाओं** से पुस्तक के अंतिम में से पृष्ठ संख्या **५२५** पर देखे।

या निम्नऋचायें पढ़ें

पहली आवृत्ति में पहले श्लोक में (अग्निः) को नहीं पढ़कर आगे से सभी

श्लोकों में अग्नि सहित पढ़ें।

(अग्निः) सप्तिं वाजं भरं ददात्यग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम् ।
अग्नि रोदसी विसचरत्समञ्जन्नग्निर्नारी वीर कुक्षिं पुरन्धिम् ॥१॥
अग्नेरप्नसः समिदस्तु भद्राऽग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।
अग्निरेकं चोदयत्समत्स्वग्निर्वृत्राणि दयते पुरूणि ॥२॥
अग्निर्ह त्यं जरतः कर्णमावाऽग्निरद्भ्यो निरद हज्जरूथम् ।
अग्निरत्रिं धर्म उरुष्यदन्तरग्निर्नृमेधं प्रजया सृजत्सम् ॥३॥
अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषि यः सहस्त्रा सनोति ।
अग्निर्दिवि हव्यमा ततानाग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा ॥४॥
अग्नेमुक्थैर्ऋषयो विह्वयन्ते ऽग्निं नरो यामनि बाधितासः ।
अग्निं वयो अन्तरिक्षे पतन्तोऽग्निः सहस्त्रा परियाति गोनाम् ॥५॥
अग्निं विश ईडते मानुषीर्या अग्निं मनुषो नहुषो वि जाताः ।
अग्निर्गन्धर्वा पथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता ॥६॥
अग्नये ब्रह्म ऋभवस्त तक्षुरग्निं महामवोचामा सुवृक्तिम् ।
अग्ने प्राव जीरतारं यविष्ठा ऽग्ने महिद्रविणमा यजस्व ॥७॥

अश्मन्नूर्ज - अनुवाक

अश्मन्नूर्जदश नमस्ते पञ्चाग्निस्तिग्मेन नव चक्षुषः पिताष्टावाशुः शिशानः सप्तदशोदेनंक्रमध्वमग्निना पञ्चदशकौ शुक्रज्योतिः सप्तमे ठ स्तनं त्रयोदशन नैकोनशतम्॥ अश्मन्नूर्जम्पर्वतेशि श्रियाणा मुद्भ्य ओषाधीभ्यो वनस्पतिभ्योऽअधिसभृतम्पयः। तान्नइष मूर्जन्धत्त मरुतः स ठ रराणा ऽअश्मँस्तेक्षुन्मयित उर्ग्यन्द्विष्मस्तन्तेशु गृच्छतु ॥१॥ इमामे अग्न इष्टकाधेनवः सन्त्वेका च दशच दशच शतञ्चशतञ्च सहस्त्रञ्च सहस्त्रञ्चा युतञ्चायुतञ्चनियुतञ्चनियुञ्च प्रयुतञ्चा बुदञ्चन्यर्बदञ्च समुद्रश्च मद्धयञ्चान्तश्च परार्द्धश्चैतामे ऽअग्न इष्टकाधेनवः सन्त्व-मत्रामुष्मिं लोके ॥२॥

(हिरण्य अनुवाक)

हिरण्यवर्ण्णाः शुचयः पावका यासु जातः कश्यपो यास्विन्द्र।

अग्नि या गर्भ दधिरे विरूपास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ॥१॥
या साँ राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम् ।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ॥२॥
या साँ देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्ष बहुधा भवन्ति ।
या पृथिवीं पयसोन्दन्ति शुक्रास्तो न आपः शं स्योना भवन्तु ॥३॥
शिवेन मा चक्षुषा पश्यताऽऽपः शिवया तनुवोप स्पृशत त्वचं मे । सर्वान् अग्नीं रप्सुषदो हुये वो मयि वर्चो बलामोजोनिघत्त ॥४॥

इस प्रकार अग्न्युत्तारण संस्कार प्रार्थना करें –

ॐ त्वा संपूजयामीशं नारायणमनामयम् ।
रहिता ऽशेष दोषैस्त्वमृद्धियुक्ता सदा भव ॥१॥
सर्वसत्वमयं शातं परं ब्रह्म सनातनम् ।
त्वामेवालंकरिष्यामि त्वं वंद्यो भवते नमः ॥२॥

इस प्रकार नमस्कार करे कुशा एवं वस्त्र से वेष्टित प्रतिमा को जलद्रोणी में शयन (**जलाधिवास**) करावें। पश्चात् विप्रवृन्द **शांति अध्याय** का पाठ करे। **पुण्याहवाचन** करें।

जलाधिवास प्रमाण रात्रिपर्यन्त, प्रहरपर्यन्त या गोदौहन संमित काल भी कहा है, जैसी सुविधा हो करें।

जलाधिवासनं रात्रौ यामं गोदोहनमात्रं वा कुर्यात् ॥

पश्चात्भगवत्प्रतिमाओं के दक्षिण हस्तदेवी के वामहस्त में श्वेत ऊन में सर्वोषधि तथा मेनसिल बंधन से **रक्षासूत्रबंधन** करें।

मंत्र :-

ॐ रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठ मुप यामि शर्म ।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा सरिषः पातु न त्तम्॥

(अथवा)

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायण हिरण्य ठ शतानीकाय सुमनस्य मानाः ।
तन्म आबध्नामि शत शारदाया-युष्माञ्जरदष्टि र्यथासम् ॥

(अथवा)

ॐ कनिक्रदज्जुनुषं प्रब्रुवाण इयर्तिं वाचमरितेव नावम् । सुमंगलश्च शकुने भवासि मा त्वा चिदभिभा विश्व्या विदत् ॥

प्रतिमा को व वस्त्रादि से आच्छादित करे जल में सप्तमातृका, पंचकषाय (पत्ते) पंचामृत, भस्म, गोमूत्र, गौमय, गौदुग्ध, ड़ालें एवं जलमातृका व जीवमातृका का पूजन करे।

प्रथम गणपतिपूजन करे फिर मातृकापूजन करे।

जलमातृका पूजनम् – जल में पूजन करे।

ॐ मत्स्यै नमः ॥१ ॥ ॐ कच्छप्यै नमः ॥२ ॥ ॐ कूर्म्यै नमः ॥३ ॥ ॐ वाराह्यै नमः ॥४ ॥ ॐ दर्दुर्य्यै नमः ॥५ ॥ ॐ शिशुमार्यै नमः ॥६ ॥ ॐ ईश्वर्यै नमः ॥७ ॥ नाममंत्रेण षोडशोपचारैः पूजनम्।

जीवमातृका पूजनम् – ७ अक्षत् पुजों पर या दीवार पर रेखाओं को अंकित करे। **ॐ मत्स्यै नमः ॥१ ॥ ॐ ह्द्यै नमः ॥२ ॥ ॐ गोधायै नमः ॥३ ॥ ॐ मकर्यै नमः ॥४ ॥ ॐ डुण्डुभ्यै नमः ॥५ ॥ ॐ दर्दुर्यै नमः ॥६ ॥ ॐ जल्यै नमः ॥७ ॥**

प्रत्येक की गंधादि से पूजन करें।

ॐ चतुषष्टियोगिनीभ्यो नमः से जल योगिनी पूजा करे।

क्षेत्रपाल पूजनम् – वायव्य कोण में त्रिकोण वृत्त चतुरस्त्र बनाकर उसमें "**ॐ क्षेत्रपाल इहागच्छ इहतिष्ठ**" से आवाहन पूजन करें।

"**दधिमाषभक्त**" से बलि प्रदान करें।

जल पूजनम् – बलिपश्चात् आचमन कर जल पूजन करें।

ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः। ॐ मानसादिसरोभ्यो नमः। ॐ पुष्करादितीर्थेभ्यो नमः। ॐ गंगादिमहानदीभ्यो नमः।

गंधाक्षत जल में छोडें जावें वरुण पूजा करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहबोध्युरुश ठ समान आयुः प्रमोषी।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इहतिष्ठ। अपामधिपति वरुणाय नमः॥
गंधाक्षत से पूजा करके माषभक्त बलि देवें। फिर जल में "**पंचनद्य**" मंत्र से

पंचामृत "**पयपृथिव्यां**" मंत्र से पय "**सवितामंत्र**" से गोमूत्रादि द्रव्य प्रक्षेप करें।

कलश स्थापन विधि से चारों दिशाओं में एवं मध्य में एक कलश स्थापित करें। कलशों में निम्न मंत्र से जल भरें।

ॐ आ कलशेषु धावति पवित्रे परिषिच्यते। उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते ॥१॥

आकलेषु धावति श्योनो वर्म वि गाहते। अभिद्रोणा कनिक्रदत् ॥२॥

तत्पश्चात् "**ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः शदाशास्ते ....**" मंत्र से वरुण पूजन करके आम्रपल्लव और पुष्पमालाओं से कलशों को सुशोभित करे। जल स्थित देव से प्रार्थना करे -

ॐ त्वदधिष्ठान संयोग्यं च त्वप्रसादात् सुरेश्वर॥

यह उच्चारित करने के बाद धूपादि करें। इस प्रकार न्यूनातिन्यून मुहूर्त्त पर्यंत भगवान का जलधिवास करे। "**पुरुषसूक्त**" "**पावमानसूक्त**" आदि का पाठ करे।

पश्चात् जल से निकालकर वस्त्र बिछाकर स्नान गंधादि से पुन· पूजन करे पूर्व स्थापित ४ कलशों के साथ देवताओं को उठावें।

ॐ उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुड़ध्वज।
उत्तिष्ठ कमलकान्तं त्र्यैलोक्यै मंगलं कुरु॥
ॐ उत्तिष्ठ जगद्गुरुं उत्तिष्ठ वृषभध्वज।
उत्तिष्ठ उमाकांतं मंगलं च अभयं कुरु॥

इस प्रकार उत्थापन करके आचार्य भगवान को रथ या विमान में बिठाकर भूषित मूर्तियों को मार्ग में शनैः शनैः प्रस्थान करे। इस प्रकार भगवान को महामण्डप की प्रदक्षिणा कराते हुये स्नान मंडप में ले जावे।

मंडप मे मध्यम वेदिका पर भद्रासन पर प्राङ्मुख देव को विराजमान करे उनके आगे कलशों को भी "**ॐ भद्रं कर्णेभि....**" इत्यादि मंत्रों से विराजमान करे।

नोट :- जहाँ नदी या कुण्ड आदि नहीं हो तो टब या बड़े बर्तन में भी साधारण प्रक्रिया की जा सकती है।

(इति जलाधिवासन विधिः)

अथ देवस्नपन विधि

(त्रिवेदी स्नानम्)

दक्षिण, मध्य एवं उत्तर में तीन वेदियां बनायें उन पर चित्र में दर्शायेनुसार कलश स्थापित करें तथा उन में लिखे हुये द्रव्य डालें। अगर मूर्ति छोटी हो तो प्रत्येक वेदी के सामने ३ वेदियां देवता के स्नान हेतु बनायें। उन पर अक्षतादि या गुलाल से स्वतिक बनाये। मंडल का पञ्चगव्य से प्रोक्षण करे।

बालू मिट्टी से ३ वेदियां बनावें उन पर चावलों से या रंगोली से स्वास्तिक बनावें। वेदियों पर भद्रपीठ (चौकीयां) रखें विश्वकर्मा का ध्यान करें। –

ॐ विश्वकर्मा तु स्मर्तव्यः श्मश्रुलोमांसलाधरः सन्दंशपाणिर्द्विजस्तेजो मूर्तिः प्रतापवान्।

स्नान वेदी पश्चिम में बनाये ताकि देवता का मुँह पूर्व में हो सके। मूर्ति बड़ी हो तो मध्य में एक वेदी पर ही रख लेवें। छोटी होतो प्रत्येक वेदी के सामने चौकी पर मूर्ति रखकर भी स्नान कराया जा सकता है। सप्तधान्यों पर जलपूर्ण कलश रखें त्रिसूत्रि से वेष्टन करें, और उनमें पल्लव रखें। दक्षिण वेदी पर कुशान्तरण करके **'ॐ भद्रं कर्णेभि'** मंत्र से मूर्ति को विराजमान करें।

दक्षिण वेदीस्नान विधि

दक्षिण वेदी पर ११ कलश रखें उनमें यथा क्रम द्रव्य ड़ालें।"१२ वां स्थपति" नामका कलश प्रतिमा के पास स्थापित करे उसकी पूजा करे सभी तीर्थों का आवाहन करें।

ॐ काशी कुशस्थली मायाऽ वन्त्ययोध्या-मधोः पुरी ।
शालीग्रामं सगोकर्णं नर्मदा च सरस्वती ॥१॥
तीर्थान्येतानि कुंभेऽ स्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात् ।
झषारूढा सरोजाक्षी पद्महस्ता शशिप्रिया ॥२॥
आगच्छतु सुरजेष्ठा गंगा पापप्रणाशिनी ।
नीलोत्पल दलश्यामा पद्महस्ताम्बुजेक्षणा ॥३॥
आयान्तु यमुना देवी कूर्मयानस्थिता सदा ।
प्राची सरस्वती पुण्या पयोष्णी गौतमी तथा ॥४॥
उर्मिला चन्द्रभागा च सरयू गंडकी तथा ।

जम्बुका च शतद्रुश्च कलिका सुषमा तथा ॥५॥
वितस्ता च विपाशा च शर्मदा च पुनः पुनः ।
गोदावरी महावर्ता शर्करावर्त मार्जनी ॥६॥
कावेरी कौशकी चैव तृतिया च महानदी ।
विटंका प्रतिकूला च सोमनंदा च विश्रुता ॥७॥
करतोया वेत्रवती देविका वेणुका च या ।
आत्रेय गंगा वैतरणी काश्मीरी ह्रादिनी च या ॥८॥
प्लावनी च शवित्रा सा कल्माषा संशिनी तथा ।
वसिष्ठा च अपापा च सिन्धुवत्यारुणी तथा ॥९॥
तामा चैव त्रिसंध्या च तथा मंदाकिनी परा ।
तैलकाह्नी च पारा च दुन्दुभीर्नकुली तथा ॥१०॥
नीलगंधा च बोधा च पूर्ण चन्द्रा शशिप्रभा ।
अमरेशं प्रभासं च नैमिषं पुष्करे तथा ॥११॥
आषाढी डिण्डिभारत्नं भारभूतं वसाकुलम् ।
हरिश्चन्द्रं परं गुह्यं मध्यं मध्यमकेश्वरम् ॥१२॥
श्रीपर्वतं समाख्यातं जलेश्वरमतः परम् ।
आम्रातकेश्वरं चैव महाकालं तथैव च ॥१३॥
केदारमुत्तमं गुह्यं महाभैरवमेव च ।
गया चैव कुरुक्षेत्रं गुह्यं कनखलं तथा ॥१४॥
विमलं चन्द्रहासं च माहेन्द्रं भीममष्टकम् ।
वस्त्रापदं रुद्रकोटिमविमुक्तं महालयम् ॥१५॥
गोकर्णं भद्रकर्णं च हेमासं स्थानमष्टकम् ।
छगलाह्व द्विरण्डं च कर्कोटं मण्डलेश्वरम् ॥१६॥
कालंजर वनं चैव देवदारु वनं तथा ।
शंकुकर्णं तथैवेह स्थलेश्वरमतः परम् ॥१७॥
एता नद्यश्च तीर्थानि गुह्यक्षेत्राणि सर्वशः ।
तानि सर्वाणि कुभेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात् ॥१८॥

॥इति तीर्थान्यावाह्य॥

इसके बाद में "**कलशस्य मुखे विष्णुः**" इत्यादि से अभिमंत्रण करके "**देवदानव संवादे**" से प्रार्थना करके गीत वादित्र शब्दों से देव को स्नान कराये। (शिल्पिवर्ग वहां होतो उनको भी संतुष्ट कर देवें)

पश्चात् आचार्य "**ॐ त्र्यंबकं यजामहे**" मंत्र से प्रागादि दिशाओं में नाम मंत्रों से दिक्पालों को बलि देवें। घण्टा शङ्ख नगरे दुन्दुभि बजायें।

पूर्वे इन्द्राय नमः। भो इंद्र दिशं रक्ष बलिंभक्षय यजमानस्य अभ्युदयं कुरु॥ आग्नेयामग्नये नमः। भो अग्ने.॥ दक्षिणे यमाय नमः। भो यम.॥ नैर्ऋत्यां नैर्ऋतये नमः। भो नैर्ऋत.। पश्चिमे वरुणाय नमः। भो वरुण.। वायव्यां वायवे नमः। भो वायो.। उत्तरे कुबेराय नमः। भो कुबेर.। ऐशान्यां ईशानाय नमः। भो ईशान.।

इस प्रकार बलि देवें। आचमन करके देव के पास आकर –

त्रातारमिन्द्र. इत्यादि **१० दिक्पालों** के मंत्रों (पृष्ठ संख्या **१३४** पर देखें) से रक्षा करके ४ ब्राह्मणों से **स्वस्ति वाचन** करायें।

रक्षा मंत्र :-

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

इत्यादि मंत्रों से रक्षा करें।

पुण्याहवाचन :-

पुण्याहवाचन (स्वस्ति वाचन) में ब्राह्मणों के उच्चारण करने योग्य निम्न श्लोक मुख्य है –

यजमान – भो ब्राह्मणः अमुकदेवार्चा – शुद्धिस्नपन नेत्रोमीलन कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रवन्तु ३ । ब्राह्मण – पुण्याहम् ३॥

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनंतु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा। यजमान – भो ब्राह्मणः अमुक देवार्चा शुद्धिस्नपन नेत्रोन्मीलन कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रवन्तु ३। ब्राह्मण – कल्याणं३।

यथेमां वाचं कल्याणी मामदानी जनेभ्यः ब्रह्म राजान्याभ्या ठ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यता मुपपादो नमतु॥

यजमान – भो ब्राह्मणः अमुकदेवार्चा – शुद्धिस्नपन नेत्रोन्मीलन कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु ३ । ब्राह्मण – ऋद्ध्यताम् ३॥

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगमं ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अद्धयारु होमाविदाम देवन्त्स्वज्योतिः।

यजमान - भो ब्राह्मणः अमुकदेवार्चा कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रवन्तु ३ । ते च स्वस्ति स्वस्ति वदेयुः। ''ॐ स्वस्ति न इंद्रो'' समय शेष होने पर पूरा पुण्याहवाचन करे।

ततः कृतस्य पुण्याहवाचन कर्मणः सांगता सिद्धयर्थं दक्षिणाद्रव्य नाना नाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातु महमुत्सृजे॥

ऐसा संकल्प करके ब्राह्मणों को यथोचित दक्षिणा देवें आशिष ग्रहण करें।

अथ दक्षिण वेदी स्नानम् :-

दक्षिण वेदी के पास जो कलश स्थापित किये है उनके प्रति द्रव्य से देव को स्नान कराये

(मृत्तिका स्नानं) ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपां ठँ रेता ध्ठ सिजिन्वति। ॥१॥

(पुनः शुद्धोदक स्नानं)

(पंचपल्लव कषाय स्नानं) ॐ यज्ञा यज्ञावो ऽअग्नये गिरागिरा च दक्षसे। प्रत्प्रवयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रन्न श ठं सिषम् ॥२॥

(पुनः शुद्धोदक स्नान)

(गोमूत्रेण) ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्.... गायत्री मंत्रेण

(पुनः शुद्धोदक स्नान)

(गोमयेन) ॐ गंधद्वारां....इतिमंत्रेण (पुनः शुद्धोदक स्नान)

(भस्मना) ॐ मानस्तोके तनयेमान आयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोवीन्त्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे (पुनः शुद्धोदक स्नान)

(गंधोदक स्नानं) गायत्री मंत्र से गंधोदक स्नान कराये ॥६॥

इसके बाद के पंच कलशों के गंधोदक से पंचदेवों के नाम मंत्र से स्नान कराये।

(गंधोदक स्नानं) ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥७॥

(गंधोदक स्नानं) हंसः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षद्धोता वे दिषद् तिथिर्दुरोणसत् ।नृषद् वरसदृत सद्व्योम सदब्जा गोजा

वामावर्त्त क्रम में कलश स्थापन दक्षिण से उत्तर की ओर करें। प्रस्तुत सारणी दक्षिणावर्त्त से दी गई ।

दक्षिण वेदी कलश स्थापन क्रम (प्रथम वेदी)

मृत्तिका उदक	पंचपल्लव कषाय उदक	गोमूत्र	गोमय	भस्म	गंधोदक	गंधोदक	गंधोदक	गंधोदक	गंधोदक	गंधोदक	गंधोदक

स्थपति कलश

मध्य वेदी कलश स्थापन क्रम (द्वितीय वेदी)

मृत्तिका उदक	पंचपल्लव कषाय उदक	गंधोदक	गंधोदक	गोमूत्र	गंधोदक	गोमय	गंधोदक	भस्म	गंधोदक	गंधोदक

ऋतजा अद्रिजा ऋतंबृहत् ॥८॥

(गंधोदक स्नानं) **याते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी। तयानस्तन्वा शन्त मया गिरि शन्ताभि चाक शीहि ॥९॥**

(गंधोदक स्नानं) **ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्धुवोसि। वैष्णव मसि विष्णवेत्वा ॥१०॥**

(गंधोदक स्नानं) **ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिम सतश्च विवः ॥११॥**

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हे मांताञ्छतमुप वसन्तान्। शतमिन्द्राग्नीनी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः ॥१२॥**

दूर्वाक्षत पुष्प से पूजा करे।

मध्य (द्वितीय) वेदी स्नानम्

"**ॐ भद्रंकर्णेभि**" इस मंत्र से देव को मध्य वेदी पर विराजमान करे।

ॐ स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथुप्प्रथमानं पृथिव्याम् । देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु ॥

यह मंत्र बोलकर कुशाग्र को पूर्व की ओर रखते हुये बिछाये उन पर प्रणव से देव को विराजमान करके आचार्य उत्तर में मुख करके **कुंकुम से रंगे सूत्र से लिंग या देव मूर्ति को वेष्टित करके नेत्रोन्मीलन संस्कार करे।**

नेत्रोन्मीलन संस्कार :- **हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातपतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्या मुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥.** (हिरण्य अनुवाक ऋ. १०।१२१।१-८) इस मंत्र से सुवर्णपात्र या ताम्रपात्र में **मधु और घृत** मिलाकर निम्न दो मंत्रों से उसको **अभिमंत्रित** करे।

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥१॥

घृतवती भुवनानामभि श्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा । द्यावा पृथीवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥२॥

देव को गंधादि अर्चन कर **यज्ञोपवित** देकर **आठ पिष्ट के दीपकों** को देकर

निम्न मंत्रों से अर्पण करे। –

"हिरण्यगर्भ", "य आत्मदा", "यः प्राणतः", "यस्ये मे", येनद्यौ, यंक्रन्दसी, आपोहयत् यश्चिदायः।

विस्तार भय से मंत्र संक्षेप में दिये जा रहें है।

पश्चात् **सुवर्ण शलाका** को **मधुघृत** में डुबोकर प्रतिमा के मुख या शिवलिंगादि पर नेत्रों की कल्पना करे तब निम्न मंत्र उच्चारण करें –

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावा पृथिवी अंतरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थु॥१॥ अग्नि ज्योति ज्योर्तिरग्निः स्वाहा। सूर्यो ज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा। सूर्यो वर्चो ज्योतिः वर्च स्वाहा। ज्योतिः सूर्य सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥२॥

इन मंत्रों से नेत्रों की कल्पना करें।

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं भर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥१॥ तेजोऽसि तेजोऽनु प्रेह्यग्निस्त तेजो मा वि नैदग्ने र्जिह्वासि सुभूर्देवानां धाम्ने धाम्ने देवेभ्यो यजुषे यजुषे भव शुक्रमसि तेजोरसि तेजोऽसि ॥२॥

इन मंत्रों से ऊपर नीचे **कमलपुटो** की कल्पना करके नेत्रों के त्रिभाग मध्य में वर्तुल कनीनिका बना देवे।

ॐ अञ्जन्ति त्वामधरे देवयन्तो वनस्पते मधुना दैव्येन। यदूर्ध्वस्तिष्ठा द्रविणेह धत्ताद् यद् वा क्षयो मातुरस्या उपस्थे॥

इस मंत्र से अंजन करें।

नेत्रोन्मीलन के समय नेत्रों के सामने कुमारी ब्राह्मण की कन्या दर्पण दिखाती रहें।

उस कन्या को विशेष दक्षिणा तथा वस्त्रादि प्रदान करने से शुभ फल होता है।

भगवान के **सम्मुख खीर मावे की मिठाई फलादि** भक्ष भोज्य व्यंजन रखें।

शिल्पी **लोहे से उसे उल्लेखित करे**। फिर आचार्य **मधु** और **दही** से मूर्ति का अभ्यंजन करे।

(यह नेत्रोन्मीलन संस्कार बाण रत्नादि लिंगों में आवश्यक नहीं परन्तु अन्य निज लिंगो में होता है।)

।। दर्पण दिखाते समय नाट्य चातुर्यता ।।

किसी समय सिद्ध पुरुषों द्वारा **नेत्रोन्मीलन संस्कार** समय दर्पण दिखाते समय कभी कभी टूट जाता होगा उसको **मूर्ति में शक्तिपात** का आवेश माना जाता है।

आजकल कोई ऐसा सिद्ध पुरुष बिरला ही है परन्तु गाँवो में तथा अन्य जगहों पर यही विश्वास सर्वत्र प्रचलित है कि कांच नहीं टूटा तो प्रतिष्ठा विधिवत् नहीं हुई। इस **कारण पंडितों को अपनी इज्जत बचाने के लिये निम्न उपाय करने पड़ते है.।** जो कि महान दोष के कारक होते है अतः ऐसा नहीं करे।।

(१) बहुत से लोग कांच को पहले ही फोड़ लेते है और कपड़े से लपेट कर रख लेते है तथा चातुर्यता से मूर्ति को दिखाकर जनता को दिखा देते है।

(२) कुछ लोग छोटा पर्दा लगवाते है और उस समय शंख घंटा नाद करवाते है उस आवाज के दौरान किसी साधन से कांच फोड़ देते है।

(३) कहीं बड़ी साइज का पतला कांच मंगवाते है दिखाते समय ऊपर का एक शिरा बायें हाथ की अंगुलियों व गुद्दे से पकड़ लेते है और दूसरा नीचे से दाहिने हाथ से पकड़ लेते है उसके बाद दोनों हाथों को विपरीत दिशा में घुमाते हुये कांच के एक जबरदस्त मरोड़ी देते है और कांच को बड़ी शीघ्रता से जनता के सामने टुटा हुआ बता देते है।

(४) अगर कांच छोटा व मोटा हो तो उसके पीछे का मोटा पुट्ठा कागज निकाल लेते है और कांच दिखाते समय हाथ के गुद्दे का दबाव ड़ालकर कांच को मरोड़ते हुये तोड़ देते है।

(५) बहुत से कांच दिखाकर उल्टा वहीं रख देते है बाद में मौका देखकर किसी साधन से फोड़कर जनता को दिखा देते है।

॥इति नाट्य चातुर्यता॥

शुद्ध स्नान **:- ॐ इम्ममे वरुणश्रुधि हवमद्या च मृडय। त्वाम वस्युराचके॥ १ ॥इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या। असिकन्या मरुद्वृधे वितस्तया ऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥२ ॥**

इस मंत्र से शुद्ध जल से स्नान करायें, अभ्युक्षण करें।

मध्यवेदी कलशोदकेन स्नानम् **:- मध्यवेदी पर प्रथम वेदी की तरह ११ कलश स्थापित है उनमें भी वही द्रव्य है जो प्रथम वेदी में थे।**

अतः प्रथम वेदी स्नान कि विधि व मंत्रों द्वारा द्वितीय वेदी के कलशों के द्रव्य व गंधोदकादि से स्नान करायें।

ॐ शतं वो अम्ब धामानि सहस्त्र मुत वोरुहः। अधा शतक्रत्वो यूयमिमंमे अगदङ्कृत॥

इत्यादि मंत्रों से दूर्वा पुष्प चढ़ावें।

ॐ सुजातो जोतिषा सहशर्म वरुथ मा सदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप ठ संव्ययस्व विभावसो ॥

इस मंत्र से देव को आच्छादन करके सुवर्ण शलाका आचार्य को देवे संकल्प भी बोलना चाहिये।

इसके बाद कुण्ड के पास आकर आचार्य **"ॐ त्र्यंबकं यजामहे"** इत्यादि मंत्रों से **१०८ आहुति** देकर **दिक्पालों** को संक्षिप्त बलि प्रदान करें। फिर आचमन कर शुद्ध होवें।

फिर मण्डप मे ४ ब्राह्मणों को भोजन दक्षिणा से संतुष्ट करके नेत्रांजन करे।

॥इति द्वितीय वेदी - मध्यवेदी स्नान विधिः॥

चल प्रतिमा हेतु विशेष :- चलप्रतिमा प्रतिष्ठा में जलाधि वास बाद में अग्नि स्थापन करके गौ के दूध में नीवार (साठी का चावल) चरु करे। विष्णु हो तो कृसर(बिना नमक की खिचड़ी) भी तैयार करे। पलाश, उदुम्बर, पीपल, शमी और अपामार्ग की समिधाओं से घृत से चरु या तिल से हवन करें। स्थिरलिंग व प्रतिमा में कृसर व नीवार होम नहीं करें।

अधिवास अनन्तर होम मंत्र आगे दिये गये है।

उत्तर वेदी स्नानम्

(अथ महास्नान)

देव के पास जाकर प्रार्थना करे - **ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवासचा ॥**

आचार्य प्रतिमा को **तृतीय वेदी** (वालूका वेदी स्वस्तिक परिपूर्ण या चौकी) पर **"ॐ भद्रं कर्णेभि"** मंत्र बेलते हुये उत्तर वदी के पास पूर्वाभिमुख विराजमान करे। **संकल्प पढ़ें** -

अस्यां मूर्तौ लिंगे वा एतद्देवा प्रतिष्ठापन योग्यता सिद्ध्यर्थं नाना द्रव्योदक कलशैः महास्नान शुद्धिमहं करिष्ये।

देवप्रतिमा को भद्रासन पर विराजमान कर पीठ की कल्पना करे।

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ्

व्यक्रामत्सा शनाशने अभि॥ इस मंत्र से भद्रासन पीठ वेदी पर हाथ लगावें।

निवेदनम् :-

ॐ पुरुष एवेद ७ सर्व यद् भूतं यच्चभाव्यम् ।
उतामृतत्वस्ये शानो यदन्ने नाति रोहति ॥

१. इस मंत्र से निवेदन करे। इसके बाद **सुवासिनियों** से जिनके पुत्र जीवित हो वो गीत गायें तथा "**समुद्रज्येष्ठादि**" चार मंत्रों से चार कलशों से स्नान करावे। यहां प्रथम पंक्ति में ४ कलश, द्वितीय पंक्ति मे २१ कलश का विधान दिया है। अन्यत्र प्रथम पंक्ति में ५ कलश, द्वितीय में २० कलश का विधान भी है।

ॐ समुद्र ज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनानायंत्यनि विशमानाः । इन्द्रो या वज्रीवृषभो ररादता आपो देवीरिह मामवंतु ॥१॥ या आपो दिव्या उतवा स्त्रवंति खनित्रिमा उतवायाः स्वयंजाः। समुद्रार्थायाः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवंतु ॥२॥ ॐ यासु राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम्। मधुश्च्युतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवंतु ॥३॥ ॐ यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवाया सूर्जं मदन्ति वैश्वानरो या स्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवंतु ॥४॥

इन चार मंत्रों से स्नान कराके फिर दधि, दूर्वा, हरिद्रा, कुंकुम से अक्षतों को रंग कर अर्चना करे।

ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ठं शुक्रमन्धस इंद्रस्येन्द्रिय मिदं पयोमृतं मधु ॥

(पुष्पाणि) श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्म इषाण सर्वलोकं इषाण ॥

(धूपं) ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं यो ऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः देवानामसि वह्नितमः सस्नितमं पप्रिषितमंजुष्टतमं देवहूतमम् ॥

प्रार्थना :-

ॐ नमस्तेचर्व्ये सुरेशानि प्रकृते विश्वकर्मणः ।

ॐ नमस्तेर्च्चे सुरेशानि प्रकृते विश्वकर्मणः ।
प्रभाविताशेष जगद्धात्रि तुभ्यं नमो नमः ॥
त्वयि संपूजयामीशं नारायणमना मयम् ।
रहिताशेष दोषैश्च ऋद्धि युक्ता सदा भवेति ॥

पश्यात् देव के दक्षिण हाथ में तथा देवी के वाम हाथ में श्वेत ऊन का डोरा आचार्य के वितस्ति जितना अथवा मूर्ति के वितस्ति जितना निम्न मंत्र से बांधें।

ॐ यदा बध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ७ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टि र्यथासम् ॥ १ ॥
इमं बध्नामि ते मणिं दीर्घायुत्वाय तेजसे ।
दर्भ सपत्न दम्भनं द्विषतस्तपन हृदः ॥२ ॥

ततौ पठेत्।

सर्वसत्वमयं शान्तं परं ब्रह्म सनातनम् ।
त्वामेवालंकरिष्यामि त्वं वंद्यो भवते नमः ॥

इसके बाद चार शुद्धोदक कलशों से स्नान करे (अवशिष्ट जल से)

ॐ इदमापः प्रवहतावद्यञ्च मलंचयत्। यच्चाभि दुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्। आपोमातस्मादेनसः पवमानश्च मुंचतु ॥१ ॥
ॐ आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्व ७ सुरभा उलोके ।
तस्मै नमन्ताञ्जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृतास्वेनत् ॥२ ॥
ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय ।
त्वामवस्युराचके ॥३ ॥
ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हवर्भिः।
अहेडमानो वरुणे हबोद्धयुरुश ठे समान आयुः प्रमोषीः ॥४ ॥

२. पश्चात् द्वितिय पंक्ति के २० या २१ कलशों से यथा क्रम स्नान करावे। यथा

(मृत्तिका कलश जल से) ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ७ रेता ७ सिजिन्वति ॥१ ॥
(शुद्धोदक स्नान) ॐ समुद्रा दूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपा ७ शुना सममृतत्व मानद्। घृतस्य नाम गुह्यं यदास्तिजिह्वा देवानाम मृतस्य नाभिः ॥२ ॥

(अथवा "**वरुणस्योत्तंभनमसि**" मंत्र से कराये)

(सप्तपल गोमय) **गंधद्वारां दुराधर्षं** मंत्र से ॥३॥

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ देवीरापो अपान्नपाद्यो व उर्म्मिर्हविष्य इन्द्रयावान्मदिन्तमः । तन्देवेभ्यो देवत्रादत्त शुक्रपेभ्यो येषां भागस्थ स्वाहा** ॥४॥

(गोमूत्र द्वादशपल) **ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्..........** ॥५॥

(शुद्धोदक स्नान) **ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तान उर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे** ॥६॥

(मुष्टिमात्रेण भस्म कलशोदकेन) **ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। स ठं सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः** ॥७॥

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ शन्नो देवी....** ॥८॥

(पय स्नानं त्रिपल पंचगव्य सहितं)

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु.... ॥९॥

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ योवः शिव तमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिवमातरः** ॥१०॥

(षोडशपल क्षीर कंकुभेन) **ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवावाजस्य संगथे** ॥११॥

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ तस्मा अरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपोजन यथाचनः** ॥१२॥

(२५ तोला दधिजल से) **ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभिनो मुखा करत्प्रण आयु ꣳ षितारिषत्** ॥१३॥

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविताधियः । अग्नेर्ज्योतिर्निच्चाय्य पृथिव्या अद्ध्याभरत्** ॥१४॥

(७ तोला घृतकुभेन) **ॐ घृतवती भुवनानामभि श्रियोर्वी पृथिवीं मधु दुधे सुपेशसा । द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कमिते अजरे भूरिरेतसा** ॥१५॥

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनो**

बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्रेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥१६॥

(३ तोला मधुयुक्त कुभोदकेन) **ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधी ॥१७॥**

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु । हिरिप्रं प्रंवहन्ति प्रंवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूतएमि ॥१८॥**

(त्रिपल शर्करा युक्त कुंभोदकेन्) **ॐ आयङ्गौ पृश्निरक्रमीद सदन्मातरं पुरः । पितरञ्च प्रयन्त्स्व : ॥१९॥**

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ आपोहयद् बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयंतीरग्निम । ततो देवाना ७३ समवर्त्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेमः ॥२०॥**

(वस्त्रेण संमार्जनं) **ॐ यज्ञा यज्ञावो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे। प्रप्रवयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रन्न श ७३ सितम् ॥२१॥**

इस मंत्र से वस्त्र से पौंछकर सुगंधित तैल आदि से **अभ्यंजन** करे। इसके बाद **चावल, यव, गोधूम, मसूरादि आमलक चूर्ण से उबटन करे। उष्णोदक से स्नान करायें फिर शुद्धजल से स्नान करायें।**

मंत्र :-

द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातोमलादिव ।
पूतम्पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ।

इसके बाद **(यक्षकर्दमस्तु कस्तुरिया द्वौ भागौ कुंकुमस्य च चन्दनस्यत्रयो भागाः शशिनस्त्वेक एव ही त्युक्तः)**

जटामांसी व यक्ष्मकर्दम से अनुलेपन करे। मंत्र -

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी ।
तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाक शीहि ॥

३. पश्चात् तृतीय पंक्तिस्थ दो कलशों से

(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ मानस्तोके तनये मानो आयुषि मा नो गोषु**

॥ उत्तर वेदी ॥

वेदी के पूर्वादिदिशाओं और विदिशाओं में

प्रथम पंक्ति 5 कलश

शुद्धोदक	शुद्धोदक	शुद्धोदक	शुद्धोदक	शुद्धोदक

वामावर्त्त क्रम में कलश स्थापन दक्षिण से उत्तर की ओर करें। प्रस्तुत सारणी दक्षिणावर्त्त से दी गई ।

द्वितीय पंक्ति 20 कलश

जल, मृत्तिका	शुद्धो.	गोमय	शुद्धो.	गोमूत्र	शुद्धो.	भस्म १ मुष्टि	शुद्धो.	पंचपल्लव पंचगव्य	शुद्धो.	दुग्ध	शुद्धो.	दधि	शुद्धो.	गोघृत	शुद्धो.	मधु	शुद्धो.	शर्करा	शुद्धो.
८ तोला		७ तोला		१२ तो.						१६ तो.		२५ तो.		७ तोला		३ तोला		३ तोला	

तृतीय पंक्ति

शुद्धोदक	शुद्धोदक

चतुर्थ पंक्ति 6 कलश

पंचामृत	शुद्धोदक	शुद्धोदक	शुद्धोदक	शुद्धोदक	शुद्धोदक

पंचम पंक्ति 14 कलश

गंध	पंच पल्लव कषाय	सर्वौषधी	श्वेत पुष्प	शांति जल	फलोदक अष्टफल	स्वर्ण	गो शृंगोदक	सप्तधान्य	सहस्त्रछिद्र कलश	दिव्यौषधी	पंच पल्लव	नवरत्न	तीर्थोदक

षष्ठं पंक्ति 10 कलश

कदंब	शाल्मली	जंबू	अशोक	प्लक्ष पीपल	आम्र	वट	बिल्व	नाग पल्लव	पलाश

सप्तम् पंक्ति 4 कलश

शुद्धोदक	शुद्धोदक	शुद्धोदक	शुद्धोदक

मानो अश्वेषुरीरिष । मानो वीरान्रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥१॥
ॐ प्रतीद्विष्णुस्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥२॥

४. इसके बाद चतुर्थ पंक्ति के ६ कलशों से पंचामृत (एवं पृथक् पृथक् द्रव्यों से) तथा शुद्धोदक से स्नान कराये।

(पंचामृत स्नानं) **ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत् सरित् ॥१॥**
(क्षीरोदकेन स्नानं) **ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु....।**
(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि....॥२॥**
(दधि स्नानं) **ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत् प्रण आयु ꣳ षितारिषत् ॥**
(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ सन्तेपया ꣳ सि समुयन्तु वाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाह । आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमा निधिष्व ॥३॥**
(घृत स्नानं) **ॐ घृतं घृत पावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हवि रसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥**
(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः । भवानः सुप्रथस्तमः सखावृधे ॥४॥**
(मधु स्नानं) **ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिंधवः। माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः ॥**
(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वंदमान ..इति मंत्रेण ॥५॥**
(शर्करा स्नानं) **ॐ ॐ अपा ꣳ रसमुद्वय स ꣳ सूर्येसन्त ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ रसस्य योरसस्तं वो गृह्णाम्युत्तम मुपयाम गृहीतो सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वाजुष्टतमम् ॥**
(शुद्धोदक स्नानं) **ॐ अप्स्वग्ने सधिष्ठ**

वसौषधीरनुरुध्यसे गर्भेसंजायसे पुनः ॥६॥

५. पंचम पंक्तिस्थ १४ कलशों से क्रमशः

(गंधोदकेन) "ॐ गंधद्वारा..." इति मंत्रेण ॥१॥

(पंचपल्लव कषाय कलशेन) ॐ यज्ञा यज्ञावो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे । प्रप्रवयममृतं जातवेद सम्प्रियं मित्रन्न श ठं सिषम् ॥२॥

(सर्वोषधी युक्तेन) ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामह ठं शतन्धामानि सप्त च ॥३॥

(श्वेत पुष्पोदकेन) ॐ या ओषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरुपब्रुवे। सनेयमश्वङ्गाम्वास आत्मानन्त व पुरुष ॥४॥

(शांति जलेन्) ॐ द्यौ शांतिरन्तरिक्ष ॐ शांति....इति मंत्रेण ॥५॥

(अष्ट फलोदकेन) ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चत्व ठं हसः ॥६॥

(स्वर्णोदकेन) ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।सदाधार पृथीवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥७॥

(गौ श्रृंगोदकेन) ॐ हविष्मतीरिमा आपो हविष्माँ आविवासति । हविष्मान्देवो अध्वरोहविष्माँ अस्तु सूर्यः ॥८॥

(सप्तधान्योदकेन) ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणायत्वो दानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घा मनुप्रसिति मायुषे धान्देवोवः सविता हिरण्यपाणिः । प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि ॥९॥

(सहस्त्रधारा कलशेन) ॐ सहस्त्राणि सहस्त्रशो बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीनो मुखाकृधि ॥१०॥

(दिव्यौषधी कलशेन) ॐ या औषधीः सोमराज्ञी विष्ठिताः पृथिवीमनु । बृहस्पति प्रसूता अस्यै सन्दत्तवीर्यम् ॥११॥

(पंचपल्लव युक्तेन) ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अंतरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥१२॥

(इसके बाद कहीं कहीं "ॐ काण्डात् काण्डात्" मंत्र से दूर्वोदक स्नान का उल्लेख मिलता है)

(रत्नोदक स्नानं) **ॐ अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्या स्त्रीधन्व योजना सप्त सिन्धून्। हिरण्याक्षः सविता देव आगात् दधत् रत्ना दाशुषे वार्याणि ॥१३॥**

(तीर्थोदकेन) **ॐ इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्णया। असिकन्या मरुद् वृधे वितस्तया र्जीकीये श‍ृणुह्या सुषोमया ॥१४॥**

卐 *अब वेदी के चारों ओर रखे आठ समुद्रीय जलों से*

(क्षारोदकेन) **ॐ कयानाश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥१॥**

(पयोदकेन) **ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे ॥२॥**

(दध्युदधि जलेन) **ॐ दक्रिाव्णो अकारिषं जिष्णो रश्वस्य वाजिनः। सुरभिनो मुखाकरत् प्रण आयू ७ षितारिषत् ॥३॥**

(घृतोदि स्नानं) **ॐ घृतवती भुवनानामभि श्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुधे सुपेशसा। द्यावा पृथिवी वरुणस्य विष्कमिते अजरे भूरि रेतसा ॥४॥**

(इक्षुरसोदकेन) **"ॐ पयः पृथिव्यां" इति मंत्रेण ॥५॥**

(सुरोदधि – फलासवेन) **ॐ देवं बर्हिर्वारितीनां देवमिन्द्र मवर्द्धयत्। स्वासस्थमिन्द्रेणा सन्न मन्या बर्ही ७ ष्यभ्यभूद वसुवने वसुधे यस्य वेतु यज ॥६॥**

(स्वादूदकेन) **ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोमधारया। इंद्राय पातवे सुतः ॥७॥**

(नारिकेल जलेन दर्भोदकेन वा) **ॐ सरस्वती योन्याङ्गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतम्बिभर्ति। अपा ७ रसेन**

वरुणोन साम्नेन्द्र ७ श्रियै जनयन्नप्सु राजा ॥८॥

६. अब षष्ठ पंक्तिस्थ दश दिक्पालों के मंत्र से कलशों से क्रमशः स्नान कराये।

(कदम्ब पल्लव) ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार ठं हवे हवे सुहव ठं शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ७ स्वस्ति नो मघवा धात्विंद्र ॥१॥

(शाल्मली पल्लव कुंभेन) ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वादेषा ७ सि प्रमुमुग्धस्मत् ॥२॥

(जम्बूपल्लवोदकेन) ॐ सुगन्नः पंथाम्प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मध्येह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतम्म आगाद्वैवस्वतो नो अभयङ् कृणोतु ॥३॥

(अशोक पल्लवोदकेन) ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेन स्येत्या मन्विहि तस्करय। अन्यमस्मदिच्छसात इत्या नमो देवी निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥४॥

(पीपल के जल से) ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान स्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणे हबोध्युरुश ठं समान आयुः प्रमोषी ॥५॥

(आम्रपल्लवोदकेन) ॐ आनो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ठं सहस्त्रिणीभि रुपयाहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः ॥६॥

(वटपल्लवोदकेन) ॐ वय ठं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्त सचेमहि ॥७॥

(बिल्वपल्लवोदकेन) ॐ तमीशानं जगस्तस्थुषस्पति धियञ्जिन्व मवसे हूमहेवयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥८॥

(नागपल्लवोदकेन) ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के पृथिवी मनु । ये अंतरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥

(पलाश पल्लवोदकेन) ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं

पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः । स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥१०॥

(रुद्राक्षोदकेन) **ॐ शिव प्रतिमा लिंग पर रुद्रसूक्त या "त्र्यंबकं यजामहे.."** मंत्र से अभिषेक करे।

७. अब सप्तमपंक्ति के चार कलशों से ४ मंत्रों वा एक मंत्र से शुद्धोदक स्नान कराये।

"ॐ आनो भद्रा" इस अनुवाक से **स्नान कराये।**

पश्चात् सूक्ष्म वस्त्र से पोंछकर पीछे **भगवान को पुरुषसूक्त से और शिवजी को रुद्रसूक्त से अभिषेक करे।** भेरी शंख घण्टा ध्वनी बजाये, मंगल गीत गायें। सुगंधित उबटन द्रव्य लगायें।

सभी देवताओं का आवाहन निम्न मंत्र से करें।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् । संबाहुभ्यां धमति सम्पत त्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देव एकः ॥

इस प्रकार मंत्र एवं भावना से भगवान की विराटता का ध्यान करे एवं **न्यास करे एवं सकलीकरण करे।**

ॐ हृदयाय नमः। ॐ शिरसे नमः। ॐ शिखायै वषट्। ॐ कवचायै हुँ। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अस्त्राय फट्।

इसके बाद से **प्रार्थना** अर्चना करें।

एह्येहि भगवन्देव लोकानुग्रह काम्यया ।
यज्ञ भागं गृहाणेमं स्थाप्यदेव नमोस्तु ते ॥

इसके बाद **"ॐ आकृष्णेन रजसा.."** मंत्र से पाद्यम तथा **"हिरण्य गर्भ.."** मंत्र से देव को अर्घ (देवी को) **"हिरण्य वर्णां" हरिणीं सुवर्ण रजततस्त्रजाम् । चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह॥** से दोनों हाथों पर **अर्घ प्रदान करे।**

(आचमनम्) **ॐ विभ्राड बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्य पताव विर्हुतम् । वातजूतोयो अभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति ॥**

"ॐ पंचनद्य.." से पंचामृत स्नान तथा **त्र्यंबकं यजामहे** से चंदन कालेप

करें।

(शुद्धोदक स्नानं) ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां। सरस्वत्यै वाचो यन्तु र्यन्त्रेर्णाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ॥

''युवासुवासा'' से वस्त्र, ''त्र्यंबकं यजोमहे'' से चंदन, ''यज्ञोपवित परमं'' से यज्ञोपवीत प्रदान करे। आचमन, अक्षत, पुष्प, दुर्वांकुर, धूप, दीप नैवेद्यादि अर्पित कर आरार्ति करे पुष्पांजली प्रदान कर प्रदक्षिणा करे एवं प्रसाद वितरण करे ।

(इति देवस्नपन विधि)

अथ अधिवासनादि कर्म

हयशीर्ष पञ्चरात्र एवं आगम ग्रंथों में सात अधिवास लिखें है।

१. जलाधिवास २. गंधादिवास ३. पुष्पाधिवास ४. धान्याधिवास ५. फलाधिवास ६. औषध्याधिवास ७. शय्याधिवास

अधिवासों में **शय्याधिवास** प्रधान गणना योग्य है।

अन्यत्र मार्कण्डेय पुराण, मत्स्य पुराणादि में भी अन्नाधिवास, गंधाधिवास, पुष्पाधिवास, घृताधिवास, फलाधिवास, औषध्याधिवास , जलाधिवास, शय्याधिवास आदि लिखा है।

परन्तु सर्वत्र जलाधिवास ही प्रथम कर्म करवाते है। मयूख ग्रंथों में प्रारंभ में जलधिवास एवं शय्याधिवास लिखा है। अन्य अधिवास इसके बाद में लिखें है। एक ही अधिवास हो तो पूर्वदिन में शय्याधिवास दूसरे दिन स्थापना करे। अधिवास कर्म अनेक दिन चलता है। अधिवास दिनों में आवाहित देवों का पूजन, वास्तु ग्रहादि होम एवं देव मंत्रों से हवन करे। **यह होम अङ्ग होम** कहलाता है देव मंत्र की **२८ सहस्त्र** आहुति होनी चाहिये।

शय्याधिवास एवं जलाधिवास में अङ्ग होम नहीं होता है।

मयूख ग्रंथों में प्रथम दिन अधिवास(शय्याधिवास) दूसरे दिन अग्नि स्थापना अङ्ग होम लिखा है, पश्चात् अन्य अधिवासन क्रमशः करावे।

बौधायन के अनुसार एक ही दिन अधिवास एवं स्थापना हो तो अङ्ग होम का अभाव होता है (न तु भवति)

सर्वत्र एकाधिवास पक्ष मे हवन लिखा है। अन्य विशेष क्रम न होकर "**पराय विष्णवात्मने स्वाहा**" इत्यादि देवमंत्र से करे।

एक पक्ष यह भी है कि प्रथम दिन शय्याधिवास तथा दूसरे तीसरे चौथे दिन अन्य अधिवास कर पांचवे दिन देव की स्थापना करे।

सर्वत्र प्रचलित मत -

आदौ जलाधिवास (क्वचित् गर्भाधान संस्कार हेतु आदौ अन्नाधिवास) वरुण मंत्र व पावमान सूक्त, शांतिसूक्त, से। **गंधाधिवास - गंधमंत्र व सूक्त से। पुष्पाधिवास - पुष्पवती आदि मंत्रों से। अन्नाधिवास - "अन्नपते" आदि मंत्रों से। फलाधिवास - रससूक्त से। औषध्याधिवास - औषधीसूक्त से। शय्याधिवास - शांतिसूक्त व पुरुषसूक्त से करे।** पुरुष सूक्त व पावमानादि सूक्त सर्वत्र पढ़े जाते है।

इन अधिवासों के अलावा वस्त्राधिवास, घृताधिवास शर्कराधिवास व मिष्ठान्नधिवास भी किये जाते है।

चल प्रतिष्ठा में नित्य अङ्ग होम करे व स्विष्टकृत हवन पूर्णाहुति करे। दूसरे दिन पुनः अग्नि स्थापन करे। चरु निवाब (दूध में पके हुये साठी का चावल) होम से करे। विष्णु प्रतिमा में बिना नमक की खिचड़ी का होम करे।

स्थिर लिंगादि प्रतिष्ठा में **नित्य अग्नि स्थापन न करे**। उसी में होम करे।

चल अचल दोनों ही प्रतिष्ठा साथ हो तो नित्य अग्नि स्थापन करके होम करना जरुरी नहीं है तथा खिचड़ी व चरु (खीर) का होम भी अधिवास में जरुरी नहीं है अर्थात् न करे तो भी शुभ है।

साधारण तया नित्य पूजा अर्चा अवाहित मंडलों के देवताओं की करे। वास्तु ग्रहादि होम करे, देव मंत्रों की आहुति देवें। अधिवासन करे फिर देव मंत्रों की आहुति देकर स्विष्टकृत होम करे। एक रात्रि अधिवास प्रति अधिवास करे असंभव में यथा अवसरानुसार करें।

।। *अथ बोधायनोक्त चल प्रतिष्ठा* ।।

प्रदेश क्षेत्र में मण्डप बनाकर पश्चिम उत्तर या ईशान में कुण्ड करें अथवा स्थण्डिल बनायें। उत्तर में स्नान की सामग्री नैऋत्य में वास्तु मण्डल मध्य में सर्वतोभद्रादि मंडल बनायें। संकल्प करें गणपति मातृका पूजन और आभ्युदयिक श्राद्ध करायें, विप्रजन का वरण करें, अग्नि स्थापन पर आवाहित देवों के लिये हवन करें। स्थाप्य देवता के मंत्र से समिधा तिल आज्य का प्रतिद्रव्य मूल मंत्र वा

पुरुष सूक्तादि आहुतियां विशेष संख्या (१००८ से २८००० तक) में देकर स्विष्टकृद होम करे। यथा संख्या समयानुसार अधिकाधिक जप कराये। त्याज एक कलश में करते रहें उस जल से देव का संप्रोक्षण, स्नान एवं यजमान का अभिषेक करे। ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें। यजमान का अभिषेक मूर्ति प्रतिष्ठा बाद भी होता है।

देव को पंचगव्य व पंचामृत से स्नान करायें। 'शन्नो देवी' इत्यादि मंत्रों से उष्णोदक से प्रक्षालन करे, पुनः शुद्धजल से स्नान कराये।

भद्र पीठ के चारों ओर आठ कलश स्थापित करे उनमें पूर्वादि क्रम से सप्तमातृका, पंचपल्ल्व, कुश शालीउदक प्रस्रवणोदक, यव पुष्प तथा फलोदक से स्नान कराये।

स्नान कराते समय निम्न सूक्त पढ़ें-

१. समुद्र जेष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविश मानाः ।
इन्द्रो वा वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥१॥
या आपो दिव्या उतवा स्त्रवन्ति खनित्रिमा उतवा या स्वयं जाः ।
समुद्रार्थ्रा याः शुचयः पावकास्ता आपोदेवीरिह मामवन्तु ॥२॥
यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवयश्यञ्जनानाम् ।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥३॥
यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वेदेवा या सर्जमदन्ति ।
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टन्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥४॥

२. आपोहिष्ठा इत्यादि तीन ऋचाओं से।

३. हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका यासुजातः कश्यपो यास्विन्द्र ।
अग्निगर्भ दधरे विरूपास्ता न आप, शं स्योना भवन्तु ॥१॥
यासाँ राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम् ।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता न आपः शं स्योना भवन्तु ॥२॥
यासां देवा दिवि कृणवन्ति मक्षं या अंतरिक्षे बहुधा भवन्ति ।
या पृथिवीं पयसोन्दन्ति शुक्रान्तोन आपः शं स्योना भवन्तु ॥३॥
शिवेन मा चक्षुषा पश्यता ऽऽपः शिवया तनुवोप स्पृशत त्वचं मे।
सर्वान् अग्निं रप्सुसदो हुवे वो मयि वर्चो बलमोजो निघत्र ॥४॥

४. पावमान सूक्त से (पुस्तक में पृष्ठ संख्या ६७ पर दिया है)

इसके बाद वस्त्रों को धारण कराकर यज्ञोपवीत देकर गंधाक्षत से अर्चना करें। आटे के **आठ दीपकों से नीराजन 'हिरण्यगर्भः'** इत्यादि आठ ऋचाओं से करे।

सुवर्ण की शलाका से **'चित्रं देवनामुदगादनीकच्चक्षु मित्रस्याग्रेः'** इस मंत्र से देव के नत्रों का उन्मीलन करे तथा शहद, घृत, चीनी आदि से देव का अंजन करे।

'देवस्य त्वा' इस मंत्र से तथा निम्न मंत्र से अंजन करे।

मंत्रान्त में **'अनज्मि'** अवश्य पढ़ें।

अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो वनस्पते मधुना दैव्येन ।
यदूर्ध्वस्तिष्ठा द्रविणेह धत्ताद् यद् वा क्षयो मातुरस्या उपस्थे ॥

तदनन्तर **भक्ष्य भोज्य (सीसा) आदि दिखावें उस समय अन्य कोई भी स्थित न रहें। पुरुषसूक्त रौद्रसूक्त या श्रीसूक्त से स्तुति करें।**

बाँस के पात्र में पंच या सप्तधान्य प्रक्षेप कर देव की आरती करे एवं **रुद्र को बलि** प्रदान करें।

ॐ नमो भूतानामधिपतये दीप्तशूलधरायोमापतये ।
सर्वविद्याधिपतये रुद्राय नमः शिवमगर्हितं कर्मास्तु स्वाहा ॥

फिर **बलि प्रदान** कर आचमन करें।

फिर सर्वतोभद्र मण्डल देवताओं का आवाहन करे गंधादि से पूजन करें। देवताओं को नाम से दश दश आहुति प्रदान करें।

देवता का **शय्याधिवास** करावें। **पुरुषसूक्त और उत्तरनारायण** अनुवाक (रुद्री, अध्याय २ श्लोक १७ से २२ श्रीश्चते तक) पढ़ें। देव प्रतिमा मे न्यास करे।

सर्वाङ्गे :- ॐ पुरुषात्मने नमः, ॐ प्राणात्मने नमः। हृदये :- प्रकृतितत्वाय नमः बुद्धि तत्वाय नमः, अहंकार तत्वाय नमः, ॐ मनस्तत्वाय नमः।

शिरसे :- **शब्दतत्त्वाय नमः। त्वचाये - स्पर्शतत्त्वाय नमः।** हृदये - **रूपतत्वाय नमः।** वस्ति (गुदाये) **रसतत्त्वाय नमः।** पादयोः - **गंधतत्वाय नमः।** कर्णयौः - **श्रोत्र तत्त्वाय नमः।** सर्वाङ्गे - **त्वक्तत्त्वाय नमः। नेत्रयोः चक्षुस्तत्त्वाय नमः।** कण्ठे - **वाक्तत्त्वाय नमः।** हस्तयोः - **पाणितत्त्वाय नमः। पादयोः पादतत्त्वाय नमः।** पायु (गुदा स्थाने) -

पायु त.न.। उपस्थ (शिश्ने) - **उपस्थ त.न.**। पादयोः - **पृथ्वी त.न.**। वस्ति प्रदेशे (पेडू, उदर पेट के नीचे का भाग) - **अप् त.न.**। हृदये - **तेज त.न.**। घ्राणे - **वायु त.न.**। शिरसे - **आकाश त.न.**। शरीरे - **रजः त.न.**। **तमः त.न.। सत्त्व त.न.। देह तत्त्वाय नमः।**

इसी क्रम से न्यास करके **पुरुषसूक्त से भी न्यास** करके (अग्नि कोण में) **शय्याधिवास करे। फिर मण्डल व शय्या मध्य में गमन नहीं करे।**

मंडल देवताओं को उपहार निवेदन करे **ब्रह्मा व दिक्पालों** को सभी प्रकार का अन्न प्रदान करें। **इंद्र को जल सहित घृतान्न। अग्नि को आज्यान्न। यम को उड़दाल। निर्ऋति को कृष्णव्रीहि अन्न घृत सहित। वरुण को नवीनतान्न। वायु को यवोदन (यव का चावल)। सोम को प्रैयंगव (फल नीलता)। ईशान को गवेधुक (धान्य विशेष) पायसान्न सब देवताओं के लिये देवें।**

तदनन्तर शय्या प्रदेशे में नीवार चरु (साठी का चावल) का स्थापन कर दिक्पाल बलि देवें। एक रात्रि व्यतीत करें।

दूसरे दिन प्रातः काल '**उतिष्ठ गौविन्द**' मंत्र से उठाकर उपस्थापन कर घी से चरु पकाकर हवन करे एवं चरु शेष से **अग्नये स्वाहा। सोमाय स्वाहा। धन्वन्तरये स्वाहा। कुह्वै स्वाहा। अनुमत्यै स्वाहा। प्रजापतेय स्वाहा। परमेष्ठिने स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा अग्नये स्वाहा। सोमाय स्वाहा अग्नये ऽन्नादाय स्वाहा। अग्नये ऽन्नपतये स्वाहा। प्रजापतये स्वाहा। विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। सर्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। सर्वेभ्यो भूतेभ्यः स्वाहा। भूर्भुवः स्वाहा। अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।**

तदन्तर आचार्य देव को रत्न पुष्प औषधि फल एवं मूलादि फल निवेदन करें। तांबे के पात्र में शांतिजल को देव मंत्र से सौ बार अभिंत्रित करे उसी मंत्र से देव के शिर पर सौ बार आसेचन करे। '**उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते**' इस मंत्र से उठाकर '**विश्वतश्च**' इस मंत्र से उपस्थान कर देव के आगे ये मंत्र जप करते हुये प्राण प्रतिष्ठा करे। प्राण प्रतिष्ठा मंत्र अचल मूर्ति प्रतिष्ठा में पृष्ट संख्या ४२१पर है।

ॐ ब्रह्म विष्णु रुद्रेभ्यो नमः। दिक्पालेभ्यो नमः। वसुभ्यो नमः। रुद्रेभ्यो नमः आदित्येभ्यो नमः। अश्विभ्यां नमः। मरुद्भ्यो नमः। कुबेराय नमः। गंगादि नदीभ्यो नमः। अग्नीसोमाभ्यां नमः। इंद्राग्निभ्यां नमः। द्याव पृथिवीभ्यां नमः। धन्वन्तरये नमः। सर्वेशाय नमः। विश्वेभ्यो

देवेभ्यो नमः। ब्रह्मणे नमः। देवता के आगे यजमान का अभिषेक करें (देव की प्रतिष्ठा ध्रुवसूक्त, गायत्री, व्याहृतियों व देवमंत्र से करें) प्रतिमा के साथ निज वाहन आयुध एवं परिवार का भी ध्यान कर पुनः सर्वोपचार पूजन करें। मूल मंत्र का एक सौ आठ बार जप करे स्तुति करे मुद्रा दिखावें एवं आचमन कर स्विष्टकृत होम कर यज्ञ विधि पूर्ण करे। ब्राह्मण भोजन करे आचार्य को विप्रों को दक्षिणा प्रदान करें ।

॥इति चल प्रतिष्ठा प्रयोग॥

अथ अचलमूर्ति विषये

(अधिवासनम्)

॥ अन्नाधिवास ॥

पीत या श्वेत वस्त्र बिछायें उस पर अन्न रखें प्रतिमा को शयन करावें और अन्न से आछादित करके पुनः वस्त्र से आच्छादित करे। ब्राह्मण **पुरुषसूक्त रुद्रसूक्त या श्रीसूक्त** देव की प्रतिमा जिस स्वरूप की हो उसी अनुकल्प में सूक्त पढ़ें। उस मौसम में जो धान्य पकने वाला हो उससे भी आच्छादित करते है। सप्तधान्य या अभाव में एक ही धान्य से अधिवास करे।

वैसे सभी अधिवासन दौरान देव मंत्रों व अन्य मंत्र से अलग से एक कुण्ड में हवन होता है। परन्तु इस अन्नाधिवास को गर्भाधान संस्कार मानते हुये पूर्वसमय में अन्नधिवास करें तो हवन का अभाव रहेगा।

अगर **देवस्नपन** के बाद **अधिवासन** है तो देव मंत्रों से हवन करें। आवाहित देवों के नाम से अंग हवन करे। अन्नसूक्त, ब्रह्मानंदवल्ली या भृगुवल्ली पढ़ें।

हरि ॐ ब्रह्म विदाप्नोति परम् तदेषाभ्युक्ता सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायाम् परमे व्योमन्, सो ऽनुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति। तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः सम्भूतः आकाशाद् वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्या ओषधयः, ओषधीभ्योऽन्नम् अन्नात् पुरुषः, स वा एष पुरुषो ऽन्न रसमयः। तस्येदमेव शिरः अयं दक्षिणः पक्षः, अयमुत्तरः पक्षः, अयमात्मा, इदं पुच्छं प्रतिष्ठा तदप्येष श्लोको भवति।

।। अथ गंधाधिवास ।।

प्रतिमा को निम्न मंत्र से उठायें :-

उत्तिष्ठोतिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ जगत्पते ।
उत्तिष्ठ कमलाकान्तं त्रैलोक्यं मंगलं कुरु ॥

इस मंत्र से उठा कर अन्य वेदी पर स्थापित करे। चारों ओर विभिन्न सुगंधित द्रव्य धूपादि स्थापित करे।

अगर, तगर, अष्टगंध, कपूर बहुत से पुष्पों का सुगंधित इत्तर, केसर, धूप अगरबत्ती इत्यादि स्थाति करे।

मण्डप में अलग से उत्तर या ईशान में स्थण्डिल या कुण्ड बनाया हो तो उसमें अंग होम करे देव आवाहित मंत्रों से आहुति देवे। **अभाव में आचार्य कुण्ड** में हवन करे।

गंधर्व सूक्त का पाठ करें। प्रतिमा को श्वेत वस्त्र से आच्छादित कर अधिवासन करे।

गंधर्वास्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै ।
यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ईडितः ॥१ ॥
त्वां गंधर्वा अखन स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥२ ॥
ॐ अ ठं शुनाते अ ठं शुः पृच्यतां परुषा परुः ।
गंधस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः ॥३ ॥

।। अथ पुष्पाधिवास ।।

चंपा, चमेली, कमलानि, जूही, गुलाब, बेला, रजनी, सुगंधा हुर्वां शमी जीवक गंधराजां गेन्दा, धत्तूरा, गुलमेंहदीं, च ।

अगस्तितकां सूर्यमूखी कनेरं शेफालिका नामक परिजातं तिलकस्य पुष्पं हरशृङ्गहारं मालरपत्रं तुलसी मदारम् ॥

इत्यादि पुष्पों से अधिवासन करें।

वस्त्र पर पुष्पादि बिछायें मूर्ति को पुष्पों से आच्छादित करें या पुष्प चहुँ ओर से सजायें।

पुरुषसूक्त व औषधीसूक्त आदि पढ़ें। **अङ्ग होम** कर स्विष्टकृत होम करे। वस्त्र से प्रतिमा को आच्छादित करें।

ॐ ओषधी प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवती प्रसूवरीः ।
अश्वा इव साजित्वरी र्वीरुधः पारयिष्णव ॥१ ॥
ओषधयः प्रतिगृभ्णीत पुष्पवती सुपिपला : ।
अयं वोगर्भ ऋत्वियः प्रत्क ठं सधस्त्थ मासदत् ॥२ ॥

॥ *अथ घृताधिवास* ॥

दूसरे दिन प्रातः '**उतिष्ठोऽतिष्ठ**' मंत्र से प्रतिमा उठाकर अन्य वेर्दी पर स्थापन करे। पात्र में गौ घृत भरकर मूर्ति के पास में रखें, मूर्ति बड़ी हो तो सूत्र से पात्र व मूर्ति का संबंध कर देवे। **पुरुषसूक्त एवं घृतसूक्त** का पाठ करे नित्य का **अंग होम** करे देव मंत्रों की आहुतियां देवे। शाम को **स्विष्टकृत** होम करे। प्रतिमा को श्वेत वस्त्र से आच्छादित करें। अधिवासन करें।

ॐ घृताचीस्त्थोधुर्यौ पात ठं सुम्नेस्थः सुम्नेमाधत्तम् ।
यज्ञ नमश्चत उप च यज्ञस्य शिवे सन्तिष्ठस्व स्विष्टे मे सन्तिष्ठस्व ॥१ ॥
घृतेन द्यावा पृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वेस्तोकानामग्नि राजस्य।
वेतु स्वाहा कृते ऊर्द्ध नमः संमारुतङ्गच्छतम् ॥२ ॥
घृतेनसीता मधुना समज्यतां विश्वैर्देवै रनुमता मरुद्भिः ।
ऊर्जस्वती पयसा पिन्व माना स्मांत्सीते पयसाभ्या व वृत्स्व : ॥३ ॥
घतं मिमिक्षे घृतमस्ययोनि र्घतश्रितो घृतम्वस्यधाम ।
अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षि हव्यम् ॥४ ॥

॥ *धूपाधिवास* ॥

देव प्रतिमा को पुनः **उत्थापन कर दूसरी वेदी पर स्थापन करे**, अगर एक ही वेदी पर सभीं अधिवासन करे हो तो वस्त्र व आसन हर अधिवासन पर बदलते रहें देव प्रतिमा का गंधोपचार से नित्य पूजन करे।

प्रतिमा के चारों ओर सुगंधित धूपादि स्थापन कर घ्रापित करे। **अङ्ग होम करे पुरुषसूक्तादि** व अन्य सूक्तों का पाठ करें।

दशाङ्ग युग् गुग्गुल लोहवानं ज्वालामुखी धूपवती सुवत्ती ।
सुगंधबाला खस देवदारु धूपादिवासे विहितं च वेदे ॥

मंत्राः :-

ॐ अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने
पृथिव्याः । मखायत्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे ॥१ ॥

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वन्तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयँ धूर्वामः । देवाना मसि वह्नितमः ठ सस्नितमं प्रप्रित मंजुष्टतमं देवहूतमम ॥२॥

॥ वस्त्राधिवास ॥

नाना रंग विचित्र कौषेय वस्त्रों से देव का अधिवासन करना चाहिये। ऋतुकाल के वस्त्रों से भी अधिवासन करे।

वसवस्त्वां जन्तु गायत्रेणच्छंद सा रुद्रा स्त्वां जन्तुत्रैष्टुभेन च्छन्दादित्या स्त्वां जन्तु जागतेन छन्दसा ॥१॥

वसन्ताय कपिञ्जलाना लभते ग्रीष्माय कल विङ्कान् वर्षाभ्य स्तितिरीञ्छरदेवर्तिका हेमन्तायक करांञ्छि शिराय विककरान् ॥२॥

'सुजातो ज्योतिषा' एवं **'वसो पवित्रमसि'** मंत्र पढ़ें।

॥ फलाधिवास ॥

फलाधिवासन ऋतुकाल व देशोदभव फलों से करें इसके अलावा शुष्क फल मेवों से भी अधिवासन करे। फल निरोग एवं पका हुआ होना चाहिये।

अंजीर, कटहल, पपीता, अमरूद, अनार, जंबीर, संतरा, अनानास, केला, बेर, शहतूत, बिजोरा, बदरीफल, सेव, मुरई, नारेल, सिंघाड़ा, जामून, आम, अंगूर इत्यादि ऋतुफलों से अधिवासन करे।

मेवों मे बादाम, छुंआरा, किसमिस, चिरौञ्जी, अखरोट, तालमखाना, खर्जूर, मुमफली, मुनक्का, चिलगोजा इत्यादि शुभ है।

यस्तेरसः सम्भृत ओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य । तेन जिन्व यजमान मदेन सरस्वती मश्विनाविन्द्रमग्निम् ॥१॥

शमितानो वनस्पतिः सविता प्रसुवन्भगम् । ककुप्छन्द इहेन्द्रियं वशा वेह द्वयो दधुः ॥२॥

देवो देवैः वनस्पति हिरण्य पर्णा अश्विभ्या ठ । सरस्वत्या सुपिपल इंद्राय पच्यते मधु ॥३॥

याः फलिनिर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।

बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचत्व ठ हसः ॥४॥

।। मिष्ठान्नाधिवास ।।

मावे से बने व अन्न से कुष्माण्ड से बने विविध प्रकार के मिष्ठान्नों से देव का अधिवासन करे। इसके अलावा पूवा व पकौड़ी क्षीरान्न कचोड़ी जीर हींग गंधादियुक्त व्यंजनों से अधिवासन करे।

अन्नपतेऽन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्मिण : ।
प्रप्रदातारं तारिष ऊर्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

।। औषध्याधिवास ।।

नाना रस पुष्टिकारक औषधियों से सर्वोषधि, सतावरी, मजीठ, दुर्वा, शंखपुष्पी, विष्णुक्रान्ता, ब्राह्मी, अश्वगंधा, आदि औषधियों से एवं इनके आसव व फलासव से अधिवासन करें।

ओषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरुपब्रुवे ।
सनेयमश्वङ्गां वास आत्मानन्त व पुरुष ॥१॥
ओषधयः समवदन्त सोमेन सहराज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्रह्मणस्त ठ राजन् पारयामसि ॥२॥

अथ शय्याधिवास

बहुत से विद्वान् अन्नाधिवास शय्याधिवास के पहले करते है अतः लोकाचारानुसार करे। अधिवासन दौरान १२ ब्राह्मणों को भोजन कराये। चार गऊओं का दान करे, आचार्य को दक्षिणा देवें।

देव प्रतिमा का **'उंत्तिष्ठोतिष्ठ'** मंत्र से उत्थापन कर **कर्म कुटी** से बाहर लाकर रथ में बैठाकर **यज्ञ मंडप के प्रदक्षिणा कराकर मंडप में विराजमान करे एवं शय्याधिवास कराये।**

ॐ रथेतिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः ।
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः ॥

जय शब्द, मंगल घौष, सुवासिनी मंगल गीत वाद्य यंत्रादि घोष से देव को प्रदक्षिणा पूर्वक **पश्चिम द्वार से 'आकृष्णेन'** मंत्र के द्वारा प्रवेश कराये। मध्यवेदी के पचिम भाग में **पूर्व की तरफ मुँह करके देव प्रतिमा को विराजमान कर पाद्य, अर्घ एवं मधुपर्क प्रदान करे।**

पाद्यम् :-

ॐ पुरुष एवेद ꣳ सर्व यद्भूतं यच्चभाव्यम् ।
उतामृतत्वस्ये शा नो यदन्ने नाति रोहति ॥

अर्घ्यम् :-

ॐ एतावानस्य महिमा तो ज्यायांश्च पुरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥

मधुपर्क :-

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्य नमीवस्य शुष्मिणः ।
प्रप्रदातारं तारिष ऊर्ज नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

शय्यास्थापनम्

पूर्व मुख प्रासाद में अग्निकोण में शय्या। पश्चिममुख प्रासाद में वायव्य कोण में शय्या। उत्तरमुख प्रासाद में ईशान कोण में शय्या। दक्षिणमुख प्रासाद में नैऋत्य कोण में शय्या स्थापित करें।

अर्थात् प्रासाद के मुख से दक्षिण भुजा ओर की दिशा कोण में शय्याधिवास कराये।

अधिवासन हेतु वेदी बनाये सर्वतोभद्र अक्षत पुंज या गुलालादि से **अष्टदल** बनाये धान्यपुंज रखें उन पर अच्छे काष्ठ से निर्मित पट्टे इत्यादि सहित शय्या रखें। अच्छे वस्त्र बिछायें कुंकुम, केशर, या अक्षत से स्वस्तिक बनाये। **पूर्व की ओर मुंह करती हुई कुशायें रखें, पुष्पाक्षत विनिस्य गंधतोयेन संमार्ज्य मलयागुरु धूपेन धूपयित्वा एवं पुष्पमालाभिर्वितानेन च सुशोभितं च कृत्वा।**

ऐसी शय्या पर भगवान का अधिवासन कराये।

पूर्वादिदिक्षु एता देवान् प्रपूजयेत्। (३बार पूजन करे)

विष्णुप्रतिमायां :- **पूर्वे ॐ विष्णवे नमः। दक्षिणे – ॐ मधुसूदनाय नमः। पश्चिमे – ॐ त्रिविक्रमाय नमः। उत्तरे – ॐ वामनाय नमः। आग्नेयां – ॐ श्रीधराय नमः। नैर्ऋतौ – ॐ हृषीकेशाय नमः। वायव्यां – ॐ पद्मनाभाय नमः। ईशाने – ॐ दामोदराय नमः।**

शिव प्रतिष्ठायां :- **पूर्वे ॐ शर्वाय नमः। आग्नेयां – ॐ भवाय नमः। दक्षिणे – ॐ पशुपतये नमः। निर्ऋतौ – ॐ ईश्वराय नमः। पश्चिमे – ॐ उग्राय नमः। वायव्ये – ॐ महादेवाय नमः। उत्तरे – ॐ**

रुद्राय नमः। ऐशान्याम् - ॐ भीमाय नमः।

देवी प्रतिमायां - (पूर्वादिक्रमेण)

ॐ ब्राह्मयै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ कौमायै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

ततो देवं शय्यायां निवेश्य प्राक् शिरसं कृत्वा इति विशेष। विष्णु को नारायण मंत्र से देवी को देवी मंत्र तथा शिव को शिव मंत्र से निवेशन करे।

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः।
शंकराय च मयस्कराय च नमः॥

इस तरह से देवताओं को ३ बार सकलीकृत कर **कार्पास निर्मित** विचित्र वस्त्रों से देव का आच्छादन करे।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। संबाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देव एकः॥

देव के **शिरोभाग** की तरफ भूमि पर सवस्त्र सहिरण्य **निद्रा कलश** का स्थापन करे।

निद्रा कलश स्थापनम् :-

ॐ आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत मस्मैतत् स्योने कृणुध्वः ठ सुरभा उलोके। तस्मै नमन्ताञ्जनयः सपत्नी मांतेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनट॥

तथा **प्रतिष्ठापन** निम्न मंत्र से करे -

ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्व ठ हिरिप्रंप्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि॥

मधु एवं सर्पिस के देव का **अभ्यञ्जन** करे। मंत्र -

ॐ आप्यायस्वमदिन्तम सोम विश्वेभिर ठ शुभिः। भवानः सप्रथस्तमः संखा वृधे॥

तिल व सरसों के चूर्ण से देव का अनुलेपन करे। मंत्र -

ॐ या ते रुद्रशिवा तनूर घोरा ऽपापकाशिनी। तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशान्ताभि चाकशीहि॥

गंध पुष्पादि से देव की **पाद्य अर्चना** करे। श्वेत परिधान प्रदान करे –

ॐ बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहा मित्राँ अपबाधमानः। प्रभञ्जन्त्सेनाः पमृणो युधाजय न्नस्माक मेद्ध्यविता रथानाम् ॥

इसी मंत्र से **देव के कंकण** बंधन करे। देव प्रतिमा का आच्छादन करे तथा निम्न मंत्र से देव के पाद वक्ष व सिर का आलंभन करें। चारों दिशाओं में दीप प्रज्जवलित करें।

विश्वतचक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति संपत त्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देव एकः ॥

इसके बाद देव के पैरों की तरफ **पादुका** तथा दोनों **पार्श्व में शांति कुंभ दक्षिण पार्श्व में छत्र व्यंजन चामर आसन दर्पण रत्नादि तथा घण्टा भक्ष्म भोज्य जलपात्रादि स्थापित करे।**

देव की रक्षा हेतु भस्म, दर्भा व तिलों को चारों ओर ३ बार विकरण करते हुये **रक्षा प्राकार बनायें**। मंडप के बाहर आकर सब **दिक्पालों** का पूजन कर **बलि** प्रदान करे। सर्व भूतों को बलि प्रदान करे।

ॐ पूर्व दिग्वासिभ्यो दिक्पति भूताधिपति दिग्रुद्र दिग्गणपति-मातृका-क्षेत्रपालेभ्यो नमः। 'ॐ त्र्यंबकं यजामहे' इस मंत्र से सभी दिशाधिपतियों के नामानुसार **बलिप्रदान** कर आचमन करे।

ततौ होमं कुर्यात् -

यथा - १. ॐ पराय विष्णवात्मने नमः स्वाहा। इदं विष्णवे ॥ २. (शिव प्रतिष्ठयां) **ॐ पराय शिवात्मने स्वाहा। इदं शिवायनमम ॥ ३.** (देवी प्रतिष्ठायां) **ॐ परा अपरा सर्वशक्त्यै नमः स्वाहा। इदं शक्त्यै नमम ॥**

देव के इन मंत्रों से **२८ या १०८ आहुति प्रदान करें**। इसके बाद प्रतिमा में न्यास करे।

अथ न्यास प्रकरण प्रारंभते

आचार्य अपने अङ्गों में भूतशुद्धि, प्राणप्रतिष्ठा, अर्न्तमातृका, बहिर्मातृकान्यास तथा स्थाप्य देव की कलाओं का न्यास करें –

सर्व देवताओं के उपयोग में आनेवाले न्यास अर्थात् सर्व देव साधारण

न्यास पहले दिये गये है। उसके प्रमुख देवताओं के विशेष न्यास अलग से दिये गये है।

बहुधा साधारण न्यास शय्याधिवास दौरान करते है **प्रमुख न्यास प्राण प्रतिष्ठा देवन्यास मूर्ति स्थापन समय करते है** यथा लोकाचरानुसार करें विभिन्न ऋषिमत है।

१. ***प्रणवन्यासः*** :- (सभी जगह नमः का उच्चारण करे)

अं नमः पादयो। उं नमः हृदये। मं नमः ललाटे।

२. ***व्याहृतिन्यासः*** :-

भूः नमः पादयोः। भुवः नमः हृदये। स्वः नमः ललाटे।

३. ***मातृकान्यासः*** :-

अं नमः तालुनी। आं मुखे। इं दक्षिणे नेत्रे। ईं वाम नेत्रे। उं दक्षिण कर्णे। ऊँ वाम कर्णे। ऋं दक्षिण गंडे। ॠं वामगंडे। ऌं दक्षिण नासापुटे। ॡं वामनासापुटे। एं उर्ध्वौष्ठे। ऐं अधरोष्ठे। ओं उर्ध्वदंत पंक्तौ। औं नमः अधर दन्तपंक्तौ। अं ललाटे। अः जिह्वायाम्। यं त्वचि। रं चक्षुषोः। लं नासिकायां। वं दशनेषु। शं श्रोत्रयोः। षं उदरे। सं कटौ। हं हृदे। लं नाभ्याम्। क्षं लिंगे। पं फं बं भं मं दक्षिण बाहो। तं थं दं धं नं वाम बाहौ। टं ठं डं ढं णं दक्षिण जङ्घायां। चं छं जं झं ञं वाम जङ्घायाम्। कं खं गं घं ङं सर्वाङ्गुलिषु।

४. ***ऋक्ष (नक्षत्र) न्यास***

रविचन्द्राभ्यां नमः नेत्रयोः। भौमाय नमः हृदये। बुधाय नमः स्कंधे। बृहस्पतये नमः जिह्वायाम्। शुक्राय नमः लिंगे। शनैश्चराय नमः ललाटे। राहवे नमः पादयोः। केतुभ्यो नमः केशेषु।

रोहिणीभ्यो नमः हृदये। मृगशिरसे नमः शिरसि। आर्द्रायै नमः केशेषु। पुनर्वसुवे नमः ललाटे। पुष्याय नमः मुखे। आश्लेषाभ्यो नमः नासायाम्। मघायो नमः दन्तेषु। पूर्वाफाल्गुनीभ्यां नमः दक्षिण कर्णे। उत्तराफाल्गुनीभ्यां वाम कर्णे। हस्ताय नमः हस्तयोः। चित्रायै नमः दक्षिणभुजे। स्वात्यै नमः वामभुजे। विशाखा अनुराधाभ्यां नमः स्तनयोः। ज्येष्ठाय नमः दक्षिण कुक्षो। मूलाय नमः वामकुक्षौ।

पूर्वाषाढाभ्यां कटिपार्श्वयोः। उत्तराषाढाभ्यां नमः लिंगे। (उदको स्पर्श)

श्रवण धनिष्ठाभ्यो नमः वृषणे। शतभिषाभ्यो नमः नेत्रयोः। पूर्वाभाद्रपदाभ्यां नमः दक्षिणोरौ। उत्तराभाद्रपदाभ्यां वामारौ। रेवतीभ्यां नमः दक्षिणजङ्घायाम्। अश्विनीभ्यां नमः वामजङ्घायाम्। भरणीभ्यो नमः दक्षिण पादे। कृतिकाभ्यां नमः: पामपादे। ध्रुवाय नमः नाभ्यां। सप्तर्षिभ्यो नमः कण्ठे। मातृकामंडलाय नमः कटि प्रदेशे। विष्णु पदेभ्योनमः पादयोः। नागवीथ्यै नमः अंगवीथ्यै नमः वनमालायाम्। ताराभ्यो नमः रोमकूपेषु। अगस्त्याय नमः कौस्तुभे।

५. *कालन्यासः :-*

चैत्राय नमः शिरसि। वैशाखाय नमः मुखे। ज्येष्ठाय नमः हृदये। आषाढाय नमः कण्ठे। श्रवणाय नमः स्तनयो। भद्रपदाय नमः उदरे। आश्विनाय नमः कट्याम्। कार्तिकाय नमः दक्षिणोरो। मार्गशीर्षाय नमः वामोरो। पोषाय नमः दक्षिण जङ्घायाम् । माघाय नमः वाम जङ्घायाम्। फाल्गुनाय नमः पादयो।

दक्षिण भाग की ओर घुमाते हुये प्रतिमा के उर्ध्वपार्श्व में एवं बाहु के चारों ओर संवत्सराय नमः। परिवत्सराय नमः। इदुवत्सराय नमः। अनुवत्सराय नमः।

पर्वभ्यो नमः संधिषु। ऋतुभ्यो नमः लिंगे। (अत्र उदकोस्पर्श) अहोरात्रेभ्यो नमः अस्थिषु।

क्षणाय नमः, लवणाय नमः, काष्ठायै नमः – इति रोमेषु। कृताय नमः मुखे। त्रेतायै नमः हृदये। द्वापराय नमः नितम्बे। कलये नमः पादयोः। मन्वन्तरेभ्यो नमः बाह्वौः। पराय नमः परार्धाय नमः जङ्घयोः। महाकल्पाय नमः शरीरे। उदगयनाय नमः, दक्षिणायनाय नमः पादयोः। विषुवते नमः सर्वाङ्गुलीषु।

६. *वर्णन्यासः :-*

ब्रह्मणाय नमः मुखे। क्षत्रियाय नमः वाह्वो। वैश्याय नमः ऊर्वोः। शूद्राय नमः पादयोः। सङ्करजेभ्यो नमः पादाग्रे। अनुलोमजेभ्यो नमः सर्वसंधिषु। गोभ्यो नमः मुखे। अजाभ्ये नमः, अविकाभ्यो नमः

हस्तयोः। ग्राम्य पशुभ्यो नमः कट्याम्। अरण्य पशुभ्यो नमः ऊर्वो।

७. *तोयन्यासः :-*

मेघेभ्यो नमः केशेषु। अभ्रेभ्यो नमः रोमसु। नदीभ्यो नमः सर्वगात्रेषु। समुद्रेभ्यो नमः कुक्षिदेशे।

८. *वेद एवं विद्या न्यासः :-*

ऋग्वेदाय नमः शिरसि। यजुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे। सामवेदाय नमः वामभुजे। सर्वोपनिषद्भ्यो नमः हृदये। इतिहास पुराणेभ्यो नमः जङ्घयोः। अर्थवाङ्गिरसेभ्यो नमः नाभौ। कल्पसूत्रेभ्यो नमः पादयोः। व्याकरणाय नमः वक्त्रे। तर्केभ्यो नमः कण्ठे। मीमांसायै निरुक्ताय नमः हृदये। छंदशास्त्रेभ्यो नमः, ज्योतिः शास्त्रेभ्यो नमः नेत्रयोः। गीताशास्त्र-भूतशास्त्रेभ्यो श्रोत्रयोः। आयुर्वेदाय नमः दक्षिणभुजे। धनुर्वेदाय नमः वामभुजे। योगशास्त्रेभ्यो नमः हृदये। नीतिशास्त्रेभ्यो नमः पादयोः। वश्यतन्त्राय नमः ओष्ठयोः।

९. *वैराजन्यासः :-*

दिवेनमः मूर्ध्नि। सूर्यलोकाय नमः, चन्द्रलोकाय नमः नेत्रयोः। अनिललोकाय नमः घ्राणे। व्योम्ने नमः नाभ्याम्। समुद्रेभ्यो नमः वस्तिदेशे। पृथिव्यै नमः पादयोः।

१०. *देवयोनि न्यासः :-*

हिरण्य गर्भाय नमः शिरसि। कृष्णाय नमः केशेषु। रुद्राय नमः ललाटे। यमाय नमः भ्रुकुट्याम्। अश्विभ्यां नमः कर्णयोः। वैश्वानराय नमः मुखे। मरुद्भ्यो नमः घ्राणे। वसुभ्यो नमः कण्ठे। रुद्रेभ्यो नमः दन्तेषु। सरस्वत्यै नमः जिह्वायाम्। इंद्राय नमः दक्षिणभुजे। बलये नमः वामभुजे। प्रह्लादाय नमः दक्षिणस्तने। विश्वकर्मणे नमः वामस्तने। नारदाय नमः दक्षिणकुक्षौ। अनंतादिभ्यो नमः वाम कुक्षौ। वरुणाय नमः हस्तयोः। मित्राय नमः पादयोः। विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः उरुमध्ये। पितृभ्यो नमः जानुमध्ये। यक्षेभ्यो नमः जङ्घयो। राक्षसेभ्यो नमः गुल्फयोः पिशाचेयभ्यो नमः पार्ष्णयोः। ग्रहेभ्यो नमः पादतलयोः। गुह्यकेभ्यो नमः गुदे। पूतनादिभ्यो नमः नखेषु। गंधर्वेभ्यो नमः ओष्ठयोः।

कार्तिकेयाय नमः, गणेशाय नमः कटिपार्श्वये:।

११. *मूर्तिन्यास:* :-

मत्स्याय नमः मूर्ध्नि। कूर्माय नमः पादयो:। वराहाय नमः जङ्घयो। नृसिंहाय नमः ललाटे। वामनाय नमः मुखे। परशुरामाय नमः हृदये रामाय नमः बाहुषु। कृष्णाय नमः नाभ्याम्। बौद्धाय नमः बुद्धौ। कल्किने नमः जानुनी। केशवाय नमः शिरसि। नारायण नमः मुखे। माधवाय नमः ग्रीवायाम्। गोविन्दाय नमः बाह्वो:। विष्णवे नमः हृदये। मधुसूदनाय नमः पृष्ठे। त्रिविक्रमाय नमः कट्याम्। वामनाय नमः जठरे। श्रीधराय नमः हृषीकेशाय नमः जंघयो। पद्मनाभाय नमः गुल्फयो:। दामोदराय नमः पादयो:।

१२. *क्रतुन्यास:* :-

अश्वमेधाय नमः मूर्ध्नि। नरमेधाय नमः ललाटे। राजसूर्याय नमः मूखे। गोसवाय नमः कण्ठे। द्वादशाहाय नमः हृदि। अहीनेभ्यो नमः नाभौ। सर्वजितेभ्यो नमः दक्षिण कट्याम्। सर्वमेधाय नमः वाम काट्याम्। अग्निष्टोमाय नमः लिंगे। अतिरात्राय नमः वृषणयौ:। आप्तोर्यामाय नमः ऊर्वो:। षोडशिने नमः जान्वो:। उक्थाय नमः दक्षिण जङ्घायाम्। वाजपेयाय नमः वामजङ्घायाम्। अत्यग्निष्टोमाय नमः दक्षिण बाहौ। चातुर्मास्याय नमः वाम बाहौ। सौत्रामण्यै नमः हस्तेषु। पश्विष्टिभ्यो नमः अंगुलीषु। दर्शाय नमः, पौर्णमासाय नमः नेत्रयो:। सर्वेष्टिभ्यो नमः रोमकूपेषु। स्वाहाकराय नमः वषट्काराय नमः स्तनयो:। पंचमहायज्ञेभ्यो नमः पादाङ्गुलीषु। आहवनीयाय नमः मुखे। दक्षिणाग्नये नमः हृदये। गार्हपत्याय नमः नाभ्याम्। वेद्यै नमः उदरे। प्रवर्ग्याय नमः भूषणेषु। सवनेभ्यो नमः पादयो:। इध्मेभ्यो नमः बाहुषु। दर्भेभ्यो नमः केशेषु।

१३. *गुणन्यास:* :-

धर्माय नमः मूर्ध्नि। ज्ञानाय नमः हृदि। वैराग्याय नमः गुह्ये। ऐश्वर्याय नमः पादयो:।

अथ मूलमंत्र न्यास:। आयुध न्यास: शक्तिन्यास: अंग न्यास:। इति

साधारणतः सर्वत्र यथा यथा देवानाम् विभागः।

।। अथ आयुधन्यासः ।।

विष्णु प्रतिष्ठायाम् :-

खड्गाय नमः शिरसि। नमशार्ङ्गाय नमः मस्तके। मुशलाय नमः दक्षिणभुजे। हलाय नमः वामभुजे। चक्राय नमः (नाभ्यां, जठरे, पृष्ठे च)। शंङ्खाय नमः लिंगे वृषणे। गदायै नमः जङ्घयोः जान्वोश्च। पद्माय नमः गुल्फयोः पादयोश्च।

शिवप्रतिष्ठायाम् :- (अष्टायुधन्यास)

वज्राय नमः शिरसि। दण्डाय नमः मस्तके। खड्गाय नमः दक्षिण भुजे। पाशाय नमः वामभुजे। ध्वजाय नमः नाभ्याम्। अङ्कुशाय नमः (लिंगे, वृषणे च)। त्रिशूलाय नमः जंघयोः जान्वोश्च। पद्माय नमः गुल्फ पादयोः।

अथ दशायुधन्यासः :-

ॐ वज्राय नमः शिरसि। शक्तये नमः मस्तके। दण्डाय नमः दक्षिणभुजे। खड्गाय नमः वामभुजे। पाशायनमः जठरे, नाभि, पृष्ठदेशेषु। अङ्कुशाय नमः लिङ्गे बृषणयोश्च। त्रिशूलाय नमः जान्वोः। ध्वजाय नमः जङ्घयो। चक्राय नमः गुल्फयोः। पद्माय नमः पादयो।

देवीप्रतिष्ठायाम् :-

त्रिशूलाय नमः शिरसि। खड्गाय नमः मस्तके। चक्राय नमः दक्षिण भुजे। वाणाय नमः वामभुजे। शक्तये नमः नाभौ। खेटकाय नमः गुह्ये। चापाय नमः जङ्घयोः। पाशाय नमः जानुनीः। अंकुशाय नमः गुल्फयोः। परशवे नमः पादयोः।

गणेशप्रतिष्ठायाम् :-

बीजपूराय नमः शिरसि। गदायै नमः मस्तके। धनुषाय नमः वामभुजे। त्रिशूलाय नमः दक्षिण भुजे। चक्राय नमः नाभ्यां। कमलाय नमः जठरे। पाशाय नमः पृष्ठे। उत्पलाय नमः (लिंगे, वृषणे च)। बाणाय नमः जङ्घयोः। अंकुशाय नमः जानुनीः। विषाणाय नमः गुल्फयोः। रत्नकलाय नमः पादयोः।

सूर्यायुधन्यासः :- (शिव प्रतिष्ठानुसार)

।। अथ शक्तिन्यासः ।।

विष्णुप्रतिष्ठयाम् :-

लक्ष्म्यै नमः ललाटे। सरस्वत्यै नमः मुखे। रत्यै नमः गुह्ये। प्रीत्यै नमः कण्ठे। कीर्त्यै नमः दिक्षु। शान्त्यै नमः हृदि। तुष्ट्यै नमः जठरे। पुष्ट्यै नमः सर्वत्र।

शिवस्यशक्तिन्यासः :-

वामायै नमो ललाटे। ज्येष्ठायै नमो मुखे। रुद्राण्यै नमो गुह्ये। काल्यै नमः कण्ठे। कलविकरणायै नमो दन्तेषु। बलायै नमो हृदये। बलप्रमथनायै नमो जठरे। सर्वभूतदमनायै नमो नाभौ। उन्मनायै सर्वाङ्गेषु।

देव्याशक्तिन्यासः :-

प्रभायै नमः ललाटे। उमायै नमः मुखे। जयायै नमः गुह्ये। सूक्ष्मायै नमः कण्ठे। विशुद्धायै नमः दन्तेषु। नन्दिन्यै नमः हृदये। सुप्रभायै नमः नाभौ। विजयायै नमः उदरे। सर्व सिद्धि प्रदायिन्यै नमः सर्वाङ्गेषु।

गणेशस्य शक्तिन्यासः :-

ॐ तीव्रायै नमः ललाटे। ज्वालिन्यै नमः मुखे। नंदायै नमः गुह्ये। भोगदायै नमः कण्ठे। कामरूपिण्यै नमः दंतेषु। उग्रायै नमः हृदये। तेजोवत्यै नमः नाभौ। सत्यायै नमः उदरे। सर्वविघ्ननाशिन्यै नमः सर्वाङ्गेषु।

सूर्यस्यशक्तिन्यासः :-

दीप्तायै नमो ललाटे। सूक्ष्मायै नमः मुखे। विजयायै नमो गुह्ये। भद्रायै नमः कण्ठे। विभूत्यै नमो दन्तपङ्क्तिषु। विमलाय नमो हृदये। अमोघाय नमो नाभौ। विद्युतायै नमो उदरे। सर्वतोमुख्यै नमो सर्वाङ्गे।

हनुमानप्रतिष्ठयाम् :- - यथा रुद्र न्यासादि।

।। अथ अंगन्यासः ।।

विष्णुप्रतिष्ठयाम् :-

ॐ हृदयाय नमः हृदये। ॐ शिरसे स्वाहा शिरसि।ॐ शिखायै वषट् शिखायाम्। ॐ कवचाय हुं सर्वाङ्गेषु। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रयोः। अस्त्राय फट् करयो।

ॐ नमः हृदये नमः। ॐ नं नमः शिरसि। ॐ भगवते नमः शिखायाम्। ॐ वासुदेवाय नमः कवचाय सर्वाङ्गे। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट् करयोः। श्रीवत्साय नमः स्तनयोः। कौस्तुभाय नमः उरसि। वनमालायै नमः कण्ठे।

शिवप्रतिष्ठायाम् :-

ॐ नमो हृदये। ॐ नं नमः शिरसि। ॐ मं नमः शिखायै वषट्। ॐ शिं नमः कवचाय हुम्। वां नमो नेत्रत्रयाय वौषट्। यं नमः अस्त्राय फट्।

देव्या अंगन्यासः :-

ॐ ह्रां दुर्गायै नमः हृदये। ॐ ह्रीं दुर्गायै मः शिरसि। ॐ ह्रुं दुर्गायै नमः शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं दुर्गायै कवचायै हुँ। ॐ ह्रौं दुर्गायै नमः नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः दुर्गायै अस्त्राय फट्।

सूर्य अंगन्यासः :-

ॐ नमो घृणये सूर्यादित्याय सत्याय नमः हृदये। ॐ नमो घृणये सूर्यादित्याय ब्रह्मणे शिरसे स्वाहा।

ॐ नमो घृणये सूर्यादित्याय विष्णवे शिखायै वषट्। ॐ नमो घृष्णवे सूर्यादित्याय रुद्राय कवचाय हुम्। ॐ नमो घृणवे सूर्यादित्याय अग्नये नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमो घृणवे सूर्यादित्याय सर्वाय अस्त्राय फट्।

गणेश अंगन्यासः :-

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षड्बीजस्य गां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षड्बीजस्य गीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षड्बीजस्य गूं शिखायै वषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षड्बीजस्य गैं कवचाय हुं। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षड्बीजस्य गौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं षड्बीजस्य गः अस्त्राय फट्।

।। अथ मंत्रन्यासः ।।

विष्णोर्द्वादशाक्षर मंत्रन्यासः :-

ॐ नमः पादयोः। ॐ नं नमः जानुनीः। मों नमः गुह्ये। भं नमः नाभौ। गं नमः हृदये। वं नमः कण्ठे। तें नभः मुखे। वां नमः नेत्रयोः।

सुं नमः भाले। दें नमः मूर्ध्नि वां नमः दक्षिणपार्श्वे। यं नमः उत्तरपार्श्वे।

शिवस्यं द्वादशाक्षर मंत्रन्यासः :-

ॐ नमो भगवते शिवाय नमः। ॐ नमः पादयोः। ॐ नं नमो जानुनि। मों नमः गुह्ये। भं नमः नाभौ। गं नमः हृदये। वं नमः कण्ठे। तें नमः मुखे। शिं नमः नेत्रयोः। वां नमः ललाटे। यं नमः शिरसि। नं नमः दक्षिणपार्श्वे। मं नमः वामपार्श्वे।

सूर्य मंत्रन्यासः :-

ॐ नमः पादयोः। नं नमः जानुनोः। मं नमः गुह्ये। भं नमः नाभौ। गं नमः हृदये। वं नमः कण्ठे। ते नमः मुखे। सूं नमः नेत्रयोः। र्यां नमः भाले। यं नमः मूर्घ्नि। नं नमः दक्षिण पार्श्वे। मं नमः वामपर्श्वे।

देव्या मंत्रन्यासः :-

ॐ नमो मूर्ध्नि। ह्रीं नमः मुखे। क्लीं नमः कण्ठे। चां नमः हृदि। मुं नमः दक्षिणपार्श्वे। डां नमः वामपार्श्वे। यै नमः नाभौ। विं नमः गुह्ये। च्चें नमः पादयोः।

गणपति मंत्रन्यासः :-

ॐ नमः मूर्ध्नि। ॐ नमः शिखायाम्। ॐ श्रीं नमः ललाटे। ॐ ह्रीं नमः दक्ष भ्रुवि। ॐ क्लीं नमः वामभ्रुवि। ॐ ग्लों नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ गं नमः वामनेत्रे। ॐ णं नमः दक्षिण कर्णे। ॐ पं नमः वामकर्णे। ॐ तं नमः दक्षनासापुटे। ॐ यें नमः वामनासापुटे। ॐ सं नमः ओष्ठयो। ॐ र्वं नमः तालुदेशे। ॐ जं नमः नाभौ। ॐ नं नमः उदरे। ॐ में नमः कट्याम्। ॐ वं नमः लिंगे। ॐ शं नमः लिंगे। ॐ मां नमः उर्वोः। ॐ नं नमः जंघयोः।ॐ यं नमः गुल्फयोः। ॐ स्वां नमः पादयोः। ॐ हां नमः अंगुलिषु।

राममंत्रन्यासः :-

रां नमः ब्रह्मरंध्रे। रां नमः भ्रुवोर्मध्ये। मां नमः हृदि। यं नमः नाभौ। नं नमः लिंगे। मं नमः पादयोः। रां रामाय नमः सर्वाङ्गेषु।

(दशाक्षर मंत्रेन्) ह्रीं नमः मस्तके। जां नमः ललाटे। नं नमः भ्रुर्मध्ये। कीं नमः तालौ। वं नम कंठे। ह्लं नमः हृदये। भं नमः नाभौ। यं नमः ऊरौ। स्वां नमः जानौ। हां नमः पादयोः।

ह्रीं जानकी वल्लभाय स्वाहा मंत्रेण सर्वाङ्गेषु।

हनुमान मंत्रन्यासः :-

ह्रां ह्रीं हनुमते अंगुष्ठाभ्यां। ह्रीं वं वायुपुत्राय नमः तर्जनीभ्यां। ह्रूं भं अंजनीसुताय नमः मध्यभ्यां। ह्रैं रां रामदूताय नमः अनामिकाभ्यां। ह्रौं रुं रुद्रमूर्तये नमः कनिष्ठकाभ्यां। ह्रंः सं सीता शोकनिवारणाय नमः करतलपृष्ठाभ्यां।

ॐ अंजनी सूनवे हृदयाय नमः। रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा। ॐ वायुसुतात्मने शिखायै वषट्। ॐ वज्रदेहाय कवचाय हुँ। ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ब्रह्मास्त्र निवारणाय अस्त्राय फट्। ॐ रामदूताय विद्महे कपिराजाय धीमहि तन्नो हनुमत् प्रचोदयात्। ॐ हुं फट् अस्त्राय फट्।

नृसिंह मूर्ति प्रतिष्ठयाम् :-

प्रतिन्यास के पूर्व में नृसिंह मंत्र का उच्चारण करे।

ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा हृदयाय नमः। शिरसे स्वाहा। शिखायै वौषट्। नेत्रत्रयाय वौषट। कवचाय हुं। अस्त्राय फट्।

इसके पश्चात नृसिंह को बलि प्रदान करे।

अथ प्राणप्रतिष्ठ न्यासः

ॐ अस्य श्री प्राण प्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्म विष्णु महेश्वरा ऋषयः ऋग्यजु सामानि छंदांसि चैतन्य देवता आं बीजम् ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलम् अमुक देवप्रतिमायाः प्राणप्रतिष्ठायां जीवन्यासे विनियोगः।

ॐ ब्रह्म विष्णु रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋग्यजु सामछंदोभ्यो नमः मुखे। प्राणाख्य देवतायै नमः हृदि। आंबीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे।

अंगों को स्पर्श करते हुये न्यास करें।

ॐ कं खं गं घं ङं अं पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशात्मने आं हृदयाय नमः। ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्द स्पर्श रूप रस गंधात्मने ईं शिरसे स्वाहा। ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्त्वक् चक्षु जिह्वा घ्राणात्मने ऊं शिखायै वषट्। ॐ तं थं

दं धं नं एं वाक् पाणि पाद पायूप स्थात्मने ऐं कवचाय हुँ। ॐ पं फं बं भं मं ओं वचनादान विहरणो त्सर्गानन्दात्मने ॐ नेत्रत्रयाय वौषट। ॐ यं रं लं वं शं षं सं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कार चित्तात्मने अः अस्त्राय फट्। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः अमुक देवस्य प्राणा इह प्राणा। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः अमुक देवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः अमुक देवस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हंसः अमुक देवस्य वाङ्मनः चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राणा पदादीनि इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा (इस मंत्र को तीन बार पढ़ें)

इसके बाद प्रतिमा के हृदय पर अंगुष्ठ रख कर पढ़ें।

ॐ अस्य प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरन्तु च। देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।

इस प्रकार देव में **जीव भाव** की ध्यान पूर्वक भावना करे। '**ध्रुव सूक्त**' का पाठ करे **देवता के कर्ण में गायत्री मंत्र** का जप करे।

नोट :– बहुत से विद्वान् गायत्री मंत्र का देव कर्ण में जाप मूर्ति में प्रतिष्ठा प्रासाद में स्थापन करने के बाद करते है।

इसके बाद मूर्ति में जीव न्यास करे।

।। *जीव न्यासः* ।। (प्रतिमार्चासु)

अपने हृदय कमल में परमात्मा के दिव्य तेज का ध्यान करे तथा नासिका (ब्रह्मरंध्रेण) से श्वास निःसार्य करते हुये प्रतिमा में तेज के समाहित होने का ध्यान करे तथा प्रतिमा 'जीवन्यास' करे।

प्रणवाय नमः हृदि। ॐ मं जीवात्मने नमः, ॐ भं प्राणात्मने नमः शरीरे। बं बुद्ध्यायात्मने नमः, फं अहंकारात्मने नमः, पं मन आत्मने नमः हृदये। नं शब्दतन्मात्रात्मने नमः शिरसि। धं स्पर्शतन्मात्रात्मने नमः मुखे। दं रूपतन्मात्रात्मने नमः हृदि। थं रस तन्मात्रात्मने नमः हस्तयो। तं गं धतन्मात्रात्मने नमः। पादयोः। णं श्रोतात्मने नमः कर्णयोः। ढं त्वगात्मने नमः त्वचाये। डं चक्षुरात्मने नमः नेत्रयो। ठं जिह्वात्मने नमः जिह्वायां। टं घ्राणात्मने नमः नासिकाधां। ञं वागात्मने नमः कण्ठे। झं पाण्यात्मने नमः हस्तयोः। जं पदात्मने नमः पादयोः। छं पाय्वात्मने –

पायुस्थाने (मलद्वारे)। चं उपस्थाने नमः उपस्थ (पेडू)। ङं पृथिव्यात्मने नमः पादयोः। घं अप्तत्त्वात्मने नमः उदरे वस्ति प्रदेशे। गं तेजोत्मने नमः हृदये। सं सोमात्मने नमः स्तनमध्ये। वं वह्नयात्मने नमः। हृतपुण्डरीकाय मध्ये। सं सर्वात्मने नमः। लं सर्वसंहरणात्मने नमः। ॐ क्षं कोपात्मने नमः।

।। अथ ध्रुवसूक्तम् ।।

ध्रुवोसि पृथिवीन्दृ ठं हध्रुवक्षिदस्यन्तरिन्दृ ठं हा च्युत
क्षिदसि दिवन्दृ ठं हाग्नेः पुरीष मसि ॥१॥
ध्रुवासि ध्रुवोयं यजमानो ऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्।
घृतेन द्यावचा पृथिवी पूर्येथाम्रिन्द्रस्य
च्छदिरसि विश्वजनस्यच्छाया ॥२॥
ध्रुवसदन्त्वा। नृषदंमनः सदमुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा ।
जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय यत्वा जुष्टतमम् ॥३॥
ध्रुवासि धरुणास्तृता विश्वकर्मणा मा त्वा समुद्र ।
उद्वधीन्मा सुपर्णो व्यथमाना पृथिवीन्दृ ठं ह ॥४॥
ध्रुवासि धरुणेतोजज्ञे प्रथममेभ्यो योनिभ्यो अधिजातवेदाः ।
सगायत्र्या त्रिष्टुभानुष्टुभा च देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन् ॥५॥

।। अथ तत्व होमः ।।

ध्रुवसूक्त एवं जीवन्यास के बाद निम्न मंत्र से हवन करे।

ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा। ॐ आत्मतत्त्वादिपतये ब्रह्मणे स्वाहा ॥ ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा। ॐ विद्यातत्त्वाधिपतये विष्णवे स्वाहा ॥
ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा। ॐ शिवतत्त्वाधिपतये रुद्राय स्वाहा ॥

षोडश तत्वन्यासः :- सर्वार्चा प्रतिमासु (सर्वसाधरण प्रयोगे)

ॐ आत्मतत्त्वाय नमः पादयोः। ॐ विद्यातत्त्वाय नमः हृदि। ॐ शिवतत्त्वाय नमः शिरसि। (इतित्रितत्वन्यास)

बीजन्यासः :-

ॐ पृथिवीतत्त्वात्मने नमः पादयोः अप्तत्त्वात्मने नमः बस्तौ।

तेजस्तत्त्वामने हृदये। ॐ वायुतत्त्वात्मने नमः घ्राणे। ॐ आकाश तत्त्वात्मने नमः शिरसि। गंधतत्त्वात्मने पादयोः। रसतत्त्वात्मने बस्तौ। रूपतत्त्वात्मने नमः हृदये। स्पर्शतत्त्वात्मने नमः घ्राणे। शब्दतत्त्वात्मने शिरसि।

घ्राणतत्त्वात्मने नमः घ्राणे। जिह्वातत्त्वात्मने नमः जिह्वायाम्। चक्षुस्तत्त्वात्मने नमः चक्षुषोः। त्वक्‌तत्त्वात्मने नमः त्वचि। श्रोत्रतत्त्वात्मने नमः कर्णयोः। पायुतत्त्वात्मने नमः पायौ। उपस्थतत्त्वात्मने नमः उपस्थे। हस्ततत्त्वात्मने नमः हस्तयोः। पादतत्त्वात्मने नमः पादयोः। वाक्‌तत्त्वात्मने नमः वाचि। मनस्तत्त्वात्मने नमः मनसि। बुद्धितत्त्वात्मने नमः मूर्ध्नि (बुद्धौ)।

अहङ्कारतत्त्वात्मने नमः। सत्त्वाय नमः। रजसे नमः तमसे नमः। पुरुषतत्त्वाय नमः इति हृदये। पुनः हृदये विद्यातत्त्वात्मने नमः। नीति तत्त्वात्मने नमः। तर्कतत्त्वात्मने नमः। कालतत्त्वात्मने नमः। मायातत्त्वात्मने नमः। ईश्वरतत्त्वात्मने नमः। सदाशिवतत्त्वात्मने नमः। शक्तितत्त्वात्मने नमः। शिवतत्त्वात्मने नमः। इत्यादि बीज न्यासं च कुर्यात्।

।। *गायत्री न्यासः* ।। (सर्वार्चासु)

(सूर्य प्रतिष्ठासु विशेषः)

नमः सर्वत्र प्रयुक्त करे -

तत् - पादङ्गुष्ठयोः। सं - गुल्फयोः। विं नमः जङ्घयोः। तुं नमः जानुनोः। वं नमः उर्वोः। रें - गुदे। णिं - वृषणे। यं - कटौ। भं - नाभौ। गं - जठरे। दें - स्तनयोः। वं हृदि। स्यं - कंठे। धीं - वक्त्रे। मं - तालुदेशे। हिं - नासिकाग्रे। धिं - चक्षुषोः। यों भ्रूमध्ये। यों - ललाटे। नः पूर्वे। प्र - दक्षिणे। चों - पश्चिमे। दं - उत्तरे। यां - मूर्ध्नि। त् - सर्वत्र।

तत्सवितुं - हृदि। वरेण्यं - शिरसि। भर्गोदेवस्य धीमहि - कवचे। धियो यो नः - नेत्रयोः। प्रचोदयात् - अस्त्रे।

।। मंत्रन्यासः ।। (सर्व अर्चा प्रतिमासु)

(पादयोः) – ॐ अग्नी मीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

(गुल्फयोः) ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा वायवस्थ देवोवः सविता प्रापर्यतु श्रेष्ठतमाय कर्मण। आप्यायध्व मध्न्या इंद्रायभागं प्रजावतीग्रमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशतमाघश ठ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौस्यात् बह्वी र्यजमानस्य पशून पाहि॥

(जंघयोः) ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणा नो हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि।

(जानुनोः) ॐ शन्नो देवी रभिष्टय इति मंत्रेण।

(उर्वोः) ॐ सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गात्रयञ्चक्षु बृहद्रथंतर पक्षौ। स्तोम आत्माछन्दा ७ स्यङ्गानि यजु ७ षिनाम॥

(जठरे) ॐ स्वस्ति नो इन्द्रो..... इति मंत्रेण।

(हृदये) ॐ दीर्घायुत्त्वाय बलाय वर्चसे सुप्रजास्त्वाय सहसा अथो जीव शरदः शतम्।

(कण्ठे) ॐ श्रीश्चते....इति मंत्रेण

(वक्रे) ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ठ हवे हवे सुहव ७ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ठ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥

(स्तनयोनैयोश्च) ॐ त्र्यंबकं यजामहे.....इति मंत्रेण।

(मूर्ध्नि) ॐ मर्द्धानन्दिवो ऽ अरतिम्पृथिव्यावैश्वानरमृत आजात मग्निम् । कवि ठ सम्प्रज मतिथिं जनाना मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥

।। नारायणमूर्तो द्वादशाक्षर मंत्रेण न्यासः ।।

ॐ केशवाय नमः शिरसि। ॐ नं नारायणाय नमः मुखे। ॐ मों माधवाय नमः ग्रीवायाम्। ॐ भं गोविन्दाय नमः कण्ठे। गं विष्णवे नमः पृष्ठे। वं मधुसूदनाय नमः कुक्षौ। तें त्रिविक्रमाय नमः कट्याम्। वां वामनाय नमः जंघयोः। सुं श्रीधराय नमः वामगुल्फे। दें हृषीकेशाय

नमः दक्षिण गुल्फे। वां पद्मनामाय नमः वामपादे। यं दामोदराय नमः दक्षिण पादे।

।। नारायणमूर्तौ विष्णवष्टाङ्गा मंत्रेण न्यासः ।।

ॐ हुं हृदयाय नमः हृदये। ॐ विष्णवे नमः शिरसि। ब्रह्मणे नमः शिखायाम्। ध्रुवाय नमः कवचे। चक्रिणे नमः अस्त्राय फट् हस्तयोः। ॐ शंभवे नमः गायत्रीं दक्षिण नेत्रे। विजयाय नमः, सावित्रीं नमः वामनेत्रे। चक्रिणे चक्ररूपाय नमः पिङ्गलास्त्रं नमः दिक्षु।

।। उत्तर नारायणमूर्तौ न्यासः ।। (विष्णुमूर्तौ)

(हृदये) ॐ अद्भ्यः संभूतः पृथिव्यै रसाच्च। विश्वकर्मणः समवर्तताग्रे।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति। तन्मर्त्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ।
(शिरसि) ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णा तमसः परस्तान्।
तमेवं विदित्वाति मृत्युमेतिनान्यः पन्था विद्यते ऽयनाय ॥
(शिखायाम्) ॐ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरअजायमानो बहुधा विजायते ।
तस्य योनिम्परिपश्यन्ति धीरास्तमिन् हस्त्थुर्भुवनानिविश्वा ॥
(कवचे) ॐ यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः ।
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्रह्मणे ॥
(नेत्रयोः) ॐ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा अग्रे तदब्रुवन् ।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात् तस्य देवा असन्वशे ॥
(अस्त्राय फट् हस्तयो) ॐ श्रीश्चते.....इति मंत्रेण।

।। अथ पुरुषसूक्तेन न्यासः ।।

(सर्वसाधारण एवं विष्णुमूर्तौ)

(पादयोः) ॐ शहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा ऽत्यतिष्ठद् दशांगुलम् ॥१॥
(जंघयोः) ॐ पुरुष एवेदं सर्वं यदभूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्व स्येशानो यदन्ने नाति रोहति ॥२॥
(जानुनोः) एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाश्चँ पुरुषः ।

पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
(उर्ध्वो:) त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोस्येहा भवत् पुनः ।
ततो विष्णाङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि ॥४॥
(वृषणयो:) तस्मा विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स ज्ञातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥५॥
(कट्याम्) तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशुनताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्च ये ॥६॥
(नाभ्याम्) तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छंदाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्माद जायत ॥७॥
(हृदि) तस्मादश्वा अजायन्त ये के चो भयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः ॥८॥
(स्तनयो:) तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेनदेवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥९॥
(बाह्वो) यत्पुरुषं व्यदधु कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमसीत्य किं बाहू किं ऊरु पादा उच्येते ॥१०॥
(मुखे) ब्राह्मणोस्य मुख मासीद् बाहु राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रो अजायत ॥११॥
(चक्षुषो:) चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षो सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणाश्च मुखादग्निरय्जायत ॥१२॥
(कर्णयो:) नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ॥
(भ्रुवे:) यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो ऽअस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धवि ॥
(भाले) सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥
(शिरसि) यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवा ॥

।। अथ शिव प्रतिष्ठायां विशेष न्यासः ।।

अंग न्यासः :-

'मनोजूति' मंत्रेण ॥ हृदयायनमः ॥

ॐ अबोध्यग्निः समिधा जानानां प्रतिधेनु मिवायती मुषासम् ।यह्वा इव प्रवयामुंजिहानाः प्रभानवः सिस्त्रते नाकमच्छ ।।शिरसे स्वाहा॥ ॐ मूर्धान्दिवो अरतिम्पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् । कवि ठं सम्राजमतिथिं जनानामासन्न पात्रञ्जनयन्त देवाः ।।शिखायै वषट्॥ ॐ मर्माणि ते वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा राजाममृतेनानुवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ।।कवचाय हुम॥

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबरहुरुत विश्वतस्पात् ।संबाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ।।नेत्र त्रयाय वौषट्॥ ॐ मानोस्तोके तनये मान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषु रीरिषः । मानो वीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ।।अस्त्राय फट्॥

।। रुद्र सूक्तेन षोडश न्यासः ।।

(वामकरे) ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवेनमः
बाहुभ्यामुतते नमः ॥१॥

(दक्षिणकरे) याते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी
तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाक शीहि ॥२॥

(वामपादे) यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवाङ्गिरित्र ताङ् कुरु माहि ठ्ठ सीः पुरुषः जगत् ॥३॥

(दक्षिणपादे) शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ।
यथा नः सर्वमिज्जगद यक्ष्म ठ्ठ सुमना असत् ॥४॥

(वामजानौ) ॐ अध्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यो धराचीः परासुव ॥५॥

(दक्षिण जानौ) असौ यस्ताम्रो अरुण उतबभ्रुः सुमङ्गलः ।
ये चैन ठ्ठ रुद्रा अभितो दिक्षुश्रिता सहस्त्रशो वैषा ठ्ठ हेड ईमहे ॥६॥

(वामकट्याम्) ॐ असोयोवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः ।

उतैनं गोपा अदृश्रन्नु श्रदृन्नुदहार्यः सदृष्टो मृड याति नः ॥७॥
(दक्षिणकट्याम्) ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथे ये अस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करन्नमः ॥८॥
(नाभौ) ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्व मुभयोरात्र्योर्ज्यांम् ।
याश्चते हस्त इषवः पराता भगवोवप ॥९॥
(हृदये) ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ उत ।
अनेशन्नस्य या इषवः आभुरस्य निषंगधिः ॥१०॥
(वामकुक्षौ) ॐ या ते हेतुर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।
तयास्मान् विश्वतस्त्वम यक्ष्मया परिभुज ॥११॥
(दक्षिण कुक्षौ) ॐ परिते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् ॥१२॥
(कण्ठे) ॐ अवतस्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे
निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भवः ॥१३॥
(मुखे) ॐ नमस्ते आयुधायाना तताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुतते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ॥१४॥
(अक्षणो) ॐ मानो महान्त मुतमानो अर्भकम्मानः
उक्षन्तमुतमान उक्षितम् । मानो वधीः पितरं
मोतमातरंमानः प्रियानस्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥१५॥
(मूर्ध्नी) ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो
गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्रभामिनो
वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥१६॥

॥ शिवस्य पंचब्रह्मन्यासः ॥

ईशानाय नमः अंगुष्ठयोः। तत्पुरुषाय नमः तर्जनीभ्यां। अघोरेभ्यो नमः मध्यमाभ्यां। वामदेवाय नमः अनामिकाभ्यां। सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकाभ्यां।

पुनः सद्योजाताय नमः हृदये। वामदेवाय नमः शिरसि। अघोराय नमः शिखायै वषट्। तत्पुरुषाय नमः कवचाय हुँ। ईशानाय नमः अस्त्राय

फट्।

प्रतिकर्म सर्वत्र आचमन करें। लिंग मुद्रा दिखावें तथा '**ॐ ईशानः सर्व विद्यानाम्**' इस पूरे मंत्र से ईशान नामवाली मुट्ठी को बांधना चाहिये।

(मूर्ध्नि - अंगुलियों के अग्र भाग से रुद्रमुद्रा से न्यास करे)

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिः ब्रह्मणोधिपति र्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥

(मुखे - तर्जनी एवं अंगुष्ठ के योग से)

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

(हृदये - मध्यमा एवं अंगुष्ठ के योग से)

ॐ अघोरेभ्यो घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्व सर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्र रूपेभ्यः ॥

गुह्ये- अनामिका एव अंगुष्ठ के योग से।

ॐ वामदेवाय नमः ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः। कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो। बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

(पादारभ्य मस्तकान्तं - कनिष्ठा एवं अंगुष्ठ के योग से)

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

शिवस्य व्यापक मूर्तिन्यासः

(विशेष में कलान्यास ४८ है)

(उर्ध्व मूर्ध्नि) - **ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः** इस मंत्र से शिर के ऊपर मूर्धा में।

(पूर्वमूर्ध्नि) - **ईश्वरः सर्वभूतानां नमः अभदाम्।**

(दक्षिणमूर्ध्नि) - **ब्रह्मादिपति र्ब्रह्मणो ऽधिपति र्ब्रह्मा नमः इष्टदां कलां नमः।**

(उत्तर मूर्ध्नि) - **शिवो मे अस्तु नमः मरीचीं कलां नमः।**

(पश्चिम मूर्ध्नि) - सदाशिवोऽम् नमः ज्वालिनीं कलां नमः ।

तत्पुरुष चतुष्ट्य कलान्यासः

(पूर्व मुखे) - ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नमः शांति कलायै नमः।

(दक्षिण मुखे) - ॐ महादेवाय धीमहि नमः विद्या कलायै नमः।

(उत्तर मुखे) - ॐ तन्नोरुद्र नमः प्रतिष्ठा कलायै नमः।

(पश्चिम मुखे) - ॐ प्रचोदयात् नमः धृति कलायै नमः।

अघोर कलान्यासः (८)

ॐ अघोरेभ्य नमः माम हृदये। अथ घोरेभ्यो नमः जराकलायै नमः उरसि (जंघयोः)। घोरेभ्यो नमः सत्व कलायै नमः स्कंधयोः। घोरतरेभ्यो नमः निद्रायै नमः नाभौ। सर्वेभ्यो नमः सर्वव्याधिं नमः कुक्षि(पेट में)। सर्व शर्वेभ्यो नमः मृतवे नमः पृष्ठे। नमस्ते अस्तु नमः क्षुधायै नमः वक्षसि। रुद्ररूपेभ्यो नमः तुषायै नमः उरसि।

वामदेव कलान्यासः (१८)

(गुह्ये) वामदेवाय नमः जरायै नमः। (लिंगे) ज्येष्ठाय नमः रक्षायै नमः ॥ श्रेष्ठाय नमः रतिकलायै नमः दक्षिणोरौ ॥ रुद्राय नमः पालिनीं नमः॥ दक्षिण जानौ॥ कालाय नमः कामिन्यै नमः॥ वामजानौ॥ कलविरणाय नमः संजीवन्यै नमः॥ दक्षिणजंघायाम॥ बलविकरणाय नमः क्रियायै नमः॥ वाम जंघायाम्॥ बलाय नमो वृद्यै नमः॥ दक्षिण स्फिचि॥ बलाय नमः छायायै नमः॥ वाम स्फिचि॥ प्रमथनाय नमः धात्र्यै नमः॥ कट्याम॥ सर्वभूतदमनाय नमः भ्रामण्यै नमः॥ दक्षिणपार्श्वे॥ मनो नमः पोषाणीं नमः॥ वामपार्श्वे उन्मनाय नमः ज्वरायै नमः॥

सद्योजात कलान्यासः (८)

॥दक्षिण पादे॥ सद्योजातं प्रपद्यामि नमः सिद्धिं॥ वामपादे॥ सद्योजाताय वै नमः ऋद्धिं ॥ दक्षिण पाणौ॥ भवे नमः कीर्तिं ॥ वामपाणौ॥ अभवे नमः लक्ष्मीं॥ नासायाम्॥ नातिभवे नमः मेधां ॥ शिरसि॥ भवस्व मां नमः कातिं ॥ दक्षिण बाहौ॥ भव नमः स्वधां ॥ वामबाहौ॥ उद्भवाय नमः प्रभां॥

हंस मंत्रेण न्यासः सर्वसाधारण ॥

'हंसं हंसी' इति मंत्रेण हृदयादिन्यास सर्वत्र।

॥ अथ देवीप्रतिष्ठं श्रीसूक्तेन् न्यासः ॥

॥शिरसि॥ ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥

॥नेत्रयो:॥ ॐ ताम्म आवह जातेवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥

॥कर्णयो:॥ ॐ अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥

॥घ्राणयो:॥ ॐ कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

॥मुखे॥ ॐ चंद्रां प्रभासां यशसा ज्वलतीं श्रियं लोके देव जुष्टामुदाराम् । तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥

॥ग्रीवायां॥ आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः । तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥

॥करयो:॥ ॐ उपैतु मां देवसखः कीतिश्च मणिनासह ।
प्रादुभूतोऽस्मिराष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं ऋद्धिं ददातु मे ॥

॥हृदि॥ ॐ क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥

॥नाभौ॥ ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वे श्रियम् ॥

॥गुह्ये॥ ॐ मनसः काममाकूतिं वा चः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥

॥गुदे॥ ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ।

श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥

।ऊर्वोः॥ ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि चिल्कीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥

।जानुनोः॥ ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥

।जंघयोः॥ ॐ आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥

।चरणोः॥ ॐ ताम्म आवह जातवेदो लक्ष्मीमन पगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्यो ऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

।सर्वाङ्गे ॥ ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

॥इति श्रीसूक्तेन न्यासः॥

अथ निद्राकलशे निद्रावाहनम्

देव शय्या के शिर प्रदेश की ओर कलश स्थापन कर निद्रा का आवाहन करे। -

परमेष्ठिनं नमस्कृत्य निद्रामावाहयाम्यहम् ।
मोहिनी सर्वभूतानां मनो विभ्रमकारणीम् ॥१॥
विरूपाक्षे शिवे शान्ते आगच्छ त्वं तु मोहिनी ।
वासुदेवहिते कृष्णे कृष्णाम्बरविभूषिते ॥२॥
आगच्छ सहसा अजस्रसुप्तं संसार मोहिनि ।
सुषुप्स्व संहरे देवी कुमार्ये कान्तमानसे ॥३॥
श्रम निःश्वास वाह्यं च आगच्छ भुवनेश्वरी ।
तमः सत्व रजोपेते आगच्छ त्वरचारिणि ॥४॥
मनो बुद्धिहङ्कार संहार त्वं सरस्वति ।
शब्द स्पर्शश्च रूपञ्च रसो गंधश्च पंचमः ॥५॥
आगच्छ गृह्य संक्षिप्य मोहपाश निबंधिनि ।

भवस्योत्पत्ति - हेतुस्त्वं यावदा भूतसंप्लवम् ॥६॥
भुवः कल्पान्त संध्यायां वससे त्वं चराचरे ।
भोगिशय्यां प्रसुप्तस्य वासुदेवस्य शासने ॥७॥
त्वं प्रतिष्ठाऽसि वै देवि मुनियोनि समुत्थिते ।
पितृ देव मनुष्याणां सयक्षे - रगरक्षसाम् ॥८॥
पशु पक्षि मृगाणां च योगमाया विवर्धिनि ।
वससे सर्व सत्वेषु मातेव हितकारिणि ॥९॥
एहि सावित्रि मूर्ति त्वं चक्षुर्भ्यां स्थानगोचरे ।
विश नासापुटे देविकण्ठे चोत्कण्ठिता विश ॥१०॥
प्रतिभावय मां सर्वं मातृवद् देवि सुंदरि ।
इदमर्घ्यं मयादत्तं पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥११॥

निम्न मंत्र से पूजन करे -

उपप्रागात् परमं व्यत् सधस्थ मर्वां अच्छा पितरं मातरं च ।
अद्यादेवाञ्जुष्टतमो हि गम्या अथा शास्ते दाशुषे वार्याणि ॥

इसके बाद मंडल के बाहर के **इंद्रादिलोक्पालों** के लिये **बलि प्रदान** कर आचमन करें।

॥ विष्णु प्रतिष्ठयाम् द्वादशारचक्र यंत्रपूजनम् ॥

विशेष यंत्र पूजा हेतु सुवर्ण, रजत, या ताम्र पात्र पर यह यंत्र बनायें । इसमें अष्टदलमध्य में है उसके ऊपर द्वादश दल है उसके ऊपर पुनः अष्टदल पत्र है। उनमें यथा क्रम से पूजन करे। एक एक क्रम को एक आवरण कहते है। पत्राग्र को कर्णिका कहते है।

१. अष्टदल पद्म मध्ये - **'इदं विष्णु'** इस मंत्र से देव को मध्य में स्थापित करे।

२. प्रथमगर्भावरण (अष्टदले) - ।कर्णिकायाम्॥ **ॐ हूं हृदयाय नमः** ।पूर्वपत्रे॥ **ॐ विष्णवे नमः इति शिरः** ।दक्षिण पत्रे॥ **ब्रह्मणे नमः इतिशिखां** ।पश्चिम पत्रे॥ **ॐ ध्रुवाय नमः इति कवचं** ।उत्तरपत्रे॥ **चक्रिणे नमः इति फट् अस्त्रं** ॥**शंभवे नमः इति गायत्रीम्** (आग्नेयदले)। **विजयाय**

नमः इति सावित्रीम् (ईशानदले)। **ज्योतिरूपाय नमः इति सरस्वतीम्** (नैर्ऋत्य दले) **चक्रिरूपाय नमः इति पिङ्गलास्त्रम्** (वायव्यदले)।

३. **द्वितीयावरण** – (द्वादश दले पूर्वादि क्रमेण) सभी जगह नमः शब्द प्रयुक्त करे यथा – **केशवाय नमः। नारायणाय नमः। माधवाय नमः। गोविन्दाय नमः। विष्णवे। मधुसूदनाय। त्रिविक्रमाय। वामनाय। श्रीधराय। हृषीकेशाय। पद्मनाभाय। दामोदराय नमः।**

४. **तृतीयावरण** – (पूर्वादि क्रमेण)

खड्गाय नमः। गदायै। चक्राय। शंखाय। पद्माय। हलाय। मुसलाय। शाङ्गाय नमः।

५. **चतुर्थावरण** – ।पूर्वे॥ **ॐ पृथ्वीमूर्तये नमः ॐ पृथ्वीमूर्त्यधिपतये वासुदेवाय नमः** ॥ दक्षिणे॥ **ॐ जलमूर्तये नमः ॐ जलमूर्त्यधिपतये सकर्षणाय नमः** ।पश्चिमे॥ **ॐ अग्निमूर्तये नमः ॐ अग्निमूर्त्यधिपतये प्रद्यूम्नाय नमः** ।उत्तरे॥ **वायुमूर्तये नमः ॐ वायुमूर्त्यधिपतये अनिरुद्धाय नमः** ।मध्ये॥ **ॐ ख** (आकाश) **मूर्तये नमः ॐ ख मूर्त्याधिपतये नारायणाय नमः।**

६. **पंचमावरण** – दलों के बाहर पूर्वादिक्रम से इंद्रादि लोकपालों का आवाहन कर गंधपुष्पादि से पूजन करे। **पुरुषसूक्त से पुष्पांजली देवे।**

।। *शिव प्रतिष्ठायाम् यंत्रपूजनम्* ।।

ॐ त्र्यंबकं यजामहे....या पंचाक्षर मंत्र से देव को यंत्र पर स्थापित करे या **मध्य में ध्यान करे (मेरुकर्णिकायाम्)।**

प्रथमावरण – ॐ ह्रां हृदयाय नमः (देवस्य हृदये) ॐ शिवाय नमः इति पूर्व दले। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ॐ ब्रह्मणाय नमः इति दक्षिण दले। ॐ ह्रुं शिखायै वषट् ध्रुवाय नमः इति पश्चिम दले। ॐ ह्रैं कवचाय हुं शूलिने नमः इति उत्तर दले।

द्वितीयावरण – (अष्टदले पूर्वादिक्रमेण) ॐ अनंताय नमः पूर्वे। सूक्ष्माय नमः आग्नेये। शिवोत्तमाय नमः दक्षिणे। एकनेत्राय नमः नैर्ऋति। एक रुद्राय नमः पश्चिमे। त्रिमूर्तये नमः वायव्ये। श्रीकण्ठाय

नमः उत्तरे। शिखण्डिने ऐशान्याम्।

तृतीयावरण – अष्टदल के बाहर पूर्वादिक्रमेण –

टंकायै नमः। कृपाणाय नमः। वज्राय नमः। दहनाय नमः। भोगेन्द्राय नमः। घण्टायै नमः। अंकुशाय नमः। पाशाय नमः।

चतुर्थावरण – (अष्टदले)

ॐ पृथिवीमूतर्य नमः पृथीवीमूर्त्यधिपतये शर्वाय नमः ॥१॥ ॐ अग्निमूर्तये नमः अग्निमूर्त्यधिपतये रुद्राय नमः ॥२॥ ॐ जलमूर्तये जलमूर्त्यधिपतये भवाय नमः ॥३॥ ॐ वायुमूर्तये नमः वायुमूर्त्यधिपतये उग्राय नमः ॥४॥ ॐ पशुपतये नमः पशुपत्यधिपतये यजमान मूर्त्तर्यनमः ॥५॥ ॐ इन्दुमूर्त्तये नमः इंदुमूर्त्यधिपतये महादेवाय नमः ॥६॥ ॐ स्वमूर्तये नमः स्वमूर्त्यधिपतये भीमाय नमः ॥७॥ ॐ ईशानाय नमः ईशानाधिपतये सूर्यमूर्त्तये नमः ॥८॥

(जहां पंचमूर्ति पूजन हो वहां ब्रह्मा विष्णु, रुद्र, ईश्वर एवं सदाशिव है)

पंचमावरण दलों के बाहर पूर्वादिक्रम से इंद्रादि लोकपालों का आवाहन कर पूजन करें। **रुद्र सूक्त व मूलमंत्र से पुष्पांजलि प्रदान करे मंत्र का अर्चन करे।**

॥इति रुद्र यंत्र पूजाः॥

समस्त न्यासों के बाद तथा यंत्र पूजन आदि के बाद यथावकाश लोकपाल, वसु, रुद्र, द्वादशादित्य, विश्वेदेवा मरुद्गणों, पितृगणों व तीर्थादि का पूजन करे। रात्री जागरण करके दूसरे दिन या उसी दिन में शांतिपौष्टिक आदि हवन करे।

॥ अथ शांतिक मंत्रेर्होमः ॥

आचार्य अपने कुण्ड के पास आवे तथा पंचकुण्डीय पक्ष में **प्रतिकुण्ड में शांति मंत्रों से हवन करें।**

१२००० पलाश से, ६००० उदुम्बर से, ३००० पीपल से, ८००० अपामार्ग से तथा १०८ संख्या में शमी काष्ठ से हवन करे।

'हिरण्यगर्भः' इस मंत्र से तथा अन्य मंत्रों से हवन करे–

ॐ शन्नोवातः पवतां मातरिश्वा शन्नस्तपतु सूर्यः। अहानि शं भवन्तु नः शं रात्रिः प्रतिधीयताम् ॥१॥

शन्न इंद्राग्नी भवता मवोभिः शन्न इंद्र वरुणा रातहव्या।

शन्न इंद्रा पूषणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविता य शंयोः ॥२॥

इसके अलावा 'शन्नो देवी' एवं 'द्यौः शांतिरतरिक्ष' मंत्र से हवन करे।

।। पौष्टिक मंत्रहोमः ।।

पुष्टिर्न रण्वाक्षितिर्न पृथ्वी गिरिर्न भुज्य क्षोदोन शंभु ।
अत्योनाज्मन्त्सर्ग प्रतक्तः सिन्धुर्नक्षोदः कईंवराते ॥१॥

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामहि ठ सीः । निवर्त्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥२॥

गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः ।
सुमित्रः सोम नो भव ॥३॥

ॐ इह पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधात्विह प्रजा ꣳ रमयतु प्रजापतिः ।
अग्नये ग्रहपतये रयिमते पुष्टिपतये स्वाहा ॥४॥

इसके अलावा 'त्र्यंबकं यजामहे' तथा वास्तुमंत्रों से हवन करने का विधान है।

।। अथ वेदादि होमः ।।

पलाश समिध से ८००० या ८०० संख्या में हवन तिलयवादि से करे।

पूर्वकुण्डे - ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्न धातमम् ।

दक्षिण कुण्डे - ॐ इषेत्वोर्जेत्वावायवस्थ देवोवः सविता प्रर्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायद्ध मग्घ्न्या इंद्राय भागं प्रजावतीरनमीवा । अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघश ठ सोध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशूनपाःहि।

पश्चिम कुण्डे - ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये। निहोतासत्सि बर्हिषि।

उत्तर कुण्डे - 'शन्नो देवी' इति मंत्रेण।

अष्टकुण्डीय पक्षे - वौषट इति मंत्रेण षट् आहुतिं ॥ आग्नेयकुण्डे॥ दशप्रणवयुक्त गायत्री मंत्रेन।नैऋत्यकुण्डे॥ 'जातवेदस' इस मंत्र से ।वायव्यकुण्डे॥ नमो ब्रह्मणे धारणं में अस्त्व निराकरणं धारयिता

भूयासं कर्णयोः श्रुतंमाचोख्वं ममामुष्य ॐ ॥ इतिऐशान कुण्डे ॥

इसके बाद १०० हवन करके '**मूर्धानाम्**' इस मंत्र से पूर्णाहुति करे।

नोट :- नवकुण्डीय पक्ष होम में आचार्य कुण्ड में हवन नहीं होगा अन्य ८ दिशाओं में मूर्तिलोकपाल हवन होगा।

॥इति शांति होमः॥

॥ मूर्त्यादि होमः ॥

मूर्तिप लोकपालों के लिये पलाश, समित्, तिल, घृत से **आठ हजार या ११०८** या १०८ बार हवन करे। **नवकुण्डीय पक्ष** में पूर्वादि **अष्ट कुण्ड** में हवन करे। **पंच कुण्डीय हवन में भी आचार्य कुण्ड में हवन नहीं करते है** कहीं कहीं भेद है।

१. पृथिवीमूर्ति :- श्योनापृथिवि इति मंत्रेण।

२. शर्व मूर्ति - ॐ अघोरेभ्यो ऽथ घारेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः । सर्वेभ्य सर्व सर्वेभ्योः नमस्ते रुद्र रूपेभ्यः ॥

३. इंद्र मूर्ति - इंद्र मरुत्व इह पाहि सोमं सथा शार्याते अपिबः सुतस्य । तव प्रणीती तवशूर शर्मन्ना विवासन्ति कवयः सुयाज्ञाः ॥

४. अग्निमूर्ति - अग्निं दूतं पूरोदधे हव्यवामिुपब्रुवे। देवां आ सदयादिह ॥

५. पशुपतिमूर्ति - यः पशूनामधिपतिः रुद्रस्तन्ति रचो वृषा । पशूनस्माकं मार्हिंठ सीः एतदस्तु हुतं तव स्वाहा ॥

६. अग्निमूर्ति - अग्ने आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषी ॥

७. यजमानमूर्ति - असि हि वीर सेन्यो ऽसिभूरि परादिदिः। असिद-भ्रस्य चिद्वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वत्सु ॥

८. उग्रमूर्ति - तमिन्द्रं जोहवीमि मघवान मुग्रं सत्रा दधानम प्रतिष्कृत शवांसि ।मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञयो ववर्त्तद्राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री ॥

९. यममूर्ति - ॐ यमाय सोमं सुनुत जुहुता हविः । यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः ॥

१०. सूर्यमूर्ति – ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥

११. सूर्यमूर्तिपतिरुद्र – आ वो राजन मध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्य यजं रोदस्योः । अग्निं पुरानतयिन्नो रचिताद्धिरण्य रूपमवये कृणुध्वम् ।

१२. नैर्ऋतिमूर्ति – असुन्वन्तं समं जहि दूणाशं यो न ते मयः । अस्मभ्यमस्य वेदनं दद्धि सूरिश्चि दोहते ॥

१३. जलमूर्ति – आपोहिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन । महेरणाय चक्षसे ॥

१४. जलमूर्तिपति भव – विभूषन्नग्न उभयां अनुव्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे । यत्ते धीति सुप्रतिमावृणी महेऽधस्मानस्त्रि वरूथ शिवो भव ॥

१५. वरुण मूर्ति – इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।

१६. वायुमूर्ति – वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभुवनो हृदि। प्रण आयूंषिता रिषत् ॥

१७. वायुमूर्तिपति ईशान – ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम् । पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

१८. सोममूर्ति – वय ठं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

१९. सोममूर्ति महादेव – इंद्रं तं शुम्भ पुरुहूतन्मनवसे यस्य द्विता विधर्तरि । हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्य : ॥

२०. कुबेरमूर्ति – अभित्यं देवं रवितार मूण्योः कविक्रतु मर्चामि सत्य सव सं रत्नधामभि प्रियं मतिमूर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत् सवीमनि हिरण्यपाणिरभिमीत सक्रुतु कृपा सु वः। प्रजाभ्यस्त्वा प्राणायत्वा व्यानायत्वा प्रजास्त्वमनु प्राणिहि प्रजास्त्वामनु प्राणन्तु॥

२१. आकाशमूर्ति (ख) – आदित् प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासाम् । परो यदिध्यते दिवा ॥

२२. ख मूर्तिपति भीम – मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः । सूकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं विशत्रून जाह्वि विमृधो नुदस्व ॥

२३. ईशान मूर्ति – अभि त्वा देवसवितरीशानं वार्याणाम् । सदावन् भागमीमहे ।

॥ महाव्याहृति होमः ॥

ऋत्विकः पूर्व दक्षिण पश्चिमोत्तर कुण्डों में हवन करें अर्थात् **यह हवन आचार्य के कुण्ड में नहीं है। नवकुण्ड होम में भी अष्टदिशाओं में हवन करे।**

८००० या १०८ यथा समयानुसार –

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इस मंत्र से हवन करें।

॥ स्थाप्य देवता लिंगक मंत्र होमः ॥

(आचार्य कुण्डे)

आचार्य जितने स्थापित होने वाले देवता है उनके **लिंग मंत्र से १०८ या अधिक संख्या में हवन अपने कुण्ड में करे।** कुण्डों में हवन की आहुतियां आचार्य ही देवें ऋत्विक् नहीं देवे। आचार्य अपने कुण्ड में पूर्णाहुति कर **'होमः कृतः' यों देवता के कान में निवेदन करे।**

पश्चात् जितने स्थाप्य देव है उनके **लिंगक मंत्रों के आठ बार निम्न द्रव्यों से हवन करे।**

पंचकुण्डीय पक्ष में – 'पूर्व कुण्ड' में घृत से आहुति देकर देव के पैरों का स्पर्श करे।

'दक्षिण कुण्ड' में दधि का हवन कर देव की नाभि का स्पर्श करे।

'पश्चिम कुण्ड' में क्षीर का हवन कर देव के हृदय का स्पर्श करे।

'उत्तर कुण्ड' में मधु का हवन कर मूर्धा का स्पर्श करे।

'पुनः पश्चिम कुण्ड में' घृतादि चतुष्टय द्रव्यों से हवन कर सर्वांग का स्पर्श करे।

नवकुण्डीय में भी इसी तरह से स्वकुण्ड पूर्वादि चार कुण्डों में हवन करे।

।। कूर्मशिला ब्रह्मशिलादिनाम अधिवासनम् ।।

कूर्मशिला मूर्ति के नीचे रखते है। चांदी, स्वर्ण, ताम्र अथवा शिला का कूर्म बनाया जाता है उसके ऊपर शिला स्थापन करते है उसके ऊपर पिण्डिका (आधारशिला) रखते है व उसके ऊपर ब्रह्म प्रतिमा का स्थापन करते है।

आजकल जो मूतियाँ बनाई जाती है उनमें **अधिकांश में आधारशिला प्रतिमा के साथ** ही बनायी जाती है अतः वहां कूर्मशिला व ब्रह्मशिला का अधिवासन ही करायें। रत्नादि **का स्थापन ब्रह्मशिला में ही करना होगा।**

ॐ कूर्मशिलायै नमः कूर्मशिलामावाहयामि ।

ॐ ब्रह्मशिलायै नमः ब्रह्मशिलामावाहयाहमि ।

पिण्डिका (आधारशिला - आसन) का आवाहन देव पिण्डिका के नाम से करें यथा - **ॐ विष्णु पिण्डिकायै नमः विष्णु पिण्डिका मावाहयामि । ॐ शिवपिण्डिकायै नमः शिवपिण्डिकामावाहयामि। ॐ दुर्गापिण्डिकायै नमः दुर्गापिण्डिकामावाहयामि।**

इसी प्रकार सभी देवों के लिये करे।

'वाहन' परिवारक देवों को वैदिक मंत्रों से या नाम मंत्र से **पूजन कर देवता के बायें भाग में अधिवासन करे।**

उनको **मधु और घृत** लगाकर पवित्र जल से प्रक्षालन कर पूजन कर वस्त्र से आच्छादन कर प्रधान **प्रतिमा के पिण्डिका में पंचांग मंत्रन्यास करे -**

(सांप्रतं वाहन परिवार देवानां प्रतिष्ठापनाभवात् अधिवासनं न कार्यम् । स्थापन पक्षे अधिवासनम्। यत्र अधिवासनमपि न क्रियते। किन्तु तेषां स्मरण मात्र मेव क्रियते।)

पिण्डिकायै अंगन्यासः - स्थाप्य देवताओं के मंत्रों को कहकर **ॐ हृदयाय नमः। शिरसे स्वाहा। शिखायै वौषट्। कवचाय हुम्। नेत्रत्रयाय वौषट्।** इनसे पिण्डिका में न्यास करे। विष्णु प्रतिमा में **'इदं विष्णु'** मंत्र से या **ॐ घं डं पं भं फं लक्ष्म्यै नमः या ॐ हुं फट्** इत्यादि मंत्रों से भी कर सकते है।

तत्वत्रयमूर्ति न्यासः

पिडिका में पूर्ववत् न्यास करे। ॐ आत्मतत्त्वाधिपतये नमः। ॐ विद्या तत्त्वाधिपतये नमः। ॐ शिवतत्त्वाय नमः।

मूर्तिन्यासः

ॐ पृथिवीमूर्तये नमः तस्याधिपतये शर्वाय नमः। ॐ अग्निमूर्तये नमः तस्याधिपतये पशुपतये नमः। ॐ यजमानमूर्तये नमः तस्याधिपति उग्राय नमः। ॐ अर्कमूर्तये नमः तस्याधिपतये रुद्राय नमः। ॐ जलमूर्तये नमः तस्याधिपतये भवाय नमः। ॐ वायुमूर्तये नमः तस्याधिपतये ईशानाय नमः।

ॐ इंद्र मूर्तये नमः तस्याधिपतये महादेवाय नमः। ॐ ख (आकाश) मूर्तये नमः तस्याधिपतये भीमाय नमः।

कूर्मादि शिलायाम् अधिवासनम्

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां क्षः परब्रह्मणे सर्वाधारय नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रां दिव्य तेजोधारिण्यै सुभगायै नमः।

इन दो मंत्रों से **कूर्मादि शिलान्यास** का अधिवासन करे।

अथ प्रासादे ८१ कुंभ स्थापन विधि
(प्रासाद अधिवासन हेतु)

जहां कुंभ स्थापन करने है उस जगह **चतुरस्त्र** बनाकर चौकोर वर्गाकार भाग रेखांकन करे। उसमें **नव खण्ड** बनाकर प्रत्येक नवखण्ड के मध्य में **एक-एक प्रधान कलश स्थापित करे** जिनमें विशेष औषधियां डाली जायेंगी।

प्रत्येक खण्ड के प्रधान कलश के चारों ओर गंधोदक के आठ-आठ कलश स्थापित करने से नव खण्डों के प्रत्येक के भाग में नौ नौ कुभ होने से कुल ८१ कुंभ हो जायेंगे।

।। अथ औषधीप्रक्षेपः ।।

प्रासाद अधिवास हेतु जो कलश स्थाति किये हैं उनके नौ खण्डों के मध्य कलशों में ओषधियां प्रक्षेप करे।

मध्यखण्डे **:- मध्य खण्ड के मध्य में जो प्रधान कलश है उसमें शमी, उदम्बर, अश्वत्थ, चंपक अशोक, पलाश, प्लक्ष, न्यग्रोध, कदम्ब, आम्र, बिल्व एवं अर्जुन वृक्ष के पल्लव इन १२ पल्लवों को ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः इस मंत्र से छोड़ देवें।**

पूर्वखण्डे **:- पूर्व दिशा के खण्ड के मध्य में जो प्रधान कलश है उसमें**

पद्मक्, गोरोचन, दुर्वांकुर, दर्भपिञ्जूल, श्वेत सरसों, पीली सरसों, श्वेत चन्दन, रक्तचन्दन, जातीपुष्प, (चमेली के पुष्प) और नन्द्यावर्त्त इन दस

प्रासादाधिवासने ८१ कलश स्थापन प्रकारः

(विशेष द्रव्य ९ खण्डों के मध्य के ९ बड़े कलशों में शेष सभी कलशों में गंधोदक पूरित करें)

ईशान पूर्व आग्नेय

उत्तर दक्षिण

वायव्य पश्चिम नैर्ऋत्य

द्रव्यों को ॐ सोमाय वनस्पयन्तर्गताय नमः इस मंत्र से छोड़ें।

अग्निकोणखण्डे :- मध्य कलश में यव ब्रीहि, तिल, सुवर्ण, चांदी, समुद्र या नदी मृत्तिका, एवं भूमि स्पृष्टगोमय, इन सात द्रव्यों को ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः से प्रक्षेप करे।

दक्षिणखण्डेः- मध्य कुंभ में सहदेवी, विष्णुक्रांता, भृंगराज, महोषधी, शमी, शतावरी, गुडूची और श्यामक इन आठ द्रव्यों को ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः से प्रक्षेप करे।

नैर्ऋत्यखण्डे :- मध्य कुंभ में केला, पूगीफल (सुपारी), नारिकेल, बिल्व, नारंगी, मातुलिंग,(बिजोरा) बदरी (बैर) और आंवला इन आठ द्रव्यों को ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः से प्रक्षेप करे।

पश्चिमखण्डे:- मध्यकुंभ में पंचगव्य को ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः से प्रक्षेप करे।

वायव्यखण्डे:- मध्य कुंभ में शमी, उदुम्बर, अश्वत्थ, न्यग्रोध और पलाश की छाल (त्वचा) को ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः से प्रक्षेप करे।

उत्तरखण्डे :- मध्य कुंभ में शंखपुष्पी, सहदेवी, बला, सतावरी,कुमार, गुडूच्ची (गुरुच) बच और व्याघ्री इन आठ वस्तुओं को ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमःसे प्रक्षेप करे।

ईशानखण्डे :- मध्य कुंभ में वल्मीकादि सप्तमृत्तिका को ॐ सोमाय वनस्पत्यन्तर्गताय नमः से प्रक्षेप करे।

इसके बाद पहले अगर कुंभों में जल नहीं डाला हो तो अब उन्हे जल से पूरित करे। इसके बाद सभी कलशों के अभिमंत्रित करे।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणी सुवर्ण रजतस्त्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥

शेष ७२ कलशों को गंधोदक से पूरित करे। मूल मंत्र से अभिमंत्रित कर उन कुंभों को त्रिसूत्री से वेष्टन करें।

प्रासाद को पंचगव्य से अंदर एवं बाहर से प्रोक्षण करे। प्रासाद का भी त्रिसूत्रीकरण नहीं किया हो तो त्रिसूत्रीकरण करे।

संकल्प करें – अस्मिन् प्रसादे देवताधिष्ठान योग्यता सिद्धर्थं स्नपन पूर्वकं प्रासादाधिवासनं करिष्ये।

सप्तमातृका आदि से लेपन करे।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो अरतिम्पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् ।
कवि ꣳ सम्राजमतिथिञ्जनाना मासन्नापात्रञ्जनयन्त देवाः ॥

ईशान के मध्य कुंभ से प्रोक्षण व प्रासाद को स्नान कराये :-

ॐ समुद्रा दूर्मिर्मधुमां उदारदुपा ꣳ शुना सममृतत्व मानट् ।
घृतस्यनाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥

'या समुद्रा जेष्ठा' इस मंत्र से प्रासाद को स्नान करायें।

वायव्य कोण के मध्य से कषाय द्रव्योदक से स्नान –

ॐ यज्ञाय ज्ञावो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्रवयममृतञ्ञातवेदसां प्रियां मित्रन्नश ठं सिषम् ॥

पश्चिम कोण के मध्य कुंभ से पंचगव्य वाले कुंभ से स्नान कराये ।

'पय पृथिव्यां' इति मंत्रेण।

नैर्ऋत्य खण्ड के मध्य कुंभ से फलोदक से स्नान कराये।

'याः फलानिः' इस मंत्र द्वारा।

उत्तर खण्ड के मध्य कुंभ से ओषधी द्रव्योदक से स्नान करायें।

ह ठं सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्धोत वेदिषदतिथि दुरोणसत् ।
नृषद्वरसदृत सद्व्योम सदब्जागोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥

पूर्व खण्ड के मध्य कुंभोदक से स्नान कराये।

ॐ विष्णोरराटमसि इति मंत्रेण।

अग्निकोणस्थ मध्यकुभोदक से स्नान कराये।

ॐ सोम ठं राजानमवसेग्ग्नि मन्वारभामहे ।
आदित्यान् विष्णु ठं सूर्यं ब्रह्माणञ्च बृहस्पति ७ स्वाहा ॥

दक्षिण कोणस्थ मध्यकुंभोदक से स्नान कराये।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् ।
संबाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावा भूमीं जनयन् देव एकः ॥

मध्यकोष्ठक के मध्यकुंभोदक से स्नान कराये ।

नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

अवशेष कलशों द्वारा प्रासाद एवं शिखरादि स्नपनम्

प्रतिकोण में जो आठ आठ गंधोदक के कुंभ है उनसे प्रासाद एवं शिखर स्नपन कराये।

ॐ इदमापः प्रवहता वद्यञ्च वलं च यत्। यच्चाभि दुद्रोहानृतं यच्च शेपेअभीरुणम्। आपोमा तस्मादेन सः पवमानश्च मुञ्चतु ॥१ ॥

इदमापः प्रवहत यत् किं च दुरितं मयि। यद् वाहमभिदुद्रोहयद् वा शेष उतानृतम् ॥२॥

॥ एकादशीति कुंभाऽसंभवे तु विचारः ॥

इक्यासी कुंभ के अभाव में गंधोदक पूरित एक कलश से निम्न मंत्र से प्रोक्षण करे।

ॐ दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै यद्वो शुद्धाः ।
पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि ॥

त्रिसूत्र से वेष्टन करे देवरूप प्रासाद की चिंता कर पताकादि से सुशोभित करे।

ॐ ह्रीं सर्वदेवमयाचिन्त्य सर्वरत्नोज्वलाकृते ।
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्चतावदत्र स्थिरो भव ॥

॥इति प्रासादाधिवासनम्॥

इसके बाद विघ्न निस्सारण हेतु श्वेत सरसों बिखेरें।

ॐ रक्षोहणं वलगहनं तथा अपसर्पन्तु ये भूता इत्योदि मंत्रों से सरसों बिखेर कर विघ्नानिस्सारण करें।

॥ प्रासादे न्यास विधानम् ॥

प्रासाद को स्पर्श करते हुये विविध न्यास करे।

ॐ ह्रां पृथिवी तत्त्वाय नमः। ॐ ह्रां पृथिवीतत्त्वाधिपतये कूर्माय नमः। ॐ ह्रां अप्ततत्त्वाय नमः साधिपतये जलेशाय नमः। ॐ ह्रां तेजस्तत्त्वाय नमः तस्याधिपति निधिपतये नमः। ॐ ह्रां वायुतत्त्वाय नमः साधिपतये मातरिश्वने नमः। ॐ ह्रां आकाश तत्त्वाय नमः साधिपतये सूक्ष्माय नमः। (इति प्रासाद पादेषु) ॐ ह्रां रूपतन्मात्रे साधिपतये भानुमते नमः। ॐ ह्रां रसतन्मात्राय नमः साधिपतये जलदाय नमः। ॐ ह्रां गंधतन्मात्राधिपतये गंधक्षाय नमः साधिपतये नमः। ॐ स्पर्शतन्मात्राय नमः साधिपतये बलतत्त्वाय नमः। ॐ शब्दतन्मात्राय नमः साधिपतये सूक्ष्मनादाय नमः। (इति प्रासाद जंघयोः)

॥अथ कटि प्रदेशे॥ ॐ ह्रां वाक्तत्त्वाय नमः साधिपतये दुन्दुभये नमः। ॐ ह्रां पाणितत्त्वाय नमः पाणितत्त्वाधिपतये समादानाय नमः।

ॐ ह्रां पादतत्त्वाय नमः साधिपतये संक्रमाय नमः। ॐ ह्रां पायु-तत्त्वाय नमः साधिपतये विसर्गाय नमः। ॐ उपस्थतत्त्वाय नमः साधिपतये आनंदाय नम॥

॥अथ प्रासाद नाभौ॥ ॐ ह्रां श्रोत्रतत्त्वाय नमः साधिपतये व्योमाय नमः। ॐ ह्रां त्वक्तत्त्वाय नमः साधिपतये सर्वांगाय नमः। ॐ चक्षुस्ततत्त्वाय नमः साधिपतये आकाशाय नमः। ॐ रसनातत्त्वाय नमः साधिपतये महावक्राय नमः। ॐ ह्रां घ्राण तत्त्वाय नमः साधिपतये विलुण्ठाय नमः॥

॥अथ प्रासाद कण्ठे॥ ॐ मनस्तत्वाय नमः साधिपतिये संकल्पाय नमः। ॐ बुद्धितत्त्वाय नमः साधिपतये बुद्धये नमः। ॐ अहङ्कार तत्त्वाय नमः साधिपतये अहङ्काकृतये नमः। ॐ चित्ततत्त्वाय नमः साधिपतये मनसे नमः।

॥अथ द्वारमध्ये॥ ॐ प्रकृतितत्त्वाय नमः साधिपतये पितामहाय नमः।

॥प्रासाद मध्ये॥ ॐ पुरुषतत्त्वाय नमः साधिपतये विष्णवे नमः।

॥वक्त्रे॥ ॐ कलातत्त्वाय नमः साधिपतये क्रतुध्वजाय नमः।

ॐ विद्या तत्त्वाय नमः साधिपतये गुरुवे नमः।

॥कलशे॥ ॐ सदाशिवतत्त्वाय नमः साधिपतये अजेशाय नमः।

॥कलशोपरि॥ ॐ चक्रायुधचिन्हेभ्यो नमः। ॐ ह्रां सं सत्वाय नमः रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। ॐ रं वह्निमण्डलाय नमः। ॐ सं सोम मण्डलाय नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय नमः।

॥ अथ प्रासाद, पिण्डिका, वाहन परिवारदेवानां होमः॥

प्रासाद होम हेतु जो पूर्वलिखित तत्वन्यास दिये है उनसे हवन करे। वास्तु मंत्र से हवन करे।

पिण्डिका (विष्णु पिण्डिका मंत्र, शिव पिण्डिका मंत्र) वाहन (गरुड़ मंत्र) परिवार देवताओं के प्रतिमंत्र से १०८ या २८ संख्याक होम आचार्य अपने कुण्ड में तिलादि से करके १०८ या २८ संख्याक चरु होम अपने

कुण्ड में करे।

चार गौवों को (मण्डप प्रदक्षिणतः स्थिता इति कमलाकरः) **विष्णु गायत्री से दोहन** कर चरु बनाकर देवताओं के लिये निवेदन कर १२ ब्राह्मणों को भोजन कराकर '**विष्णुर्मे प्रीयताम्**' उच्चारण करें। अचार्य को गोवों का दान करें। रात्रि में जागरण करे। हवन के बाद **दिक्पाल बलि अघोर मंत्रादि** से प्रदान कर आचमन करे।

अथ देवालये शिखरकलश प्रतिष्ठा प्रयोगः

आचार्य मंडप के उत्तर भाग में स्वस्तिक मंडल बनाये यजमान शिल्पि **तथा ऋत्विक् सहित मंडप** में जाये पंचकलशों को व शिखर कलश को **स्नान कराये। 'मनोजूतिर्जुषता' इस मंत्र से प्रतिष्ठा** कर लोकपालों को बलि **प्रदान करे। तैलेनाभ्युक्ष्य। चंदनादिभिरभ्यर्च्च्य।** त्रिसूत्र्याऽऽवेष्टन रथमारोप्य **वामहस्ते गृहीत्वा शांति मंगल, तूर्य्य घोषणे स्नानमण्डपमानयेत्।**

कलशों को भद्रपीठ पर रखें **पुण्याहवाचन** करे।

'**घृतं घृतपावना**' से घृताञ्जन करे। **ॐ द्रुपदादिवेन्मुमुचानः स्विन्नः स्नातोमलादिव। पूतम्पवित्रेणे वाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः॥** मंत्र से यव, मसूर, हरिद्रा पिष्टि से उद्वर्तन करे। उष्णोदक से प्रक्षालन करे। '**मूर्द्धानं दिवि**' इस मंत्र से सप्तमृतका से अवलेपन करे। '**ॐ यादिव्या आप**' इस मंत्र से गंधार्चन करे।

पंच कलशों को शुद्धोदक स्नान कराये '**मानस्तोके**' से प्रथम कलश करे। '**विष्णुरराटमसि**' से द्वितीय को स्नान कराये।

तृतीयको-ॐ सोम ठं राजान - मवसेग्नि - मन्वारभामहे । आदित्यान् विष्णु ठं सूर्य ब्रह्माणं च बृहस्पति ठं स्वाहा ॥

चतुर्थ को - '**ॐ विश्वतश्चक्षु**' इस मंत्र से तथा **पांचवें को** '**ॐ पयः पृथिव्याम्**' इस मंत्र से शुद्धोदक स्नान कराये।

द्वादशाक्षर वा मूल मंत्र से पूजन कर वस्त्र से आच्छादित कर शांति पाठ करे।

आचार्य '**ॐस्वस्ति न इंद्रो**' मंत्र से कलशों को उठाकर मंडप की प्रदक्षिणा करते हुये पश्चिम भाग से प्रवेश कर देव के समीप भद्रपीठ पर विराजमान करे। गंधार्चन कर भक्ष्यभोज्य आदि निवेदन करे।

आचार्य घृत दधि क्षीर मधु की पृथक्-पृथक् आहुतियाँ 'ॐ त्र्यंबकं यजामहे**'** से १०८ बार देवे। संस्रव को **शांति कलश में त्याग** करे। उस जल से **कलश के**

पाद, नाभि, गुदा, कुक्षि एवं शिरोभाग को स्पर्श करे। पुरुषसूक्त से भी न्यास करे। बलि देवे।

इसके बाद आचार्य प्रासाद के बाहर आवे कलश को प्रासाद के मस्तिष्क (शिखर) पर शुभ मुहुर्त में विराजमान करे।

'ॐ आजिघ्र कलशं' इति मंत्र से स्थापन करे।

'अस्त्राय हुं फट्' इससे न्यास करे। कलश पर सोना, चक्र चांदी, या ताम्र के शिव व देवी प्रतिष्ठा में त्रिशूल स्थापन करे। **कलश स्थिरीकरण करे। शुक्लपीतादि** वस्त्र से कलश को बांधें। शिल्पी ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें। ब्राह्मण भोजन करावें।

(इति प्रासादोपरि कलश स्थापनम्)

।। कलशसमीपे मानस्तंभ ध्वजापताका रोपणम् ।।

वृक्षसार अश्मसार या लोहमय मानस्तंभ, ध्वजदण्ड आदि प्रासाद के मान के अनुसार ४ या ८ संख्या में बनाये।

ईशान दिशा में रखकर उनका पूजन करे स्तंभ स्थापित करे उस पर पताका लगायें।

ध्वजा लगाने से चौर, महामारी, प्रेतादि उपद्रव, दुष्काल सर्पादि भय नष्ट होते है तथा उस राष्ट्र व कुल की वृद्धि होकर स्वर्गादि सुख कि प्राप्ती होती है।

आचार्य बाहर आकर भूमि का स्पर्श करे प्रासादोभिमुख होकर प्रार्थना करे।

।। प्रासाद प्रार्थना एवं ध्यानम् ।।

पादौ पादशिलास्तस्य जंघा पादोर्ध्वमुच्यते ।
गर्भश्चैवोदरं ज्ञेयं कटिश्चैव तु मेखला ॥१॥
स्तंभाश्च बाहवो ज्ञेया घण्टा जिह्वा प्रकीर्तिता ।
दीपः प्राणोऽस्य विज्ञेयो ह्यपानो जलनिर्गमः ॥२॥
ब्रह्मस्थानं यदेतच्च तन्नाभिः परिकीर्तिता ।
हृत्पद्मं पिंडिका ज्ञेया प्रतिमा पुरुषः स्मृतः ॥३॥
पादचारस्त्वहङ्कारो ज्योतिस्तच्चक्षुरेव च ।
तदूर्ध्वे प्रकृतिस्तस्य प्रतिमात्मा स्मृतो बुधैः ॥४॥
जलकुंभास्तथा द्वारं तस्य प्रजननं स्मृत्तम् ।

शुकनासा भवेन्नासा गवाक्षः कर्ण उच्चयते ॥५॥
कपोतपालिः स्कंधोऽस्य ग्रीवा चामलसारकः ।
कलशस्तु शिरो ज्ञेयं मज्जा क्षिप्तरसं स्मृतम् ॥६॥
मेदश्चैव सुधां विद्यात् प्रलेपो मांसमुच्चयते ।
अस्थीनि च शिलास्तस्य स्नायुः कीलादयः स्मृताः ॥७॥
चक्षुषी शिखरास्तस्य ध्वजाः केशाः प्रकीर्तिताः ।
एवं पुरुषरूपं तं ध्यात्वा च मनसा सुधीः ॥८॥

इस प्रकार ध्यान कर प्रासाद की देवरूप में अर्चाकर **त्रिसूत्रिकरण** करे। वास परिधान की कल्पना करे। वाहन को मण्डप के आगे करे।

इसके पश्चात् **प्रासाद में ६४ पद वास्तु का पूजन करे** प्रारंभ में ही मंडल बनाकर पूजा अर्चा चल रही हो तो ठीक अन्यथा अब शुरु करें **वास्तु पुरुष की आहुतियां वाहन परिवार देवता व पिण्डिका होम** के साथ दी हो तो ठीक अन्यथा इस समय करें।

वास्तु पुरुष की आहुतियां वाहन परिवार देवता व पिण्डिका होम के साथ दी हो तो ठीक अन्यथा इस समय आचार्य अपने ही कुण्ड में (चाहे एक कुण्डीय यज्ञ हो या पंच कुण्डीय पक्ष) १०८ बार वास्तु मंत्र से हवन करे। पूर्णाहुति करे। **शांति कलश में जो संस्त्रव त्याग है उसके जल से यजमान का अभिषेक करे।**

प्रासादोत्सर्गः - मास, पक्ष, तिथि का उल्लेख करते हुये कुश जल यव सहित संकल्प करें।

इमं शिलेष्टका दार्वादि निर्मित वलभी जगती प्राकार परिवार गोपुर परिवार देवतालय संयुतं तत्तदेवता लोका वाप्ति कामः कुलद्वयानुग्रहा- यामुक देवता प्रीतये ऽहमुत्सृजामि।

नमस्कार करे :- ॐ सर्व भूतेभ्य उत्सृष्टः प्रसादोऽयं मयार्जितः।
रमन्तु सर्वभूतानि छाया संश्रयणादिभिः ॥

इसके बाद रात्रि जागरण करे।

॥ *अथ स्थापन दिवसे कर्म* ॥

स्थापन दिवस के प्रातः काल में आचार्य जितने स्थापन होने वाले देव है उनके **मूल मंत्रों से अपने ही आचार्य कुण्ड में** ८ या २८ संक्ष्या में घृत से हवन करे। मूर्ति मूर्तिपति लोकपाल मंत्रो से १०८ या २८ संख्या में समिध, तिल, घृत द्वारा

अपने कुण्ड में हवन करे। मंत्र पूर्व में लिखे जा चुके है।

स्थोना पृथिवि, अघोरेभ्यऽथ, इंद्रमरुत्व, अग्निं दूतम्, यः पशूनाम अग्र आयाहि, असिहि वीर सैन्य, तमिन्द्र जौहवोमि, यमाय सोमम्, उदुत्यं जातवेदसम्, आपो राजानमध्वरस्य, असुन्वतं समं जहि, आपोहिष्ठा, विभूषन्नग्र उभयान् इमं मे वरुण, वातआवातु भेषजम्, तमीशान, आनोनियुद्भिः, वयं सोम, इंद्रं तं शुभे, अभित्यं देवं सवितारम्, आदित्प्रत्नस्य, मृगोनभीम, अभित्वा और देव सवितः इन मंत्रों से होम करे।

अधिवासित कूर्मादिशिलास्थापन विधिः

(ब्रह्मशिला)

पूर्व

ॐ नमः
स्वर न्यास करें
व्यंजन न्यास करें

१ १० १९ २८ ३७
२ ११ २० २९ ३८
३ १२ २१ ३० ३९
४ १३ २२ ३१ ४०
५ १४ २३ ३२
६ १५ २४ ३३ ४२
७ १६ २५ ३४ ४३
८ १७ २६ ३५ ४४
९ १८ २७ ३६

सोम ईशानमध्ये ४५
गर्ते द्रव्य न प्रक्षेपः

कूर्म शिला ब्रह्मशिला एवं पिंडिका को त्रातारमिन्द्र मंत्र से ग्रहण करे।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ठ हवे हवे सुहव ठ शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ठ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥

शांतिघोष से प्रदक्षिणा कर के प्रासाद में लाये **द्वारदेश** पर रखें **'अस्त्राय फट्'** इस मंत्र से सरसों बिखेर कर विघ्न निवारण करे तथा पुष्पोदक धारा से **प्रासादगर्भ का अभ्युक्षण** करे **'ॐ महाँ इंद्रो वज्र हस्तः'** इस मंत्र से या **ॐ महाँ इंद्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव। स्तोमैर्वत्सस्य वा वृधे॥** से **'दर्भेणोल्लिख्य'। 'अस्त्राय हुँ फट्'** इस मंत्र से **प्रोक्षण** करे।

सूत्र से गर्भ गृह में प्रासाद व द्वार का मध्यभाग ज्ञात कर उससे यव या आधे **यव से प्रमाण में उत्तरी ईशान में कूर्मशिला** की स्थापन करे उस स्थान पर **पंचरत्न** डालें उन पर **कूर्मशिला** रखें। **कूर्मशिला प्रोक्षण** कर प्रणव (ॐ) का ध्यान करते हुये रखे।

कूर्मशिला के छिद्र में सुवर्ण का कूर्म स्थापित करे, कूर्म का मुख द्वार की ओर रखें। इस कूर्म शिला पर पंचरत्न रखें और ब्रह्मशिला को 'ॐ' का उच्चारण करते हुये रखें।

इस **ब्रह्मशिला** में ३६ या ४५ छोटे छोटे छिद्र द्रव्य स्थापित करने हेतु बनाये जाते है।

मंत्र :- *(स्थापन् समये)*

ॐ नमो व्यापिनि स्थिरे ऽ चले ध्रुव श्रीं लं स्वाहा।

गंधार्चन करें। प्रार्थना करे -

त्वमेव परमां शक्ति शक्तिस्त्वमेवासन धारिका ।
शिवाज्ञया त्वया देवि स्थातव्यमिह सर्वदा ॥

आसन शिला की पूजा करे- **वर्णाध्वने नमः। पादाध्वने नमः। मंत्राध्वने नमः। भुवनाध्वने नमः। तत्वाध्वने नमः। सकलाध्वने नमः।**

शिला का स्थिरीकरण करें। गंधाक्षत से पूजन करे। **पुण्याहवाचन** करे -

(ॐ अस्य स्थाप्य देवस्य पिंडिका स्थापनख्यस्य कर्मणः पुण्याहं.)

इसके बाद आचार्य याग मंडप में आकर अपने ही कुण्ड में **स्थाप्य देवता के मंत्र से २८ या १०८ बार घृताहुति देवे।**

जिस **ब्रह्म शिला** में ३६ या ४५ गर्त नहीं होवे वहां सुवर्ण से रत्नादि न्यास करे।

ब्रह्म शिला में आठों दिशाओं में तथा एक **पूर्व ईशान मध्य दिशा में गर्त (छिद्र) किये जाते है। प्रत्येक दिशा में ४-४ गर्त होने से ३६ तथा ५-५ गर्त होने से ४५ छिद्र होते है।** उनमें प्रथम भाग पूर्व से प्रारंभ होकर वृत्ताकार रूप में द्रव्य स्थापन किया जाता है। इसे **प्रथम आवरण** कहते है। इसके ऊपर की दूसरी गर्त से वृत्तकार पूजन को **द्वितीय आवरण,** इसी तरह **तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम** आवरण कहलायेगा।

जहां **ब्रह्मशिला** में गर्त नहीं है वहां **ब्रह्मशिला पर पिण्डिका रखें** उसमें आवरणों की कल्पना करते हुये रत्नादि द्रव्यों को डालें।

जहां पिण्डिका (आधारशिला)मूर्ति के साथ ही बनी हुई है वहां ब्रह्मशिला के गर्त में या कूर्म शिला पर द्रव्यों का प्रक्षेपण, स्थापन होगा।

गर्तादौ स्वरन्यासः :- अगर ब्रह्मशिला में गर्त नहीं है तो पिण्डिका में **गर्त न्यास करने होंगें।** पिण्डिका स्थापन विधि आगे दी गई है।

मध्य गर्ते - **ॐ नमः। तद्वाह्वे पूर्वादिक्रमेण - ॐ अं नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः। ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ लॄ नमः। ॐ एं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः। (इति स्वर न्यासः)**

इनके बाहर व्यंजनों का न्यास करे :- **ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः। ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः। ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः। ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः। ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।**

तदनंतर बाह्य परिधि में आठ दिशाओं में एवं पूर्व ईशान मध्य के गर्तों में द्रव्य प्रोक्षण करे।

प्रथमावरण :- **(पूर्वादि क्रमेण) यव॥१॥ ब्रीहि ॥२॥ निष्पाव (मटर)॥३॥ प्रियंगु (ककुनी)॥४॥ तिल॥५॥ माष (उड़दी)॥६॥ निवार (तिन्नी, साठी)॥७॥ शालि (शालिधान)॥८॥** पूर्व एवं ईशान मध्ये -

सिद्धार्थक (पीली सरसों) ॥९ ॥

द्वितीयावरण :- (**पूर्वादिक्रमेण**)- **वज्र ॥१० ॥ मौक्तिक ॥११ ॥ वैडूर्य (पन्ना) ॥१२ ॥ शंख ॥१३ ॥ स्फटिक ॥१४ ॥ पुखराज ॥१५ ॥ चन्द्रकांत ॥१६ ॥ इंद्रनील (नीलम) ॥१७ ॥ पूर्व एवं ईशान मध्य के छिद्रे में पद्मराग (माणक) ॥१८ ॥**

तृतीयावरण :- (**पूर्वादिक्रमेण) मनशिला ॥१९ ॥ हरिताल ॥२० ॥ श्वेताञ्जन ॥२१ ॥ श्यामा अञ्जन ॥२२ ॥ कासी ॥२३ ॥ सौराष्ट्री ॥२४ ॥ गौरोचन ॥२५ ॥ गैरिक (गेरु) ॥२६ ॥ पूर्व एवं ईशान मध्य के छिद्र में - पारा ॥२७ ॥**

चतुर्थावरण - (**पूर्वादिक्रमेण) सुवर्ण ॥२८ ॥ चांदी ॥२९ ॥ तांबा ॥३० ॥ लोहा ॥३१ ॥ त्रपु(रांगा) ॥३२ ॥ सीसा ॥३३ ॥ कांसा ॥३४ ॥ आरकूट (पीतल) ॥३५ ॥ पूर्वईशान मध्ये - तीक्ष्ण लोह ॥३६ ॥**

पंचमावरण - (**पूर्वादिक्रमेण) श्वेतचंदन ॥३७ ॥ रक्तचंदन ॥३८ ॥ अगर ॥३९ ॥ अर्जुन ॥४० ॥ ऊशीर ॥४१ ॥ वैष्णवी ॥४२ ॥ सहदेवी ॥४३ ॥ लक्ष्मणा ॥४४ ॥**

यहां **४५ संख्या सोम ईशान के मध्य में द्रव्य प्रक्षेप नहीं होगा यही विशेष है।** इसके बाद **दिक्पाल मंत्रों** से शिला का आलंभन करे।

॥इतिब्रह्मशिलायां रत्न न्यास ॥

॥ अथ बीजनामभावे विचारः ॥

बीजों के अभाव में यव। रत्नों के अभाव मे वज्र। धातुओं के अभाव में हरिताल। ताम्रादि के अभाव में सुवर्ण। औषधियों कें अभाव में सहदेवी को रखें।

॥ अथ पिण्डिकास्थापनम् ॥

ब्रह्मशिला के ऊपर के भाग में या **कूर्मशिला** के ऊपर के भाग में गर्त **पिण्डिका** अर्थात् चारों ओर ऊँचा भाग हो, मध्य में गर्त हो **जिसमें प्रतिमा स्थापित** हो सके। इसे **गर्त में प्रणाली** भी रखते हैं। **पूर्व पश्चिम मुख प्रासाद में उत्तरप्रणाली और दक्षिणोत्तर मुख प्रासाद में प्रणाली मुख पूर्व की ओर रहेगा।**

पिण्डिका (आसनशिला)की **ध्रुव सूक्त** से स्थापना करे।

ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे ।
ध्रुवविश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम् ॥१॥
ध्रुव ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः ।
ध्रुवं त इंद्राश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥२॥
ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ऽभि सोमं मृशामसि ।
अथो त इंद्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत् ॥३॥

इसके बाद पिंडिका को देव पत्नि लिंगक मंत्र से पिंडिका का अभिमंत्रेण करे

विष्णुपिंडिका स्थापना में - 'श्रीश्चते लक्ष्मी' मंत्र से

रुद्रपिण्डिका स्थापना में .

गौरीर्मिमांय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्त्राक्षरा परमेव्योमन् ॥

देवीपिण्डिकायाम् -

'ॐ जातवेद से सुनवाम' सोममरातीयतो निदहाति वेदः ।
स न पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिंधु दुरिता त्यग्निः ॥

सूर्यपिण्डिका में -

ॐ उषस्त च्चित्रमाभरास्मभ्यं वाजिनीवति। येन तोकञ्च तनयञ्चधामहे॥

गणेशपिण्डिका में -

पावमानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टुधिया वसुः॥

पिण्डिकायां तत्त्वन्यासः

ॐ आत्म तत्त्वाय नमः आत्मतत्त्वाधिपतये क्रियाशक्त्यै नमः। ॐ विद्यातत्त्वाय नमः विद्यातत्त्वा -धिपतये ज्ञानशक्त्यै नमः। ॐ शिवतत्त्वाय नमः शिवतत्त्वाधिपतये इच्छाशक्त्यै नमः॥

ॐ पृथिवीमूर्त्तये नमः। ॐ इंद्राय नमः। ॐ अग्निमूर्त्तये नमः ॐ साधिपतये पशुपतये नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यजमानमूर्त्तये नमः साधिपतये उग्राय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ सूर्यमूर्त्तये नमः। साधिपतये रुद्राय नमः। ॐ नैर्ऋतये नमः। ॐ जलमूर्त्तये नमः। ॐ जलामूर्त्त्यधिपतये भवाय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायुमर्त्तये

नमः। वायुमूर्त्यधिपतये ईशानाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ सोममूर्त्तये नमः साधिपतये महादेवाय नम। ॐ कुबेराय नमः।

ॐ आकाशमूर्त्तये नमः साधिपतये भीमाय नमः। ईशानाय नमः।

पिण्डिका पूजनम्

तदनन्तर पिण्डिका में ॐ आधार शक्त्यै नमः। ॐ अनन्तासन तत्वेभ्यो नमः। ॐ आसन शक्तिभ्यो नमः।

गंधाक्षत से पूजा कर प्रार्थना करे :-

सर्वदेवमयीशाने त्रैलोक्याह्लादकारिणि ।
त्वां प्रतिष्ठापयाम्यत्र मंदिरे विश्वनिर्मिते ॥
यावच्चान्द्र सूर्यश्च यावदेषा वसुन्धरा ।
तावत्त्वं देव देवेशि मंदिरेऽस्मिन्स्थिरा भव ॥
पुत्रानायुष्मतो लक्ष्मीमचलामजरामृताम् ।
अभयं सर्वभूतेभ्यः कर्तुनित्यं विधेहि भो ॥
विजयं नृपतेः सर्वलोकानां क्षेममेव च ।
सुभिक्षं सर्ववस्तूनां कुरु देवि नमो नमः ॥

इसके बाद **पिण्ड़का गर्त** में **पंचरत्न** डालें। **ब्रह्मशिला** में रत्नादि न्यास नहीं किया हो तो **पिण्डिका गर्त** में रत्नादि न्यास करे जो पूर्व में बह्मशिला रत्न न्यास में लिखे है।

पिण्डिका गर्त में रत्नादि छोड़कर **गुग्गुलु रस** आदि से रत्नाद़ि को स्थिर कर **शहद** और **पायस** से श्वेत **अनुलेपन** कर वस्त्र से ढकरकर '**ॐ कवचाय हुँ**' मंत्र से अवगुण्ठन करे। '**ॐ अस्त्राय फट्**' से मंत्र से संरक्षण कर निम्न मंत्र से प्रतिष्ठा करे।

'ॐ गृहा वै प्रतिष्ठा सूक्तं तत्प्रतिष्ठित मया वाचा शंस्तव्यं तस्माद्य द्यपि दूर इव पशून लंभते गृहाने वैनाना जिगमिषति गृहा हि पशूनां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठा।

प्रतिष्ठासिद्धि हेतु विशेष हवनम्

कूर्म शिला ब्रह्मशिला पिण्डिका स्थापन के पहले या बाद में जो १७ श्लोक (अर्थवेद के) पृष्ठ संख्या ३५८ पर दिये गये है उनसे प्रदान कर होम करें।

प्रासाद वहिरष्टदिक्षु स्थंडिलादि विधानम्

प्रसाद के बाहर आठ कलशों में एक हाथ के ८ स्थंडिलों कर उनके ईशानादि भागों में आठ कलशों को समंत्रक स्थापान कर **पंचभूसंस्कार पूर्वक** अग्नियों का स्थापन कर पलाश घृतादि से १००८ या १०८ बार मूलमंत्र से हवन करे। फिर **देवता की गायत्री मंत्र** से १०८ या २८ या ८ बार हवन करें यथा -

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णु प्रचोदयात्।

आचार्य उन **आठ दिशाओं में स्थापित कुंभ पात्रों में से जल को किसी एक पात्र** में रखकर **मूलमंत्र से सौ बार** अभिमंत्रण कर प्रतिमा के समीप जाकर -

'सर्वतीर्थमर्थमिदं जलम्' इस तरह ध्यान करते हुये देवता के सिर पर अभिषेक करे।

देवस्य दिग्बंधनम् :-

ॐ नरसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हुँ फट् इस मंत्र से देवता का दिग्बंधन करे।

प्रबोधन मंत्रः (मूर्तियों के साथ देवता की प्रार्थना करें)

प्रबुध्यस्व महाभागा देव देव जगत्पते।
मेघश्याम गदापाणे प्रबुद्ध कमलेक्षण॥
प्रबुद्ध भूधरानन्त वासुदेव नमोऽस्तुते।

देवाय अर्घ्यदानम् :-

तदनन्तर जल दूध कुशाग्र तिल चावल यव पीली सरसों और पुष्प को शंख में रखकर शंखमुद्रा द्वारा शंख से देवता को अर्घ प्रदान करे।

॥ देवमुत्थापय रथादौ उपशेनादि विधिः ॥

ॐ उतिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वे महे।
उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव इंद्र प्राशूर्भवा स चा॥

इस मंत्र से **देव को उठाकर** निम्न मंत्र से **रथ में विराजमान** करे।

ॐ रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरोयत्रयत्र कामयते सुषारथि ।
अभीशूनां महिमानं पनायतमनः पश्चादनुयच्छन्ति रश्मयः ॥

इस मंत्र से रथ में विराजमान कर आगे गुरु पीछे यजमान दायें-बायें ऋत्विक॥ **आनो भद्राः** शांति पाठ से भ्रमण कराकर प्रासाद की प्रदक्षिणा कराकर रथ से उतार कर प्रासाद के द्वार के संमुख (पीठ पर देव को स्थापित कर) **लिंग के अर्घ्य** को देकर प्रासाद में प्रवेश करा देवें।

शुभमुहुर्त्ते देवस्थापनम्

यजमान के साथ आचार्य **देव को पिंड़िका** में स्थापन करे। शुभ लग्न में ईश्वर की भावना करते हुये द्रव्य के सहित सुवर्ण के पद्म को गड्ढे में रखकर पिंडिका में देव का स्थापन करें।

लोकानुग्रह हेत्वर्थं स्थिरोभव सुखाय नः ।
सान्निध्यं कुरु देवेश प्रत्यक्षं परिपालय ॥
प्रधान पुरुषो यावद्यावच्चन्द्र दिवाकरौ ।
तावत्व मनया शक्त्या युक्तोऽत्रैव स्थिरो भव ॥

इस मंत्र से प्रार्थना करे। वज्रलेपन (पारा, सीसा, गुग्गल) से दृढ़ करे।

'ॐ मनोजूतिर्जुषता' इस मंत्र से प्रतिष्ठा करे।

स्थिरिकरणम् :-

ॐ ध्रुवासि ध्रुवोयं यजमानो
ऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात् ।
घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्ष्येथामिन्द्र
-स्यच्छदि रसि विश्वजनस्यच्छाया ॥

ॐ आत्वाहार्षमन्तरं भूद ध्रुव स्तिष्ठाविचाचलि ।
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मात्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत ॥

ये मंत्र पढ़ें। **ॐ स्थिरो भव शाश्वतो भव** ऐसा कहें। इसके बाद पिंडिका व लिंगान्तर मध्य में सीसा व वज्र लेपन कर दृढ करें।

अथ प्राण प्रतिष्ठा प्रयोगः

प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग मूर्ति का विधान क्रम पूर्व में पृष्ठ संख्या ४२१ पर न्यास विधान में दिया गया है।

जहां इस समय प्राण प्रतिष्ठा मंत्र न्यास (पृष्ठ ४२२) करने का कर्म यहां उपयुक्त मानते है वे इस समय प्राणप्रतिष्ठा मंत्र न्यास करें। **ध्रुव सूक्त** का पाठ करे –

।। ध्रुव सूक्तम् ।।

ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ।
ध्रुवाश्च मे नागाः सर्वे ध्रुवा पतिकुले स्त्रियः ॥१॥
ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे ।
ध्रुवविश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम् ॥२॥
ध्रुव ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः ।
ध्रुवं न इंद्राश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥३॥
ध्रुवं ध्रुवेण हविषाऽभि सोमं भृशामसि ।
अथो न इंद्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत् ॥४॥

प्राणसूक्त का भी पाठ करे तो उत्तम रहेगा। देव की शक्तिस्थापन पश्चात् पढ़ना भी उत्तम है।

।। प्राण सूक्तम् ।।

प्राणौ रक्षति विश्वमेजत्। इर्योभूत्वा बहुधा बहूनि। स इत्सर्व व्यानशे। यो देवषु विभूरन्तः। आ वृदूदात्क्षेत्रियध्वगद्धषा । तमित्प्राणं मनसोपशिक्षत। अग्रं देवानामिदमत्तु नो हविः। मनसश्चित्तेदम्। भूतं भव्यं गुप्यते। तद्धि देवेष्वग्रियम्॥१॥ वाग्देवी जुषतामिदं हविः। चक्षुर्देवाना ज्योतिरमृते न्यक्तम्। अस्य विज्ञानाय बहुधा निधीयते। तस्य सुम्नमशीमहि। मानो हासीद्विचक्षणम्। आयुरिग्रः प्रतीयंताम्। अनन्धाश्चक्षुषा वयम्। जीवा ज्योतिरशि महि। सुवर्ज्योतिरुतामृतम्। श्रोत्रेण भद्रमुत शृण्वन्ति सत्यम्। श्रोत्रेण वाचं बहुधोद्यमानाम्। श्रोत्रेण मोदश्च महश्च श्रूयते। श्रोत्रेण सर्वा दिश आ शृणोमि। येन प्राच्या उत दक्षिणा। प्रतीच्यै दिश शृण्वन्त्युत्तरात्। तदिच्छोत्रं बहुधो द्यमानम्।

अरान्न नेमिः परिसर्वं बभूव। अग्नियमनपरस्फुरन्ती सत्यं सप्त च॥
(तैत्तरीय ब्रह्मण २/१)

स्थाप्य देवता से प्रार्थना करें -

विष्णोः - अतसी पुष्प संकाशं शंखचक्रगदाधरम् ।
संस्थापयामि देवेशं देवो भूत्वा जनार्दनम् ॥

रुद्रस्य - त्र्यक्षं च दशबाहुं च चन्द्रार्धकृतशेखरम् ।
गणेशं वृषभस्थं च स्थायामि त्रिलोचनम् ।

ब्राह्मणः - ऋषिभिः संस्तुतं देवं चतुर्वक्त्रं जटाधरम् ।
पितामहं महाप्राज्ञं स्थापयाम्यम्बुजोद्भवम् ॥

सूर्यस्य - सहस्त्रकिरणं शांतमप्सरोगणसेवितम् ।
पद्महस्तं महाबाहुं स्थापयामि दिवाकरम् ॥

॥ देवस्यवाम भागे तेषां शक्ति स्थापनम् ॥

विष्णोर्वाम भागे - लक्ष्मीं न्यसेत् 'श्रीश्चते' इति मंत्रेण।

शंकरस्यवाम भागे - गौरीं न्यसेत् 'ॐ गौरिति मंत्रेण'।

गणपतेर्वामदक्षिणयो - सिद्धि बुद्धिः। 'श्रीश्चते' इति मंत्रेण

सूर्यस्यवामे (उषा) - ॐ उषस्तच्चित्रमाभरास्मभ्य वाजिनीवति।
येन तोकञ्च तनयञ्च धामहे ॥

नर - विष्णोर्नुकं वर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥

नारायण-विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः प्रिया धामान्यमृता दधानः।
अनिष्टा विश्वा भुवनानि वेद महद् देवानाम सुरत्वमेकम् ॥

उद्भव- तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिंधते ।
विष्णोर्यत् परमं पदम् ॥

नारद - ऋषिर्हि पूर्वजा असि (ऋग्वेद / ८/ ६/ ४१)

गरुड़ - सुपर्णोसि गरुत्क्मान्पृष्ठे पृथिव्याः सीदाभासान्तरिक्षे मा पृण
ज्योतिषा दिव मुत्तभान तेजसा दिश उदृ ठ ह ॥

सर्प – नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के पिथिवी मनु ।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

राधा – स मातरा न ददृशान उस्त्रियो नानददेवि मरुतामिव स्वनः ।
जानन्नृन्त प्रथमं यत् स्वर्णरं प्रशस्तये कमवृणीत सुक्रतुः ॥

कृष्ण – कृष्णां यदेनीमभि वर्पशा भूज्जनयम् योषां बृहतः पितुर्जाम् ।
उर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्ततभायन् दिवो वसुभिररति र्विभाति ॥

राम – प्रतद विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीम कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्यौरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥

हनुमान–वीरस्य नु स्वश्व्यं जनासः प्रनु वोचाम विदुरस्य देवाः ।
षोलहा युक्ताः पंचपंचा वहन्ति महद् देवानामसुरत्व मेकम् ॥

सरस्वती–पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती ।
यज्ञं वष्टु धियायसुः ॥

लक्ष्मण – इदं विष्णुर्विचक्रमे (ऋग्वेद १/२२/७)

गौरी – गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।
अष्टापदी नवपदी बभूवषी सहस्त्राक्षरा परमे व्योमंन् ॥

ततो देवस्य हृदयं स्पृशन् । जपेत् तद्यथा – विष्णोः पुरुष सूक्तम् । रुद्रस्य रौद्रम् । ब्राह्मणो ब्रह्मम् । रवेः सौरम् ।

अन्येषां देवानाम् तेषां प्रकाश मंत्रं जप्त्वा । गायत्री मंत्र च जपित्वा ।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्स वितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् । ॐ आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

इसके बाद देवता का सान्निध्य करे ।

ॐ नमस्ते त्यक्त सङ्गाय संतोष परमात्मने ।
ज्ञान विज्ञानरूपाय ब्रह्मतेजो ऽनुशालिने ॥
गुणातिक्रांत वेगाय पुरुषाय महात्मने ।
अव्यक्ताय पुराणाय विष्णो सन्निहितोभव ॥
भगवन देवदेवश त्वं पिता सर्वदेहिनाम् ।

त्वया व्याप्तमिदं सर्वं जगत्स्थावर जङ्गमम् ॥
त्वमिन्द्रः पावकश्चैव यमो निर्ऋतिरेव च ।
वरुणो मारुतः सोम ईशान प्रभुरव्ययः ॥
येन रूपेण भगवन् व्याप्तं च भुवनत्रयम् ।
तेन रूपेण देवेश अर्चायाः सन्निधौ भव ।
सर्व मंत्रादि संयुक्तो लोकानुग्रह काम्यया ।
अत्रार्चायां महादेव (महाविष्णो) भव संनिहितः सदा ॥
सूर्या चन्द्रमसौ यावद् यावत्तिष्ठति मेदिनी ।
तावत्त्वयाऽत्र देवेश स्थातव्यं स्वेच्छया प्रभो ॥
यावच्चन्द्रो यमः सूर्यस्तिष्ठन्त्य प्रतिघातिनः ।
तावदत्र तु देवेश स्थेयं सर्वानुकंपया ॥

(इति प्रार्थ्य)

इसके पश्चात देव के वाहन व परिवार देवताओं की स्थापना करें।

तदनन्तर **आचार्य अपने ही कुण्ड में** (चाहे ५ कुण्डी विधान हो या नौ कुण्डीय हो) परिवार देवताओं का होम करें।

शिवस्य परिवार देवता – नन्दी महाकाल वृषभ भृंगिरिटिस्कन्दो मा विनायक विष्णु ब्रह्म जयन्त इंद्राग्नि यम निर्ऋति वरुणवायु सोमेशान अप्सरोगणं गंधर्व गुह्यक विद्याधर आदि नाम मंत्रों से आहुति देवे।

शिव को जलहरी का मुंह उत्तर दिशा में होता है। उसके सम्मुख अर्थात् उत्तर दिशा में नंदी, शिव के वाम भाग अर्थात् पश्चिम में पार्वती, शिव पार्वती के मध्य दक्षिण दिशा में गणेश तथा शिव के दाहिने भाग अर्थात् पूर्वदिशा में स्कंद की स्थापना करे।

ब्रह्मण परिवार देवता: = विष्णवादयः परिवार देवताः
विष्णु: परिवार देवता: = ब्रह्मादयः जयविजयादि
सूर्यस्य परिवार देवता: = दण्ड पिंगल माठरा अरुण
चण्डी परिवार देवता: = गणेश भैरवादि

अथ कुण्डेषु अंगहोमः

देवताओं के अंग होम विषय में विशेष बात यह है कि यह होम आचार्य के द्वारा ही होता है ऋत्विक् द्वारा नहीं होता है।

इसके अलावा ध्यान रखे यहां **केवल आज्य द्वारा ही हवन** होगा। प्रत्येक अंग होम के लिये २०-२० आहुति आज्य से देवे।

उद्योत व **दिनकर** के मत से एक कुण्डी व नौकुण्डी में अंग होम का विधान नहीं है परन्तु इस मत को महत्व नहीं दिया जाता है। विद्वान् आचार्य कुण्ड में ही होम करते है।

पंचकुण्डीय पक्ष में हवन इस प्रकार होगा -

पूर्वकुण्डे **- ॐ विष्णवे नमो हृदयाय नमः स्वाहा। रामाय नमो हृदयाय नमः स्वाहा। शिवाय नमो हृदयाय नमः स्वाहा। हनुमते नमो हृदयाय नमः स्वाहा।**

इस तरह सभी देवताओं के हेतु समझे।

दक्षिण कुण्डे **- ॐ अमुक देवतायै नमो (नमः) शिरसे स्वाहा-स्वाहा।** कहीं कहीं स्वाहा का प्रयोग नहीं करते हैं व कहीं पर स्वाहा के बाद पुनः स्वाहा आये तो **वाट् शब्द से होम के लिये** लिखा है।

पश्चिम कुण्डे **- ॐ अमुकायै नमः शिखायै वषट् स्वाहा।**

उत्तर कुण्डे **- ॐ अमुक देवतायै नमः कवचाय हुं स्वाहा।**

आचार्य कुण्डे **- ॐ विष्णवे (अमुक देवताये) नमो नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा।**

पुनः पूर्वकुण्डे **- ॐ विष्णवे (अमुकायै) नमः अस्त्राय फट् स्वाहा।**

अथ आयुध होमः

आचार्य आठ-आठ आज्यहुति नाम मंत्र से देवे। वैसे ८ आयुधों का उल्लेख अधिक है कहीं शिव प्रतिष्ठा में दस आयुध होम को कहा है। **यह हवन भी आचार्य द्वारा किया जाना चाहिये** ऋत्विक द्वारा नहीं। **'पंचकुण्डीय'** होम में ८ आयुध पक्ष में पूर्वादि ४ कुण्डों में २-२ आहुति देवे। १० आयुध पक्ष में आचार्य कुण्ड में भी होम की २ आहुति होगी। एक मत यह भी है कि एककुण्डी, पंचकुण्डी, व नवकुण्डी, पक्ष में सभी में आचार्य कुण्ड में ही हवन करे।

अन्य पक्ष में पूर्वादि आठों कुण्डों में एक-एक आहुति देवे।

शिव प्रतिष्ठयामायुध होमः

ॐ वज्राय स्वाहा ॥१॥ ॐ शक्त्ये स्वाहा ॥२॥ ॐ दण्डाय स्वाहा ॥३॥ ॐ खड्गाय स्वाहा ॥४॥ ॐ पाशाय स्वाहा ॥५॥ ॐ अङ्कुशाय स्वाहा ॥६॥ ॐ गदायै स्वाहा ॥७॥ ॐ त्रिशूलाय स्वाहा ॥८॥

(इसके बाद १०८ बार अघोर मंत्र से होम करे)

विष्णु प्रतिष्ठयामायुध होमः

ॐ खड्गाय स्वाहा ॥१॥ ॐ शार्ङ्गाय स्वाहा ॥२॥ ॐ मूसलाय स्वाहा ॥३॥ ॐ हलाय स्वाहा ॥४॥ ॐ चक्राय स्वाहा ॥५॥ ॐ शङ्खाय स्वाहा ॥६॥ ॐ गदायै स्वाहा ॥७॥ ॐ पद्माय स्वाहा ॥८॥

इसके बाद **अघोर मंत्र** से १०८ होम का विधान भी **शिव प्रतिष्ठा** हेतु विशेष कहा गया है, अन्य अर्चा में भी अघोर होम करे।

॥ अथ वाहन होमः ॥

सभी **देवताओं के वाहन की स्थापना** करके ८-८ आहुति प्रदान करे। यथा -

विष्णु - गरुड़ (सुपर्णवस्ते)। ऋ. ६।७५।११ । शिवस्य-नन्दी (आशुः शिशानो.)। देव्या - सिंह (मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शक्रतो। सकृत् सु नो मघवन्निन्द्र मृलयाऽध पितेव नो भव)। गणेश - मूषक (मूषो न शिश्न.)। सूर्य - अश्व (सूर्यरश्मिमर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम्। तस्य पूषा प्रसवे विद्वान्त्संपश्यन् विश्वा भुवनानि गोपाः)। स्कन्द - मयूर। रामचन्द्र - हनुमान.। भैरव - कुक्कुर (शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम्। शुनं वस्त्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गाय) ।

स्थापना करके प्रार्थना करे -

लोकानुग्रह हेत्वथं स्थिरोभव सुखासन ।
सान्निध्यं हि सदा देवं प्रत्यहं परिवर्तय ॥
माभूत्पूजा विरामो ऽस्मिन् यजमानः समृध्यताम् ।
संपालय सतां राष्ट्रं सवोपद्रव वर्जितम् ॥

अग्नि मंडप में (अथवा प्रासाद में) अक्षत पुंजो पर इस प्रकार देव स्थापन करे

पूर्वे - इंद्रमबिकाम्। अग्निकोणे - विष्णुमग्निम्। दक्षिणे - धर्मराज पितृन्।

नैर्ऋतौ – निर्ऋति, वास्तुपुरुष। पश्चिमे – वरुण, समुद्रान सरिताः। वायव्ये – वायु, दुर्गा फणीन्द्रान्, गणपतिं। उत्तरे – यक्षान्, उमां, स्कंद, सोमं। ऐशाने – शिवं स्थापयामि पूजयामि।

द्वारस्य दक्षिणे – कुबेराय नमः। द्वारस्य वामे – श्रियै नमः।

इनकी यथा मंत्रोपचार से स्थापना करे। प्रासाद पर पताका लगावे, हरिद्रा व सिन्दूर से स्वस्तिकादि बनाकर सुशोभित करे।

।। *अथ शिवस्य प्रधानभूतस्या वाह्नादि पूजा* ।।

यस्य सिंहा रथे युक्ता व्याघ्री भूतास्तथोरगाः ।
ऋषयो लोकपालश्च सोमो विष्णुः पितामहः ॥
नागा यक्षाः सगंधर्वा ये च दिव्या नभश्चराः ।
तमहं त्र्यक्षमीशानं शिवं रुद्रमुमापतिम् ॥
आवाहयामि सगणं सपत्नीकं वृषध्वजम् ।
आगच्छ भगवन् रुद्रानुग्रहाय शिवो भव ॥
शाश्वतो भव पूजां मे गृहाण त्वं नमोस्तुते ।

अर्घ्य दानम्

ॐ स्वागतमनु स्वागतमनु स्वागतं भगवते नमो नमः सोमाय सगणाय सपरिवाराय नमः। इमां पूजां प्रतिगृह्णातु भवान्। ॐ भगवन् मन्त्रपूतमिदमर्घ्यं पाद्यमाचमनीयमासनं ब्रह्मणाभिहितं (तुभ्यम्) नमो नमः स्वाहा।

इस मंत्र से अर्घ्य देकर सोमादि के अर्घ्य देवे वहां इस प्रकार से कहें **(आगच्छ भगवन् ऊह अमुकाय नमो नमः स्वाहा)**

आगच्छ भगवन् ऊह सोमाय नमः स्वाहा।

पाद्य आचमन आसनादि देकर दधि दूध घृत मधु एवं शर्करादि के मंत्रों से स्नान कराये सुगंधित जल से स्नान कराये।

इसके बाद निम्न ८ मंत्रो को उच्चारित करते हुये (प्रत्येक निम्न कर्म के लिये ८ मंत्र बोलें)

देव के पैर, सिर, नाभि एवं वक्षः स्थल का स्पर्श करे।

यज्जग्रतो दूरमुदैति दैवं यदुसतस्य तथैवेति ।

दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥१ ॥
तस्माद्विराडजायत विराजो अधिपुरुषः ।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः ॥२ ॥
सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमिं विश्वत्तो वृत्वा ऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥३ ॥
अभित्वा शूर नो नुमो ऽदुग्धा इव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशान मिन्द्र तस्थुपुष ॥४ ॥
पुरुष एवेदंसर्व यदभूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नाति रोहति ॥५ ॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि ॥६ ॥
येनेदं भूतं भवनं भविष्यत्परि गृहीतममृतेन सर्वम् ।
येनयज्ञन्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥७ ॥
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तन्त्वा हवामहे ॥८ ॥

ततो लिंग मंत्रैः प्रार्थयेत् -

भगवन देव देवेश धर्मकामार्थ मोक्षद ।
विद्या विद्येश्वरै रुद्रैर्गणेशैर्लोकपालकैः ॥१ ॥
देवदानव गंधर्वैः यक्षैश्च किन्नरै सह ।
अस्मिन् लिंगे महादेव सर्वदा वस वै प्रभो ॥२ ॥
पुंसामनुग्रहार्थाय पृथिव्यां सवेच्छया प्रभो ।
परावरेण भावेन स्थातव्यं सर्वदा त्वया ॥३ ॥
सर्वविघ्नहरः पुंसां सर्वदुःख हरः सदा ।
सर्वदा यजमानस्य इच्छासंपत्करो भव ॥४ ॥
नमस्ते शुद्ध देहाय पुरुषाय महात्मने ।
स्थापकानां मूर्तिपानां शिल्पिनां च विभोसदा ।
ग्राम देश नृपाणां च शांतिर्भवतु सर्वदा ॥५ ॥
यावच्चन्द्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी ।
तावत्त्वयाऽत्र देवेश स्थातव्यं स्वेच्छया विभो ॥६ ॥

ज्ञानतो ऽज्ञानतो वाऽपिभगवन् यत्कृतं मया ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥७॥

(इति शिव स्थापनम्)

॥ अथ विष्णु स्थापनम् ॥

तदनंतर विष्णु का षोडशोपचार पूजन पूरुषसूक्त से करे तथा पुरोणाक्त मंत्रों से या अन्य मंत्रों से स्तुति कर नमस्कार करे।

ॐ जिंत ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ।
सुब्रह्मण्य नमस्ते ऽस्तु महापुरुष पूर्वज ॥१॥
नमो हिरण्यगर्भाय प्रधानाऽव्यक्त रूपिणे ।
नमो वासुदेवाय शुद्धज्ञान स्वरूपिणे ॥२॥
संसार सागरं धोरमनन्तं क्लेश भाजनम् ।
त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः ॥३॥
अहं भीतोस्मि देवेश संसारेऽस्मिन् महाभये ।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष न जाने शरणं परम् ॥४॥
त्वत्पादकमलादन्यन्न मे जन्मान्तरेष्वपि ।
निमित्तं कुशलस्यास्ति येन गच्छामि सद्गतिम् ॥५॥
आकाम कलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितिम् ।
कामये वैष्णवत्वं तु सर्वजन्मसु केवलम् ॥६॥
ज्ञानतो ऽज्ञानतो वाऽपि यावद्विधिरनुष्ठतः ।
स सर्वस्त्वत्प्रसादेन समग्रो भवतान्ममेति ॥७॥

अथ देवनामकरणम्

कर्तृनामयुतं देवनाम कुर्यात् (यजमानः स्वनामयुतं देवस्य नाम कुर्या दित्यन्यत्र) कई प्रसिद्ध मूतियों के नाम स्थापित करने वाले तपोनिष्ठ महर्षियों के नाम पर है इसी तरह यजमान के नाम सहित देव के नामकरण का विधान है। प्रतिष्ठादिन करे - **ततो यजमानः संबंधं नाम कुर्यात्।**

देश ग्राम स्थान के आधार पर भी नामकरण करते है अथवा आचार्य यथा काकणी आदि का विचार ग्राम नगर हेतु देखकर भी कर सकते है परन्तु मेरे मत से ग्राम देव का ऋणी होना चाहिये तभी ग्राम वासी उस देव के भक्त होंगे और

देवता उन पर उपकार (कृपा) करेगें तभी यजमान एवं ग्रामवासी देव के सदा ऋणी रहेंगें। कुछ की भावना यह हो सकती है कि देव ग्राम का ऋणी होगा तभी उपकार करेगा।

यथा - शिव का - अमुकेश्वर। विष्णु का - अमुक स्वामी या अमुक नारायण। सूर्य का - अमुकादित्य। देवी का - अमुकेश्वरी। गणपति का - अमुकविनायक।

।। प्रासादोत्सर्गः ।।

हेमाद्र्यादयस्तु प्रासादस्य देवमयत्वेन ध्यानमेवात्सर्गः। अन्य सङ्कल्प की आवश्यकता नहीं है। परन्तु अन्य मत से सङ्कल्प करे - **इदं पाषाण पक्केष्टिकादिमयं विष्णवे तुभ्यमहमुत्सृज्ये। (या सर्वभूतेभ्य उत्सृजेदिति सङ्कल्प्य) ॐ सर्व भूतेभ्य उत्सृष्टः प्रसादोमयार्जितः। रमन्तु सर्वभूताानि छायासंश्रयणादिभिः।**

।। अथ नैमित्तकदोषे प्रायश्चितहवनम् ।।

स्थाप्यमान अर्चाओं की उनके मंत्रों से तथा दशों दिक्पालों के मंत्रों से शमी या पलाश समिध से तिलादि से **१०८** आहुतियाँ प्रदान कर प्रायश्चित होम करे।

यहाँ आचार्य को दक्षिणा में हाथी, मेष, महिष, अज(बकरा) शुक्ति, मुक्ताफल, दो वस्त्र, गौ, बैल आदि देवे इनके अभाव में स्वर्ण। स्वर्ण की या तांबे की बैल की आकृति प्रदान करें। (दिक्पालों के वाहनानुसार देने का विधान है)

।। अथ शांत्यादिहोमः ।।

यह होम आचार्य **सभी कुण्डों** में (एक कुण्डी, पंचकुण्डी, नवकुण्डी में सभी विधान में) घी से १०८ आहुतियाँ देवता के मूलमंत्र से प्रदान कर करे (**यह ऋत्वक् होम नहीं है**)

इसके बाद प्रतिष्ठा होम करे -

ॐ शिवाय स्थिरो भव स्वाहा ॥१॥ ॐ शिवाय प्रमेयो भव स्वाहा ॥२॥ ॐ शिवाय सर्वगोभव स्वाहा ॥३॥ ॐ शिवायाऽविनाशो भव स्वाहा ॥४॥ ॐ शिवायाक्लमो भव स्वाहा ॥५॥

सर्वशांति हेतु **अघोर मंत्र** से १०८ बाद हवन करे।

विष्णु आदि की प्रतिष्ठा में शिवाय के स्थान पर **विष्णवे** पद का प्रयोग कर मूल मंत्र से आहुति प्रदान करे।

अथ पूर्णाहुत्यादि विधानम्

तत्रादौ देशकालौ स्मृत्वा कृतस्य कर्मणः साङ्गता सिद्धयर्थं वसोर्धारा समन्वितं पूर्णाहुति होममहं करिष्ये इति संकल्प्य।

पूर्णाहुति हेतु मृडनाम्नी अग्नी का पूजन करे।

ॐ मृडनाम्ने वैश्वानराय नमः। इति मंत्रेण॥

स्त्रुव एवं स्त्रुक को तपाये, कुशा से संमार्जन करे, प्रणीता के जल से प्रोक्षण करे पुनः तपाये।

स्त्रुक में स्त्रुव से चार बार घी भरे उस पर नारिकेल में छेद करके रखें घी रखें उस पर लाल वस्त्र मोली से लपेटे। उस पर सुपारी रखकर स्त्रुव को उल्टा रखें। यथा -

स्त्रुक को बायें हाथ स पकड़ कर स्त्रुव को दाहिने हाथ से पकड़े। उसमें **मरुद्गणों का पूजन कराये।**

ॐ एकोन् पंचाशन्मरुद्गणेभ्यो नमः ॥

स्त्रुक में पान के पत्ते पर तिलादि भी रखने की प्रथा भी है। उस पर सुपारी नारिकेल रखें स्त्रुव रखते है। आचार्य हवन करे तो यजमान सपत्नीक आचार्य के दक्षिण स्कंध का स्पर्श करे।

वैसे पूर्णाहुति के व वसोर्धारा के १२ से २४ तक श्लोक दिये है परन्तु यहां विशेष का ही उल्लेख किया जा रहा है।

विनियोग **- ॐ मूर्द्धानमिति मंत्रस्य भारद्वाज ऋषि वैश्वानरो देवता त्रिष्टुपछन्द पूर्णाहुति होमे विनियोगः ॥**

ॐ मूर्द्धानं दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् ।
कवि ठं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१॥
समुद्रादूर्मिमधुमाँ २ उदारदुपा ठं शुनासममृतत्व मानट् ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां अमृतस्य नाभिः ॥२॥
त्रिधाहितं पाणिभिर्गुह्य मानंग विदिवासो घृतमन्नविदन् ।
इंद्र एक ठं सूर्य एकञ्ज जानवे नादेक ठं स्वधयानिष्ट तक्षुः ॥३॥
एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छत व्रजारिपूणा ना वचक्षे ।
घृतस्य धारा अभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ॥४॥

चित्तिं जुहोमि मनसा घृतेन यथा देवा इहागमन्वीत होत्रा ऋतावृधः। पत्ये विश्वस्यभू मनोजुहोमि विश्वकर्मणे विश्वाहा दाब्भ ठ हवि ॥५॥

ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णापुनरापत। वस्नेव विक्रिणावहा। इषमूर्ज ठ शतक्रतो स्वाहा। पुनस्वादित्याः रुद्राः वसवः समिन्धताम् ॥६॥

पुनर्ब्रह्मणो वसुनीथयज्ञै। घृतेन त्वं तन्व वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः सर्वं वै पूर्ण ठ स्वाहा ॥७॥

श्रीफल को यजमान की तरफ सम्मुख करते हुये होम देवे।

वसोर्द्धारा होमः – औदुंबर की बनी वसोर्द्धारा पर स्त्रुक के अग्रभग पर रखे आज्य पात्र से स्त्रुक में घी डालते हुये वसोर्द्धारा देवे।

सप्तते अग्नि समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऋषयः सप्तधाम प्रियाणि। सप्तहोत्रा सप्तधात्वाय जन्ति सप्तयोनी रापृणस्वा घृतेन स्वाहा ॥१॥

सम्यक् स्त्रवन्ति सरितोन धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा इवक्षिपणोरीषमाणाः ॥२॥

सिन्धोरिव प्राध्वने शूधनासी वात प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धाराऽअरुषोन वाजी काष्ठाभिन्दत्रर्मिभिः पिन्वामानः ॥३॥

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्मांश्च। शुक्रश्च ऋत पाश्चात्य ठ हाः ॥४॥

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष्व स्वाहा ॥५॥

ततोः स्त्रुक शेषं रुद्र कलशे त्यजेत्। इदमिन्द्राय न मम॥

आज्य स्थली में जल डाल दे।

स्त्रुवेण भस्मानीय दक्षिण करानामिकया गृहीय भस्मना त्र्यायुषं कुर्यात्। त्र्यायुषं जगदग्नेः इति ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषिमिति – ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषमिति दक्षिणबाहू मूले एवं वामबाहु मूले।

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमिति - हृदये।

इसके बाद **यज्ञपुरुष** भगवान की **आरती** कर पुष्पांजली देवे अग्नि की परिक्रमा करे।

ततो ऽग्न्युपस्थापनम्

हाथ जोड़कर अग्नि से प्रार्थना करे। -

त्राहिमाम् पुण्डरीकाक्षं न जाने परमं पदम् ।
कालेष्वपि च सर्वेषु दिक्षु सर्वासुचाच्युत ॥
अकाल कलुषं चित्तं मम ते पादयोः स्थितम् ।
कामये विष्णुपादौ तु सर्वजन्मसु केवलम् ॥

ॐ इंद्रं दैवीर्विशो मरुतो नु वर्त्मानो ऽभवन्य यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतो नुवर्त्मानो ऽभवन्। एवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषीश्चा नुवर्त्मानो भवन्तु ॥१॥

ॐ चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो अस्य त्रिधाबद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्याँ अविवेश ॥२॥

अभि प्रवन्त समने वयोषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्। घृतस्य धाराः समिधोन सन्तता जुषाणो हष्यति जातवेदाः ॥३॥ धामन्ते विश्वं भुवनमधिश्रितमंतः समुद्रे हृद्यतायुषि। अपामनीके समिधेय आभृतस्तश्याम मधुमन्तंत ऽ ऊर्मिम् ॥४॥ चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पंचभिरेव च। हूयते च पुनर्द्वाभ्यां तस्मै यज्ञात्मने नमः॥५॥

ज्ञानतो ऽज्ञानतो वाऽपि मंत्र कर्म क्रिया विधिः ।
संपूर्ण कुरु यज्ञेश गार्हपत्य नमोस्तु ते ॥
स्वस्ति श्रद्धां यशः प्रज्ञां विद्यां बुद्धिं श्रियं बलम् ।
आयुष्यं चैवमारोग्यं देहि मे वांछित फलम् ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वानुसृत स्वभावात् ।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥

इसके बाद **'ब्रह्मणे पूर्ण पात्र दानम्'** ततो ब्रह्मग्रंथि विमोक ।

प्रणीता के जल से पवित्रे से यजमान के सिर पर छींटें देवे। **ॐ सुमित्रिया न**

आप ओषधयः संति॥

पवित्रे को अग्नि में छोड़ देवे। **संस्त्रव प्राशनमाचमनं कुर्यात् ।**

ऐशान में प्रणीता को उल्टी करके रखें। अग्नि के चारों ओर बिखरी हुई दर्भा को इकट्ठी करके अग्नि में ड़ाल देवे।

ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वागातुमित। मनसस्पत इमं देवयज्ञ ठं स्वाहा वातेधाः स्वाहाः ॥

इसके बाद अग्नि को **३ बार अर्घ** देकर उसी जल से नेत्र स्पर्श करे।

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नमः ओषधीभ्यः ।
नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ॥

ततो यजमानस्य **शांति अभिषेकं** कुर्यात् -

यजमान का अभिषेक **पौराणिक सूक्त** या **वेदोक्त मंत्रों** ये करे मंत्र पृष्ठ संख्या ४९९ पर है।

।। *अथ आचार्यादि पूजनम्* ।।

आचार्य को आसन प्रदान कर सत्कार करे। यथाशक्ति भूमि, गज, अश्व, गौ, सुवर्ण, अन्न, धन, वस्त्रादि दान की व्यवस्था करे। कांस्यपात्र में आज्यभर कर यजमान अपने मुख का अवलोकन कर दान करे।

संकल्प :-

देशकालौ संकीर्त्य देव प्रतिष्ठा सद्धियर्थमिमां दक्षिणा तुभ्यमह माचार्याय संप्रददे ब्रह्मार्पणमस्तु न ममेत्युक्त्वा तद्धस्ते गोपुच्छ तिल यव कुश तुलसी सहितं जलं क्षिपेत्। प्रार्थयेत् -

भगवन् सर्वधर्मज्ञ शिवशास्त्रपरायण ।
सर्वशास्त्रार्थ तत्वज्ञ सर्वधर्मविशारद ॥
ईश त्रातस्व या यस्माद प्रमेयाद् भवार्णवात् ।
मुक्तोहं मर्त्य संसारात् प्रपन्नो ऽहं तवान्तिकम् ॥
ज्ञानतो ऽज्ञानतो वाऽपि यद् यन्न्यूनं कृतं मया ।
तत सर्वं पूर्णमेवाऽस्तु त्वत्प्रसादात् क्षमस्व मे ॥

आचार्य एवं ऋत्विगों को दक्षिणा देवे तब **आशीर्वाद** देवे -

ॐ समस्त जगदुत्पत्ति स्थिति संहार कारकः ।

शिवः शिवः सानुचरः सर्वदा सर्वकामदः ॥१॥
द्रव्यहीनं च यत्किंचिद् विधिहीनं तु यद् भवेत् ।
तत् सर्वं पूर्णमेवास्तु प्रसादात् कारणस्य ते ॥२॥
स्थापकस्य मूर्तिपानां वर्णिनां शिल्पिनां तथा ।
सराष्ट्रपार्थिवानां च शांतिर्भवस्तु सर्वदा ॥३॥
भृत्य - पुत्र - कलत्रैश्च स्वमित्रबलवाहनैः ।
कारणस्य प्रसादेन सर्वलोकेश्वरो भव ॥४॥

आचार्य यजमान को **श्रेयदान दे आशिष** प्रदान करे।

श्रेयदान के मंत्र व विधान पृष्ठ संख्या ३३१ पर है।

देवविसर्जनम् - स्थापित देवताओं का उत्तर पूजन करें। अग्नि का पूजन कर विसर्जन करें।

गच्छ त्वं भगवन्नग्ने स्वस्थाने कुण्डमध्यतः ।
हुतमादाय देवेभ्यः शीघ्रं देहि प्रसीद मे ॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर ।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन ।

नवग्रहादि का विसर्जन करे - '**ॐ यान्तु देवगणा......**' एवं यज्ञ विधि को पूर्ण करे। **उतिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तु मरुतः सदानव इन्द्र प्राशूर्भवासचा** । मंत्र से देवों का उत्थापन करे।

॥ अथ शिव विष्णवादि देवतानां लेपन द्रव्याणि ॥

यों तो अधिवासन कर्म सद्य कालीन या बहुत काल साध्य है। सद्य पक्ष में कहे जाने द्रव्य - **मधु, कुंकुम, केसर** से अनुलेपन करे। **बहुकाल** में प्रथम दिन केसर, दूसरे दिन हरिद्रा एवं पिली सरसों (सिद्धार्थ) तीसरे दिन यव के चूर्ण व श्वेत चन्दन से, चतुर्थ दिन मनशिला तथा प्रियंगु चूर्ण, पांचवे दिन कृष्णाञ्जन व तिल चूर्ण से, छठे दिन लाल चंदन व पद्मकेसर चूर्ण से, सातवें दिन गोरोचन व नागकेसर के चूर्ण से गौ घृत सहित सर्वत्र अनुलेपन करें।

अथ शिवस्य चतुर्थीकर्म

चतुर्थी कर्म दूसरे या चौथे दिन करके। संकल्प करे -

अमुकलिंग प्रतिष्ठाङ्गतया चतुर्थी कर्म करिष्ये।

आचार्य वरण करें। मूर्तिप, यजमान, द्वारपाल आदिकों के साथ पश्चिम द्वार से मंडप में प्रवेश कर यहां महास्नान सामग्री आदि को इकट्ठा कर वेदी के प्रदक्षिण क्रम से जाकर कुण्ड में स्थापित देवता के लिये चरु को पकाकर पांच ब्रह्म मंत्रों से और अङ्गमंत्रों से एक हजार आहुति का होम करे। यथा –

ॐ ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोधिपतिः ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् स्वाहा ॥ इ द शिवाय॥१ ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्र प्रचोदयात् स्वाहा ।इदं शिवाय॥२ ॥

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्येः । सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्येः स्वाहा ॥ इदं शिवाय॥३ ॥

ॐ वाम देवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः ।इदं शिवाय॥४ ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः । भवे भवेनातिभवे भवस्व भवोद्भवाय नमः स्वाहा ।इदं शिवाय॥५ ॥

(इति पंचब्रह्ममंत्राः)

अथ अंगमंत्राः

ॐ अदभ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकमर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे स्वाहा॥ इदं शिवाय ॥१ ॥

ॐ वेदाह मेतम्पुरुषं महान्तमादित्य वर्णन्तमसः परस्तात् । तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पंथा विद्येतेऽयनाय स्वाहा॥ इदं शिवाय॥२ ॥

ॐ प्रजापतिश्चरति गर्भे अंतरजायमानो बहुधा विजायते । तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तमिन्हतस्थु र्भुवनानि विश्वा स्वाहा॥ इदं शिवाय॥३ ॥

ॐ यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः । पूर्वोयो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्रह्मये स्वाहा॥ इदं शिवाय ॥४ ॥

ॐ रुचं ब्राह्मंजनयन्तो देवे अग्रे तदब्रुवन । यस्त्वैवं ब्रह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन्वशे स्वाहा॥ इदं शिवाय॥५॥

तदनन्तर ऋत्विक् घी या तिलादि से अपने अपने कुंडों में १०८ आहुतियां गौरी के लिये देवे।

ॐ गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी । अष्टापदी नवपदी बभूवषी सहस्त्राक्षरा परमेव्योमन् स्वाहा ॥इदं गौर्य्यै॥

(इति शिवस्य चतुर्थी कर्म)

।। *अन्य देवविषये चतुर्थीकर्म* ।।

विष्णु व अन्य देवता विषय में मूल मंत्र से आहुति देवे। अंग होम के जो मंत्र शिव चतुर्थी कर्म में दिये गये है उन्हीं मंत्रों से करें। पूर्व स्थापित देवता के लिये चरु पकाये मूल मंत्र से हवन करे तथा देव पत्नि के मंत्रों से भी हवन कर आचार्य एक हजार आहुतियाँ प्रदान करें।

ऋत्विक् भी घृत से सौ सौ आहुति प्रत्येक कुण्ड में हवन कर पूर्णाहुति करे।

।। *ततो होमान्ते अर्चनादि* ।।

आचार्य मूर्ति का निर्माल्य हटाकर शीतल जल से स्नान कराये। फिर से १८ घड़ों को पूर्ववत स्थापन कर स्नान कराये। ८१ के अभाव में ८ या ४ घटों का स्थापन करे। '**शन्नो देवी**' एवं '**आपोहिष्ठा**' मंत्रों को बोलते हुये तीर्थ जल, मृद, गोमय, क्षीर, दधि, मधु, शर्करा, औषधी, पुष्प, फल, रत्न गंध पंचगव्यादि प्रक्षेप करे ।

इस जल से **अर्घ्यपात्र** बनाये उसमें चावल, कुशाग्रभाग, दूर्वा, यव पीली सरसों से पात्र का आसादन करें।

अर्घ्य प्रदान करे -

ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां यानिमधिगच्छत ।
अरीष्टास्माकं वीरा मापरासेचि मत्पयः ॥

इसके बाद स्नान कराये। '**ॐ पंचनद्य**' से **पंचगव्य** '**द्रधिक्राव्णो**' से दधि स्नान कराये।

क्षीर स्नानं -

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य

संगथे।

घृत स्नानं -

ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्ट देवयजनमसि ॥

मधु स्नानं -

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः संत्वोषधीः ।

पुष्पोदक स्नानं

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पुष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्रेः साम्राज्येनाभिषिंचामि ॥

रत्नोदक स्नानं -

ॐ परिवाजपति कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

फलोदक स्नानं -

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सि बर्हिषि ॥

इसके बाद **गायत्री मंत्र** से गंधोदक स्नान कराये। **'ओषधी प्रतिमोदध्वम्'** से सहदेवी, व्याघ्री, बला, अतिबला, शंखपुष्पी, बच, सिंही, सुवर्चल इत्यादि औषधियों से स्नान कराये।

शीतलजलेन स्नानं -

ॐ समुद्रज्येष्ठा सलिलस्य मध्यात पुनाना यन्त्यनिविशमानाः । इंद्रो या वज्री वृषभो रराद ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥

सहस्त्रधारेण स्नानं ॐ वसोः पवित्रशतधारं इति मंत्रेण ॥

इसके बाद **तूष्णी** (गुपचुप) स्नान करायें।

पंचवर्णसूत्रेण नीराजन कर बलि प्रदान करें।

ॐ अन्धस्थान्धो वी भक्षीय महस्य महो वो भक्षीयोर्जस्थोर्ज वो भक्षीय रायष्पोषस्थ रायस्पोषं वो भक्षीय ॥

कौतुक (पूजाद्रव्य) ***निवेदनम्-***

ॐ मुचन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत । अथो यमास्य षड्वींशात सर्वस्माद्देव किल्विषात् ॥

तदन्तर सूक्ष्म वस्त्र से **'पंचनद्य सरस्वती'** मंत्र से मार्जन करे।

आचमनं-

मदाकिन्यास्तु यद्वारि सर्पपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देवसम्यगाचम्यतां त्वया ॥

वस्त्रयुग्म समर्पणम्.

वेदसूक्त समायुक्ते यज्ञसाम समन्विते ।
सर्ववर्णप्रदे देव वाससी ते विनिर्मिते ॥

कुंकुम चंदनादि

शरीरं ते न जानामि चेष्टा नैव च नैव च ।
मया निवेदितं भक्त्या चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥

इसी तरह पुष्प धूप दीप नैवेद्य अर्पण करे। फल, भूषणादि निवेदन करे। प्रार्थना करे -

मंत्र हीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्ण तदुस्तु मे ॥

तदन्तर १०८ बार मूलमंत्र से हवन कर कर्म पूरा करे। स्वस्ति वाचन करे इंद्रादि लोकपालों को बलि प्रदान कर आचमन करे एवं अवशिष्ट कर्म समाप्त करे।

॥इति चतुर्थी कर्म विधि॥

अथ शैवेचण्डप्रतिष्ठा एवं कीर्तिस्तंभ स्थापनम्

चतुर्थी कर्म दिने वा दिनान्तरे कुर्यात्।

संकल्प - अमुक लिंग प्रतिष्ठाङ्ग तया चण्डप्रतिष्ठां करिष्ये।

प्रासाद के बाहर गर्भगृह से आधे सूत्र के मध्य में ईशान कोण में चण्ड के लिये पीठ बनाकर चण्डमूर्ति का स्थापन करें।

सिद्धांत शेखरे - बाणलिंगे च लोहे च सिद्धलोहे स्वयं भुवि। प्रतिमासु च सर्वासु न चण्डो ऽधिकृतो भवेत् ॥१॥ धराहिरण्य गोरत्न ताम्र रौप्यां शुकादिकान्। विहाय शेषं निर्माल्य चण्डेशाय निवेदयेत्॥२॥ अन्यन्नादि पानीयं तांबूलं गंधपुष्पकम्। दद्याच्चण्डाय निर्माल्यं शिवभुक्तं तु सर्वशः ॥३॥ लिंगेस्वयं भुवे वाणे रत्नजे रस निर्मिते। सिद्ध प्रतिष्ठिते चैव न चण्डाधिकृतिर्भवेत् ॥४॥ यत्र चण्डाधिकारोऽस्ति तद्भोक्यं न मानवैः।

चण्डाऽधिकारो नो यत्र भोक्तव्यं तत्र भक्तितः ॥५॥

अथ चण्ड प्रतिष्ठापनं

ध्यान करें -

रुद्राग्रेः प्रभवं चण्डं कज्जलाभं भयानकम् ।
शूलदण्डधरं रौद्र चतुर्वक्त्रं चतुर्भुजम् ॥
मुखोद्गीर्ण महाज्वालं रक्तद्वादशलोचनम् ।
जटामुकुट खण्डेन्दुमण्डितं फणिकङ्कणम् ॥
व्याल यज्ञोपवितं च साक्षसूत्र कमण्डुलम् ।
श्वेत पद्मासनसीनं भक्ति प्रह्वार्ति नाशनम् ॥

इस प्रकार से चण्ड का ध्यान करें। **ॐ चण्डासनाय नमः** से चण्ड के आसन की पूजा करें। **ॐ चण्डमूर्त्तये नमः** से चण्ड को नमस्कार करे। **आवहनं - ॐ धनुश्चडेश्वराय हुं फट् स्वाहा।**

इसके बाद चण्ड के **हृदयादि के मंत्रों** से स्पर्श करे **अंग न्यास करे।** **ॐ चण्डाय हृदयाय हुं फट् नमः। ॐ चण्डशिरसे हुं फट् नमः। ॐ चण्ड शिखायै हुं फट् नमः। ॐ चण्ड कवचाय हुं फट् नमः। ॐ चण्डास्त्राय हुं फट् नमः। (इति करयोः)।**

ॐ चं सद्योजाताय हुं फट् नमः। ॐ चिं वामदेवाय हुं फट् नमः। ॐ चुं अघोराय हुं फट् नमः। ॐ चें तत्पुरुषाय हुं फट् नमः। ॐ चों ईशानाय हुं फट् नमः।

इस प्रकार न्यास कर षोड़शोपचार से पूजन कर प्रार्थना करे।

यावत्तिष्ठति लोकेस्मिन्देव देवो महेश्वरः ।
तावत्कालं त्वया देव स्थातव्यं शिव सन्निधौ ॥

ततो दिग्बलिं दत्वा।

ॐ यावत्कालं महादेवो लिङ्गमाश्रित तिष्ठति ।
तावत्कालं तु रक्षार्थं यूयं तिष्ठत सर्वदा ॥

कीर्तिस्तंभ स्थापनम्

(पद्मपुराणे) ईश्वर उवाच - तदाप्रभृति देवस्य द्वारे कीर्तिमुखः स्थितः।

नार्चयन्तीह ये पूर्वं तेषामर्चा वृथा भवेत्॥

संकल्प :- देशकालौ संकीर्त्यं, श्रीसदाशिव प्रीतये कीर्तिमुख स्थापनं करिष्ये।

चण्ड की तरह ही इस के प्रतिष्ठा **अंगन्यासादि** करके करें। **हृदयादि न्यास** मंत्रों के पहले इस तरह उच्चारण करे -

ॐ कीर्तिमुखं हृदयाय हुं फट् नमः। ॐ कीर्तिमुखं शिरसे हुं फट् नमः। ॐ कीर्तिमुखं शिखायै हुं फट् नमः। ॐ कीर्तिमुखं कवचाय हुं फट् नमः। ॐ कीर्तिमुखं अस्त्राय हुं फट् नमः।

षोड़शोपचार से पूजन कर प्रार्थना करें -

यावत्कालं महादेवो लिंगमाश्रित तिष्ठति।
तावत्कालं तु रक्षार्थं यूयं तिष्ठति सर्वदा॥

॥इति चण्डेश कीर्तिस्तंभ स्थापनम्॥

इसके बाद आचार्य यजमान का अभिषेक करे। यजमान जलाशय में अवभृक स्नान करके आयें। आचार्य व ब्राह्मणों को गौ स्वर्णादि दक्षिणा देवे, ब्राह्मण भोजन करे।

अथ जीर्णोद्धार विधिः

अग्निपुराण एवं हयशीर्षआगम में जीर्णोद्धार किस किस परिस्थिति में करे व कैसे करे इसका वर्णन है तदानुसार यहाँ विधि क्रम दिया जा रहा है। कहीं परिस्थितिवश लोकाचार के अनुसार आचार्य को मध्य मार्ग भी अपनाना पड़ता है।

जिस अर्चा या लिंग के अंग भंग हो गये है वज्रपात प्रहार या आघात से प्रतिमा भंग हो गयी हो उसका जीर्णोद्धार करे। भ्रमवश बाणादिलिंग मानकर विधिपूर्वक स्थापित किया हो परन्तु लक्षणों से प्रमाण रहित हो, टुकडों में बिखरी हो, स्थूलपिण्डिका के अनुरूप हो, एक भाग टूट गया हो, पिण्डिका एवं नाली से रहित हो, चाण्डाल, शव व दोषयुक्त स्त्री के स्पर्श में जीर्णोद्धार करे। पिण्डिका व वृष के दुष्ट होने पर दोनों का त्याग करे लिंग का न करे। परन्तु जहां लिंग का त्याग हो वहां पिण्डिका भी नूतन स्थापित करे।

स्वयं उत्पन्न हुये देव में तथा बाणलिंग में ऋषियों, देवों एवं तत्व के जानकारों से प्रतिष्ठित लिंग में जीर्ण आदि दोष होने पर वहां पुनः संस्कार न करे।

प्राचीन ग्रंथों में लिखा है कि १०० वर्ष में ग्राम देवता, ५०० वर्ष में विशेष पीठ देवता, ५००० वर्षो में सिद्धपीठों के देवता जीर्ण अवस्था को प्राप्त करते है। अतः बीच बीच में जीर्णोद्धार आदि क्रम व जागृति हेतु संस्कार होते रहने चाहिये।

खंडित तथा चूर्णित लिंग में प्रेतादि का निवास होता है, ब्रह्मराक्षसादि निवास करने लग जाते है एवं ग्राम का अनिष्ट होता है।

दिशा के भ्रम से स्थापित स्थान में च्युत, नदी प्रवाह के कारण वेग से हरण किया गया, चौर आदि के द्वारा उखाड़ा गया लिंग, ब्रण से रहित लिंग को पुनः स्थापित करे।

कई जगह सिद्ध पीठों में पाया गया कि मुगल काल के दौरान नष्ट किये जाने वाले मंदिरों में कई चमत्कार हुये हैं। लिंग स्वतः फटकर उसमें से भ्रामरी शक्ति की उत्पत्ति हुई (भंवरा, मधुमक्खी जो अधिक विषयुक्त होती है)एवं पीठ की रक्षा हुई। ऐसे पीठ लिंग बरसों से आज भी पूजे जाते है। राजस्थान में नाथद्वारा के पास एककलिंगजी महादेव का मंदिर भी इस किवदंती में आता है। ऐसी चमत्कारी घटना के बाद उदयपपुर नरेश के वंशजों ने एकलिंगजी को राज्य का राजा तथा स्वयं को राज्य का दीवान मानकर ही राज्य किया। राज्यादेश में लिखा जाता कि- हुकम एकलिंगजी का...........लिखी दीवान अमुक।

एक हनुमानजी कि मूर्ति जो चमत्कारी थी चोरों द्वारा उसका सिर तोड़ ड़ाला गया परन्तु १५०-२०० वर्षों से भी वह सिर विहीन मूर्ति आज भी पूजित है एवं चमत्कारी है। अतः लोकाचार के अनुरूप भी कहीं कहीं ऐसा कार्य देखा गया है।

सुवर्ण आदि अष्टधातु से निर्मित लिंग को देवयोग से भग्न होने पर उसको ठीक कर पुनः संस्कार कर स्थापित करे। हाथ, पैर, सिर विहीन तथा नाक, कान, मुख से हीनों का उसी प्रकार परिवार की प्रतिमाओं का त्याग करें।

जिस द्रव्य की जिस प्रमाण नाप से लिंग या प्रतिमा हो उसी प्रमाण नाप में उसी द्रव्य से प्रतिमा का निर्माण करें।

किसी के द्वारा लिंग गिरा दिया हो, हिल गया हो उत्तरदिशा के अतिरिक्त नालिका हो तो पुनः शोधन करे जीर्णोद्धार करायें।

यदि नदी धारा से लिंग पृथक हो, गया हो, अथवा नीचे गया हुआ तथा सामान्य भूभाग से नीचे की भूमि में लिंग के स्थित होने पर पूजा में बाधा होने पर लिंग को दूसरे स्थापन पर भी शास्त्र में दिये गये नियमानुसार स्थापित करें।

स्वायम्भुव आदि लिंगों का जर्जर पीठ का परित्याग करे। जीर्णादि दुष्ट दोष युक्त मनुष्य द्वारा (सिद्धपुरुष के बजाय सामान्य व्यक्ति द्वारा) स्थापित पीठ का

त्याग करें।

प्रासाद, गर्भगृह, महल, नगरद्वार मण्डपादि के गिर जाने पर तो उसी के आकार का उन्हीं द्रव्यों (कार्य योग उत्तम द्रव्यों) से जीर्णोद्धार करें।

अच्छी भूमी में स्थित हो या विषम भूमि में स्थित लिंग का चालन नहीं करे।

जीर्णोद्धार मुहुर्त्त हेतु

तिथि नक्षत्र वारादि तदर्थ न विचारयेत्।
जीर्णं चोद्धारयेद्विद्वान् जीर्णं नैव चालयेत्॥

अर्थात् अजीर्ण का उद्धार नहीं करे, जीर्णोद्धार शुभ समय देखकर शीघ्र कराये वार नक्षत्रादि विशेष बल के विचार में अधिक विलंब होने की आशंका रहती है।

।। अथ हयशीर्षागमोक्त जीर्णोद्धार विधि ।।

पूर्व दूषित दुष्ट पीठ (पहले के आसन) को त्याग कर अचल मूर्ति व लिंग को मंदिर में दूसरे आसन पर '**चलमूर्ति प्रतिष्ठा**' विधि से स्थापित करें।

चालन के लिये मूलमंत्र से १००० बार तथा स्थापन के लिये १०० बार होम करें।

अतिजीर्ण अंग हीन लकड़ी व पत्थर की मूर्ति को त्यागकर '**चलमूर्ति प्रतिष्ठा**' विधि से स्थापन करे। आचार्य संहार विधि से कलाओं को उद्धरण करे। अर्थात् विलोम क्रम से जैसे अंग न्यास में पहले अस्त्राय फट, कवचाय हुं, शिखायै वषट्, शिरसे स्वाहा एवं हृदयाय नमः। इस विधि से न्यास करे इसी तरह अन्य कलाओं को करे।

शिव हेतु **अघोर मंत्र व विष्णु हेतु नृसिंह** मंत्र से आज्य से १००० बार होम कर संस्कार करे।

भग्न मूर्ति विसर्जन विधिः

त्रिविक्रम के मतानुसार एक या दो बैलों की रस्सी से लिंग को युक्त कर **पाशुपत मंत्र (ॐ श्लीं पशु हुं फट्)** से प्रतिमा को ले जाये। जीर्ण मूर्ति को सवारी में चढ़ाकर वस्त्रादि से ढककर गाजे बाजे गीत मंगल घोष के साथ ले जाकर **विष्णक्सेन** के उद्देश्य से गुरु उस मूर्ति को अगाध जल में प्रक्षेप करें। लकड़ी की मूर्ति का अग्नि में दाह करे, पत्थर एवं धातु की मूर्ति को जल में प्रक्षेप करें।

पिण्डिका में से रत्नादि को ग्रहण कर आचार्य को प्रदान करे। गौ, सुवर्ण,

वस्त्रादि का दान करे। शिवभक्तों एवं विष्णुभक्तों को भोजन करावें।

इसके बाद उत्तम लक्षणों से युक्त प्रतिमा का स्थापन करे।

भीत्ति चित्र प्रतिमा विषय में दूसरा चित्र प्रतिमा का तदनुरूप बनायें।

पहले पिण्डिका को हटाकर दूसरी पिण्डिका का स्थापन करे फिर दूसरे तीसरे दिन विष्णु आदि का स्थापन करें।

।। अथ जीर्णोद्धार महिमा ।।

वापी कूप तड़ागानां सुरधाम्ना सदाऽनघ ।
प्रतिमानां समानां च संस्कर्ता यो नरो भुवि ।
पुण्यं शतगुणं तस्य भवेन्मूलान्न संशय ॥
प्रतिमायां शतगुणं कूपादिः परिकीर्तितम् ।
प्रतिमादौ दशगुणं जीर्णसंस्कारणाद्भवेत् ॥

अथ शांतिहोमः (प्रतिमा विसर्जन पूर्व)

जीर्णोद्धार हेतु दक्षिण या ईशान कोण में मण्डप बनाये उसमें पश्चिम दिशा में ही द्वार व फाटक होवे।

मूर्ति के भंग होने, खण्डित या चूर्णित होने पर उसकी शांति हेतु संस्कार करे उसको प्रतिमा का **उद्धार संस्कार** करना कहा है।

जो मूर्ति नदीवेग से स्थापनच्युत हुई या अपहृत की गई वापस प्राप्त हुई है, या गिर गई हो, अथवा गिरायी गई हो, पूजनविधान बाधा के कारण उसका चालन कर अन्यत्र स्थापन करना हो तो उनका **उद्धार नहीं होगा** विधि पूर्वक **चलप्रतिष्ठा नियम** से पुनः स्थापन होगा।

अतिजीर्ण पीठ से चालित दोषित लिंग का त्याग करे आचार्य पिण्डिका ब्रह्मशिला का त्याग करे तथा अंग मूर्ति मे से वृष का त्याग कर **नूतन प्रतिमा स्थापन** करे।

।। अथ उद्धारसंस्कार एवं शांतिहोमः ।।

मंडप के मध्य में पूर्व भाग की तरफ वर्तुल (गोल) या चतुरस्र कुण्ड या स्थण्डिल बनाये। वास्तु पीठ की स्थापना करे, दक्षिण, ईशान या वास्तुपीठ के उत्तर में देव की पूजा के लिये वेदी का स्थण्डिल बनाकर भग्नप्रतिमा का स्थापन करें।

संकल्पः :-

देशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहं श्रीईश्वर प्रीतिकामो

मौलफलाच्छतगुण फल कामोऽल्प प्रतिमायां तु दशगुणफलकामो वा जीर्णादिदोष दुष्टलिंगस्य प्रतिमायां (पिण्डिका, वृष, गरुड़, प्रासाद कलश इत्यादि यथा नाम प्रतिमां) उद्धारमुच्छयणं वा जीर्णोद्धारं करिष्ये।

तदन्तर गणेश पूजा मातृकादि पूजन नांदिश्राद्ध स्वस्तिवाचन शिवकुंभ पूजन वास्तु पूजन कराकर दुष्टप्रतिमा को वेदी पर स्थापन करें।

अग्नि स्थापन कर दुष्ट लिंग प्रतिमा का पूजन करे।

आसनम् **- ॐ व्यापकेश्वर एह्येऽहि नमः।**

अंग पूजा **- ॐ व्यापकेश्वर हृदयाय नमः। ॐ व्यापकेश्वर शिरसे स्वाहा। ॐ व्यापकेश्वर शिखायै वषट्। ॐ व्यापकेश्वर कवचाय हुं। ॐ व्यापकेश्वर नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ व्यापकेश्वर अस्त्राय फट्।**

इसके बाद देवता के **मूल मंत्र** से पूजन करें।

दुष्ट दोष निवारण हेतु प्रार्थना करें -

सत्त्व कोऽपीह यः कश्चित् लिंगमाश्रित्य तिष्ठति ।
लिंग त्यक्त्वा शिवाज्ञाभिर्यत्रेष्टं तत्र गच्छतु ।
विद्या विद्येश्वरैः शंभु शंभुरत्र भविष्यति ॥

उद्धार की प्रार्थना करे -

दुष्टलिंगमिदं शंभो शांतिरुद्धरणेऽस्य चेत् ।
रुचिस्तवास्ते विधिना अधितिष्ठ च मां शिव ॥

शांतिहोमः - मधु घृत दूध और दूर्वाओं से तथा मूलमंत्र से १०८ बार शांति होम करें।

पाशुपत मंत्रहोमः - अनिष्ट निवारण हेतु पाशुपत मंत्र से एक हजार होम करे तथा जप भी कराये। ब्रह्मशिला पिण्डिका एवं लिंगात्मक देवता (देवता प्रतिमा के आधार व लिंग तीनों) के संस्कार व रक्षार्थ **पाशुपत मंत्र** से होम करें।

लघुमंत्र से होम करें।

लघुमंत्र - ॐ श्लीं पशुं हुं फट्।

हवन पश्चात् शिव, विष्णु आदि देवों का तर्पण करे।

अग्निपुराणोक्त (वृहद) मंत्र विधानम्

ध्यान :-

मध्यह्नार्कसमप्रभं शशिधरं भीमाट्टहासो ज्ज्वलं

त्र्यक्षं पन्नग भूषणं शिखि शिखा श्मश्रू स्फुरन्मूर्धजम् ।
हस्ताब्जैस्त्रिशिखं समुद्गरमसिं शक्तिं दधानं विभुं
दंष्ट्रा भीम स चतुर्मुखं पशुपतिं दिव्यास्त्र रूपं स्मरेत् ॥

अथ पाशुपतास्त्र स्तोत्रम्

ॐ नमो भगवते महापाशुपतायातुलबलवीर्यपराक्रमाय त्रिपञ्चनयनाय नानारूपाय नानाप्रहरणोद्यतताय सर्वाङ्गरक्ताय भिन्नाञ्जनचयप्रख्याय श्मशानेवेतालप्रियाय सर्वविघ्ननिकृन्तनरताय सर्वसिद्धिप्रदाय भक्तानु-कम्पिने ऽसंख्यवक्त्रभुजपादाय तस्मिन् सिद्धाय वेतालवित्रासिने शाकिनी क्षोभजनकाय व्याधिनिग्रहकारिणे पापभञ्जनाय सूर्यसोमाग्निनेत्राय विष्णु-कवचाय खड्गवज्रहस्ताय यमदण्डवरुणपाशाय रुद्रशूलाय ज्वलज्जिह्वाय सर्वरोगविद्रावणाय ग्रहनिग्रहकारिणे दुष्टनाग क्षय कारिणे। ॐ कृष्ण पिंगलाय फट्। हूंकारास्त्राय फट्। वज्रहस्ताय फट्। शक्त्ये फट्। दण्डाय फट्। यमाय फट्। खड्गाय फट्। नैर्ऋताय फट्। वरुणा फट्। वज्राय फट्। पाशाय फट्। ध्वजाय फट्। अंकुशाय फट्। गदायै फट्। कुबेराय फट्। त्रिशूलाय फट्। मुद्गराय फट्। चक्राय फट्। पद्माय फट्। नागास्त्राय फट्। ईशानाय फट्। खेटकास्त्राय फट्। मुण्डाय फट्। मुण्डास्त्राय फट्। कङ्कालास्त्राय फट्। पिच्छिकास्त्राय फट्। क्षुरिकास्त्राय फट्। ब्रह्मास्त्राय फट्। शक्त्यस्त्राय फट्। गणास्त्राय फट्। सिद्धास्त्राय फट्। पिलिपिच्छास्त्राय फट्। गन्धर्वास्त्राय फट्। पूर्वास्त्रायै फट्। दक्षिणास्त्राय फट्। वामास्त्राय फट्। पश्चिमास्त्राय फट्। मन्त्रास्त्राय फट्। शाकिन्यास्त्राय फट्। योगिन्यस्त्राय फट्। दण्डास्त्राय फट्। महादण्डास्त्राय फट्। नमोऽस्त्राय फट्। शिवास्त्राय फट्। ईशानास्त्राय फट्। पुरुषास्त्राय फट्। अघोरास्त्राय फट्। सद्योजातास्त्राय फट्। हृदयास्त्राय फट्। महास्त्राय फट्। गरुडास्त्राय फट्। राक्षसास्त्राय फट्। दानवास्त्राय फट्। क्षौ नरसिंहास्त्राय फट्। त्वष्ट्रस्त्राय फट्। सर्वास्त्राय फट्। नः फट्। वः फट्। पः फट्। फः फट्। मः फट्। श्रीः फट्। पेः फट्। भूः फट्। भुवः फट्। स्वः फट्। महः फट्। जनः फट्। तपः फट्। सत्यं फट्। सर्वलोक फट्। सर्वपाताल फट्। सर्वतत्त्व फट्। सर्वप्राण फट्। सर्वनाडी फट्। सर्वकारण फट्। सर्वदेव फट्। ह्रीं फट्। श्रीं फट्। डूं फट्। स्त्रुं फट्। स्वां फट्। लां फट्। वैराग्याय फट्। मायास्त्राय फट्।

कामास्त्राय फट्। क्षेत्रपालास्त्राय फट्। हुंकारास्त्राय फट्। भास्करास्त्राय फट्। चन्द्रास्त्राय फट्। विघ्नेश्वरास्त्राय फट्। गौः गां फट्। स्त्रों स्त्रों फट्। हौं हों फट्। भ्रामय भ्रामय फट्। संतापय संतापय फट्। छादय छादय फट्। उन्मूलय उन्मूलय फट्। त्रासय त्रासय फट्। संजीवय संजीवय फट्। विद्रावय विद्रावय फट्। सर्वदुरितं नाशय नाशय फट्।

तदन्तर मधु के साथ तीन तीन समिधाओं से रक्षार्थ अघोरास्त्र मंत्र से एक हजार या यथोचित संख्या में हवन करे।

मंत्र **:- ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर तनुरूप चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घातय हुं फट् स्वाहा।**

लिंग के उत्तान हाथ में सुवर्ण का कंकण बांधें। (उत्तान हाथ की भावना करे)

व्याहृति होम करके पूर्णाहुति करें। दिग्पाल बलि करे। आज्य प्रक्षेप जो हवन समय शांति कलश में डाला हो उस जल से १००० बार देवता सिंचन करे।

ब्रह्मशिला को कुश मूल से, पिण्डिका को कुश मध्य से तथा लिंग को कुशाग्र से स्पर्श करे।

सद्योजातादि पांचों मुखों में विपरीत अर्घ (अर्थात् स्वात्माभिमुखेन कृत्वा) प्रदान करें।

विष्णु का वासुदेव मंत्र व शिव का अघोर मंत्र से **तर्पण करें।**

प्रतिमा विसर्जनम्

इसके बाद प्रतिमा को सुवर्णपाश या गोचर्म की रज्जु अथवा बैल को बांधने की रस्सी से प्रतिमा को बांधे रथ में बिठायें, बैलों से खींचें। स्थूल प्रतिमा को बैल या हाथी द्वारा ले जाकर गुरु उसका चालन करे।

सौधचूर्ण से निर्मित लिंग को भूमि पर त्याग करे।

लकड़ी के बने लिंग का अग्नि में दाह करे। लोह पत्थर से निर्मित लिंग को जल में विसर्जन करे।

सुवर्णादि अष्टलोह निर्मित भग्नलिंग को उसी **सुवर्णादि से उसी प्रमाण** व माप में कर **पुनः स्थापन** करे।

पुनः मूर्तिस्थापनम् :-

अगर प्रतिमा का चालन किसी कारण से हुआ हो, प्रतिमा को अन्यत्र स्थान पर

स्थापन हेतु हुआ हो या गर्भ गृह के निर्माणादि के लिये चालन हुआ हो तो उसके चालन हेतु पाशुपतमंत्र से एक हजार बार होम तथा स्थापन हेतु १०८ बार होम करे।

चलप्रतिष्ठा विधि से पुनः प्रतिष्ठा संस्कार करे। आचार्य ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान कर गौ अश्वादि दान करे, ब्राह्मण भोजन करे।

प्रार्थना करें :-

ज्ञानतो ऽज्ञानतो वाऽपि यथोक्तेन कृतं यदि ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥
कर्तुराज्ञः प्रजानां च शांतिर्भवतु सर्वदा ।
अस्माकं शिल्पिनां चैव सुप्रीतो भव सर्वदा ॥

॥ प्रासादस्य जीर्णोद्धारः ॥

प्रासाद के पुनः निर्माण जर्णोद्धार समय खड्ग या छुरिका में प्रासाद स्थित देवों व लोकपालों की स्थापना करे। और भावना करे कि इन देवताओं का निवास इस खड्ग में है तत्पश्चात् नित्यखड्ग की पूजा अर्चा करे।

जब प्रसाद का जीणोद्धार होकर तैयार हो जाये तब वास्तु पूजा होम कर्म करके खड्ग स्थित देवों का पुनः प्रासाद में स्थापित होने की भावना व मंत्रों द्वारा खड्ग में से देवताओं का विसर्जन कर प्रासाद में स्थापित करे। ब्राह्मण भोजन कराये आचार्य को दक्षिणा देवे।

॥इति जिर्णोद्धार विधि॥

अथ बौधायनोक्ता राधाकृष्ण प्रतिष्ठा:

संकल्पः- **मम सर्वपापक्षयार्थ दीर्घायुर्विपुल पुत्र पौत्राद्यन वच्छिन्न संततिवृद्धि स्थिर लक्ष्मीकीर्ति लाभ शत्रुपराजय पूर्वकं यशोविजय प्राप्त्यर्थं सकलैश्वर्य धर्म अर्थ काम मोक्ष प्राप्ति द्वारा श्रीराधाकृष्ण प्रीत्यर्थं प्रासाद राधाकृष्णमूर्त्योः स्थिरप्रतिष्ठां चल प्रतिष्ठां वा करिष्ये।**

तदन्तर **ग्रहशांतिपूर्वक जलाधिवास देवस्नपन** आदि कार्य करे। प्रतिष्ठा विधान जो अचल व चलमूर्ति हेतु दिया है उससे करे।

प्राणप्रतिष्ठा मंत्र पृष्ठ संख्या ४२१ इस तरह तथा जीव न्यास पृष्ठ संख्या ४२२ ये प्रतिष्ठा करे।

साधारण क्रम में विनियोग कर प्रतिष्ठा करें।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं राधाकृष्णयो प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं......राधाकृष्णयोः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों.....राधाकृष्णयोः सर्वेन्द्रिाणि इह स्थित। ॐ आं ह्रीं क्रों श्रीराधाकृष्णयोः वाङ्मनः त्वक्, चक्षुः, श्रोत्र, जिह्वा, घ्राण, प्राणाः इहागत्य स्वस्तये सुखेन चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। देव के सिर पर हाथ रख कर **कृष्ण गायत्री** मंत्र जपे।

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्॥

अतसीपुष्प संकाशं शंख चक्र गदाधरम्।
संस्थापयामि देवेशं देवो भूत्वा जर्नादनम्॥

राधा के सिर पर हाथ रखकर राधा गायत्री मंत्र का जाप करे:

ॐ समुद्र धृतायै विद्महे विष्णुनैकेन धीमहि। तन्नो राधा प्रचोदयात्॥

कृष्ण का पुरुष सूक्त व **राधा** का **श्रीसूक्त** से अभिषिंचन करे।

एवं **षोड़शोपचार** से पूजा करे, **अंग पूजा** करे।

आवाहनं - **आवाहयामि देवेशां श्रीराधावल्लभं हरिम्।**
देवकीतनयं कृष्णं श्रीकृष्णं प्रकृतेः परम्॥

आसनम् - **राजाधिराजेन्द्रं कृष्णं चन्द्रादित्य यद्दभवम्।**
इदं सिहासनं तुभ्यं दास्यामि स्वीकुरुप्रभो॥

पाद्यं - **त्रैलोक्य पावनस्त्वं हि राधया सहितो हरे।**
पाद्यं गृहाण देवेश नमो राजीवलोचनम्॥

अर्घं - **परिपूर्ण परानंद ब्रह्मादि देवतात्मक।**
गृहाणाऽर्घ्यं मयादत्तं तीर्थवारि समन्वितम्॥

मधुपर्कं - **वासुदेवाय कृष्णाय तत्वज्ञानस्वरूपणि।**
मधुपर्कं प्रदस्यामि दीनानाथाय ते नमः॥

आचमनं - **नमः शुद्धाय बुद्धाय सत्याय ज्ञान रूपिणे।**
गृहाणाऽऽचमनं नाथ सर्व लोकैकनाययक॥

पंचामृत स्नान कराकर शुद्ध स्नान कराये।

शुद्ध स्नानं - ब्रह्माण्डोदर मध्यस्थं तीर्थैश्च यदुनंदन ।
स्नापयिष्याम्यहं भक्त्या स्वकरेण जनार्दन ॥

वस्त्रं समर्पयामि- शीत वातोष्ण संत्राणं पीताम्बरमिदं हरे ।
संगृहाण जगन्नाथ कृष्ण चन्द्र नमोऽस्तुते ॥

उपवस्त्रं सम. - श्रीकृष्णाच्युत यज्ञेश श्रीधरानन्दराधन ।
ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण यदुनायक ॥

अलंकरणं सम.- किरीट हार केयूर वंशी कुण्डल मेखलाः ।
ग्रीवेयकौस्तुभोहार रत्नकङ्कण नूपुरौ ॥
एवमादिनि सर्वाणि भूषणानि सुरोत्तम ।
अहं दास्यामि सद्भक्त्या संगृहाण जनार्दन ॥

गंधं सम. - कुंकुमागरु कर्पूर कस्तूरीमिश्रचंदनम् ।
तुभ्यं दास्यामि विश्वेश राधया सहितो हरे ॥

पुष्पमालां सम. - तुलसी कुंद मंदार जाति पुन्नाग चंपकै ।
कंदंब करवीरैश्च कुंकुमैः शतपत्रकैः ॥
नीलांबुजैबिल्वदलैः पुष्यमाल्यैश्च केशव ।
पूजयिष्याम्हं भक्त्या संगृहाण जनार्दन ॥

अथ अंगपूजा - ॐ कृष्णाय नमः पादौ पूजयामि. । ॐ राधावल्लभाय नमः गुल्फौ पूजयामि। ॐ केशवाय नमः जानुनी पूज.। ॐ पद्मनाभाय नमः नाभिं पूज.। ॐ परमात्मने नमः हृदयं पूज.। ॐ श्रीकण्ठाय नमः कण्ठं पूज.। ॐ सर्वास्त्रधारिणे बाहुं पूज.। ॐ यदूद्भवाय नमः मुखं पूज.। ॐ वाचस्पतये नमः ऊरू पूज.। ॐ विश्वरूपाय नमः जंघे पूज.। ॐ माधवाय नमः कटिं पूज.। ॐ विश्वमूर्तये नमः मेढ्रं पूज.। ॐ विश्वेशाय नमः जिह्वां पूज. । ॐ दामोदराय नमः दन्तान् पूज.। ॐ गोपीनाथाय नमः ललाटं पूज. । ॐ ज्ञानगम्याय नमः शिरः पूज.। ॐ सर्वात्मने नमः सर्वांगं पूज.।

धूपं घ्राप. - वनस्पतिरसो. - इतिमंत्रेण।

दीपं दर्श. - ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमः कृष्णाय वेधसे ।
गृहाण दीपकं विष्णो त्रैलोक्य तिमिरापह ॥

नैवेद्यं निवेदनं - उद्‌दिव्यान्नममृतं रसैः षडभिः समन्वितम् ।
श्रीकृष्ण सत्यभामेश नैवेद्ये प्रतिगृह्यताम् ॥

तदन्तर ताम्बूल पूगीफल दक्षिणा समर्पण करे।

प्रार्थना करे :-

स्वागतं देवदेवेशमद्भाग्यात् त्वमिहाऽऽगतः ।
प्राकृतिं त्वामहं दृष्ट्वा बालवत्परिपालय ॥
यावच्चन्द्रावनी सूर्योस्तिष्ठन्त्य प्रतिघातिनः ।
तावत् कृपास्तु देवेश स्वयं भक्त्यानुकंपया ॥
भगवन् सर्वदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनाम् ।
येनरूपेण भगवन् त्वया व्याप्तं चराचरम् ।
तेन रूपेण देवेश स्वर्चायां सन्निधोभव ॥

तर्पण करे - **ॐ केशवं तर्पयामि। ॐ माधवं तर्प.। ॐ गोविन्दं तर्प.। ॐ नारायणं तर्प.। ॐ विष्णुं तर्प.। ॐ मधुसूदनं तर्प.। ॐ त्रिविक्रमं तर्प.। ॐ वामनं तर्प.। ॐ श्रीधरं तर्प.। ॐ हृषीकेशं तर्प.। ॐ पद्मनाभं तर्प.। ॐ दामोदरं तर्प.। ॐ संकर्षणं तर्प.।**

यथा समयानुसार **मूलमंत्र से आहुति देकर** पूर्णहुत्यादि कर्म समापन कर कर्म को श्रीपरमेश्वर के अर्पण करे।

॥इति बौद्धायनोक्त राधाकृष्ण प्रतिष्ठा॥

अथ हनुमत्प्रतिष्ठा विधिः

संकल्प :- देशकालौ संडकीर्त्य अमुक गोत्रः अमुक शर्माऽहं मम समस्त पापक्षय पूर्वकं आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धि द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीतये च अस्यां हनुमत्मूर्तौ देवत्व संसिद्धये सप्रासादवास्तु नवग्रहमख पूजनपूर्वक हनुमत्प्रतिष्ठां करिष्ये।

इसके बाद जलाधिवास महास्नान हवनादि कर्म करे। प्राणप्रतिष्ठा मंत्र जो पृष्ठ संख्या ४२१ पर है उससे प्रतिष्ठा कर जीव न्यास करे। अंग न्यास पृष्ठ संख्या ४२५ पर दिये गये है। उससे न्यास करे होम करे। हनुमानजी के द्वादश नामों से पूजा करे

ॐ हनुमते नमः। अंजनी सूनवे नमः। वायुपुत्राय नमः। महाबलाय नमः।

रामेष्टाय नमः। फाल्गुन सखाय नमः। पिङ्गाक्षाय नमः।अमित विक्रमाय नमः। उदधिक्रमणाय नमः। सीताशोक विनाशाय नमः। लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः। दशग्रीवदर्पहन्त्रे नम।

षोड़शोपचार से पूजा कर प्रार्थना करे -

स्वागतं देव देवश मद्भाग्यत्त्वमिहागतः ।
सान्निध्यं सर्वदा देव हनुममत् परिकल्पय ॥
यावच्चन्द्रावनी सूर्यातिष्ठन्त्य प्रतिधातिनः ।
तावत्त्वयाऽत्र स्थातव्यं स्वेच्छाभक्त्यानुकंपया ॥

इसके बाद देव के दक्षिण कर्ण में **नामकरण** कहें -

त्वं दास हनुमान (वीरहनुमान) इतिनामकरण।

॥इति हनुमत्प्रतिष्ठा ॥

अथ वापी कूप तड़ाग प्रतिष्ठा प्रयोगः

वापी कूप प्रतिष्ठा में दक्षिणायन उत्तरायाण आदि विशेष काल का उल्लेख नहीं लिखा है जल का आगमन व जलपरिपूर्ण स्थिति का समय ही उपयुक्त माना है। अत: आचार्य उत्तम समय बलाबल देखकर प्रतिष्ठा कराये। विशेष में कार्तिक मास शुभ माना जाता है, अर्थात् इस समय तक वर्षा का जल स्थिर होकर शुद्ध हो जाता है।

सर्व प्रथम प्रायश्चित हवनादि कर्म कराकर गौ दानादि संपन्न कराये। दूसरे दिन आचार्य मंडप में आकर यजमान से संकल्प एवं पूजा होमाधिवास कर्म कराये।

संकल्प **:- देशकालौ संकीर्त्य ममेहजन्मनि जन्मान्तरेवा कृतकायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक दोषपरिहारार्थं सकल कलुषक्षयपूर्वक रुद्रालयगमनान्तर बहुकल्प कलावधिक - द्युलोक भोग पूर्वक वैष्णवपद प्राप्तिकामोऽमुक जलाशयोत्सर्गं वा करिष्ये।**

तदङ्गत्वेन गणपति पूजन पुण्याहवाचनं मातृका पूजनं नान्दीश्राद्धं आचार्यवरणं च करिष्ये। आचार्य गणपति मातृका रुद्र कलश नवग्रह साधिपति प्रत्यधि देवता पूजन पूर्वक अग्नि स्थापन करें।

मण्डप मध्य में वरुण मण्डल स्थापित करे जैसा कि रंगीन चित्रों में पुस्तक में दिया गया है। उसके **मध्य** में नवग्रहों का पूजन करें। नवग्रहमंडल अलग बनाया हो तो भी मंडल के मध्य में अष्टदल बनाये उसमें मध्य में सूर्य की शेष

आठ दलों में बाकि ग्रहों का ग्रहों कि दिशानुसार आवाहन करें।

वापी कूप तड़ाग में १६९ कोष्ठक (पद) के वास्तु मंडल का पूजन का उल्लेख भी है वैसे जल को देवरूप माना है अत: ६४ पद का वास्तु मंडल बनायें।

वास्तु मंडल बनाकर पूजा करे तत्पश्चात् वरुण मंडल की पूजा करे।

वरुणमंडल पूजनम्

मध्य में जो अष्टदल है उसके मध्य में सूर्य को मानकर शेष दिशाओं में ग्रहों का यथास्थान आवाहन करे।

जलमातृकाओं की मूर्तियां मण्डल मध्य में रखें।

यथा - **सुवर्ण से कूर्म एवं मकर की। चांदी से मत्स्य एवं गोधिका की। ताम्र से केंकड़ा (कर्कट) एवं मण्डूक की प्रतिमा बनाये।**

लोह से शिशुमार की मूर्ति (एक ऐसा ४ पैर वाला जानवर जो मध्य में स्थूल हो मुंह नीचे किये तथा पूंछ ऊपर किये हुये हो) अर्थात् सूंस के आकार में कुण्डली मारे हुये की प्रतिमा स्थापन कर उनके यथा नाम से पूजन करे -

ॐ कूर्म्यै नमः। ॐ मकर्यै नमः। ॐ मत्स्यै नमः। ॐ गोधिकायै नमः। ॐ कर्कट्यै नमः। ॐ मण्डूक्यै नमः। ॐ शिशुमाराय नमः।

इसके बाद प्रधान **सप्तमरुद्गणों** का पूजन करे -

ॐ आवहाय नमः। ॐ प्रवहाय नमः। ॐ उद्वहाय नमः। ॐ वहाय नमः। ॐ विवहाय नमः। ॐ परावहाय नमः। ॐ परिवहाय नमः।

मध्य में वरुण की स्थापना करे, कलश स्थापन करे।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥

इस मंत्र से स्थापन कर षोड़शोपचार से पूजन करे।

आचार्य अपने प्रत्येक कुण्डों के ईशान में कलश स्थापन करे।

वरुण देव से **प्रार्थना** करे-

ॐ नमस्ते विश्वगुप्ताय नमो विष्णो अपांपते ।
सानिध्यं कुरु मे देव समुद्रादिह शान्तये ॥

कूप के चारों कोणों पर अक्षत् पुंजों पर श्वेत वस्त्र से वेष्ठित **चार कलश** स्थापित करे। **उनमें ईशान में शिव, अग्निकोण में गणेश, नैर्ॠति में सूर्य तथा**

वायव्य कलश में देवी का आवाहन पूजन करे।

आचार्य एवं ऋत्विक् अपने अपने कुण्डों में ग्रहमख वास्तु विश्वकर्मा एवं आवाहित देवों की तथा लोकपालों की आहुतियां प्रदान करे।

।। अथ प्रधान देवता होमः ।।

नीचे १२ मंत्र दिये जा रहें है उनकी ९ आवृत्ति करने पर १०८ होम संख्या हो जायेगी। वरुण की प्रीति के लिये यह होम आज्य एवं उदुम्बर समिध से करे।

ॐ इमं मे वरुण श्रुधीहव मद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा॥ इदं वरुणाय न मम॥१॥ **ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान- स्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणे हबोद्ध्युरुश ठं समान आयुः प्रमोषीः स्वाहा** ।इदं.॥२॥ **ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवया सिसीष्ठाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचा नो विश्वा द्वेषां ७३ सि प्रमुमुग्ध्य स्मत् स्वाहा॥** इदं.॥३॥ **ॐ सत्वन्नो अग्ने वमो भवोति नेदिष्ठो अस्या उषसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनो वरुण ठं रराणो वीहि मृडीक ठं सुहवो न एधि स्वाहा** ।इदं. ॥४॥

ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभिशस्तिपाश्च सत्वमित्व मया असि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ७३ स्वाहा ।इदं.॥५॥ **ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा** ।इदं. ॥६॥ **ॐ आदित्यास्त्वगस्यदित्यै सद आसीद। अस्तभ्नाद्यां वृषभो अंतरिक्षममिमीत वरिमाणं पृथिव्याः। आसीद विश्वा भुवनानि सम्राड् विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि स्वाहा** ।इदं.॥७॥

वनेषु व्यन्तरिक्षन्त तान वाजमर्वत्सुपय उस्त्रियासु। हृत्सुक्रतुं वरुणो विक्ष्वग्निन्दिवि सूर्यमदधात्सोममद्रौ स्वाहा ।इदं.॥८॥ **ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मद वाधमं विमध्यम ७३ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदिते स्याम स्वाहा** ।इदं.॥९॥ **ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि - इति मंत्रेण** ।इदं.॥१०॥

ॐ निषसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा। साम्राज्याय सुक्रतुः स्वाहा ।इदं.॥११॥

ॐ घृतवती भुवनाना-मभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा। द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणि विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा स्वाहा ।इदं॥१२॥

पुनः ग्रहादि विश्वकर्मान्त होमः कार्यः ॥

अथान्तरं सुमुहुर्त्ते यूपस्थापनं कुर्यात्॥

यूप स्थापन की विधि पृष्ठ संख्या ५५६ पर है। चण्डप्रतिष्ठा एवं कीर्ति स्तंभ स्थापन में दी हुई वहां अवलोकन करे।

पश्चात् कूप के समीप जाकर हाथ जोड़कर **वरुण** का आवाहन करे।

ॐ आयाहि भगवन् देव तायेमूर्त्तै जलेश्वर ।
खंख कुन्देन्दुवर्णाभ । मकरध्वज पाशधृक् ॥
यज्ञेऽस्मिन् सरितां नाथ ! सर्व पाप प्रणाशन ।
मयास्मिन् निर्मिते कूपे सान्निध्यमुप कल्पय ॥

ॐ नमो भगवते विष्णवे जलाधिनाथाय नमः। ॐ वरुणाय नमः।

इन मंत्रों व वरुण मंत्र से कूप मध्य जल की पूजा करें। कुये को पीत वस्त्र से आच्छादित करे।

अथ अनन्तादि अष्टनाग पूजा

(कहीं पर तर्पण प्रयोग के बाद लिखा है)

लोहे के ८ शंकु बनवाये उनको कूप के पास एक अष्टदल वाले मंडल पर स्थापित करे एवं उनका पूजन करे। अथवा आम्रपत्तों पर उनके नाम लिखकर रखें।

ॐ अनन्तो वासुकिश्चैव कर्कोटस्तक्षकस्तथा ।
नागः पद्मो महापद्मः शंखः कुलिक एव च ॥
इमे चाष्टकुला नागा ये च नागा विषायुधाः ।
तान्पूजयाम्यहं भक्त्या रक्षां कुर्वन्तु मे सदा ॥

अष्टनागों की पूजाकर पायसादि से बलि देवे। प्रार्थना करे -

ॐ विशंतु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वदा ।
अस्मिन कूपे अविष्ठन्तु आयुर्कीति बल कराः सदा ॥

इसके बाद शुभ लग्न में श्रृंगार की हुई सुवर्ण के सींग वाले **गौ को लेकर** कूप के पास आवे तथा **उसकी पूजा** करें।

गौ को कूप के समीप लेकर आवें एवं मंत्र से अवतरण करें -

ॐ इरावती धेनुमती हि भूत ठं सूयवसिनी मनवेदशस्या ।
व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेतेदाधर्त्यं पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥

इसकें बाद गाय को तीन बार वापी या कूप के चारों ओर घुमावें **मंत्र** -

ॐ इदं सलिलं पवित्रं कुरुष्व शुद्धाः पूता अमृताः सन्तु ।
नित्यं मां तारयन्ती सर्वतीर्थोभिषेकम् लोकाल्लोकतरते तीर्यते च ॥

इसके बाद गुरु **गौपुच्छ** से अन्वारब्ध करें एवं जल में प्रवेश करें तथा इन दो मंत्रों को पढ़ें -

ॐ समुद्रादूमिर्मधुमाँ उदारदुपा ठं शुनासममृतत्व मानट् ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वादेवाना-ममृतस्य नाभिः ॥१॥
ॐ ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु ।
येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

इसके बाद यजमान जल मे स्थित **उत्तराभिमुख गौ** का पुच्छ ग्रहण करे (अन्वारब्ध गृहीत) एवं यव कुशादि से **देव मनुष्य पितृ तर्पण** करे। अपनी वेद शाखानुसार मंत्रों से करे। देवताओं के लिये पूर्वाभिमूख होकर सव्य से। उदङ्मुख होकर कण्ठीकृत होकर **ऋषी तर्पण** करे। अपसव्य होकर दक्षिणभिमुख से **पितृ तर्पण** करे।

पौराणिक मंत्रों से पितृतर्पण इस तरह से करे।

पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपीतामहः ।
स्वस्वपत्नीसमेताश्च प्रीयतां जलतर्पणात् ॥१॥
अजातदन्ता ये केचिद्ये च गर्भे व्यवस्थिताः ।
तेषामुद्धरणार्थाय तड़ागोदक तर्पणम् ॥२॥
पितृव्यकाश्च येऽस्माकं भ्रातरश्च सहोदराः ।
गुरवो मातुला पुत्रा आचार्य सखि बान्धवाः ॥३॥
तेषां पुत्राश्च पत्न्यश्च श्वशुरा ये सपुत्रकाः ।
एतेषां क्रीडनार्थाय तड़ागोदक तर्पणम् ॥४॥
बंधुवर्गाश्च ये केचिद् गोत्र नाम विविर्जिता ।
स्वगोत्रा परगोत्राः वा तेभ्यश्चेदं तिलोदकम् ॥५॥

उद्बन्धेन मृता ये च सिंह व्याघ्रहताश्च ये ।
द्रंष्ट्रिभिः शृङ्गिभिश्चैव तेभ्यश्चैव तिलोदकम् ॥६॥
असुरा देवत्न्यश्च मातरश्चण्डिका तथा ।
दिक्पाला लोकपालाश्च ग्रह देवाधि देवताः ॥७॥
तेषामुद्धरणार्थाय तड़गोदक तर्पणम् ।
अग्निदग्धाश्च ये केचिन्नाग्नि दग्धास्तथाऽपरे ॥८॥
विद्युत चोरहता ये च तेभ्योपीदं तिलोदकम् ।
रौरवे चान्धतामिस्त्रे कुंभीपाके च ये गताः ॥९॥
अनेक यातना संस्थाः प्रेतलोकेषु ये गताः ।
पच्यन्ते संयमन्यां ये नीता ये यमकिङ्करै ॥१०॥
असिपत्रवने घोरेतेभ्यो ऽपीदं तिलोदकम् ।
विश्वेदेवास्तथा साध्या आदित्याश्च मरुद्गणाः ॥११॥
क्षेत्र पीठोप पीठानि नद्यश्चैव ससागराः ।
पाताले नागपत्न्यश्च नगाश्चैव सपर्वताः ॥१२॥
पिशाचा गुह्यकाः प्रेता गण गंधर्व राक्षसाः ।
पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाशमेव च ।
ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तड़गोदकतर्पणात् ॥१३॥
आ ब्रह्मणो ये पितृवंश जाता मातुस्तथा वंशभवा
मदीयाः। वंशद्वयेऽस्मिन् मम दासभूता
भृत्यारस्तथैवाश्रित सेवकाश्च ॥१४॥
मित्राणि सख्युः पशवश्च वृक्षा दृष्टाश्च स्पृष्टाश्च कृतोपकारा ।
जन्मान्तरं ये मम सङ्गताश्च तेभ्यस्तड़ागोदक मे तदस्तु ॥१५॥

इसी तरह प्रतिश्लोक व पद के आधार पर तर्पण करे।

तर्पण पश्चात् यजमान गोपुच्छ (वा अन्वारब्धेन) सहित जल से बाहर आकर ईशान दिशा में खड़ा होवे।

ॐ आपो अस्मान मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्व पुनन्तु ।
विश्व ठं हि रिप्रंप्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि ॥१॥
ॐ सूयवसाद्भगवती हि भूया अथोवयं भगवन्तः स्याम ।

अद्धि तृणघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती ॥२॥

इसके बाद यजमान वस्त्रालंकार आदि से गाय की पूजा कर आचार्य को देवे।

त्रिसूत्रीकरणम्

इसके बाद यजमान **त्रिसूत्री** को कुंकुम से रचित कर वापी वा कूप को ३ बार वेष्टन करे। आचार्य पूर्व की तरफ मुंह करके तथा ऋत्विक उत्तर की ओर मुंह करके खड़े होवे तथा **पंचरत्न धातु की मत्स्यादि मूर्तियों को गहरे जल में प्रक्षेप करे**। अक्षत पुष्पादि भी ग्रहण करे।

विधि :-

आचार्यअथवा यजमान पूर्व कि तरफ मुंह करके पूर्व एवं अग्नि के मध्य मे सुवर्ण की कूर्म एवं मकर की मूर्ति को प्रक्षेप करे। पश्चिमाभिमुख होकर चांदी की मस्त्य एवं डुण्डभी (विष रहित सर्प विशेष)की मूर्तियों को दक्षिण नैर्ऋत्य के मध्य में प्रक्षेप करे। उत्तराभिमुख होकर कर्कट एवं मंडुकी की मूर्ति को पश्चिम एवं वायव्य के मध्य प्रक्षेप करे। पूर्वाभिमुख होकर लोह की शिशुमार की मूर्ति को उत्तरदक्षिणाभिमुख रखते हुये वरुण मंत्र से जल में प्रक्षेप करे।

पश्यात् यजमान **'जलाशय उत्सर्ग'** का संकल्प करे -

(कुशजल यव तिलानादाय) देशकालौ संकीर्त्य मम सर्वपाप क्षयपूर्वक रुद्रालय गमनानन्तर बहुकल्पकालावधिवधिक द्युलोक भोगानुभव पूर्वक परार्द्धद्वय कालावच्छिन्नमहस्तपः प्रभृति लोक गमनादिह तल्लोक भोगोत्तर काल सद्योग बल प्राप्य वैष्णवद प्राप्तिकामो ऽहमिमं तडागादि जलाशयं वरुणदेताकं स्नान पाना-ऽवगाहनाद्यर्थं सर्वेभ्यो भूतेभ्य उत्सृज्ये....।

इस प्रकार संकल्प बोलकर जलाशय की और देखकर संकल्प जल को भूमि पर छोड़ देवें। एवं **संबोधन करें**-

सर्व भूतेभ्य उत्सृष्टं मयैतज्जल मूर्जितम् ।
रमन्ता सर्वभूतानि स्नान पाना ऽवगाहनैः ॥१॥
सामान्यं सर्वभूतेभ्यो मयादत्तम् जलम् ।
रमन्ता सर्वभूतानि स्नान पाना ऽवगाहनैः ॥२॥

अष्टनाग पूजा हेतु पहले मंडल बनाया हो तो ठीक अन्यथा अब मंडल बनाकर अष्टशंकु बनाये या आम्रपत्तों पर अष्टनागों के नाम लिखकर एक कलश में स्थापित कर नाम मंत्रों से पूजाकर पायसादि से बलि देकर प्रार्थना करे। मंत्र पहले दिये जा चुके हैं। शंकु के ऊपर गोल भाग में त्रिशूल या चक्र का चिन्ह अंकित होवे।

पूर्व दिशा मे अष्टनाग हेतु खात करे। उसमें दहि, मधु, अक्षत, कुश, तीथ जल एवं पंचरत्न ड़ालें। वहां पर अष्टनाग यष्टि को रखकर अर्चन करे।

'ॐ ध्रुवा द्यौः' इस मंत्र से या **ॐ स्थिरोभव वीडवङ्ग आभुर्भुव वाज्यर्वन्। प्रथुर्भव सुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहनः ॥**

इसके बाद यजमान **गंगादितीर्थों** का जल जलाशय में प्रक्षेप कर, पूर्वाभिमुख होकर **प्रार्थना करे।**

कुरुक्षेत्रं गयां गङ्गां प्रभासं पुष्कराणि च ।
एतानि पञ्च तीर्थानि तडागे निवसन्तु मे ॥१॥
वितस्ता कौशिकी सिन्धु सरयू च सरस्वती ।
एतानी पञ्च तीर्थानी तडागे निवसन्तु मे ॥२॥
दशार्ण मुरला सिन्धु रथावती द्दषद्वती ।
एतानि पञ्च तीर्थानि तडागे निवसन्तु मे ॥३॥
यमुना नर्मदा रेवा चन्द्रभागा च वेदिका ।
एतानि पुण्य तीर्थानी तडागे निवसन्तु मे ॥४॥
गोमती वाड्मती शोणो गण्डकी सागरस्तथा ।
एतानी पञ्च तीर्थानि तडागे निवसन्तु मे ॥५॥

इस तरह उच्चारण करने के बाद **जल का स्पर्श** करे।

'आपोहिष्ठा' इत्यादि ३ ऋचायें पढ़ें और जलाशय के दुग्धधारा देते हुये तीन प्रदक्षिणा करें।

एक ब्रह्मण को यथेष्ट दुग्धपान करायें। आचार्य उत्तर कर्म को संपादन करे अपने २ कुण्डों में **हवन कर पूर्णाहुति** करें।

दूसरे दिन या चतुर्थ दिन चतुर्थी कर्म संपन्न कराकर पूर्णपात्रादि दान गौदान करे आचार्य को दक्षिणा देवे।

॥इति वापीकूप जलाशय प्रतिष्ठा॥

अथ आरामोत्सर्ग प्रयोगः

(बाग बगीचा उत्सर्गः)

***संकल्प* - मम समस्त पापक्षयाऽतीताऽनागत-पितृकुलतारण कामो भगवत्प्रीतिकामो वा आरामोत्सर्गं करिष्ये।**

ग्रह शांतिवत् विधान तथा जलाशय प्रतिष्ठा की तरह कर्म कराये। एक वेदी पर कलश स्थापन कर उसमें सर्वोषधी तथा सप्त धान्यादि प्रक्षेप करे मालादि से अलंकृत करे।

प्रति वृक्षस्कंध समीप में कर्णवेध सुवर्ण शलाका से करे।

सुवर्ण शलाका से नेत्रांजन करे गुग्गुलु धूप देवे।

अगर सभी वृक्षों के पास वेदी व घट स्थापन नहीं कर सके तो **आठ वृक्षों के पास वेदिका बनाये** सप्तधान्य रख कर उन पर **जल पूरित घट** रखें। **वरुण पूजा करे।**

अग्नि स्थापन कर नवग्रहमख लोकपालों का आवाहन होम करे। प्रतिवृक्ष ७ या आठ फल रखें (कूर्म मकरी आदि के प्रतिरूप में यहां इनको रखें)

ॐ वनस्पतयेवीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः ।
गोभिः सन्नद्धो असि वीडयं स्वास्थाता ये जयतु जे त्वानि ॥

इस तरह आसादन करे।

ब्रह्मा शिव विष्णु विनायक लक्ष्मी अंबिका भूतग्राम देवता का स्थापन कर पूजन करे। सबको बलि प्रदान करे।

'यूप की स्थापना' ३ कदम छोडकर ईशान कोण में करे। ग्रहादि होम करे।

प्रधान होम - **'ॐ वनस्पतये'** इस मंत्र से १०८ या १००० आहुति देवे। पूर्णाहुति करे।

उत्सर्गः **:- इदमारामं यथा संख्य अश्वत्थादियुतान् वृक्षान् वनस्पति दैवतान् स्वीयपापक्षय पूर्वक पितृमातृ कुल द्वय तारण कामः श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं सर्व सत्त्वेभ्यो ऽहं उत्सृजे।**

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़ें -

सर्व भूतेभ्य उत्सृष्टं मयैतद्वन मूर्जितम् ।
रमन्ता सर्वभूतानि स्थितिं भक्षोत्सवादिभिः ।
सामान्यं सर्वभूतेभ्यो मयादत्तमिदं वनम् ।
रमन्तां सर्वभूतानि स्थितिं भक्षोत्सवादिभिः ॥

॥इति आरामोत्सर्ग प्रयोगः॥

अथ वैदिक अभिषेकमंत्राः

पूजा विधान, यज्ञ विधान, प्रतिष्ठा विधान संपूर्ण होने पर **श्रेयदान** करते समय (आशिका देते समय) आचार्य यजमान व यजमान पत्नि का अभिषेक कर आशीर्वाद प्रदान करें।

ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे ॥१॥
योवः शिव तमोरसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिव मातरः ॥२॥
तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । अपोजन यथाचनः ॥३॥
ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ठं हवे हवे सुहव ठं शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ७ स्वस्ति नो मधवा धात्त्विन्द्रः ॥४॥
ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कंस्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य । ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन -मासीद ॥५॥ भगप्रणेतर्भग सत्याराधो भगेमान्धिय मुदवाददन्नः । भग प्रणो जनय गोभिरश्वै र्भगं प्रनृभिर्नृवन्त : स्याम ॥६॥
इदमापः प्रवहता वद्यञ्चमलं च यत् यच्चाभिदुद्रोहानृतं । यच्च शेपे अभीरुणम् आपोमातस्मादेन सः पवमाश्चमुंचतु ॥७॥
ॐ पुनंन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः । पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा ॥८॥
आप्या यस्व स मेतुते विश्वतः सोमवृण्यम् ।भवा वाजस्य संगथे ॥९॥
पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥१०॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यत्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिंचामि ॥११॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्ये वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्ये नाभिषिञ्चामि ॥१२॥
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । अश्विनो र्भैषज्ये न तेजसे ब्रह्मवर्चसा सा याभिषिञ्चामि ॥१३॥

सरस्वत्यै भैषज्ये न वीर्याया नाद्यायाभिषिंचा-
मींद्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियययैशसोभिषिञ्चामि ॥१४॥
पालाशं भवति तेन ब्रह्मणोभिषिंचति । ब्रह्मवै पलाशो
ब्रह्मणै वैनमेतदभिषिंचति ॥१५॥
सर्वेषां वा एष वेदाना ꣳ रसो यत्साम सर्वेषा
मे वैनमेत द्वेदाना ꣳ रसेनाभिषिंचति ॥१६॥
यद्वेव कल्पाञ्जुहोति प्राणा वैकल्पा अमृत मुवै
प्राणा अमृतेनवैनमेतदभिषिञ्चति ॥१७॥
दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे सुप्रजास्त्वायचासा
अथो जीव शरदः शतम् ॥१८॥
ॐ द्यौः शांतिरिक्ष ठं शांति - इति मंत्रेण ॥१९॥

अथ पौराणिक अभिषेकमंत्राः

सुरास्त्वाभिषिञ्चतु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः ।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ॥१॥
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ।
आखण्डलो ऽग्निः भगवान्यमो वै नैर्ॠतिस्तथा ॥२॥
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः ।
ब्रह्मणा ऽनन्त सहिताः दिक्पालाः पान्तु ते सदा ॥३॥
कीर्तिर्लक्ष्मीः धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः ।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शांतिस्तुष्टिः कांतिश्च मातरः ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ॥४॥
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध जीव सिता ऽर्कजाः ।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चतु राहुः केतुश्च तर्पिताः ॥५॥
देव दानव गंधर्वा यक्ष राक्षस पन्नगाः ।
ऋषयो मानवो गावो देवमातर एव च ॥६॥
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्यश्चाप्सरसां गणाः ।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ॥७॥

औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये ।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्व कामार्थ सिद्धये ॥८॥
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः ।
अभिषिञ्चन्तु ते सर्व धर्म कामार्थ सिद्धये ॥९॥

॥ अथ आयुष्यमंत्रः ॥

आशीर्वाद, कंकण बंधन, रक्षाबंधन, ग्रंथिबंधन आदि में निम्न मंत्र प्रयोग में आते है ।

ॐ आयुष्यं वर्चस्य ठ रायस्पोष मौदिद्भदम् ।
इदं ठ हिरण्यं वर्चस्वजैत्राया विशतादुमाम ॥१॥
न तद्द्रक्षा ठ सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः
प्रथमज ठ ह्येतत् । यो बिभर्ति दाक्षायण ठ हिरण्य
ठ सेदेवेषु कृणुते दीर्घमायु ॥२॥
यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ठ शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
तन्म आबद्ध्नामि शतशारदाया युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥३॥
दीर्घायुस्त ऽओषधे खनितायस्मै चत्वाखनाम्यहम् ।
अथो त्वन् दीर्घायुर्भुत्वा शतवल्शा विरोहतात् ॥४॥
द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत। नेष्ट्रा दृतुभिरिष्यत ॥५॥
द्रविणोदा द्रविण सस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत् ।
द्रविणो दावीर वतीमिषंनो द्रविणो दारासते दीर्घमायुः ॥६॥
नवो नवो भवति जायमानो ह्नां केतुरुष सामेत्यग्रम् ।
भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्र-चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥७॥
उच्चादिवि दक्षिणावन्तो ऽअस्थुर्ये ऽअश्वदाः सहते सूर्येण ।
हिरण्यदा ऽअमृत्वं भजंते वासोदाः सोमप्रतिरंत आयुः ॥८॥

अथ चतुर्वेदोक्त सूक्तानि

यज्ञ मंडप के चारों द्वारों पर द्वारपाल पद नियुक्ति हेतु चार वेद पाठी ब्रह्मणों

को वरण कर चारों वेदों के लिये उन के **सूक्त पढें** जाते है। पूर्व में ऋग्वेद, दक्षिण में यजुर्वेद, पश्चिम में सामवेद और उत्तर में अथर्वेद की स्थापना कर उनके सूक्त पढें जाते है।

अतः चारों वेदों के सूक्त दिये जा रहें है जो यज्ञ समय पाठ व अलग अलग कार्य भी प्रयोग में आते है।

।। अथ ऋग्वेद सूक्तानि ।।

ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्रः सोमदैवतः ।
अत्रिगोत्रस्तु विपेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥

श्रीसूक्तम्

ॐ अस्य श्रीसूक्तस्य आनन्द कर्दम चिक्लीथ ऋषि अग्निदेवताः आदौत्रयस्य अनुष्टुप छंद शेषांसा प्रसार पंक्ति त्रिष्टुप अनुष्टुप पुनः प्रसार पंक्ति छंद हिरण्य वर्णां बीजं, तां आवह इति शक्तिः कीर्तिमृद्धि ददातु इति कीलकं श्री महालक्ष्मी वर प्रसाद सिद्धर्थं पाठे जपे विनियोगः।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजातम् ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥१॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषाहनम् ॥२॥
अश्वपूर्णां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥३॥
कांसोस्मितां हिणरय प्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनेमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वांवृणे ॥५॥
आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मी ॥६॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतो ऽस्मिन्राष्ट्रे ऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातुमे ॥७॥
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठा - मलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम् ।

अभूतिं समृद्धिं च सर्वांनिर्णुद मे गृहात् ॥८॥
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥
मनसः कांम माकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिल्कीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ॥१३॥
आर्द्रां यष्करणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह ॥१४॥
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥

(कहीं कहीं पुष्टिं, सुवर्णां तथा यष्टिंपिंगलां पद्ममालिनीम् है)

॥श्रीरस्तु॥

पावमानसूक्तम् (ऋग्वेदोक्त)

पवित्रिकरण एवं शांतिपाठ तथा दुग्धादिधारा देते समय भी पाठ करते है।

वैसे इसके ऋग्वेद में ११५ श्लोक माने है परन्तु आवश्यकतानुसार ३० श्लोक ही दिये जा रहें। ऋग्वेद ६।७।२३

ॐ स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारय। इंद्राय पातवेसुतः ॥१॥
रक्षोहा विश्व चर्षणि रभियोनि मयोहतम्। द्रुणासधस्थ मासदत् ॥२॥
वरिवोधातमोभवमंहिष्ठो वृत्रहन्तमः । पर्षिराधोमघोनाम् ॥३॥
अभ्यर्ष महानां देवानां वीतिमंधसा । अभिवाजमुत श्रवः ॥४॥

त्वामच्छा च रामसितदिदर्थां दिवो दिवे । इंद्रोत्वेन आशसः ॥५॥
पुनाति ते परिस्त्रुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता । वारेणशश्वतातना ॥६॥
तमीमण्वीः समर्य आगृभ्णंति योषणोदश । स्वसारः पार्येदिवि ॥७॥
तमीं हिन्वत्यग्रुवो धमंति बाकुरं दृतिम् । त्रिधातु वारणं मधु ॥८॥
अभी ममघ्न्याउत श्रीणंति धेनवः शिशुम् । सोममिन्द्राय पातवे ॥९॥
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा विष्वा वृत्राणि जिघ्नते । शूरोमघा च मंहते ॥१०॥
पवस्वदेव वीरति पवित्रं सोमंरह्या । इंद्रमिन्दो वृषाविश ॥११॥
आवच्यस्व महिप्सरो वृषेन्दोद्युम्न वत्तमः ।आयोनिन्धर्णसिः सदः ॥१२॥
अधुक्षत प्रिय मधुधारा सुतस्य वेधसः । अपोवसिष्ट सुक्रतुः ॥१३॥
महान्तंत्वा महीरन्वापो अर्षंति सिन्धवः । यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥१४॥
समुद्रो अप्सुमामृजे विष्टभो धरुणो दिवः । सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥१५॥
अचिक्रदद् वृषा हर्रि महान्मित्रो न दर्शतः । सं सूर्येण रोचते ॥१६॥
गिरस्त इन्द ओज सामः मृर्ज्यंते अपस्युवः । याभिर्मदाय शुंभसे ॥१७॥
तं त्वा मदाय घृष्वय उलोक कृत्नुमीमहे । तव प्रशस्तयो महीः ॥१८॥
अस्मम्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः पवस्वधारया । पर्जन्यो वृष्टि माँ इव ॥१९॥
गोषा इंदोनृषा अस्यश्वसा वाजसा उत । आत्मायज्ञस्य पूर्व्यः ॥२०॥
एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिवदीयति । अभिद्रोणान्या सदम् ॥२१॥
एष देवो विपा कृतोतिह्वरांसि धावति । पवमानो अदभ्यः ॥२२॥
एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः । हरिर्वाजायमृज्यते ॥२३॥
एष विश्वानिवार्या शूरायेनिवसत्वभिः । पवमानः सिषासति ॥२४॥
एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति। आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥२५॥
एष विप्रैरभिष्टुतो पो देवो विगाहते । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥२६॥
एष दिवं विधावतितिरोरजांसि धारया । पवमानः कनिक्रदत् ॥२७॥
एष दिवं व्यासरत्तिरोरजांस्य स्पृतः । पवमानः स्वध्वरः ॥२८॥
एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुत । हरिः पवित्रे अर्षति ॥२९॥
एष उस्य पुरुव्रतोजज्ञा नो जनयन्निषः । धारयापवते सुतः ॥३०॥

॥इति ऋग्वेदोक्त पावमानसूक्तम् ॥

अथ शांतिसूक्तम्

ॐ शं नऽइंद्राग्नी भवतामवोभिः, शं नऽइंद्रा वरुणा रातहव्या ।
शमिंद्रा सोमा सुविताय शं योः शन्न इंद्रा पूषणा वाजसातौ ॥१॥
शं नो भगः शमुनः शं सो अस्तु शं नः, पुरंधिः शमु संतुराय ।
शं न सत्यस्य सुयमस्य शं सः, शं नो अर्यमा पुरुजातोऽअस्तु ॥२॥
शन्नोधाता शमुधर्तानो अस्तु शं न, उरूची भवतु स्वधाभिः ।
शं रोदसी बृहति शन्नो अद्रिः, शं नो देवानां सुहवानि संतु ॥३॥
शं नोऽअग्नि ज्योतिरनीकोऽअस्तु, शंनो मित्रा वरुणावश्विनाशम् ।
शं नः सुकृता सुकृतानि संतु शंनऽइषिरो अभिवातुवातः ॥४॥
शं नो द्यावा पृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशयेनोऽअस्तु ।
शंनः ओषधीर्वनिनो भवन्तु शंनो रजसस्पति-रस्तुजिष्णुः ॥५॥
शंनः इंद्रो वसुभिर्देवोऽअस्तु, शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः ।
शंनो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः, शंनस्त्वष्टाग्नाभि-रिहशृणोतु ॥६॥
शंनः सोमो भवतु ब्रह्म शंनः, शंनोग्रावाणः शमुसन्तु यज्ञाः ।
शंनः स्वरुणां मितयो भवन्तु शंनः प्रस्वः ठ शम्वस्तुवेदिः ॥७॥
शंनः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शनश्चतस्त्रः प्रदिशो भवंतु ।
शंनः पर्वताध्रुवयो भवन्तु शंनः, सिंधव शमुसन्त्वापः ॥८॥
शन्नोऽअदितिर्भवतु व्रतेभिश्शंनो, भवंतु मरुतः स्वर्काः ।
शंनो विष्णुः शमुपूषानो अस्तु, शंनो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥९॥
शंनोदेवः सविताञायमाणः, शंनोभवंतूषसो विभातीः ।
शंनः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शंनः क्षेत्रस्यपतिरस्तिशंभुः ॥१०॥
शंनो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सहधीभि-रस्तु ।
शमभिषाचः शमुरातिषाचः, शंनोदिव्याः पार्थिवाः शंनोऽअप्याः ॥११॥
शंनः सत्यस्य पतयो भवन्तु, शंनो अर्वन्तः शमुसन्तुगावः ।
शंनः ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शंनो भवन्तु पितरो हवेषु ॥१२॥
शंनोऽअजएकपाद्देवो अस्तु, शंनोहिर्बुध्न्यः शंसमुद्रः ।
शंनोऽअपांनपात्पेरु- रस्तुशंनः, पृश्निर्भवतु देवगोपा ॥१३॥

आदित्या रुद्रा वसवो जुषंतेदं, ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः ।
श्रृण्वंतुनो दिव्याः पार्थिवासो, गोजाता उतये यज्ञियासः ॥१४॥
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां-मनोर्यत्रा अमृता ऋतज्ञाः ।
तेनोरासंतामुरुगाय-मद्ययूयं, पातस्वस्तिभिः सदानः ॥१५॥

॥इति शांति सूक्तम॥

अथ सुमंगलसूक्तम्

पृष्ठ संख्या ६८ पर देखे।

अथ रक्षोघ्नसूक्तम्

ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ २ इभेन ।
तृष्वीमनु प्रसितिंदूणानोऽस्तासि विद्धय रक्षसस्तपिष्ठैः ॥१॥
तव भ्रभास आशुया पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः ।
त पूंष्यग्ने जुह्वा पतगङ्गान संदितो विसृज विश्वगुल्काः ॥२॥
प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवापायुर्विशो अस्या अदब्धः ।
यो नो दूरे अघशं सो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत् ॥३॥
उदग्नेतिष्ठ प्रत्या तनुष्वन्य मित्राँ ओषता त्तिग्महेते ।
यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तंधक्ष्यत संनशुष्कम् ॥४॥
उर्ध्वो भवप्रति विद्धयाद्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।
अवस्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून् ॥५॥

॥इति रक्षोघसूक्तम्॥

अथ पुरुष सूक्तम्

ॐ सहस्त्रशीर्षापुरुष सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
सभूमिं ठं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥१॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नाति रोहति ॥२॥
एतावानस्य महिमा तो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥३॥
त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः ।

ततो विष्वङ् व्यक्रामत्सा शना नशनेऽअभि ॥४॥
तस्माद्विराड जायत विराजो अधिपूरुषः ।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः ॥५॥
यत्पुरुषेण हविषा देवायज्ञ मतन्वत ।
वसंतो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥६॥
तं यज्ञं वर्हिषि प्रोक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवाऽअयजंत साध्याऋषयश्चये ॥७॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतंपृषदाज्यम् ।
पशून्तांश्चक्रे वायव्या-नारण्यान्ग्राम्याश्चये ॥८॥
तस्माद्य-ज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छंदासि ठं जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत ॥९॥
तस्मादश्वा ऽअजायंत येके चोभयादतः ।
गावोहजज्ञिरे तस्मात्तस्मा-ज्जाता अजावयः ॥१०॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्य कल्पयन् ।
मुखं किमस्य कौ (किं) बाहू का उरू पादा उच्येते ॥११॥
ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत ॥१२॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत ।
मुखादिन्द्रश्च अग्निश्च प्राणाद् वायुरजायत ॥१३॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं ठं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन् ॥१४॥
सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥१५॥
यज्ञेन यज्ञमय जंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचंत यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः ॥१६॥

॥इति पौरुषसूक्तम्॥

अथ वामदेवसूक्तम्

ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा । कयाचिष्ठया वृता ॥१॥

कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः ।दृळहाचिदारूजेवसुम ॥२॥
अभीषुणः सखीनामविता जारितृणाम् । शतं भवास्यूतिभिः ॥३॥
अमीन आव वृत्स्व चक्रं न वृत्तमर्वतः । नियुद्भिश्चर्षणीनाम् ॥४॥
प्रवताहि क्रतुना माहाप देव गच्छसि । अभक्षि सूर्ये स चा ॥५॥
संयत्त इंद्र मन्यवः सं चक्राणि दधन्विरे । अधत्वे अध सूर्ये ॥६॥
उतस्मा वित्वा मा हुरिं मघवानं शचीपते ।दातार माविदीधयुम् ॥७॥
उतस्मा सद्य इत्परिश शमानाय सुन्वते । पुरुचिं मंहसे वसु ॥८॥
न हिष्माते शतं च नराधोवरन्त आमुरः । नच्यौत्नानि करिष्यतः ॥९॥
अस्माँ अवन्तुते शतमस्मान् सहस्त्र मूर्तयः ।अस्मान्विश्वा अभिष्टय ॥१०॥
अस्माँ इहा वृणीष्व सख्याय स्वस्तये । महोगये दिवित्मते ॥११॥
अस्माँअविढि विश्वेहेन्द्रराया परीणसा ।अस्मान्विश्वाभिरूतिभिः ॥१२॥
अस्मभ्य ताँ अपावृधि व्रजाँ अस्तेवगोमतः । नवाभिरिंदोतिभिः ॥१३॥
अस्माकं धृष्णु या रथो द्युमाँ इंद्रान पच्युतः । गव्युरश्वयुरीयते ॥१४॥
अस्माकमुत्तमं कृधिश्रवो देवेषु सूर्य । वर्षिष्ठं द्यामिवोपरि ॥१५॥

अथ रौद्रसूक्तम्

ॐ इमारुद्रायतवसेकपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः ।
यथा शम स द्विपदे शं चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् ॥१॥
मृडानो रुद्रोतनो मयस्कृधिक्षय द्वीराय न मसाविधेमते ।
यच्छं च योश्चमनु रायजे पितातदश्याम तवरुद्र प्रणीतिषु ॥२॥
अश्यामते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तवरुद्रमीढ्वः ।
सुम्नायं निद्विशोऽअस्माकमाचरारिष्टवीरा जुहवामतेहविः ॥३॥
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधवं कुंकवि मवसे निह्वयामहे ।
आरे अस्मद्दैव्यं हेडो अस्यसुमतिमिद्वय मस्या वृणीमहे ॥४॥
दिवो वराह मरुषं कपर्दिन त्वेषं रूपं नमसानि ह्वयामहे ।
हस्ते बिभ्रद्भेष जावा र्याणि शर्म वर्मच्छर्दि-रस्मभ्यं यंसत् ॥५॥

इदं पित्रे मरुता मुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम् ।
रास्वाचनोऽमृतमर्त भोजनंत्मने तोकाय तनयायमृड ॥६॥

मानो महन्त मुतमानोऽर्भकंमानऽउक्षन्त मुतमान ऽउक्षितम् ।
मानोवधीः पितरं मोतमातरंमानः प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥७॥

मानस्तोक तनयेमान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः ।
वीरान्मानो रुद्रभामितो वधीर्हविष्मंतः सदमित्त्वा हवामहे ॥८॥

उपतेस्तोमान्पशुपा इवाकरं रास्वापितरर्मरुतां सुम्नमस्मे ।
भद्राहिते सुमतिर्मृड यत्तमाथा वयम व इत्ते वृणीमहे ॥९॥

आरेते गोघ्न मुत पूरुषघ्नं क्षय द्वीराय सुम्नस्मेतेऽअस्तु ।
मृडाचनो अधि च ब्रूहि देवा धाचनः शर्मयच्छ-द्विबर्हाः ॥१०॥

अवो चायनमोऽअस्मा अवस्यवः श्रृणोतुनोहवं रुद्रोमरुत्वान् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहंता मदितिः सिन्धुः पृथिवी उतद्यौः ॥११॥

॥इति रुद्रसूक्तम्॥

अथ सोमसूक्तम्

ॐ त्वं सोम प्रचिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठ मनुनेषि पंथाम् ।
तव प्रणीती पितरो न इंदो देवेषु रत्नमभजन्तधीराः ॥१॥

त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुः भूस्त्वं दक्षैः सदक्षो विश्ववेदाः ।
त्वं वृषा वृषत्वेभिः महित्वा द्युम्नेभिर्द्युन्यभवो नृचक्षाः ॥२॥

राज्ञोनुते वरुणस्य व्रतानि बृहद्गभीरन्तव सोमधाम ।
शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षायो अर्यमेवासि सोम ॥३॥

याते धामानि दिविया पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।
तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेळन्राजन्त्सोम प्रतिहव्या गृभाय ॥४॥

त्वं सोमासि सत्पति स्त्वंराजोत वृत्रहा । त्वं भद्रो असिक्रतुः ॥५॥

त्वं च सोम नो वशो जीवातुंनमरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ॥६॥

त्वं सोम महे भगं त्वं यू न ऋतायते । दक्षं दधासि जीवसे ॥७॥

त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः। न रिष्येत्वावतः सखा ॥८॥

सोम यास्ते मयोभुव ऊतयः सन्ति दाशुषे । ताभिर्नोविताभव ॥९॥
इमं यज्ञ मिदं वचो जुषाण उपागहि । सोम त्वं नो वृधे भव ॥१०॥
सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धया मो वचो विदः । सुमृडीको न अविश ॥११॥
गयस्फानो अमीवहा वसु वित्पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव ॥१२॥
सोम रारंधि नो हृदि गावो न यवसेष्वा । मर्यइबस्व ओक्ये ॥१३॥
यः सोम सख्ये तव रारणद्देव मर्त्यः । तं दक्षः सचतेकविः ॥१४॥
ऊरुष्याणो अभिशस्तेः सोम निपाह्यं हसः । सखा सुशेव एधि नः ॥१५॥
आप्यायस्व स म तु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् । भवा वजस्य संगथे ॥१६॥
आप्यायस्व मदिन्तम सोमविश्वेभिरंशुभिः । भवानः सुश्रव स्तमः सखावृधे ॥१७॥
सन्ते पयांसि समुयन्तु वाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः ।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व ॥१८॥
या ते धामानि हविषाय जान्तिताते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम् ।
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरो वीरहा प्रचरा सोम दुर्यान् ॥१९॥
सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमा वीरं कर्मण्यं ददाति ।
सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृ श्रवणं योददाश-दस्मै ॥२०॥
अषाळ हं युत्सु पृतना सुपप्रिंस्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम् ।
भरेषु जांसुक्षितिं सुश्रव सं जयन्तं त्वामनुमदेम सोम ॥२१॥
त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वङ्गाः ।
त्वमात तन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषावि तमोववर्थ ॥२२॥
देवेन नो मनसा देव सोमरायो भागं सहसा वनभियुध्य ।
मा त्वात नदीशिषे वीर्यस्योभयेभ्यः प्रचिकित्साग विष्टौ ॥२३॥

अथ इंद्रसूक्तम्

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान् क्रतुनापर्य भूषत् ।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्वासजना स इंद्रः ॥१॥
यः पृथिवी व्यधमाना मदृंहद्यः पर्वतां प्रकुपिताँ अरम्णात् ।
यो अंतरिक्षं विममेवरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जना स इंद्रः ॥२॥

यो हत्वाहिमरिणात्सुप्त सिंधून्योगा उदाजदष धावलस्य ।
यो अश्म नो रन्तरग्निं जजान सं वृक्समत्सु स जना स इंद्र ॥३॥
येने मा विश्वाच्यवना कृतानि योदा संवर्ण मधरङ्गुहाकः ।
श्वघ्नी वयोजिगीवाँ लक्षमाददुर्यः पुष्टानि स जना स इंद्रः ॥४॥
यस्मां पृच्छन्ति कुइसेति घोरयुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।
सो अर्यः पुष्टिर्विज इवामिनाति श्रदस्मै धत्त स जना स इंद्रः ॥५॥
यो रंध्रस्य चोदितायः कृशस्य यो ब्रह्मणोना धवानस्य कीरेः ।
युक्त ग्राव्णोयोषिता सु शिप्रः सुतः सोमस्य स जना स इंद्रः ॥६॥
यस्या श्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामायस्य विश्वेरथा सः ।
यः सूर्य य उष सं जजानयो ऽपां नेता स जना स इंद्रः ॥७॥
यं क्रंदसी संयती विह्वये ते परेवर उभया अमित्राः ।
समानं चिद्रथ मातस्थिवां मानाना हवेते स जना स इंद्रः ॥८॥
यस्मान्ननऋते विजयन्ते जनासोयं युद्धयमाना अवसे हवन्ते ।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूवयो अच्युतच्युत् स जना स इंद्रः ॥९॥
यः शश्वतो मह्येनो दधाना न मन्यमानाञ्छर्वा जघान ।
य शर्धतेनानु ददाति शृध्यां यो दस्यो र्हता स जना स इंद्रः ॥१०॥
य शंबरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिश्यां शरद्यन्व विदंत् ।
ओ जायमानं यो अर्हि जघान दानुंशया न स जना स इंद्रः ॥११॥
यः सप्त रश्मिः वृषभस्तु विष्मान वा सृजत् सर्वते सप्त सिंधून् ।
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहु र्द्यामारोहन्तं स जना स इंद्रः ॥१२॥
द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।
यः सोमपा निचितो वज्र बाहुयो वज्र हस्तः स जना स इंद्रः ॥१३॥
यः सन्वन्तमवतियः पंचतंयः शं सन्तंयः शशमानमूती ।
यस्य ब्रह्मवर्धनं यस्य सोमो यस्येदंराधः स जना स इंद्रः ॥१४॥
यः सुन्वते पचते दुध्र आचिद्वाजं दर्दर्षि सकिलासि सत्यः ।
वयन्त इंद्र विश्वहा प्रियासः सुवीरा सो विदथ मा वदेम ॥१५॥

।। अथ यजुर्वेद सूक्तानि ।।

दक्षिण द्वारपाल वरणं :-

कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रैष्टुभो विष्णु दैवतः ।
काश्यपेयस्तु विपेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥

शाक्रसूक्तम्

ॐ आशुः शिशानो वृषभो नभीमो घनाघनः क्षोभणीश्चर्षणीनाम् ।
सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शत ठं सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥१॥

सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्त्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
तदिन्द्रेण जयत तत्स हध्वं यधोनरऽइषुहस्तेन वृष्णा ॥२॥

सऽइषु हस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशीस ठं स्त्रष्टासयुधऽइंद्रोगणेन ।
स ठं सृष्टजित्त्सोमपा बाहुशर्द्ध्युग्र धन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥३॥

बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँ२ ऽअपबाधमानः ।
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माक मेद्ध्यविता रथानाम् ॥४॥

बलविज्ञायस्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमानऽउग्रः ।
अभिवीरोऽअभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथ मातिष्ठ गोवित् ॥५॥

गोत्रभिदङ्ग गोविदं वज्रबाहुञ्जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
इमं सजाताऽअनुवीर यद्ध्वरमिंदँ सखायो अनुसँ रभध्वम् ॥६॥

अभिगोत्राणि सहमागाहमानोदयो वीरः शतमन्न्युरिन्द्रः ।
दुश्च्च्यवनः पृतनाषाड युद्ध्योस्माकं सेनाऽअवतु प्रयत्सु ॥७॥

इंद्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः ।
देवसेना नामभि भञ्जतीनाञ्जयंती नाम्मरुतो यन्त्वग्ग्रम् ॥८॥

इंद्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञऽआदित्त्यानाम्मरुताँ शर्द्धऽउग्ग्रम् ।
महामनसाम्भुवनच्च्य वानाङ्घोषो देवानाञ्जयता मुदस्थात् ॥९॥

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्त्सत्त्व नाम्मामकानाम्मना ꣳ सि ।
उद्वृत्र हन्नवाजिनां वाजिनान्न्युद्रथानाञ्जयताँ यन्तुघोषाः ॥१०॥

अस्माकमिन्द्रः समृतेषुध्वजेष्वस्माकं याऽइषवस्ता जयन्तु ।

अस्माकं वीराऽउत्तरे भवन्त्वस्माँ२ऽउदेवाऽ अवताहवेषु ॥११॥
अमीषां चित्तम्प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ।
अभिप्रेहि निर्दहहृत्सु शोकैरन्धेना मित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥१२॥
अवसृष्टा परापतशरव्ये ब्रह्मस ठ शिते ।
गच्छामित्रान्प्रपद्य स्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः ॥१३॥
प्रेताजायता नरऽइंद्रोवः शर्मयच्छतु ।
उग्रावः सन्तु बाहवो ना धृष्ण्या यथा सथ ॥१४॥
असौयासेना मरुतः पेरषामभ्यैतिनऽओजसा स्पर्द्धमाना ।
ताङ्गूहत तमसाप व्रतेन यथामीऽअन्योऽ अन्यन्न जानन् ॥१५॥
यत्र वाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव ।
तन्नऽइंद्रो बृहस्पति-रदितिः शर्म्म यच्छतु विश्वाहा शर्मयच्छतु ॥१६॥
मर्म्माणि ते वर्म्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा राजामृते नानुवस्ताम् ।
उरोर्वरीयो र्वरुणस्ते कृगोतु जयन्त्वानुदेवामदन्तु ॥१७॥

॥इति शाक्रं सूक्तम्॥

रौद्रसूक्तम्

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षय द्वीराय प्रभरा महेमतीः ।
यथा शम सद्विपदेचतुष्पदे विश्वं पुष्टङ्ग्रामेअस्मिन्ननातुरम् ॥१॥
या ते रुद्र शिवातनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।
शिवारूतस्यभेषजी तयानो मृड जीवसे ॥२॥
परिणो रूदस्य हेति वृणक्तु परिस्त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः ।
अवस्थिरा मघवभ्द्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥३॥
मीढुष्टम शिवतम शिवोनः सुमना भव । परमेवृक्ष
आयुधं निधाय कृतिंवसान आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ॥४॥
विकिरिद्र विलोहित नमस्ते ऽअस्तु भगवः ।
यास्त सहस्त्र हेतयोन्यमस्मान्निव पन्तुताः ॥५॥
सहस्त्राणि सहस्त्र शो बाव्होस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखकृधि

अथ कौष्माण्डसूक्तम्

(रजस्वला आदि अशौच निवृत्ति हेतु धृत आहुति एवं बलि प्रदान समये कूष्माण्डादि व घृतद्वारा एवं यथा लोकाचारानुसारेण)

ॐ यद्देवा देवहेड नन्देवा सश्चकृमा वयम् ।
अग्निर्म्मातस्मादेन सो विश्वान्मुञ्चत्व ठं हसः ॥१॥
यदि दिवाय दिनक्तमेना ठं सि चकृमावयम् ।
वायुर्मातस्मादेन सो विश्वान्मुञ्चत्व ठं हसः ॥२॥
यदि जाग्रद्यदि स्वप्न ऽएना ठं सि च कृमा वयम् ।
सूर्यो मातस्मादेन सो त्रिश्वान् मुञ्चत्त्व ठं हसः ॥३॥
यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये ।
यच्छूद्रे यदर्ये यदेनश्चकृमा वयं यदेकस्याधि ।
धर्मणि तस्याव यजनमसि ॥४॥

॥इति कौष्माण्डसूक्तम्॥

जातवेदसूक्तम्

ॐ समास्त्वाग्न ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयोयानि सत्या ।
सं दिव्येन दीदिहरोचने न विश्वा आभाहि प्रदिशश्चतस्त्रः ॥१॥
सं चेध्यस्वाग्ने ऽचबोधयै नमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय ।
माचरिष दुपसत्तात अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तुमान्येः ॥२॥
त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्ने संवरणे भवानः ।
सपत्नहा नो अभिमाति जिच्चस्वेगये जागृह्य प्रयुच्छन् ॥३॥
इहैवाग्ने अधिधारया रयिं मात्वा निक्रन्पूर्व चितोनि कारिण ठं क्षत्रमग्ने ।
सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतांते अनिष्टतः ॥४॥
क्षेत्रेणाग्ने स्वायुः स ठं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व ।
सजातानां मध्यमस्था एधि राज्ञामग्ने विहव्योदीदिहीह ॥५॥
अतिनिहो अतिस्त्रधोत्य चित्तिनत्यराति मग्ने ।
विश्वाह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्य ठं सहवीरां ठं रयिंदाः ॥६॥
अनाधृष्यो जातवेदा. अनिष्टतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह ।

विश्वाआशाः प्रमुञ्चं मानुषीभिर्यः शिवेभिरद्य परिपाहि नो वृधे ॥७॥
बृहस्पते सवितः बोधयैन ठं सठ शितं चित्संतरा ७ स ठं शिशाधि ।
बुर्धयैनं महते सौभगाय विश्व एन मनु मदन्तु देवाः ॥८॥
अमुत्र भूयादध यद्यमस्य बृहस्पते अभि शं स्तेरमुञ्चः ।
प्रत्यौहता - मश्विनामृत्यु - मस्माद्देवानामग्नेभिषजा शचीभिः ॥९॥
उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म - ज्योतिरुत्तमम् ॥१०॥

अथ सौरसूक्तम्

बिभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मद्धायुर्द्दधद्यज्ञ - पतावविंहुतम् ।
वातजूतोया अभिरक्षतिक्तमना प्रज्ञाः पुपोष पुरुधा विराजति ॥१॥
उदुत्यञ्जातवेद सं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥
येना पावक चक्षसा- भुरण्यन्तञ्जनाँ अनु । त्वं वरुण पश्यसि ॥३॥
देव्या वध्वर्यू आगत ७ रथेन सूर्य त्वचा । मध्वा यज्ञँ समञ्जाथे ।
तं प्रत्कथायं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥४॥ आन इडाभि र्विदथे
सुशस्ति विश्वानरः सवितः देव एतु । अपियथा युवानो
मत्सथानो विश्वञ्जगदभि पित्वे मनीषा ॥५॥
यदद्यचकच्चत्रहवृन्नदगा अभिसूर्य । सर्वन्तदिन्द्रते वशे ॥६॥
तरणी र्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम् ॥७॥
तत्सूर्यस्य देवत्वन्तं महित्वं मद्धया कर्तो र्वितत सञ्जभार ।
यदेद युक्तहरितः सधस्था दाद्रात्री वासस्तनुतेसि मस्मै ॥८॥
तन्मित्रस्य वरुणस्याभि चक्षे सूर्योरूपङ्कृणुते द्यौरूपस्थे ।
अनन्त मन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः संभरंति ॥९॥
बणमहाँ २ असि सूर्य बड़ादित्य महाँ २ असि ।
महस्ते सतोमहिमापनस्यतेद्धा देव महाँ २ असि ॥१०॥
बट् सूर्य श्रवसा महाँ २ असि सत्रादेव महाँ २ असि ।
मह्वादेवानाम सूर्यः पुरोहितो विभुज्योतिरदाभ्यम् ॥११॥

श्रायन्त ऽइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रतिभागन्नदीधिम ॥१२॥
अद्यादेवा उदिता सूर्यस्य निरठंहसः पिपृतानिरवद्यात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता-मादितिः सिन्धुः पृथिवीः उतद्योः ॥१३॥
आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशन्नमृतं मर्त्त्यञ्च ।
हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥१४॥

अथ पावमानसूक्तम्

(पवित्रिकरण एवं दुग्धधारा तथा शांति पाठ हेतु)

ॐ पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः । पवित्रेण शतायुषा पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः । पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥१॥ अग्नः आयूंषि पवस आयुवोर्जमिषंचनः । आरेबाधस्वदुच्छुनाम् ॥२॥ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः । पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥३॥ पवित्रेण पुनीहिमा शुक्रेण देव दीद्यत् । अग्नेक्रत्वा क्रतूँरनु ॥४॥ यत्ते पवित्र मर्चिष्यग्ने वितत मंतरा । ब्रह्म तेन पुनातु मा ॥५॥ पवमानः सो अद्य नः प्रवित्रेण विचर्षणिः । यः पोता सः पुनातु मा ॥६॥ उभाब्भ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च । मां पुनीहि विश्वतः ॥७॥ वैश्वदेवी पुनती देव्या गाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वा वीतपृष्ठाः । तयामदन्तः सधमा देषुवय ठं स्याम पतयो रयीणाम् ॥८॥

॥ इति पावमान सूक्तम् ॥

भद्रसूक्तम्

पृष्ठ संख्या ५३ पर है ।

शांतिसूक्तम्

पृष्ठ संख्या ५०५ पर है ।

अथ पौरुषसूक्तम्

हरिः ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षःसहस्त्रपात् ॥ सभूमि ठुं सर्व्व [illegible] ऽतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ १ ॥ पुरुषऽएवेद ठुं सर्वं व्यद्भूतं यच्च

भाव्व्यम् ॥ उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नातिरोहति ॥ २ ॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ॥ पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३ ॥ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्ये-हाभवत्पुनः॥ ततोव्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ ४॥ ततो व्विराडजायत व्विराजो अधिपूरुषः॥ स जातोऽअत्यरिच्च्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥ पशूँ स्ताँश्चक्रे वायव्व्या नारण्या ग्राम्म्याश्च ये ॥ ६ ॥ तस्माद्य-ज्ञात्सर्व्वहुतःऋचःसामानि जज्ञिरे॥ छन्दाᳬसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥ तस्मादश्वाऽअजायन्त ये केचोभयादतः॥ गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः॥ ८॥ तंय्यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये ॥ ९॥ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखङ्किम-स्यासीत्किम्बाहू किमूरूपादाउच्येते ॥ १०॥ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ शूद्रो ऽअजायत ॥ ११॥ चंद्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ १२ ॥ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षर्ठुं शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ अकल्पयन् ॥ १३॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥ १४॥ सप्तास्या-सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः॥ देवा यद्यज्ञन्तन्वा नाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्॥ ते ह नाकम्महिमानः सचन्तः यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥

॥ अथ सामवेद सूक्तानि ॥

पश्चिम द्वारपाल वरणम् :-

सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जगतः शक्रदैवतः ।
भारद्वाजस्तु विपेन्द्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव ॥

वामदेवसूक्तम्

कयानश्चित्र आभुव दूति सदावृधः सखा। कयाशचिष्ठयावृता ॥१॥

कस्त्वा सत्यो-मदानामँ हिष्ठोमत्सदन्धसः। दृढाचिदारुजे वसु ॥२॥

अभीषुणः सखीनाम विताजरि तृणाम्। शतं भवास्यूतये ॥३॥

बृहत्सामसूक्तम्

ॐ त्वामिद्धि हवामहे सा तौ वाजस्य कारवः। त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्ततः ॥१॥ सत्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुयाम हस्तवा नो अद्रिवः। गोमश्व रथ्यमिन्द्र संकिर सत्रावाजंन जिग्युषे ॥२॥

ज्येष्ठसामसूक्तम्

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्यां वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।
कवि ४४ सम्राजमतिथिं जनाना मा सन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥१॥
त्वां विश्वे अमृत जायमान ४४ शिशुं न देवा अभिसंनवन्ते।
तवक्रतुभिरमृतत्व मायन् वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः ॥२॥
नाभिं यज्ञाना सदनँ रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त।
वैश्वानरँ रथ्य मध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः ॥३॥

अथ रथंतरसूक्तम्

अभित्वा शूर नो नुमो दुग्धा इव धेनवः।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृश - मीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥१॥
नत्वा वां अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते।
अश्वा यन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥२॥
त्वामिद्धि हवामहे सा तौ वाजस्य कारवः।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठा स्वर्वतः ॥३॥
अभिप्रवः सुराध समिन्द्र - मर्चयथा विदे।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरू वसुः सहस्त्रेणेवशिक्षति ॥४॥
तं वोदस्ममृतीष हं वसो मन्दान - मन्धसः।
अभिवत् संनस्व सरेषु धेनव इंद्रगीर्भि र्नवामहे ॥५॥
तरोर्भिर्वो विदद् वसु-मिन्द्रं सबाध ऊतये।
बृहद् गायन्तः सुत सोमे अध्वरे हुवेभरं न कारिणम् ॥६॥

तरणिरित् सिषा सातिवाजं पुरन्धायुजा ।
आवइंद्र पुरुहूतं नमेगिरा नेमिंतष्टे वसुद्रुवम् ॥७॥
पिबासुतस्य रसिनो मत्स्वान इंद्र गोमतः ।
आपिर्नो बोधि सधमाद्यैर्वृधे स्मां अवन्तुतेधियः ॥८॥
त्वं ꣳ ह्येहि चेरवे विदा भगवसुत्तये ।
उद्वावृषस्व मघवन् गेविष्टय उदिन्द्राश्वभिष्टये ॥९॥
न हिवश्चर मंचन वसिष्ठः परिम ꣳ सते ।
अस्माक मद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥१०॥
मा चिदन्य द्विश ꣳ सत सखायो मा रिषण्यत ।
इन्द्र मित्स्तोता वृषण ꣳ सचासुते मुहुरुक्था च श ꣳ सत ॥११॥

अथ पौरुषसूक्तम्

सहस्त्रशीर्षा. ॥१॥ त्रिपादूर्द्ध. ॥२॥ पुरुष एवेद्. ॥३॥ एतावानस्य. ॥४॥ ततो विराड. ॥५॥ कयानिश्चत्र आभुव ॥६॥

अथ रौद्रसूक्तम्

आ वोराजान मध्वरस्य रुद्र ꣳ होतार ꣳ सत्ययज ꣳ रोदस्योः ।
अग्निं पुरातन यित्नो रचिताद्धिरण्य रूप मवसे कृणुध्वम् ॥१॥
इन्धे राजा समर्यो नामोभि र्यस्य प्रतीक माहुतं घृतेन ।
नरो हव्येभिरीडेत सबाध आग्निरग्र मुष साम शोचि ॥२॥

अथ भारुण्डसूक्तम्

इमं स्तोम मर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भद्राहि नः प्रमतिरस्य सं सद्यग्रे सख्ये मा रिषा मा वयं तव ॥१॥
मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम् ।
कवि ꣳ सम्राज मतिथिं जनाना मा सन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥२॥
वित्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठा दुक्थेभिरग्रे जनयन्त देवाः ।
तं त्वा गिरः सुष्ठुतयो वाजयन्त्या जिन्नगिर्वाहो - जिग्युरश्वा ॥३॥
आवो राजान मध्वरस्य रुद्र होतरं सत्ययजँ रोदस्योः ।

अग्निं पुरातन यित्नो रचिताद्धिरण्यरूप मवसे कृणुध्वम् ॥४॥
इंधे राजा समर्यां नमोभिर्यस्य प्रतीक माहुतं घृतेन ।
नरोहव्यभिरीलते सबाध अग्निरग्रमुष साम शोचि ॥५॥
प्रकेतुना बृहतायात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति ।
दिवश्चिदन्ता दुपमामुदान उपामुपस्थे महिषो ववर्द्ध ॥६॥
अग्निं न रोदीधितिभि ररण्यो र्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपति मथर्व्युम् ॥७॥

(इत्येषां त्रिधा जपः)

भरामेध्यं कृण वा माहवींषिते चितयन्तः पर्वणा पर्वणावयम् ।
जीवातवे प्रतराँ साधयाधियोऽग्ने सख्ये मारिषामा वयंतव ॥१॥
शकेमत्वा समिधँ साधयाधियस्त्वे देवा हविरदन्त्या हुतम् ।
त्वमादित्याँ आवहतान्ह्यु ऽश्मस्यग्ने सख्येमारिषा मा वयंतव ॥२॥

(इति भारुण्डानि)

अथ वैराजं सूक्तम्

पिबा सोममिन्द्र मदन्तु त्वा यन्ते सुषावहर्य्य श्वाद्रिः सोतुर्बाहुभ्यां सुयतोनार्वा ॥१॥ यस्तेमदोयुज्यश्चारु रस्तिये न वृत्राणि हर्यश्व ह थ्ठ सि । सत्वामिन्द्र प्रभूव सोममत्तु ॥२॥ बोधासु मे मघवन्वाचमे मायाते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् । इमाब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥३॥

अथ सौपर्णसूक्तम्

उद्धेदभिश्रुतामघं वृषभं नर्यापसम् । अस्तारमेषि सूर्य ॥१॥
नवयो नवतिं पुरो बिभेद ब्राह्वोजसा । अहिं च वृत्रहा ऽवधीत् ॥२॥
स न इंद्रः शिवः सखा श्वाव द्गोमद्यवयत् । उरुधारे वदोहते ॥३॥

अथ रक्षोघ्नसूक्तम्

ॐ अग्नेरक्षाणो अंहसः प्रतिस्म देवरीषतः । तपिष्ठैरजरोदह ॥१॥
अग्ने युक्ष्वाहियेतवा श्वासो देव साधवः अरंवहन्त्याशवः ॥२॥

।। अथ अथर्वेदोक्त सूक्तानि ।।

उत्तर दिशां द्वारपाल वरणं

सुवर्ण नयनो ऽथर्वानुष्टपच्छन्दः पुरन्दरः ।
वेदो वैतान गौत्रस्तु ऋत्विक् त्वं मे मखे भव ॥

अथ अंगिरससूक्तम

अङ्गिरसोनः पितरो न वग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः ।
तेषावयं सुमतौ यज्ञिया ना मपि भद्रे सोमनसे स्याम ॥१॥
अंगिरोभि र्यज्ञियै रागहीहय - मवै रूपैरिह मादयस्व ।
विवस्वंतं हुवेयः पिताते ऽस्मिन्बर्हिर्हिष्यां निषद्य ॥२॥
इमं यम प्रस्तरमाहिरोहाङ्गरोभिः पितृभिः सविदानः ।
आत्वा मंत्राः कविशस्ताव हन्त्वेना राजन् हविषो मादयस्व ॥३॥
इत एत उदारुहन्दिव स्पृष्टान्यारुहन ।
प्रभुर्जयो यथा यथा द्यामङ्गिरसो ययुः ॥४॥

अथ नीलरुद्रंसूक्तम

या त रुद्र इषू मास्यदङ्गेभ्यो हृदयाय च ।
इदं ता मद्यत्वद्वयं विषूचीं विवृहामसि ॥१॥
यास्ते शतं धमनयोऽङ्गान्यनुं विष्ठिताः ।
तासां ते सर्वासां वयं निर्विषाणि ह्वयामसि ॥२॥
नमस्ते रुद्रास्य ते नमः प्रतिंहितायै नमो ।
विसृज्यमानायै नमो निपतितायै ॥३॥

अथ अपराजितासूक्तम

परिवर्त्मानि सर्वत इंद्रः पूषा च सस्त्रतु मुह्यन्त्वद्यामूः सेना अभित्राणां परस्तराम् ॥१॥ मूढा अमित्राश्चरता शीर्षाण इवाहयः । तेषां वो अग्रिमूढानामिन्द्रो हन्तु वरं वरम् ॥२॥ एषु न ह्यवृषाजिनं हरिणस्य

भयं कृधि। पराङ्गमित्र एषत्वर्वाची गौरुपेषतु ॥३॥

अथ मधुसूक्तम

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिंधवः ।
माध्वीर्नः संत्वोषधीः । मधुनक्त मुतोषसो मधु,
मत्पार्थिव ठं रजः मधु द्यौरस्तुनः पिता ॥१॥
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्य ।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥२॥
ॐ स्वाहा मरुद्भिः परिश्रीयस्व दिव,
स ठं स्पृशस्पाहि मधु मधु मधु ॥३॥

अथ रोधसं सूक्तम्

ॐ अभयं द्यावा पृथिवी इहास्तु नो ऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु । अभयं नो ऽस्तूर्वन्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हवषा ऽभयं नो अस्तु ॥१॥ अस्मै ग्रामाय प्रदिशश्चतस्त्र ऊर्जं संभूतं स्वस्ति सविता नः कृणोतु । असाविन्द्रो अभयं नः कृणोत्वन्यत्र राज्ञामभियातु मन्युः ॥२॥ अनमित्रं नो अधरादनमित्रं न उत्तरात् । इंद्रा न मित्र नः पश्चादनमित्रं पुरस्कृधि ॥३॥

रक्षोघ्नसूक्तम्

(कृत्या निवारक)

ॐ रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवी मिदमहन्तं वलगमुत्किरामि ।
यम्मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि ।
यम्मे समानो यम समानो निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि ।
यम्मे सबंधु र्यम सबंधु र्निचखानेद महन्तं वलगमुत्किरामि ।
यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत् कृत्याङ्किरामि ॥१॥

रक्षोहणो वो वल गहनः प्रोक्षामि वैष्णवान रक्षोहणो वो वलगहनो व नयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनो व स्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां वलगहना उपदधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ

पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्त्थ ॥२॥

रक्षेसां भागोसि निरस्त ठे रक्ष इदमह ठे रक्षोभितिष्ठामीदमह ठे रक्षो व बाध इदमह ठे रक्षो धमन्तमो नयामि । घृतेनद्यावा पृथिवी प्रोर्णु वाथां वायो वेस्तोकानामग्नि राज्यस्य वेतु स्वाहा । स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभ समारुतङ्गच्छतम् ॥३॥

रक्षोहा विश्वचर्षणि रभि योनि मयोहते । द्रोणे सधस्त्थमासदत् ॥४॥

अथ युञ्जान सूक्तम्

रजस्वला अशौचादि निवृत्ति हेतु युञ्जानसूक्त व श्रीसूक्त से होम करे।

ॐ युञ्जानः प्रथमम्मनस्तत्त्वाय सविताधियः ।अग्ने ज्योंतिर्न्निचाय्य पृथिव्या ऽ अद्ध्या भरत्स्वाहा ॥१। युञ्जतेमन ऽउतयुञ्जतेधियो विप्रा विप्रस्य बृहस्तो विपश्चितः । विहोत्रा दधे वयुना विदेक ऽइन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा ॥२॥ ॐ युञ्जन्ति ब्रह्ममरुषं तरन्तं परिस्थुषः रोचन्ते रोचनादिवि । युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्ष सारथे शोणा घृष्णु नृवाहसा ॥३॥

अथ पौरुषसूक्तम्

सहस्त्र बाहुः पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्त्य तिष्ठ द्दशाङ्गुलम् ॥१॥
त्रिभिः पद्भि र्द्यामरोहत् पादोस्येहा भवत्पुनः ।
तथा व्यक्रामद्विष्वङ् शनानशने अनु ॥२॥
ता वन्तो अस्य महिमान स्ततो ज्यायांश्च पूरुषः ।
पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादास्यामृतन्दिवि ॥३॥
पुरुषं एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्चा भाव्यम् ।
उतामृतत्वस्ये - श्वरोयदन्ये नाभवत्सह ॥४॥
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ।
मुख किमस्य किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥५॥
ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्वाहु राजन्यो ऽभवत् ।

मध्यं तदस्य यद्वैश्य पद्यां शूद्रो अजायत ॥६॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥७॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमि र्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥८॥
विराडग्रे सम भवद्विराजो अधिपूरुषः ।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः ॥९॥
यत्पुरुषेण हविषा देवा यजमतन्वत ।
वसन्तो अस्या सीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥१०॥
तं यज्ञ प्रवृषा प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या वसवश्चये ॥११॥
तस्मा दश्वां अजायन्त ये च के चोभयादतः ।
गावोह जज्ञिरे तस्मत्तस्माज्जाता अजावयः ॥१२॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तष्मादजायत ॥१३॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशुन्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्चये ॥१४॥
सप्तास्य सन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुष पशुम् ॥१५॥
मूर्द्धो देवस्य बृहतो अंशवः सग्रसप्ततीः ।
राज्ञः सोमस्या जायन्त जातस्य पुरुषादधि ॥१६॥

॥इति पौरूषेय सूक्तम्॥

नूतन मूर्तिनां प्रतिष्ठापनम्

अथ प्राणप्रतिष्ठा:

सुवर्णरौप्यताम्रादिधातुमूर्तीनां पाषाणादिमूर्तीनां पार्थिवमूर्तीनां वा प्राणप्रतिष्ठां कारयेत्॥

आचमन प्राणायाम करके संकल्प करे॥ यथा-

अद्या पूर्वोच्चारित एवं गुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफल प्राप्त्यर्थं मम सकलकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं ममात्मनः अक्षय्य सुख प्राप्त्यर्थं पितृतो मातृतश्च दशपूर्वान् दशापरान् एकविंशतिपुरुषानुद्धर्तुं धर्मार्थकाममोक्ष चतुर्विध-पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं परमपदप्राप्तये आसाममुकमूर्तीनां टङ्कघनादिदोष परिहारार्थं मृत्तिकासंघट्टनादि दोषपरिहारार्थं वा अग्न्युत्तारण पूर्वक आसाममुकमूर्तानां जातकर्मादिपंचदश संस्कारपूर्वक देवकला सान्निध्यार्थं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके नूतन मूर्तियों को ताम्रपात्र में यथोचित स्थान में स्थापित करके पुष्प से घृत लगाकर शुचि अशुचि दोष निवारण हेतु अग्नि पर प्रतपन करके आगे लिखे मंत्रो से जलधारा देवे। अग्न्युत्तारण करे।

अथाग्न्युत्तारणसूक्तम्

ॐ समुद्रस्य त्वाव कयाग्ने परिव्वयामसि। पावको अस्मभ्य ꣳ शिवो भव ॥ १ ॥ ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्मभ्य ꣳ शिवो भव ॥ २॥ उपज्म्मन्नुपवेतसेवतरं नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमन्नो यज्ञम्पावकवर्ण ꣳ शिवङ्कृधि ॥ ३॥ अपामिदं न्यन ꣳ समुद्रस्य निवेशनम्॥ अग्न्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ शिवो भव ॥ ४॥ अग्ने पावक रोचिषामन्द्रया देवजिह्वया। आदेवान्वक्षि यक्षि च ॥५॥ स नः पावक दीदिवोग्ने देवाँ इहावह। उपयज्ञ ꣳ हविश्च नः ॥ ६॥ पावकया यश्चितयन्त्या कृपाक्षामनुरुरुच उषसोन भानुना। तूर्वन्नयामन्नेतशस्य नूरणऽआयो घृणे न ततृषाणो अजरः ॥ ७॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्च्चिषे। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ

शिवो भव ॥ ८ ॥ नृषदेवेडपसुषदेवेड् बर्हिषदे वेड्वनसदेवेट् स्वर्विदेवेट् ॥ ९ ॥ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना ठं संवत्सरीण मुपभगमासते। अहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन् स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ॥ १० ॥ ये देवा देवेष्वधिदेवत्व मायन्येब्रह्मणः पुर एतारो अस्य। येभ्यो न ऋते पवतेधाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधिस्नुषु ॥ ११ ॥ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ७ शिवो भव ॥ १२ ॥

प्राणप्रतिष्ठाः

पहले विनियोग करे–

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः। ऋग्यजुःसामाथर्वाणि छन्दांसि। क्रियामयवपुः। प्राणाख्या देवता। आँ बीजम्। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकम् अस्यां नूतनमूर्तौ प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

अब आगे के मंत्र बोलते हुए पुष्प, कुशा, स्वर्णशलाका अथवा अंगुष्ठ से मूर्ति के अंगों का स्पर्श करते जावें। --

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ॥ १ ॥ हंसः सोऽहम् आसां नूतनमूर्तीनां प्राणा इह प्राणाः तिष्ठन्तु ।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ॥ २ ॥ हंसः सोऽहम् आसां नूतनमूर्तीनां जीव इह स्थितः॥

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ लँ क्षँ॥ ३ ॥ हंसः सोऽहम् आसां नूतनमूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रजिह्वा घ्राणपाणि पादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥

प्रतिमा के **हृदय पर अंगुष्ठ** लगा कर बोलेः–

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाश्चरंतु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

अब प्रतिष्ठा के लिये निम्न मंत्र बोले–

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्ठं यज्ञ ७

समिमन्दधातु। विश्वेदेवासइह मादयन्तामोँ ३ प्रतिष्ठ ॥ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति॥

"**सुप्रतिष्ठितो भव**" ऐसा बोलकर देवता के सव्य कर्ण में गायत्री जपे॥

अब नूतन मूर्ति की पंचोपचार पूजा करके **संस्कार सिद्धि के लिये पंद्रह बार-**

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

बोलकर "**मूर्तीनां जातकर्मादि पंचदशसंस्कारान् संपादये**" इस प्रकार बोल देवे।

फिर प्रार्थना निम्न श्लोकों से करें-

स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिमिहागतः ।
प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥
धर्मार्थकामसिद्ध्यर्थं स्थिरो भव शुभाय नः ।
सान्निध्यं तु सदा देव स्वार्चायां परिकल्पय ॥

अब जल हाथ में लेकर बोले-

अनेन अमुकनूतनमूर्तौ मूर्तिषु वा प्राणप्रतिष्ठाकर्मकृतेन अमुकदेवता प्रीयतां न मम॥ ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु॥

(इति नूतनमूर्ति प्राणप्रतिष्ठा॥)

श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति ॥१॥ साब्रवीत्अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च ॥२॥

अहमानन्दानान्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणीद्वे ब्रह्मणीवेदोऽहम वेदितव्ये। इति वाथर्वणीश्रुतिः। अहं पञ्चभूतान्य पञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत् ॥३॥

वेदोऽहम् । विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम् ॥४॥

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वेदेवैः। अहं मित्रा-वरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ ॥५॥

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि ॥६॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति ॥७॥

ते देवा अब्रुवन् - नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम् ॥८॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् ।
दुर्गां देवी शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः ॥९॥

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टतैतु ॥१०॥

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कंदमातरम् ।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम् ॥११॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि ।
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥१२॥

अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव ।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥१३॥

कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरुच्यैषा विश्वमातादिविद्योम् ॥१४॥

एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा ।
एषा श्रीमहाविद्या। यएवं वेद स शोकं तरति ॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः ॥१६॥

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः सैषा विश्वेदेवाः सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणि।

सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणि। तामहं प्रणौमि नित्यम्॥ पापापहारिणीं देवीं भुक्ति मुक्ति प्रदायिनीम्। अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम् ॥१७॥

वियदीकारकसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् ॥१८॥

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः ॥१९॥

वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवाम श्रोत्रबिन्दु संयुक्तष्टात्तृतीयकः।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः ॥२०॥

हृतपुण्डरीकमध्यस्थां प्रातः सूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे ॥२१॥

नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम् ॥२२॥

यस्यां स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्यां जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणि तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति ॥२३॥

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता ॥२४॥

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम् ॥२५॥

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चा-सिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः। दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते। महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः ॥२६॥

सायमधीयानो दिवसकृतं पापंनाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापंनाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति निशीथे तुरीयसंध्यायां जप्त्वा वाक्सिद्धिर्भवति। नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति। प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानांप्रतिष्ठा भवति। भौमाश्विन्यां महादेवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति। स महामृत्युं तरति य एवं वेद। (इत्युपनिषत्)॥

अथ गणपत्यथर्वशीर्षम्

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानंदमयस्त्वं ब्रह्ममयः। सच्चिदानन्दा द्वितीयोऽसि। त्वंप्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि सर्व जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वजगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापो ऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक्पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः त्वमवस्था त्रयातीतः। त्वं देह त्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारोस्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्ति त्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिंद्रस्त्व मग्निस [illegible] सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः [illegible]म्।

गणादीन्पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्य रूपम्। अनुस्वारश्चान्त्य रूपम्। बिन्दुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। स ँ हिता सन्धिः। सैषा गणेश विद्या। गणक ऋषिः। निचृद्गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता॥ ॐ गं गणपतये नमः॥ एक दन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्॥

एकदन्त चतुर्हस्तं पाशामङ्कुश धारिणम्।
रदं च वरदं हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम्॥
रक्तं लंबोदरं शूपकर्णकं रक्तवाससम्।
रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्त पुष्पैः सूपूजितम्॥
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत् कारणमच्युतम्।
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्॥

एवं ध्यायंति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः। प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमः॥

एतदथर्वशीर्षयो ऽधीते। स ब्रह्मभूतेय कल्पते। स सर्व विघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पञ्चमहापापात्प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायम्प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति।

सर्वत्राधीयानो ऽप विघ्नो भवति। धर्ममर्थं कामं मोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान्भवति। सहस्त्रावर्तनाद्यं यं काममधीते। तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान्भवति॥

इत्यथर्वण वाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विघान्न विभेति कदाचनेति। यो दुर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदक सहस्त्रेण यजति स वाञ्छित

फलमवाप्नोति। यः साज्य समिद्धिर्यजति स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्य वर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्ध मंत्रो भवति। महाविघ्नात्प्रमुच्यते। महादोषात्प्रमुच्ययते। महाप्रत्यवायात्प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति। स सर्व विद्भवति। य एवं वेद ॥ इत्युपनिषत्॥

॥इति गणपत्यथर्वशीर्ष ॥

अथ शिव अथर्वशीर्षम्

(शिवोपनिषद)

ॐ देवाह वै स्वर्गलोकमयंस्ते रुद्रमपृष्छन्। को भवानिति। सोऽब्रवीदहमेकः प्रथममासीद्वर्तासि च भविष्यामि च नान्यः कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति। सोऽन्तरादन्तरं प्राविश दिशश्चान्तरं प्राविशत्सोहं नित्यातित्यो व्यक्ता व्यक्तो ब्रह्माब्रह्माहं प्राञ्चः प्रत्यञ्चोऽहं दक्षिणाञ्च उदञ्चोहमधश्चोर्ध्वश्चाहं दिशश्च प्रतिदिशश्चाहं पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहं सावित्र्यहं त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप् चाहं छंदोऽहं सत्योहं गार्हपत्यो दक्षिणाग्निरा हवनीयोऽहं गौरहं गौर्यह मृगहं यजुरहं सामाहमथर्वाऽङ्गिरसोऽहं ज्येष्ठोहं श्रेष्ठोहं वरिष्ठोहमापेहं तेजोहं गुह्यो हमरण्योहं अक्षरमहंक्षरमहं पवित्र महमुग्रञ्च वलिश्च पुरस्ता ज्जोतिरित्यहमेव सर्वेभ्यो मामेव स सर्वः समायोमां वेदस देवान् वेद सर्वाश्च वेदान साङ्गानपि ब्रह्मब्रह्माण-श्चगांगोभि र्ब्राह्मणेन हविर्हविषा आयुरायुषासत्त्यं सत्येन धर्मेण धर्म तर्पयामिस्वेन तेजसा। ततोह वै ते देवा रुद्रमपृच्छन्। ते देवा रुद्रमपश्यन् ते देवा रुद्रमध्यायन् ते देवा उर्ध्वबाहवो रुद्रस्तुवन्ति।

ॐ यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः ॥१॥

यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च विष्णुस्तस्मै वै नमो नमः ॥२॥

यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च स्कंदस्तस्मै वै नमो नमः ॥३॥

यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चेन्द्रस्तस्मै वै नमो नमः ॥४॥

यो वै रुद्रः सभगवान्यश्चाग्निस्तस्मै वै नमो नमः ॥५॥

यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चवायु स्तस्मै वै नमो नमः ॥६॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च सूर्यस्तस्मै वै नमो नमः ॥७॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्च सोमस्तस्मै वै नमो नमः ॥८॥
यो वै रुद्रः सभगवान् येऽष्टौग्रहास्तस्मै वै नमो नमः ॥९॥
यो वै रुद्रः सभगवान् येचाष्टौ प्रतिग्रहास्तस्मै वै नमो नमः ॥१०॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च भूस्तस्मै वै नमो नमः ॥११॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च भुवस्तस्मै वै नमो नमः ॥१२॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च स्वस्तस्मै वै नमो नमः ॥१३॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च महस्तस्मै वै नमो नमः ॥१४॥
यो वै रुद्रः सभगवान् या च पृथिवी तस्मै वै नमो नमः ॥१५॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्चान्तरिक्षं तस्मै वै नमो नमः ॥१६॥
यो वै रुद्रः सभगवान् या च द्यौस्तस्मै वै नमो नमः ॥१७॥
यो वै रुद्रः सभगवान् याश्चापस्तस्मै वै नमो नमः ॥१८॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च तेजस्तस्मै वै नमो नमः ॥१९॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चकालस्तस्मै वै नमो नमः ॥२०॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चयमस्तस्मै वै नमो नमः ॥२१॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यश्चमृत्युस्तस्मै वै नमो नमः ॥२२॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्चाऽमृतं तस्मै वै नमो नमः ॥२३॥
यो वै रुद्रः सभगवान् याच्चाकाशं तस्मै वै नमो नमः ॥२४॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्चविश्वं तस्मै वै नमो नमः ॥२५॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च स्थूलं तस्मै वै नमो नमः ॥२६॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च सूक्ष्मं तस्मै वै नमो नमः ॥२७॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च शुक्लं तस्मै वै नमो नमः ॥२८॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च कृष्णस्तस्मै वै नमो नमः ॥२९॥
यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च कृत्स्नं तस्मै वै नमो नमः ॥३०॥

यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च सत्यं तस्मै वै नमो नमः ॥३१॥

यो वै रुद्रः सभगवान् यच्च सर्वत तस्मै वै नमो नमः ॥३२॥

भूस्ते आदिर्मध्य भुवस्ते स्वस्वते शीर्षं विश्वरूपोसि ब्रह्मैकस्त्वं द्विधा त्रिधा वृद्धिस्त्वं शांतिस्त्वं पुष्टिस्त्वं हुतमहुतं दत्तमदत्तं सर्वमसर्वं विश्वमविश्वं कृतमकृतं परामपरं परायणञ्चत्वं अपामसोममृता अभूागन्मे ज्योतिरविदाम देवान्। किं नूनमस्मान् कृणवदराति। किमुधूर्त्तिरमृतं मर्त्यस्य सोम सूर्यपुरस्तात्सूक्ष्मः पुरुषः। सर्वञ्जगद्धितं वा एतदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं पुरुषं ग्राह्यमग्राह्येण भावं भावेन सौम्यं सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण वायव्यं वायव्येन ग्रसतिस्तस्मै महाग्रासाय वै नमो नमः। हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणाः प्रतिष्ठिताः। हृदि त्वमसि यो नित्यं तिस्रो मात्राः परस्तुसः। तस्योत्तरतः शिरो दक्षिणतः पादौय उत्तरतः सा ओङ्कारः य ओङ्कारः स प्रणवः यः प्रणवः स सर्वव्यापी यः सर्वव्यापी सोऽन्ततः योऽनन्तस्तत्तारंतच्छुक्लं यच्छुक्लं तत्सूक्ष्मं यत्सूक्ष्मं तद्वैद्युतं तत्परं ब्रह्म। यत परं ब्रह्म स एकः य एकः स रुद्रः यो रुद्रः स ईशान य ईशानः स भगवान् महेश्वरः ॥३॥

अथ कस्मादुच्यते ओंकारः यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्व मुत्कामयति तस्मादुच्यते ओङ्कारः।

अथ कस्मादुच्यते प्रणवः यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुः सामाथर्वाङ्गिरसं ब्रह्मब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति नामयति च तस्मादुच्यते प्रणवः। अथ कस्मादुच्यते सर्वव्यापी यस्मादुच्चार्यमाण एव यथास्नेहेन पलालपिण्डमिव शान्तरूपमोतप्रोतमनुप्राप्तो व्यतिषक्तश्च तस्मादुच्यते सर्वव्यापी। अथ कस्मादुच्यते ऽनन्तः यस्मादुच्चार्यमाण एव तिर्यगमर्ध्वमधस्ताच्चास्यान्तो नोपलभ्यते तस्मादुच्चयते ऽनन्तः अथ कस्मादुच्यते तारं यस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भजन्म व्याधिजरा मरण संसार महाभत्तारयति त्रायते च तस्मादुच्ये तारम्। अथ कस्मादुच्यते शुक्लं यस्मादुच्चार्यमाण एव क्रंदते क्लामयति च तस्मादुच्यते शुक्लम्। अथ कस्मादुच्यते सूक्ष्मं यस्मादुच्चार्यमाण एव सूक्ष्मो भूत्वा शरीराण्यधितिष्ठति सर्वाणि चाङ्गान्यभिमृश्यतितस्मादुच्यते सूक्ष्मम्।

अथ कस्मादुच्यते वैद्युतं यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्तेमहति तपसि द्योतयति तस्मादुच्यते वैद्युतं। अथ कस्मादुच्यते परं ब्रह्म यस्मात्परमपरं परायणञ्च बृहद् बृहत्याबृंहयति यस्मादुच्यते परं ब्रह्म। अथ कस्मादुच्यते एकः यः सर्वान् प्राणान् संभक्ष्य संभक्षणेनाजः संसृजति तीर्थमेके व्रजन्ति तीर्थमेके दक्षिणः प्रत्यञ्च उदञ्च प्राच्यो ऽभि व्रजन्त्येके तेषां सर्वेषामिह सङ्गतिः साकं स एको ऽभूदन्तश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यते एकः। अथ कस्मादुच्यते रुद्रः यस्मादृषिभिर्नान्यै र्भवतैर्द्रुतमस्य रूपमुपलभ्यते तस्मादुच्यमे रुद्रः। अथ कस्मादुच्यते ईशानः यः सर्वन्देवानीशते ईशानीभिर्जनीभिश्च शक्तिभिः। अभित्वा शूरणोनुमो दुग्धा इव धेनवः। ईशानमस्य जगतः स्वदर्शमीशानमिन्द्र तस्थुष इति तस्मादुच्यते ईशानः। अथ कस्मादुच्यते भगवान महेश्वरः यस्माद्भक्ता ज्ञानेन भजत्यनु गृह्णाति च वाचं संसृजति च सर्वान् भावान् परित्यज्यात्म ज्ञामेन योगैश्वर्येण महति महीयते तस्मादुच्यते स भगवान् महेश्वरः तदेतद्रुद्र चरितं ॥४॥

एषोहदेवः प्रदिशो ऽनु सर्वाः पूर्वोहजातः सउगर्भे अन्तः। स एव जातः सजनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनांस्तिष्ठति सर्वतोमुखः। एकोरुद्र न द्विंतीया यतस्मैय इमाँ लोकानीशत ईशानीभिः। प्रत्यङ् जनस्तिष्ठति चान्तकाले संसृज्य विश्वाभुवनानि गोप्ता। यो योनिं योनिमधितिष्ठकोयेनेदं सर्वं विचरति सर्वम्। तमीशानं वरदं देवमीड्यं निचाय्येमां शांतिमत्यन्तमेति।

क्षमां हित्वा हेतुजालस्यमूलं बुद्ध्या संचितं स्थापयित्वा तु रुद्रे। रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणमिषमूर्जेण पशवोनानु मायन्तंमृत्यु पाशान् तदेतेनात्मन्नेतेनार्ध च चतुर्थेन मात्रेण शांतिं संसृजति। पशुपाश विमोक्षणं या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या रक्तावर्णेन यस्तांध्यायते नित्यं सगच्छेत् ब्रह्मपदम्। यासा द्वितीया मात्रा विष्णुदेवत्या कृष्णावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं सगच्छेद्वैष्णचं पदम्। या सा तृतीयामात्रा ईशान देवत्या कपिलावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं सगच्छेदीशानं पदम्। या साऽर्धचतुर्थी मात्रा सर्व देवत्याऽव्यक्तीभूता खं विचरति शुद्धा

स्फटिकसन्निभावर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं सगच्छेत्पदमनामयम्। तदेतदुपासित मुनयो वाग्वदन्ति नतस्य ग्रहणमयं पंथाविहित उत्तरेण येन देवायन्ति येन पितरो येन ऋषयः परमपरंपरायणं चेति। ब्रालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वेदेवं जातरूपं वरेण्यम्। तमात्मस्थं येतु पश्यन्ति धीरा स्तेषा शांतिर्भवति नोत्तरेषाम्। यस्मिन् क्रोधयाञ्च तृष्णां क्षमाञ्चक्षमां हित्वा हेतु जालस्य मूलं बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वातुरुद्रे रुद्र मेकत्वमाहुः रुद्रोहि शाश्वतेन वै पुराणे नेष मूर्जेण तपसा नियन्ताग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म सर्व ७ हवा इदं भस्म मन एतानि चक्षुंषि यस्मादव्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत् तस्माद् ब्रह्म तदेतत्पाशुपतं पशुपाश विमोक्षणाय ॥५॥

योऽ ग्नौ रुद्रोयो ऽश्वन्तर्य ओषधी वीरुधत्र्या विवेशा य इमाविश्वा भुवनानि च क्लृपे तस्मै रुद्राय नमो ऽस्त्वग्नये। यो रुद्रो ऽप्सुयो रुद्रोऽग्नौ यो रूद्रोऽश्वन्तर्यो रुद्र ओषधी र्विरुध आविवेश। यो रुद्र इमा विश्वाभुवनानि क्लृपे तस्मै रुद्राय वै नमो नमः। यो रुद्रोप्सु यो रुद्रो ओषधीषु यो रुद्रो वनस्पतिषु येन रुद्रेण जगदूर्ध्व धारितं पृथिवी द्विधात्रिधाधर्त्ताधारिता नागायेन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय वै नमः। मूर्धा नमस्य संसेव्याप्यथर्वा हृदयञ्चयत्। मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रेरयत्यवमानो ऽधिशीर्षतः। तद्वाअथर्वणः शिरोदेवकोशः समुज्झितः तत् प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्तमथोमनः न च दिवो देवजनेनगुप्ता न चान्तरिक्षाणि न च भूम इमाः। यस्मिन्नदं सर्वमोतप्रोतं तस्मादन्यन्नपरं किञ्चनास्ति। न तस्मात्पूर्वं न परं तदस्ति न भूतं नोतभव्यं यदासीत्। सहस्त्रपादेक मूर्ध्वाव्याप्तं स एवेदमाव रीवर्तिभूतम्। अक्षरात् सञ्जायते कालः कालाद व्यापक उच्यते। व्यापकोहि भगवान् रुद्रो भोगायममानो यदाशेते रुद्रस्तदा संहार्यते प्रजाः उच्छवसिते तमो भवति तमस आपो ऽश्वङ्गुल्यामथिते मथितं शिशिरे शिशिरं मथ्यमानं फेनं भवति फेनादण्डं भवत्यण्डाद् ब्रह्मा भवति ब्रह्मणो वायुः वायोरोङ्कार ओङ्कारात् सावित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या लोका भवन्ति अर्चयति तपः सत्यं मधुरक्षन्ति यद्ध्रुवम्। एतद्धि परमंतपः। आपोज्योति रसोमृतं ब्रह्म भू र्भुवः स्वरोन्नम इति ॥६॥

य इदमथर्व शिरो ब्राह्मणोऽधीते। अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति। अनुपनीत उपनीतो भवति। सोऽग्निपूतो भवति। स वायुपूतो भवति। स सूर्यपूतो भवति। स सोमपूतोभवति। स सत्यपूतोभवति। स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति। स सर्वैवेदैरनु ध्यातो भवति। स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति। तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति। गायत्र्याः षष्टि सहस्राणि जप्तानि भवन्ति। प्रणवानामयु तं जप्तं भवति। स चक्षुषः पंक्ति पुनाति। आसप्तमात् पुरुषगान्पुनातीत्याह भगवानथर्वशिरः सकृज्जप्तवै व शुचिः स पूतः कर्मण्यो भवति। द्वितीयं जप्त्वा गणाधिपत्यमाप्नोति। तृतीयं जप्त्वैवमेवान् प्रविशन्त्यो सत्यमों सत्यमों सत्यम्।

(इत्यथर्ववेदे शिवाथर्वशीर्षम्। इति शिवउपनिषत्।)

अथ सूर्याथर्वशीर्षमुपनिषत्

अथ सूर्याथर्वाङ्गिरसं व्याख्यास्यामः ब्रह्मात्रिऋषिः आदित्यो देवता गायत्री छन्दः हंसाद्यग्निनारायण युक्तं बीजम्। ह्रलेख शक्तिः। द्विपदादिसर्ग संयुक्तं कीलकम्। धमार्थ काममोक्षेषु जपे विनियोगः।

षट्स्वरारूढ बीजेन षडंगं रक्ताम्बुजसंस्थं सप्ताश्वरथिनं हिरण्यवर्णं। चतुर्भुजं पद्मद्वयाभय वरदहस्तं। कालचक्र प्रणेतारं च श्रीसूर्यनारायणं॥ यऽ एवं वेद स वै ब्राह्मणः। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ मह ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं तत्सवितुर वरेण्यम् भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् परोरजसे सावदोम् ॐ आपो ज्योती रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। सूर्याद्वैखल्विमानि भूतानि जायन्ते। सूर्याद्यज्ञाः पर्जन्योऽन्नमात्मा।

नमस्ते आदित्याय त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव प्रत्यक्षं विष्णुरसि। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वमेव प्रत्यक्षं रुद्रोऽसि। त्वमेव प्रत्यक्ष मृगसि। त्वमेव प्रत्यक्षं यजुरसि। त्वमेव प्रत्यक्षं सामासि। त्वमेव प्रत्यक्षमथर्वासि। त्वमेव सर्वं छंदोसि। आदित्याद्वायुर्जायते। आदित्याद्भूमिर्जायते। आदित्यादापोजायते। आदित्याज्ज्योतिर्जायते। आदित्याद्व्योम दिशो ज्ञायंते। आदित्याद्वेदा जायंते। आदित्याद्देवा जायंते। आदित्यो वा ऽएष

एतन्मंडलंपति। असावादित्यो ब्रह्म। आदित्यो ऽन्तःकरण मनोबुद्धि चित्ताहंकाराः। आदित्यो वै व्यान समानोदानापान प्राणाः। आदित्यो वै श्रोत्र त्वक् चक्षु रसनानासाः। आदित्यो वै वाक् पाणि पादोपस्थ पायूनि। आदित्यो वै शब्द स्पर्श रूप रस गंधाः। आदित्यो वै वचना दान गमनानन्द विसर्गाः। आनन्दमयो ज्ञानमयो विज्ञानमय आदित्यः। नमो मित्राय भानवे मृत्योर्मा पाहिभ्राजिष्णवे विश्वहेतवे नमः। सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अंतरिक्षात्। अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः सूर्याद्वै भूतानि सूर्येण पालितानि तु। सूर्य लयं प्रानुवंति य सूर्यः सोहमेव च। चक्षुर्नो देवः सविता। चक्षुर्न उत पर्वतः। चक्षुर्धाता दधातु नः।

आदित्याय विद्महे सहस्त्रकराय धीमहि। तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्। सविता पश्चात्तात्। सवितापुरस्तात्। सवितोत्तरात्तात् सविता धरात्तात्। सविता नः सुवतु सर्वतातिम्। सवितानोरासतांदीर्घमायुः ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म घृणिरिति द्वे अक्षरे सूर्य इत्यक्षर द्वयम्। आदित्य इति। त्रीण्यक्षराणि एतद्वै सूर्यास्याष्टाक्षरमनुम् 'ॐ घृणिः सूर्य आदित्य' इति मंत्रः। यः सदाहर हर्जपति। सो ऽब्रह्मण्यो ब्राह्मणो भवति। सूर्याभिमुखं जप्त्वा महाव्याधि भयात्प्रमुच्यते। अलक्ष्मीर्नश्यति अभक्ष्य भक्षणात् पूतो भवति। अपेयपानात्पूतो भवति। अगम्या- गमनात्पूतो भवति। व्रात्य संभाषणात्पूतो भवति। मध्याह्ने सूर्याभिमुखः पठेत् सद्यः पंचमहापापात्प्रमुच्यते। सैषा सावित्री विद्या न कस्यचित्प्रशंसेत्। एतन्महाभागः प्रातः पठति स भाग्यवान जायते। पशून विदति वेदार्थं लभते। त्रिकालं जत्वा क्रतु शतफलं प्राप्नोति। हस्तादित्ये जपति स महामृत्यं तरति। य एवं वेद।

(इत्युपनिषत्। इति सूर्याथर्वशीर्षम्।)

पुष्पांजलिमंत्राः

ॐ यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कूर्म हे।

स मे कामान काम कामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥२॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्त पर्यायी स्यात् सर्वभौमः सर्वायुष आन्तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्तायाऽ एकराडिति तदप्येष श्लोको ऽअभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासदः ॥३॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्पतस्पात् । संबाहुभ्यां धमति संपत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः ॥४॥

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

ॐ एकादश्यै च विद्महे हरिप्रियायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

ॐ भागीरथ्यै च विद्महे विष्णु पद्यै च धीमहि। तन्नो गङ्गा प्रचोदयात्॥

ॐ त्रिपुराय विद्महे तुलसीपत्राय धीमहि। तन्नो तुलसी प्रचोदयात्॥

ॐ नारायण्यै च विद्महे दुर्गायै च धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥

ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तंभिन्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्॥

ॐ एकदंताय च विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो गणपति प्रचोदयात्॥

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णु पत्न्यैचधीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥

ॐ अंजनीजाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि। तन्नो हनुमत् प्रचोदचात्॥

ॐ महादेवाय विद्महे रुद्रमूर्तये धीमहि। तन्नः शिवः प्रचोदयात्॥

ॐ दाशरथये विद्महे सितावल्लभाय धीमहि। तन्नो रामः प्रचोदयात्॥

ॐ जनकजायै विद्महे रामप्रियायै धीमहि। तन्नो सीताः प्रचोदयात्॥

ॐ देवकीनन्दनायै विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्॥

ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायैधीमहि। तन्नो राधिका प्रचोदयात्॥

ॐ महादेव्यै च विद्महे सर्वशक्त्यैचधीमहि। तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्॥

अथ कुण्ड निर्माण विधानम्

भूमि शोधन :- ब्राह्मण भूमि श्वेत वर्ण, घृत व सुन्दर गंध युक्त तथा मधुर स्वाद वाली होती है। रक्त वर्ण, रक्त गंधा तथा कसैली भूमि क्षत्रिय भूमि है। पीत वर्ण, मधुगंधा तथा खट्टा मिट्ठा स्वाद देने वाली मिट्टी वैश्य भूमि होति है। कृष्ण वर्ण, मदिरा के गंध वाली तीखे स्वाद वाली भूमि शूद्रा होती है।

उत्तर पूर्व की ओर नीची भूमि शुभद् होती है। समतल भूमि सभी वर्ण के लिये शुभ है। भूमि में सर्प की बांबी, अस्थि केश अन्य अशुद्धियां नहीं होवे, अति कृष्ण व दरारें पड़ने वाली भूमि नहीं होवे।

अच्छी तरह से पूर्वादि दिशा साधन करें। मंडप १०-१२ हाथ का अधम। १२-१४ का मध्यम व १६-१८ हाथ का उत्तम है चौकोर बनावें।

द्वार - चारों दिशाओं के मध्य में २ हाथ ४ अंगुल चौड़ा, मध्यम मण्डप में तथा २ हाथ ८ अंगुल चौड़ा उत्तम मण्डप में बनायें। ऊँचाई दोनो में ५ हाथ रखें।

१६ स्तंभ गाड़ने के लिये दक्षिण उत्तर व पूर्व पश्चिम के तीन तीन भाग से सूत्र डालें संधि स्थलों पर निशान करें। प्रथम अग्नि कोण में स्तंभ गाड़ना जिसका पांचवां हिस्सा भूमि में रहें। शेष चार स्तंभ मध्य भाग में ८ हाथ ऊँचे (८ अंगुल चौड़े) मध्य भाग में अग्नि कोण से गाड़ें। काष्टवल्लियां लगाकर मण्डप निर्माण करे ४८ बल्लियां होगी। शिखर बनावे, बांस की सहायता से द्वार बनायें। मंडप द्वार से एक हाथ दूर तोरण द्वार बनाये।

ध्वजारोहण :- यज्ञ प्रारंभ पहले भूमि , कूर्म, अन्नंत, स्वामी कार्तिक व इंद्र की पूजा करके स्तंभ रोपण कर ध्वजा रोहण करें। २ हाथ या ३ हाथ चौड़ी ५ हाथ लंबी होनी चाहिये।

मुहुर्त्त के हिसाब से कूर्मवास व शिववास भी देखना चाहिये।

शिववास:- वर्तमान तिथि को दूगना करके पांच मिलाये, सात का भाग देवे १ बचे तो शिववास कैलाश में श्रेष्ठ, २ बचे तो गौरपार्श्वे श्रेष्ठ, ३ बचे तो वृषारुढ श्रेष्ठ, ४ बचे तो सभायां सम, ५ शेष हो तो ज्ञान बेला में श्रेष्ठ, ६ शेष में क्रीडा में दुःख, ७ शेष हो तो श्मशान, फल मृत्यु जानें।

कूर्मवास :- वर्तमान तिथि को ५ से गुणा करे और कृतिका से वर्तमान नक्षत्र तक की संख्या को उसमें मिलाये, पुनः उसमें १२ जोड़कर ९का भाग देवे। १,४,७

में कूर्मवास जल में शुभ रहे। २,५,८ स्थल में वास हानि, ३,६,९ शेष बचें तो अकाश में मृत्यु जानें।

स्तंभचक्र :- सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने, प्रथम २ का वास स्तंभ मूल में धनक्षय, आगे २० नक्षत्र लक्ष्मी प्राप्ति वास मध्य में। शेष ६ नक्षत्र स्तंभ के अग्रभाग में फल मृत्युपीड़ा देवे।

सभी ध्वजा त्रिकोण व पताका चौकोर होती है। महाध्वज ईशान और मध्य में पांच वर्ण का होता है।

कुण्ड विभाग :- वैसे नवकुण्डी व पञ्चकुण्डी में अधिकतर आचार्य कुण्ड मध्य में बनाते है। कहीं कहीं ईशान पूर्व मध्य में लिखा है। यथा कुण्ड मण्डप सिद्धिनुसार निम्न चक्र है।

पंचकुण्डी यज्ञ में :- **पूर्व में चतुरस्त्र,** दक्षिण में अर्धचन्द्र, पश्चिम में वृत्त, उत्तर में पद्म, आचार्य कुण्ड ईशान पूर्व मध्ये या ईशान अथवा मंडप के मध्य मे बनायें।

आचार्य कुण्ड, होता मुख व योनिकुण्ड नवकुण्डी चक्र की तरह।

एक कुण्डी पक्षे :- चतुरस्त्र या अष्टस्त्र या योनि कुंड। योनि पश्चिमे पूर्वाग्र होवे।

कुण्डप्रमाण :- आहुति संख्यानुसार ५० आहुति से १०० आहुति २१ अंगुल। १०० से १००० आहुति २२ अंगुल। एक हजार से १० हजार १ हाथ = २४ अंगुल, ५ यव। एक लक्ष में ४ हाथ = ४८ अंगुल। एक से अधिक १० लाख में ६ हाथ = ५८ अंगुल ६ यव। कोटि होम में ८ हाथ = ६७ अंगुल ७ यव। कहीं कहीं कोटी होम में १६ हाथ का कुण्ड बनाना लिखा है।

हस्त प्रमाण :- खड़े होकर हाथ को ऊपर करें पैर के अंगूठे से मध्यमा तक की लंबाई के ५ भाग करें एक भाग का मान १ हाथ है। २४ अंगुल से कुछ भिन्न रहता है। माना कि किसी की लंबाई ८४ -८५ इंच है तो ५ वां भाग १७ इंच है। हस्त प्रमाण से १९ इंच, २४ अंगुल से १८॥ इंच है अतः कौनसा प्रमाण लेवें हम मध्यमान १ हाथ = १८ इंच के मान से सभी कुण्डों की निर्माण क्रिया का उल्लेख करेंगे। १ अंगुल में ८ यव, १ यव में ८ यूका। १ इंच में ८ सूत। और १ इंच में १० मिलीमीटर होते हैं। १ इंच में २ सेन्टीमीटर ५$\frac{1}{2}$ मिलीमीटर होते है।

।। अथ कुण्ड विभाग चक्रम ।।

दिशा	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋति	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	पू. ई. मध्ये
कुण्ड	चतु.	योनि	अर्ध चन्द्र	त्रिकोण	वृत्त	षट्कोण	पद्म	अष्टास्त्र	चतुरस्त्र या वृत्त
फल	सिद्धि	पुत्र	शुभ	शत्रुनाश	शांति	मृत्यु छेदन	वर्षा	आरोग्य	आचार्य कुण्ड प्रथम हवन
होता मुख	उत्तर मुख	उत्तर	उत्तर	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	उत्तर मुख
योन्याग्र	दक्षिण योनि उदग्ग्रा	योनि नहीं बनती	दक्षिणयोनि उदग्ग्रा	पश्चिम योनि पूर्वाग्रा	पश्चिमे योनि पूर्वाग्रा	पश्चिमे योनि पूर्वाग्रा	प.योनि पूर्वाग्रा	प. योनि पूर्वाग्रा	दक्षिण योनि उदग्ग्रा

।। अथ ध्वजा पताका चक्रम् ।।

दिशा	पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैर्ऋति	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	पू.ई. मध्ये	नि.प. मध्ये
ध्वजा रंग	पीत	रक्त	कृष्ण	नीला	श्वेत	धुम्र या हरा	श्वेत या हरा	श्वेत	श्वेत या रक्त	कृष्ण या पीत
पताका रंग	पीत	रक्त	कृष्ण	नीला	श्वेत	धूम्र या हरा	श्वेत या हरा	श्वेत	श्वेत या रक्त	कृष्ण या पीत
आयुध रंग	वज्र रक्त	शक्ति पीत	दण्ड रक्त	खड्ग रक्त	पाश धूम्र	अंकुश रक्त	गदा पीत	त्रिशूल कृष्ण	कुमुद पीत	चक्र नानारंग
वाहन रंग	हस्ती सफेद	बकरा श्वेत	महिष रक्त	सिंह श्वेत	मच्छ धूम्र	हरिण कृष्ण	घोड़ा स्वर्ण	बैल रक्त	हंस श्वेत	गरुड़ पीत

(१) चतुरस्र कुण्ड स्वरूपम्

१ हाथ = १८ इंच मान लेवें अतः हम मध्यमान १ हाथ = १८ इंच मान से सब कुण्डों की निर्माण क्रिया का आगे उल्लेख करेगें। १ अंगुल में ८ यव ॥ १ इंच में ८ सूत ॥ १ सेमी में १० मिलीमीटर होते है।

१ हाथ = २४ अंगुल = १८ इंच = ४५.७ सन्टीमीटर (४५ सेमी. ७ मिमी) प्रमाण माना है। एक सूत्र लेवे इसमें २ हाथ = ३६ इंच ९१.४ सेमी भाग में दोनो सिरे गांठ लगादें। इसके चार भाग १२ अंगुल, ९-९ इंच = २२.९ सेमी हुये माना कि ये गांठें ''अ क ख आ'' हुई।
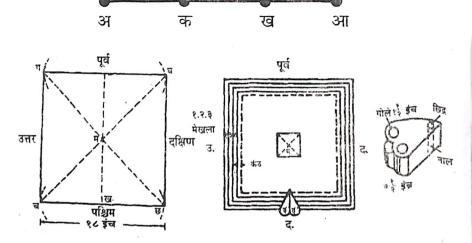
अब **क** तथा **ख** को पूर्व से पश्चिम की ओर तान कर रखें इनके नीचे निशान लगाये। ''**क**'' केन्द्र से ईशान व अग्नि कोण की तरफ ''**अ**'' से चाप घुमाये। ''**ख**'' को केन्द्र मानकर ''**आ**'' के द्वारा नैऋत्य तथा वायव्य की तरफ चाप घुमाये जो क्रमशः **ग, घ** एवं **च छ** स्थान बनेगें। चाप के परम भाग **ग** को **च** से तथा **घ** को **छ** से मिलाइये। चारों ओर रेखा मिलाने से चतुरस्र बन जायेगा। योनि व मेखला का प्रमाण आगे दिया गया गया है। **घ** से **च** की तरफ तथा **ग** से **छ** की तरफ सूत्र देने पर जिस जगह काटेंगें वह **म** बिन्दु केन्द्र हुआ।

(2) योनि कुण्ड

पहले की तरह १८ इंच का **ग घ छ च** चतुरस्र बनाइये। मध्य बिन्दु ''**म**'' ज्ञात करे, कर्ण रेखा **च म** तथा **म छ** के मध्य बिन्दु **अ** तथा **आ** को स्थापि करें। **अ** को केन्द्र मानकर च **अ** दूरी का चाप घुमाये। (यानि ६ इंच ३ सूत या १६.१९

सेमी अर्थात १६ सेमी १.९ मिमी.)। प्रकृति मान २४ अंगुल का $\frac{5}{24}$ भाग किया और उसमें इसका ३२ वां भाग जोड़ने से ५ अंगुल १$\frac{1}{4}$ यव हुआ = ३ इंच ७ सूत = ९.८६ सेमी। पूर्व कल्पित चतुरस्त्र के बिन्दु **"क"** से ऊपर की ओर रेखा बढाईये जिसकी लंबाई ३ इंच ७ सूत या ९.८६ सेमी १६ सेमी ८$\frac{1}{2}$ मिमी हुआ जो बिन्दु **"उ"** हुआ। इस बिन्दु **उ** को नीचे के चापों **य** तथा **र** स्थानों से मिलाने पर योनिकुण्ड शुद्ध बनेगा। जिसकी कल्पित केन्द्र बिन्दु **म** से लंबाई १७ अंगुल १$\frac{2}{3}$ यव तथा नीचे वृत्त की दूरी १६ अंगुल ७$\frac{3}{4}$ यव होगी।
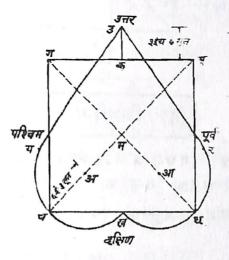
(3) अर्धवृत्त कुण्ड

प्रकृति क्षेत्र = २४ अंगुल = १८ इंच। ४५ सेमी ७ मिमी। प्रकृति क्षेत्र का $\frac{1}{5}$ भाग =४ अंगुल ६$\frac{3}{8}$ यव=३ इंच ४$\frac{4}{5}$ सूत = ९ सेमी १$\frac{1}{2}$ मिमी। $\frac{1}{5}$ का शतांश भाग $\frac{3}{8}$ यव = $\frac{1}{3}$ सूत = १ मिमी। दोनो को जोडने पर ४ अंगुल ६$\frac{3}{4}$ यव। ३ इंच ५ सूत। ९ सेमी २$\frac{1}{2}$ मिमी इस योग को प्रकृति मान २४ में से घटाने पर १९ अंगुल १$\frac{1}{4}$ यव = १४ इंच ३ सेत। ३६ सेमी ४$\frac{1}{2}$ मिमि हुआ।

क्रिया :- पहले की तरह क्षेत्र प्रकृति **"ग, घ, छ, च"** बनाये मध्य बिन्दु **'म'** स्थापित करें। अब इस मध्य बिन्दु से चाप घुमाये जिसका माप १९ अंगुल 1$\frac{1}{4}$ यव या १४ इंच ३ सूत या ३६ सेमी 4$\frac{1}{2}$ मिमी हो मध्य बिन्दु **'म'** से व्यास रेखा खींचने पर अर्धवृत्त बनेगा।
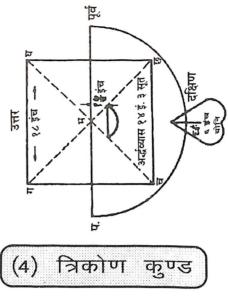
(4) त्रिकोण कुण्ड

प्रकृति क्षेत्र - '**ग घ छ च**' । 24 अंगुल या 18 इंच या 45 सेमी 7 मिमी का बनाये। पूर्व की रेखा '**ग घ**' का मध्य बिन्दु '**क**' स्थापित करे। अब प्रकृतिमान तृतियांश = 8 अंगुल या 6 इंच या 15 सेमी 2 $\frac{1}{4}$ मिमी की दूरी '**क**'
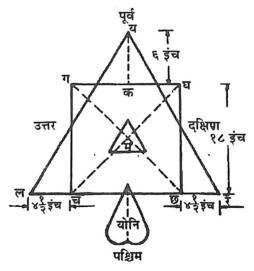
बिन्दु से पूर्व की ओर '**य**' तक बढाये।

प्रकृतिमान का चौथाई भाग = 6 अंगुल या 4 इंच 4 सूत या 11 सेमी 4 $\frac{1}{4}$ मिमी हुआ। इस लंबाई की एक रेखा '**छ**' से दक्षिण की ओर '**र**' तक तथा '**च**'

से एक रेखा उत्तर की ओर '**ल**' तक बढाये। '**य-र-ल**' को मिलाने पर त्रिकोण कुण्ड सिद्ध होगा।

(5) वृत्त कुण्ड
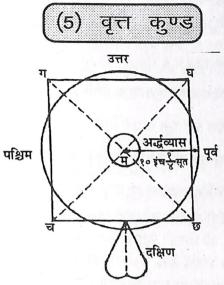
प्रकृति क्षेत्र 18 इंच का '**ग घ छ च**' बनायें। मध्य बिन्दु '**म**' स्थापित करे। अब 13 अंगुल = 9 इंच 6 सूत या 24 सेमी $7\frac{3}{4}$ मिमी हुआ। इसका 24 वां भाग = $4\frac{1}{2}$ यव या $3\frac{1}{4}$ सूत अथवा 1 सेमी $\frac{1}{3}$ मिमी हुआ। दोनों का जोड़ 13 अंगुल $4\frac{1}{2}$ यव या 10 इंच $1\frac{1}{4}$ सूत अथवा 25 सेमी 8 मिमी हुआ। इस लब्ध को अर्द्धव्यास मानकर प्राकार (चाप) घुमाइये। परन्तु केन्द्र '**म**' बिन्दु को ही माने इस तरह वृत्त सिद्ध होगा।

(6) विषम षडस्र कुण्ड
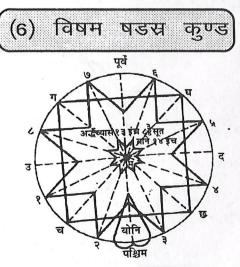
प्रकृतिक्षेत्र **'ग घ छ च'** 24 अंगुल = 18 इंच = 45 सेमी 7 मिमी। इस नाप का चतुरस्त्र कल्पित कर केन्द्र बिन्दु **'म'** स्थापित करें। प्रकृति क्षेत्र का $\frac{3}{4}$ भाग 18 अंगुल या 13 इंच 4 सूत अथवा 34 सेमी $2\frac{1}{2}$ मिमी हुआ। इसका 72 वां भाग = 2 यव अथवा $1\frac{1}{2}$ सूत या 5 मिमी हुआ। इन दोनो का योग 18 अंगुल 2 यव अथवा 13 इंच $5\frac{1}{2}$ सूत या 34 सेमी $7\frac{1}{2}$ मिमी हुआ। इस नाप के प्राकार से मध्य **'म'** बिन्दु से वृत्त खींचे। अब पुन: जिस नाप से (13 इंच $5\frac{1}{2}$ सूत या 34 सेमी $7\frac{1}{2}$ मिमी)से वृत्त बनाया था उसी नाप का प्राकार उत्तर दिशा से **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ** आगे से आगे काटते जाये। इस तरह 6 भाग होंगे। अब एक बिन्दु से उसके तिसरे बिन्दु को मिलाते जाइये। रेखा खींचने से **अ –ई, आ–ई, आ–ई, आ–ऊ, इ–उ, ई–उ** रेखायें बनी, इनसे षट्कोण बना। बीच की रेखाओं (य, र, ल, व, श, स) को मिटा देने से शुद्ध षट्कोण रहेगा।

(7) समभुज षडस्रकुण्ड

प्रकृति क्षेत्र 'ग घ छ च' 24 अंगुल = 18 इंच = 45 सेमी 7 मिमी का बनाकर मध्य बिन्दु **'म'** स्थापित करें। इसके 24 भाग करें। इसका 15 वां भाग = 15 अंगुल या 11 इंच 2 सूत अथवा 28 सेमी $5\frac{5}{8}$ मिमी हुआ। इसका 160 वां भाग = $\frac{3}{4}$ यव (6 यूका) अथवा $\frac{1}{2}$ सूत या $1\frac{3}{4}$ मिमी हुआ।
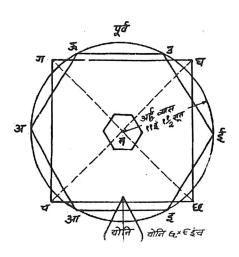
इसको 15 वें भाग से हीन करने पर = 14 अंगुल 7 यव 2 यूका। अथवा 11 इंच $1\frac{1}{2}$ सूत या 28 सेमी 4 मिमी हुआ। अब इस नाप का मध्य बिन्दु **'म'** से चाप घुमाकर वृत्त बनाये। इस वृत्त पर उत्तर में एक बिन्दु **'अ'** स्थापित करें। इससे इस 'प्रकार' को वृत्त पर काटे जो बिन्दु **आ** हुआ। इस तरह आगे से आगे काटते जाये इससे 6 भाग बनेंगे। एवं अब सब बिन्दुओं को सूत्र से एक दूसरे से मिलाकर रेखा खींचते जाये तो मृदंगााकार **'अ, आ, इ, ई उ, ऊ'** कुण्ड होगा। अन्य रेखाओं को मिटा देवें।

(8) पद्म कुण्ड

प्रकृति क्षेत्र **:-** 24 अंगुल = 18 इंच = 45 सेमी 7 मिमी का कल्पित कर केन्द्र बिन्दु **'म'** स्थापित करे। इसके क्षेत्र का 8 वां भाग = 3 अंगुल या 2 $\frac{1}{4}$ इंच। अथवा 5 से
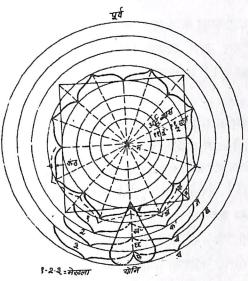
इस अष्टमांश के एक-एक वृद्धि करके 5 वृत्त इस अर्द्धव्यास के बनाये।

(1) पहले वृत्त का अर्द्धव्यास = 3 अंगुल या $2\frac{1}{4}$ इंच। अथवा 5 सेमी 7 मिमी।

(2) दूसरे वृत्त का अर्द्धव्यास = 6 अंगुल या $4\frac{1}{2}$ इंच अथवा 11 सेमी 4

मिमी।

(3) तीसरे वृत्त का अर्द्धव्यास =9 अंगुल या 6 इंच 6 सूत अथवा 17 सेमी 1 मिमी।

(4) चौथे वृत्त का अर्द्धव्यास = 12 अंगुल या 9 इंच अथवा 22 सेमी $8\frac{1}{2}$ मिमी।

(5) पांचवा वृत्त का अर्द्धव्यास = 15 अंगुल या $11\frac{1}{4}$ इंच अथवा 28 सेमी $5\frac{1}{2}$ मिमी।

अष्टमांश का 38 वां भाग = 5 यूका $\frac{1}{2}$ सूत अथवा $1\frac{1}{2}$ मिमी।

इसको पंचम आवृति में से घटाने पर 14 अंगुल 7 यव 3 यूका। या 11 इंच $1\frac{1}{2}$ सूत। या 28 सेमी 4 मिमी।

इन सब नापों के अर्द्धव्यास के 5 वृत्त **'म'** केन्द्र से प्रकार द्वारा बनाये। अब म' केन्द्र से पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सब वृत्तों के काटती हुई रेखाये खींचे नके अर्द्ध भाग मे रेखा देने से 8 भाग होंगे पुनः इनके मध्य में रेखाये देने से 16 ाग होंगे।

5 वे वृत्त पर पश्चिम और नैऋत्य के बीच का एक बिन्दु **'अ'** लीजिये। अब चौथे वृत्त में इस रेखा के दायें बायें के बिन्दु **'ब'** तथा **'स** लिजिये अब **'अ'** को **'ब'** तथा **'स'** से मिलाकर कर्णिका बनाये। इसी तरह मेखला वृत्त में **'अ'** ऊपर का बिन्दु **'क'** लीजिये। पाँचवे वृत्त में इसको दायें बायें की रेखा के बिन्दु **'ख'** और **'ग'** को मिलाकर कर्णिका दल बनाये। तदनन्तर **'ख'** व **'ग'** का मध्य बिन्दु में दूसरी मेखला **'च'** को नीचे के वृत्त में इसके दायें बायें के वृत्त **'छ'** व **'ज'** को मिलाकर तीसरी कर्णिका बनाये। इसी तरह एक वृत्त और देकर **'प फ ब'** तीसरी मेखला बनाये।

इसी तरह सभी वृत्तों में करने से तीनों वृत्तों में अष्टदल युक्त 3 मेखला बन जायेगी।

(9) विषम अष्टास्र कुण्ड

प्रकृति क्षेत्र :- 24 अंगुल = 18 इंच = 45.7 सेमी मध्य बिन्दु 'म' स्थापित करे। प्रकृति क्षेत्र का $\frac{18}{24}$ वां भाग = 18 अंगुल = $13\frac{1}{2}$ इंच = 34 सेमी 3 मिमी।

इसका 28 वां भाग = $5\frac{1}{8}$ यव = $3\frac{6}{7}$ सूत = 1 सेमी $2\frac{1}{4}$ मिमी।

दोनों का योग = 18 अंगुल $5\frac{1}{8}$ यव = 13इंच $7\frac{6}{7}$ सूत = 35 सेमी $5\frac{1}{2}$ मिमी।
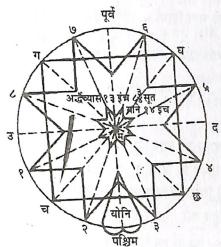
इस नाप के अर्द्धव्यास का प्रकार कर प्रकार घुमाने से वृत्त बनेगा। इस वृत्त के आठ भाग करके पुन उनके अर्द्ध भाग में (उत्तर वायव्य के बीच 1 नं.) से 8 तक बिन्दु स्थापित करें। अब अपने से चौथे बिन्दु को मिला दे 1 को 4 से, 4 को 7 से, 7 को 2 से, 2 को 5 से, 5 को 8 से, 8 को 3 से, 3 को 6 से, व 6 को 1 से मिलाये। यह विषम अष्टकोण कुण्ड बन जायेगा। बीच की रेखाओं को मिटा दीजिये।

(10) अष्टास्र मृदंग कुण्ड
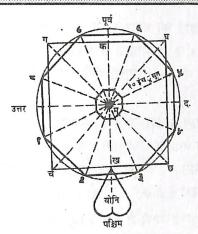
प्रकृति क्षेत्र :- = 24 अंगुल = 18 इंच = 45 सेमी 7 मिमी।

इसमें से 14 अंगुल भाग लिया = $10\frac{1}{2}$ इंच = 26 सेमी $6\frac{1}{2}$ मिमी।

इसका 47 वां भाग = $2\frac{2}{5}$ यव = $1\frac{3}{4}$ सूत = 5 $\frac{3}{4}$ मिमी

इन दोनों का योग = 14 अंगुल $2\frac{2}{5}$ यव। 10 इंच $5\frac{3}{4}$ सूत या 27 सेमी $2\frac{1}{4}$ मिमी।

इस नाप के अर्द्धव्यास का चाप **'म'** केन्द्र से घुमाइये वृत्त बनेगा। इसके 16 भाग करके उत्तर वायव्य के बीच **1 नं.** देकर तीसरे भाग से मिलाते जाईये। बिन्दुओं को आपस में मिलाईये। अष्टास्त्र मृदंगाकार कुण्ड होगा। दूसरा प्रकार यह है कि वृत्त के आठ भाग करे और एक दूसरे की रेखा खींच कर मिलाते जायें।

खात विषय :- 24 अंगुल कुण्ड हो तो 24 अंगुल गहरा होवे। अन्य मत यह है कि 15 अंगुल खात, 9 अंगुल मेखला हो। अर्थात् 24 अंगुल मेखला सहित या मेखला रहित बना सकते है, परन्तु आहुति संख्या का भी ध्यान रखे कि पूर्णाहुति तक कुण्ड खाली नहीं दिखाई देवे। कुण्ड का भराव कंठ तक होना चाहिये।

कंठ :- 1 अंगुल या 2 अंगुल चौड़ा करना चाहिये। (प्रकृति क्षेत्र व मेंखला की दूरी)

ओष्ठ :- ऊपरी मेखला की कुण्ड की तरफ की किनार हल्की सी उर्ध्व कर देवें। ओष्ठ के नहीं बनाने पर यजमान का मरण कहा है।

मेखला :- खात को बाहर 1 या 2 अंगुल की जगह (कण्ठ) छोड़कर मेखला बनाये। 1, 2, 3, 5 मेखला बना सकते है। मेखला 4-4-4 अंगुल की समान और चौड़ाई भी 4-4 अंगुली होवे। या 3-3-3 अंगुली की ऊँची व 3 अंगुल चौड़ी बनाये।

तीसरा प्रकार प्रथम मेखला ऊपर की कुण्ड का 6 भाग = 4 अंगुल की ऊँचाई व चौड़ाई। बीच की मेखला 8 वां भाग = 3 अंगुल ऊँची व 3 अंगुल चौड़ी। नीचे की मेखला 12 वां भाग = 2 अंगुल ऊँची व 2 अंगुल चौड़ी। प्रमाण से बनाये। एक मेखला में चौथाई भाग = 6 अंगुल चौड़ी 6 अंगुल ऊँची बनाये।

नाभि :- कुण्ड मध्य में 'म' बिन्दु पर (प्रकृति क्षेत्र का मध्य बिन्दु) बनाये। 12 वां भाग = 2 अंगुल ऊँचाई, छठा भाग = 4 अंगुल चौड़ाई की कुण्ड के आकार की बनावे। पद्मकुण्ड में नाभी नहीं केवल कर्णिका मात्र है। 1 हाथ के

कुण्ड में 6 अंगुल ऊँची व ६ अंगुल चौड़ी होती है।

अर्द्धवृत्त कुण्ड में 'म' केन्द्र बिन्दु से $2\frac{1}{2}$ अंगुल नीचे जगह छोड़कर बनायें।

योनि :- योनि कुण्ड का अर्ध 12 अंगुल = 9 इंच लंबी। चौड़ाई 3 भाग 8 अंगुल = 6 इंच चौड़ाई होती है व ऊँचाई 12 अंगुल। नीचे से चौड़ी, ऊपर 1 अंगुल संकुचित। पीछे छिद्रनाल सहित एवं आगे 1 अंगुल झुकी हुई, 1 अंगुल कंठ के बाहर निकली हुई कछुये की पीठ व पीपल के पत्ते कि तरह बनाये। योनि के किनारे 1 अंगुल उठे हुये, अग्रभाग में 1 अंगुल चौड़ा गड्डा छिद्रनाल युक्त बनायें। दो मिट्टी के गोले दोनों पृष्ठों पर रखे। लाल वस्त्र से आच्छादित करें।

कुण्ड के जनेऊ पहनाने के लिये योनि पृष्ठ में छिद्र बनाने हेतु एक मोटा तिनका या रस्सी मध्यमेखला के पास लगायें। थोड़ी देर बाद हिलाते रहे। जिस समय जनेऊ कुण्ड को पहनावे रस्सी के एक सिरे पर बांधकर खींच लें फिर मेखला के जनेऊ बांध देवे।

एक मेखला में नीचे छिद्र होता है। दो मेखला में दूसरी मेखला में छिद्र होता है। तीन मेखला में मध्य में छिद्र होता हैं। पांच मेखला में चौथी (नीचे से) मेखला में छिद्र होता है। (कोटि होम पद्धति)

॥इति कुण्ड निर्माण विधि॥

।। यूप स्थापन विधि ।।

याग, प्रतिष्ठोत्सव, वापी, कूप, तड़ाग की प्रतिष्ठा में यूप की स्थापना करे।

आचार्य पूर्वकुण्ड के पूर्व में, मण्डप के पूर्व में तीन पग दूरी पर यूप स्थापन करे। प्रासाद (मन्दिर) के ईशान में दश या सोलह हाथ की दूरी पर यूप का पूजन कर स्थापन करे।

यूपप्रमाणं बृहत्पाराशरे। पलाशो ब्राह्मणस्योक्तो नैयग्रोधस्तु भूभुजः। बैल्वो वैश्यस्य यूपः स्याच्छूद्रस्यौदुम्बरः स्मृतः ॥१॥ शिरः प्रमाणो विप्रस्य ह्याकण्ठं क्षत्रियस्य च। उरः प्रमाणो वैश्यस्य शूद्रस्य नाभिमात्रतः ॥२॥

तत्र काष्ठेन अरत्निमात्रं खातं कृत्वा खोदने का मन्त्र -

यां त्वा गन्धर्वो अखनद् वरुणायमृतम्रजे ।
या त्वा वयं खनामस्योषधि शेपहषणीम् ॥

भूमी पूजन कर यूप से प्रार्थना करे -

यूपस्त्वं निर्मितः पूर्वं यज्ञभागः सुरेश्वरै स्तुतः प्रासादरक्षार्थं पूजां पुष्प बलिं तथा। गृहीत्वा सुस्थिरो भूत्वायजमानोदयं कुरु।

यूप का हरिद्रा तैलादि से अभञ्जन करें, शांतिकलश से स्नान कराये।

घृत से अभ्यञ्जन कर पुष्पमालादि अर्पण करे। सरसों, गोरोचन, गुग्गुल, न निम्बपत्र की पोटली बनाकर बांधे।

ॐ यदाबध्नं दाक्षायणा हिरण्य ठं शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
तन्म आबध्नामि शतशारदामायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम् ॥

वस्त्र वेष्टन करे -

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उश्रेयान् भवति जायमानः ।
तं धीरा सः कवय उन्नयंति स्वाध्यो मनसा देवयंतः ॥

यूप का आलम्भन करे -

ॐ यूपव्रस्का उतये यूप वाहाश्चषालंये अश्व यूपायतक्षति ।
येचार्वतेपचन ठं संभरंत्युतोतेषामभिगूर्तिर्न्न इवन्तु ॥

यूपउत्स्त्रिज्य (उठावें)

ॐ उच्छ्रयस्व वनस्पते वर्ष्मन्पृथिया अधि। सुमितीयमानो वर्चोधा यज्ञवाहसे।

यूप गर्त में अक्षत, पुष्प, दर्भादि डालें। जल से यूप का प्रोक्षण करे एवं उसे स्थिर करे।

ॐ ध्रुवासि ध्रुवोयं यजमानो ऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिंद्रस्यच्छदिंरसि विश्वजनस्यच्छाया।

सुप्रतिष्ठो भव चिरकालं स्थिरोभव यजमानस्यायुर्वर्द्धनस्त्वं भव सर्व-सौख्यप्रदोभव।

मिट्टी से गर्त को पूरित करे दंड से दृढ़ करे।

यूप के मूल में जल से अभिसेंचन करे - **यज्ञायज्ञावो अग्नयेगिरागिरा च दक्षसे। प्रप्रवयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रन्न श ठं सिषम्॥**

गंध पुष्प धूप-दीप नैवेद्य पूगीफल दक्षिणादि से अर्चन करे

यूप के दक्षिण पार्श्व में २५ कोष्ठक का यूप देवता का मंडल बनाये।

॥ यूपमण्डलम् ॥

शिव	द्वादश आदित्य	इन्द्र	अश्विन	अग्नि
एकादश रुद्र	साध्य	नारायण	पितृन्	सप्त मातृः
सोम	अष्टवृषभ ध्वज	ब्रह्मा	काल	यम
अष्टवसु	चित्रगुप्त	पृथिवी मरुतः	मृत्यु रोग	गणपति
वायु	यक्ष रक्षांसि	वरुण	नाग भूतादि	नैर्ऋति

मंडल देवताओं का पूजन करे।

मध्यकोष्ठे ब्रह्माणम्। उत्तरे-सोमं, ऐशान्यां-शिवं, पूर्वे-इन्द्रं, आग्नेयां-अग्निं, दक्षिणे-यमम्। नैर्ऋत्याम्-निर्ऋतिं, पश्चिमे-वरुणं, वायव्यां-वायुम्। वायुसोमयोर्मध्ये - अष्टवसून। सोमेशानयोर्मध्ये-एकादश रुद्रान्। ईशान-पूर्वयोर्मध्ये-द्वादशादित्यान्। इन्द्राग्न्योर्मध्ये-अश्विनौ। आग्नेयदक्षिणयोर्मध्ये-सप्तमातृः। यमनिर्ऋत्योर्मध्ये-गणपतिम्। निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये-नागन्भूतानि च। वरुणवाय्वोर्मध्ये - यक्षरक्षांसि।

ततो बह्मत उदीच्याः प्रादक्षिण्येन मध्यपङ्क्तौ उदीच्याः (उत्तर) प्रादक्षिण्य वायव्वः पर्यन्तम्। अष्टौ वृषभध्वजान्॥१॥ साध्यान् ॥२॥ नारायणम् ॥३॥ पितृन् ॥४॥ कालम् ॥५॥ मृत्युरोगान् ॥६॥ मरुतः ॥७॥ चित्रगुप्तम् ॥८॥

ततो ब्रह्मणः पादमूले पृथिवीम् आवाह्यामि स्थापयामि ॥

इसके बाद अभिषेक करें - ॐ असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषा ㇾ सहस्त्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि ॥१॥ इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शतुद्रि स्तोमं सचतापरुष्णिया। असिकन्या मरुद्वृधे वितस्तया र्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥२॥ एकाच मे तिस्त्रश्च मे० ॥३॥ चतस्त्रश्च मेष्टौचमेष्टौ च मे० ॥४॥ ये तीर्थानि प्रचरन्तिस्सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा ㇾ सहस्त्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि ॥५॥

यूपन्यास :- यूपशिरसि - ब्रह्मणे नमः। चक्षुषोः - शशिभास्कराभ्यां नमः। हृदि - केशवाय नमः। नाभौ - अग्नये नमः। ऊर्वोः कट्यां, गुह्ये - एकादशरुद्रेभ्यो नमः। जङ्घयोर्मेरु पर्वताय नमः। पादयोर्नागेभ्यो नमः। शिखायाम् - ॐ अर्थेतस्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम्मेदत्त स्वाहार्थेतत्स्थ राष्ट्रदारा ममुष्मैदतौजस्वतीस्थ राष्ट्रदाराष्ट्रम्मेदत्तस्वाहौजस्वतीस्थ राष्ट्रदाराष्ट्रममुष्यैदत्तापः परिवाहिणीस्थ राष्ट्रदाराष्ट्रम्मेदत्तस्वाहापः।

चक्षुषोः - ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयं देव एकः॥ नासिकायाम् - वाराहाय नमः। मुखे - ॐ अग्निंदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे। देवाँ २ आसादयादिह॥ ग्रीवायाम् - ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ㇾ रुद्रा उपश्रिताः। तेषा ㇾ सहस्त्र योजनेवधन्वानि तन्मसि॥ बाह्वो - बाह्वोर्मे बलमस्तु। हृदये - ॐहृदेत्वा मनसेत्वा दिवेत्वा सूर्यायत्वा। उर्ध्वमिममध्वरं दिवि दिवेषु होत्रायच्छ। उदरे - समुद्रा दूर्मिर्मधुमाँ २ उदारदुपा ㇾ शुनासममृतत्व मानट्। घृतस्यनामगुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः। कटिद्वये - ॐवाममद्य सवितार्वाममुश्वो दिवे दिवे वाममस्यभ्य ㇾ सावीः। वाममस्यहि क्षयस्यदेव भूरेरयाधियावामभाजः स्याम॥ नाभि जङ्घयोः - नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेपचितिर्भसत्। आनन्द नन्दा वान्डौमेभगः सौभाग्यंपसः। जंघाभ्यां पद्भ्यां धर्मोस्मि विशिराजा प्रतिष्ठितः॥ पादयोः - ॐ आयङ्गौः पृश्निर क्रमीद सदन्मातम्पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः॥

यूप न्यास करके पञ्चोपचार से पूजन कर बलि प्रदान करे।

एह्येहि धर्मध्वज यज्ञनाथ त्रयीमयो वेदशरीर यूप। विधातु देवध्वर यज्ञरक्षां बलिं गृहाण भगवन्नमस्ते॥ यूपायैष बलिर्न मम॥

कुंकुमाक्त सूत्रेण यूपं वेष्टय। पर्वत एवं वरुण तथा दिक्पालों का यूप में पूजन करे।

ॐ पर्वतेभ्यो नमः, वरुणाय नमः। इन्द्रादि लोकपालेभ्यो नमः।

उदङ्गमुख होकर प्रार्थना करे -

त्वां प्रार्थये ह्य हं यूप लोकानां शान्तिदायक। सर्वपापविशुद्ध्यर्थं जगदानन्द कारक ॥१॥ देहि मे ऽनुग्रहं यूप प्रसादं कुरु सुप्रभो। मूलच्छेदेन यत्पापं भूमिघातेन पातकम् ॥२॥ अदुष्ट यूपघातोत्थं यूपपापं व्यपोहतु। यद्बाल्ये यच्च कौमारे यत्पापं वार्द्धके कृतम् ॥३॥ तत्सर्वं मम देवेश यूप पापंव्यपोहतु। यन्निशयां तथा प्रातर्यन्मध्याह्ना पराह्णयोः ॥४॥ संध्ययोश्च कृतं पापं कर्मणा मनसा गिरा। तत्सर्वं मम देवेश यूप पापं व्यपोहतु ॥५॥ येनकेन निमित्तेन कर्ता पापं तु कारयेत्। तस्य पापेन लिप्ताङ्गस्ते नैवास्पृश्य उच्यते ॥६॥

वापीकूप तडागानां कर्ता यूपं तु कारयेत्। तस्य पापेन नो लिप्तो यो यूपस्पर्शकृन्नरः॥ पुष्पमाला चढ़ावें -

ॐ या ओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनैनुबभ्रूणाणमह ठ शतं धामानि सप्त च ॥

यजमान सपरिवार यूप की प्रदक्षिणा कर यूप का प्रगाढ़ आलिङ्गन करे। नमस्कार करे।

॥इति यूपस्थापन विधिः॥

॥ वास्तुस्थापन एवं गर्तविधानम् ॥

प्रासाद के अथवा यज्ञमण्डप के अग्नि में आकाशपद (अग्निकोण से एक पद उत्तर की ओर) में जानुमात्र गर्त करावे। गर्त खोदने का मंत्र -

यां त्वा गंधर्वो अखनद् वरुणायमृतभ्रजे ।
या त्वा वयं खनामस्योषधि शेपहषणीम् ॥

फिर भूमि का पूजन करे। हेममयी वास्तुमूर्ति (गिरगिट की आकृति की) को बिनापकीमिट्टी (अपक्वमृद्भाण्डे) के पात्र में अधोमुख करते हुये संस्थाप्य करे। पात्र में दही, दूर्वा, सप्तधान्य, शैवाल्य (नदी की घास), गंध, अक्षत पुष्पादि भी रखें। पात्र का मुख दीपक से आच्छादित कर ढक देवे एवं कौशेयवस्त्र से पात्र का वेष्टन करे। काष्ट पेटी को जल से प्रोक्षण कर शुद्ध करे। यजमान दुग्धजल गर्त में पूरित करे (गर्त जल से पूर्ण रहे) **तत्पश्चात् कलश जलेन काष्टपेटिकां शुद्धां कृत्वा तं मृत्पात्रं पेटिका मध्ये स्थापयेत्। पीतवस्त्रेण पेटिकामाच्छादयेत्।** अग्रिम मंत्रेण तां पेटिका शनैः शनैर्गर्ते स्थापयेत्।

सशैलसागरां पृथ्वीं यथा वहसि मृद्धर्नि ।
तथा मां वह कल्याणं सम्पत्संततिभिः सह ॥

वातुदेव से प्रार्थना करे – **ॐ वास्तुपुरुष महाबल पराक्रम सर्वदेवाश्रितशरीर सकलबह्माण्ड धारक सर्वाभ्युदय कुरु कुरु सुप्रतिष्ठो वरदो भव।**

पश्चात् गर्तं मृदैव पूरयेत्। तदुपरि गोमयेन लेपयेत्। तदुपरि कलशं पत्रावल्यां निदध्यात्। कलशोपरि घृतदीपं स्थापयेत्। शिल्पिने दक्षिणां वस्त्रं च दत्वा दीपकं तु पत्रावल्यां तत्रैव किन्तु कलशं च पुनर्वेदीमध्ये स्थापयेत्।(गर्तापूरिते मृदाधिक्ये परंशुभम्)

॥इतिवास्तुगर्त विधानम्॥

॥ यज्ञविषयक अन्य विवेचनम् ॥

कुशकण्डिका विधान विज्ञानमय एवं विस्तृत है। यज्ञादि विषय में कई प्रश्न विद्वानों में प्रतिष्ठा का कारण बन जाते है। कई प्रसंगवश ऐसे अवसर आये है, वहां गांव के सामान्य विद्वानों के प्रश्नों के सामने आचार्य को निरुत्तर होने की अवस्था में चुपचाप स्थान छोड़कर आना पड़ा है।

वैसे अग्निचक्र, सप्तजिह्वा (सात्विकी, रजसी, तामसी) जिह्वादेवता, अग्नि के गर्भाधान संस्कार, अग्नि पूजन, अग्नि **(शिवरेतोधियाम् योनिमार्गेण स्थापयेत्)** को शिव का वीर्य मानते हुये, ऋतुस्नाता वागीश्वरी के साथ समन्वय आदि प्रसंग इस पुस्तक में पूर्व में दिये गये है, परन्तु विद्वानों की इच्छानुसार कुछ प्रश्नोत्तर दिये जा रहे है। नारदपाञ्चरात्र में भी कुशकंडिका संबंधि विवरण है।

प्रश्न – प्रणीता व प्रोक्षणी में क्या भेद है?

उत्तर – प्रणीता में विष्णु व प्रोक्षणी में अग्नि का ध्यान करने विषय में अग्निपुराण में कहा गया है अतः प्रणीतोदक विष्णुपादोदक हुआ उसका जल ३ बार प्रोक्षणी में डालने से अग्नि से संधान हुआ। इस प्रोक्षणीपात्र के जल को कुशाओं के अग्रभाग को उत्तराग्र करते हुये ऊपर उछालने से अंतरिक्ष के विघ्नों का समन माना है। विष्णुस्वरूप प्रणीता (यज्ञपुरुष की साक्षी) का जल पुनः प्रोक्षणी में डालने से त्याग हेतु यज्ञपुरुष का अग्नि से संधान हुआ। इससमय यदि प्रणीता का जल अगर भूमि पर गिर जाये तो विष्णुपादोदक का अपमान मानकर प्रायश्चित हेतु गोदान का का उल्लेख है।

प्रश्न – यूप व स्तंभ में क्या भेद है?

उत्तर – यूप यज्ञमण्डप के पूर्व में ३ पग की दूरी पर स्थापित किया जाता है

यूप ९ अंगुल से २१ अंगुल वर्तुलाकार प्रमाण का होता है, ऊपरी भाग की गोलाई कम करते हुये समचौकोर शीर्ष बनाया जाता है। लंबाई ब्राह्मण के लिए शिरप्रमाण, क्षत्रिय के लिए कण्ठपर्यन्त, वैश्य के लिए हृदय तक तथा शुद्र के लिए नाभि प्रमाण मानी गई है। यह धर्मध्वज है तथा वेदशरीर रुप में यज्ञाधिपति मानकर निर्विघ्नता पूर्वक यज्ञसिद्धि के लिए स्थापन किया जाता है।

स्तंभ '**आलयत्वात् बर्हिभागे दीर्घं स्तम्भम्**' उत्तम कोटि का स्तंभ आलय (मण्डप) के अग्रभाग से बड़ा होता है। मध्यमकोटी का स्तंभ आलय के अग्रभाग से छोटा होता है। तथा अधमकोटी का स्तंभ विशेष छोटा होता है। पूर्वाभिमुख मंदिर होवे तो प्रासाद के बाहर १० या १६ हाथ की दूरी पर ईशान कोण में स्तंभ स्थापित करे। देवभेद से इसकी सत, रज, तम, तीन प्रकृति संज्ञायें हुई। यह द्वार रक्षक संज्ञक है। विष्णु मन्दिर में इसका ऊपरी भाग गरुड़ाकृति, शिवमन्दिर में स्वामिकार्तिक स्वरूप तथा देवी मन्दिर में सिंहाकृती स्वरूप भी बनाया जाता है।

प्रश्न - कुशा व दर्भा में क्या भेद है?

उत्तर - मूलभाग सहित कुशा होती है एवं मूलरहित दर्भा कहलाती है। दर्भसमूह को 'बर्हि' एवं कुशससमूह को 'कूर्च' कहते हैं। दर्भा प्रादेशमात्र ग्रहण करने के लिए कहा गया है। भाद्रपद कृष्णा अमावस्या को शास्त्रोक्त विधि से संगृहीत की गई कुशा याज्ञिक प्रयोग के लिये काम में ली जाती है।

प्रश्न - आज्य व घृत में क्या भेद है?

उत्तर - संस्कार रहित उपलब्ध द्रव्य 'घृत' है, तथा घृत के विक्षण, तापन, पवित्रिकरण, अद्योतन उद्योतन, उत्पवन, संप्लवन आदि संस्कार किये जाने पर 'आज्य' कहा जाता है।

प्रश्न - ब्रह्मापूर्वेगमनं का क्या महत्व है?

उत्तर - ब्रह्मादि का वरण करते समय यजमान पूर्वाभिमुख हो तो ब्रह्मा उत्तराभिमुख होवे तत्पश्चात् ब्रह्मा पूर्वगमन कर यजमानाभिमुख होवे यही उत्तम है।

प्रश्न - परिस्तरण करने हेतु दर्भा १६, ६४, या ८० संख्या की बर्हि (दर्भ समुहेति बर्हि) प्रमाण क्यों है?

उत्तर - परिस्तरण समय जो दर्भायें ग्रहण की गई है वे वेदीस्वरूप वास्तुपुरुष की शिरादेवता स्वरूप है, ब्रह्मस्वरूप का अग्नि से संधान हो जाता है शेष देवताओं की अग्नि के बाहर दिक्रक्षण हेतु उत्तम मध्यम अधम (८०, ६४, १६) संज्ञक दर्भा ग्रहण की गई है। बर्हि के चार भाग करके प्रत्येक दिशा में (ब्रह्मणो अग्निपर्यन्तं, अग्नित प्रणीता पर्यन्तम्.......) कुशाग्र का पूर्वाग्र या उत्तराग्र मुँह करते हुये परिस्तरण करें। पूर्णाहुति पश्चात् परिस्तरित दर्भा को संग्रहित कर होम करने को बर्हिहोम या कूर्चहोम कहते है।

शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी

सचित्र सस्वर एवं सरल रुद्रपाठ (मृत्युञ्जय प्रयोग सहितम्)

रंगीन मुद्रण में तथा सचित्र सस्वर रुद्रपाठ की एक मात्र पुस्तक (1) सस्वर पाठ के चित्र छापकर क्रिया को सरल किया गया है। (2) स्वर दीर्घ, ह्रस्व, दक्षिण वाम होगा, उच्चारण काल लघु या दीर्घ होगा इसे विभिन्न रंगों में छापा गया है। (3) रंगभेद से स्वर का विभाग समझाया गया है। (4) सभी मंत्रों के ऋषिछंद व देवता भी अलग से दिये गये है।

नवग्रह तंत्रम्

१. इस तंत्र में सभी नवग्रहों के यंत्रार्चन, कवच, स्तोत्र एवं शतनाम दिये गये है। २. सभी ग्रहों के वैदिक मंत्रों के ऋषिन्यास सहित सविधि प्रयोग दिये गये है। ३. शांति प्रयोगों में ज्येष्ठा मूल अश्लेषा मघा रेवती अश्विनी शांति मंडल विधान सहित वर्णित है। ४. गंडान्त शांति हेतु गोमुखप्रसव, शांतिप्रयोग, पुंसवन, नामकरणादि संस्कार विधि पूर्ण है। ५. यमलशान्ति, त्रितरशांति, वैद्यत्यादि योग शांति, कुहू सिनीवाली शान्ति, एक जनन नक्षत्र शांति, अशुभ दन्तोत्पत्ति शांति इत्यादि कई शांति प्रयोग कर्मकाण्डी विद्वानों हेतु दिये गये है।

श्रीबगलामुखी चालीसा

पं० रमेशचन्द्र शर्मा द्वारा स्वरचित अद्वितीय बगलामुखी चालिसा, बगलामुखी सप्तक, आरती व भजन इस पुस्तक की शोभा हैं साथ ही बगलामुखी कवच, बगलामुखी शतनाम स्तोत्र भी पुस्तक में दिये गये हैं।

साधक का सत्य

☆ पुस्तक में लेखक की 40 वर्ष की साधना के नीजि अनुभव व दिव्य योग विधियाँ दी गई है ☆ गुरु परंपरा, गुरु की महत्ती कृपा कैसे प्राप्त करें ☆ दीक्षा, शक्तिपात की शक्ति व प्रभाव ☆ कुण्डलिनी जागरण के लक्षण ☆ कुण्डलिनी जागरण की विधियाँ ☆ षट्चक्रों का वर्णन। मन्त्र साधना द्वारा घट्चक्र भेदने की विधियाँ ☆ मन्त्र साधना द्वारा ध्यान, धारणा, समाधि, नादसाधना ☆ ध्यान लगाते समय होने वाली समस्याओं का आनुभविक निराकरण ☆ साधना के मार्ग की दिव्य अनुभूतियों का आनुभविक वर्णन। ☆ त्रिनाड़ी शक्ति का वर्णन, ☆ पञ्चकोषमय शरीर का वर्णन

शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी

सचित्र सस्वर एवं सरल रुद्रपाठ (मृत्युञ्जय प्रयोग सहितम्)

रंगीन मुद्रण में तथा सचित्र सस्वर एवं सरल रुद्रपाठ की पुस्तक (1) सस्वर पाठ के चित्र छापकर क्रिया को सरल किया गया है। (2) स्वर दीर्घ, ह्रस्व, दक्षिण वाम होगा, उच्चारण काल लघु या दीर्घ होगा इसे विभिन्न रंगों में छापा गया है। (3) रंग भेद से स्वर का विभाग समझाया गया है। (4) सभी मंत्रों के ऋषिछंद व देवता भी अलग से दिये गये है।

साधक का सत्य

पुस्तक में लेखक की 40 वर्ष की साधना के नीजि अनुभव द्वारा कुण्डलिनी जागरण की विधियाँ। षट्चक्रों का वर्णन। मन्त्र साधना द्वारा षट्चक्र भेदने की विधियाँ। मन्त्र साधना द्वारा ध्यान, धारणा, समाधि, नादसाधना। ध्यान लगाते समय होने वाली समस्याओं का आनुभविक निराकरण।

सर्वकर्म अनुष्ठानप्रकाशः भाग (७) 'लघुविद्या रहस्य'

महाविद्या की अंगविद्याओं का वर्णन, गणेश, विष्णु, सुदर्शन, हनुमान, भैरवादि, पार्श्वनाथ, पद्मावती के विभिन्न प्रयोग, श्रीविद्या व बगलामुखी, गायत्री कवच तथा मन्त्रवर्णात्मक सहस्रनामादि।

नवग्रह एवं नक्षत्र शान्ति

१. इस तंत्र में सभी नवग्रहों के यंत्रार्चन, कवच, स्तोत्र, शतनाम वैदिक मंत्रों के ऋषिन्यास सहित सविधि प्रयोग दिये गये है। २. शांति प्रयोगों में ज्येष्ठा मूल अश्लेषा मघा रेवती अश्विनी शांति मंडल विधान सहित वर्णित है। ३. गंडान्त शांति हेतु गोमुखप्रसव, शांतिप्रयोग, पुंसवन, नामकरणादि संस्कार विधि पूर्ण है। ४. यमलशान्ति, त्रितरशांति, वैद्यत्यादि योग शांति, कुहू सिनीवाली शान्ति, एक जनन नक्षत्र शांति, अशुभ दन्तोत्पत्ति शांति इत्यादि कई शांति प्रयोग कर्मकाण्डी विद्वानों हेतु दिये गये है।

गायत्री उपासना रहस्य

गायत्री के आवश्यक न्यास प्रयोग, मुद्रायें, त्रिकालसंध्या पूजन विधान, तर्पण प्रयोग, राजोपचार पूजा (८४ उपचार)। विविध स्तोत्र, कवच तथा मन्त्रवर्णात्मक सहस्रनामादि सहित कई प्रयोग एवं विद्याओं का वर्णन।

श्रीबगलामुखी चालीसा

बगलामुखी चालिसा, बगलामुखी सप्तक, आरती व भजन, बगलामुखी कवच, बगलामुखी शतनाम स्तोत्र भी पुस्तक में दिये गये हैं।

हमारे प्रकाशन

लेखक : प. रमेश चन्द्र शर्मा (मिश्र)
विशेषज्ञ - ज्योतिष, तंत्रशास्त्र, वास्तुशास्त्र एवं कर्मकाण्ड
(डिप्लो. मैकेनिकल इंजि.)

क्र.	पुस्तक	मूल्य
1	सुबोध दुर्गा सप्तशती एवं याग विधानम्	330
2	सचित्र सस्वर रूद्राष्टाध्यायी	120
3	भवन वास्तुशास्त्र एवं भाग्यफल	220
4	सांगोपांग वैवाहिक पद्धति	100
5	नवग्रह एवं नक्षत्र शान्ति	120
6	सर्वकर्म अनु० भाग 1 पूजा प्रतिष्ठा	330
7	सर्वकर्म अनु० भाग 2 देवखण्ड	350
8	सर्वकर्म अनु० भाग 3 देवीखण्ड पूर्वार्द्ध	650
9	सर्वकर्म अनु० भाग 4 देवीखण्ड उत्तरार्द्ध	550
10	सर्वकर्म अनु० भाग 5 तंत्रसिद्धि रहस्य	350
11	सर्वकर्म अनु० भाग 6 सिद्ध विद्या रहस्य	550
12	सर्वकर्म अनुष्ठान भाग 7 लघुविद्या रहस्य	
13	तंत्रात्मक दुर्गा सप्तशती	350
14	भिन्नपाद दुर्गा सप्तशती	220
15	दुर्गा सप्तशती सर्वस्वम्	350
16	ब्रह्मकर्म सपर्या	350
17	कालसर्प एवं शाप दोष शान्ति	250
18	दैनिक पूजन के वैदिक मंत्र दण्डक	30
19	साधक का सत्य	150
20	बगलामुखी चालीसा	15
21	श्रीविद्या उपासना रहस्य	550
22	बगलामुखी उपासना रहस्य	650
23	गायत्री उपासना रहस्य	
24	काली उपासना रहस्य	

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (3) देवीखण्ड -

नवदुर्गा दशमहाविद्या रहस्य

गायत्री पुरश्चरण प्रयोग। नवदुर्गा के उत्तर भारत, दक्षिण भारत के चारों नवरात्र विधान। दशमहाविद्याओं के विशेष प्रयोग जो एक साथ अन्य किसी पुस्तक में संकलित नहीं हैं।

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (4) उपमहाविद्या रहस्य (पूर्वार्द्ध)

गायत्री ब्रह्मदण्ड, ब्रह्मशिर, ब्रह्मास्त्र, नवदुर्गाओं की आवरण पूजा। श्रीविद्या की नित्याओं के प्रयोग व अन्य महाविद्याओं की नित्याओं तथा ब्राह्मी आदि मातृकाओं के एवं शिवदूती कोशिकी आदि अन्य विद्याओं के प्रयोग सहित। गुह्यकाली उपासना एवं कई देवियों के प्रयोग दिये गये हैं।

सर्वकर्म अनु. प्रकाश भाग (5) तंत्रसिद्धि रहस्य

कर्णपिशाचिनी व चेटक साधना। शाबर मंत्र प्रयोग, हिन्दी-बंगला भाषी तथा जैन धर्मोक्त प्रयोग, वनस्पति तंत्र सहित कई सिद्ध प्रयोग।

तंत्रात्मक सप्तशती

दुर्गा सप्तशती के 700 श्लोकों के न्यास, ध्यान, विनियोग सहित विधान।

भिन्नपाद सप्तशती

नवार्ण मंत्र एवं त्रिपुरसुंदरी मंत्र से गर्भस्थ चरण भेद पुटित दुर्गा पाठ प्रयोग तथा अन्य कई देवताओं के भिन्नपाद प्रयोग।

ब्रह्मकर्म सपर्या

यह पुस्तक कर्मकाण्डी ब्राह्मणों हेतु सरल वैदिक विधि से संकलित है। रुद्राभिषेक प्रयोग, यज्ञोपवीत, विवाह, गृह प्रवेश, ग्रहशांति आदि कई विधान दिये गये हैं।

कालसर्प एवं शाप दोष शांति

राहु-केतु जनित उपद्रव शांति, पूर्वजन्मोक्त, प्रेत, पितर, पिशाच शाप विमुक्ति प्रयोग दिये गये हैं।

सर्वसप्तशती सर्वस्वम्

देश की सर्वप्रथम प्रस्तुति सहस्त्राधिक श्लोकी दुर्गासप्तसती चरित। उत्कीलित दुर्गा, विलोम-लोम दुर्गा, प्रचलित दुर्गासप्तशती, बीजात्मक सप्तशत्यादि 8 तरह की दुर्गासप्तशती एवं विविध स्तोत्र, न्यास एवं पूर्ण पूजा विधान सहित